निद्देसा

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> निद्देसा

अंतर्वस्तु

निद्देसा

निद्देसा (संस्कृत निर्देश) सुत्त निपात के कुछ भागों पर टीका के रूप में है। परंपरा के अनुसार, इसकी रचना बुद्ध के शिष्य सारिपुत्त ने की थी। यह दो भागों में विभाजित है:
महा निद्देसा, जो अठक वग्ग ("आठवाँ अध्याय," खंड 4) पर टीका है;
और चुल्ला या चुला निद्देसा, जो परायण वग्ग ("दूर तट का मार्ग अध्याय," खंड 5) और खग्गविसना सुत्त ("गैंडे के सींग पर प्रवचन," खंड 1.3) पर टीका है।

स्रोत: https://zacanger.com/niddesa/

परिचय
भाग 1: महा निद्देसा
निद्देसा: अष्टम अध्याय की व्याख्या
1. इच्छा
2. गुफा
3. बुराई
4. शुद्धता
5. सर्वोच्च
6. वृद्धावस्था
7. तिस्सा मेत्तेय्या
8.पसूरा
9.मागंदिया
10. विघटन से पहले
11. झगड़े और बहस

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> निद्देसा >> निद्देसा 1.1

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

<<<< पिछला अगला >>>>

महा निद्देसा

परम पूज्य, अरहंत, प्रबुद्ध को नमस्कार।

अष्टम अध्याय की व्याख्या

1. इच्छा

(शीर्षकों को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया गया है; अध्याय का पूरा शीर्षक होगा "इच्छा के बारे में अष्टक की व्याख्या"।)

1. जब वह कुछ चाहता है, और यदि वह उसके लिए सफल हो जाता है, तो यह सच है कि वह खुश है: जो मरने वाला है उसे वह मिल गया जो वह चाहता था।

“जब वह इच्छा करता है”: “इच्छा” दो प्रकार की इच्छाएँ होती हैं: वस्तुओं की इच्छा और अपवित्रता की इच्छा। वस्तुओं की इच्छाएँ क्या हैं? मनभावन रूप, मनभावन ध्वनि, मनभावन गंध, मनभावन स्वाद, मनभावन स्पर्श, बिस्तर, वस्त्र, नौकरानियाँ, बकरियाँ और भेड़ें, मुर्गियाँ और सूअर, हाथी, गायें, घोड़े, खच्चर, खेत, घर, सोना, सोने के सिक्के, गाँव और कस्बे, राजधानियाँ, देश, क्षेत्र, खजाने, गोदाम; हर वह चीज़ जो लालच से दूषित हो सकती है, वस्तुओं की इच्छा है।

इसके अतिरिक्त, अतीत की इच्छाएँ, भविष्य की इच्छाएँ, वर्तमान की इच्छाएँ, आंतरिक इच्छाएँ, बाह्य इच्छाएँ, आंतरिक और बाह्य इच्छाएँ, निम्न इच्छाएँ, मध्यम इच्छाएँ, उच्च इच्छाएँ, दुखमय संसार की इच्छाएँ, मानवीय इच्छाएँ, स्वर्ग की इच्छा, अतीत से चली आ रही इच्छा, सृजित इच्छा, असृजित इच्छा, दूसरों द्वारा सृजित इच्छा, अपने पास मौजूद इच्छा, अपने पास न होने वाली इच्छा, पोषित होने की इच्छा, पोषित न होने की इच्छा, इच्छाओं के संसार की सभी इच्छाएँ, भौतिक संसार की सभी इच्छाएँ, अभौतिक संसार की सभी इच्छाएँ, प्यास पर आधारित, लालसा को विषय बनाकर, ताकि लोग धर्म की चाह रखें; ताकि वे धर्म की लालसा से संक्रमित हो जाएँ; इच्छाओं के रूप में धर्म से मदहोश हो जाएँ, इन्हें भौतिक इच्छाएँ कहा जाता है।

प्रदूषण की इच्छा क्या है? इच्छा की इच्छा, लोभ की इच्छा, लोभ करने की इच्छा, इरादे की इच्छा, लोभ के इरादे की इच्छा, यानी इच्छा की इच्छा, इच्छा का लोभ, इच्छा का आनंद, इच्छा का प्रेम, इच्छा का उत्साह, इच्छा का आकर्षण, इच्छा का आवेग, इच्छा का बंधन, इच्छा का आसक्ति, इच्छा का आवरण।

“इच्छा की उन जड़ों को देखकर, जो विचार (इच्छा) से उत्पन्न होना चाहती हैं, मैं उनके बारे में नहीं सोचूंगा, इसलिए इच्छा का अस्तित्व नहीं होगा।” [जात.8.421]

इन्हें अपवित्रता की इच्छा कहा जाता है। “जब वह इच्छा करता है”: जब वह इच्छा करता है, जब वह चाहता है, जब वह लेता है, जब वह प्रार्थना करता है।

“यदि यह उसके लिए सफल हो”: “यदि यह उसके लिए हो,” उस क्षत्रिय, ब्राह्मण, वेस, शुद्ध, गृहस्थ परिवार, भिक्षु, स्वर्ग या व्यक्ति के लिए। “वह,” जिसे वस्तुओं की इच्छाएँ कहा जाता है: वांछनीय रूप, वांछनीय ध्वनियाँ...(विलुप्त)। “सफलता,” वह प्राप्त करता है, सफल होता है, पाता है, हासिल करता है, अपना बनाता है।

“यह सच है कि वह प्रसन्न है”: “यह सच है,” यह निर्णायक भाषा है, निर्विवाद भाषा है, आत्मविश्वास से भरी भाषा है, निःसंदेह दोहराने वाली भाषा है, आदेशात्मक भाषा है, अचूक भाषा है, यह निश्चितता का शब्द है, जो “वास्तव में” है। “सुख” पाँच इच्छाओं से संबंधित हृदय के आनंद, हँसी, प्रसन्नता, संतुष्टि, उत्साह और उल्लास को संदर्भित करता है। “मन,” मन, हृदय, शुद्ध मन, मन का मूल, चेतना, चेतना का भावार्थ, उस चेतना के अनुरूप, इसे मन कहा जाता है। यह मन आनंद, सहअस्तित्व, अंतर्मिश्रण, अनुरूपता, सहधारणा, सहविलीनता, एक ही स्थान और एक ही वस्तु से जुड़ा हुआ है। “वह वास्तव में प्रसन्न है,” वह वास्तव में प्रसन्न है; उसमें आनंद, हँसी, प्रसन्नता, उत्साह और उल्लास है।

“वे जो अपनी इच्छा पूरी होने पर भी अनिवार्य रूप से मर जाते हैं”: “प्राप्त करने के बाद”, “प्राप्त करने के बाद”, “हासिल करने के बाद”, “प्राप्त करने के बाद”, “अधिकार प्राप्त करने के बाद”। “वे लोग जो अनिवार्य रूप से मर जाते हैं” चेतन प्राणी हैं, मनुष्य हैं, विद्यार्थी ब्राह्मण हैं, लोग हैं, व्यक्ति हैं, जीवन हैं, जन्म लेने वाले हैं, चेतन हैं, इंद्र में हैं, मनु से जन्मे हैं। “जो चाहता है”, वह जो भी चाहता है, जो भी स्वीकार करता है, जो भी आशा करता है, जो भी इच्छा करता है, जो भी प्रार्थना करता है, रूप के लिए, या ध्वनि के लिए, या गंध के लिए, या स्वाद के लिए, या स्पर्श के लिए।

2 · यदि आप इच्छा करने वाले हैं: उन इच्छाओं के प्रति स्नेह उत्पन्न होता है, यदि वे इच्छाएँ क्षीण (कमजोर) हो जाती हैं, तो आपको ऐसा कष्ट होगा जैसे किसी तीर से भेद दिया गया हो।

“यदि तुम ही वह हो जो इच्छा रखते हो”: “यदि तुम वही हो,” चाहे वह क्षत्रिय हो या ब्राह्मण, ...(अंतःखंडित)। “जो इच्छा रखता है,” जो इच्छा करता है, स्वीकार करता है, चाहता है और इच्छा में प्रार्थना करता है, और इच्छा और लालसा से बह जाता है, जैसे कोई गाड़ी, रथ, मवेशी, बकरी, मेढ़े, ऊंट, गधे और घोड़े की गाड़ी, बह जाती है, परिवहन करती है और संभालती है। उसी प्रकार, वह इच्छा और लालसा से बह जाता है, ले जाया जाता है और बह जाता है।

“उत्पन्न इच्छा के प्रति आसक्ति”: “इच्छा”, सभी इच्छाओं की इच्छाएँ, इच्छाओं का लोभ, इच्छाओं का आनंद, इच्छाओं की प्यास, इच्छाओं का प्रेम, इच्छाओं का अधिकार, इच्छाओं का उत्साह, इच्छाओं का मोह, इच्छाओं की बाढ़, इच्छाओं का बंधन, इच्छाओं का आसक्ति और इच्छाओं का आवरण, उसकी इच्छाओं की इच्छा जागृत होती है, उत्पन्न होती है, जन्म लेती है और प्रकट होती है। सभी सजीव प्राणियों, मनुष्यों, विद्यार्थी ब्राह्मणों, लोगों, व्यक्तियों, जीवन, जन्म लेने वालों, सजीव प्राणियों, इंद्रास्थि प्राप्त करने वालों और मनु से जन्म लेने वालों के लिए।

“वे इच्छाएँ कमज़ोर हो जाती हैं”: जैसे-जैसे वे इच्छाएँ कमज़ोर होती हैं, या वह सभी इच्छाओं से विमुख हो जाता है। वे इच्छाएँ कैसे कमज़ोर होती हैं? जब वह धन धारण करता है, तो राजा उसे ले लेते हैं, या चोर उसे ले लेते हैं, या आग उसे जला देती है, या पानी उसे बहा ले जाता है, या अयोग्य वारिस उसे ले जाते हैं, या भंडार में नहीं मिलता, या अन्याय से नष्ट हो जाता है, या परिवार में किसी फिजूलखर्ची करने वाले के कारण होता है, जहाँ धन बिखर जाता है या नष्ट हो जाता है; ये आठ अनित्यता की अवस्थाएँ हैं, यही उन इच्छाओं का क्षय, गिरावट, हानि, पतन, लुप्त होना, टूटना है। वह सभी इच्छाओं से कैसे विमुख हो रहा है? जब वह उस धन को धारण करता है, तो वह मर जाता है और नष्ट हो जाता है, इसलिए वह उन इच्छाओं से विमुख हो जाता है, लुप्त हो जाता है, खो जाता है, कमज़ोर हो जाता है, लुप्त हो जाता है, टूट जाता है।

“चोर और राजा इसे छीन लेते हैं, आग जलाकर नष्ट कर देती है, और अंत में व्यक्ति शरीर और संपत्ति छोड़कर चला जाता है। बुद्धिमान लोग, यह जानकर, अपनी संपत्ति का उपयोग और दान करें; दान और उपयोग करने के बाद, वे निर्दोष स्वर्ग में जाएंगे।” [एस.एन.1.41]

“वह ऐसे पीड़ा झेल रहा है मानो उसे तीर से जमीन में छेद कर दिया गया हो”: यदि उसे लोहे का तीर, हड्डी का तीर, दाँतों का तीर, सींगों का तीर या लकड़ी का तीर लग जाए, तो वह परेशान, क्रोधित, सताया हुआ, व्याकुल हो जाता है और बीमार व दुखी हो जाता है। इसी प्रकार, वस्तुओं की इच्छाओं के परिवर्तन और उतार-चढ़ाव से दुःख, उदासी, पीड़ा, चिंता और निराशा उत्पन्न होती है, और वह इच्छा या चिंता के तीरों से घायल हो जाता है; वह परेशान, क्रोधित, सताया हुआ, व्याकुल हो जाता है और बीमार व चिंतित हो जाता है।

3. जो लोग हर तरह की इच्छा से बचते हैं, जैसे किसी सांप के सिर पर पैर रखने से बचते हैं, वे सचेत रहकर इस दुनिया के प्रेम से परे चले जाते हैं।

“जो कोई भी इच्छा से बचता है”: “क्या,” क्या है, जैसे प्रयास, जैसे व्यवस्था, जैसे प्रकार, जहाँ भी वह पहुँचा है, जहाँ वह क्षत्रिय है, या ब्राह्मण है, ..., या व्यक्ति है। “इच्छाओं से बचना” और “इच्छाएँ,” दो प्रकार की इच्छाएँ हैं: .... “इच्छाओं से बचना,” इच्छाओं से बचने के दो तरीके हैं: दमन या विच्छेद। इच्छाओं को दबाने से कैसे बचा जाए? जब आप देखते हैं कि “कम आनंद के साथ धर्म का स्वाद लेना, इच्छा एक कंकाल के समान है,” तो इच्छाओं को पूरी तरह से दबाने से बचें; जब आप धर्म को जलाते हैं, तो इच्छा घास की मशाल के समान होती है, ...; जब आप देखते हैं कि “धर्म को तीव्र ज्वाला से गर्म करना, इच्छा कोयले की आग के गड्ढे के समान है,” ...; जब आप देखते हैं कि “अस्थायी विद्रोह, इच्छा सपने देखने जैसी है” ...; जब आप देखते हैं कि “अस्थायी धर्म, इच्छा उधार ली गई वस्तु के समान है,” ...; जब आप देखते हैं कि “विनाश, धर्म का विनाश, इच्छा एक वृक्ष के समान है” ....; जब तुम “टूटी-फूटी और चकनाचूर धार्मिकता” देखते हो, तो इच्छा कसाईखाने के समान होती है...; जब तुम “भेदी धार्मिकता” देखते हो, तो इच्छा तलवार और भाले के समान होती है...; जब तुम “डर से धार्मिकता का भय” देखते हो, तो इच्छा सांप के सिर के समान होती है...।

बुद्ध ध्यान (स्मरण) का अभ्यास करते समय, इच्छाओं से बचें; धम्म ध्यान का अभ्यास करते समय...; संघ ध्यान का अभ्यास करते समय...; उपदेश ध्यान का अभ्यास करते समय...; उदारता का ध्यान...; देवता ध्यान (देवतानुस्सतिं)...; श्वास का ध्यान...; मृत्यु ध्यान...; शरीर के प्रति पूर्ण जागरूकता; मौन और आत्मसंतुष्टि का अभ्यास करते समय, इच्छा से बचें।

प्रथम ध्यान का अभ्यास करते समय, इच्छाओं से बचें; द्वितीय ध्यान का अभ्यास करते समय...; तृतीय ध्यान का अभ्यास करते समय...; चतुर्थ ध्यान का अभ्यास करते समय...; शून्यता के क्षेत्र में निवास का अभ्यास करते समय (पहला/प्रथम अमूर्त ध्यान)...; ज्ञान की असीमता में (छठा ध्यान)...; शून्यता में (सातवां ध्यान)...; यह दमन द्वारा इच्छा से बचना है।

इच्छाओं से मुक्ति कैसे प्राप्त करें? सोतापन्न मार्ग का अभ्यास करने पर दुख भोगना पड़ता है; सकदागामी मार्ग का अभ्यास करने पर स्थूल इच्छाओं से मुक्ति मिलती है; अनागामी मार्ग का अभ्यास करने पर सूक्ष्म इच्छाओं से मुक्ति मिलती है; और अरहंत मार्ग का अभ्यास करने पर हर पहलू से, पूर्णतः, बिना किसी अवशेष के, इच्छा का पूर्णतया त्याग हो जाता है। यही है इच्छाओं से मुक्ति।

“यह ऐसा है जैसे अपने पैर सांप के सिर पर रख देना”: सांप (सप्पो) को सांप (अही) कहा जाता है। सांप का क्या अर्थ है? “चढ़ना और चलना” सांप है; “झुकना और चलना” टेढ़ा-मेढ़ा चलना है; “छाती पर चलना” छाती पर चलने वाला है; “सिर नीचे करके चलना” घात लगाकर हमला करने वाला है; “सिर झुकाकर रेंगना” रेंगने वाला है; “गुफा में सोना” गुफा (कब्र) में रहने वाला है; “दांत को हथियार के

रूप में इस्तेमाल करना" दांत को हथियार के रूप में इस्तेमाल करने वाला है; "जहर भयानक है" अत्यधिक विषैला है; "दोहरी जीभ वाला" दो जीभों वाला है; "दूसरी जीभ से स्वाद चखना" दूसरी जीभ से स्वाद चखने वाला है। जो जीना चाहता है और मरना नहीं चाहता, जो सुख चाहता है और दुख से घृणा करता है, वह अपने पैरों से सांप के सिर पर हर जगह से बचकर निकलेगा। ठीक इसी प्रकार, जो व्यक्ति सुख चाहता है और कड़वाहट से घृणा करता है, वह हर प्रकार की इच्छा से बचता है, उससे दूर रहता है और उससे विमुख होता है।

"वह इस संसार में प्रेम से परे, सचेतनता से परे है": "वह," जो हर जगह इच्छाओं से बचता है। प्रेम को प्यास कहा जाता है, जो लोभ, वासना, सहमति, अनुरूपता, आनंद, पसंद, चाहत, इच्छा, मोह, लेना, अत्यधिक लोभ, बंधन, कीचड़, अशांति, पाखंड, (पुनर्जन्म) मूल कारण, (कड़वा) उर्वरता, सिलाई (लालसा), जाल, नदी, बंधन, रस्सी, लगाव, संचय, साथी, इच्छा, अस्तित्व का मार्ग, इच्छा वन (जंगल), घनिष्ठता, प्रेम, प्रत्याशा, संबंध, आकांक्षा, आकांक्षा की अवस्था, रूप की इच्छा, ध्वनि की इच्छा, गंध, स्वाद, स्पर्श, प्राप्ति की इच्छा, मनुष्य की इच्छाएँ (धन), पुत्र की इच्छा, जीने की इच्छा, इच्छा की अवस्था, प्रार्थना, लोभ, लोभपूर्ण रूप, लोभ की अवस्था धारण करना, पूछताछ (लाभ के लिए), दक्षता की इच्छा, अवैध लोभ, अनुचित लोभ, इच्छा, आशा, ईर्ष्या, पूर्ण आशा, इच्छा की इच्छा, अस्तित्व की इच्छा, शून्यता की इच्छा, सजीव प्यास, निराकार प्यास, विलुप्ति की प्यास, रूप की प्यास, ध्वनि की प्यास, गंध की प्यास, स्वाद की प्यास, स्पर्श की प्यास, धम्म की प्यास है। तेज धारा, लगाम, बंधन, चिपकाव, बाधाएं, आवरण, बंधन, साथ ही अपवित्रताएं, संभावित परेशानियां, उलझाव, लताएं, कंजूसी, पीड़ा के मूल, पीड़ा के कारण, पीड़ा का घटित होना, राक्षस का जाल, राक्षस का कांटा, राक्षस का भोजन (लालच), राक्षस का क्षेत्र, राक्षस का निवास, राक्षस का बंधन, प्यास की नदी, प्यास का जाल, प्यास की रस्सी, प्यास का सागर, लालसा, लोभ और अस्वास्थ्य की जड़।

प्रेम: प्रेम का अर्थ क्या है? प्रेम का अर्थ है "फैलाव", "विस्तार", "व्यापकता", "आकर्षित करना", "पकड़ना", "धोखाधड़ी", "विषाक्त जड़", "विषाक्त फल", "विषाक्त प्रयोग", या फिर, विशाल लालसा: रूप में..., ध्वनि में..., गंध में..., स्वाद में..., स्पर्श में..., घर में..., लोगों (समूहों) में, आवास में, लाभ में, प्रसिद्धि में, प्रशंसा में, सुख में..., वस्त्रों में..., भोजन में, बैठने की जगह में..., रोगी की आवश्यकताओं और चिकित्सा संबंधी ज़रूरतों में, इच्छा के क्षेत्र में, रूप के क्षेत्र में, निराकार के क्षेत्र में, पाने की इच्छा में, रूप में, निराकार में, इच्छा के क्षेत्र में, पाने की जिज्ञासा में, न पाने की इच्छा में, एक समूह में, चार समूहों में, पांच समूहों में, भूतकाल में, भविष्यकाल में, वर्तमान में, धर्मों में विस्तारित आसक्तियाँ जो देखी, सुनी, महसूस की और जानी जा सकती हैं।

"संसार में": दुख के संसार में, मनुष्य के संसार में, स्वर्ग के संसार में, समुच्चय के संसार में, लोकों के संसार में, अस्तित्व के संसार में। "सचेत रहना" का अर्थ है चार प्रकार से सचेत रहना: जब अभ्यास शरीर में सचेत हो, ...विषय में सचेत हो, ...मन में सचेत हो, ...धम्म पर सचेत हो, तो यही सचेतनता है।

और चार तरीकों से: मन से विमुख होने की अवस्था ही सचेतनता है, मन के प्रति किए जाने वाले धम्म की अवस्था ही सचेतनता है, मन द्वारा बाधित होने वाले धम्म की अवस्था ही सचेतनता है, और सचेतनता को न भूलने की अवस्था ही सचेतनता है।

और चार तरीकों से: सचेतनता की अवस्था, सचेतनता में बने रहने की अवस्था, सचेतनता का अनुभव करने की अवस्था और सचेतनता का कम न होने की अवस्था।

और चार प्रकार से: सचेतनता की अवस्था ही सचेतनता है, मौन अवस्था ही सचेतनता है, स्थिर अवस्था ही सचेतनता है, और धम्म की अवस्था ही सचेतनता है; बुद्ध का सचेतन, धम्म का सचेतन, संघ का सचेतन, उपदेशों का सचेतन, दान का सचेतन, आकाश को मन मानकर; (अंदर आने वाली) श्वास और (बाहर जाने वाली) श्वास के साथ, मृत्यु के साथ मन, शरीर के साथ मन, मौन के साथ मन;

सामान्य मन, स्मरण में मन, स्मरण की अवस्था, भटकने से बचने की अवस्था, न भूलने की अवस्था, मन का मूल, मन की शक्ति, सचेतनता का आधार, और बिना विभाजक वाला मार्ग, ये सभी सचेतनता कहलाते हैं। इस विचार को धारण करना, पूर्णतः उसमें लीन होना, इस विचार को प्राप्त करना, पूर्णतः उसमें लीन होना, इस विचार को धारण करना, ये सभी सचेतन कहलाते हैं।

"वह इस संसार में प्रेम को सचेतन रूप से पार कर जाता है": संसार में प्रेम, या संसार का प्रेम, वह सचेतन रूप से पार करता है, उससे परे जाता है, उसे पार करता है, उससे आगे निकल जाता है और उस पर विजय प्राप्त करता है।

4. खेत, जमीन या सोना, मवेशी, घोड़े, गुलाम, नौकर, स्त्रियाँ, रिश्तेदार; विभिन्न इच्छाएँ रखना, लालच में लिप्त लोग।

"खेत, ज़मीन या सोना": "खेत" से तात्पर्य धान के खेत, धान के खेत, मटर के खेत, चौड़ी फली के खेत, जौ के खेत, गेहूं के खेत और अलसी के खेत से है। "ज़मीन" से तात्पर्य आवासीय भूमि, गोदाम की ज़मीन, सामने का आंगन, पीछे का आंगन, बगीचा या निवास स्थान से है। "सोना" को मुद्रा कहा जाता है।

"गाय, घोड़े, दास, नौकर": "गाय (बैल)" को गाय (बैल) कहा जाता है। "घोड़ों" को पशुधन कहा जाता है, इत्यादि। "दास" चार प्रकार के होते हैं: घर में जन्मे दास, पैसे देकर खरीदे गए दास, स्वयं दास बने दास, या अनैच्छिक रूप से दास बने दास।

"स्त्रियाँ, रिश्तेदार, विभिन्न इच्छाएँ": "स्त्रियाँ" से तात्पर्य उन महिलाओं (पत्नी) से है जो उनकी अपनी हैं। "रिश्तेदार" चार प्रकार के रिश्तेदार होते हैं: रिश्तेदार वे होते हैं जो एक ही उपनाम साझा करते हैं, (साथी) शास्त्र संबंधी (पवित्र) रिश्तेदार भी रिश्तेदार होते हैं, (साथी) कुशल रिश्तेदार (व्यापार में) भी रिश्तेदार होते हैं। "विभिन्न इच्छाएँ" अनेक इच्छाएँ हैं: ये विभिन्न इच्छाएँ वांछनीय रूपों से प्रभावित होती हैं...(अंशित)।

"लोग लोभ का अनुसरण करते हैं": "कौन," .... "लोग," .... "लोभ का अनुसरण करते हैं," प्रदूषण की इच्छा के साथ, वह लालची है, इच्छा रखता है, और वस्तुओं की इच्छा से बंधा हुआ है।

5 · (यहाँ तक कि) शक्तिहीन भी उसे जीत लेते हैं, सभी खतरे उसे कुचल देते हैं, फिर दुख उसका पीछा करता है, जैसे टूटे हुए जहाज में पानी।

"कमजोर उसे जीत लेते हैं": कमजोर, दुर्बल, कम शक्तिशाली, कम बलवान, हीन, नीच, घटिया इरादे वाले, तुच्छ प्रदूषण, ये प्रदूषण उस व्यक्ति को पूरी तरह से जीत लेते हैं, पराजित कर देते हैं, कुचल देते हैं, समाप्त कर देते हैं। या, कमजोर, दुर्बल, ...: कोई भी व्यक्ति जिसमें विश्वसनीयता, शक्ति, बुद्धि, एकाग्रता या ज्ञान नहीं है, लज्जित, वे लोग जो प्रदूषण द्वारा उस व्यक्ति को जीत लेते हैं, पराजित कर देते हैं, कुचल देते हैं, समाप्त कर देते हैं और समाप्त कर देते हैं।

"सभी खतरे उसे कुचल देते हैं": खतरे दो प्रकार के होते हैं: प्रत्यक्ष खतरा और अप्रत्यक्ष खतरा। प्रत्यक्ष खतरे क्या हैं? शेर, बाघ, तेंदुए, भालू, कुत्ते, भेड़िये, बाइसन, हाथी, सांप, बिच्छू, कनखजूरे, या चोर या गुंडे जो बुरे काम करते हैं या करने को तैयार हैं; आंखों की बीमारियां, कान की बीमारियां, नाक..., जीभ, शरीर, सिर, बाहरी कान, मुंह, दांतों की बीमारियां; खांसी, घरघराहट, नाक के बाहरी रोग, बुखार, वृद्धावस्था, पेट के रोग, कोमा, दस्त, पेट दर्द, हैजा, कुष्ठ रोग, ट्यूमर, दाद, फेफड़ों के रोग, मिर्गी, खुजली, गठिया दाद, खरोंच (रोग), सूखी और फटी त्वचा, रक्त पित्त रोग, मधुमेह, बवासीर, दाने (फोड़े), बवासीर (अल्सर), पित्ताशय के रोग, कफ के रोग, हवा के

कारण, (तीन) मौसम परिवर्तन के कारण, अनुचित मुद्रा के कारण, अचानक हमले, कर्म, सर्दी, गर्मी, भूख, प्यास, मल, मूत्र, मक्खी, मच्छर, सूर्य, सांप आदि के संपर्क में आने से होने वाले रोग; इन्हें स्पष्ट खतरे कहा जाता है।

छिपे हुए खतरे क्या हैं? शरीर के बुरे कर्म, वाणी के बुरे कर्म, इरादे के बुरे कर्म, इच्छा का आवरण, द्वेष का आवरण, नींद का आवरण, पदावनति और पश्चाताप का आवरण, संदेह का आवरण, लोभ, घृणा, अज्ञानता, क्रोध, द्वेष, बुराई को छुपाना, प्रभुत्व (मनमानी, हुक्म चलाना, अत्याचार), ईर्ष्या, कंजूसी, छल, चालाकी, हठ, वासना, अहंकार, पाखंड, आराम करना (विश्राम करना), सभी प्रकार के प्रदूषण, सभी बुरे कर्म, सभी परेशानियाँ, सभी प्रकार की चिंताजनक गर्मी, सभी प्रकार की गर्मी और सभी अस्वास्थ्यकर कर्म, ये सभी छिपे हुए गुप्त खतरे कहलाते हैं।

"खतरा," खतरे का क्या अर्थ है? "हर जगह जीत हासिल करना" खतरा है; "पीछे हटने का मार्ग दिखाना" खतरा है; "वहाँ रहना" खतरा है। "हर जगह जीत हासिल करना" खतरा कैसे है? वे खतरे जो किसी व्यक्ति को जीत लेते हैं, पराजित कर देते हैं, अभिभूत कर देते हैं, समाप्त कर देते हैं और कुचल देते हैं, वे ही "हर जगह जीत हासिल करना" के रूप में संकट हैं।

“मार्गदर्शन द्वारा पश्चात्ताप” किस प्रकार खतरनाक है? वे बाधाएँ और पश्चात्ताप जो संकट में पड़े उत्तम धर्म की ओर ले जाते हैं; कौन सा उत्तम धर्म? सही मार्ग, अनुसरण करने वाला मार्ग, वह मार्ग जो उलटा नहीं जाता, वह मार्ग जो विरोधाभास नहीं करता (विरोधाभास रहित मार्ग), अर्थपूर्ण मार्ग, वह मार्ग जिसमें धर्म धर्म का अनुसरण करता है, सभी नियम परिपूर्ण हैं, मूलों की रक्षा करना, भोजन की सही मात्रा जानना, संयम और सजगता में निपुणता, सही ज्ञान के साथ लगन से अभ्यास करना, चार प्रकार की सजगता, चार प्रकार की परिश्रम, चार दिव्य आधार (इद्धिपाद), पाँच इंद्रियाँ, पाँच शक्तियाँ, सात ज्ञान, पवित्र मार्ग की आठ शाखाएँ; इन सद्‌गुणी धर्मों से विमुख करने वाली बाधाएँ और पश्चात्ताप, यही “मार्गदर्शन द्वारा पश्चात्ताप” के रूप में खतरनाक है।

वहाँ निवास करना किस प्रकार खतरनाक है? वहाँ ये दुष्ट और अस्वास्थ्यकर धर्म व्यक्तियों को नियंत्रित करने के लिए उत्पन्न हुए, जैसे गुफाओं में बिल खोदने वाले जानवर; पानी में रहने वाले जलीय जीव; जंगल में रहने वाले वन जीव; पेड़ों पर रहने वाले वृक्षवासी जीव। इसी प्रकार, ये दुष्ट और अस्वास्थ्यकर धर्म परस्पर निर्भरता को जन्म देते हैं।

भगवान बुद्ध ने कहा: [SN.35.151] "भिक्षुओं! शिष्यों और गुरुओं वाले भिक्षु दुख और बेचैनी में रहते हैं। और, भिक्षुओं! शिष्यों और गुरुओं वाले भिक्षु दुख और बेचैनी में कैसे रहते हैं? (आँखों से देखने के बाद,) गाँठ के साथ आने वाले बुरे और अस्वास्थ्यकर धर्मों की स्मृतियों और इरादों को जन्म देते हैं। 'वे उसमें निवास करते हैं; बुरे और अस्वास्थ्यकर धर्म उसमें निवास करते हैं और प्रवेश करते हैं (अधिकार प्राप्त करते हैं)।' इसलिए, उसे 'शिष्य रखने वाला' कहा जाता है। 'वे उसे जीत लेते हैं; बुरे और अस्वास्थ्यकर धर्म उसे जीत लेते हैं।' इसलिए, उसे 'गुरु' कहा जाता है।"

इसके अलावा, भिक्षुओं! कान से ध्वनि सुनने के बाद..., नाक से गंध सूंघने के बाद..., जीभ से स्वाद चखने के बाद..., शरीर से स्पर्श का अनुभव करने के बाद..., चेतना से धम्म का ज्ञान प्राप्त करने के बाद... भिक्षुओं! इस प्रकार भिक्षु अपने शिष्यों और गुरुओं के साथ दुख और बेचैनी में रहते हैं।

भगवान बुद्ध ने कहा [इत.88]: “भिक्षुओं! तीन प्रकार की आंतरिक गंदगी होती है: आंतरिक शत्रु, आंतरिक दुश्मन, आंतरिक हत्यारे और आंतरिक शिकायतें। भिक्षुओं! लोभ आंतरिक गंदगी है, आंतरिक दुश्मन है...; भिक्षुओं! दुःख...; भिक्षुओं! आसक्ति...। भिक्षुओं! ये तीन प्रकार की आंतरिक गंदगी हैं: आंतरिक शत्रु, आंतरिक दुश्मन, आंतरिक हत्यारे और आंतरिक शिकायतें।”

लोभ किसी लाभ का कारण नहीं है, लोभ हृदय को कंपकंपा देता है, इससे भय उत्पन्न होता है और लोग इसे समझ नहीं पाते। लोभी व्यक्ति लाभों को नहीं जानता, लोभी व्यक्ति धर्म को नहीं देख पाता, उस समय वह अंधा और अंधकारमय होता है: जो लोभ से पराजित हो सकता है। क्रोध किसी लाभ का कारण नहीं है, क्रोध हृदय को कंपकंपा देता है, इससे भय उत्पन्न होता है और लोग इसे समझ नहीं पाते। क्रोधित व्यक्ति लाभों को नहीं जानता, क्रोधित व्यक्ति धर्म को नहीं देख पाता, उस समय वह अंधा और अंधकारमय होता है: जो पराजित हो सकता है। मूर्खता किसी लाभ का कारण नहीं है, मूर्खता हृदय को कंपकंपा देती है, इससे भय उत्पन्न होता है और लोग इसे समझ नहीं पाते। मूर्ख लाभों को नहीं जानते, मूर्ख धर्म को नहीं देख पाते, उस समय वह अंधा और अंधकारमय होता है: जो पराजित हो सकता है।

भगवान बुद्ध ने कहा [सं. 3.2]: "हे महाराज! जब मनुष्य के भीतर तीन धर्म उत्पन्न होते हैं, तो हानि, पीड़ा और बेचैनी उत्पन्न होती है। वे तीन कौन से हैं? हे महाराज! जब मनुष्य के भीतर लोभ उत्पन्न होता है, तो हानि, पीड़ा और बेचैनी उत्पन्न होती है; हे महाराज! जब मनुष्य के भीतर आक्रमण उत्पन्न होता है... हे महाराज! जब मनुष्य के भीतर मूर्खता उत्पन्न होती है, ...।"

"एक लालची, घृणास्पद, मूर्ख, द्वेषपूर्ण व्यक्ति स्वयं को उसी प्रकार हानि पहुँचाता है, जैसे अनेक फल मिलकर पेड़ के हृदय को क्षति पहुँचाते हैं।"

भगवान बुद्ध ने कहा: [SN.10.3] "यहीं से लोभ और क्रोध, दुख, सुख और भय उत्पन्न होते हैं (शाब्दिक रूप से शरीर के रोंगटे खड़े हो जाते हैं); यहीं से इरादा उत्पन्न होता है, जैसे कोई छोटा लड़का कौवे को जाने देता है।"

"दुख उसे कुचल देते हैं": वे दुख उस व्यक्ति को जीत लेते हैं, पराजित कर देते हैं, अभिभूत कर देते हैं, समाप्त कर देते हैं और कुचल देते हैं।

"इसके बाद, दुख उसका पीछा करता है": "इसके बाद," विपत्ति व्यक्ति का पीछा करती है; जीवन व्यक्ति का पीछा करता है; बुढ़ापा..., बीमारी..., मृत्यु..., शोक, निराशा, नरक का कष्ट, पशु जगत का कष्ट, प्रेतलोक का कष्ट, मानवीय कष्ट...; गर्भ में प्रवेश करने का कष्ट..., माँ के गर्भ का कष्ट, जन्म के बंधन का कष्ट, जन्म, दूसरों द्वारा दिया गया कष्ट, स्वयं द्वारा लाया गया कष्ट, दूसरों के उत्पीड़न का कष्ट...; आँखों के रोग, कानों के रोग..., और मक्खी, मच्छर, सूर्य और साँप के संपर्क का दर्द...; माँ, पिता, भाई, बहन को खोने का दर्द, पुत्र, पुत्री को खोने का दर्द, परिवार का नुकसान, संपत्ति का नुकसान, बीमारी से हानि, पुण्य का नुकसान, दृष्टि का नुकसान...।

"जैसे पानी टूटे हुए जहाज के लिए होता है": जैसे टूटा हुआ जहाज पानी में होता है, वैसे ही पानी उसका पीछा करता है, उसके साथ चलता है और उसका अनुयायी बन जाता है; आगे से पानी उसका पीछा करता है, उसके साथ चलता है और उसका अनुयायी बन जाता है; पीछे से..., नीचे से..., बगल से...। ठीक उसी तरह, दुख पीछा करते हैं, व्यक्ति का अनुसरण करते हैं, उसका अनुयायी बन जाते हैं; जीवन का दुख पीछा करता है...(अंतःखंडित)।

6. इसलिए जो लोग हमेशा सचेत रहते हैं, और सभी इच्छाओं से बच सकते हैं, वे इन इच्छाओं को त्यागकर धारा को पार कर सकते हैं, जैसे जहाज से पानी निकालकर दूसरे किनारे तक पहुँचना।

इसलिए, एक व्यक्ति जो हमेशा सचेत रहता है: इसलिए; कारण; वजह; स्थिति; कारण, जब आप इच्छाओं में यह दोष देखते हैं। "व्यक्ति," .... "हमेशा," हमेशा; सब कुछ; हर समय; स्थिर; शाश्वत; निरंतर; लगातार; निर्बाध; क्रमिक रूप से; जैसे पानी की लहरें

बिना अंतराल के उठती हैं; लगातार साथ और स्पर्शित; दोपहर से पहले, दोपहर, रात के पहले (पहर), आधी रात और रात के आखिरी (पहर); अमावस्या में, उजाले में और बरसात के मौसम में, सर्दी, गर्मी; जवानी में, मध्यम आयु में और बुढ़ापे में। "सचेत," ....

"सभी इच्छाओं से बचा जा सकता है": "इच्छा," .... "सभी इच्छाओं से बचा जा सकता है," सभी इच्छाओं से दो तरीकों से बचा जा सकता है: उन्हें दबाकर या उनसे नाता तोड़कर...।

"जो लोग इस उफान से बच सकते हैं": "वे लोग," जो वस्तुओं की इच्छा को जान लेते हैं, अपवित्रता की इच्छा को त्याग देते हैं, त्याग देते हैं, भगा दिए जाते हैं, समाप्त कर देते हैं और उसका अस्तित्व समाप्त कर देते हैं; इच्छा की इच्छा को त्याग से ढक देते हैं, त्याग के बाद, बेदखली के बाद, अंत के बाद और उसका अस्तित्व समाप्त कर देते हैं; द्वेष का आवरण..., नींद का आवरण..., पदावनति और पछतावे का आवरण..., संदेह का आवरण..., ...उसे अस्तित्वहीन कर देने के बाद, इच्छा का उफान, अस्तित्व का उफान, देखने का उफान, अज्ञान का उफान, वह पार कर सकते हैं, उससे आगे निकल सकते हैं, उसे पार कर सकते हैं और उस पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

"जैसे कोई जहाज से पानी निकालकर दूसरे किनारे पर पहुँच जाता है": जैसे किसी भार से लदे भारी जहाज को निकालकर, उसका पानी निकालकर, हल्के जहाज में भर दिया जाता है, तो वह आसानी से दूसरे किनारे पर पहुँच जाता है। उसी प्रकार, जब कोई व्यक्ति वस्तुओं की इच्छा को जान लेता है, जब वह अशुद्धता की इच्छा का त्याग कर देता है, ..., ...जब वह उसे अस्तित्वहीन कर देता है, तो वह आसानी से दूसरे किनारे पर पहुँच जाता है। दूसरे किनारे को निर्जीव, निर्वाण कहा जाता है, अर्थात् सभी कर्मों का अंत, सभी आसक्तियों का अंत, लालसा, लोभ का अंत, और निर्वाण। "दूसरे किनारे पर जा सकता है," दूसरे किनारे पर पहुँच सकता है; दूसरे किनारे पर आ सकता है; दूसरे किनारे की गवाही दे सकता है। "जो कोई दूसरे किनारे पर पहुँच गया है," जो कोई दूसरे किनारे पर जाना चाहता है, वही दूसरे किनारे पर पहुँच गया है; जो कोई दूसरे किनारे पर जाता है, वही दूसरे किनारे पर पहुँच गया है; जो कोई दूसरे किनारे पर पहुँच गया है, वही वह व्यक्ति है जो दूसरे किनारे पर पहुँच गया है।

भगवान बुद्ध ने कहा: [SN.35.238] "मैं दूसरे तट पर पहुँच गया हूँ, और ब्राह्मण ऊँचे स्थान पर खड़ा है। भिक्षुओं!" 'ब्राह्मण' अरहंत का पर्यायवाची है। उसने दूसरे तट तक पहुँचने का प्रमाण दिया है; दूसरे तट पर रहने वाले; अभ्यास द्वारा दूसरे तट तक पहुँचने वाले; ...साक्ष्य देकर; ...सभी धर्मों के ज्ञान द्वारा; ...सभी दुखों के ज्ञान द्वारा; ...सभी अशुद्धियों का त्याग करके; ...चार पवित्र मार्गों के अभ्यास द्वारा; विनाश का साक्षी देने वाले दूसरे तट तक पहुँचते हैं; जो दूसरे तट तक पहुँचने की प्रतीक्षा करता है, वह उपदेशों में मुक्त होकर सर्वोच्च प्राप्ति करता है; पवित्र संकल्प में मुक्त होकर वह दूसरे पक्ष तक पहुँच चुका है; पवित्रता की सीमाओं पर, सर्वोच्च प्राप्ति; पवित्र मुक्ति पर, सर्वोच्च प्राप्ति, वह दूसरे तट तक पहुँच चुका है; जो दूसरे तट तक पहुँच चुके हैं, वे परम (लक्ष्य) तक पहुँच चुके हैं; ...परम..., अंत; ...सीमा (परम); ...समाप्त करने वाला; ...बचाव; ...शरण; ...आश्रय; ...कोई भय नहीं; ...कोई मृत्यु नहीं; ...अमरता; ...अमरता प्राप्त करने वाला व्यक्ति। निर्वाण प्राप्त कर लिया है। जो निर्वाण प्राप्त कर लेता है, वह अवतरित हो चुका है, अभ्यास कर चुका है, यात्रा पूर्ण कर चुका है, दिशा तक पहुँच चुका है, अंत तक पहुँच चुका है; ब्रह्म की रक्षा करने वाले, सर्वोच्च दृष्टि प्राप्त करने वाले, मार्ग का अभ्यास करने वाले, अशुद्धता का त्याग करने वाले, अविचल रहने वाले, निर्वाण की गवाही देने वाले, उन्हीं के लिए ज्ञात हैं, एकत्रित हुए हैं और त्याग कर चुके हैं, और मार्ग का अभ्यास किया है और निर्वाण की गवाही दी है, जो ज्ञात होने योग्य सिद्ध हुए हैं, जो ज्ञात हो सकने वाली बातों को जान चुके हैं, ...जिसका त्याग करना चाहिए उसका त्याग कर चुके हैं, ...जिसका अभ्यास करना चाहिए उसका अभ्यास कर चुके हैं, ...जिसकी गवाही देनी चाहिए उसकी गवाही दे चुके हैं।

वह है जिसकी बाधा दूर हो गई है, जिसकी खाई भर गई है, जिसका स्तंभ उखाड़ दिया गया है, जिसका कोई कुंडी नहीं है, जिसका पवित्र ध्वज गिर गया है, जिसका बोझ हटा दिया गया है, जो अलग हो गया है, जिसकी पाँच शाखाएँ काट दी गई हैं और जिसकी छह शाखाएँ

हैं। जिनके पास एक संरक्षक और चार सहारा हैं, वे हैं जिनके सत्य दूर हो गए हैं, जो त्याग और पूर्णतः क्षय की तलाश में हैं, जिनके कोई अशुद्ध इरादे नहीं हैं, जिन्होंने अपने जीवन को शांत कर लिया है, जो दयालु और मुक्त हैं, जो ज्ञान में मुक्त हैं, सर्वोच्च व्यक्ति, सर्वोच्च व्यक्ति, जिसने सर्वोच्च सिद्धि प्राप्त कर ली है, जो न तो रचना करता है और न ही विघटन करता है, न ही संचय करता है और फिर खड़ा रहता है; न तो त्यागता है और न ही आसक्ति रखता है, बल्कि त्यागने के बाद खड़ा रहता है; न तो विलीन करता है और न ही संचय करता है, और विलीन करने के बाद स्थिर रहता है; न बुझाना और न जलाना, बुझाने के बाद खड़े रहना [SN.22.79], अज्ञान की अवस्था है, स्थिर व्यक्ति..., अज्ञान की विलक्षणता..., अज्ञान की बुद्धि..., अज्ञान की मुक्ति समुच्चय..., वे निवासी जो बुद्धि बोध की अज्ञान की मुक्ति की अवस्था में हैं, वे निवासी जिन्होंने वास्तविकता को पूर्ण और भेद दिया है, वे जो विक्षोभ (उन्माद) से गुजर चुके हैं, वे जो प्रदूषण की आग बुझने के बाद खड़े हैं, वे जो अब बिल्कुल नहीं आ रहे हैं, वे जिन्होंने विजय प्राप्त कर ली है, और वे जो उपयोग से मुक्त हो चुके हैं, एक व्यक्ति जो करुणामय और शुद्ध है..., करुणा..., आनंद..., एक व्यक्ति जो शांत और शुद्ध है, एक व्यक्ति जो शुद्ध और सर्व-शुद्ध है, गैर-पहचान की अवस्था, मुक्त अवस्था में रहने वाला, संतुष्ट अवस्था में रहने वाला, परम (सीमा) में रहने वाला, परम क्षेत्र में रहने वाला, परम स्थान में रहने वाला, रुचि के स्थान में परम। उपरोक्त के निवासी, पुनर्जन्म में परम के निवासी, पुनर्जन्म में परम के निवासी, अस्तित्व में परम के निवासी, संसार में परम के निवासी, पुनर्जन्म में परम के निवासी, परम चाल में रहने वाला, अंतिम में सर्वोच्च स्थान रखने वाला, अंतिम (शरीर) में एकत्रित करने वाला, अंतिम शरीर धारण करने वाला अरहंत।

"यह उनका अंतिम है, यह अंतिम मिलन (शरीर) है, जीवन और मृत्यु का चक्र, उनके पुनर्जन्म के बिना।"

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> निद्देसा >> निद्देसा 1.2

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

<<<< पिछला अगला >>>>

2. गुफा

7 · गुफा में फंसा हुआ, अनेक (अपवित्रताओं) से ढका हुआ, मूर्खता में डूबा हुआ, उस तरह का व्यक्ति (एकांत से) बहुत दूर है, क्योंकि दुनिया में इच्छाओं को छोड़ना आसान नहीं है।

"गुफा में, अनेकों से ढका हुआ": "गुफा," जैसे कोई जानवर एक बंद गुफा में है। गुफा को शरीर कहा जाता है, "शरीर" या "गुफा" या "संचय" या "नाव" या "गाड़ी" या "झंडा" या "चींटी का टीला" या "किला" या "घोंसला" या "झोपड़ी" या "ट्यूमर" या "कलश" (या "हाथी"), ये सभी शरीर हैं, जो "गुफा में फंसा हुआ" के पर्यायवाची हैं; गुफा में वह फंसा हुआ, उलझा हुआ, लटका हुआ, जुड़ा हुआ, स्थिर और अवरुद्ध है, जैसे कोई वस्तु दीवार पर लगे ढेर या हुक पर फंसी या उलझी हुई हो, लटकी हुई, जुड़ी हुई, स्थिर और अवरुद्ध हो। इसी प्रकार, गुफा में वह फंसा हुआ, उलझा हुआ, लटका हुआ, जुड़ा हुआ, स्थिर और अवरुद्ध है।

भगवान बुद्ध कहते हैं: [SN.23.2-3] "राधा! सभी इच्छाएँ, लोभ, आनंद, प्यास, प्रेम, आसक्ति, लगाव, जकड़न, कष्टों की संभावित प्रवृत्ति, वहाँ आसक्ति और वहाँ प्रबल आसक्ति, ये सब 'प्राणी' कहलाते हैं; राधा! ...भावना..., बोध, ...चुनाव, चेतना..., 'सभी प्राणी' कहलाते हैं।" "चेतन प्राणी" "आसक्ति" का पर्यायवाची है, जिसका अर्थ है गुफा में फँस जाना। "अत्यंत व्यापक रूप से आच्छादित," अनेक अशुद्धियों से आच्छादित, लोभ से आच्छादित, ...घृणा, भ्रम, क्रोध, आक्रोश, गुप्त बुराई, प्रभुत्व, ईर्ष्या, कंजूसी, छल, धूर्तता, हठ, वासना, आलस्य, अति आलस्य, सुस्ती, भोग-विलास; सभी अशुद्धियों, सभी बुरे कर्मों, सभी कष्टों, सभी चिरस्थायी गर्मी, सभी जलनों से आच्छादित, सभी बुरी आदतों से आच्छादित, विस्तृत आवरण, ऊपरी आवरण, अवरोध (अवरोध), आवरण, अवरोध, बंद करना, ढकना।

“जो व्यक्ति ठहरता है, वह अज्ञान में डूब जाता है”: जब लोग ठहरते हैं, तो लालची व्यक्ति लालच के कारण ठहरता है; क्रोधी व्यक्ति क्रोध के कारण ठहरता है; मूर्ख व्यक्ति अज्ञान के कारण ठहरता है; बंधा हुआ व्यक्ति अहंकार के कारण ठहरता है; आसक्ति रखने वाला व्यक्ति दृष्टि के कारण ठहरता है; अव्यवस्था में आने वाला व्यक्ति बिखराव के कारण ठहरता है; निष्कर्ष पर न पहुँचने वाला व्यक्ति संदेह के कारण ठहरता है; धैर्य रखने वाला व्यक्ति संभावित विपत्तियों के कारण ठहरता है।

भगवान बुद्ध ने कहा: “भिक्षुओं! कुछ रूप ऐसे हैं जिन्हें आँखों से देखा जा सकता है, जो मनभावन, सुंदर, आकर्षक और लोभ से भरे होते हैं। यदि भिक्षु उनमें प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करें, उनका स्वागत करें और उनसे जुड़े रहें, तो उन्हें यह जानना चाहिए, 'मेरी कुशलता कम हो रही है, इसी को भगवान बुद्ध पतन कहते हैं।' भिक्षुओं! कुछ ध्वनि ऐसी है जिसे कान से सुना जा सकता है..., कुछ गंध ऐसी है जिसे नाक से सुना जा सकता है..., कुछ स्वाद ऐसा है जिसे जीभ से महसूस किया जा सकता है..., कुछ स्पर्श ऐसा है जिसे शरीर द्वारा जाना जा सकता है..., (धर्म) ऐसा है जिसे चेतना द्वारा जाना जा सकता है, जो लोगों में इच्छा उत्पन्न करता है; यदि भिक्षु प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करें, उनका स्वागत करें... ।” [SN.35.98]

भगवान बुद्ध ने कहा: “भिक्षुओं! जब चेतना रूप में लीन रहती है, तो वह रूप में ही स्थिर रहती है, रूप पर टिकी रहती है, रूप द्वारा ही समर्थित होती है, और उसमें आनंद की थोड़ी सी मात्रा होने पर वह बढ़ती और फैलती है। भिक्षुओं! जब चेतना भाव में लीन रहती है..., ...बोध में... ।” [संख्या 22.53]

भगवान बुद्ध ने कहा: “भिक्षुओं! यदि भौतिक भोजन में लोभ, प्रसन्नता और प्यास हो, तो चेतना स्थापित और विकसित होती है; जहाँ चेतना स्थापित और विकसित होती है, वहाँ नाम और रूप का जन्म होता है; जहाँ नाम और रूप का जन्म होता है, वहाँ कर्म होते हैं; जहाँ कर्मों की वृद्धि होती है, वहाँ पुनर्जन्म का जन्म होता है; जहाँ पुनर्जन्म का जन्म होता है, वहाँ जन्म, वृद्धावस्था और मृत्यु होती है; जहाँ जन्म, वृद्धावस्था और मृत्यु होती है, भिक्षुओं! मैं कहता हूँ: 'वहाँ दुःख, शोक और निराशा होती है।'” [SN.12.64]

“भिक्षुओं! यदि संपर्क में... भिक्षुओं! यदि संपर्क की इच्छा हो... भिक्षुओं! यदि संपर्क के लिए लोभ, आनंद और प्यास हो..., तो मैं कहता हूँ, ‘दुःख, शोक और निराशा है’ ।” [SN.12.64]

“मूर्खता में डूबना,” मूर्खता को पाँच इच्छाएँ कहा जाता है: आँखों से पहचाना जा सकने वाला रूप, मनभावन, प्यारा, आकर्षक, दिखने में सुंदर, इच्छाओं से युक्त, और रूप के प्रति लालच; ध्वनि..., गंध..., स्वाद..., स्पर्श...। मूर्खता को पाँच इच्छाएँ क्यों कहा जाता है? अधिकांश दिनों में, लोग पाँच इच्छाओं में मूर्ख, अज्ञानी और भ्रमित हो जाते हैं, मूर्ख, अज्ञानी और भ्रमित होकर, अवरुद्ध, घिरे हुए, अवरुद्ध, बंद, ढके हुए, छिपे हुए हो जाते हैं; इसी कारण मूर्खता को पाँच इच्छाएँ कहा जाता है। “मूर्खता में डूबना,” मूर्खता में डूबना, प्रवेश करना, चुपके से प्रवेश करना और मूर्खता में गिर जाना।

“उस जैसे व्यक्ति के लिए, वह वास्तव में बहुत दूर है”: “दूर,” दूरी तीन प्रकार की होती है: देह दूरी, हृदय दूरी और आसक्ति दूरी। देह दूरी क्या है? यहाँ, भिक्षु निकट और एकांत में रहते हैं: जंगलों में, वृक्षों के नीचे, पहाड़ों में, गुफाओं में, श्मशान में, जंगलों में, खुले मैदानों में, भूसे के ढेरों में, शरीर से दूर रहकर [नी.14, 150], वह अकेले चलते हैं, अकेले खड़े होते हैं, अकेले बैठते हैं, अकेले लेटते हैं, भिक्षा मांगने के लिए अकेले गाँव में प्रवेश करते हैं, अकेले लौटते हैं, किसी शांत स्थान पर अकेले बैठते हैं, अकेले प्रार्थना करते हैं, चलते हैं, ठहरते हैं, कार्य करते हैं, आगे बढ़ते हैं, रक्षा करते हैं, जीवित रहते हैं, और अकेले जीवन व्यतीत करते हैं, यही शरीर से दूर रहना है।

मन (हृदय) किससे दूर है? प्रथम ध्यान में प्रवेश करने वाले व्यक्ति का मन आवरणों से दूर हो जाता है, द्वितीय ध्यान में प्रवेश करने वाले व्यक्ति का मन खोज और सेवा से विरक्त हो जाता है, तृतीय ध्यान में प्रवेश करने वाले व्यक्ति का हृदय सुख से विरक्त हो जाता है, चतुर्थ ध्यान में प्रवेश करने वाले व्यक्ति का हृदय सुख और दुख से विरक्त हो जाता है, असीम शून्य में प्रवेश करने वाले व्यक्ति का मन पहले से ही विरोधी विचारों से विरक्त होकर सभी प्रकार की इच्छाओं से दूर हो जाता है, चेतना की असीमता में प्रवेश करने वाले व्यक्ति का हृदय असीम शून्य से दूर रहना चाहता है, शून्यता में प्रवेश करने वाले व्यक्ति का मन चेतना की असीमता से दूर रहने का विचार करता है, और विचारहीन व्यक्ति का मन शून्यता से दूर रहना चाहता है। सोतापन्न व्यक्ति का मन दृश्य, संशय, निषेध, अपवित्रता की संभावित प्रवृत्ति, संशय अपवित्रता की संभावित प्रवृत्ति आदि से विरक्त हो जाता है। अस्तित्व की अशुद्धता उससे दूर हो जाती है। अरहंत का हृदय निराकार लोभ, अहंकार, विरक्ति, विरक्ति और कष्ट की सुप्त प्रवृत्ति, विरक्ति और कष्ट की संभावित प्रवृत्ति और उसी अस्तित्व के प्रदूषण से मुक्त होकर परिवर्तित हो गया है। लोभ, विरक्ति और कष्ट की शेष गांठों से, लोभ, विरक्ति और कष्ट की शेष संभावित प्रवृत्तियों और उनसे विद्यमान प्रदूषण से मुक्त होकर, अरहंत का हृदय निराकार लोभ, अहंकार, त्याग, अज्ञान और अहंकार से उत्पन्न कष्ट की संभावित प्रवृत्ति, लोभ और अपराध की सुप्त प्रवृत्ति, अज्ञान अपराध की सुप्त प्रवृत्ति और उससे विद्यमान प्रदूषण से मुक्त होकर बाहरी और सर्वस्व से दूरी प्राप्त कर लेता है। यही मन से दूरी है।

आसक्ति से दूर रहना क्या है? आसक्ति को अशुद्धता और विभिन्न कर्मों का समूह कहा जाता है; आसक्ति से दूर रहना निर्जीवता, निर्वाण कहलाता है, अर्थात् सभी कर्मों का अंत, सभी आसक्ति का अंत, व्यथा का अंत, और निर्वाण। यही दूर रहना है। शरीर से दूर रहना शरीर के निरंतर वियोग और इच्छा को त्यागने की इच्छा से संबंधित है; मन से दूर रहना हृदय की पवित्रता और परम पवित्रता से संबंधित है; आसक्ति से दूर रहना अनासक्त व्यक्ति से संबंधित है, जो मुक्ति प्राप्त करता है।

"वह सचमुच बहुत दूर है," जहाँ वह गुफा में फंसा हुआ है, इतने सारे लोगों से घिरा हुआ, मूर्खता में इतना डूबा हुआ, वह शरीर से दूर है; हृदय से भी दूर; निर्भरता से भी दूर, बहुत दूर, पास नहीं; उस जगह पर जहाँ से उसे खींचा जा रहा है। "उस तरह के व्यक्ति की तरह," उसी तरह, उसी निवास से संबंधित, उसी तरह का, उसी के समान, जो मूर्खता में डूबा हुआ है।

"क्योंकि संसार की इच्छाओं का त्याग करना आसान नहीं है": "इच्छा," दो प्रकार की इच्छाएँ होती हैं: वस्तुओं की इच्छा और प्रदूषण की इच्छा। वस्तुओं की इच्छाएँ क्या हैं? ...(अधूरा भाग, पिछले अनुभाग देखें)।

प्रदूषण की इच्छा क्या है? ...(विकल्प हटा दिया गया है, पिछले अनुभाग देखें)।

"इच्छा की उन जड़ों को देखकर, जो विचार (इच्छा) से उत्पन्न होना चाहती हैं, मैं उनके बारे में नहीं सोचूंगा, इसलिए इच्छा का अस्तित्व नहीं होगा।" [जात.8.421]

इन्हें प्रदूषण की इच्छा कहा जाता है। "संसार में": ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)। "क्योंकि इच्छाओं के संसार को त्यागना वास्तव में आसान नहीं है": क्योंकि इच्छाओं के संसार में त्यागना कठिन है, संबंध तोड़ना कठिन है, तोड़ना (जीतना) कठिन है, बंधन तोड़ना कठिन है, सुलझना कठिन है, मुक्त करना कठिन है, भागना कठिन है, विजय प्राप्त करना कठिन है, उड़ान भरना कठिन है और गुजरना कठिन है।

8. अपनी इच्छाओं को पूरा करने के सुख से बंधे होने के कारण, उनसे छुटकारा पाना मुश्किल होता है क्योंकि अन्य लोगों से कोई स्वतंत्रता नहीं होती है। भविष्य की ओर या अतीत की ओर देखते हुए, वे इन इच्छाओं या अतीत की इच्छाओं की प्रतीक्षा करते हैं।

“इच्छा के कारण प्राप्ति के सुख से बंधे रहना”: इच्छा को लालसा कहा जाता है, यानी लोभ..., ये अस्वस्थ मूल हैं। “इच्छा के कारण से”, इच्छा को कारण मानकर, इच्छा को कारण मानकर, इच्छा को मूल कारण मानकर।

“सुख से बंधे रहना,” एक प्रकार का सुख: सुख; दो प्रकार के सुख: सुख और संतुष्टिदायक वस्तुएँ; तीन प्रकार के सुख: यौवन, रोगमुक्ति और जीवन; चार प्रकार के सुख: लाभ, प्रसिद्धि, प्रशंसा और शांति; पाँच प्रकार के सुख: मनभावन रूप, मनभावन ध्वनि, मनभावन गंध, मनभावन स्वाद, मनभावन स्पर्श; छह प्रकार के सुख: आँख, कान, नाक, जीभ, शरीर और मन से संबंधित। सुख के आनंद से बंधे रहना: सुख की खुशी से बंधे रहना, संतुष्टि से बंधे रहना, यौवन से बंधे रहना, रोगमुक्ति से बंधे रहना, जीवन से बंधे रहना, लाभ से बंधे रहना, प्रतिष्ठा से बंधे रहना, प्रशंसा से बंधे रहना, आराम से बंधे रहना; मनभावन रूप, ध्वनि, गंध, स्वाद और स्पर्श से बंधे रहना; आँख, कान, नाक, जीभ और शरीर से बंधे रहना; बंधे रहना, जुड़े रहना, स्थिर रहना, अवरुद्ध रहना।

“इनसे छुटकारा पाना कठिन है क्योंकि ये दूसरों द्वारा मुक्त नहीं होते”: सुखदायक चीजों से छुटकारा पाना कठिन है, या सभी प्राणियों को मुक्त करना कठिन है। चीजों में सुख का अनुभव करना उनके लिए क्यों कठिन है? सुख से छुटकारा पाना कठिन है, संतुष्टिदायक चीजों से छुटकारा पाना कठिन है, यौवन से छुटकारा पाना कठिन है, ...; अलग होना कठिन है, घुलना कठिन है, मुक्त होना कठिन है, खोलना कठिन है, पार पाना कठिन है, गुजरना कठिन है।

प्राणियों को यहाँ से मुक्ति पाना इतना कठिन क्यों है? सजीव प्राणियों के लिए सुख से छुटकारा पाना कठिन है, सुखदायक चीजों से मुक्ति पाना कठिन है, यौवन से मुक्ति पाना कठिन है...; इससे बाहर निकलना कठिन है, पूरी तरह से बाहर निकलना कठिन है, ऊपर उठना कठिन है, पूरी तरह से ऊपर उठना कठिन है, बंधन तोड़ना कठिन है, मुक्ति पाना कठिन है..., इससे गुजरना कठिन है।

“क्योंकि वे दूसरों द्वारा मुक्त नहीं होते,” इसलिए जो स्वयं कीचड़ में गिर गए हैं, वे दूसरों को भी नहीं निकाल सकते जो कीचड़ में गिर गए हैं। भगवान बुद्ध ने कहा: “चुंड! 'मैं स्वयं कीचड़ में हूँ और दूसरों को भी कीचड़ से निकालूँगा।' यह असंभव है। चुंड! 'स्वयं अनियंत्रित, अप्रशिक्षित और निर्वाणहीन होकर दूसरों को भी निर्वाण प्राप्त कराऊँगा।' यह असंभव है।” [एमएन.8]

या फिर, आपके पास कोई अन्य मुक्तिदाता नहीं हैं; जो लोग मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं, वे अपनी शक्ति, अपने बल, अपनी ऊर्जा, अपने प्रयासों, अपनी सामर्थ्य, अपनी मानवीय शक्ति, अपनी मानवीय ऊर्जा, अपने मानवीय प्रयासों और अपने सही मार्ग का अनुसरण करते हुए, सही मार्ग के अनुसार और धम्म के अनुसार मार्ग का अनुसरण करते हुए मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं।

भगवान बुद्ध ने भी यही कहा है: [नी.22] “मैं, धोतका, संसार में संदेह करने वाले किसी को भी मुक्त नहीं कर पाऊंगा। जब तुम सर्वश्रेष्ठ धम्म को जान लोगे, तभी तुम इस बाढ़ को पार कर पाओगे।”

यह बात धन्य प्रभु ने भी कही है: [दफ़ी.12, 165] “उसने बुराई की है, वह अपवित्र है; जो बुराई नहीं करता, वह शुद्ध होकर आता है; शुद्धता और अशुद्धता अलग-अलग हैं; एक दूसरे को शुद्ध नहीं बना सकता।”

भगवान बुद्ध ने यह भी कहा: “इसी प्रकार, हे ब्राह्मण, निर्वाण स्थिर रहता है, निर्वाण की ओर ले जाने वाला मार्ग स्थिर रहता है, और मेरा उपदेश (शिक्षा) भी स्थिर रहता है। परन्तु जब मेरे शिष्यों को इस प्रकार उपदेश और मार्गदर्शन दिया जाता है, तो उनमें से कुछ निर्वाण की अंतिम अवस्था को प्राप्त कर लेते हैं, और कुछ नहीं। हे ब्राह्मण, मैं यहाँ क्या करूँ? हे ब्राह्मण, तथागत ही मार्गदर्शक हैं। [एमएन.107] बुद्ध ने केवल मार्ग बताया (निर्देशित किया), और जब वे स्वयं उसका अभ्यास करते हैं, तो वे मुक्त हो सकते हैं।”

"भविष्य की, या अतीत की ओर देखना": भविष्य को भविष्य कहा जाता है, और अतीत को अतीत। इसके अलावा, अतीत से चिपके रहने के बाद, भविष्य और वर्तमान पीछे छूट जाते हैं; भविष्य से चिपके रहने के बाद, अतीत और वर्तमान आगे आ जाते हैं। अतीत की ओर देखना कैसा होता है? "अतीत में मेरा ऐसा रूप था," वहाँ आनंद खोजना [MN.132]; "अतीत में मेरी ऐसी भावनाएँ थीं..., अतीत में मेरे ऐसे विचार थे..., अतीत में मेरा ऐसा व्यवहार था..., अतीत में मुझे ऐसा ज्ञान था।" वहाँ आनंद खोजना, यही अतीत की ओर देखना है।

या, "मेरी आँखें वैसी थीं, और मेरा रूप वैसा था।" वहाँ, चेतना इच्छा और लोभ से बंधी होती है; जब चेतना इच्छा और लोभ से बंधी होती है, तो वह आनंदित होती है; जब वह आनंदित होती है, तो यह भी अतीत की अपेक्षा होती है। "मेरे कान वैसे थे, और मेरी आवाज वैसी थी।" ..., "मेरी नाक..., गंध..., ..., ...जीभ, ...स्वाद..., ...शरीर, ...स्पर्श"..., मन..., धर्म...।" वहाँ, चेतना इच्छा और लोभ से बंधी होती है; जब चेतना इच्छा और लोभ से बंधी होती है, तो वह आनंदित होती है; जब वह आनंदित होती है [एम.एन.133], तो यह भी अतीत की अपेक्षा होती है।

या, जो कोई भी पहले महिलाओं के साथ हँसता, बात करता और खेलता था, वह इसका आनंद लेता है, इसकी इच्छा करता है और इसके कारण खुशी प्राप्त करता है [एएन.7.50], जो अतीत की ओर भी देख रहा है।

भविष्य की आशा करना कैसा लगता है? "मैं भविष्य में ऐसा दिखूंगा।" उसमें आनंद की तलाश करना, "भविष्य में मुझे यह अनुभूति होगी... मैं भविष्य में ऐसा सोचूंगा... मैं भविष्य में यह करूंगा... मुझे भविष्य में यह ज्ञान होगा।" उसमें आनंद की तलाश करना, यही भविष्य की आशा करना है।

या, "भविष्य में मेरी आँखें ऐसी होंगी, और मेरा रूप ऐसा होगा।" अनप्राप्त हृदय की आशा रखो, और हृदय की आशा में आनंदित हो; जब तुम उसमें आनंदित होते हो, तो यही भविष्य की अपेक्षा है। "मेरे कान...।" अनप्राप्त हृदय की आशा..., यह भी भविष्य की अपेक्षा है।

या, "मैं इस सद्‌गुण, निषेध, तपस्या और ब्रह्म के द्वारा स्वर्ग में, या स्वर्गों में से एक में विलीन हो जाऊँगा।" अप्राप्त हृदय की आशा...

"इन इच्छाओं की प्रतीक्षा करना, या अतीत की ओर देखना": "इन इच्छाओं में," वर्तमान की पाँच इच्छाएँ, चाहना, पाना, आकांक्षा करना, लालसा करना और प्रार्थना करना। या अतीत की ओर देखना, उत्सुकता से प्रतीक्षा करना, अतीत की पाँच इच्छाओं के लिए प्रार्थना करना और उनसे विनती करना।

9. जो लालची और इच्छाओं में अति उत्साही होते हैं, वे अज्ञानी होते हैं, और जो कंजूस होते हैं, वे कुटिल मार्ग पर अड़े रहते हैं, जब कष्ट भोगते हैं, तो वे विलाप करते हैं: यहाँ से मरने के बाद हम कहाँ होंगे?

"लालची और इच्छाओं में व्याकुल लोग अज्ञानी होते हैं": "इच्छा," इच्छाएँ दो प्रकार की होती हैं... लालसा को ही लोभ कहते हैं... लोभ, लालसा और वस्तुओं की इच्छा से अशुद्धता की गाँठ में बंधे रहना, मोहित होना, दूषित होना, आसक्त होना, स्थिर होना, अवरुद्ध होना।

जो भी व्यक्ति सभी इच्छाओं की खोज, तलाश और पूछताछ करता है, वह इस प्रकार का व्यक्ति होता है: अधिक गंभीर, लक्ष्य-केंद्रित, मेहनती, इच्छुक और विजय प्राप्त करने वाला, जो अपनी इच्छाओं को बढ़ाता है, वे भावुक होते हैं। जो भी व्यक्ति सभी रूपों में खोज, तलाश और पूछताछ करता है..., जैसे ध्वनि, गंध, स्वाद, स्पर्श...। जो लोग इस पर ध्यान केंद्रित करते हैं, इसे अपना लक्ष्य बनाते हैं,

मेहनत करते हैं, इनकी ओर आकर्षित होते हैं, इन पर विजय प्राप्त करते हैं, इन्हें बढ़ाते हैं, वे भी भावुक होते हैं। जो भी व्यक्ति प्यास, ध्वनि, गंध, स्वाद, स्पर्श आदि के कारण इन रूपों में लीन हो जाता है..., वे भी इच्छाओं के प्रति उत्साही होते हैं। जो भी इन रूपों में लीन हो जाता है...। उदाहरण के लिए, आलोचक आलोचना करने के लिए उत्सुक होते हैं, मजदूर काम करने के लिए उत्सुक होते हैं, गांव में घूमने वाले गांव में घूमने के लिए उत्सुक होते हैं और ध्यान करने वाले ध्यान के लिए उत्सुक होते हैं। इसी प्रकार, जो भी व्यक्ति खोजता है..., वे भावुक होते हैं। जहां प्यास, खोज, भिक्षा, भीख मांगने के कारण हर रूप में..., ...ध्वनि में..., गंध में, स्वाद में, स्पर्श में... जो कोई भी इन रूपों में आ जाता है... जो कोई भी इन रूपों में प्रयुक्त होता है..., वे भी इच्छाओं के प्रति उत्साही होते हैं।

"अज्ञान," अधिकतर दिनों में लोग मूर्ख बन जाते हैं...(उद्धृत)। जो लालची और इच्छाओं के प्रति आसक्त होते हैं वे अज्ञानी होते हैं।

"कंजूस लोग कुटिल मार्ग पर अड़े रहते हैं": "कंजूस," "वे पतन की ओर जाते हैं" कंजूस कहलाते हैं; "लालची" को भी कंजूस कहा जाता है; "बुद्ध के शिष्यों के वचनों और शिक्षाओं की परवाह न करना" कंजूसी का एक रूप है। "वे पतन की ओर जाते हैं" कंजूस कैसे कहलाता है? वे नरक में जाते हैं; वे पशुलोक में जाते हैं; वे दुष्टलोक में जाते हैं, यही "उनका पतन" है। "कंजूस व्यक्ति" को कंजूस व्यक्ति क्यों कहा जाता है? कंजूसी पाँच प्रकार की होती है: घर में कंजूसी, धन में कंजूसी, प्रशंसा में कंजूसी, धर्म में कंजूसी, दिखावटी कंजूसी, अवस्था में कंजूसी, लोभ, कंजूसी, तुच्छता और हृदयहीनता। इसके अतिरिक्त, कंजूसी भी कंजूसी है; सांसारिक कंजूसी भी कंजूसी है; विचारों में कंजूसी भी कंजूसी है। इस कंजूसी और असहिष्णुता के कारण लोग अनुदार हो जाते हैं, इसलिए उन्हें कंजूस कहा जाता है। बुद्ध के शिष्यों के शब्दों, भाषा और शिक्षाओं की परवाह न करना कंजूसी कैसे हो सकती है? बुद्ध के शिष्यों के शब्दों, बोलने के तरीके, शिक्षा और उपदेशों की उन्हें परवाह नहीं है, वे सुनना नहीं चाहते, उन्हें सुनने की ज़रूरत नहीं है, वे सुनना नहीं चाहते, उन्हें जानने की ज़रूरत नहीं है।

वे गलत में स्थिर हैं, गलत शारीरिक कर्म में स्थिर हैं, गलत भाषा कर्म में स्थिर हैं, गलत मानसिक कर्म में स्थिर हैं, गलत हत्या में स्थिर हैं, बिना दिए लेने में स्थिर हैं, अधर्मी व्यभिचार में स्थिर हैं, अधर्मी छल में स्थिर हैं, अधर्मी विभाजनकारी भाषा में स्थिर हैं..., अश्लील भाषा में स्थिर हैं..., ललक में स्थिर हैं, द्वेष में स्थिर हैं, दृष्टि में स्थिर हैं, कर्मों में स्थिर हैं, प्रवेश कर चुके हैं, दागदार हैं, की ओर मुड़ चुके हैं, आसक्त हैं, अवरुद्ध हैं।

"जब कष्ट होता है, तो वे रोते हैं।" "जब कष्ट होता है," इसका अर्थ है कि कष्ट चरम पर पहुँच गया है, राक्षस आ गया है, मृत्यु निकट है, और मृत्यु निकट है। "वे रो रहे हैं," वे बड़बड़ाते हैं, रोते हैं, दुखी होते हैं, थके हुए होते हैं, शोक करते हैं, छाती पीटते हैं और चिल्लाते हैं, और भ्रमित हो जाते हैं।

"यहाँ से मरने के बाद हमारा अस्तित्व कहाँ होगा?": "यहाँ से मरने के बाद हमारा अस्तित्व कहाँ होगा? क्या हम नरक में गिरेंगे, पशुवत बनेंगे, प्रेत बनेंगे, क्या हम मनुष्य बनेंगे, क्या हम देवता बनेंगे, साकार बनेंगे, निराकार बनेंगे, विचारक बनेंगे, अविचारक बनेंगे, निर्विचारक बनेंगे?" "क्या हमारा भविष्य में अस्तित्व है? क्या हमारा भविष्य के जीवन में अस्तित्व नहीं है? भविष्य के जीवन में हम क्या होंगे? हमारा भविष्य का जीवन कैसा होगा? भविष्य के जीवन में हम क्या होंगे, और (बाद में) क्या बनेंगे?" संशयवादियों में हलचल मच जाती है, संदेह पैदा होते हैं, वे बड़बड़ाते हैं, रोते हैं...

10 · इसलिए यहाँ लोगों को सीखना चाहिए, और उन्हें यह जानना चाहिए कि दुनिया में कुछ भी "गलत" है, इसलिए किसी को गलत काम नहीं करना चाहिए, क्योंकि बुद्धिमान लोग कहते हैं कि यह जीवन छोटा है।

अतः लोगों को यहाँ सीखना चाहिए: ''इसलिए,'' इस कारण, इस वजह, इस परिस्थिति के साथ, जब आप इच्छा में यह दोष देखते हैं, तो ''सीखना चाहिए,'' सीखने के तीन प्रकार हैं: उपदेश सीखना, मन सीखना, और बुद्धि सीखना।

उपदेशों में क्या जोड़ा जा सकता है? यहाँ भिक्षु एक गुरु है जो पातिमोक्ख के आत्म-संयम से सुरक्षित रहता है। उसके पास पर्याप्त धार्मिकता और उचित परिस्थितियाँ हैं। वह छोटे पापों की भयावहता को देखता है और गुरु से शिक्षा प्राप्त करने के बाद सीखता है। छोटे उपदेशों का समूह और बड़े उपदेशों का समूह संयम, व्यवहार पर नियंत्रण, आत्म-संयम का प्रवेश, उत्तम धर्म आदि का आधार है; यही उपदेशों के ज्ञान को बढ़ाने का उद्देश्य है।

मन को कैसे बढ़ाया जाए? यहाँ, भिक्षु इच्छाओं और अहितकर धर्म से मुक्त होकर, तर्क और चिंतन के प्रथम ध्यान में निवास करता है, और वैराग्य से आनंद और प्रसन्नता प्राप्त होती है; वह विश्वास और एकाग्रता के साथ तर्क और चिंतन को शांत करता है, और प्रवेश करने के बाद, वह तर्कहीनता में रहता है; आनंद और प्रसन्नता का द्वितीय ध्यान बिना प्रतीक्षा किए उत्पन्न होता है; एकाग्रता, जो आनंद के साथ विलीन होकर शांति में निवास करती है, सचेतनता और सही ज्ञान से परिपूर्ण होती है, और शरीर में सुख का अनुभव करती है। प्रवेश करने के बाद, इस ध्यान में निवास करते हुए, यह पवित्र शिष्य घोषणा करता है: "वह शांत और एकाग्र है" तीसरे ध्यान में, जो "सचेतनता और आनंद में निवास" का है; सुख और दुख के त्याग के साथ, और अतीत के सुख और दुख के निरोध के साथ, प्रवेश करने के बाद, चौथे ध्यान में निवास करता है जहाँ कोई दुख या दुःख नहीं है; यही मन को बढ़ाना है।

ज्ञान बढ़ाना क्या है? यहाँ भिक्षु एक ज्ञानी व्यक्ति है, जिसके पास वह ज्ञान है जो जीवन के उदय और अस्त होने की ओर ले जाता है; पवित्र अंतर्दृष्टि और दुखों का पूर्ण निवारण ही (ज्ञान) है; वह सत्यपूर्वक जानता है, ''यह दुख है।'' मैं जानता हूँ, ''यह दुखों का संग्रह है।'' मैं जानता हूँ, ''यह दुख है।'' मैं जानता हूँ, ''यह दुख का मार्ग है।'' सत्य को जानना: ''ये कष्ट हैं।'' सत्य को जानना: ''यह कष्टों का संग्रह है।'' सत्य को जानना: ''यह दुखों का निवारण है।'' सत्य को जानना: ''यह दुख की ओर ले जाने वाला मार्ग है।'' यही ज्ञान बढ़ाना है।

इन तीनों बातों का अध्ययन तब करना चाहिए जब हम किसी लक्ष्य की ओर अग्रसर हों; जब हम जानते हों; जब हम देखते हों; जब हम आत्मनिरीक्षण करते हों; जब हमारा हृदय स्थिर हो, तब हम निर्णय लेते हों; जब हम विश्वास के साथ निर्णय लेते हों; जब हम ऊर्जावान हों; जब हम सचेत हों; जब हमारा मन एकाग्र हो; जब हम ज्ञान से जानते हों; जब हमें वह ज्ञान हो जो हमें जानना चाहिए; जब हमें ज्ञान प्राप्त हो; जब हमें त्याग करना चाहिए; जब हमें अभ्यास करना चाहिए; जब हमें गवाही देनी चाहिए; जब हमें अभ्यास करना चाहिए, अच्छी तरह से अभ्यास करना चाहिए, और जब हम आगे बढ़ते रहें।

''यहाँ'' इस दृष्टिकोण से संबंधित है, इस पसंद से संबंधित है, इस झुकाव से संबंधित है, इस आसक्ति से संबंधित है, इस धर्म से संबंधित है, इस शिक्षा से संबंधित है, इस पवित्र मार्ग से संबंधित है, इस गुरु की शिक्षाओं से संबंधित है, इस व्यक्ति से संबंधित है, इस मानव जगत से संबंधित है; इसे ही ''यहाँ'' कहा जाता है। ''लोग,'' प्राणी, मनुष्य...

''तुम्हें संसार में जो कुछ भी 'गलत' है, वह सब जानना चाहिए'': ''कुछ भी,'' सब कुछ पूरी तरह से, हर पहलू में, बिना किसी शेष के, और संपूर्ण आधार। यही सर्वव्यापी भाषा है, जो ''कुछ भी'' है। ''तुम्हें 'गलत' को जानना चाहिए,'' तुम्हें जानना चाहिए कि शरीर का अनुचित कर्म ''गलत'' है, तुम्हें जानना चाहिए कि भाषा का अनुचित कर्म ''गलत'' है, तुम्हें जानना चाहिए कि मानसिक कर्म ''गलत'' है, तुम्हें जानना चाहिए कि अनुचित हत्या ''गलत'' है... अन्यायपूर्ण ढंग से दिया और लिया गया... बुराई... झूठ, विभाजनकारी शब्द, अश्लील भाषा, ललक, द्वेष, गलत विचार, गलत व्यवहार, पाँच इच्छाएँ, पाँच गलत आवरण...: इसे जानना चाहिए, इसे पहचानना चाहिए और इसे समझना चाहिए। ''संसार में,'' दुखमय संसार में...

“इस कारण से गलत काम नहीं करना चाहिए”: गलत शारीरिक कर्मों के कारण गलत काम नहीं करना चाहिए; गलत वाणी के कर्मों के कारण...; गलत सोच, गलत आशा, गलत इच्छा के कारण..., गलत काम नहीं करना चाहिए: इसका अभ्यास नहीं करना चाहिए, पूर्ण रूप से अभ्यास नहीं करना चाहिए, और इसे जारी रखने के बाद भी नहीं रखना चाहिए।

“क्योंकि ज्ञानी लोग कहते हैं कि यह जीवन छोटा है”: “जीवन” जीवन का अस्तित्व है; जीवन की गति, अस्तित्व और कर्म; जीवन का रक्षक और जीवन का मूल। इसके अतिरिक्त, जीवन दो कारणों से छोटा है: अस्तित्व पर आधारित सीमित जीवन, या प्राकृतिक परिमित जीवन पर आधारित सीमित जीवन। अस्तित्व का सीमित जीवन छोटा कैसे है? अतीत के हृदय क्षण में जीना, (लेकिन) वर्तमान में नहीं जीना, भविष्य में नहीं जीना; भविष्य के हृदय क्षण में जीना, (लेकिन) वर्तमान में नहीं जीना और अतीत में नहीं जीना; वर्तमान हृदय क्षण में जीना, (लेकिन) अतीत में नहीं जीना, भविष्य में नहीं जीना।

जीवन और व्यक्ति, सभी (केवल) सुख और दुख, एक ही हृदय से ग्रहण किए जाते हैं: यह पल भर में बदल सकता है। जहाँ स्वर्ग विद्यमान है, वहाँ चौरासी हजार कष्ट हैं, परन्तु उनमें से कोई भी दो हृदयों द्वारा संयुक्त रूप से नहीं जी सकता। जो भी यहाँ मरता है या जीवित रहता है, उसके सभी तत्व नष्ट हो जाते हैं, चले जाते हैं, सब कुछ है, और उसे पुनः स्थापित नहीं किया जा सकता। जो तुरंत नष्ट हो जाते हैं, जो भविष्य में नष्ट होते हैं, और जो मध्य में नष्ट होते हैं, उनके गुण समान हैं। वह जन्म लेने के अलावा कुछ नहीं कर सकता था, वह अब जीवित है, हृदय के नष्ट होने से संसार मृत हो जाता है, और यही सर्वोच्च हित की शांति है। वे नीचे की ओर बहते हुए घटित होते हैं और परिवर्तन के लिए अभिप्रेत हैं, वे बिना कटे जल प्रवाह की तरह, छह बिंदुओं वाले किनारे के साथ मुड़ते हैं। नष्ट हुए बिना भंडार के आते हैं, और भविष्य में उनका कोई संचय नहीं होगा, और जहाँ कहीं भी उत्पन्न होते हैं, वे शंकु (क्षण) के सिरे पर सरसों के दानों की तरह जीवित रहते हैं। उत्पन्न होने वाले धर्मों के सामने विनाश रखा जाता है, टूटे हुए धर्म बने रहते हैं, और वे नहीं पहले वालों के साथ मिल जाते हैं। वे अदृश्य रूप से आते हैं, वे विनाश को देखते हैं और उससे दूर चले जाते हैं, आकाश में बिजली की तरह, वे उठते हैं और गायब हो जाते हैं।

प्रकृति का सीमित जीवन किस प्रकार कमतर है? जीवन श्वास पर निर्भर है; जीवन आय पर निर्भर है; जीवन ग्रहण और उत्सर्जन पर निर्भर है; जीवन (चार) प्रजातियों पर निर्भर है; जीवन भोजन के पिंडों पर निर्भर है; जीवन ऊष्मा पर निर्भर है; जीवन चेतना पर निर्भर है: ये मूलतः दुर्बल हैं; इनके कारण भी दुर्बल हैं; इन पर निर्भर रहने वाले भी दुर्बल हैं; इन्हें शक्ति के रूप में उपयोग करने वाले भी दुर्बल हैं; इनका सामान्य आधार भी दुर्बल है; ये संबंध भी दुर्बल हैं; ये सह-जन्म लेने वाले भी दुर्बल हैं; इनसे जुड़ी हर चीज भी दुर्बल है; ये एक दूसरे के प्रति स्वाभाविक रूप से दुर्बल हैं; ये एक दूसरे पर निर्भर नहीं हैं; ये परस्पर विनाशकारी हैं; इनमें कोई परस्पर आश्रय नहीं है, और ये एक दूसरे को सहारा नहीं देते; जो उत्पन्न करते हैं वे अज्ञात हैं।

"कोई भी किसी दूसरे की वजह से गायब नहीं होता, और ये सब वास्तव में नष्ट हो चुके हैं, ये पहले से ही उत्पन्न हुए हैं, और इन्हें उत्पन्न करने वाले पहले ही मर चुके हैं, पहले और बाद वाले ने कभी एक-दूसरे को नहीं देखा है।"

इसके अतिरिक्त, चार देव राजाओं के जीवन की तुलना करने पर, मनुष्यों का जीवन छोटा, महत्वहीन, क्षणिक, तीव्र गति वाला, अल्प, निष्कलंक है। तैंतीस स्वर्गीय देवता...(छोड़ा गया), तुषिता देवता..., निर्मित देवता..., सुखी स्वर्ग देवताओं में रूपांतरित..., वह स्वर्गीय देवताओं में रूपांतरित..., ब्रह्मा देवताओं के जीवन की तुलना में, मनुष्यों का जीवन छोटा, महत्वहीन, क्षणिक, तीव्र गति वाला, अल्प, निष्कलंक और अल्पकालिक है।

भगवान बुद्ध ने कहा, "भिक्षुओं! मनुष्य का जीवनकाल अल्प है, और उन्हें परलोक में जाना ही है। बुद्धिमान व्यक्ति को जागृत होना चाहिए, दयालु होना चाहिए और ब्रह्मचर्य का अभ्यास करना चाहिए। हे भिक्षुओं, सभी जीवित प्राणी मृत हैं! जो वृद्ध जीवित हैं, उनका जीवनकाल (केवल) सौ वर्ष या उससे अधिक है।"

"मनुष्य का जीवनकाल अल्प है, और अच्छे लोगों को इसकी अवहेलना करनी चाहिए, उन्हें ऐसे जीना चाहिए जैसे उनका सिर जल रहा हो, क्योंकि ऐसी कोई मृत्यु नहीं है जो निश्चित रूप से न आए।" [SN.4.10]

"दिन-रात बीतते हैं, जीवन नष्ट हो जाता है, अंततः मरने वाले व्यक्ति का जीवनकाल समाप्त हो जाता है, जैसे छोटी नदी में पानी।" [SN.4.10]

"क्योंकि ज्ञानी लोग कहते हैं कि यह जीवन छोटा है": ज्ञानी वह है जो ऋषि है, और ज्ञान को बुद्धि कहा जाता है, अर्थात् समझ, सरल चयन, अन्वेषण, विधि चयन, पहचान, विवेक, गहन अवलोकन, विद्वत्ता, दक्षता, चतुराई, चिंतन, गहन चिंतन, परीक्षा, व्यापकता, धार्मिक ज्ञान, ज्ञान का दंड, ज्ञान की जड़, ज्ञान की तलवार, ज्ञान का हॉल, ज्ञान की रक्षा, ज्ञान की चमक, ज्ञान का प्रकाश, छल रहित, धर्म का चयन, सही दृष्टिकोण; ज्ञान की अवस्था को ज्ञानी के समान मानो। इसके अतिरिक्त, संचय के ऋषि, लोक के ऋषि, स्थान के ऋषि, आश्रित उत्पत्ति के ऋषि, सजगता के ऋषि, देवताओं के ऋषि, मूल के ऋषि, शक्ति के ऋषि, ज्ञान के ऋषि, मार्ग के ऋषि, फल के ऋषि, निर्वाण के ऋषि, वे ऋषि कहते हैं: "मनुष्यों के लिए जीवन छोटा है, जीवन महत्वहीन है, जीवन क्षणिक है, जीवन तीव्र है, जीवन छोटा है, जीवन दीर्घकालिक नहीं है, जीवन अल्पकालिक है।" वे ऐसा कहते हैं, ऐसा बताते हैं, ऐसा बोलते हैं, ऐसा समझाते हैं, ऐसा कहते हैं।

11 · मैं दुनिया को कांपते हुए देखता हूँ: यह पीढ़ी सभी प्राणियों के बीच प्रेम की लालसा में आती है, हीन लोग मृत्यु के मुख के सामने बड़बड़ाते हैं: वे जिन्होंने सभी प्रकार के अस्तित्व में प्यास को अलग नहीं किया है।

"मैं संसार को कांपते हुए देखता हूँ": "मैंने देखा," मैंने अपनी आँखों से देखा, मैंने आकाश की आँखों से देखा, मैंने अपनी आँखों से देखा, मैंने बुद्ध की आँखों से देखा, मैंने सभी आँखों से देखा, मैं देखता हूँ, मैं निहारता हूँ, मैं चिंतन करता हूँ, मैं अवलोकन करता हूँ। "संसार में": दुखों के संसार में...

"कंपकंपी (धड़कन)," इच्छा की धड़कन से धड़कना; ...देखने का, ...अशुद्धता का, प्रयास का, फल का, बुरे कर्मों का, लोभ का, क्रोध का, अज्ञान का, अहंकार का, देखने से आसक्ति का, अव्यवस्था (बिखराव) का, संदिग्ध विफलता का, चिंताजनक संभावित प्रवृत्तियों का; लाभ, लाभहीनता का, प्रतिष्ठा का, प्रतिष्ठाहीनता का, प्रशंसा का, निंदा का, आनंद का, पीड़ा का, जीवन का, वृद्धावस्था का, बीमारी का, मृत्यु का, उदासी और निराशा का; नरक में गिरने की पीड़ा का, पशुलोक में गिरने की, प्रेतलोक में जाने की, मानवलोक में गिरने की पीड़ा का; गर्भ में प्रवेश करने की पीड़ा से, गर्भ में जड़ जमाने की, जन्म की पीड़ा से, जीने की, दूसरों के हेरफेर की, अपने स्वयं के कार्यों की, दूसरों के कार्यों की पीड़ा से धड़कना; पीड़ा से, कर्मों की पीड़ा से, परिवर्तन के दर्द से धड़कना; नेत्र रोग, कान..., नाक, जीभ, शरीर, सिर... की पीड़ा से धड़कना (छोड़ा गया, सभी कष्टों की सूची के लिए पिछले अनुभाग देखें); मृत माता की पीड़ा से धड़कना... (छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)... धड़कता हुआ, पूरी तरह से धड़कता हुआ, फैलता हुआ धड़कता हुआ, कांपता हुआ, देखने के दर्द से थरथराता हुआ, मैंने देखा, मैंने गौर किया, मैंने विचार किया, मैंने अवलोकन किया।

“यह पीढ़ी सभी प्राणियों में प्यासी है”: “पीढ़ी (लोग)” सभी प्राणियों का पर्यायवाची है। “प्यास” रूप, ध्वनि, गंध, स्वाद, स्पर्श और धर्मों की लालसा है। “प्यास लगना” का अर्थ है प्यास लगना; प्यास का पीछा करना; प्यास का आना; प्यास से अभिभूत होना, जीत जाना और हृदय का वश में हो जाना। “सभी प्राणियों में” इच्छा, रूप और निराकारता है।

“हीन लोग मृत्यु से पहले शिकायत करते हैं”: “हीन लोग”, “हीन शारीरिक कर्मों वाले” निम्न लोग; “हीन वाणी कर्मों वाले” निम्न लोग; “हीन मानसिक कर्मों वाले” निम्न लोग; “हत्या में निम्न”..., देना और लेना... (छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)..., “हीन इच्छा रखने वाले” निम्न व्यक्ति; “हीन, नीच, तुच्छ इरादे वाले, महत्वहीन” निम्न व्यक्ति हैं। “मृत्यु के मुख पर शिकायत करना”, “मृत्यु के मुख पर” का अर्थ है राक्षस के मुख पर, मृत्यु के मुख पर, मृत्यु तक पहुँच जाना, शैतान के पास पहुँच जाना, मृत्यु के निकट होना, राक्षस के पास पहुँच जाना, राक्षस के निकट होना; मृत्यु के पास आकर वे शिकायत करते हैं, रोते हैं, दुखी होते हैं, थक जाते हैं, शोक करते हैं, सीना पीटते हैं और रोते हैं, और भ्रमित हो जाते हैं।

“सभी प्रकार के अस्तित्व में प्रेम की प्यास रखने वाले उदासीन लोग”: “प्रेम की प्यास” का अर्थ है रूप की लालसा..., धर्मों की प्यास। यह बार-बार दोहराई जाती है; प्राप्ति की इच्छा के कर्म में, भौतिक अस्तित्व के कर्म में; निराकार अस्तित्व के कर्म में, सजीव अस्तित्व में; निराकार अस्तित्व के कर्म में; बार-बार होने वाली रुचि में, पुनर्जन्म में, व्यक्ति के जन्म में, प्यास को न छोड़ने, प्यास का त्याग न करने, प्यास को न मिटाने, जिन्होंने अभी तक अपनी प्यास नहीं बुझाई है, जिन्होंने अपनी प्यास का त्याग नहीं किया है, जिन्होंने अभी तक प्रेम की प्यास नहीं बुझाई है।

12 · देखो! कांपता हुआ व्यक्ति चीजों को अपना समझता है, जैसे कम पानी में रहने वाली मछली। यह देखकर किसी को कुछ नहीं करना चाहिए (यह काम नहीं करना चाहिए), वहाँ (अस्तित्व से आसक्ति बनाने में) नहीं जाना चाहिए।

“देखो! कांपने वाले लोग चीजों को अपना मान लेते हैं”: “अपने आप से चिपके रहना”, आत्म-आसक्ति दो प्रकार की होती है: प्यासी आत्म-आसक्ति और दृष्टिहीन आत्म-आसक्ति। प्यासी आत्म-आसक्ति क्या है? सभी को सीमाएँ, क्षेत्र, दायरे, हदें कहा जाता है... (अधूरा भाग, पिछले अनुभाग देखें)... यही प्यासी आत्म-आसक्ति है।

देखने से स्वयं को थामे रखना क्या है? शरीर के बीस दृश्य हैं...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)... “देखो! जो लोग कांपते हैं, वे चीजों को अपना समझते हैं”: वे तब कांपते हैं जब वे चीजों को अपना समझते हैं, वे लूटे जाने से डरते हैं, वे तब भी कांपते हैं जब उन्हें लूटा जाता है; वे तब कांपते हैं जब वे परिवर्तनों पर संदेह करते हैं और उनसे डरते हैं, और जब वे बदलते हैं, तब भी वे कांपते हैं, तीव्र रूप से कांपते हैं, पूरी तरह से कांपते हैं, व्यापक रूप से कांपते हैं, कांपते हैं, और परिवर्तन के समय बहुत अधिक कांपते हैं। जब कांप रहे हों..., बहुत अधिक कांप रहे हों, कृपया देखें, कृपया ध्यान दें, कृपया गौर करें।

“जैसे कोई मछली कम पानी में फंसी हो”: जैसे किसी मछली पर कौआ, चील या सारस हमला करते हैं, उसे पकड़ लेते हैं या खा जाते हैं, वैसे ही जब वह कम पानी में होती है, तो वह कांपने लगती है, ज़ोर से कांपने लगती है, और उसका शरीर बुरी तरह कांपने लगता है। ठीक इसी तरह, जब लोगों को उनकी अपनी चीज़ों की तरह समझा जाता है, तो वे लूटे जाने से डरते हैं, और कांपने लगते हैं, बुरी तरह थरथराते हैं।

“इसे देखकर, अनात्म का भी अभ्यास करना चाहिए”: यह दोष: देखने के बाद, देखने के बाद, तौलने के बाद, निर्णय करने के बाद, अलग करने के बाद, स्पष्ट करने के बाद। “अनन्म का अभ्यास करना चाहिए,” दो प्रकार के आत्म-बोध होते हैं: .... यदि आप प्यासे व्यक्ति के आत्म-बोध से मुक्त हो जाते हैं; यदि आप देखने के आत्म-बोध को काट देते हैं, तो वह आँखों को अपना नहीं मानता,

...कान..., नाक, जीभ, शरीर, मन; ...सभी रूप..., ध्वनियाँ, गंध, स्वाद, स्पर्श, धर्म; घर, समूह (लोगों का), आवास, लाभ, प्रतिष्ठा, प्रशंसा, वस्त्र, भोजन, आश्रय, रोगी की आवश्यकताएँ और चिकित्सा आवश्यकताएँ; इच्छा, रूप, निराकार, पाने की इच्छा, रूप पाने की इच्छा, निराकार पाने की इच्छा, इच्छा क्षेत्र, न पाने की इच्छा; एक समूह, चार समूह, पाँच समूह, भूतकाल, भविष्यकाल, वर्तमानकाल; जो धर्म दिखाई देते हैं, सुनाई देते हैं, महसूस किए जा सकते हैं और जिन्हें वह अपना मान सकता है, उनसे वह चिपका नहीं रहता, उनसे आसक्ति नहीं रखता, न ही उन पर पकड़ रखता है; न पकड़ता है, न अभ्यास करता है, न ही दृढ़ रहता है; उसे कार्य करना चाहिए, आगे बढ़ना चाहिए, रक्षा करनी चाहिए और जीवित रहना चाहिए।

"अस्तित्व में निरंतर न रहना": "अस्तित्व में रहना", इच्छा में रहना, रूप में रहना, निराकार में रहना। आसक्ति को भोग कहते हैं, जो लोभ है... "अस्तित्व में निरंतर न रहना": अस्तित्व में रहना — क्रिया न करना; इच्छा, प्रेम, लोभ, पसंद से नहीं, जन्म न लेना, उत्पन्न न होना, उत्पन्न न होना, जन्म न लेना।

13. दोनों पक्षों की इच्छाओं को संयमित करने के बाद, लोभ से प्रेरित हुए बिना स्पर्श को पूर्णतः जानते हुए, ऐसा कुछ भी न करते हुए जिसके लिए वह स्वयं को फटकार लगाए, बुद्धिमान लोग जो देखते और सुनते हैं उससे दूषित नहीं होते।

"दोनों पक्षों की इच्छाओं को संयमित करने के बाद": "पक्ष," स्पर्श एक पक्ष है, स्पर्श का संग्रह दूसरा पक्ष है; भूतकाल एक पक्ष है, भविष्यकाल दूसरा पक्ष है; सुख एक पक्ष है, दुख दूसरा पक्ष है; निराकार एक पक्ष है, आकार दूसरा पक्ष है; भीतर के छह अंग एक पक्ष हैं, और बाहर के छह अंग दूसरा पक्ष हैं; शरीर एक पक्ष है, और शरीर का संग्रह दूसरा पक्ष है। "इच्छा," .... "दोनों पक्षों की इच्छाओं को संयमित करने के बाद": दोनों पक्षों की इच्छाओं को संयमित, निष्कासित, समाप्त, त्याग देना चाहिए, और उनका अस्तित्व समाप्त कर देना चाहिए।

"स्पर्श (संपर्क, फासा) का अवलोकन करने के बाद, कोई लालच नहीं रहता": "स्पर्श," आँख का स्पर्श, कान का स्पर्श, नाक..., जीभ, शरीर, इरादा, नाम, टकराने वाला स्पर्श [DN.15]; आनंददायक स्पर्श का अनुभव, ...कड़वा स्पर्श, न कड़वा न आनंददायक स्पर्श, अच्छा, बुरा, अविस्मरणीय, इच्छा, रूप, निराकार, खाली, गैर-संपर्क, स्पर्श करने की अनिच्छा, सांसारिक स्पर्श, सांसारिक स्पर्श नहीं, भूतकाल, भविष्यकाल, वर्तमानकाल, कोई भी स्पर्श, पूर्ण स्पर्श; इस प्रकार के स्पर्शों को स्पर्श कहा जाता है।

"स्पर्श को जानने के बाद," स्पर्श के तीन प्रकार के ज्ञान के बाद: ज्ञात, परावर्तित और परित्यक्त। ज्ञात ज्ञान क्या है? स्पर्श को जानना: यह आँख का स्पर्श है, यह कान का स्पर्श है..., यह वर्तमान स्पर्श है। वह जानता और देखता है, यही जानना है।

ज्ञान को मापना क्या है? यह जानने के बाद, अनित्यता, दुख, बीमारी, ट्यूमर आदि को मापने की उत्सुकता में, उन्होंने इसे मापने योग्य बना दिया; संचय, विनाश, सुख, कष्ट और त्याग, ये सभी ज्ञान के मापक हैं।

त्याग क्या है? इस प्रकार विचार करने के बाद, स्पर्श की इच्छा को काट दिया जाएगा, त्याग दिया जाएगा, दूर भगा दिया जाएगा, समाप्त कर दिया जाएगा और उसका अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। भगवान बुद्ध ने कहा: "भिक्षुओं! स्पर्श की सभी इच्छाओं और लोभों को काट देना चाहिए। इस प्रकार, संपर्क टूट जाएगा और जड़ें कट जाएंगी, ठीक वैसे ही जैसे बिना जड़ों वाला ताड़ का पेड़ भविष्य में अस्तित्वहीन और निर्जीव हो जाता है।" [सं.22.25] यही त्याग है।

स्पर्श के बाद अवलोकन, इन तीन प्रकार के ज्ञान और स्पर्श के बाद के ज्ञान के साथ। "लालच नहीं है," लालच को तृष्णा कहा जाता है... जो भी व्यक्ति कटकर, विखंडित होकर, शांत होकर, स्थिर होकर, उठने में असमर्थ होकर, और ज्ञान की अग्नि से प्रज्वलित हो

जाता है, वह तृष्णा रहित व्यक्ति कहलाता है। वह प्रत्यक्ष रूप से; ध्वनि, गंध, स्वाद, स्पर्श में; घर में...(विलुप्त)..., वर्तमान में; जो कुछ आप देखते, सुनते, महसूस करते हैं, उसमें तृष्णा नहीं होती। जिन धर्मों को जाना जा सकता है, वे हैं जो तृष्णा रहित, बंधित नहीं, आसक्त नहीं, निर्दोष, तृष्णा से मुक्त, बिना तृष्णा के, त्यागी हुई तृष्णा और समाप्त तृष्णा वाले हैं। जिन्होंने तृष्णा का त्याग कर दिया है, जिन्होंने तृष्णा को त्याग दिया है, जिन्होंने तृष्णा को छोड़ दिया है, जिनके पास तृष्णा नहीं है, जिन्होंने तृष्णा को समाप्त कर दिया है, जो तृष्णा से मुक्त हो गए हैं, जो भूखे नहीं हैं, जो शांत हो गए हैं, जो प्रसन्न हैं, और जो स्वयं ब्राह्मण के रूप में जीवन व्यतीत करते हैं।

"वह जिस भी बात के लिए खुद को डांटता है, उसे पूरा नहीं करता": "जो भी" का अर्थ कुछ भी है। "खुद को डांटना," दो कारणों से खुद को डांटता है: जो किया गया है और जो नहीं किया गया है। किए गए और न किए गए कार्यों के लिए खुद को डांटने का क्या अर्थ है? "मेरे बुरे आचरण, मेरे अच्छे आचरण।" उसने खुद को डांटा; "बुरे शब्द..., अच्छे शब्द..., ...; बुरी मंशा, अच्छी मंशा; हत्या, हत्या से परहेज; बिना दिए लेना, न देना; व्यभिचार, व्यभिचार से परहेज; झूठ बोलना, झूठ न बोलना; फूट डालने वाली बातें, फूट डालने वाली बातें न करना; अभद्र शब्द...; अपशब्द (गालियां)...; लालच; बुराई (नुकसान); बुरा दृष्टिकोण..., सही दृष्टिकोण नहीं... ।" वह किए गए और न किए गए कार्यों के लिए खुद को डांटता है। या, "मैं नियमों का पूर्ण पालन करने वाला व्यक्ति नहीं हूँ," उसने खुद को डांटा; "मैं जड़ों का रक्षक नहीं हूँ...; ...मैं वह व्यक्ति नहीं हूँ जो खाने की सही मात्रा जानता हो...; मैं संयमी नहीं हूँ, मैं सचेत और सही ज्ञान वाला व्यक्ति नहीं हूँ; मैंने चारों सचेतनता का अभ्यास नहीं किया है; मैंने चारों अच्छे परिश्रमों का अभ्यास नहीं किया है...; मैंने चारों आधारों (इद्धिपाद) का अभ्यास नहीं किया है; मैंने पाँच तत्वों का अध्ययन नहीं किया है; पाँच शक्तियों का अध्ययन नहीं किया है...; सात ज्ञान के कारक; आठ पवित्र मार्ग; ...मैं दुख को नहीं जानता...; ...मैंने संग्रह को नहीं काटा है...; मैंने मार्ग का अभ्यास नहीं किया है; मैंने उस बात की गवाही नहीं दी है जिसकी गवाही देनी चाहिए थी... ।" वह अपने किए और न किए गए कार्यों के लिए स्वयं को फटकारता है, और अपने कर्मों (व्यवहार) को न करने, न उत्पन्न करने, न उत्पन्न होने या न होने के लिए फटकारता है।

"ज्ञानी व्यक्ति अपने देखे और सुने हुए से दूषित नहीं होता": "संलग्नता" दो प्रकार की होती है: ... "ज्ञानी व्यक्ति" वह ज्ञानी, प्रबुद्ध, विशिष्ट और वह ज्ञानी व्यक्ति है जिसने संलग्नता की लालसा का त्याग कर दिया है। मन की संलग्नता को तोड़ने के बाद, व्यक्ति न तो अपने देखे हुए से दूषित होता है, न ही अपनी गंध से, न ही अपने स्पर्श से; न ही अपने स्पर्श से; न तो वह दूषित होता है, न ही अधिक दूषित होता है, न ही अधिक दूषित होता है, न ही अधिक दूषित होता है, न ही अधिक दूषित होता है। वह बंधनों से मुक्त हो चुका है, मुक्त हो चुका है, वह निर्बल हृदय से निवास करता है।

14 · जानने (बोध करने) के बाद, मूसलाधार प्रवाह को पार किया जा सकता है, मुनि अपवित्र नहीं होंगे, बाण निकालकर, बेरोकटोक चलते हुए, वे इस दुनिया और दूसरी दुनिया की इच्छा नहीं रखते।

"जानने और सोचने के बाद": "सोचना," चाहना, द्वेषपूर्ण विचार, हानिकारक, अनुपस्थित, निर्दोष, हानिरहित, कामवासना, ध्वनि, गंध, स्वाद, स्पर्श संबंधी चिंतन और धर्म संबंधी चिंतन। इस प्रकार की किसी भी चिंतन और बोध की अवस्था को चिंतन कहते हैं। "जानने और सोचने के बाद," तीन प्रकार का ज्ञान होता है: ज्ञात, मापन और त्याग।

जानना क्या है? ...(अधूरा भाग)।

मापन क्या है?...

त्याग क्या है?...

"विचार के बाद ज्ञान," इन तीन प्रकार के ज्ञान और चिंतन के बाद। "उथले प्रवाह पर विजय प्राप्त करने में सक्षम," इच्छा के प्रवाह पर, अस्तित्व के प्रवाह पर, दृष्टि के प्रवाह पर, अज्ञान के प्रवाह पर; वह जीवित रह सकता है, पार कर सकता है, आगे बढ़ सकता है, श्रेष्ठ बन सकता है और विजय प्राप्त कर सकता है।

"मुनि को किसी भी वस्तु से अछूता रखा जा सकता है": "वस्तुएँ," दो प्रकार की वस्तुएँ होती हैं: प्यास और दृष्टि... यह प्यास की वस्तु है... यह दृष्टि है... "मुनि," मुनि को ज्ञान कहा जाता है, अर्थात् बुद्धि, समझ... (छोड़ा गया), भ्रम रहित, धम्म, सही दृष्टि, मुनि ज्ञान धारण करने वाला, मुनि। मुनि (परिपूर्ण सद्गुण) तीन प्रकार के होते हैं: शरीर मुनि, वाणी मुनि और अभिशय मुनि।

मुनि का शरीर क्या है? तीनों प्रकार के शरीर और बुरे कर्मों का त्याग मुनि की स्थिति है; तीनों प्रकार के अच्छे आचरण मुनि की स्थिति हैं; शरीर में मौजूद बुद्धि मुनि की स्थिति है; शरीर का ज्ञान मुनि की स्थिति है; (उच्चतर) ज्ञान के साथ मार्ग पर चलना मुनि का शरीर है; इच्छा और लोभ का त्याग मुनि के समान है; चौथा ध्यान, शरीर का विनाश, मुनि की स्थिति है।

मुनि की भाषा क्या है? भाषा के चार प्रकार के बुरे कर्मों का त्याग मुनि की स्थिति है; भाषा के चार प्रकार के अच्छे कर्मों का त्याग मुनि की स्थिति है; भाषाई विषयों का ज्ञान मुनि की स्थिति है; भाषा का ज्ञान मुनि की स्थिति है; और सभी कर्मों के मार्ग का ज्ञान मुनि की स्थिति है; भाषा की इच्छा और लोभ का त्याग मुनि की स्थिति है; भाषा का द्वितीय ध्यान विराम भाषा मुनि की स्थिति है।

हे मुनि, इरादा क्या है? इरादे और बुरे कर्मों के तीन प्रकार मुनि की स्थिति हैं; अच्छे कर्मों के तीन प्रकार मुनि की स्थिति हैं; मन-विषय में निहित ज्ञान मुनि की स्थिति है; हृदय का ज्ञान मुनि की स्थिति है; ज्ञान के साथ मार्ग पर चलने वाला मुनि की स्थिति है; हृदय की इच्छा और लोभ का मूल्यांकन मुनि की स्थिति है; मन को नष्ट करने की इच्छा मुनि की स्थिति है।

"शरीर मुनि, वाणी मुनि और नीयत मुनि किसी भी प्रकार से कष्टदायी नहीं हैं; मुनि को मुनि का दर्जा प्राप्त है और कहते हैं कि वे ही सब कुछ नष्ट करने वाले हैं। शरीर मुनि, वाणी मुनि और नीयत मुनि किसी भी प्रकार से कष्टदायी नहीं हैं; मुनि को मुनि का दर्जा प्राप्त है और कहते हैं कि वे ही बुराई से मुक्त हुए हैं।"

छह प्रकार के मुनि में मुनि के ये तीन रूप होते हैं: गृहस्थ मुनि, बेघर मुनि, ज्ञानवान मुनि, ज्ञानहीन मुनि, भिक्षु मुनि, और मुनि के मुनि। गृहस्थ कौन हैं? वे गृहस्थ जिन्होंने पदचिह्न देखे हैं और उपदेश सीखे हैं, वे गृहस्थ हैं। बेघर मुनि कौन हैं? वे भिक्षु जिन्होंने पदचिह्न देखे हैं और उपदेश सीखे हैं, वे बेघर मुनि हैं। ज्ञानवान मुनि के लिए सात प्रकार के ज्ञान हैं, अज्ञानी मुनि के लिए अरहंत हैं, और भिक्षु बुद्ध भिक्षु मुनि हैं। मुनि के मुनि को तथागत, अरहंत और प्रबुद्ध कहा जाता है।

"नासमझ मुनि मूर्ख और अज्ञानी होता है। तराजू उठाकर सबसे ऊपर वाला पलड़ा उठा लो और ज्ञानी बन जाओ। सभी बुराइयों से दूर रहो, क्योंकि मुनि उन्हीं बुराइयों के कारण मुनि बने। संसार में जो भी (आंतरिक और बाह्य) योग को समझता है, वही मुनि कहलाता है। जो संसार के भीतर और बाहर सब कुछ जानता है, धर्म के पीछे के अच्छे और बुरे को जानता है, जो स्वर्ग और मनुष्य दोनों का आदर पाता है, वह कलंक और जाल से परे है, वही मुनि है।"

"आसंजन," आसंजन दो प्रकार के होते हैं:... जब मुनि ने प्यास के आसंजन को तोड़ा, और दृष्टि के आसंजन को तोड़ा, तो वे किसी भी तरह से दूषित नहीं हुए, न ही प्रबल रूप से दूषित हुए, न ही गहन रूप से दूषित हुए, न ही अब और दूषित हुए, न ही गहन रूप से दूषित हुए। वे मुक्त हो गए, विदा हो गए, बंधन से अलग हो गए, वे एक निर्बल हृदय से जीवन व्यतीत करते हैं।

“जिसने चुभने वाले बाण को निकाल लिया है और उसे जाने नहीं देता”: “चुभने वाला बाण,” सात प्रकार के चुभने वाले बाण हैं: लोभ का बाण, क्रोध का बाण, अज्ञान का बाण, अहंकार का बाण, दृष्टि का बाण, दुःख का बाण, संदेह का बाण। जिसके लिए ये चुभने वाले बाण काट दिए गए हैं, अलग कर दिए गए हैं, शांत कर दिए गए हैं, रुक गए हैं, उत्पन्न होने में असमर्थ हैं, और ज्ञान की अग्नि से जल गए हैं, उसे चुभने वाला बाण निकालने वाला कहा जाता है। जिन्होंने बाण निकाल लिया है, बाण हटा दिया है, बाण पूरी तरह से हटा दिया है, बाण त्याग दिया है, बाण से मुक्त हो गए हैं, बाण छोड़ दिया है, जिन्होंने चुभने वाले बाण के बारे में सोचना बंद कर दिया है, जो भूखा नहीं है, जो शांत हो गया है, जो शांत हो गया है, जो सुख का अनुभव करता है, और जो स्वयं को ब्राह्मण के रूप में जीता है।

“चलने वाला,” जब चलते हैं, ठहरते हैं, कार्य करते हैं, आगे बढ़ते हैं, रक्षा करते हैं, जीवन यापन करते हैं। “जो विश्राम नहीं करते” वे आदरणीय कर्ता, नियमित कर्ता, निरंतर कर्ता, जो किसी बात से बंधे नहीं होते, जो अपनी इच्छाओं की उपेक्षा नहीं करते, और जो अच्छे धम्म में अपने दायित्वों की उपेक्षा नहीं करते; “क्या मैं प्रतिज्ञाओं को पूरा कर सकता हूँ, या क्या मैं पूरी की गई प्रतिज्ञाओं को ज्ञान से पोषित कर सकता हूँ?” वह जिसके पास (सही) इरादे, परिश्रम, साहस, कड़ी मेहनत, अविचलितता, सजगता, धार्मिक ज्ञान, उत्साह, दृढ़ता, अभ्यास और अच्छे धम्म में अडिगता है; “मैं अपूर्ण एकाग्रता को कैसे पूरा कर सकता हूँ, या क्या पूर्ण धम्म को हर जगह ज्ञान से पोषित किया जा सकता है?...(छोड़ा गया); मैं अपूर्ण ज्ञान संचय..., मुक्ति संचय..., अपूर्ण मुक्तिदायक ज्ञान बोध समुच्चय को कैसे पूरा कर सकता हूँ... ।” वह जिसके पास (सही) इरादे, परिश्रम...; “मैं अज्ञात दुख को कैसे जान सकता हूँ, या उस अशुद्धि को कैसे दूर कर सकता हूँ जिसे मैंने अभी तक दूर नहीं किया है, या उस मार्ग का अभ्यास कैसे कर सकता हूँ जिसका मैंने अभ्यास नहीं किया है, या क्या आप मेरे मरने से पहले गवाही दे सकते हैं?” वह व्यक्ति जो सही संकल्प, लगन, अभ्यास और अच्छे धर्म में दृढ़ता रखता है।

“इस संसार और अन्य संसारों की इच्छा न रखना”: वह इस संसार की इच्छा नहीं रखता: अपनी अवस्था की; वह अन्य संसारों की इच्छा नहीं रखता: अन्य लोगों की अवस्था की। वह इस संसार की इच्छा नहीं रखता: अपने शरीर, भावना, विचार, व्यवहार, ज्ञान की; और अन्य संसारों की भी इच्छा नहीं रखता: अन्य लोगों के शरीर की... वह इस संसार की इच्छा नहीं रखता: छह आंतरिक संसारों की; और अन्य संसारों की भी: छह बाह्य संसारों की। वह इस संसार की इच्छा नहीं रखता: मानव संसार की; अन्य संसारों की भी इच्छा नहीं रखता: स्वर्गीय संसार की। वह इस संसार की इच्छा नहीं रखता: इच्छा, भौतिकता के संसार की; और अन्य संसारों की भी: निराकार (अमूर्तता) के संसार की। रुचि का दूसरा स्थान, या मृत्यु, या पुनर्जन्म, आकस्मिक (अस्तित्व), या पुनर्जन्म, या पुनर्जन्म, वह आशा नहीं रखता, चाहता नहीं, स्वीकार नहीं करता, और न ही प्रार्थना करता है।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> निद्देसा >> निद्देसा 1.3

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

<<<< पिछला अगला >>>>

3. बुराई

15 · कुछ लोग सचमुच द्वेषपूर्ण हृदय से बोलते हैं, दूसरे सच्चे हृदय से कहते हैं, मुनि उत्पन्न विवाद में नहीं आते, इसलिए मुनि जहाँ कहीं भी हों, निर्जन नहीं होते।

“कुछ लोग द्वेषपूर्ण हृदय से बोलते हैं”: वे बाहरी लोग द्वेषपूर्ण हृदय से, शत्रुतापूर्ण हृदय से, विरोध के हृदय से, आघात पहुँचाने वाले हृदय से, प्रतिशोध के हृदय से, हानि पहुँचाने वाले हृदय से, अपमान करने वाले हृदय से, पीठ पीछे झूठ बोलते हुए, भगवान बुद्ध और भिक्षु संघ का अपमान करते हुए बोलते हैं।

"अन्य लोग इसे सच्चे हृदय से कहते हैं": जो कोई भी विश्वास करता है, भरोसा करता है, जिसका मन और हृदय सच्चा है, जिसका मन और हृदय तथ्यात्मक है, और जिसका हृदय सत्यनिष्ठ है, जो सत्यनिष्ठा से सोचते हैं, जो निश्चित हृदय से सोचते हैं, जो विकृत हृदय से नहीं सोचते, वे झूठ नहीं बोलते, भगवान बुद्ध और भिक्षु संघ का अपमान नहीं करते।

"जो विवाद उत्पन्न हुआ है, मुनि वहाँ नहीं पहुँचते": जो विवाद उत्पन्न हुआ है, जो पैदा हुआ है, जो प्रकट हुआ है: गली-मोहल्ले की बातें, अपमान, निंदा, भगवान बुद्ध और भिक्षु संघ के झूठे दावे। "मुनि नहीं पहुँचते": "मुनि," ...(छोड़ा गया, पिछले खंड देखें)। जो भी विवाद में पहुँचता है, वह दो कारणों से पहुँचता है: या तो वह विवाद में एक कर्ता के रूप में पहुँचता है, या जब उसके बारे में बात की जाती है या उसे निंदा की जाती है, तो वह क्रोधित, अस्वीकृत, हठी, क्रोध, घृणा, असंतोष प्रकट करता है (यह कहते हुए): "मैं इसका निर्माता नहीं हूँ।" जो लोग विवाद में पहुँचते हैं, वे इन्हीं दो कारणों से पहुँचते हैं। मुनि विवाद में दो कारणों से नहीं पहुँचते: या तो मुनि निर्माता नहीं हैं, और विवाद में निर्माता के रूप में नहीं पहुँचते, या जब उनके बारे में बात की जाती है या उन्हें निंदा की जाती है, तो वे क्रोधित नहीं होते, अस्वीकार नहीं करते, हठी नहीं होते, क्रोध, घृणा, असंतोष प्रकट नहीं करते (यह कहते हुए): "मैं इसका निर्माता नहीं हूँ।" मुनि विवाद में न तो आया, न ही आता है, न ही विवाद को अपने हाथ में लेता है, इसके दो कारण हैं।

अत: जहाँ कहीं भी मुनि हैं, वहाँ कोई बंजरपन नहीं है। अतः, उस कारण, उस स्थिति और उस वजह से, हृदय में आक्रमण का अभाव है, उजाड़पन नहीं है, हृदय के पाँच प्रकार के बंजरपन [MN.16] नहीं हैं, तीन प्रकार के बंजरपन [SN.45.166] नहीं हैं: लोभ का बंजरपन, क्रोध का बंजरपन, अज्ञान का बंजरपन; यह न तो विद्यमान है, न ज्ञात है, न खोजा गया है, न ही विच्छेदित है, न ही शांत है, न ही रुका हुआ है, न ही उत्पन्न हो सकता है, न ही ज्ञान की अग्नि से झुलसा हुआ है। चाहे वह कहीं भी हो, चाहे भीतर हो या बाहर, या भीतर और बाहर दोनों जगह हो।

16 · कोई अपने ही दृष्टिकोण को कैसे पार कर सकता है? इच्छा से निर्देशित, (व्यक्तिगत) झुकावों (पसंदों) से तय, अपनी स्वयं की उपलब्धि का प्रदर्शन करते हुए, वास्तव में वह वही कहेगा जो वह जानता है।

"अपने ही विचारों को कैसे पार किया जा सकता है?": जो कोई सुंदरी नंदा की महिला भिक्षुणियों की हत्या करता है और समण शाक्य की बदनामी करता है, (यह सोचकर): "इस तरह हम लाभ, प्रतिष्ठा, सम्मान वापस पा लेंगे।" जो लोग इस तरह देखते हैं, ऐसे लोग, ऐसे प्रेमी, ऐसे पैरोकार और ऐसे इरादे रखने वाले, वे अपने ही विचारों, अपनी पसंद, अपनी प्रवृत्तियों, अपने मतों, अपने इरादों को पार नहीं कर सकते; तब उन्हें ही अपमान का सामना करना पड़ता है। "यह मेरा अपना विचार कैसे हो सकता है?" या, "संसार शाश्वत है, यही वास्तविक है, और बाकी सब कुछ व्यर्थ है।" जो कोई ऐसा कहता है, उसके अपने विचार, उसकी पसंद..., उसके अपने इरादे कैसे पार हो सकते हैं, कैसे उनसे आगे निकल सकते हैं, कैसे उन पर विजय पा सकते हैं? इसका क्या कारण है? उसकी दृष्टि पूर्ण हो जाती है, वह उसमें समा जाती है, उससे जुड़ जाती है और इस प्रकार मान लेती है, "मैं आश्वस्त हो गया हूँ।" मैं इसे इस तरह कैसे पार कर सकता हूँ? "संसार अत्यंत स्थिर है... (अंशित) संसार परिबद्ध है... संसार असीम है... भाग्य ही शरीर है... भाग्य एक शरीर है, भाग्य दूसरा शरीर है... तथागत मृत्यु के बाद विद्यमान हैं... तथागत मृत्यु के बाद विद्यमान नहीं हैं... मृत्यु के बाद तथागत विद्यमान भी हैं और नहीं भी... मृत्यु के बाद तथागत न तो विद्यमान हैं और न ही नहीं; यही सत्य है, और बाकी सब कुछ व्यर्थ है।" जो कोई भी इस प्रकार कहता है, अपने विचारों, अपनी पसंदों आदि को कैसे पार कर सकता है, उनसे आगे निकल सकता है और उन पर विजय प्राप्त कर सकता है? इसका क्या कारण है? उसकी दृष्टि इसी प्रकार पूर्ण, बद्ध, ग्रहण की हुई, बद्ध, आसक्त, ग्रहण की हुई, विश्वास की हुई और समझी हुई है।

"इच्छाओं से प्रेरित, (व्यक्तिगत) झुकावों से स्थिर": "इच्छाओं से प्रेरित," वह अपने ही विचारों से बहकाया जाता है, जैसे बैलगाड़ियों, बैलगाड़ियों, बकरीगाड़ियों, मेढ़ों, ऊंटगाड़ियों, गधों और घोड़ों की गाड़ियों से, चलने, ले जाने और ढोने के लिए। उसी प्रकार, वह अपने ही विचारों, अपनी ही पसंदों, अपने ही झुकावों और अपनी ही राय से प्रेरित होकर बहकाया जाता है, ले जाया जाता है, ढोया जाता है।

"(व्यक्तिगत) झुकावों से स्थिर," वह अपने ही विचारों, अपने ही झुकावों और अपनी ही राय से स्थिर, रुका हुआ, अटका हुआ, प्रवेश किया हुआ, कलंकित है, और उसने अपना हृदय (विजयी समाधान की ओर) मोड़ दिया है।

"अपनी स्वयं की उपलब्धि का क्रियान्वयन": अपने द्वारा किए गए कार्य को क्रियान्वित करना; संतोषजनक ढंग से क्रियान्वयन करना; पूर्णतः क्रियान्वयन करना; प्रथम, सबसे सफल, उत्कृष्ट, शीर्ष, सबसे विजयी क्रियान्वयन करना: (मैंने सोचा:) "यह गुरु सर्वज्ञानी हैं।" अपने द्वारा किए गए कार्य का क्रियान्वयन करना; संतोषजनक ढंग से क्रियान्वयन करना, ..., (सोचते हुए:) "यह धम्म अच्छे लोगों द्वारा कहा गया है... (अस्पष्ट), यह समूह अच्छे लोगों का अनुसरण करता है... यह देखना अच्छा है... यह मार्ग अच्छाई पर आधारित है... यह मार्ग त्याग है।" क्रियान्वयन स्वयं द्वारा किया जाता है, संतोषजनक ढंग से क्रियान्वयन किया जाता है..., वह इसे घटित करता है, इसे उत्पन्न करता है, इसे साकार करता है।

"वह वही कहेगा जो वह जानता है": वह वही कहेगा, बताएगा, बात करेगा, समझाएगा और कहेगा जो वह जानता है, "संसार स्थिर है, यह सत्य है, और बाकी सब कुछ व्यर्थ है।" वह कहेगा, बताएगा, बात करेगा, समझाएगा और कहेगा, "संसार अत्यंत स्थिर है... (अस्पष्ट)..., मृत्यु के बाद तथागत न तो विद्यमान हैं और न ही विद्यमान, यह सत्य है, और बाकी सब कुछ व्यर्थ है।" वह बोलेगा, बताएगा, बात करेगा, समझाएगा।

17. जो व्यक्ति बिना पूछे दूसरों को अपने उपदेशों और निषेधों के बारे में बताता है, कुशल लोग कहते हैं कि वह पवित्र धम्म नहीं है, जो स्वयं अपने बारे में बोलते हैं।

"उनके अपने उपदेश और निषेध": "क्या," क्या है, जैसे प्रयास, जैसे व्यवस्था, जैसे प्रकार, जहाँ कहीं भी आया है, जो क्षत्रिय है, या ब्राह्मण है, या वेस, या शुद्ध है, या घर पर है, या घर से बाहर (सन्यासी), या स्वर्ग में है, या व्यक्ति है। "उपदेश और निषेध," उपदेश और निषेध हैं, निषेध और गैर-उपदेश हैं। उपदेश और निषेध क्या हैं? यहाँ, भिक्षु एक गुरु है, पातिमोक्ख के आत्म-संयम के संरक्षण में पर्याप्त धर्म और अवस्था के साथ रहना, छोटे पापों में भय देखना, और गुरु से ग्रहण करने के बाद सीखना। जहाँ कहीं भी संयम, आत्म-संयम और अहिंसा है, वही उपदेश है; वही निषेध है। आत्म-संयम को उपदेश मानकर; धर्म का पालन निषेध मानकर, उपदेश और निषेध कहलाता है। निषेध और गैर-उपदेश क्या है? आठ शाखाएँ हैं: जंगली शाखा, भिक्षा मांगने वाली शाखा, गोबर साफ करने वाली शाखा, वस्त्रों के लिए तीन छड़ें, दूसरी भिक्षा मांगने वाली छड़ें, खाने के बाद की छड़ें, न खाने वाली छड़ें, अक्सर बैठने (लेटने नहीं) वाली छड़ें, कहीं भी ठहरना, इसे निषेध और नियम का उल्लंघन कहा जाता है। जीवन शक्ति का पालन भी निषेध और नियम कहलाता है: "मैं केवल त्वचा, नसें और हड्डियाँ ही छोड़ना पसंद करूँगा; यदि शरीर का मांस और रक्त सूख जाए, तब भी जब तक मनुष्य का धैर्य, शक्ति, जीवन शक्ति और प्रयास निरंतर बने रहें (लक्ष्य प्राप्त न हो जाए), जीवन शक्ति का अंत नहीं होगा।" [SN.12.22] वह समर्पित और परिश्रमी है, इसी प्रकार जीवन शक्ति का पालन निषेध और नियम कहलाता है।

"मैं न तो खाऊंगा, न पीऊंगा, न अपने निवास से बाहर जाऊंगा, न ही अपनी जांघ को गिरने दूंगा (लेटने दूंगा), जब तक प्यास का तीर न सुलग जाए।" [थाग.223]

वह समर्पित और परिश्रमी है, और ऐसी शक्ति का पालन करना निषेध और उपदेश कहलाता है। "जब तक मेरा मन आसक्ति से मुक्त होकर सभी दोषों से मुक्त नहीं हो जाता, तब तक मैं इस पद्मासन को नहीं तोड़ूंगा!" [एमएन.32] वह समर्पित और परिश्रमी है, और ऐसी शक्ति का पालन करना निषेध और उपदेश कहलाता है। "जब तक मेरा मन आसक्ति से मुक्त होकर सभी कष्टों से मुक्त नहीं हो जाता, तब तक मैं इस आसन से नहीं उठूंगा..., मैं अनुभव से नीचे नहीं उतरूंगा..., मैं घर से बाहर नहीं जाऊंगा..., मैं अर्धछत वाले घर से बाहर

नहीं जाऊंगा..., ...ऊँची इमारत से..., समतल छत वाले घर से, गुफा से, गुफा से, झोपड़ी से, भारी मंडप से, अवलोकन चबूतरे से, गोल घर से, शेड से, व्याख्यान कक्ष से, तंबू से... मैं पेड़ के नीचे से बाहर नहीं जाऊंगा..."

"आज दोपहर से ठीक पहले मैं पवित्र धम्म का ज्ञान प्राप्त करूँगा, उसे पूर्णतः ग्रहण करूँगा, उसे प्राप्त करूँगा, उस तक पहुँचूँगा और उसकी गवाही दूँगा"..., "आज दोपहर..., शाम को..., भोजन से पहले, भोजन के बाद, रात से पहले, आधी रात को, रात के बाद, मृत्यु के समय, श्वेत चंद्रमा के समय, वर्षा ऋतु में, शीत ऋतु में, ग्रीष्म ऋतु में, यौवन में, मध्य आयु में, वृद्धावस्था में, मैं पवित्र धम्म का ज्ञान प्राप्त करूँगा, उसे पूर्णतः ग्रहण करूँगा, उसे प्राप्त करूँगा, उस तक पहुँचूँगा और उसकी गवाही दूँगा।" वह समर्पित और परिश्रमी है, और इस प्रकार के परिश्रम का पालन करना निषेध और उपदेश कहलाता है। "मनुष्य" चेतन प्राणी हैं, मनुष्य हैं, विद्यार्थी ब्राह्मण हैं, लोग हैं, व्यक्ति हैं, जीव हैं, लोगों से जन्मे हैं, इंद्र से जन्मे हैं और मनु हैं।

"अन्य लोगों द्वारा पूछे बिना (उपरोक्त के बारे में) बोलना": "अन्य लोगों से," अन्य क्षत्रिय, ब्राह्मण, ... "पूछा न जाए," प्रश्न न किया जाए, पूछा न जाए, विनती न की जाए, पूछताछ न की जाए, स्पष्टीकरण के लिए न कहा जाए। अपने उपदेशों, निषेधों, या उपदेशों और निषेधों के बारे में बोलो: मैं "पर्याप्त उपदेशों वाला व्यक्ति" हूँ, या "निषेधों में पर्याप्त" हूँ, "उपदेशों और निषेधों में पर्याप्त" हूँ, चाहे जन्म से, या उपनाम से, या अच्छे परिवार से, या कमल के समान रूप और सुंदरता से, या संपत्ति से, या शोध (अधिग्रहण) से, या पेशे से, चाहे कौशल से, या अध्ययन से, या जो आपने सुना है उससे, या तर्क-वितर्क से, या "अपने परिवार से भिक्षु होने से" या "बड़े परिवार से भिक्षु होने से" या "बड़े परिवार से" धनी भिक्षु होने से, या धनी परिवार से भिक्षु होने से, या एक ही घर में रहने वाले भिक्षु होने से और एक भिक्षु के सुप्रसिद्ध या प्रसिद्ध होने से, या वस्त्र, भोजन, आश्रय, रोगी की आवश्यकताओं और चिकित्सा आवश्यकताओं पर, या "शिक्षक" होने से, या "वकील" होने से, या "वक्ता" होने से। "जंगल में रहने वाला," या "भीख मांगने वाला," या "गोबर के कपड़े पहनने वाला और झाड़ू लगाने वाला," या "तीन वस्त्रों वाला व्यक्ति," या "दूसरा भिखारी," या "एक बार खाने के बाद न खाने वाला व्यक्ति," या "अक्सर बैठने वाला व्यक्ति (लेटने वाला नहीं)," या "कहीं भी रहने वाला व्यक्ति," या "पहला ध्यान वाला व्यक्ति," या "दूसरे ध्यान को प्राप्त करने वाला," या "तीसरे ध्यान को प्राप्त करने वाला," या "चौथे ध्यान को प्राप्त करने वाला," या "असीम शून्य में प्रतीक्षा करने वाला व्यक्ति (पांचवां/पहला निराकार)," या "असीम चेतना में प्रतीक्षा करने वाला व्यक्ति (छठा)," या "शून्यता में प्रतीक्षा करने वाला लाभकर्ता (सातवां)," "शून्यता में प्रतीक्षा न करने वाला लाभकर्ता (न तो बोध और न ही अबोध)," वह बोलता है, बताता है, बात करता है, समझाता है और कहता है।

"कुशल लोग कहते हैं कि यह पवित्र धर्म नहीं है": "कुशल लोग," जो कुशल हैं, जो इस क्षेत्र में निपुण हैं, जो निपुणों पर निर्भर हैं, जो निपुणों का ध्यान रखते हैं, जो मेहनती और निपुण हैं, जो पवित्र और निपुण हैं, जो मूल और निपुण हैं, जो अच्छे हैं, जो धर्मी हैं, जो मार्ग में निपुण हैं, जो फल में निपुण हैं, जो निर्वाण के निपुण लोग हैं, वे कुशल लोग यह कहते हैं: "यह अज्ञानी धर्म है, यह ऋषि का धर्म नहीं है, यह मूर्ख का धर्म है, यह बुद्धिमान का धर्म नहीं है, यह बुरे लोगों का धर्म है, यह अच्छे लोगों का धर्म नहीं है।" वे ऐसा कहते हैं, बोलते हैं, समझाते हैं और बताते हैं।

"जो कोई अपने बारे में बोलता है": उसे स्वयं कहा जाता है। "अपने बारे में बोलो," अपने बारे में इस तरह बोलो जैसे "मैं एक 'पर्याप्त व्यक्ति' हूँ, या एक 'सीमित व्यक्ति' हूँ, या 'नियम और निषेध ही पर्याप्त हैं' ...(छोड़ा गया)...," वह कहता है, बोलता है, समझाता है, कहता है।

18 · एक मौन भिक्षु, एक पूर्णतः शांत अवस्था में रहने वाला व्यक्ति, उपदेशों में "मैं ऐसा हूँ" कहकर अभिमान नहीं करता, कुशल लोग कहते हैं कि यह पवित्र धम्म है, उसके लिए संसार में कहीं भी कोई वृद्धि नहीं होती।

"मौन भिक्षुओं, जो पूर्णतः शांत अवस्था में हैं": "मौन," लोभ शांत हो गया है, इसलिए अवस्था मौन है; क्रोध शांत हो गया है, इसलिए अवस्था मौन है; ...अज्ञान..., ...द्वेष..., ...अहंकार..., (विलुप्त, पिछले खंड देखें)..., सभी अस्वास्थ्यकर कृत्रिम अवस्थाएँ शांत हो गई हैं, स्थिर हो गई हैं, शांत हो गई हैं, बुझ गई अवस्था, शांत अवस्था, दिवंगत अवस्था और समाप्ति अवस्था मौन, स्थिर, शांत, शांत और रुकी हुई हैं। "भिक्षु," नष्ट हुए सात धर्मों की अवस्था भिक्षु है: दृष्टि नष्ट हो गई है, संदेह नष्ट हो गया है, निषेध नष्ट हो गया है, लोभ नष्ट हो गया है, क्रोध नष्ट हो गया है, भ्रम नष्ट हो गया है, आलस्य नष्ट हो गया है, और वे सभी दुष्ट और अस्वास्थ्यकर धर्म नष्ट हो गए हैं; प्रदूषण, अन्यों, भय, कड़वे फल, वृद्धावस्था और भविष्य में मृत्यु से परहेज।

भगवान [सं.3.6, 519]: "निर्वाण प्राप्त करने और संशयवादियों से ऊपर उठने के लिए मैंने जिस मार्ग का अभ्यास किया है, उसी मार्ग का अनुसरण करो। शून्यता और अस्तित्व का त्याग करने के बाद, जो पूर्ण हो गया है और जो विरक्त हो गया है, वही भिक्षु है।"

"मौन भिक्षुओं, जो पूर्णतः शांत अवस्था में हैं": जो लोग लोभ की अवस्था को बुझा देते हैं, वे पूर्णतः शांत अवस्था में होते हैं, ...क्रोध..., ...अज्ञान..., (छोड़ा गया)।

"मैं उपदेशों में 'मैं ऐसा हूँ' कहकर घमंड नहीं करता: 'मैं ऐसा हूँ', वाक्यों का क्रम; वाक्यों का जुड़ाव; वाक्यों की पूर्णता; शब्दों का संयोजन; शब्दों का जुड़ाव; यह दूसरा वाक्य है; यह है 'मैं ऐसा हूँ'।" मैं उपदेशों में घमंड नहीं करता।" यहाँ एक प्रकार का घमंड है: मैं एक 'सीमित व्यक्ति' हूँ... (अंशित)...। इस प्रकार वह घमंड या दिखावा नहीं करता। वह घमंड से मुक्त हो गया है, त्याग कर चुका है, छोड़ चुका है, अलग हो गया है, मुक्त हो गया है, बंधन का त्याग कर चुका है, वह एक स्वतंत्र हृदय से जीता है।

"कुशल लोग कहते हैं कि यह पवित्र धर्म है": "कुशल लोग," ..., वे कुशल लोग कहते हैं: "यह धर्म है, यह अधर्मियों का धर्म नहीं है, यह बुद्धिमानों का धर्म है, यह मूर्खों का धर्म नहीं है, यह गुणी पुरुषों का धर्म है, यह अधर्मी पुरुषों का धर्म नहीं है।" वे ऐसा कहते हैं, ऐसा बोलते हैं, ऐसा बताते हैं, ऐसा समझाते हैं, ऐसा कहते हैं।

"उसके लिए संसार में कहीं भी वृद्धि (उछाल, विकास) नहीं होती": "उसके लिए," अरहंत के लिए, उन लोगों के लिए जिन्होंने कष्टों को समाप्त कर दिया है। "उछाल," सात प्रकार के उफान हैं: लोभ, आक्रमण, मोह, आलस्य, दृष्टि, अपवित्रता, कर्म में वृद्धि होती है। उन लोगों के लिए, ये वृद्धि न तो होती है, न ही अस्तित्व में होती है, न ही ज्ञात होती है, और न ही खोजी गई है; विच्छेदित, विखंडित, शांत, अवरुद्ध, उत्पन्न होने में असमर्थ, ज्ञान की अग्नि से झुलसी हुई। "चाहे कहीं भी," चाहे कहीं भी हो, भीतर या बाहर या (दोनों) भीतर और बाहर। "संसार में," दुख के संसार में, मनुष्य के संसार में, स्वर्ग के संसार में, समुच्चय के संसार में, लोकों के संसार में, स्थानों के संसार में।

19 · उसके लिए जो भी धर्म निर्धारित हैं, जो मूल्यवान और अशुद्ध हैं, जो स्वयं में लाभ देखता है, वह एक आश्रित है जो मौन को भंग करता है।

"उसके लिए जो भी धर्म निश्चित हैं, जिनका महत्व है": "स्थिर (अटल) दृष्टिकोण," दो प्रकार के स्थिर दृष्टिकोण हैं: .... "सक्रिय," सक्रिय, आडंबरपूर्ण और सहवास करने वाले, सक्रिय हैं। इसके अतिरिक्त, अनित्यता, कर्म, और जन्म-संबंधी धर्म, जैसे कि क्षीणता, अपव्यय, और अन्य धर्म, भी सक्रिय हैं। "जो कुछ भी उसके लिए है" वह बुराई देखने वालों के लिए है। "धर्म" को बासठ बुरे दृष्टिकोण कहा जाता है।

“मूल्यवान होना (और) अशुद्ध होना”: “मूल्यवान होना,” महत्व के दो प्रकार हैं: … उसके लिए, प्यास का महत्व समाप्त नहीं हुआ है, देखने का महत्व समाप्त नहीं हुआ है, प्यास के महत्व की अवस्था समाप्त नहीं हुई है, देखने के महत्व की अवस्था समाप्त नहीं हुई है, वह प्रेम या देखने की प्यास को आगे रखता है और चलता है, प्यास एक झंडे की तरह है, प्यास एक स्तंभ की तरह है, प्यास बढ़ती है, झंडे की तरह देखी जाती है, मीनार की तरह देखी जाती है, वृद्धि की तरह देखी जाती है, प्रेम या देखने की इच्छा का अनुसरण करते हुए। “अस्तित्व,” होना, जाना जाना, पाना, खोजा जाना। “अशुद्ध,” अशुद्ध, अनुचित, अपवित्र, प्रदूषित, दूषित।

“जो अपने आप में लाभ देखता है”: “स्वयं” का अर्थ है स्वयं। उसे बुरी दृष्टि वाला कहा जाता है, और वह अपनी दृष्टि से दो लाभ देखता है: जीवन में लाभ और परलोक में लाभ। इस दृष्टि से जीवन में क्या लाभ है? गुरु की जो दृष्टि होती है, शिष्यों की भी वही दृष्टि होती है। गुरु की उस दृष्टि के कारण शिष्य आदर, प्रशंसा, श्रद्धा और सम्मान करते हैं, जिसके कारण उन्हें वस्त्र, भोजन, आश्रय, रोगियों की आवश्यक वस्तुएँ और चिकित्सा संबंधी आवश्यकताएँ प्राप्त होती हैं; यह देखने का तात्कालिक लाभ है। इस दृष्टि से परलोक में क्या लाभ है? “यह दर्शन ही नाग (अग्निलोक), स्वर्ण-पंख वाले पक्षी, यक्ष, असुर, गंधर्व, राजा, इंदा, ब्रह्मा या स्वर्ग की अवस्था प्राप्त करने के लिए पर्याप्त है। यह दर्शन शुद्ध, पवित्र और सर्वस्व शुद्ध है; अनासक्ति, मुक्ति, सभी से विरक्ति, उन्हें शुद्ध होते देखना, स्वयं शुद्ध होना; अनासक्त होना, मुक्त होना, मुक्त होना; यह देखना कि मैं शुद्ध हो जाऊँगा, स्वयं शुद्ध हो जाऊँगा; सभी से विरक्ति दूर करना, मुक्त होना और अनासक्त होना।” भविष्य के फल की अपेक्षा के लिए, यह दर्शन का परलोक लाभ है। वह अपने इस दर्शन के दो लाभों को देखता है, निहारता है, ध्यान लगाता है, चिंतन करता है और उनका अवलोकन करता है।

“वह आश्रित है जो शांति को झकझोर देता है”: शांति तीन प्रकार की होती है: परम शांति, क्षणिक शांति और सांसारिक शांति। परम शांति क्या है? परम शांति को निर्वाण कहा जाता है, जहाँ सभी कर्म समाप्त हो जाते हैं, सभी आश्रित कर्म समाप्त हो जाते हैं, व्यथा, लोभ और अंत का अंत हो जाता है, और निर्वाण ही परम शांति है। क्षणिक शांति क्या है? जो प्रथम ध्यान में प्रवेश करते हैं, उनकी दृष्टि शांत हो जाती है; जो द्वितीय ध्यान में प्रवेश करते हैं, उनकी खोज शांत हो जाती है; जो तृतीय ध्यान में प्रवेश करते हैं, उनका आनंद शांत हो जाता है; जो चतुर्थ ध्यान में प्रवेश करते हैं, उनका सुख (और दुख) शांत हो जाता है; जो असीम शून्य (पहला/प्रथम अमूर्त) में प्रवेश करते हैं, उनकी कामवासना, विचार और सभी प्रकार की इच्छाएँ शांत हो जाती हैं; जो चेतना की असीमता (छठा) में प्रवेश करते हैं, उनके लिए असीम शून्य शांत हो जाता है। जो लोग शून्यता (सातवें) में प्रवेश करते हैं, उनके लिए कहा जाता है कि ज्ञान की कोई सीमा नहीं रहती और वह मौन हो जाता है; जो लोग अकल्पनीय स्थान (आठवें, न तो बोध और न ही अबोध) में प्रवेश करते हैं और प्रतीक्षा करते हैं, उनके लिए शून्यता मौन हो जाती है, यही मौन का अंश है। सांसारिक मौन क्या है? बासठ बुरे दृष्टिकोण, दृष्टि की स्थिरता को सांसारिक स्थिरता कहा जाता है, और इस अर्थ में यह सांसारिक स्थिरता है: इसका अर्थ "मौन" है। "वह स्थिरता को हिलाने वाला आश्रित है": वह स्थिरता को हिला रहा है, तीव्र गति से हिलाने वाली स्थिरता, गतिशील स्थिरता, अस्थिर स्थिरता, प्रभाव डालने वाली स्थिरता, निर्मित स्थिरता, स्थिर दृष्टिकोण। मौन क्षणिक, सक्रिय और सशर्त है; यह आश्रित, अटका हुआ, आसक्त, फंसा हुआ, पीड़ित और मन-उन्मुख है।

20 · देखने (दृष्टिकोण) के प्रति आसक्ति पर काबू पाना वास्तव में आसान नहीं है: धम्मों में चुने जाने के बाद इसे मजबूती से पकड़ लिया जाता है, इसलिए हर कोई धम्म को अस्वीकार करता है और उन आसक्तियों में धम्म को धारण करता है।

“दृष्टि (नज़रिए) के प्रति आसक्ति पर काबू पाना वाकई आसान नहीं है”: दृष्टि के प्रति आसक्ति, “संसार स्थिर है, यही वास्तविक है, और बाकी सब कुछ व्यर्थ है।” दृष्टि (नज़रिए) के निवास स्थान से चिपके रहना; “संसार बहुत स्थिर है…”, …(उद्धृत)… “दृष्टि के प्रति आसक्ति पर काबू पाना वाकई आसान नहीं है”: दृष्टि के प्रति आसक्ति पर काबू पाना वाकई आसान नहीं है, इसे पार करना कठिन है, इससे बचना कठिन है, इससे ऊपर उठना कठिन है, इसे पार करना कठिन है, और इस पर विजय पाना कठिन है।

"धर्मों में से चयन करने के बाद, उसे दृढ़ता से धारण किया जाता है": "धर्म में," बासठ बुरे विचारों में। "चयन के बाद," निर्णय के बाद, न्याय के बाद, मापन के बाद, मूल्यांकन के बाद, निर्णय के बाद, पृथक्करण के बाद, स्पष्टीकरण के बाद। "ग्रहण किया जाना," सीमित ग्रहण, आंशिक ग्रहण, सर्वोच्च ग्रहण, निश्चित मात्रा का ग्रहण, संचयी ग्रहण: यह सत्य है, सच्चाई है, तथ्य है, शुद्धता है, और उलटा नहीं है, धारण किया जाना, जकड़ा जाना, आसक्ति, ग्रहण किया जाना, समझा जाना माना जाना।

इसलिए हर कोई, उन आसक्तियों में": "इसलिए," ... "हर कोई," .... "उन आसक्तियों में," देखने (दृष्टिकोण) की उन आसक्तियों में।

"धम्म का त्याग और धारण": "त्याग," वह दो कारणों से करता है: या तो दूसरों द्वारा हस्तक्षेप के कारण, या जब वह स्वयं तक न पहुँच पाए तब। दूसरों द्वारा हस्तक्षेप के कारण कैसे त्याग किया जा सकता है? निर्णय: वह गुरु सर्वज्ञानी नहीं है, धम्म को अच्छा नहीं कहा गया है, (उसके) समूह अच्छे कर्म करने वाले नहीं हैं, देखना अच्छा नहीं है, मार्ग अच्छे लोगों द्वारा स्थापित नहीं किया गया है, मार्ग अनासक्त नहीं है, यहाँ कोई पवित्रता, शुद्धि या सर्वगुणितता नहीं है; न ही वह मुक्त, न ही पूर्णतः मुक्त है; यह निम्न, तुच्छ, नीच, मामूली, तुच्छ आशय वाला, महत्वहीन है; और यह "दूसरों द्वारा बाधित" है। इस प्रकार, बाधित होने पर, वह गुरु, धम्म के वर्णन, समूह और सभा का त्याग करता है, मार्ग का त्याग करता है, मार्ग का त्याग करता है, ताकि यह "दूसरों द्वारा बाधित" हो। जब वह स्वयं तक न पहुँच पाए तब कैसे त्याग किया जा सकता है? वह तब अस्वीकार करता है जब उपदेश का पालन नहीं होता, वह तब अस्वीकार करता है जब निषेध का पालन नहीं होता, और जब उपदेश और निषेध दोनों का पालन नहीं होता, तब भी वह इनकार करता है, इसलिए वह तब इनकार करता है जब उसका पालन नहीं होता। "और पकड़ बनाए रखते हुए," वह गुरु को पकड़ता है, कथा को पकड़ता है, समूह को पकड़ता है, दृश्य को पकड़ता है, मार्ग को पकड़ता है, पथ को पकड़ता है, वह पकड़ बनाए रखता है, दृढ़ रहता है।

21 · जो लोग शुद्ध हो चुके हैं, उनके लिए संसार में ऐसी कोई जगह नहीं है जहाँ हर तरह के विचार हों। शुद्ध होने के बाद जब व्यक्ति छल और अहंकार को त्याग देता है, तो वह किसमें पड़ सकता है?

"जो लोग शुद्ध हो चुके हैं, उनके लिए संसार में ऐसी कोई जगह नहीं है जहाँ अस्तित्व के सभी प्रकार के (गलत) विचार हों": "शुद्धिकरण," शुद्धिकरण को ज्ञान कहा जाता है, जो कि ज्ञान है...(उद्धृत) शुद्धिकरण को ज्ञान क्यों कहा जाता है? उस ज्ञान से शरीर के बुरे कर्म दूर हो जाते हैं, शुद्ध हो जाते हैं, पूरी तरह से शुद्ध हो जाते हैं और धुल जाते हैं; वाणी के बुरे कर्म...; द्वेषपूर्ण कर्म..., लोभ...; क्रोध, अज्ञान, ...(उद्धृत)...; सभी अशुद्धियाँ, सभी बुरे कर्म, सभी परेशानियाँ, सभी झुलसा देने वाली गर्मी, सभी गर्मी से होने वाली परेशानियाँ, सभी अस्वास्थ्यकर कर्म दूर हो जाते हैं, धुल जाते हैं, पूरी तरह से धुल जाते हैं और धोने से अलग हो जाते हैं, इसलिए शुद्धिकरण को ज्ञान कहा जाता है।

या फिर, बुरे विचार सही विचारों से दूर हो जाते हैं; बुरे शब्द सही शब्दों से धुल जाते हैं; बुरे कर्म सही कर्मों से धुल जाते हैं; बुरी नियति सही नियति से धुल जाती है; बुरी आत्मा सही प्रयास से धुल जाती है; बुरे विचार सही विचारों से धुल जाते हैं; बुरे कर्म सही एकाग्रता से धुल जाते हैं; बुरी बुद्धि सही बुद्धि से धुल जाती है; बुरी मुक्ति सही मुक्ति से धुल जाती है; पूरी तरह से शुद्ध होकर धुल जाती है।

या फिर, समस्त प्रदूषण, समस्त बुरे कर्म, समस्त कष्ट, समस्त झुलसी हुई गर्मी, समस्त ऊष्मा जनित कष्ट, समस्त अपवित्र कर्म आठ पवित्र मार्गों द्वारा शुद्ध होकर, पूर्णतः शुद्ध होकर और अलग होकर दूर हो जाते हैं, और अरहंत इन शुद्ध किए जा सकने वाले धर्मों को धारण करते हैं, पूर्णतः धारण करते हैं, उनमें प्रवेश करते हैं, पूर्णतः प्रवेश करते हैं, पूर्णतः परिपूर्ण और पूर्णतः संतुष्ट होते हैं। अतः, अरहंत एक शुद्ध व्यक्ति हैं। वे ही हैं जो लोभ, बुराई, प्रदूषण और ऊष्मा (चिड़चिड़ाहट) को दूर करते हैं। "चाहे कहीं भी हो," चाहे कहीं भी हो, कहीं भी, जहाँ कहीं भी, अंदर या बाहर या (दोनों) अंदर और बाहर। "संसार में," दुखमय संसार में... (विलुप्त)।

दो प्रकार के स्थिर मत होते हैं: इच्छा के कारण स्थिर मत और देखने के स्थिर मत... (उद्धृत)। "सभी प्रकार के अस्तित्व में," सभी प्रकार के कर्मों में, पुनः प्राप्ति की इच्छा; प्राप्ति की इच्छा में, अस्तित्व का रूप; अस्तित्व के रूप में, पुनः निराकार; निराकार अस्तित्व के कर्म में, बार-बार दोहराना; बार-बार होने वाली रुचि में, पुनर्जन्म; पुनर्जन्म में, व्यक्तिगत जन्म। जो शुद्ध हो चुके हैं, वे संसार में कहीं भी हों, वास्तव में उनके लिए कोई मत नहीं होते, और सभी प्रकार के स्थिर मत भी नहीं होते: जो शुद्ध हो चुके हैं, वे संसार में कहीं भी हों, सभी प्रकार की वस्तुओं का निर्माण, स्थिर, कृत्रिम, मतों के साथ सहवास करना, वह नहीं है, अस्तित्व में नहीं है, ज्ञात नहीं है, खोजा नहीं गया है, काट दिया गया है, अलग कर दिया गया है, शांत कर दिया गया है, रोक दिया गया है, उठने में असमर्थ है, ज्ञान की अग्नि से जल गया है।

"जो व्यक्ति सफाई करता है, वह छल और अहंकार का त्याग करता है": छल को छल कहा जाता है। यहाँ, एक विशेष प्रकार का व्यक्ति शरीर से बुरे कर्म करने के बाद; वाणी से बुरे कर्म करने के बाद; इरादे से बुरे कर्म करने के बाद, बुराई को छिपाने की इच्छा उत्पन्न करता है। वह चाहता है: "वह मुझे (मेरे कर्मों आदि को) न जाने!" वह मुझे जानना नहीं चाहता!" शारीरिक रूप से कड़ी मेहनत करते हुए कहता है, "वह मुझे न जाने!" [AN.6.45] छल, सीमा पार (उल्लंघन), छिपाना, अस्पष्ट करना, रहस्य रखना, छुपाना, छुपाना (हर जगह रहस्य रखना), ढकना, पूरी तरह से ढकना, अप्रकट कार्य और बुरे कर्मों को छुपाना छल कहलाता है।

"अभिमान," एक प्रकार का अभिमान: यही हृदय की पराकाष्ठा है; दो प्रकार...: आत्म-प्रशंसा अभिमान है, दूसरों के प्रति तिरस्कार अभिमान है; तीन: "मैं विजेता हूँ"..., "मैं समान हूँ," "मैं हीन हूँ"; चार: लाभ प्राप्त करना, प्रसिद्धि, प्रशंसा और सुख पाना; पाँच: "मुझे मनचाहा रूप प्राप्त हुआ," "मुझे मनचाही ध्वनि प्राप्त हुई," गंध..., स्वाद..., स्पर्श...; छह प्रकार: आँखों से..., कानों से..., नाक से, जीभ से, शरीर से...मन की संतुष्टि अभिमानी बनाती है; सात: अभिमान, अहंकार, अभिमान और अहंकार, विनम्रता, वृद्धि का अभिमान, आत्म-सत्य का अभिमान, बुराई का अभिमान; आठ: प्राप्ति अभिमानी बनाती है, प्राप्ति न होना..., प्रसिद्धि, प्रसिद्धि न होना, प्रशंसा, निंदा, सुख और दुख; नौ: विजेता सोचता है: "मैं विजेता हूँ"..., विजेता सोचता है: "मैं समान हूँ," विजेता सोचता है: "मैं हीन हूँ"...; और समान व्यक्ति सोचता है: "मैं विजेता हूँ," समान व्यक्ति सोचता है: "मैं एक समान हूँ," समान व्यक्ति सोचता है: "मैं हीन हूँ," हीन व्यक्ति सोचता है: "मैं विजेता हूँ," हीन व्यक्ति सोचता है: "मैं एक समान हूँ," हीन व्यक्ति सोचता है: "मैं हीन हूँ;" दस प्रकार...: यहाँ, किसी विशेष जन्म, या उपनाम, या अच्छे परिवार, या कमल के समान सौंदर्य, या संपत्ति, या शोध (अधिग्रहण), या व्यवसाय, या शिल्प कौशल, या अध्ययन, या सुनी हुई बातों से, या तर्क-वितर्क से, या किसी ऐसी चीज़ से जो किसी को अहंकारी बना दे; जो कोई भी इस प्रकार, इस प्रकार के हृदय अहंकार के साथ, स्थिति को समझते हुए, उच्च प्रशंसा, उच्च अहंकार को ध्वज की तरह, हृदय के घमंड की तरह मानता है, वह अहंकारी कहलाता है। "शुद्ध व्यक्ति छल और अहंकार का त्याग करता है": शुद्ध व्यक्ति द्वारा त्यागने के बाद, त्यागने के बाद, भगाए जाने के बाद, समाप्त करने के बाद, और उसे अस्तित्वहीन कर देने के बाद।

"वह अनासक्त व्यक्ति है, वह किसमें फँसेगा?": "आसक्ति," आसक्ति दो प्रकार की होती है... उसके लिए प्रेम से आसक्ति टूट गई है; दृष्टि (दर्शन) से आसक्ति टूट गई है, दृष्टि की अवस्था से आसक्ति टूट गई है; अनासक्त लोग किस लोभ, किस घृणा, किस भ्रम, किस अहंकार, किस धारणा, किस संदेह, किस प्रकार की संभावित परेशानी में फँसेंगे और "संक्रमित," या "घृणित," या "अज्ञानी," या "बंधे हुए," या "हमलावर," या "बिखरे हुए अराजकता में आने वाले," या "असंतोषजनक में आने वाले," या "मजबूत में आने वाले" बन जाएँगे? जिस अवस्था में कर्मों का नाश हो जाता है और वे कर्म एक रहस्यमय स्थान पर गिरकर "नरक", "पशु जगत", "भूखे प्रेतों का लोक", "मनुष्य", "स्वर्ग", "रूपित", "रूपहीन", "विचारशील", "विचारहीन", या "न विचारशील" बन जाते हैं, वह कैसी अवस्था होगी? उसका न कोई कारण है, न कोई पूर्वनियति है, और न ही कोई ऐसे कारक हैं जो उसमें समाहित होंगे।

22 · वास्तव में, इसमें शामिल व्यक्ति विभिन्न धर्मों पर विवाद में पड़ गया है, (पर) जो आसक्ति रहित है, उससे भला कौन विवाद कर सकता है? जो लिया और त्यागा जाता है, वह उसके लिए अस्तित्वहीन है, और उसने इस जीवन में सब कुछ (विचारों) को मिटा दिया है।

“सम्मिलित लोग वास्तव में सभी धर्मों में विवाद तक पहुँच चुके हैं”: “सम्मिलित होना,” दो प्रकार का सम्मिलन है: लालसा और दृष्टि... उनके लिए, प्यास का सम्मिलन समाप्त नहीं हुआ है; दृष्टि की सहभागिता अविभाजित नहीं हुई है, अटूट अवस्था में, दृष्टि की सहभागिता की अवस्था धम्म में विवादों तक पहुँच गई है, जिससे वह "संक्रमित," या "घृणित," या "मूर्ख," या "बंधा हुआ," या "धारणशील," या "अव्यवस्था में आने वाला," या "अवांछित में आने वाला," या "धैर्य में आने वाला" बन गया है, जो कि अविभाजित अवस्था है, सृष्टि की अनसुलझी अवस्था है, विवाद के हित में, वह "नरक में गिरने वाले लोग," या "पशु जगत में गिरने वाले," या "भूखे प्रेत जगत में गिरने वाले," या "मनुष्य," या "स्वर्ग," या "निर्मित," या "निराकार," या "चिंतनशील," या "अचिंतनशील व्यक्ति," या "न चिंतनशील और न चिंतनशील व्यक्ति" बन जाता है, वह आता है, धारण करता है, पकड़ता है और बना रहता है।

“अनासक्त व्यक्ति के बारे में क्या और कैसे कहा जा सकता है?”: “आसक्ति,” आसक्ति दो प्रकार की होती है: ... उसके लिए प्यास की आसक्ति समाप्त हो गई है...; किस लालच के साथ..., परेशानी की अंतर्निहित प्रवृत्ति के संदर्भ में, क्या आप कह सकते हैं कि अनासक्त व्यक्ति “संक्रमित,” या “घृणित,” या “अज्ञानी,” या “बंधा हुआ,” या “हमलावर,” या “अव्यवस्था की ओर बढ़ रहा,” या “असंतोष की ओर बढ़ रहा,” या “दृढ़ता की ओर बढ़ रहा” है? उस अवस्था के बारे में क्या कहा जा सकता है जिसमें कर्म समाप्त हो गए हैं... उसके पास कोई कारण नहीं है, कोई भाग्य नहीं है, ऐसे कोई कारक नहीं हैं जिनके बारे में बात की जा सके, चर्चा की जा सके, व्याख्या की जा सके और कहा जा सके।

“उसके लिए लेना और त्यागना अस्तित्वहीन है”: “लेना” “मैं” के लिए है, यह उसके पास नहीं है; “त्यागना” विनाश के लिए है, यह उसके पास नहीं है; “लेना” आसक्ति है, ...और “त्यागना” वह है जिसे छोड़ देना चाहिए...। जो कुछ भी थामे रहना चाहिए, कुछ ऐसा भी है जिसे छोड़ देना चाहिए; जो कुछ भी छोड़ देना चाहिए, कुछ ऐसा भी है जिसे थामे रहना चाहिए। लेना और त्यागना पार हो चुका है, और अरहंत चेतना और ध्यान से परे जा चुका है। वह एक ऐसी अवस्था में उतर चुका है, जिसने अभ्यास किया है, जिसने यात्रा पूरी की है, जिसने पुनर्जन्म के बिना जीवन-मृत्यु के चक्र, उस दिशा को प्राप्त कर लिया है।

“इस जीवन में वह सभी विचारों को मिटा देता है”: उसके लिए, बासठ बुरे विचार काट दिए गए हैं, अलग कर दिए गए हैं, शांत कर दिए गए हैं, रोक दिए गए हैं, उत्पन्न होने में असमर्थ हैं, ज्ञान की अग्नि से जला दिए गए हैं, और सभी बुरे विचारों को, उसने मिटा दिया है, झटक दिया है, पूरी तरह से झटक दिया है, नीचे गिरा दिया है, त्याग दिया है, भगा दिया है, उनका अंत कर दिया है, उन्हें इस जीवन में अस्तित्वहीन बना दिया है।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> निद्देसा >> निद्देसा 1.4

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

<<<< पिछला अगला >>>>

4. शुद्धता

23 · मैं पवित्रता देखता हूँ: सर्वोच्च, रोगमुक्त, एक मनुष्य जो देखकर पूर्णतः शुद्ध हो जाता है, जब वह जानता है कि “यह सर्वोच्च है,” जब वह इस मार्ग को जानता है, “वही पवित्र है जो अवलोकन करता है,” वह ज्ञान की ओर लौटता है।

“मैं पवित्रता देखता हूँ: सर्वोच्च, रोगमुक्त”: “मैं पवित्रता देखता हूँ,” मैं पवित्रता देखता हूँ, मैं पवित्रता को निहारता हूँ, मैं पवित्रता का अवलोकन करता हूँ, मैं पवित्रता का निरीक्षण करता हूँ। “सर्वोच्च, रोगमुक्त,” सर्वोच्च, रोगमुक्त, वह जो अभयारण्य तक पहुँचता है, वह जो शरण तक पहुँचता है, वह

जो आश्रय तक पहुँचता है, वह जो भयमुक्त हो जाता है, वह जो निर्जीव अवस्था तक पहुँचता है, वह जो निर्गमन तक पहुँचता है, वह जो निर्वाण तक पहुँचता है।

"दर्शन द्वारा पूर्ण पवित्रता": आँखों से रूप को देखना व्यक्ति की पवित्रता, शुद्धिकरण और पूर्ण पवित्रता को देखना है; वैराग्य, मुक्ति और अनासक्ति, और व्यक्ति शुद्ध, पवित्र और पूर्ण रूप से शुद्ध हो जाता है; मुक्त, विरक्त, मुक्त हो जाता है।

"जब वह इस मार्ग को जान लेता है, तब वह जान जाता है कि 'यही सर्वोच्च मार्ग है'": जब यह मार्ग ज्ञात, निश्चित और भलीभांति समझ लिया जाता है, तब "यही सर्वोच्च, प्रथम, श्रेष्ठ, विजयी, शीर्ष, सर्वोच्च है।" जब वह जान लेता है, समझ लेता है, परख लेता है, निर्णय लेता है, अलग करता है और स्पष्ट कर लेता है।

"जो शुद्धता से अवलोकन करता है, वही ज्ञान की ओर लौटता है": जो कोई शुद्धता को देखता है, वही शुद्धता का अवलोकन करता है। वह ज्ञान की ओर लौटता है। जो व्यक्ति दृष्टि से रूप को देखता है, वह ज्ञान की ओर लौटता है; मार्ग की ओर लौटता है, निकास की ओर लौटता है।

24 · यदि कोई देखकर शुद्ध हो जाता है, या यदि वह ज्ञान के द्वारा दुख का त्याग कर देता है, तो ऐसे लोग भी हैं जो शुद्ध होने के लिए अन्य (चीजों) पर निर्भर रहते हैं; यह कहा जाना चाहिए कि वह वास्तव में ऐसा ही वक्ता है।

"यदि कोई देखने से शुद्ध है": अपनी आँखों से रूप देखना... (छोड़ा गया)।

"या यदि वह ज्ञान से दुख का त्याग कर सके": यदि वह अपनी आँखों से देख सके, और यदि कोई जीवन और दुख, बुढ़ापा, बीमारी, मृत्यु, शोक, दु:ख, निराशा और पीड़ा का त्याग कर दे।

"कुछ लोग दूसरों पर निर्भर होकर शुद्ध होते हैं": अन्य चीजों, अशुद्ध मार्गों, बुरे मार्गों और अस्तित्वहीनता के साथ-साथ, सचेतनता, सभी उचित कर्मों, दिव्य आधारों, जड़ों, शक्तियों, ज्ञान और पवित्र मार्ग की आठ शाखाओं के अतिरिक्त, मनुष्य शुद्ध होता है, पवित्र होता है, सर्वत्र शुद्ध होता है; मुक्त होता है, निर्धन होता है और सभी दोषों से मुक्त हो जाता है। "निर्भर" वे लोग हैं जिनमें लोभ, घृणा, अज्ञान, आलस्य, प्यास, (बुरे) द्रष्टा, प्रदूषण फैलाने वाले और आसक्ति होती है।

"यह कहना उचित होगा कि वह वास्तव में ऐसा वक्ता है": वह व्यक्ति जो (इन विचारों को) देखता है और बोलता है: इस प्रकार, यह व्यक्ति (गलत दृष्टिकोण वाला) है, विपरीत दृष्टिकोण वाला है। "यह ऐसा वक्ता है," ऐसा वक्ता, कथावाचक, कथनकर्ता, व्याख्याकार, वक्ता है: "संसार स्थिर है, यह सत्य है, और बाकी सब कुछ व्यर्थ है।" ऐसा वक्ता... "संसार बहुत स्थिर है... (छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)...।" ऐसा कथनकर्ता, कथावाचक, वक्ता, व्याख्याकार और वक्ता।

25 ब्राह्मण यह नहीं कहते कि पवित्रता दूसरों (वस्तुओं या विचारों) से आती है, न ही जो वे देखते, सुनते, या उपदेश और निषेधों से, या महसूस करते हैं, पुण्य और पाप से दूषित न होकर, जो कुछ ग्रहण किया है उसे त्यागकर, यहाँ कुछ भी न बनाकर।

"ब्राह्मण अपने देखने, सुनने, उपदेशों और निषेधों या धारणाओं में दूसरों से शुद्ध नहीं होते": "नहीं" का अर्थ निषेध है। "ब्राह्मण," सात धर्मों को त्यागने की अवस्था है, यही ब्राह्मण है: ...(विलुप्त, पिछले अनुभाग देखें)।

भगवान बुद्ध: [सं.3.6, 524] "सभी बुराइयों के नाश होने पर, निष्कलंक, सदाचारी अवस्था में खड़े होकर, पुनर्जन्म से परे जाकर, वे पूर्ण पुरुष बन जाते हैं। जो आश्रित नहीं हैं, उन्हें ब्राह्मण कहा जा सकता है।"

"ब्राह्मण यह नहीं कहते कि पवित्रता दूसरों से आती है," अन्य बातों के साथ..., ब्राह्मण न तो बोलते हैं, न कहते हैं, न बात करते हैं, न ही व्याख्या करते हैं, न ही कुछ कहते हैं।

"जो वे देखते, सुनते, उपदेश और निषेध, या बोध करते हैं।" कुछ समण और ब्राह्मण देखने को पवित्र मानते हैं। वे कुछ रूपों को देखना शुभ मानते हैं और कुछ रूपों को देखना अशुभ मानते हैं। वे किस प्रकार के दृश्य को शुभ मानते हैं? सुबह-सुबह वे शुभ रूप देखते हैं: गौरैया देखना, सुंदर और रंगीन मार्मेलो के पेड़ देखना, गर्भवती महिलाएं, पुरुष के कंधों पर बैठा लड़का, भरे हुए कलश, समण, घोड़े, घोड़ागाड़ी, बैल, सांड; वे मानते हैं कि ऐसी चीजों को देखना शुभ है। वे किस प्रकार के दृश्य को अशुभ मानते हैं? भूसे का ढेर देखना, मक्खन का कलश, खाली कलश, नर्तक, नग्न नकली समण, खच्चर, गधे की गाड़ी, एक लगाम वाली सवारी, एक आंख वाला व्यक्ति, हाथ की विकृति, लंगड़ा व्यक्ति, आधा शरीर, बुजुर्ग और बीमार; उनका मानना है कि ऐसी चीजें देखना अशुभ होता है। ये वे समन और ब्राह्मण हैं जो अपने सामने आने वाली हर चीज को पवित्र मानते हैं।

कुछ समण और ब्राह्मण जो सुनते हैं उसे पवित्र मानते हैं। उनका मानना है कि कुछ ध्वनियाँ सुनना शुभ होता है और कुछ अशुभ। वे किन ध्वनियों को शुभ मानते हैं? सुबह-सुबह उन्होंने एक शुभ ध्वनि सुनी: "समृद्धि," "अनमोल," "भरपूर," "भव्य," "चिंतामुक्त," "सद्भावना," "शुभ नक्षत्र," "सौभाग्य," "भाग्यशाली," या "भाग्य में वृद्धि"; उनका मानना है कि ऐसी ध्वनियाँ सुनना शुभ है। वे किन ध्वनियों को अशुभ मानते हैं? "एक आँख," "हाथ की विकृति," "लंगड़ा," "आधा शरीर," "वृद्ध," "रोगी," "बीमार," "मृत," "कटा हुआ," "टूटा हुआ," "जला हुआ," "गायब," या "कुछ नहीं"; उनका मानना है कि ऐसी ध्वनियाँ सुनना अशुभ है।

कुछ समण और ब्राह्मण उपदेशों को पवित्रता मानते हैं। उनका मानना है कि उपदेश की मात्रा, आत्मसंयम की मात्रा, आत्म-नियंत्रण की मात्रा और अहिंसा की मात्रा ही शुद्ध और पवित्र है...। उग्गाहमान समणमुंडिक ने कहा: हे स्वामी! मैंने सिद्ध किया है कि चार गुणों से युक्त पुरुष ही सत्त्ववान, परम सत्त्ववान और सर्वोच्च सिद्धि प्राप्त करने वाले होते हैं, और समण (का अस्तित्व ही नहीं) जो इन गुणों को पार नहीं कर सकता। वे चार गुण कौन से हैं? हे स्वामी! यहाँ, वह बुरे कर्म नहीं करता, बुरे शब्द नहीं बोलता, बुरे इरादे नहीं रखता, बुरा जीवन नहीं जीता, हे स्वामी! मैंने सिद्ध किया है कि इन चार गुणों से युक्त पुरुष ही सत्त्ववान, परम सत्त्ववान, सर्वोच्च सिद्धि प्राप्त और अतुलनीय समण है। [एमएन.78] इसी प्रकार, कुछ समण और ब्राह्मण उपदेशों को पवित्र मानते हैं।

कुछ समण और ब्राह्मण निषेध को शुद्ध मानते हैं। वे हाथी, घोड़े, गाय, कुत्ते, कौवे, विष्णु, देवताओं की शक्ति, ऋषि, मोती ऋषि, अग्नि, अजगर, स्वर्ण-पंख वाले पक्षी, यक्ष, असुर, गंधर्व, महान राजा, चंद्रमा, सूर्य, इंद्र, ब्रह्मा, देवों और पद की रक्षा (निषेध) करते हैं।

कुछ समण और ब्राह्मण वही पवित्र मानते हैं जो उन्हें शुद्ध लगता है। वे सुबह-सुबह धरती को स्पर्श करते हैं, घास, गोबर, कछुआ, कुदाल, तिलदानी को स्पर्श करते हैं, शुभ तिल चबाते हैं, शुभ तेल चबाते हैं, शुभ लकड़ी चबाते हैं, शुभ मिट्टी से स्नान करते हैं, शुभ वस्त्र पहनते हैं और शुभ सिर का दुपट्टा ओढ़ते हैं।

"जो कुछ तुम देखते हो, सुनते हो, जो कुछ तुम समझते हो, या जो कुछ तुम महसूस करते हो," ब्राह्मण यह नहीं कहता कि पवित्रता उसके देखने में है; वह यह नहीं कहता कि पवित्रता उसके सुनने में है; वह न तो नियमों से पवित्र है; न ही निषेधों से; और न ही वह अपने अनुभवों से पवित्र है। पवित्रता का अर्थ है पवित्रता; न बताना, न बात करना, न समझाना, न बोलना।

"पुण्य और पाप में दूषित न होना": पुण्य तीनों लोकों के सभी अच्छे कर्मों को कहा जाता है, और अपराधन (बुराई) सभी अस्वास्थ्यकर कर्मों को कहा जाता है। क्योंकि अच्छे कर्म, अपराधन और अचल कर्म काट दिए गए हैं, जड़ काट दी गई है...(विलुप्त, पिछले खंड देखें), इस स्थिति में, यह पुण्य और पाप में दूषित नहीं है, न ही अधिक दूषित है, न ही गहराई से दूषित है, न ही अब दूषित है, न ही अब गहराई से दूषित है। वह बंधन से मुक्त हो गया है, वह निर्बल हृदय से निवास करता है।

"जो कुछ तुम लेते हो उसे त्याग दो, और यहाँ कुछ भी न बनाओ": "जो कुछ तुम लेते हो उसे त्याग दो" का अर्थ है अपनी दृष्टि का त्याग करना; "जो कुछ तुम लेते हो उसे त्याग दो" का अर्थ है दृढ़ता का त्याग करना; "जो कुछ तुम लेते हो उसे त्याग दो" का अर्थ है प्रेम और दृष्टि की लालसा के कारण पकड़े रहना; जो कुछ भी थामे हुए हो, चिपके हुए हो, ले रहे हो और जिसके प्रति वफादार हो, वह सब उसके द्वारा त्याग दिया जाता है, थूक दिया जाता है, छोड़ दिया जाता है, खारिज कर दिया जाता है और समाप्त कर दिया जाता है। "जो यहाँ कुछ भी नहीं बनाते," वह जो पुण्य नहीं कमा रहा है, वह जो जन्म लेने के लिए नहीं बना है, वह जो उत्पन्न होने के लिए नहीं बना है, वह जो उत्पन्न नहीं हो रहा है।

26 · पिछले अनुयायी को काटकर और अगले अनुयायी बनकर, विचलित अनुयायी संबंध न तोड़ने के लिए, वे (विचार, गुरु आदि) उठाते हैं और छोड़ देते हैं, जैसे कोई बंदर शाखा को पकड़ता है और छोड़ देता है।

"पूर्व को त्यागकर बाद के अनुयायी बनना": पूर्व गुरु के बाद, अन्य गुरुओं के अनुयायी बनना; ...पूर्व विधियों (धम्मों) की कथाएँ...; ...जनसमूह...; ...विचार...; ...मार्ग...। वे जो पूर्णतः आश्रित हैं, अनुयायी, प्रवेशकर्ता, बंधे हुए और वे जो अपना मन (इन चीजों की ओर) मोड़ते हैं।

"विचलित अनुयायी बंधन को पार नहीं कर पाते": विचलन को लालसा कहते हैं, जो लोभ है... "विचलित अनुयायी," विचलित अनुयायी, परेशान अनुयायी, जो विचलन से पराजित हो जाता है, पराजित, पराजित, जिसका हृदय लोभ से ग्रस्त हो जाता है। "वे बंधन को पार नहीं कर पाते," लोभ के बंधन को, घृणा के बंधन को, आलस्य के बंधन को, अपवित्र बंधन को, बुरे कर्मों के बंधन को, वे पार नहीं कर पाते, उससे ऊपर नहीं उठ पाते, उससे आगे नहीं बढ़ पाते, उसे पार नहीं कर पाते, उस पर विजय प्राप्त नहीं कर पाते।

"वे उठाते हैं और छोड़ देते हैं": वे एक गुरु को पकड़ते हैं, उसे छोड़ देते हैं और फिर दूसरे गुरुओं को पकड़ते हैं; ...धम्म का वर्णन...; भीड़, दृश्य, मार्ग..., वे पकड़ते हैं और छोड़ देते हैं, लेते हैं और छोड़ देते हैं।

"बंदर की तरह जो एक शाखा को पकड़ता है और उसे छोड़ देता है": जैसे कोई बंदर जंगलों में घूमता है, एक शाखा को पकड़ता है, उस शाखा को छोड़ देता है और फिर दूसरी शाखा को पकड़ लेता है [SN.12.61]; उसी तरह, अधिकांश समण और ब्राह्मण बहुमत के बुरे विचारों को पकड़ते और छोड़ते हैं, लेते और छोड़ते हैं।

27 · जब कोई व्यक्ति स्वयं को नियंत्रित कर लेता है, तो वह ऊँच-नीच का पालन करना चाहता है, जबकि ज्ञानी व्यक्ति धम्म ग्रहण करने के बाद ऊँच-नीच नहीं करता।

"जब कोई व्यक्ति स्वयं द्वारा संयमित हो जाता है": "स्वयं को धारण करना" का अर्थ है स्वयं द्वारा धारण करना (आत्मनिर्भरता)। "निषेध," ...; उसके द्वारा ग्रहण करने के बाद, धारण करने के बाद, ग्रहण करने के बाद, पकड़ लेने के बाद, आसक्ति के बाद। "मनुष्य," चेतन प्राणी, मानव...।

"उनका अनुसरण करते हुए और ऊँच-नीच चलते हुए": वे एक गुरु से दूसरे गुरु के पास गए; एक धर्म से दूसरे धर्म के पास गए; ... "मैं अटक जाना चाहता हूँ," सोचना चाहता हूँ, द्वेषपूर्ण विचार करना चाहता हूँ, हानि के बारे में सोचना चाहता हूँ, अटक जाने, उलझ जाने, बंध जाने, आसक्त हो जाने, स्थिर हो जाने, बाधाओं के बारे में सोचना चाहता हूँ, जैसे दीवार पर रखी वस्तुएँ या दीवार में लगी कील, जिसका ऊपरी भाग अटक जाता है, उलझ जाता है, बंध जाता है, आसक्त हो जाता है, स्थिर हो जाता है, अवरुद्ध हो जाता है। उसी प्रकार, सोचना चाहता हूँ, द्वेषपूर्ण विचार, सताया जाना, अटक जाना, उलझ जाना, बंध जाना, आसक्त हो जाना, अवरुद्ध हो जाना, बाधा के रूप में देखा जाना।

"ज्ञानी व्यक्ति द्वारा धम्म (यानी वेदों का धम्म) ग्रहण करने के बाद": "ज्ञानी व्यक्ति" ...(विलुप्त, पिछले खंड देखें)। "वेदों में," वेदों को ज्ञान, ज्ञान का मूल, ज्ञान की शक्ति, प्रबुद्धता, अन्वेषण, विपश्यना, चारों लोकों में सही दृष्टि कहा गया है। वेदों में परम (लक्ष्य) तक पहुँचने वालों के लिए, जो परम तक पहुँच चुके हैं, वे अंत तक पहुँच चुके हैं; जो अंत तक पहुँच चुके हैं, वे सीमा (परम) तक पहुँच चुके हैं; जो सीमा तक पहुँच चुके हैं, वे अंत तक पहुँच चुके हैं; जो अंत तक पहुँच चुके हैं, वे आश्रय तक पहुँच चुके हैं; जो आश्रय तक पहुँच चुके हैं, वे शरण तक पहुँच चुके हैं; जो शरण तक पहुँच चुके हैं, वे सुरक्षा तक पहुँच चुके हैं; जो सुरक्षा तक पहुँच चुके हैं, वे भयमुक्त हो चुके हैं; जो भयमुक्त हो चुके हैं, वे मृत्यु से मुक्त हो चुके हैं; जो मृत्यु से मुक्त हो चुके हैं, वे अमरता तक पहुँच चुके हैं; जो अमरता तक पहुँच चुके हैं, वे निर्वाण तक पहुँच चुके हैं; जो निर्वाण तक पहुँच चुके हैं, वे निर्वाण तक पहुँच चुके हैं। या फिर "वेदों तक पहुँचने वाला" वह है जो वेदों को जानता है, या सात धर्मों की ज्ञात अवस्था वह है जो वेदों को जानता है: देखना ज्ञात है, संदेह ज्ञात है, संयम ज्ञात है, लोभ ज्ञात है, घृणा ज्ञात है, अज्ञान ज्ञात है, अहंकार ज्ञात है, और इसके बुरे और अस्वस्थ तरीके ज्ञात हैं: दूषित, फिर से, भयभीत, पीड़ित, भविष्य में जीना और मरना होगा।

भगवान बुद्ध: [सं.3.6, 534] "सभी वेदों का चयन करो, यहाँ विद्यमान सभी समण और ब्राह्मणों से संबंधित वेदों का चयन करो, वह सभी भावों में लोभ से मुक्त है, और सभी वेदों को पार करने के बाद, वह वेदों को भलीभांति जानने वाला है।"

"ज्ञानी व्यक्ति द्वारा धम्म ग्रहण करने के बाद": धम्म को देखने के बाद एकात्मता: "सभी कर्म अनित्य हैं" धम्म को देखने के बाद एकात्मता के रूप में, "सभी कर्म दुखदायी हैं"..., "सभी धर्म अनात्म हैं"..., "सृष्टि अज्ञान पर निर्भर है"..., "चेतना सृष्टि पर आधारित है"..., नाम और रूप..., छह इंद्रिय आधार..., स्पर्श (संपर्क)..., अनुभूति..., (भावना...,) लालसा..., (जन्म...,), जन्म..., वृद्धावस्था और मृत्यु...; अज्ञान की मृत्यु से विनाश, नश्वर होने और नष्ट होने का संकल्प, ज्ञान और नाम से विनाश, नाम और रूप से और छह इंद्रिय आधारों में विनाश, छह इंद्रिय आधारों में स्पर्श से विनाश, स्पर्श का विनाश..., ...प्यास का विनाश..., ...प्यास और प्रेम से..., ...जन्म लेना और मर जाना...; ..."यह दुख है"..., यह दुखों का संग्रह है, यह दुखों का निवारण है, यह दुखों के निवारण की ओर ले जाने वाला मार्ग है; ये दोष हैं, ये दोषों का संग्रह है, ये दोषों का निवारण है, ये दोषों के निवारण की ओर ले जाने वाला मार्ग है; इन धर्मों को सिद्ध किया जाना चाहिए, इन धर्मों को जाना जाना चाहिए, इन धर्मों का व्यापक प्रचार किया जाना चाहिए, इन धर्मों का त्याग किया जाना चाहिए, इन धर्मों का अभ्यास किया जाना चाहिए, इन धर्मों की गवाही दी जानी चाहिए; छह स्पर्श बिंदुओं का संग्रह, विनाश, सुख, दुख और त्याग..., पाँच स्कंधों का संग्रह..., ...चार प्रमुख प्रजातियों का संग्रह; "धर्मों का कोई भी संग्रह धर्मों का विनाश है"..., धर्म को देखने के बाद, मिलन के रूप में।

"ज्ञानी व्यक्ति ऊँच-नीच नहीं करता": वह एक गुरु से दूसरे गुरु के पास नहीं जाता, धर्म के वर्णन से धर्म के वर्णन की ओर नहीं भटकता... (अंशित) "ज्ञानी व्यक्ति," ज्ञानी व्यक्ति महान ज्ञानी, शीघ्र ज्ञानी, अधिक ज्ञानी, अंतर्दृष्टि वाला होता है; जैसे पृथ्वी को विशाल कहा जाता है, वैसे ही उसके पास पृथ्वी के समान विशाल और विस्तृत ज्ञान होता है।

28 · वह एक ऐसा व्यक्ति है जिसने सभी धर्मों में श्रेष्ठता प्राप्त कर ली है: जो कुछ भी देखा या सुना जा सकता है, उसे इस संसार में कौन वर्गीकृत कर सकता है, जिसने इस प्रकार देखा और खोला है?

"वही है जिसने सभी धर्मों में सेना छोड़ दी है: जो कुछ वह देखता, सुनता और समझता है": उस सेना को राक्षस सेना कहा जाता है, शारीरिक बुराई को शैतान सेना; वाणी की बुराई को शैतान सेना; इरादे की बुराई को शैतान सेना; घृणा...; अज्ञान...; क्रोध...; ...(छोड़ा गया); सभी बुरे कर्म शैतान सेना हैं।

यह बात भगवान बुद्ध ने कही: [संख्या 3.2] "इच्छा तुम्हारी पहली सेना है, दुःख दूसरी, भूख और प्यास तुम्हारी तीसरी, और प्यास (प्रेम) तुम्हारी चौथी। गहरी नींद तुम्हारी पाँचवीं, भय तुम्हारी छठी, संदेह तुम्हारी सातवीं, और हठ तुम्हारी आठवीं। वह व्यक्ति जिसकी प्रतिष्ठा अच्छी है, और वह प्रतिष्ठा जो उसने गलतियों से अर्जित की है, जो स्वयं की प्रशंसा करता है और दूसरों को तुच्छ समझता है। हे शैतान! यह तुम्हारी सेना है, हे दुष्ट (काला) हमलावर, जिनके पास साहस नहीं है वे उसे परास्त नहीं कर सकते, और उन्हें विजय के बाद शांति मिलेगी।"

जब सभी दानव सेना और सभी शत्रुतापूर्ण अशुद्धियाँ चारों पवित्र मार्गों द्वारा पराजित, परास्त, नष्ट, विघटित और दूर कर दी जाती हैं, तब उसे सेना छोड़ने वाला कहा जाता है। वह वह है जो दृष्टि से सेना छोड़ देता है; वह जो श्रवण से सेना छोड़ देता है; वह जो इंद्रियों से सेना छोड़ देता है; वह जो ज्ञान से सेना छोड़ देता है।

"जो इस मार्ग से देखता है, जो खुल गया है": जो इस पवित्रता को देखता है, जो शुद्ध रूप से देखता है, जिसकी दृष्टि शुद्ध है; जो स्पष्ट रूप से देखता है, जो सर्व-शुद्धता से देखता है, या शुद्ध द्रष्टा, जो शुद्ध रूप से देखता है, स्वच्छ रूप से देखता है, स्पष्ट और शुद्ध रूप से देखता है। "खुला हुआ," भोग के आवरण हैं, दृष्टि के आवरण हैं, अपवित्रता के आवरण हैं, बुरे कर्मों के आवरण हैं, अज्ञान के आवरण हैं; वे आवरण खुल गए हैं, नष्ट हो गए हैं, खुल गए हैं, पूरी तरह से खुल गए हैं, कट गए हैं, अलग हो गए हैं, शांत हो गए हैं, समाप्त हो गए हैं, उत्पन्न नहीं हो सकते, ज्ञान की अग्नि से जल गए हैं। "चलने वाला," चलने वाला, रहने वाला, कर्ता, निरंतर चलने वाला, रक्षक और जीवित रहने वाला।

"इस संसार में कौन उसका वर्गीकरण कर सकता है?": "वर्गीकरण," दो प्रकार के वर्गीकरण हैं: भोग का वर्गीकरण और दृष्टि का वर्गीकरण... उसके लिए भोग का वर्गीकरण समाप्त हो गया है, दृष्टि का वर्गीकरण समाप्त हो गया है... किस प्रकार के लोभ का वर्गीकरण किया जा सकता है, किस

प्रकार के क्रोध का वर्गीकरण किया जा सकता है...? वह अवस्था जिसमें कर्म समाप्त हो गए हैं...? उसका कोई कारण नहीं, कोई भाग्य नहीं... "संसार में," दुख के संसार में...

29 · वे विचारों का निर्माण नहीं करते या उन पर ध्यान नहीं देते, "यह शुद्ध है" नहीं कहते, आसक्ति के बंधन को छोड़कर, वे दुनिया में कहीं भी हों, इच्छाएँ नहीं रखते।

"वे निर्माण नहीं करते और ध्यान भी नहीं देते": "निर्माण," दो प्रकार के निर्माण होते हैं: .... उनके लिए, प्यास का निर्माण समाप्त हो गया है, ... वे निर्माण नहीं करते, न बनाते हैं, न ही उसे उत्पन्न होने देते हैं, न ही लालसा का निर्माण करते हैं और न ही दृष्टि का निर्माण करते हैं। वे निर्माण नहीं करते। "कोई ध्यान नहीं (कोई प्राथमिकता नहीं)," ध्यान दो प्रकार का होता है: .... उनके लिए, प्यास का ध्यान समाप्त हो गया है...।

"वे यह नहीं कहते कि 'यह सचमुच शुद्ध है'": यह सचमुच शुद्ध है, शुद्ध पुनर्जन्म, निष्क्रियता का दृष्टिकोण, निरंतर सिद्धांत, वे कहते नहीं, बताते नहीं, बात नहीं करते, समझाते नहीं, कुछ नहीं कहते।

"आसक्ति के बंधन से मुक्त होने के बाद": "बंधन" चार प्रकार के बंधन हैं: लोभ का बंधन, द्वेष का बंधन, निषेध का बंधन, और '(केवल) यही सत्य है' का बंधन [SN.45.175]। स्वयं के प्रति ललक लोभ का बंधन है, दूसरों के प्रति क्रोध और असंतोष द्वेषपूर्ण शरीर का बंधन है; "अपने नियमों या निषेधों को धारण करना" नियमों और निषेधों का शरीर बंधन है, और स्वयं के प्रति (शरीर बंधन धारण करना [Ni.13,147]) '(केवल) यही वास्तविक बंधन है' का शरीर बंधन है। इसे आसक्ति बंधन क्यों कहा जाता है? इन बंधनों के साथ वे पकड़ते हैं, आसक्ति रखते हैं, थामे रहते हैं, ग्रहण करते हैं, लेते हैं और ग्रहण करते हैं..., सोचते हैं..., करते हैं..., जानते हैं..., अवतार लेते हैं..., मृत्यु लेते हैं..., अस्तित्व में आते हैं..., पुनर्जन्म लेते हैं..., इस चक्र में वे पकड़ते हैं, आसक्ति रखते हैं, थामे रहते हैं, ग्रहण करते हैं और आसक्ति रखते हैं, इसलिए इन्हें आसक्ति बंधन कहा जाता है। "छोड़ने के बाद," बंधन को त्यागने के बाद, बंधन को, बंधन के विस्तार को, उलझाव को, लगाव को, स्थिरता को, बाधाओं को त्यागने के बाद, बंधन से मुक्त होने के बाद; जैसे पालकी, या गाड़ी, ठेला, या रथ जो (लोगों को) ले जाता है, जब लोग उतर जाते हैं, तो उस स्थान से लगाव नष्ट हो जाता है, उसी तरह, बंधन को त्यागने के बाद, यह छोड़ने के बाद है, या बंधन से मुक्त होने के बाद..., स्थिरता, बाधा और बंधन को झटकने के बाद।

"वे दुनिया में कहीं भी हों, इच्छाएँ नहीं करते (इच्छाएँ नहीं रखते)": इच्छाओं को लालसा कहा जाता है, जो लोभ है... "इच्छाएँ मत करो," इच्छा, वे नहीं करते, न उत्पन्न करते हैं, न पैदा करते हैं, न ही उसे उत्पन्न होने देते हैं। "कहीं भी,"... "दुनिया में,"...

30 · सीमा पार कर चुके ब्राह्मण को, यह जानकर और देखकर कि कुछ लोग लोभी नहीं हैं, और कुछ लोभी नहीं हैं, यहाँ सर्वोच्च कुछ भी नहीं है।

"वह ब्राह्मण जिसने सीमा पार कर ली है, जानने और देखने के बाद भी उसे दृढ़ता से नहीं पकड़ता": "सीमा," चार सीमाएँ हैं: विधर्मी विचार, संशय, कर्मकांडीय अनुष्ठान करना और अंतर्निहित विपत्तियाँ, तथा उनसे उत्पन्न होने वाली अशुद्धियाँ, यह पहली प्रकार की सीमा है; गहन इच्छा बंध, घृणा बंध, इच्छा और लोभ की गहन संभावित प्रवृत्ति, घृणा और विपत्ति की संभावित प्रवृत्ति और उनसे उत्पन्न होने वाली अशुद्धियाँ, यह दूसरी सीमा है; शेष इच्छा और लोभ की बंध, घृणा बंध, इच्छा और लोभ की विपत्तियों की शेष संभावित प्रवृत्तियाँ, घृणा की विपत्तियों की संभावित प्रवृत्तियाँ और उनसे उत्पन्न होने वाली अशुद्धियाँ, यह तीसरी सीमा है; कामवासना, निराकार लोभ, अहंकार, घृणा, अज्ञान, अहंकार की विपत्तियों की अंतर्निहित प्रवृत्ति, लोभ की विपत्तियों की अंतर्निहित प्रवृत्ति, अज्ञान की विपत्तियों की अंतर्निहित प्रवृत्ति और उनसे उत्पन्न होने वाली अशुद्धियाँ, यह चौथी सीमा है। जब इन चारों सीमाओं को पार कर लिया जाता है, पार कर लिया जाता है और चारों पवित्र मार्गों द्वारा इन पर विजय प्राप्त कर ली जाती है, तब कहा जाता है कि उन्होंने सीमाओं को पार कर लिया है। "ब्राह्मण," .... "उसके लिए," अरहंत के लिए, उसके लिए जिसने अपने सारे कष्ट समाप्त कर दिए हैं।

"जानने के बाद," मन में जानने के बाद, या पूर्व जन्मों की स्मृतियों के ज्ञान से जानने के बाद। "देखने के बाद," प्रत्यक्ष दृष्टि से देखने के बाद, या दिव्य दृष्टि से देखने के बाद। "वह ब्राह्मण जिसने सीमा पार कर ली है, जानने और देखने के बाद उसे कसकर नहीं पकड़ता": उसके लिए, "यह सर्वोच्च है, प्रथम है, सबसे विजयी है, जीत है, शीर्ष है," पकड़े रहने, चिपके रहने, आसक्त होने, लिए जाने, विश्वास किए जाने के बाद, वह अस्तित्वहीन हो

जाता है, ज्ञात नहीं होता, खोजा नहीं जाता, कट जाता है, अलग हो जाता है, शांत हो जाता है, समाप्त हो जाता है, उठने में असमर्थ हो जाता है, ज्ञान की अग्नि से जल जाता है।

"कुछ लोग लालची नहीं होते, और कुछ लालच से मुक्त नहीं होते": लालची लोगों को पाँचों प्रकार की इच्छाओं से ग्रस्त कहा जाता है: लालची, बंधी हुई, आसक्त, दूषित, आसक्त, स्थिर और अवरुद्ध। जो व्यक्ति लालच से मुक्त होता है, उसे भौतिक और अभौतिक जगत में परम लालची, वासनाग्रस्त, बंधी हुई, आसक्त, दूषित, आसक्त, स्थिर और अवरुद्ध कहा जाता है। "कुछ लोग लालची नहीं होते, और कुछ लालच से मुक्त नहीं होते।" क्योंकि इच्छा, लालच, सृजित लालच और निराकार लालच की जड़ें कट चुकी हैं, जैसे बिना जड़ों का ताड़ का पेड़ भविष्य में निर्जीव हो जाता है, इस स्थिति में, कुछ लोग लालची होते हैं, और कुछ लोग लालची नहीं होते।

"उसके लिए यहाँ कुछ भी सर्वोच्च नहीं है": "उसके लिए," अरहंत के लिए, उस व्यक्ति के लिए जिसने सभी कष्टों को भलीभांति ग्रहण कर लिया है। उसके लिए, "यह सर्वोच्च और प्रथम है...," ऐसा कुछ भी नहीं है, ऐसा कुछ भी अस्तित्व में नहीं है, ऐसा कुछ भी ज्ञात नहीं है..., और वह ज्ञान की अग्नि से झुलस चुका है।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> निद्देसा >> निद्देसा 1.5

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

<<<< पिछला अगला >>>>

5. सर्वोच्च

31 · जो लोग "सर्वोच्च" (दृष्टिकोण) में रहते हैं, जो दुनिया में ऊंचे हैं, वहां से वह कहता है कि बाकी सभी "हीन" हैं, इसलिए वह विवाद पर विजय प्राप्त नहीं कर सकता।

"सर्वोच्च दृष्टिकोण में रहने वाले": कुछ समण और ब्राह्मण बुरे दृष्टिकोण रखते हैं। वे बासठ बुरे दृष्टिकोणों में से एक को इस प्रकार अपनाते हैं: "यही सर्वोच्च है, पहला है, सबसे विजयी है, श्रेष्ठ है, शीर्ष है।" इसे ग्रहण करने, थामने, उठाने, आसक्ति रखने के बाद, वे इसमें रहते हैं, जैसे परिवार के घर में रहना, पापी व्यक्ति का पाप में रहना, या अपवित्र व्यक्ति का अपवित्रता में रहना। इसी प्रकार, कुछ समण और ब्राह्मण बुरे दृष्टिकोण रखते हैं, और वे बासठ बुरे दृष्टिकोणों में से एक को इस प्रकार अपनाते हैं: "यही सर्वोच्च है...।" इसे ग्रहण करने के बाद..., और प्रत्येक दृष्टिकोण में यही कहते हैं।

"संसार में जो भी श्रेष्ठ है": "जो भी" का अर्थ है जो भी हो। "श्रेष्ठ है" का अर्थ है श्रेष्ठ, प्रथम और सर्वोपरि, श्रेष्ठ, सर्वोच्च, विजेता, शीर्ष। "यह गुरु सर्वज्ञ है": वह श्रेष्ठ, प्रथम, सर्वोच्च और शीर्ष है; "यह धम्म अच्छे द्वारा कहा गया है...", ...(विलंबित, पिछले खंड देखें)। "मनुष्य" सभी प्राणी हैं, ...(विलंबित, पिछले खंड देखें)। "संसार में" ...(विलंबित, पिछले खंड देखें)।

"वहाँ से उसने कहा कि बाकी सभी लोग 'हीन' हैं": अपने गुरु को छोड़कर, धम्म का वर्णन, समूह, दृष्टिकोण, मार्ग, तरीका, वह सभी असहमति को त्याग देता है, जड़ से उखाड़ फेंकता है और घेर लेता है: "वह गुरु बुद्धिमान नहीं है, धम्म को अच्छा नहीं कहा जाता, ...(अधूरा भाग, पिछले खंड देखें)..., महत्वहीन।" ऐसा कहता है, ऐसा बोलता है, ऐसी बातें करता है, ऐसा समझाता है।

अतः विवाद का समाधान नहीं हो सकता: अतः, ...(विलंबित, पिछले अनुभाग देखें)। "विवाद," झगड़े, विवाद, तर्क-वितर्क और असहमति। "जिसका समाधान नहीं हो सकता," जिसे पार नहीं किया जा सकता, जिसे रोका नहीं जा सकता, जिस पर विजय प्राप्त नहीं की जा सकती।

32 · जो कोई अपने आप में लाभ देखता है, जो कुछ वह देखता है, सुनता है, उपदेशों और निषेधों में, या महसूस करता है, उसे वहाँ कसकर पकड़े रहने के बाद, वह बाकी सब कुछ तुच्छ समझता है।

"जो कोई भी अपने आप में जो कुछ देखता, सुनता, उपदेशों और निषेधों में, या जो कुछ वह महसूस करता है, उसमें लाभ देखता है": "स्वयं" उसका स्व है... (विलुप्त, पिछले खंड देखें)... वह अपने स्वयं के दर्शन के दो लाभ देखता है..., वह जो कुछ देखता है उसकी पवित्रता के दो लाभ देखता है..., वह जो कुछ सुनता है उसकी पवित्रता के दो लाभ देखता है..., वह उपदेशों की पवित्रता के दो लाभ देखता है..., वह निषेध की पवित्रता के दो लाभ देखता है..., वह पवित्रता के दो लाभ देखता है: वर्तमान जीवन के लाभ और परलोक के लाभ। प्रत्यक्ष पवित्रता का तात्कालिक लाभ क्या है? गुरु जो कुछ भी देखता है, शिष्यों को भी वही मिलता है... (विलुप्त)। परलोक की प्रत्यक्ष पवित्रता का क्या लाभ है? यह दृष्टि ही अजगर (अजगर लोक) की अवस्था में (एक होने के लिए) पर्याप्त है... (विलुप्त)। वह प्रत्यक्ष पवित्रता के दो लाभों को देखता है, निहारता है, मनन करता है और उनका अवलोकन करता है।

"उस चीज़ को कसकर पकड़ने के बाद": "बस यही" एक बुरी सोच है। "वहाँ," उनके अपने विचारों में, उनकी पसंद में, उनके झुकावों में, उनकी राय में, "कसकर पकड़ने के बाद," "यह सर्वोच्च है, पहला है...," जब वह उसे पकड़ता है, थामता है, उठाता है, उससे लिपट जाता है।

"अन्य सभी चीजों को तुच्छ समझना": वह अन्य गुरुओं, धम्म के वर्णन, समूह, दृश्य, मार्ग, पथ को निम्न, तुच्छ, नीच, मामूली, महत्वहीन समझता है।

33 · कुशल लोग कहते हैं कि यह एक बंधन है: जो दूसरों पर निर्भर होते हैं और जो दूसरों को बुरा समझते हैं, इसलिए भिक्षुओं को जो कुछ वे देखते हैं, सुनते हैं या महसूस करते हैं, उससे आसक्त नहीं होना चाहिए।

"कुशल लोग कहते हैं कि यह एक बंधन है": "कुशल लोग," ...(विलंबित भाग देखें, पिछले भाग देखें), वे चतुर लोग कहते हैं: "यह बंधन है, यह आसंजन है, यह बंधन है, और यह एक बाधा है।" वे ऐसा कहते हैं, ...

"जो आश्रित हैं और जो दूसरों को हीन समझते हैं": "जो कोई भी आश्रित है," गुरु पर, धम्म के वर्णन में... "दूसरों को हीन समझता है।" वह सोचता है, देखता है..., अन्य गुरुओं को, धम्म के वर्णन को..., तुच्छ समझता है।

अत: भिक्षु को अपने देखे, सुने या महसूस किए गए किसी भी बात पर विश्वास नहीं करना चाहिए। भिक्षु को नियमों और निषेधों का पालन नहीं करना चाहिए। अत: ..., इसी कारण उसे अपने देखे, सुने या महसूस किए गए किसी भी बात, नियमों या निषेधों का पालन नहीं करना चाहिए।

23 · इसे (एक दृष्टिकोण) दुनिया में नहीं बनाया जाना चाहिए, ज्ञान या उपदेश और निषेध द्वारा, किसी को स्वयं को "समान" नहीं मानना चाहिए, न ही हीन या श्रेष्ठ समझा जाना चाहिए।

"इसे संसार में, बुद्धि या उपदेश और निषेध द्वारा नहीं बनाया जाना चाहिए": इसे आठ स्तरों की बुद्धि, या पाँच दिव्य शक्तियों, या बुरी बुद्धि, या उपदेश, या निषेध, या उपदेश और निषेध द्वारा नहीं बनाया जाना चाहिए; इसे बनाना नहीं चाहिए, इसे उत्पन्न नहीं करना चाहिए, इसे उत्पन्न नहीं करना चाहिए, इसे प्रकट नहीं करना चाहिए। "संसार में,"...

"आपको स्वयं को 'समान' होने के लिए निर्देशित नहीं करना चाहिए": आपको जन्म, उपनाम, अच्छे परिवार, कमल के समान सुंदरता, संपत्ति, शोध (अधिग्रहण), करियर, कौशल, अध्ययन, शब्द, तर्क या किसी अन्य चीज़ के आधार पर स्वयं को यह विश्वास दिलाने के लिए निर्देशित नहीं करना चाहिए कि "मैं समान हूँ।"

"न ही किसी को हीन या श्रेष्ठ समझना चाहिए": जन्म के आधार पर आपको यह नहीं समझना चाहिए कि "मैं हीन हूँ।" आपको यह भी नहीं समझना चाहिए कि "मैं श्रेष्ठ हूँ।"

35 · जो कुछ उसने अर्जित किया है, उसे त्यागने के बाद, वह एक अनिच्छुक व्यक्ति बन जाता है, वह बुद्धि पर निर्भर नहीं रहता, वह वास्तव में विभाजित समूह का सदस्य नहीं होता, और वह किसी भी चीज़ (दृष्टिकोण) की ओर नहीं लौटता।

"प्राप्त की हुई चीज़ों का त्याग करके, बिना कुछ ग्रहण किए व्यक्ति बन जाना": "प्राप्त की हुई चीज़ों का त्याग" का अर्थ है देखने के बाद 'मेरा' भाव को छोड़ देना; "प्राप्त की हुई चीज़ों का त्याग" का अर्थ है स्वयं को छोड़ देना; "प्यास, दृष्टि, पकड़, पकड़, आसक्ति, ग्रहण और विश्वास के कारण, त्यागने के बाद, त्यागने के बाद, भगाए जाने के बाद, अंत के बाद और उसे अस्तित्वहीन बना देने के बाद," यह प्राप्त की हुई चीज़ों को त्यागने का परिणाम है। "वह जो ग्रहण नहीं करता," चार प्रकारों में से, वह जो ग्रहण नहीं करता, वह जो पकड़ता नहीं, वह जो आसक्ति नहीं रखता, वह जो दृढ़ नहीं रहता।

"वह बुद्धि पर भी निर्भर नहीं रहता": वह बुद्धि प्राप्त करने के लिए आठ स्तरों का उपयोग नहीं करता, न ही बुद्धि को शक्ति देने के लिए पांच देवताओं का उपयोग करता है, न ही प्रेम की प्यास की निर्भरता को स्थापित करने, उत्पन्न करने, उत्पन्न करने और जन्म देने के लिए या देखने पर निर्भर रहने के लिए बुरी बुद्धि का उपयोग करता है।

"वह वास्तव में विभाजित समूह का सदस्य नहीं है": वह वास्तव में विभाजित, टूटे हुए, दो भागों में बँटे (विरोधाभासी), दो (संदेहों) से उत्पन्न, भिन्न मतों, भिन्न पसंदों, भिन्न झुकावों, भिन्न दावों, भिन्न मतों पर निर्भर, उन लोगों में नहीं है जिन्हें इच्छा होने पर भी व्यवहार नहीं करना चाहिए, जिन्हें चाहत होने पर भी व्यवहार नहीं करना चाहिए, जिन्हें अपमानजनक तरीके से व्यवहार नहीं करना चाहिए, जिन्हें मूर्खतापूर्ण तरीके से व्यवहार नहीं करना चाहिए, और जिन्हें डरना नहीं चाहिए, जो इच्छाओं का पालन नहीं करते, जो व्यवहार नहीं करना चाहते, जो अपमानजनक नहीं हैं, जो मूर्ख नहीं हैं, जो आतंक का पालन नहीं करते, उन्हें लालच के कारण व्यवहार नहीं करना चाहिए, और जो अपमानजनक नहीं हैं, अज्ञानता के कारण नहीं चलते, अहंकार के कारण नहीं चलते, देखने के कारण नहीं चलते, देखने के कारण दूर नहीं जाते, संदेह के कारण नहीं चलते, संभावित परेशानियों के कारण नहीं चलते, और कलह और विधि द्वारा संचालित या निर्देशित नहीं होते, बहकाए या जीते नहीं जाते।

"वह किसी भी विचार की ओर नहीं लौटता": उसके लिए, बासठ बुरे विचार काट दिए गए हैं, अलग कर दिए गए हैं, शांत कर दिए गए हैं, समाप्त हो गए हैं, फिर से उत्पन्न होने में असमर्थ हैं, ज्ञान की अग्नि से जल गए हैं, और वह न तो लौटेगा और न ही किसी बुरे विचार की ओर लौटेगा।

36 · उसके लिए यहाँ किसी भी तरफ से कोई प्रतिज्ञा नहीं है: इस लोक में या दूसरे लोक में, सभी प्रकार के अस्तित्व के लिए, उसके लिए कोई भी अस्तित्व नहीं है, जिसे धम्मों में चुने जाने के बाद मजबूती से धारण किया जाता है।

"उसके लिए दोनों तरफ से कोई प्रतिज्ञा नहीं है": "उसके लिए," अरहंत के लिए, उसके लिए जिसने अपने सारे कष्ट समाप्त कर दिए हैं। "पक्ष," स्पर्श एक पक्ष है...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)। प्रतिज्ञाओं को लालसा कहा जाता है, जो लोभ की जड़ हैं...।

"सभी प्रकार के अस्तित्व के लिए": सभी प्रकार के अस्तित्व, ... "यहाँ": स्वयं का अस्तित्व, "दूसरे लोक में": अन्य व्यक्ति; "यहाँ": स्वयं का शरीर और बोध, "दूसरे लोक में": दूसरों का शरीर और बोध; "यहाँ": छह आंतरिक स्थान, "दूसरे लोक में": छह बाह्य स्थान; "यहाँ": मानव जगत, "दूसरे लोक में": स्वर्गीय जगत; "यहाँ": इच्छा जगत, "दूसरे लोक में": भौतिक जगत, निराकार जगत; "यहाँ": इच्छा लोक, भौतिक लोक, "दूसरे लोक में": निराकार लोक। "उसके लिए दोनों ओर से कोई भी प्रतिज्ञा यहाँ नहीं है: सभी प्रकार के अस्तित्व के लिए, यहाँ या दूसरे लोक में": उसके लिए दोनों ओर से कोई भी प्रतिज्ञा, सभी प्रकार के अस्तित्व के लिए, यहाँ या दूसरे लोकों में, लालसाएँ, वे अस्तित्व में नहीं हैं, ज्ञात नहीं हैं, खोजी नहीं गई हैं, उन्हें काट दिया गया है, अलग कर दिया गया है, शांत कर दिया गया है, रोक दिया गया है, उत्पन्न होने में असमर्थ हैं, और ज्ञान की अग्नि से जला दी गई हैं।

"उसके लिए, कोई निवास (अस्तित्व) नहीं है": "निवास," दो प्रकार के निवास हैं: प्यास का निवास और दृष्टि का निवास... "उसके लिए," ... "उसके लिए कोई निवास नहीं है": उसके लिए, कोई निवास नहीं है, ज्ञात नहीं है, खोजा नहीं गया है, काट दिया गया है, अलग कर दिया गया है, शांत कर दिया गया है, रुक गया है, उत्पन्न नहीं हो सकता है, और ज्ञान की अग्नि से जल गया है।

"धम्मों में चुने जाने के बाद, इसे दृढ़ता से धारण किया जाता है": "धम्म में," बासठ बुरे विचारों में। "चुने जाने के बाद," ...(छोड़ा गया, पिछले खंड देखें)। "पकड़ने के लिए," ..., वे नहीं हैं, अस्तित्व में नहीं हैं, ज्ञात नहीं हैं, खोजे नहीं गए हैं, काट दिए गए हैं...।

37 · उसके लिए, जो कुछ वह देखता है, सुनता है और महसूस करता है, उस पर सूक्ष्म विचार भी नहीं होते। वह ब्राह्मण जो अपनी दृष्टि (दृष्टिकोण) से चिपका नहीं रहता, उसे इस संसार में कौन वर्गीकृत कर सकता है?

"उसके लिए, जो कुछ उसने देखा, सुना या महसूस किया है, उस पर कोई सूक्ष्म (विस्तृत, बारीक) विचार नहीं हैं।" "उसके लिए," अरहंत के लिए... उसने कहा कि वह जो देखता है, वह शुद्ध है, या जो सुनता है, वह शुद्ध है, या जो महसूस करता है, वह शुद्ध है; वह अग्रणी स्थिति बनना चाहता है, वृद्धि की स्थिति बनना चाहता है, विवाद करना चाहता है, उत्पन्न होना चाहता है, पूर्णतः उत्पन्न होना चाहता है, निर्मित होना चाहता है, कल्पना करना चाहता है, आशाजनक होना चाहता है, रचा जाना चाहता है और सहवास करना चाहता है; वह नहीं है, अस्तित्व में नहीं है, ज्ञात नहीं है, खोजा नहीं गया है, और अलग हो गया है...

"ब्राह्मण, जो अपनी दृष्टि नहीं हटाता (विचारों से आसक्त नहीं होता)": "ब्राह्मण," .... "ब्राह्मण विचारों को नहीं अपनाता": ब्राह्मण विचार को नहीं अपनाता, न पकड़ता है, न जकड़ता है और न ही उससे आसक्त होता है।

"इस दुनिया में कौन उसका वर्गीकरण कर सकता है?": "वर्गीकरण," ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)। "दुनिया में," ....

38 · वे (विचार) नहीं बनाते, ध्यान नहीं देते (कोई प्राथमिकता नहीं रखते), और उनके लिए धर्म स्वीकार्य नहीं हैं, ब्राह्मण उपदेशों और निषेधों द्वारा निर्देशित नहीं होंगे; जो इस प्रकार दूसरे तट पर पहुँच गए हैं वे वापस नहीं लौटेंगे।

"वे निर्माण नहीं करते और ध्यान नहीं देते": "निर्माण" के दो प्रकार के निर्माण होते हैं: .... लालसा का निर्माण क्या है? .... सभी एक सौ आठ प्यास के विचार [एएन.4.199], यही लालसा का निर्माण है।

देखने की संरचना क्या है? ... सभी बासठ बुरी दृष्टियों की पहुँच में आ जाते हैं। यही देखने की संरचना है। उनके लिए, प्यास की संरचना कट गई है, देखने की संरचना कट गई है, ... वे न तो किसी संरचना का निर्माण करते हैं, न उत्पन्न करते हैं, न जन्म देते हैं, न ही किसी दृष्टि का निर्माण करते हैं।

"अनदेखापन" और "मूल्यांकन," ध्यान के दो प्रकार हैं:... उनके लिए प्यास का मूल्य समाप्त हो गया है, देखने का मूल्य समाप्त हो गया है...

"उनके लिए, धम्म स्वीकार्य नहीं हैं": "धम्मों को बासठ बुरे विचार कहा जाता है।" उनके लिए," जो अरहंत हैं... "स्वीकार्य नहीं," "संसार स्थिर है, यही वास्तविक है, और बाकी सब कुछ शून्य है।" स्वीकार्य नहीं; "संसार अत्यंत स्थिर है... (छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)।" ग्रहण नहीं किया जाना चाहिए।

"ब्राह्मण उपदेशों और निषेधों से निर्देशित नहीं होंगे":...

"जो लोग इस प्रकार दूसरे किनारे पर पहुँच जाते हैं, वे वापस नहीं लौटते": उस दूसरे किनारे को निर्वाण कहा जाता है, जो निर्जीव है...।

"अप्रत्यावश्यक," सोतापन्न मार्ग द्वारा समाप्त किए गए किसी भी प्रकार के प्रदूषण, जिनका अनुभव व्यक्ति अब नहीं करता, न ही लौटता है; ...सकदागामी मार्ग द्वारा...; ...अनगामी मार्ग द्वारा...; ...अरहंत मार्ग द्वारा...। जो लोग दूसरी ओर पहुँच जाते हैं, वे वापस नहीं लौटते। "जो उस प्रकार के हैं," अरहंत पाँचों रूपों में उस प्रकार के हैं: जो संतुष्ट या असंतुष्ट हैं, वे उस प्रकार के हैं; जो त्यागे गए हैं, वे उस प्रकार के हैं; "मार्गदर्शक" वह है जो उस प्रकार का है; "मुक्ति प्राप्त" वह है जो उस प्रकार का है।

अरहंत संतोष या असंतुष्टि के मामले में कैसे होते हैं? अरहंतों का स्वभाव ऐसा ही होता है, चाहे उन्हें कुछ मिले या न मिले, प्रतिष्ठा में भी ऐसा ही होता है, प्रतिष्ठा में भी ऐसा ही होता है, बदनामी में भी, प्रशंसा में भी, निंदा में भी, सुख में भी, दुख में भी... कुछ लोग कलाई पर मसाला लगाते हैं, और कुछ लोग कुल्हाड़ी से काम करते हैं: उनमें ऐसी स्थिति में कोई लोभ नहीं होता, उनमें कोई घृणा नहीं होती, और उन्होंने लोभ का त्याग कर उसे काट डाला होता है। घृणा, विजय और पराजय पर उन्होंने विजय प्राप्त कर ली होती है, आज्ञाकारिता और विरोध पर उन्होंने विजय प्राप्त कर ली होती है।

एक अरहंत को किस प्रकार "त्याग दिया जाता है"? अरहंत का लोभ त्याग दिया गया है, थूक दिया गया है, मुक्त कर दिया गया है, खारिज कर दिया गया है और काट दिया गया है; ...क्रोध..., ...अज्ञान..., (छोड़ दिया गया); त्याग दिया गया, थूक दिया गया, मुक्त कर दिया गया, त्याग दिया गया, बंद कर दिया गया।

अरहंत किस प्रकार "वह व्यक्ति जो इस चक्र से गुज़र चुका है" कहलाता है? अरहंत की इच्छा की प्रचंड धाराएँ पार हो चुकी हैं; अस्तित्व की प्रचंड धाराएँ पार हो चुकी हैं; देखे गए प्रचंड प्रवाह पार हो चुके हैं; अज्ञान के प्रचंड प्रवाह पार हो चुके हैं; सभी चक्र पार हो चुके हैं, बाहर आ चुके हैं, पार कर चुके हैं, पार कर चुके हैं, विजय प्राप्त कर चुके हैं; वह अवतरित हुआ है, वह अभ्यासी है (वह जिसने यात्रा पूरी की है, वह जो दिशा तक पहुँचा है), जीवन और मृत्यु के चक्र को बिना पुनर्जन्म के पार कर चुका है।

अरहंत किस प्रकार ‘‘मुक्त’’ होते हैं? अरहंत का हृदय लोभ से मुक्त होकर परोपकारी हो जाता है; हृदय क्रोध से मुक्त होकर परोपकारी हो जाता है; ...भ्रम..., (अस्पष्ट)...; मन सभी अहितकर कर्मों से मुक्त होकर परोपकारी हो जाता है।

अरहंत का वर्णन किस प्रकार किया जाता है? अरहंत, यानी ‘‘वह व्यक्ति जिसके पास उपदेशों का ज्ञान है’’, का वर्णन इस प्रकार किया जाता है: ‘‘धर्म में विश्वास रखने वाला’’...; जीवन शक्ति से परिपूर्ण...; मन से सचेत...; एकाग्रता में मग्न...; ज्ञान में निपुण...; ‘‘तीन प्रकार के मन’’...; छह अलौकिक शक्तियाँ...।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> निद्देसा >> निद्देसा 1.6

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

<<<< पिछला अगला >>>>

6. वृद्धावस्था

39 · यह जीवन वास्तव में छोटा है, शायद मृत्यु से पहले सौ साल से भी कम, अगर कोई इससे अधिक जीता है, तो वह (फिर भी) बुढ़ापे से मरेगा।

‘‘यह जीवन वास्तव में छोटा है’’: ‘‘जीवन’’ ही जीवन है, ...(अंशित, पिछले भाग देखें)। इसके अतिरिक्त, जीवन दो कारकों के कारण छोटा है: ...(अंशित, पिछले भाग देखें)। अस्तित्व के आधार पर सीमित जीवन इतने कम क्यों हैं? ...(अंशित, पिछले भाग देखें)। प्रकृति का सीमित जीवन इतना कम क्यों है? ...(अंशित, पिछले भाग देखें)।

‘‘शायद मृत्यु से सौ साल पहले’’: मरना, मर गया, मृत, और जब यह जम जाता है [SN.10.1], ...जबकि एक कोशिका में, ...जब यह मांस का एक टुकड़ा होता है, ...जब मांस दृढ़ होता है, अंगों में, नवजात शिशु भी, प्रसव कक्ष में, आधा महीना, एक महीना, दो महीने, तीन महीने, चार महीने, पांच महीने, छह महीने, सात महीने, आठ महीने, नौ महीने, दस महीने, एक वर्ष, दो वर्ष, तीन वर्ष, चार वर्ष, पांच वर्ष, छह वर्ष, सात वर्ष, आठ वर्ष, नौ वर्ष, दस वर्ष, बीस वर्ष, तीस वर्ष, चालीस वर्ष, पचास वर्ष, साठ वर्ष, सत्तर वर्ष, अस्सी वर्ष, नब्बे वर्ष, मरना, मृत्यु, विलुप्ति और विनाश।

‘‘जो कोई सौ वर्ष से अधिक जीवित रहता है’’: जो कोई सौ वर्ष से अधिक जीवित रहता है, वह एक वर्ष, दो वर्ष, तीन वर्ष, ... या चालीस वर्ष तक जीवित रहता है। ‘‘उस समय वह वृद्धावस्था से मर जाएगा’’: जब वह बूढ़ा, वृद्ध, वृद्ध, कमजोर, टूटे दांतों वाला, सफेद बालों वाला, गंजा, झुर्रियों

वाला, धब्बेदार अंगों वाला, टेढ़ा-मेढ़ा, बैसाखियों पर निर्भर, मर जाता है, विलुप्त हो जाता है, लुप्त हो जाता है और वृद्धावस्था से नष्ट हो जाता है, और वह मृत्यु से बच नहीं पाता।

पके फलों के लिए, सुबह-सुबह गिरने का भय रहता है, जो लोग जीवित हैं और जिनका अंत निश्चित है, उनके लिए अक्सर मृत्यु का भय बना रहता है। कुम्हार द्वारा बनाई गई मिट्टी की तरह, सब कुछ अंततः नष्ट हो जाएगा, और जो लोग मर चुके हैं उनका जीवन भी ऐसा ही है। युवा और बूढ़े, मूर्ख और बुद्धिमान, सभी मृत्यु के वश में हो जाते हैं, सब कुछ मृत्यु के हित में। जो मृत्यु से पराजित होते हैं, जो इस लोक से परलोक की ओर जाते हैं, उनके लिए पिता अपने पुत्र को आश्रय नहीं दे सकता, न ही रिश्तेदार। यहाँ तक कि जो रिश्तेदार देखते हैं, जो चीखते हैं, जो लोग मृत्यु से बच नहीं सकते, वे वध के लिए ले जाए जा रहे गाय की तरह हैं। संसार ऐसा ही है, मृत्यु और वृद्धावस्था से पीड़ित, इसलिए बुद्धिमान दुखी नहीं होते, संसार के सत्य और हित को जानने के बाद। [खंड 3.8, 581-586]

40 · लोग दुखी होते हैं जब वे (चीजों को) अपना समझते हैं, क्योंकि कोई भी स्थायी संपत्ति नहीं होती, यहाँ बिछड़ने को देखकर, किसी को घर में (आम आदमी की तरह) नहीं रहना चाहिए।

"लोग तब दुखी होते हैं जब (चीज़ें) उनकी अपनी मानी जाती हैं": "लोग," ...(अस्पष्ट, पिछले भाग देखें)। "स्वयं को अपना मानने" के दो प्रकार होते हैं: ...(अस्पष्ट, पिछले भाग देखें)। वे तब दुखी होते हैं जब उन्हें डर होता है कि उनकी अपनी मानी हुई चीज़ें छीन ली जाएँगी, वे तब भी दुखी होते हैं जब वे छीन ली जाती हैं, वे तब भी दुखी होते हैं जब उन्हें छीन लिया जाता है; वे तब दुखी होते हैं जब उनकी अपनी मानी हुई चीज़ों के (बदलने का) डर होता है, वे तब भी दुखी होते हैं जब वे बदल जाती हैं, वे तब भी दुखी होते हैं जब वे बदल जाती हैं; दुखी, थके हुए, रोते हुए, सीना पीटते हुए और विलाप करते हुए, अराजकता की स्थिति में।

"क्योंकि कोई भी वस्तु स्थायी नहीं है": वस्तुएँ दो प्रकार की होती हैं: .... वे सभी वस्तुएँ जिनकी आपको प्यास है, क्षणभंगुर, सक्रिय और परिस्थितियों से उत्पन्न होती हैं। वे विनाश, विघटन, क्षीणता, विलुप्ति और परिवर्तन के धर्म हैं। वे सभी वस्तुएँ जो आप देखते हैं, वे भी क्षणभंगुर हैं... (अंशित)। भगवान बुद्ध ने कहा: "भिक्षुओं! क्या आपने देखा है कि सभी वस्तुएँ स्थिर, बलवान, शाश्वत, अपरिवर्तनीय और अनंत हैं?" "नहीं, भगवान बुद्ध!" "भिक्षुओं! अच्छा! भिक्षुओं! मैंने भी स्थिर, ठोस, शाश्वत, अपरिवर्तनीय और अनंत वस्तुओं को नहीं देखा है।" [एमएन.22] स्थायी, ठोस, शाश्वत और अपरिवर्तनीय वस्तुएँ न तो अस्तित्व में हैं, न ही ज्ञात हैं और न ही प्राप्त की जा सकती हैं।

"यहाँ विरह है": वियोग, जुदाई, अलगाव विद्यमान है, ज्ञात है, प्राप्त है। भगवान बुद्ध ने कहा: "बस करो, आनंद! दुखी मत हो, रोओ मत, आनंद! क्या मैंने यह पहले नहीं कहा था? वियोग, जुदाई और उन सभी चीजों से अलगाव जो तुम्हें प्रिय हैं और सुखद लगती हैं। आनंद! यहाँ, यह कैसे प्राप्त हो सकता है: 'जो कुछ भी जन्म लेता है, विद्यमान होता है, कुछ करता है या भ्रष्ट करता है, उसे नष्ट नहीं किया जा सकता।' यह असंभव है!" [डीएन.16] यह पूर्ववर्ती स्कंधों, लोकों और परिवर्तनशीलता और रूपांतरण से संबंधित है; परवर्ती स्कंधों, लोकों और घूर्णन से संबंधित है।

"इसे इस प्रकार देखकर तुम्हें घर में नहीं रहना चाहिए": "इस प्रकार, ..." देखने के बाद, देखने के बाद, तौलने के बाद, निर्णय लेने के बाद, अलग करने के बाद, स्पष्ट करने के बाद, इस प्रकार, मेरे आसक्ति में। "घर में नहीं रहना चाहिए," घर की सभी बाधाओं को दूर करने के बाद, बच्चों और पत्नियों की बाधाओं को दूर करने के बाद, ...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)। इसके बाद, तुम्हें अकेले चलना चाहिए, जीना चाहिए, कार्य करना चाहिए, आगे बढ़ना चाहिए, रक्षा करनी चाहिए और जीवित रहना चाहिए, जब तुम शून्यता की अवस्था में आने लगो।

41 · जिस बात को लोग "मेरा" समझते हैं, वह भी मृत्यु के समय त्याग दी जाती है। बुद्धिमानों को यह जानकर विश्वासी को उससे आसक्ति नहीं रखनी चाहिए।

"वह भी मृत्यु द्वारा त्याग दिया गया": "मृत्यु," सभी जीवित प्राणियों का, मृत्यु के कारण, विनाश, विघटन, लुप्त होना, अंत, जीवन का अंत, विभिन्न समूहों का विघटन, शव का त्याग, और सभी जीवित प्राणियों में जीवन के मूल का कट जाना। "वह," रूप, भावनाएँ, विचार, व्यवहार और चेतना जैसी वस्तुएँ। "त्यागा हुआ," त्यागा हुआ, लुप्त, छोड़ा हुआ, नष्ट, तबाह। यह भी कहा गया है: [Jat.5.1,2-3]

जब सारा धन उपयोग में न आए, तो दुःख के समय दुखी क्यों नहीं होते? यहाँ तक कि जिन्होंने पहले अपना धन त्याग दिया है, जो लोग निश्चित रूप से मरने वाले हैं, वे भी उसे त्याग देंगे। इच्छा-साधक की संपत्ति बहुत स्थिर होती है, इसलिए दुःख के समय दुखी नहीं होता। चंद्रमा बढ़ता है, भरता है और गायब हो जाता है, और सूर्य अस्त हो जाता है। शत्रु के सांसारिक धर्म का मुझे ज्ञान है, इसलिए दुःख के समय दुखी नहीं होता।

"लोग सोचते हैं कि 'यह मेरा है'": "यह," रूप, भावना, सोच, व्यवहार और चेतना जैसी चीज़ें हैं। "लोग" नाम, उपाधियाँ, सामान्य नाम, उपनाम, शब्द, वाक्यांश और नाम हैं। "सोचो 'यह मेरा है'," प्रेम की प्यास से वह सोचता है; देखकर वह सोचता है; अहंकार से वह सोचता है; अपवित्रता से वह सोचता है; बुरे कर्मों से वह सोचता है; (बढ़ाने के) प्रयास से वह सोचता है; प्रतिशोध से वह सोचता है।

"बुद्धिमान व्यक्ति यह जानता है": यह वह व्यक्ति जानता है जो जानने, समझने, परखने, निर्णय करने, अलग करने और स्पष्ट करने के बाद यह जानता है। बुद्धिमान व्यक्ति यह जानता है।

"आस्तिकों को आत्म-मोह के आगे नहीं झुकना चाहिए": "आत्म-मोह," आत्म-मोह दो प्रकार का होता है: ...(विलुप्त, पिछले अनुभाग देखें)। "आस्तिक," बुद्ध में आस्था रखने वाले, धम्म में आस्था रखने वाले, संघ में आस्था रखने वाले, जो बुद्ध को अपना मानते हैं, वे विश्व देवता से आसक्त रहते हैं। भगवान बुद्ध ने कहा: "भिक्षुओं! जो भिक्षु कपटी, मूर्ख, बातूनी, पाखंडी, अभिमानी और अनिश्चित हैं, वे मेरे लिए मेरे (सच्चे) भिक्षु नहीं हैं। भिक्षुओं! जिन्होंने इस धर्म का पालन नहीं किया, वे इस धर्म में वृद्धि या विस्तार नहीं करते। परन्तु भिक्षुओं! जो भिक्षु कपटी नहीं हैं, बातूनी नहीं हैं, बलवान हैं, कठोर नहीं हैं और दृढ़ निश्चयी हैं, वे मेरे लिए मेरे भिक्षु हैं। भिक्षुओं! वे भिक्षु इस धर्म को नहीं छोड़ते, वे इस धर्म में वृद्धि और विस्तार करने आते हैं।"

"धूर्त, हठी, झूठे, पाखंडी, अभिमानी, अनिश्चित, वे प्रबुद्ध व्यक्ति द्वारा सिखाए गए धम्म में प्रगति नहीं करते। जो कपटी नहीं, बातूनी, दृढ़, कठोर नहीं, सौम्य स्वभाव के होते हैं, वे प्रबुद्ध व्यक्ति द्वारा सिखाए गए धम्म में प्रगति करते हैं।" [एएन.4.26]

"विश्वासी को उस चीज़ की ओर नहीं झुकना चाहिए जिससे वह चिपका हुआ है": विश्वासियों को उस प्यासी आत्मा के जुनून के आगे नहीं झुकना चाहिए, न ही उस आत्मा के जुनून के आगे झुकना चाहिए जिसे वह देखता है; उसे नीचे की ओर नहीं झुकना चाहिए, उसकी ओर नहीं झुकना चाहिए, उसकी ओर नहीं झुकना चाहिए; उसे दूसरों की ओर झुकाव रखना चाहिए, उसकी आकांक्षा नहीं करनी चाहिए, उसे बढ़ाना नहीं चाहिए।

42 · जैसे जागने वाला व्यक्ति सपनों के मामलों को नहीं देख सकता, वैसे ही लोग अपने प्रियजनों को नहीं देख सकते जो मर चुके हैं।

"सपने में दिखाई देने वाली चीज़ें": वह चीज़ जो एकत्रित, व्यवस्थित या संकलित होती है। "जागने पर लोग कुछ नहीं देख पाते": उदाहरण के लिए, जो लोग सपने में चाँद, सूरज, समुद्र, मेरु पर्वत के राजा, हाथी, घोड़ा, रथ, पैदल सेना, सेना की टुकड़ी, सुंदर बगीचे, सुंदर जंगल... (कुछ भाग हटा दिया गया), रमणीय भूमि..., सुंदर कमल का तालाब देखते हैं, जागने पर उन्हें कुछ भी दिखाई नहीं देता।

"ऐसा प्यार पाने वाला व्यक्ति": "ऐसा" एक लाक्षणिक व्यवस्था है। "प्यार पाने वाला व्यक्ति" से तात्पर्य किसी प्रिय व्यक्ति से है: माँ, पिता, भाई, बहन, पुत्र, पुत्री, मित्र, सहकर्मी, रिश्तेदार या रक्त संबंधी।

"मृतक और मुर्दा, वह देख नहीं सकता": मृतक को मृतक कहा जाता है, और मुर्दा को वह देख नहीं सकता, पा नहीं सकता, ढूंढ नहीं सकता या हासिल नहीं कर सकता।

43 · उन लोगों को देखा और सुना गया, और उनके नाम से पुकारा गया (उनके नाम से पुकारा गया), मृतक के लिए, केवल नाम ही कहा जा सकता है।

"वे लोग देखे और सुने जाते हैं": "देखे जाते हैं," दृष्टि चेतना से उत्पन्न। "सुने जाते हैं," कान चेतना से उत्पन्न। "वे लोग," क्षत्रिय, ब्राह्मण...(हटा दिया गया)।

“जहाँ उनका नाम पुकारा जाता है”: “जहाँ उनका नाम पुकारा जाता है,” क्षत्रिय का, ब्राह्मण का, ..., स्वर्गों का, और मनुष्यों का। “नाम” नाम है, ...। “कहा गया,” कहा जा रहा है, पुकारा गया है, बताया गया है, बात की गई है, समझाया गया है, कहा गया है।

“केवल नाम ही कहा जा सकता है”: रूप, भावना, विचार, व्यवहार, चेतना सब कट जाते हैं, लुप्त हो जाते हैं, छूट जाते हैं, विनाश हो जाता है। “कहा जा सकता है,” कहा जा सकता है, बताया जा सकता है, पुकारा जा सकता है, समझाया जा सकता है, बात की जा सकती है। केवल नाम ही कहा जा सकता है। “मृतकों के लिए”: “मृतकों के लिए,” मृतकों के लिए, मरे हुओं के लिए। “लोगों के लिए,” चेतन प्राणियों के लिए, मनुष्यों के लिए, विद्यार्थी ब्राह्मणों के लिए, लोगों के लिए, व्यक्तियों के लिए, जीवन के लिए, जन्म लेने वालों के लिए, इंद्र से जन्म लेने वालों के लिए, और मनु से जन्म लेने वालों के लिए।

44 · जो लालची होते हैं वे कभी दुःख, विलाप और कंजूसी नहीं छोड़ते, इसलिए मुनि, स्थिरता के द्रष्टा, सब कुछ त्याग कर (भटकने) चले जाते हैं।

“लालची लोग जो आसक्त हैं, वे अपने दुःख, विलाप और कंजूसी का त्याग नहीं करते”: “दुःख,” रिश्तेदारों की मृत्यु या संपत्ति की हानि से, ...बीमारी से, ...उपदेशों से, ...दृष्टि से; कुछ हानियों से, कुछ कष्टों से; दुःख, उदासी, शोक, आंतरिक दुःख, आंतरिक दुःख, जलन, आंतरिक जलन और हृदय के तीर से पीड़ित होना। “विलाप,” रिश्तेदारों की मृत्यु से, विलाप, रोना, विलाप करना, दुःख, विलाप, व्यर्थ की बातें, बड़बड़ाना, चीरना, रोने की अवस्था। “कंजूसी,” कंजूसी पाँच प्रकार की होती है: ...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)। लालसा को लालसा कहा जाता है, जो लोभ है, ...। “मैं धारण करता हूँ,” आत्म-धारणा दो प्रकार की होती है, ...। वे अपनी वस्तुओं को देखकर दुखी होते हैं और चोरी होने से डरते हैं, ...। वे अपनी वस्तुओं को देखकर शोक मनाते हैं, ...। वे चीजों की रक्षा करते हैं, उन्हें सुरक्षित रखते हैं, उन्हें अपने पास रखते हैं, उनका सम्मान करते हैं और जब वे चीजों को अपना समझते हैं तो कंजूस हो जाते हैं। वे अपनी चीजों के साथ किए जाने के दुख को नहीं छोड़ते, वे लालच को नहीं छोड़ते, उन्हें अलग नहीं करते, उन्हें भगाते नहीं, उन्हें समाप्त नहीं करते, उन्हें अस्तित्वहीन नहीं बनाते।

इसलिए, हे मुनि, शांतिप्रिय द्रष्टा, वे सब कुछ त्याग कर चलते हैं”: “इसलिए,” इसलिए; ..., तुम्हें इच्छाओं पर यह पीड़ा देखनी चाहिए। इसी कारण। “मुनि,” मुनि को ज्ञान कहा जाता है...। “स्वामित्व” के दो प्रकार के अधिकार हैं: ...। देखी गई सभी चीजों को त्यागने के बाद; त्यागने के बाद, छोड़ने के बाद, भगाने के बाद, अंत करने के बाद; चलना, ठहरना, कार्य करना, आगे बढ़ना, रक्षा करना, जीवित रहना। द्रष्टा, स्थिर द्रष्टा, आश्रय में द्रष्टा, शरण में द्रष्टा, वापसी में द्रष्टा, भय रहित द्रष्टा, मृत्यु रहित द्रष्टा, अमरता वाले द्रष्टा, निर्वाण के द्रष्टा।

45 · जब भिक्षु दूर चले जाते हैं और दूर स्थित आसन के निकट होते हैं, तो वे कहते हैं कि उनके लिए यह उचित है कि वे अपने निवास को किसी को दिखाई न दें।

“जब कोई भिक्षु विमुख हो जाता है”: जो विमुख हो जाते हैं उन्हें सात प्रकार के ज्ञान कहा जाता है, और अरहंत वह है जो विमुख हो जाता है। विमुख होने वालों को सात प्रकार के ज्ञान क्यों कहा जाता है? यहाँ-वहाँ से जो विमुख हैं, जो बचते हैं, जो अवरोधक हैं, जो दमनकारी हैं, जो संयमी हैं, जो रक्षक हैं, जो संरक्षक हैं, वे चलते हैं, जीते हैं, कार्य करते हैं, आगे बढ़ते हैं, रक्षा करते हैं और जीवित रहते हैं: आँख (द्वार) में, जो दूर रहते हैं, बचते हैं, ...; (कान के द्वार में...;) नाक के द्वार में...; जीभ के द्वार में...; शरीर के द्वार में...। वे चलते हैं, जीते हैं, कार्य करते हैं, आगे बढ़ते हैं, रक्षा करते हैं और जीवित रहते हैं, जैसे मुर्गी के पंख या नसें आग में फेंक दी जाती हैं, तो वे दूर रहती हैं (पीछे हट जाती हैं), बचती हैं, उलट जाती हैं और खिंचती नहीं हैं [AN.7.49]। इसी प्रकार, इधर-उधर से, जो दूर हैं, जो टालमटोल करते हैं, वे चलते हैं, और जीवित रहते हैं: आँख के द्वार में..., कान के द्वार में..., नाक में..., जीभ में, शरीर में; हृदय दूर है, टालमटोल किया गया है, वे चलते हैं, और जीवित रहते हैं, रक्षक, संरक्षक, वे चलते हैं, चलते हैं, जीते हैं, कार्य करते हैं, आगे बढ़ते हैं, रक्षा करते हैं, जीवित रहते हैं, जीवित रहते हैं, जैसे मुर्गी के पंख या नसें आग में फेंक दी जाती हैं,...। जो इस कारण से दूर चले जाते हैं, उन्हें सात प्रकार की विद्या कहा जाता है। “भिक्षु होना,” एक विद्वान भिक्षु, या एक गुणी भिक्षु।

“दूर स्थित आसन के निकट होने पर”: जिस स्थान पर वे बैठते हैं, उसे आसन कहते हैं: पलंग, कुर्सी, तकिया, छोटा तकिया, चमड़े का तकिया, घास का तकिया, पत्तों का तकिया, भूसे का तकिया। उस आसन पर अनुचित दृष्टि दूर हो जाती है, अलग हो जाती है और विमुख हो जाती है; अनुचित

ध्वनियों का श्रवण...; गंध...; स्वाद...; स्पर्श...; पाँचों इच्छाएँ त्याग दी जाती हैं, अलग हो जाती हैं और विमुख हो जाती हैं। जो दूर स्थित आसन के निकट होता है, वह निकट होता है, पूर्णतः निकट होता है, आज्ञाकारी होता है, आज्ञा मानने के लिए तत्पर होता है, पूर्णतः आज्ञाकारी होता है और आज्ञाकारिता की ओर अग्रसर होता है।

"उन्होंने कहा कि यह उनके लिए उचित था: वे अपने निवास को प्रकट नहीं होने देते थे": "उचित" तीन प्रकार का उचित होता है: समूह के लिए उचित, धम्म के लिए उचित और पुनर्जन्महीनता के लिए उचित। समूहों के लिए क्या उचित है? यदि अनेक भिक्षु एक-दूसरे के साथ सामंजस्यपूर्ण, प्रसन्न, विवादरहित और सद्भाव में रहते हैं, तो वे एक साथ रहते हैं और एक-दूसरे को स्नेह भरी दृष्टि से देखते हैं। यह समूह के लिए उचित है। धम्म के लिए क्या उचित है? चार चेतना, चार धर्म, चार दिव्य आधार, पाँच शक्तियाँ, पाँच सामर्थ्य, सात ज्ञान के कारक और पवित्र मार्ग की आठ शाखाएँ; ये सभी एक साथ समाहित होते हैं, स्पष्ट होते हैं, स्थिर होते हैं और मुक्ति प्राप्त करते हैं। धम्म के विषय में कोई वाद-विवाद या तर्क-वितर्क नहीं होता। यह धम्म के लिए उचित है। पुनर्जन्महीनता के लिए क्या उचित है? भले ही अनेक भिक्षु निर्वाण के क्षेत्र में निवास कर रहे हों, निर्वाण को इस कारण अपूर्ण या पूर्ण नहीं माना जाता [एएन.8.19], यह पुनर्जन्महीनता के लिए उचित है। "निवास," जो नरक में गिरते हैं, उनके लिए नरक में ही निवास है; पशु जगत में रहने वालों के लिए पशु जगत में ही निवास है; ...मानव जगत में; ...स्वर्ग जगत में। "वे कहते हैं कि यह उचित है: वह अपने निवास को प्रकट नहीं होने देगा": यह उसके लिए उचित है; यह उपयुक्त है; यह समानुपातिक है; यह संगत है; यह आज्ञाकारी है: गुप्त नरक (उनके निवास) में इस प्रकार का कोई भी व्यक्ति प्रकट नहीं होगा; ...पशु जगत...; ...भूखे प्रेतों का जगत...; मानव जगत...; ...स्वर्ग जगत...। वे ऐसा कहते हैं, ऐसा बोलते हैं, इस तरह बात करते हैं, ऐसा समझाते हैं, ऐसा कहते हैं।

46 · मुनि सभी चीजों में अनासक्त व्यक्ति हैं: न तो आकर्षक चीजें, न ही अनाकर्षक चीजें, उन्हें वैसे ही भाती हैं जैसे पानी पत्तियों को दूषित नहीं करता।

"मुनि हर चीज़ से अनासक्त हैं": हर चीज़ को बारह स्थान कहा जाता है: आँखें और रूप, कान और ध्वनियाँ, नाक और गंध, जीभ और स्वाद, शरीर और स्पर्श, मन और धर्म। "मुनि," ... "अनासक्त" की दो प्रकार की निर्भरताएँ होती हैं: लालसा की निर्भरता और देखने की निर्भरता...। मुनि जब प्यासी प्रेम की निर्भरता तोड़ देते हैं, जब मुनि देखने की इच्छा की निर्भरता तोड़ देते हैं, तो वे आँखों पर निर्भर नहीं रहते, कानों पर निर्भर नहीं रहते, ...जीभ पर, ..., शरीर पर, मन पर, रूपों पर, ध्वनियों पर, गंधों पर, स्वादों पर, स्पर्शों पर, धर्मों पर, घर पर, समूह (लोगों के), निवास पर, लाभ पर, प्रसिद्धि पर, प्रशंसा पर, सुख पर, वस्त्रों पर, भोजन पर, निवास पर, रोगी की आवश्यकताओं और चिकित्सा आवश्यकताओं पर, इच्छाओं के संसार पर, ...(छोड़ा गया, पिछले खंड देखें); जो लोग इन चीजों का पालन नहीं करते, जो इनसे चिपके नहीं रहते, जो इनमें नहीं पड़ते, जो इन पर ध्यान केंद्रित नहीं करते, जो अपना मन इन चीजों की ओर नहीं मोड़ते, वे पहले ही अलग हो चुके हैं, पहले ही जा चुके हैं, मुक्त हो चुके हैं और बंधनमुक्त हो चुके हैं, वह एक अनियंत्रित हृदय से जीवन व्यतीत करता है।

"न तो प्यारा और न ही अप्रिय": "प्यारा" दो प्रकार का होता है: सजीव प्राणी या कर्म। प्यारे प्राणी क्या हैं? यहाँ, जो भी माता, पिता, भाई, बहन, पुत्र, पुत्री, मित्र, सहकर्मी या रिश्तेदार हैं, जो उसे प्रिय हैं, या जो उसका भला करना चाहते हैं, या जो बंधन से दूर रहना चाहते हैं, या रक्त संबंधी (रिश्तेदार) हैं, वे प्यारे प्राणी हैं। आकर्षक व्यवहार क्या हैं? मनभावन रूप, मनभावन ध्वनियाँ, मनभावन गंध, मनभावन स्वाद, मनभावन स्पर्श, ये प्यारे व्यवहार हैं। अप्रिय प्राणी दो प्रकार के होते हैं: प्राणी या कर्म। अप्रिय प्राणी क्या हैं? यहाँ, जो उसे प्रिय नहीं हैं, जो उसका भला नहीं करना चाहते, जो स्थिर रहना चाहते हैं, जो उन्हें मारना चाहते हैं, वे अप्रिय प्राणी हैं। अप्रिय व्यवहार क्या हैं? अप्रिय रूप, अप्रिय ध्वनियाँ, अप्रिय गंध, अप्रिय स्वाद, अप्रिय स्पर्श, ये अप्रिय व्यवहार हैं। "न तो सुंदर और न ही अप्रिय": "ये मेरे सुंदर प्राणी हैं; ये वांछनीय कर्म हैं।" लालच के कारण किसी को सुंदर न बनाना। "ये मेरे अप्रिय प्राणी हैं; ये अवांछनीय कर्म हैं।" घृणा के कारण किसी को अप्रिय न बनाना; उसे घटित न होने देना, उसे उत्पन्न न होने देना, उसे जन्म न लेने देना।

"उसके लिए रोना और कंजूसी करना वैसा ही है जैसे पानी पत्तियों को दूषित नहीं करता": "उसके लिए," उस व्यक्ति के लिए, उस अरहंत के लिए जिसके कष्ट समाप्त हो गए हैं। "रोना," रिश्तेदारों के बिछड़ने से दुखी होकर... कंजूसी पाँच प्रकार की होती है:...

"जैसे जल पत्तों को अपवित्र नहीं करता," इसलिए पत्तों को कमल के पत्ते कहा जाता है, और जल (वारी) को जल (उदकम्) कहा जाता है। जैसे कमल के पत्तों पर जल अपवित्र होता है, न अधिक अपवित्र, न अधिक दूषित, न दूषित। यही बात उस व्यक्ति, उस अरहंत पर भी लागू होती है जिसने

अपने कष्टों को समाप्त कर दिया है; रोना और शोक अपवित्र नहीं करते... उस व्यक्ति, उस अरहंत के लिए, ये अपवित्रताएँ अपवित्र नहीं करतीं... वह बंधन से मुक्त हो गया है, मुक्त हो गया है, बंधन से अलग हो गया है, वह निर्बल हृदय से जीवन व्यतीत करता है।

47 · कमल के पत्ते पर पानी की बूंद की तरह, लाल कमल (फूल) पर पानी की तरह, इस प्रकार, मुनि देखे, सुने और महसूस किए जाने वाले किसी भी चीज़ में अधिक दूषित नहीं होते।

"कमल के पत्ते पर पानी की एक बूँद की तरह": पानी की एक बूँद को पानी की बूँद कहा जाता है, और कमल के पत्ते (पोक्खरं) को कमल के पत्ते (पदुमपट्टं) कहा जाता है। यह न तो अत्यधिक दूषित है, और न ही निकट से दूषित है। "जैसे पानी लाल कमल को दूषित नहीं करता": लाल कमल को लाल कमल कहा जाता है, और पानी (वारी) को पानी (उदकं) कहा जाता है। जैसे पानी लाल कमल को दूषित नहीं करता, वैसे ही यह न तो अत्यधिक दूषित है, न ही निकट से दूषित है, और न ही अब पूरी तरह से दूषित है।

"मुनि इस प्रकार अत्यधिक अपवित्र नहीं होते, अर्थात् जो कुछ आप देखते, सुनते और अनुभव करते हैं": "इस प्रकार" एक लाक्षणिक व्यवस्था है। "मुनि," ... "आसंजन," दो प्रकार के आसंजन होते हैं: ... प्यासी प्रेम की आसक्ति को तोड़ने के बाद, बोध के आसंजन को तोड़ने के बाद, मुनि जो कुछ देखते हैं, ...जो कुछ सुनते हैं, ...जो कुछ महसूस करते हैं, ...ज्ञान में अपवित्र नहीं होते...। उन्होंने छोड़ दिया है..., और एक बंधनमुक्त हृदय से निवास करते हैं।

48 · जो इस प्रकार शुद्ध हो जाते हैं, वे देखी, सुनी और महसूस की गई बातों के बारे में नहीं सोचते, वे अन्य चीजों से शुद्ध नहीं होना चाहते, क्योंकि वे न तो दूषित हैं और न ही अदूषित।

"जो लोग इस प्रकार शुद्ध हो जाते हैं, वे इसके बारे में नहीं सोचते, अर्थात् जो कुछ वे देखते, सुनते और समझते हैं": "शुद्ध होना," शुद्धिकरण को ज्ञान कहा जाता है, ... शुद्धिकरण को ज्ञान क्यों कहा जाता है? ...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)।

"जो उस तरह से शुद्ध हो जाते हैं, वे जो देखते, सुनते या महसूस करते हैं, उसके बारे में नहीं सोचते": शुद्ध व्यक्ति देखने के बारे में नहीं सोचता, जो देखता है उसमें नहीं सोचता, जो देखता है उससे नहीं सोचता, यह नहीं सोचता कि 'जो मैं देखता हूँ वह मेरा है;' सुनने के बारे में नहीं सोचता...; ...महसूस करने के बारे में नहीं सोचता...; ...जानने के बारे में नहीं सोचता... [SN.35.30]। भगवान बुद्ध ने कहा: "भिक्षुओं! 'मैं हूँ,' यह चिंतन है; 'मैं यह हूँ,' यह चिंतन है; 'मैं रहूँगा,' यह चिंतन है; 'मैं नहीं रहूँगा,' यह चिंतन है; 'मैं सृजित होऊँगा,' यह चिंतन है; 'मैं निराकार होऊँगा,' यह चिंतन है; 'मैं चिंतन करता रहूँगा,' यह चिंतन है; 'मैं चिंतन रहित रहूँगा,' यह चिंतन है; 'मैं चिंतन करता रहूँगा, चिंतन नहीं करूँगा,' यह चिंतन है। भिक्षुओं! चिंतन एक रोग है, चिंतन एक ट्यूमर है, चिंतन एक तीर है, चिंतन एक अभिशाप है। भिक्षुओं! इसलिए, यहाँ, 'हमें चिंतन रहित मन से जीना चाहिए।' भिक्षुओं! आपको यही मार्ग सीखना चाहिए।" [SN.35.248]

"अन्य चीजों से शुद्धि की इच्छा न रखना": जो व्यक्ति शुद्ध हो जाता है, वह अन्य चीजों की इच्छा नहीं रखता, उन्हें स्वीकार नहीं करता, उनकी आशा नहीं करता और न ही उनके लिए प्रार्थना करता है: अशुद्ध मार्गों, बुरे मार्गों और अस्तित्वहीनता के अतिरिक्त, सभी सचेतनता के अतिरिक्त, सही कर्म के अतिरिक्त, दिव्य आधारों के अतिरिक्त, जड़ों के अतिरिक्त, शक्तियों के अतिरिक्त, ज्ञान के अतिरिक्त, पवित्र मार्ग की आठ शाखाओं के अतिरिक्त, शुद्धता, स्वच्छता और पूर्ण पवित्रता प्राप्त होती है; प्रस्थान, मुक्ति, वैराग्य।

"क्योंकि वह न तो दोषयुक्त है और न ही दोषरहित": सभी अज्ञानी साधारण लोग दोषयुक्त हैं, अच्छे साधारण लोग, जिनमें सात प्रकार के विद्वान भी शामिल हैं, दोषयुक्त हैं, और अरहंत न तो दोषयुक्त है और न ही दोषरहित: वह लोभ के निवारण से लोभ से मुक्ति की अवस्था में, क्रोध के निवारण से घृणा से मुक्ति की अवस्था में, भ्रम के निवारण से अज्ञान से मुक्ति की अवस्था में पहुँच जाता है, वह एक ऐसा व्यक्ति है जो बिना पुनर्जन्म के ही इस अवस्था में उतरकर अभ्यास कर चुका है...।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> निद्देसा >> निद्देसा 1.7

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

<<<< पिछला अगला >>>>

7. तिस्सा मेत्तेय्या

49 · [इस प्रकार, पूज्य तिस्सा मेत्तैया:] हे महोदय, जो लोग कामवासना में लिप्त हैं! कृपया हमें कष्टों के बारे में बताइए। आपके उपदेश सुनकर हम उनसे दूर रहकर सीख लेंगे।

"कामवासना में लिप्त व्यक्ति": जो कोई भी न्याय नहीं करता, अभद्र धर्म, मैला धर्म, अश्लीलता, जल में स्नान, गुप्त संबंध, एकांतवास आदि में लिप्त है, वह कामवासना का धर्म है। [AN.7.50] इसे कामवासना का धर्म क्यों कहा जाता है? यह दो लालची, इच्छा और लोभ से भरे, व्यथित, हृदय से व्याकुल और एक ही स्थिति में पाए जाने वाले व्यक्तियों से संबंधित है। इसीलिए इसे कामवासना का धर्म कहा जाता है। उदाहरण के लिए, यदि दो झगड़ालू हों, तो उन्हें "व्यभिचारी" कहा जाता है; यदि दो वाद-विवाद करने वाले हों, तो उन्हें "व्यभिचारी" कहा जाता है; यदि दो चर्चा करने वाले हों, तो उन्हें "व्यभिचारी" कहा जाता है; यदि दो वाद-विवाद करने वाले हों, तो उन्हें "व्यभिचारी" कहा जाता है; यदि दो पैरोकार हों, तो उन्हें "व्यभिचारी" कहा जाता है; यदि दो वक्ता हों, तो उन्हें "व्यभिचारी" कहा जाता है; यदि दो वार्ताकार हों, तो उन्हें "व्यभिचारी" कहा जाता है। इसी प्रकार, यह दो लालची, इच्छा और लोभ से भरे, उलझे हुए, हृदय व्याकुल दो लोगों से संबंधित है, और दोनों लोग एक ही स्थिति में हैं।

"जो कामवासना में लिप्त रहता है": वह व्यक्ति जो लगाम पहनता है, मजबूत लगाम, वह व्यक्ति जो लगाम का सामना करता है, वह व्यक्ति जो पूरी तरह से लगाम का सामना करता है, वह व्यक्ति जो अभ्यास करता है, वह व्यक्ति जो दोहराता है, वह व्यक्ति जो जोर देता है, वह व्यक्ति जो झुकाव की ओर प्रवृत्त होता है, वह व्यक्ति जो वृद्धि करता है, वह व्यक्ति।

"[इस आदरणीय तिस्सा मेत्तेय्या की तरह]": "इस तरह," ...(छोड़ा गया, पिछले खंड देखें)। "आदरणीय," यह प्रेम, आदर और आज्ञाकारिता की भाषा है, जो "आदरणीय" है। "तिस्सा," नाम, उपाधि, सुरक्षा, ...(छोड़ा गया, पिछले खंड देखें)। "मेत्तेय्या," बैठे हुए व्यक्ति का उपनाम, नाम, उपाधि, सुरक्षा और सामान्य नाम। (कुछ अनुवाद तिस्सा और मेत्तेय्या को दो अलग-अलग व्यक्तियों के नाम मानते हैं, लेकिन यह स्पष्ट रूप से गलत है; जैसा कि यहां बताया गया है, तिस्सा उनका व्यक्तिगत नाम है, और मेत्तेय्या उनका उपनाम है। यह तिस्सा मेत्तेय्या संभवतः वही व्यक्ति नहीं है जिसका उल्लेख सुदूर तट के मार्ग खंड के दूसरे सूत्र में है।)

"महोदय! कृपया कष्ट के बारे में बताइए": "कष्ट," झुंझलाहट, चोट, उत्पीड़न, आघात, हानि, आपदा। कृपया कहिए, कृपया समझाइए, कृपया सिखाइए, कृपया सूचित कीजिए, कृपया स्थापित कीजिए, कृपया उजागर कीजिए, कृपया विश्लेषण कीजिए, कृपया स्पष्ट कीजिए। "महोदय," "यह प्रेम की भाषा है, सम्मान की भाषा है, आज्ञाकारी भाषा है और विनम्रता की भाषा है।"

"आपके उपदेश सुनने के बाद": "आपकी वाणी, भाषा, शिक्षाएँ, नसीहतें, सुनने के बाद, समझने के बाद, बोध करने के बाद।"

"हम एकांतवास (एकांतवास) से सीखेंगे": "एकांतवास" के तीन प्रकार हैं: शरीर से एकांतवास, मन से एकांतवास और निष्ठा से एकांतवास। शारीरिक एकांतवास क्या है? यहाँ भिक्षु एकांतवास के निकट है: वन, वृक्ष, पर्वत, गुफाएँ, श्मशान, जंगल, खुले मैदान, भूसे के ढेर। शरीर से एकांतवास में वह अकेला चलता है, अकेला खड़ा होता है, अकेला बैठता है, अकेला लेटता है, भिक्षा मांगने के लिए अकेले गाँव जाता है, अकेले लौटता है, शांत स्थान पर अकेले बैठता है, अकेले साधना करता है, चलता है, ठहरता है, कर्म करता है, आगे बढ़ता है, रक्षा करता है, जीवन यापन करता है और अकेले रहता है। यही शारीरिक एकांतवास है।

मन को क्या दूर रख रहा है? प्रथम ध्यान अवस्था में प्रवेश करने वाले व्यक्ति का मन आवरणों से दूर हो जाता है, द्वितीय ध्यान अवस्था में प्रवेश करने वाले व्यक्ति का मन तर्क और चिंतन से दूर हो जाता है, तृतीय ध्यान अवस्था में प्रवेश करने वाले व्यक्ति का मन आनंद से दूर हो जाता है, और चतुर्थ ध्यान अवस्था में प्रवेश करने वाले व्यक्ति का मन सुख और दुख से विरक्त हो जाता है; असीम शून्य (प्रथम/अमूर्त) अवस्था में प्रवेश करने वाले

व्यक्ति का मन विचारों से दूर रहने और सभी प्रकार की इच्छाओं से दूर रहने का विचार कर लेता है, चेतना की असीमता (छठी) अवस्था में प्रवेश करने वाले व्यक्ति का मन असीम शून्य से दूर रहने की इच्छा रखता है, शून्यता (सातवीं) अवस्था में प्रवेश करने वाले व्यक्ति का मन चेतना की असीमता से दूर रहने का विचार रखता है; (और न-बोध-न-अबोध अवस्था में प्रवेश करने वाले व्यक्ति का) मन विचारों से रहित होता है, और शून्यता से दूर रहना चाहता है।

सोतापन्न व्यक्ति का मन दृश्य, संशय, निषेध, अपवित्रता की संभावित प्रवृत्ति, संदेह और अपवित्रता की संभावित प्रवृत्ति को देखने से बदलकर अस्तित्व के प्रदूषण से दूर हो जाता है। सकदागामी का हृदय कठोर इच्छा और लोभ के बंध, घृणा के बंध, कठोर इच्छा, लोभ और कष्ट की सुप्त प्रवृत्ति, घृणा और कष्ट की संभावित प्रवृत्ति और अस्तित्व के प्रदूषण से बदल जाता है। इच्छा, लोभ और घृणा की शेष बंध, इच्छा, लोभ, घृणा की शेष संभावित प्रवृत्तियों और उनसे विद्यमान प्रदूषण से अरहंत का हृदय निर्मित लोभ, निराकार लोभ, अहंकार, घृणा, अज्ञान और अहंकार से संबंधित कष्टों की सुप्त प्रवृत्ति, लोभ और अपवित्रता की सुप्त प्रवृत्ति और उनसे विद्यमान प्रदूषण से दूर हो जाता है।

आसक्ति का अर्थ क्या है? ज्ञात को अशुद्धियों, विभिन्न स्कंदनों और विभिन्न कर्मों के रूप में मानना; दूरी पर निर्भर रहना निर्जीवता कहलाता है, निर्वाण, अर्थात् समस्त कर्मों का अंत, समस्त निर्भरता का अंत, भोग-विलास का अंत, और निर्वाण, यही दूर रहना है। शरीर से दूर रहना इच्छाओं से दूर रहना है; मन से दूर रहना शुद्धता का अर्थ है, सर्वोच्च पवित्रता को प्राप्त करना; आसक्ति से दूर रहना अनासक्त व्यक्ति का अर्थ है, जो संसार को त्यागने आता है। “हम दूर से सीखेंगे”: जो यहाँ है वह पहले से ही सीखने वाला है। इसके अतिरिक्त, यह धम्म की शिक्षा सुनने वालों द्वारा कहा जाता है।

50 · [धन्य पुरुष: “मत्तेय्या!”] जो लोग कामवासना में लिप्त होते हैं, यहाँ तक कि नियमों को भी भूल जाते हैं, उन्होंने गलत काम किया, उनके लिए यह अपवित्र है।

“कामना में लिप्त व्यक्ति”: ....

“जो कामवासना में लिप्त रहता है”: ....

“मत्तेय्या”: भगवान बुद्ध गद्दी पर बैठने वाले व्यक्ति को उनके उपनाम से पुकारते हैं। “भगवान बुद्ध” आदर का पर्यायवाची है। इसके अतिरिक्त, “लालच का नाश करने वाला” भगवान बुद्ध हैं; “दुष्टता का नाश करने वाला” भगवान बुद्ध हैं; “अज्ञान का नाश करने वाला” भगवान बुद्ध हैं; “अहंकार का नाश करने वाला” भगवान बुद्ध हैं; “दृष्टि का नाश करने वाला” भगवान बुद्ध हैं; “कांटों का नाश करने वाला” भगवान बुद्ध हैं; “अशुद्धियों का नाश करने वाला” भगवान बुद्ध हैं; “समाप्त हो जाने वाला” भगवान बुद्ध हैं; “शरीर, उपदेश, मन और बुद्धि का अभ्यास करने वाला” भगवान बुद्ध हैं। या फिर, "भगवान जंगलों, वनों और सीमावर्ती आवासों (बैठने के स्थानों) के निकट हैं: शांत, निर्मल, मानवीय वातावरण से दूर, जो अकेले रहते हैं और अकेले बैठने के लिए उपयुक्त हैं" वे भगवान हैं; या फिर, भगवान वे हैं जो वस्त्र, भोजन, आश्रय, बीमारों की जरूरतों और चिकित्सा संबंधी आवश्यकताओं को बांटते हैं; या फिर, "भगवान वे हैं जिन्हें धर्म का स्वाद, धम्म का स्वाद, मुक्ति का स्वाद, उपदेश, मन और ज्ञान का स्वाद प्राप्त है" वे विश्व भगवान हैं। या “परमेश्वर चार प्रकार के ध्यान, चार असीम गुणों, चार निराकारताओं आदि से युक्त हैं; या “परमेश्वर आठ मोक्षों, आठ विजय स्थलों और नौवें निवास स्थल आदि में सहभागी हैं; जो शुद्ध रूप से विभाजित हैं, वही परमेश्वर हैं; या “परमेश्वर चार चेतना, चार धर्म, चार आधार, पाँच मूल, पाँच शक्तियाँ, सात ज्ञान के कारक और पवित्र मार्ग की आठ शाखाओं को विभाजित करने वाले हैं।” परमेश्वर दस तथागत शक्ति, चार निर्भीकता, चार अबाधित समाधान, छह जादुई शक्तियाँ और छह ज्ञान विधियाँ रखने वाले हैं।” परमेश्वर ही परमेश्वर हैं। “परमेश्वर,” यह नाम न तो माता ने दिया है; न पिता ने; न भाइयों ने; न बहनों ने; न मित्रों ने; न रिश्तेदारों ने; न तो समणों द्वारा, न ब्राह्मणों द्वारा; न ही स्वर्ग द्वारा। यही परम मुक्ति है; बुद्ध को, जो विश्व पूज्य हैं, और बोधि वृक्ष के नीचे, अपने समस्त ज्ञान, बुद्धि और साक्षी के साथ, अर्थात् भगवान बुद्ध को।

“यद्यपि भूल जाना”: दो प्रकार से आज्ञाओं को भूल जाना: शिक्षाओं की आज्ञाओं को भूलना और मार्ग की आज्ञाओं को भूलना। विद्वान आज्ञा क्या है? जिनके पास सूत्र, गेय्या, वेय्याकरण, गाथा, उदाना, इतिवुत्तक, जातक, अब्भूत धम्म, वेदल्ल हैं, उनके लिए यही विद्वान आज्ञा है। वह भूल जाता है, पूरी तरह भूल जाता है, जबरदस्ती भूल जाता है, और पराये बन जाता है।

मार्ग के नियम क्या हैं? सही मार्ग, अनुसरण करने वाला मार्ग, अविचलित मार्ग, मार्ग का अर्थ, वह मार्ग जिसमें धम्म का अनुसरण किया जाता है, नियमों की पूर्णता, मूलों का रक्षक, उचित मात्रा में भोजन, संयमित अभ्यास, सजगता और सही ज्ञान, चार प्रकार की सजगता, चार प्रकार के धर्म, चार आध्यात्मिक आधार (इद्धिपाद), पाँच इंद्रियाँ, पाँच शक्तियाँ, सात ज्ञान के कारक, पवित्र मार्ग की आठ शाखाएँ - यही मार्ग के नियम हैं। जो व्यक्ति भूल जाता है, पूरी तरह भूल जाता है, दृढ़ता से भूल जाता है, और पूरी तरह से दृढ़ता से भूल जाता है, वह पराभिक हो जाता है।

"गलत कार्य करना": हत्या करना, बिना कुछ दिए लेना, लोगों के घरों में घुसना, लूटपाट करना, सड़कें अवरुद्ध करना, चोरी करना, पत्नियों का अपहरण करना, झूठ बोलना।

"उसके लिए यह अपवित्र है": उस व्यक्ति के लिए यह अपवित्र, मूर्खतापूर्ण, अज्ञानी, छलपूर्ण धर्म है, अर्थात्: बुराई का मार्ग है।

51 · पहले अकेले चलने के बाद, जो कोई भी कामवासना में लिप्त होता है, वह संसार में भटकी हुई गाड़ी के समान है; वे कहते हैं कि वह एक बुरा, साधारण आदमी है।

"पूर्व में एकाकी मार्ग पर चलने के बाद": दो प्रकार से एकाकी मार्ग पर चलने के बाद: भिक्षु के रूप में या जनसमूह का त्याग करके। एक भिक्षु के रूप में एकाकी मार्ग कैसे अपनाया जाता है? घर के सभी बंधनों को तोड़कर, बच्चों और पत्नियों के बंधनों को तोड़कर, रिश्तेदारों के बंधनों को तोड़कर, मित्रों के बंधनों को तोड़कर, भंडारण के बंधनों को तोड़कर, बाल और दाढ़ी काटकर, वस्त्र धारण करके, घर छोड़कर एक गैर-गृहस्थ (सन्यासी) जीवन में प्रवेश करके, एकाकी मार्ग पर चलना चाहिए, जीना चाहिए, कर्म करना चाहिए, आगे बढ़ना चाहिए, रक्षा करनी चाहिए और जीवित रहना चाहिए, शून्यता की अवस्था में प्रवेश करने के बाद। इस प्रकार, एक भिक्षु बनने के लिए एकाकी मार्ग पर चलना चाहिए।

भीड़ को त्यागकर अकेले चलना कैसे संभव है? जब वे इस प्रकार भिक्षु बने, तो वे जंगलों में, घने वनों में अकेले थे...; वे अकेले चलते थे, अकेले खड़े रहते थे...; यही भीड़ को त्यागकर अकेले चलना है।

"जो भी कामवासना में लिप्त होता है": जो भी सही मार्ग पर नहीं है... (अस्पष्ट)..., इसी कारण उसे कामवासना का धर्म कहा जाता है। "जो भी कामवासना में लिप्त होता है": जो भी बुद्ध, धर्म, संघ का त्याग करके, शिक्षा प्राप्त करके सांसारिक जीवन में लौटता है, कामवासना में लिप्त होता है, कामवासना की ओर मुड़ता है, पूरी तरह से उसमें लिप्त होता है और कामवासना में लिप्त होने की ओर अग्रसर होता है।

"वह संसार में भटकती हुई बैलगाड़ी के समान है": "बैलगाड़ी," भटकती हुई, बिना चालक वाली, बिना बनी, बिना प्रशिक्षित हाथी गाड़ी, घोड़ा गाड़ी, बैलगाड़ी, बकरी गाड़ी, मेढ़े की गाड़ी, ऊंट गाड़ी, गधे की गाड़ी; यह एक तरफा रास्ता लेती है, ऊबड़-खाबड़ घास और चट्टानों पर चढ़ती है, बंधी हुई गाड़ियों और सवारी को तोड़ देती है, और चट्टान से गिर जाती है। जैसे भटकती हुई, अनियंत्रित, बिना चालक वाली और बिना प्रशिक्षित बैलगाड़ी तरफा रास्ता लेती है। उसी प्रकार, अशिष्ट व्यक्ति, भटकती हुई बैलगाड़ी की तरह, तरफा रास्ता (बुरा रास्ता) लेता है और बुरी दृष्टि रखता है... (अंतःखंडित) बुरी सोच रखता है। भटकती हुई, बेढंगी, बिना चालक वाली, बिना प्रशिक्षित सवारी ऊबड़-खाबड़ घास और चट्टानों पर चढ़ गई। इसी प्रकार, अशिष्ट व्यक्ति असंतुलित शारीरिक कर्मों पर सवार होकर, अनुचित भाषा कर्मों, अनुचित मानसिक कर्मों, अनुचित हत्या, बिना दिए अपूर्ण रूप से लेने, अनुचित व्यभिचार, अनुचित धोखाधड़ी, अनियमितताओं, अनियमितताओं की अशिष्ट और बुरी भाषा, अनियमितताओं की अपमानजनक भाषा, अनियमितताओं के लोभ, अनियमितताओं की द्वेष भावना, अनियमितताओं के बुरे विचारों और अनियमितताओं की विभिन्न वस्तुओं पर सवार होकर, असंतुलितता की पाँच इच्छाओं पर चढ़ता है और असंतुलितता के आवरणों पर चढ़ता है। जैसे भटकी हुई, बिना चालक वाली, बिना बनी, बिना प्रशिक्षित सवारी सवार सवारी को नष्ट कर देती है, वैसे ही सांसारिक जगत में लौटने वाला व्यक्ति भटकी हुई गाड़ी के समान था। उसने स्वयं को नरक में, पशु जगत में, प्रेतलोक में, मनुष्य जगत में और स्वर्गलोक में नष्ट कर दिया। जैसे कोई बेतरतीब, बेसुरी, बेढंगी, अप्रशिक्षित कार खाई में गिर जाती है, ठीक वैसे ही एक अशिष्ट व्यक्ति जीवन की खाई में, बुढ़ापे की खाई में, बीमारी की खाई में, मृत्यु की खाई में, दुःख और निराशा की खाई में गिर जाता है। "संसार में," दुःख के संसार में, मानवता के संसार में।

“वे कहते हैं: निम्न साधारण मनुष्य”: “साधारण मनुष्य,” साधारण मनुष्य का क्या अर्थ है? “वे बहुत प्रदूषण फैलाते हैं।” साधारण लोगों के लिए; “बहुत से लोग जो दूर नहीं हुए” साधारण लोग हैं; “जो अनेक स्वामियों के चेहरे देखते हैं” साधारण लोग हैं; “जो अनेक स्वार्थों से बाहर नहीं निकले” साधारण लोग हैं; “उन्होंने अनेक प्रकार की वस्तुएँ बनाईं।” साधारण लोगों के लिए; “वे अनेक प्रकार की उग्र धाराओं में बह गए।” साधारण लोगों के लिए; “वे अनेक प्रकार की यातनाओं से व्याकुल हुए।” साधारण लोगों के लिए; “वे अनेक प्रकार की ऊष्मा से झुलस गए।” साधारण लोगों के लिए; “लालची, व्याकुल, आसक्त, ग्रस्त, दूषित, आसक्त, स्थिर और अनेक पाँच इच्छाओं में अवरुद्ध” साधारण है; “अनेक प्रकार की इच्छाओं से आच्छादित, अवरुद्ध, बंद, ढका हुआ।” साधारण लोगों के लिए। “वे कहते हैं: निम्न दर्जे के साधारण लोग”: वे ऐसा कहते हैं, ऐसा बोलते हैं, ऐसा बात करते हैं, ऐसा समझाते हैं, कहते हैं: निम्न दर्जे के, नीच, घटिया, तुच्छ, महत्वहीन साधारण लोग।

52 · चाहे उसका पिछला गौरव और प्रतिष्ठा कुछ भी हो, वह भले ही त्याग दी जाए, इसे देखकर उसे सीख लेनी चाहिए और अपनी वासना को त्याग देना चाहिए।

“पिछली महिमा और प्रशंसा, यहाँ तक कि वह त्याग भी सकता है”: महिमा क्या है? यहाँ, एक विशेष प्रकार के लोगों को (उनके पूर्व समण रूप में) वस्त्र, भोजन, आश्रय, रोगी की आवश्यकताओं और चिकित्सा संबंधी ज़रूरतों के साथ सम्मानित, आदरित और पूजनीय बनाया जाता है; यही महिमा है। प्रशंसा क्या है? यहाँ, एक विशेष प्रकार के लोग अपने पूर्व समण रूप में प्रशंसा करने आए थे। वे बुद्धिमान, विद्वान, श्रोता और वाक्पटु हैं, वे तर्कों का बचाव करने में निपुण और कुशल हैं: "मंत्रोच्चार करने वाला (शिक्षक)," या "वकील," या "वक्ता," या "जंगल में रहने वाला," या "भिखारी," या "गोबर साफ करने वाला," या "तीन वस्त्र धारण करने वाला," या "दूसरा भिखारी," या "खाने के बाद न खाने वाला," या "आमतौर पर बैठने वाला (लेटने वाला नहीं)," या "कहीं भी रहने वाला," या "प्रथम ध्यान प्राप्त करने वाला," या "द्वितीय ध्यान प्राप्त करने वाला," या "तृतीय ध्यान प्राप्त करने वाला," या "चौथे ध्यान प्राप्त करने वाला," या "असीम शून्य प्राप्त करने वाला," या "असीम चेतना प्राप्त करने वाला," या "शून्यता प्राप्त करने वाला," या "शून्यता में निवास न करने वाला (न तो बोध और न ही अबोध)," यह प्रशंसा है।

“हो सकता है कि उसका त्याग भी हो जाए।” कुछ समय बाद, जब उसने बुद्ध, धम्म, संघ, विद्या का त्याग कर अपवित्रता की ओर लौट आया, तो उसकी वह महिमा और वह प्रतिष्ठा क्षीण हो गई, क्षीण हो गई, खो गई, लुप्त हो गई और चकनाचूर हो गई।

“इसे देखकर उसे सीखना चाहिए, उसे अपनी वासना का त्याग करना चाहिए”: “यह,” पूर्व में समण के रूप में प्राप्त यश और प्रशंसा; बाद में, जब उसने बुद्ध, धम्म, संघ का त्याग कर ज्ञान प्राप्त किया और सांसारिक जीवन में लौट आया, तो न यश है, न प्रतिष्ठा, यही असफलता है। “इसे देखकर,” ...“उसे सीखना चाहिए।” तीन प्रकार की शिक्षाएँ हैं: उपदेशों का ज्ञान बढ़ाना, मन का ज्ञान बढ़ाना और बुद्धि का ज्ञान बढ़ाना। उपदेशों का ज्ञान बढ़ाना क्या है? ...(अस्पष्ट भाग देखें)।

बुद्धि को बढ़ाने का क्या अर्थ है?...

ज्ञान को बढ़ाने का क्या अर्थ है? ... जो कोई भी धम्म के अनुसार कार्य नहीं कर रहा है... (उद्धृत) उसे कामवासना का धम्म कहा जाता है..., इसीलिए इसे कामवासना का धम्म कहा जाता है।

“इसे देखकर उसे सीखना चाहिए, उसे कामवासना का त्याग करना चाहिए।” कामवासना के त्याग, शांत होने, रुकने और समाप्त होने के लिए उसे उपदेशों को बढ़ाना सीखना चाहिए, उसे मन को बढ़ाना सीखना चाहिए और उसे बुद्धि को बढ़ाना सीखना चाहिए। इन तीनों बातों का अध्ययन तब करना चाहिए जब वह किसी लक्ष्य की ओर अग्रसर हो रहा हो; जब वह जानता हो; जब वह देखता हो; जब वह आत्मनिरीक्षण कर रहा हो; जब वह हृदय से दृढ़ होकर निर्णय ले रहा हो; जब वह विश्वास के साथ निर्णय ले रहा हो; जब वह ऊर्जावान हो; जब वह सचेत हो; जब वह मन की एकाग्रता उत्पन्न हो; जब वह बुद्धि से जानता हो; जब वह जो जानना चाहिए उसे जान चुका हो; जब वह त्याग कर रहा हो; जब वह अभ्यास कर रहा हो; जब वह गवाही दे रहा हो जो गवाही देनी चाहिए [भजन संहिता 1:41], उसे अभ्यास करना चाहिए, अच्छी तरह अभ्यास करना चाहिए और स्वीकार करने के बाद आगे बढ़ना चाहिए।

53 · वह अपने इरादे से पराजित हो गया, एक दयनीय व्यक्ति की तरह सोचते हुए, दूसरों से यह निंदा सुनकर, ऐसे लोग शर्मिंदा हो जाते हैं।

“वह अपने इरादे से पराजित हो गया, और उसने एक दयनीय व्यक्ति की तरह सोचा”: इच्छा करने का इरादा, द्वेषपूर्ण इरादा, हानि पहुँचाने का इरादा, देखने, छूने, यातना देने, जोड़ने, अधिकार करने, ढकने का इरादा; उसने सोचा, दृढ़ता से सोचा, हर तरह के विचारों से सोचा, वहाँ से जाने के बाद, एक दयनीय व्यक्ति की तरह, एक सुस्त व्यक्ति की तरह, एक अत्यंत मूर्ख व्यक्ति की तरह। जैसे कोई उल्लू डाल पर चूहे की तलाश में बैठा हो और वहाँ से जाने के बाद तरह-तरह के विचारों से सोच रहा हो; जैसे कोई सियार नदी के किनारे मछली की तलाश में हो, ...; जैसे कोई बिल्ली दरारों, नालियों, कूड़े के ढेरों में चूहों की तलाश में हो, ...; जैसे कोई गधा गली में, नाली में, कूड़े के ढेर में बोझ से मुक्त हो गया हो, ... [MN.50]; उसी प्रकार, सांसारिक जीवन में लौटने वाले व्यक्ति का इरादा इच्छा करना, द्वेषपूर्ण इरादा, हानि पहुँचाने का इरादा, देखने, छूने, यातना देने, जोड़ने, अधिकार करने और ढकने का था। वह सोचता है, गहराई से सोचता है, हर तरह के विचारों का इस्तेमाल करता है, और वहां से निकलने के बाद, वह एक दुखी व्यक्ति की तरह, एक सुस्त व्यक्ति की तरह, एक बेहद मूर्ख व्यक्ति की तरह सोचता है।

“दूसरों से यह निंदा सुनकर, ऐसे लोग लज्जित हो जाते हैं”: “दूसरों,” जैसे माता-पिता, शिक्षक, या शिक्षक के समकक्ष, या मित्र, या परिचित, या करीबी व्यक्ति, या सहकर्मी: “भिक्षुओं! जब आप ऐसे महान गुरु को प्राप्त कर लेते हैं, ऐसे सुशिक्षित धम्म में भिक्षु बन जाते हैं, और ऐसे पवित्र समूह में शामिल हो जाते हैं, तो बुरे कामवासना वाले धम्म, बुद्ध, धम्म, संघ का त्याग करके, और शिक्षा प्राप्त करने के बाद, सांसारिक जीवन में लौटना आपके लिए लाभ नहीं है; बल्कि यह आपके लिए बुरा लाभ है। वास्तव में, अच्छे धम्म में आपमें कोई विश्वास नहीं है, अच्छे धम्म में आपमें कोई लज्जा नहीं है, वास्तव में अच्छे धम्म में आपमें कोई शक्ति नहीं है, वास्तव में अच्छे धम्म में आपका कोई विचार नहीं है, और वास्तव में अच्छे धम्म में आपमें कोई ज्ञान नहीं है।” [AN.5.5] वह उनके शब्दों, बोलने के तरीकों, शिक्षाओं और नसीहतों को सुनेगा, समझेगा, भेद करेगा और लज्जित, पीड़ित, आहत और व्याकुल हो जाएगा, और चिंता की स्थिति में आ जाएगा। “उस तरह के व्यक्ति की तरह”: उस तरह का, उस तरह के निवास से संबंधित, उस तरह की चीज, उस तरह का, जो अशिष्टता में लौट आया है।

54 · वह फिर से तलवारें (रक्षात्मक हथियार) बनाता है, जब दूसरों के शब्दों से उकसाया (निंदा किया) जाता है, यह वास्तव में एक बड़ी गुफा है, वह झूठ में कूद जाता है।

“वह दूसरों के शब्दों से प्रेरित होकर फिर से तलवारें बनाता है”: “फिर से,” वाक्य का आगे का भाग; ... “तलवारें (चाकू),” तीन प्रकार के चाकू होते हैं: देहधारी चाकू, वाणीधारी चाकू और अभिकल्पनाधारी चाकू; देहधारी कर्मों के तीन चाकू, वाणीधारी कर्मों के चार चाकू और अभिकल्पनाधारी कर्मों के तीन चाकू। “जब दूसरों द्वारा प्रेरित किया जाता है,” जब किसी अभिभावक, गुरु या शिक्षक द्वारा प्रेरित किया जाता है, ..., तो वह जानबूझकर व्यर्थ कहता है। वह कहता है, “हे महान गुण! मैं एक आनंदित भिक्षु हूँ, (पर) मुझे अपनी माता का सहारा बनना चाहिए, इसलिए मैं सांसारिक जीवन में लौट आया।” वह कहता है: “मुझे अपने पिता का सहारा बनना चाहिए...।” वह कहता है, “...मुझे अपने भाई का पालन-पोषण करना चाहिए, ...मुझे बहनों का पालन-पोषण करना चाहिए..., मुझे अपने बेटे का पालन-पोषण करना चाहिए..., ...मेरी बेटी का..., ...मुझे मित्रों का सहारा बनना चाहिए..., ...सहकर्मियों का..., ...रिश्तेदारों का..., ...खून के रिश्तों (संबंधियों) का, इसलिए मैं सांसारिक जीवन में लौट आया।” यह एक वाणीधारी चाकू है; वह इसे घटित करता है, इसे उत्पन्न करता है, इसे जन्म देता है।

“यह सचमुच एक बड़ी गुफा होगी”: यह उसकी बड़ी गुफा है, बड़ा जंगल है, बड़ा घना जंगल है, बड़ी खतरनाक सड़क है, बड़ा खतरा है, बड़ा मोड़ है, बड़ा कीचड़ है, बड़ी बाधा है, बड़ा बंधन है, अर्थात्: एक जानबूझकर बोला गया झूठ।

“उसने झूठी बातें बोलनी शुरू कर दीं”: झूठी बातों को झूठ कहा जाता है। यहाँ, एक खास तरह का व्यक्ति मंदिर में, या सभा में, या रिश्तेदारों के पास, या समूह में, या महल में आता है और उसे पूछताछ के लिए गवाह के रूप में लाया जाता है: “आओ, महोदय! कृपया मुझे मार्ग के बारे में जो कुछ भी जानते हो, वह बताएँ।” वह बिना जाने कहता है: “मैं जानता हूँ।” या, यदि वह जानता है, तो वह कहता है: “मैं नहीं जानता।” वह उसे देखे बिना कहता है, “मैं देखता हूँ।” या, जब वह उसे देखता है, तो वह कहता है, “मैंने उसे नहीं देखा।” इस तरह, वह जानबूझकर अपने स्वार्थ के लिए, या दूसरों के स्वार्थ के लिए, या थोड़े से प्रलोभन के कारण व्यर्थ की बातें बोलता है।

या, तीन व्यवहारों को "झूठ" मानते हुए: बोलने से ठीक पहले (सोचते हुए): "मैं झूठ बोलूँगा।" बोलते समय (सोचते हुए): "मैं झूठ बोल रहा हूँ।" बोलते समय (सोचते हुए): "मैंने झूठ बोल दिया है।" या, चार व्यवहारों को मानते हुए: बोलने से ठीक पहले (सोचते हुए): "मैं झूठ बोलूँगा।" बोलते

समय (सोचते हुए): "मैं झूठ बोल रहा हूँ।" बोलते समय (सोचते हुए): "मैंने झूठ बोल दिया है।" विभिन्न आसक्तियों (त्रुटियों) के मत हैं, और इन चार व्यवहारों को झूठ माना जाता है। या, पाँच रूपों..., छह रूपों..., सात रूपों..., आठ रूपों को झूठ मानते हुए: बोलने से पहले... विभिन्न आसक्तियों के (गलत) मत, विभिन्न आसक्तियों की पसंद, विभिन्न आसक्तियों की प्रवृत्तियाँ, विभिन्न आसक्तियों की इच्छाएँ और विभिन्न आसक्तियों का स्वभाव होता है। इन आठ व्यवहारों को झूठ और झूठे शब्द माना जाता है। "वह झूठे भाषण में कूद पड़ा": वह झूठे भाषण में कूद पड़ा, उसमें गोता लगाया, उसमें प्रवेश किया।

55 · (वह) एक प्रसिद्ध बुद्धिमान व्यक्ति के रूप में जाना जाता था जो अकेला चलता है, लेकिन जब वह कामुक होता है, तो वह एक सुस्त व्यक्ति की तरह इधर-उधर घसीटा जाता है।

"प्रसिद्ध ज्ञानी व्यक्ति": यहाँ, एक विशेष प्रकार के व्यक्ति ने अपने पूर्व जीवन में एक समण के रूप में प्रसिद्धि और प्रशंसा प्राप्त की: .... इस प्रकार, वह ज्ञात और प्रसिद्ध है।

"एकल यात्री": अकेले यात्रा करने के दो तरीके हैं:...

लेकिन जब वह कामवासना से जुड़ जाता है": जो कोई भी न्याय नहीं कर रहा है... "लेकिन जब वह कामवासना से जुड़ जाता है": कुछ समय बाद, वह बुद्ध, धम्म, संघ को त्याग देता है, ज्ञान प्राप्त करता है और फिर सांसारिक दुनिया में लौट आता है, कामवासना में बंध जाता है...

"जैसे कोई सुस्त व्यक्ति घसीटा जा रहा हो": वह दुखी व्यक्ति एक सुस्त व्यक्ति की तरह है, एक अत्यंत मूर्ख व्यक्ति की तरह जिसे घसीटा जा रहा है, इधर-उधर घसीटा जा रहा है, मुसीबतों में फँसा हुआ है: हत्या करना, बिना दिए लेना, ..., झूठ बोलना, जिसके कारण उसे घसीटा गया, इधर-उधर घसीटा गया और वह मुसीबतों में फँस गया। राजा द्वारा पकड़े जाने के बाद, उसे अनेक दंड दिए गए: कोड़े मारना, डंडे से पीटना, बेंत से पीटना, हाथ, पैर, हाथ और पैर, कान, नाक, कान और नाक काटना, खट्टी दलिया के बर्तन से यातना देना, शंख से गंजा करना, राहु के मुख से यातना देना, अग्नि से यातना देना, मोमबत्ती से हाथ जलाना, भूत-प्रेत भगाना, छाल का आवरण चढ़ाना, हिरण से यातना देना, काँटे से मांस काटना, धन का दंड देना, क्षार से स्नान कराना, दरवाजे की कुंडी मरोड़ना, भूसे पर पैर रखना, गर्म तेल में भिगोना, कुत्ते से कटवाना, जीवित रहते हुए छेद करना, तलवार से सिर काटना, जिसके कारण उसे घसीटा गया, इधर-उधर घसीटा गया और वह मुसीबतों में फँस गया।

या, इच्छा और प्यास से त्रस्त होकर, हृदय उस प्रकार ग्रस्त हो जाता है, जैसे जब कोई जहाज समुद्र में कूदता है, ठंड और गर्मी से, मक्खियों, मच्छरों, हवा, धूप और सांपों के संपर्क से पीड़ित होकर भूख और प्यास से मर जाता है; और चला जाता है (विभिन्न स्थानों का उल्लेख यहां किया गया है, जिनमें तक्षशिला, जावा, तांबपन्नी और कई अज्ञात स्थान शामिल हैं - बी. बोधि भी इस सूची को अपनी टिप्पणी से हटा देते हैं); रेगिस्तान के खतरनाक रास्ते पर चला जाता है; घुटनों के बल उस रास्ते पर चला जाता है जिसे पार किया जा सकता है; वह रास्ता जहां बकरियां चलती हैं; वह रास्ता जिसे केवल खंभों के सहारे ही पार किया जा सकता है; वह रास्ता जिसे केवल पैराशूट पकड़कर ही पार किया जा सकता है; वह रास्ता जिसे केवल बांस की झाड़ी काटकर ही पार किया जा सकता है; पक्षियों के रास्ते पर; चूहों के रास्ते पर; टूटी हुई सड़क पर; लताओं से बने रास्ते पर चला जाता है, जिससे वह घिसटता हुआ, इधर-उधर खींचता हुआ, मुसीबत में पड़ जाता है।

जब वह उसे ढूंढ रहा था, तो उसे वह नहीं मिला और न मिलने के कारण वह परेशान हो गया, इसलिए उसे घसीटा गया, इधर-उधर खींचा गया और वह मुसीबत में पड़ गया।

जब उसने खोज की, तो उसे वह मिल गया, और उसे मिली सुरक्षा के कारण वह व्याकुल हो गया: "चाहे राजा मेरी संपत्ति छीन ले, चोर उसे नहीं ले जा सकेंगे, आग उसे जला नहीं पाएगी, पानी उसे बहा नहीं पाएगा, अवांछित वारिस उसे नहीं ले जा सकेंगे।" जब वह इस प्रकार रक्षा और संरक्षण करता है, तो उसकी संपत्ति नष्ट हो जाती है, वह अलगाव में जड़ जमा लेता है और व्याकुल हो जाता है, इसलिए वह घसीटा जाता है, इधर-उधर खींचा जाता है, और मुसीबत में पड़ जाता है।

56 · मुनि, यहाँ, इस कष्ट को पहले और बाद में जानकर, वह अपने आप पर दृढ़ रहेगा और कामवासना में लिप्त नहीं होगा।

"मुनि, यहाँ, इस पीड़ा को जानने से पहले और बाद में": "यह," जब वे समण अवस्था में थे, तब उनकी महिमा और प्रशंसा थी, और जब उन्होंने बुद्ध, धम्म, संघ, विद्या का त्याग कर सांसारिक जीवन में वापसी की, तब उनकी महिमा और प्रशंसा नहीं रही। यह प्राप्ति और हानि। "जानने के बाद," .... "मुनि," .... "यहाँ," इस दृष्टिकोण से संबंधित है, इस प्रेम से संबंधित है, इस प्रवृत्ति से संबंधित है, इस आसक्ति से, इस धम्म से, इस शिक्षाप्रद भाषा से, इन शास्त्रों से, इस गुरु की शिक्षाओं से, इस व्यक्ति से, इस मानव जगत से संबंधित है।

"वह अपने आप में दृढ़ रहेगा": वह दो तरीकों से दृढ़तापूर्वक एकाकी रहेगा: भिक्षु के रूप में या जन-त्याग में। वह भिक्षु के रूप में दृढ़तापूर्वक ऐसा कैसे कर सकता है? घर की सभी बाधाओं को दूर करके, ..., और जीवित रहकर, वह भिक्षु के रूप में दृढ़तापूर्वक एकाकी मार्ग पर चल सकता है।

वह जनमानस को त्यागकर अपने मार्ग पर दृढ़तापूर्वक कैसे चल सकता है? जब वह इस प्रकार का भिक्षु होगा, तो वह वनों में एकाकी रहेगा, और जीवित रहेगा, ताकि वह जनमानस का त्याग करके एकाकी कर्म करने के लिए दृढ़ संकल्पित हो सके। वह दृढ़ और एकाकी रहेगा, वह अच्छे धम्म का दृढ़ धारक होगा; वह प्रतिष्ठा का धारक होगा।

"कामवासना में लिप्त नहीं होगा": जो कोई न्याय नहीं कर रहा है... वह कामवासना के धम्म के निकट नहीं जाएगा और न ही उसमें लिप्त होगा, उसमें भाग नहीं लेगा, उसका उपयोग नहीं किया जाएगा, वह अभ्यास नहीं करेगा, पूर्ण अभ्यास नहीं करेगा, और अभ्यास जारी रखने के बाद उसे रोका नहीं जाएगा।

57 · उसे दूर रहना सीखना चाहिए, यह सभी पवित्रों में सर्वोच्च है, (पर) उसे यह नहीं सोचना चाहिए कि वह इसके कारण सबसे विजयी है, उस एक के सामने जो वास्तव में निर्वाण है।

"उसे दूर रहना सीखना चाहिए": "दूर रहना," दूर रहने के तीन प्रकार हैं: .... "उसे सीखना चाहिए।" सीखने के तीन प्रकार हैं: .... "उसे दूर रहना सीखना चाहिए": उसे सीखना चाहिए, अभ्यास करना चाहिए, अच्छी तरह अभ्यास करना चाहिए और संतुष्ट होने के बाद दूर चले जाना चाहिए।

"यह सभी संतों में श्रेष्ठ है": सभी संत बुद्ध कहलाते हैं, बुद्धों के शिष्य और भिक्षु। यह संतों में प्रथम, सबसे विजयी, सर्वोच्च, शीर्ष और सबसे ऊँचा है, अर्थात् कर्मों से दूर रहना।

"(पर) उसे यह नहीं सोचना चाहिए कि वह इस वजह से सबसे विजयी है": दूर होने के कारण उसे भेंट स्वीकार नहीं करनी चाहिए, अहंकारी, घमंडी, जिद्दी और अभिमानी नहीं होना चाहिए; उसे इस वजह से कठोर, अकड़ू और सिर ऊंचा करने वाला व्यक्ति नहीं बनना चाहिए।

"वास्तविक निर्वाण के सामने": निर्वाण के सामने, निकट, पास, ज्यादा दूर नहीं, उसके करीब।

58 · मुनि, जो खाली हैं, जिनकी इच्छा में कोई अपेक्षा नहीं है, वे अपनी इच्छाओं में बंधे हुए लोग उन लोगों से ईर्ष्या करते हैं जो बाढ़ से बच गए हैं।

"मुनि, जो खाली हैं": खाली, दूर, पृथक, बुरे कर्मों से रहित, दूर, शरीर से पृथक; शब्दों से बुरे कर्म...; ...इरादे से...; लोभ, घृणा, भ्रम, क्रोध, द्वेष, बुराई छुपाना, प्रभुत्व, ईर्ष्या, कंजूसी, पाखंड, धूर्तता, हठ, जुनून, अहंकार, आत्मसंतुष्टि, आराम (प्रयास की कमी), सभी प्रकार की अशुद्धता, सभी प्रकार की बुराई, सभी प्रकार की परेशानियाँ, सभी प्रकार की झुलसन, सभी प्रकार की गर्मी (यातना); ...सभी अस्वास्थ्यकरताओं से रहित, खाली, दूर और पृथक। "मुनि," .... "चलते समय" का अर्थ है चलना, ठहरना, कार्य करना, आगे बढ़ना, रक्षा करना और जीवित रहना।

"जिनकी इच्छाओं में कोई अपेक्षा नहीं होती": "इच्छा," दो प्रकार की इच्छाएँ होती हैं: वस्तुओं की इच्छा और अशुद्धता की इच्छा... वस्तुओं की इच्छाओं के ज्ञात होने के बाद, त्यागने के बाद, परित्याग करने के बाद, दूर भगाए जाने के बाद, अंत के बाद, उसे अस्तित्वहीन बनाने के बाद, जब वस्तुओं की इच्छा की अपेक्षा नहीं रहती, तब वह व्यक्ति अपनी इच्छाओं का त्याग करने वाला, अपनी इच्छाओं को समाप्त करने वाला, अपनी इच्छाओं को छोड़ने वाला, अपनी इच्छाओं को त्यागने वाला, अपनी इच्छाओं को समाप्त करने वाला, लोभ का त्याग करने वाला, लोभ को छोड़ने

वाला, लोभ का त्याग करने वाला, लोभहीन होने वाला, भूखा-प्यासा न रहने वाला, शांत होने वाला, प्रसन्न रहने वाला और ब्राह्मण के रूप में स्वयं में जीवन यापन करने वाला बन जाता है।

“इच्छाओं में जकड़े हुए लोग उन लोगों से ईर्ष्या करते हैं जो इस उफान से पार पा चुके हैं”: “लोग” सभी प्राणियों का पर्यायवाची है। लोग लालची, लोभी, बंधे हुए, आसक्त, दूषित, अपनी इच्छाओं से जुड़े हुए, स्थिर, अवरुद्ध हैं; वे उन लोगों को चाहते हैं, स्वीकार करते हैं, आशा करते हैं, आकांक्षा रखते हैं और उनके लिए प्रार्थना करते हैं जिन्होंने इच्छाओं के उफान को पार कर लिया है; ...दृष्टि के उफान को पार कर लिया है...; ...अज्ञान के उफान को पार कर लिया है...; जो पार कर चुके हैं, बाहर आ चुके हैं, पार कर चुके हैं, पार कर चुके हैं, विजय प्राप्त कर चुके हैं; जो दूसरे किनारे पर पहुँच चुके हैं; जो दूसरे किनारे पर पहुँच चुके हैं, वे परम (लक्ष्य) तक पहुँच चुके हैं; जो परम तक पहुँच चुके हैं, वे अंत तक पहुँच चुके हैं; ...(छोड़ा गया, पिछले खंड देखें)...; ...निर्वाण प्राप्त कर चुके हैं।

जैसे ऋणी ऋणमुक्त होने की इच्छा रखता है और ईर्ष्या करता है; जैसे बीमार व्यक्ति रोगमुक्त होने की इच्छा रखता है और ईर्ष्या करता है; जैसे बंधनों में जकड़े हुए व्यक्ति बंधनों से मुक्त होने की इच्छा रखते हैं और ईर्ष्या करते हैं; जैसे दास दासता से मुक्त होने की इच्छा रखता है और ईर्ष्या करता है; जैसे कठिन मार्ग पर चलने वाले लोग स्थिरता को अंतिम लक्ष्य मानकर आशा रखते हैं और ईर्ष्या करते हैं। इसी प्रकार, मनुष्य लालची, लोभी, बंधे हुए, आसक्त, दूषित, आसक्त, स्थिर और अपनी इच्छाओं में अवरुद्ध होते हैं। वे उन लोगों की कामना करते हैं, उन्हें स्वीकार करते हैं, उनसे आशा रखते हैं, उनकी आकांक्षा करते हैं और उनके लिए प्रार्थना करते हैं जिन्होंने इच्छाओं के सैलाब को पार कर लिया है; ...; जिन्होंने निर्वाण प्राप्त कर लिया है।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> निद्देसा >> निद्देसा 1.8

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

<<<< पिछला अगला >>>>

8. पसूरा
59 · वे कहते हैं: “यहाँ पवित्रता है।” वे कहते हैं कि अन्य धर्मों में पवित्रता नहीं है। जब यह घोषित किया जाता है कि वहाँ जो कुछ भी विद्यमान है वह पवित्र है, तो सभी अपने-अपने सत्यों में स्थिर हो जाते हैं।

“वे कहते हैं: “यहाँ पवित्रता है”: उन्होंने कहा, बताया, बात की, समझाया, कहा: यहाँ शुद्ध है, स्वच्छ है, सर्वत्र शुद्ध है; वैराग्य, मुक्ति, अलगाव, वे कहते हैं, बताते हैं, बात करते हैं, समझाते हैं, कहते हैं: “संसार शाश्वत है, यही वास्तविक है, और बाकी सब व्यर्थ है।” यह शुद्ध है, स्वच्छ है, और सर्वस्व शुद्ध है...; “संसार अत्यंत स्थायी है”... (छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)।

“वे कहते हैं कि अन्य धर्मों में कोई शुद्धि नहीं है”: अपने गुरु, धर्म के वर्णन, समूह, दृष्टिकोण, मार्ग और पथ को छोड़कर, वह सभी असहमतिपूर्ण सिद्धांतों को त्याग देता है, जड़ से उखाड़ फेंकता है और घेर लेता है: “वह गुरु सर्वज्ञानी नहीं है, ...(अंशित, पिछले खंड देखें)।” वे ऐसा कहते हैं, ...।

जब यह घोषित किया जाता है कि उन पर निर्भर रहने वाले सभी लोग शुद्ध हैं: “जो कोई भी” गुरुओं के सभी कथनों, धम्म, समूहों आदि पर निर्भर रहता है, उनसे आसक्ति रखता है, उनमें प्रवेश करता है, उनसे बंध जाता है और अपना हृदय उनकी ओर मोड़ लेता है। “वहाँ” अपने स्वयं के विचारों में, अपनी पसंदों में, अपनी प्रवृत्तियों में, अपने स्वयं के मतों में। “जब स्वयं को शुद्ध होने का दावा करता है”: शुद्ध वक्ता, सुंदर वक्ता, बुद्धिमान वक्ता, दृढ़ वक्ता, विधि का प्रयोग करने वाला वक्ता, तर्कशील वक्ता, विशिष्ट भविष्यवाणियाँ करने वाला वक्ता, प्रमाणित वक्ता, वह वक्ता जो अपने दावों को संभव बनाता है।

“वे सभी अपने-अपने सत्यों में स्थिर हैं”: सभी समण और ब्राह्मण अपने-अपने सत्यों में स्थिर, रुके हुए, अटके हुए, फंसे हुए, दूषित और संसार की ओर उन्मुख हैं। “संसार स्थिर है, यह सत्य है, और बाकी सब कुछ व्यर्थ है।” (सभी) स्थिर, रुके हुए, अटके हुए हैं...

60 · उन दार्शनिकों के जनता (सभा) में चुपके से घुसने के बाद, उन्होंने एक दूसरे (अपने विरोधियों) को मूर्ख समझा, जो दूसरों (गुरुओं, विचारों आदि) पर निर्भर रहते हैं, वे तर्क देते हैं, (एक) अच्छे प्रशंसक की चाहत रखते हुए, कुशल होने का दावा करते हैं।

"वाक्पटु लोगों के जनसमूह में प्रवेश करने के बाद": "वाक्पटु लोग," वे लोग जो वाक्पटु हैं, वे लोग जो सिद्धांत चाहते हैं, वे लोग जो सिद्धांत को महत्व देते हैं, वे लोग जो सिद्धांत की खोज करते हैं। "जनसमूह में प्रवेश करने के बाद," प्रवेश करें, निवेश करें, गहराई में उतरें और क्षत्रिय जनसमूह, ब्राह्मण जनसमूह, गृहस्थ जनसमूह और समण जनसमूह में प्रवेश करें।

"वे अपने विरोधियों को मूर्ख समझते हैं": "विरोधी" दो लोग हैं, दो झगड़ालू, दो विवाद करने वाले, दो तर्क करने वाले, दो बचाव करने वाले, दो प्रतिद्वंद्वी, दो बातूनी, वे एक दूसरे को मूर्ख, हीन, नीच, घटिया इरादे वाला, महत्वहीन समझते हैं।

"जो लोग दूसरों पर निर्भर रहते हैं, वे ही तर्क देते हैं": दूसरे गुरु, धम्म की दूसरी व्याख्याएँ, ..., वे उन्हीं पर टिके रहते हैं, उन्हीं में लीन हो जाते हैं, उन्हीं पर ध्यान केंद्रित करते हैं, उन्हीं की ओर मन लगा लेते हैं। मतों को झगड़े, बहस, असहमति, मतभेद, विवाद या "चर्चा" कहा जाता है; वे झगड़े करते हैं, बहस करते हैं, विवाद करते हैं, असहमति जताते हैं, असहमति जताते हैं, निरर्थक चर्चा करते हैं; वे बताते हैं, बात करते हैं, समझाते हैं, बोलते हैं।

"एक अच्छा प्रशंसक, एक कुशल व्यक्ति होने का दावा करने वाला व्यक्ति": "एक अच्छा प्रशंसक," एक ऐसा व्यक्ति जो वास्तव में एक अच्छा प्रशंसक है, एक ऐसा व्यक्ति जो प्रशंसा चाहता है, एक ऐसा व्यक्ति जो सराहना चाहता है, एक ऐसा व्यक्ति जो प्रशंसकों को महत्व देता है, और एक ऐसा व्यक्ति जो हर जगह प्रशंसकों की तलाश करता है। वक्ता, बुद्धिमान वक्ता, दृढ़ वक्ता, ...

61 · जनता में बंधन के बारे में बात करते हुए, प्रशंसक चाहने वाले असफलता से डर जाते हैं, फटकार मिलने पर शर्मिंदा हो जाते हैं, और फटकार मिलने पर दोष खोजने लगते हैं।

"जनता के बीच हार्नेस की चर्चा होती है": क्षत्रिय समुदाय में, या ब्राह्मण समुदाय में, ...(छोड़ा गया), वे हार्नेस, मजबूत हार्नेस के बारे में बात करते हैं, ...(छोड़ा गया)।

"प्रशंसा पाने की चाह रखने वाले लोग असफलता से डरने लगते हैं": "प्रशंसा पाने की चाह रखने वाले लोग," जो प्रशंसा और सम्मान चाहते हैं, उन्हें प्रशंसा, प्रशंसा, आशा, प्रार्थना और याचना करने वालों का सहारा मिल सकता है। "असफलता से डरने लगना," बातचीत शुरू होने से ठीक पहले संदेह और हार के डर से भर जाता है: "क्या मैं विजेता बन पाऊंगा? क्या मैं निराश हो जाऊंगा? मैं तर्क कैसे दूंगा? मैं खंडन कैसे करूंगा? मैं अंतर कैसे करूंगा? मैं बारीकियों को कैसे समझूंगा? मैं उलझन को कैसे सुलझाऊंगा? मैं विभाजन कैसे करूंगा? मैं एक व्यापक सिद्धांत कैसे बनाऊंगा?" इस तरह, बातचीत शुरू होने से पहले ही वह संदेह और असफलता के डर से भर जाएगा।

"निंदा किए जाने पर लज्जित होना": न्याय करने वालों, आम जनता, जनसमूह के सदस्यों और प्रश्नकर्ताओं को उन्होंने फटकारा: "जो कहा गया है वह विभाजनकारी सिद्धांत है" उन्होंने विभाजनकारीता के लिए इसकी निंदा की; "अन्यायपूर्ण सिद्धांतों और वाक्यांशों की बात करना" उन्होंने सिद्धांतों और शब्दों से इसका खंडन किया; "वे सिद्धांत और शब्द गलत तरीके से लागू किए गए हैं, वे शब्द गलत तरीके से प्रयोग किए गए हैं, और वे अर्थ और शब्द गलत तरीके से लागू किए गए हैं या गलत जगह पर लगाए गए हैं, वे तर्क स्थापित नहीं हैं, वे खंडन अच्छी तरह से नहीं किए गए हैं, वे भेद स्थापित नहीं हैं, बारीकियों के प्रति वे प्रतिक्रियाएं अच्छी तरह से नहीं की गई हैं, वे उलझनें स्थापित नहीं हैं, जो उलझनें सुलझाते हैं वे अच्छी तरह से नहीं किए गए हैं, और वे विनाश स्थापित नहीं हैं, वे व्यापक सिद्धांत अच्छी तरह से काम नहीं करते हैं, सही और गलत की बात करते हैं, बुराई की बात करते हैं, बुराई की व्याख्या करते हैं, बुराई की बात करते हैं।" वे निंदा करते हैं। "निंदा किए जाने पर लज्जित होना": फटकार किए जाने पर लज्जित होना; परेशान, नाराज, बीमार और उदास होना।

"डांट पड़ने पर वह क्रोधित हो गया और दोष ढूंढने लगा": डांट पड़ने पर, फटकार लगने पर, प्रशंसा न मिलने पर, प्रशंसा न मिलने पर, वह क्रोधित, अस्वीकृत, जिद्दी, क्रोधी, अरुचिपूर्ण और असंतुष्ट हो गया। "दोष ढूंढने वाला बन गया," (विरोधी का) दोष ढूंढने वाला, गलती ढूंढने वाला, लापरवाही ढूंढने वाला, खामी ढूंढने वाला, दोष ढूंढने वाला।

62 · जो कुछ भी अपूर्ण कहा जाता है, न्यायाधीश द्वारा फटकारा जाता है, निम्न स्तर के आलोचक रोते हैं, शोक करते हैं और विलाप करते हैं: "वह (विरोधी) मुझसे आगे निकल गया।"

"वे जो कुछ भी कहते हैं वह अधूरा है": वे जो कुछ भी कहते हैं वह घटिया, नीच, विकृत, अपूर्ण, अपूर्ण होता है; वे ऐसा कहते हैं, ऐसा बताते हैं...।"

"न्यायाधीश फटकारते हैं": जो न्याय करते हैं, जनता, ..., वे फटकारते हैं: ...(छोड़ा गया)।

"निम्न स्तर के आलोचक (टीकाकार, वाद-विवाद करने वाले) रोते और शोक करते हैं": "रोते हुए," "मैं दूसरी बातों में उलझ गया था; दूसरी बातों के बारे में सोचता था; दूसरी बातों पर विचार करता था; दूसरी बातों के लिए मेरी आलोचना की जा रही थी, वह बड़ा गुट था, जनता थी, अनुयायियों का बड़ा समूह था, और लोगों का यह समूह एकमत नहीं है, और जनता से जुड़ने के लिए मैं बातचीत को और बाधित करूँगा।" इस तरह के कोई भी शब्द, व्यर्थ शब्द, बड़बड़ाना, शोक करना, चीरना, रोना। "उदासी," (क्योंकि) "उसकी जीत" पर वह दुखी है; "मेरी हार" पर वह दुखी है; "उसके लाभ" पर वह दुखी है; "मेरी असफलताओं" पर वह दुखी है; "उसकी प्रतिष्ठा" पर वह दुखी है; "मेरी गुमनामी" पर वह दुखी है; "उसकी प्रशंसा" पर वह दुखी है; "मेरी निंदा" पर वह दुखी है; "उसकी खुशी" पर वह दुखी है; "मेरे दुख" पर वह दुखी है; "उसे आदर, प्रशंसा, सम्मान और आदर प्राप्त है, साथ ही वस्त्र, भोजन, आश्रय, रोगियों की ज़रूरतें और चिकित्सा संबंधी आवश्यक वस्तुएँ भी मिलती हैं। मैं एक अनादरित, निष्फल व्यक्ति हूँ, मुझे वस्त्र, भोजन आदि कुछ भी नहीं मिलता।" वह दुखी, थका हुआ, रोता हुआ और भ्रमित हो गया। "घटिया सिद्धांत (तर्क)", घटिया सिद्धांत, निम्न सिद्धांत, खराब सिद्धांत, अपूर्ण सिद्धांत।

वह विलाप करता है: "उसने मुझे पीछे छोड़ दिया": "उसने मुझे सैद्धांतिक रूप से पीछे छोड़ दिया, मुझे पराजित कर दिया, मुझे पार कर लिया, मुझे परास्त कर दिया और मुझ पर विजय प्राप्त कर ली।" या, "सैद्धांतिक रूप से, मुझे हराने, मुझे पराजित करने, मेरा अंत करने और मुझे कुचलने के बाद," वह चलता है, जीता है, कार्य करता है, आगे बढ़ता है, रक्षा करता है, अपना अस्तित्व बनाए रखता है और अस्तित्व को बनाए रखता है। विलाप को शब्द, अर्थहीन शब्द, बड़बड़ाहट, बार-बार की जाने वाली फुसफुसाहट, वाचालता और रोना कहा जाता है।

63 · ये विवाद जो समणों के बीच उत्पन्न होते हैं, इनमें (विवादों में) अहंकार और निराशा होती है, इसे देखकर टिप्पणी (बहस) बंद कर देनी चाहिए, क्योंकि प्रशंसा (तारीफ) के सिवा कोई लाभ नहीं है।

"समणों के बीच विवाद हुए": "समण," यहाँ से जो भी जुलूस में प्रवेश करता है, वह जुलूस में शामिल हो जाता है। समणों के बीच जो कुछ भी उत्पन्न होता है, जन्म लेता है, घटित होता है, घटित होता है और प्रकट होता है; दृष्टि (दृष्टिकोण) को लेकर झगड़े, दृष्टि (दृष्टिकोण) को लेकर बहस, दृष्टि (दृष्टिकोण) को लेकर विवाद, दृष्टि (दृष्टिकोण) को लेकर असहमति।

"इनमें अभिमान और निराशा शामिल हैं": विजय, पराजय, लाभ, हानि, प्रतिष्ठा, प्रतिष्ठाहीनता, निंदा, प्रशंसा, कष्ट, सुख, आनंद, अवसाद, संतुष्टि और असंतुष्टि; प्रिय, घृणित, अभिमानी, अवसादग्रस्त, आज्ञाकारी, विरोधी, जीतने पर अभिमानी, पराजय पर अवसादग्रस्त, प्राप्त करने पर अभिमानी, न प्राप्त करने पर अवसादग्रस्त, प्रसिद्धि से अभिमानी हृदय, प्रतिष्ठाहीन हृदय से निराश हृदय, प्रशंसा से अभिमानी हृदय, निंदा से निराश हृदय, सुख से अभिमानी हृदय, कष्ट से अवसादग्रस्त हृदय, आनंद से अभिमानी हृदय, उदासी में अवसादग्रस्त हृदय, उच्चता और अहंकार में अभिमानी हृदय, और विनम्रता में अवसादग्रस्त हृदय।

"इसे देखने के बाद, आपको इसके बारे में बात करना बंद कर देना चाहिए": "इसे देखने के बाद," यह परेशानी: देखने (विचारों) के झगड़े में, देखने के तर्क में, ..., देखने के बाद, तौलने के बाद, ... तर्क-वितर्क को झगड़ा, विवाद, असहमति, मतभेद या "बहस" कहा जाता है। उसे बहस नहीं करनी चाहिए, विवाद नहीं करना चाहिए, झगड़ा नहीं करना चाहिए, वाद-विवाद नहीं करना चाहिए, विवाद नहीं करना चाहिए, उस अस्वस्थ बातचीत, झगड़े

से बहस नहीं करनी चाहिए..., उसे त्याग देना चाहिए, दूर भगा देना चाहिए, समाप्त कर देना चाहिए, अस्तित्वहीन कर देना चाहिए। उसे तर्क-वितर्क, झगड़े आदि से अलग हो जाना चाहिए, परहेज करना चाहिए, त्याग देना चाहिए, छोड़ देना चाहिए, प्रस्थान करना चाहिए, मुक्त होना चाहिए, बंधन से मुक्त होना चाहिए, उसे एक स्वतंत्र हृदय से जीना चाहिए।

“क्योंकि प्रशंसा के सिवा कोई और लाभ नहीं है”: प्रशंसा के सिवा कोई और लाभ नहीं है: चाहे वह स्वयं के लिए हो, या दूसरों के हितों के लिए, या दोनों के लिए, या जीवन के हितों के लिए, या परलोक के हितों के लिए, या स्पष्ट हितों के लिए, या गहरे हितों के लिए, या छिपे हुए हितों के लिए, या अन्यायपूर्ण हितों के लिए, या न्यायपूर्ण हितों के लिए, या जनता के हितों के लिए, या दोषरहित हितों के लिए, या प्रदूषणरहित हितों के लिए, या स्पष्टता के हितों के लिए, या सर्वोच्च हितों के लिए; वे न तो विद्यमान हैं, न ज्ञात हैं, और न ही खोजे जा सकते हैं।

64 · या जनता के बीच सिद्धांत का प्रचार करने के बाद वहाँ उसकी प्रशंसा की गई, जिसके कारण वह हँसेगा और अहंकारी हो जाएगा, उस लाभ को प्राप्त करने के बाद जिसकी उसने कामना की थी।

“या वहाँ उसकी प्रशंसा की जाती है”: “वहाँ,” उसके अपने विचारों, उसकी पसंद, उसकी प्रवृत्तियों, उसके मतों के लिए उसकी प्रशंसा, सम्मान, आदर किया जाता है।

“जनता के बीच सिद्धांत का प्रचार करने के बाद”: खत्तीय जनता या ब्राह्मण जनता के बीच अपने सिद्धांतों का प्रचार और वर्णन करने के बाद...; विस्तृत सिद्धांत का प्रचार, वर्णन, सुदृढ़ीकरण, विस्तार, व्याख्या, भाषण और उसे समझना।

“इसी कारण वह हँसता है और अभिमानी हो जाता है”: वह एक आनंदित, हँसमुख, प्रसन्न, प्रसन्न, पूर्णतः संतुष्ट व्यक्ति बन जाता है, या ऐसा व्यक्ति जो अपने दाँत दिखाता है और उस जीत का आनंद लेते हुए हँसता रहता है। “इसी कारण वह हँसा और अभिमानी हो गया”: वह विजयी, घमंडी, विजय का झंडा बुलंद करने वाला और अपनी जीत पर गर्व करने वाला बन गया।

“जिस लाभ की उसने कामना की थी, उसे प्राप्त करने के बाद”: लाभ की विजय प्राप्त होने, हासिल होने, प्राप्त होने, अधिकार में आने और प्राप्त होने के बाद। “इच्छा करना,” इच्छा करना, मन में इच्छा करना, इरादे में इच्छा करना, चेतना में इच्छा करना।

65 · महामहिम को कष्ट होगा, और वह यह बात घमंड और अहंकार से कहेगा, यह देखकर उसे बहस नहीं करनी चाहिए, क्योंकि कुशल लोग कहते हैं कि इस कारण कोई पवित्रता नहीं है।

“उनकी पीड़ा ही उनका महामहिम होगा”: “महामहिम,” अहंकार, ऊँचा ध्वज, घमंड। “उनकी पीड़ा का स्थान,” अर्थात् उनका कष्ट का आधार (नींव), पीड़ा का आधार, उत्पीड़न का आधार, प्रहार का आधार और बुराई का आधार।

“और वह यह बात घमंड और अहंकार से कहेगा”: वह व्यक्ति घमंड और अहंकार से बोलता है।

“इसे देखकर उसे बहस नहीं करनी चाहिए”: (“इसे देखकर,”) यह परेशानी: देखने के झगड़े में, देखने की बहस में, ...; देखने के बाद, नापने के बाद, ...। “उसे बहस नहीं करनी चाहिए,” उसे झगड़ा नहीं करना चाहिए, बहस नहीं करनी चाहिए, ...; उसे त्याग देना चाहिए, दूर भगा देना चाहिए, समाप्त कर देना चाहिए, और इसे अस्तित्वहीन बना देना चाहिए; उसे बहस से दूर हो जाना चाहिए, ..., अलग हो जाना चाहिए, परहेज करना चाहिए, त्याग देना चाहिए, मुक्त हो जाना चाहिए, और एक अप्रतिबंधित हृदय से जीना चाहिए।

“क्योंकि कुशल लोग कहते हैं कि इससे कोई पवित्रता नहीं रहती”: “कुशल लोग,” ...(छोड़ा गया, पिछले खंड देखें); वे कुशल लोग न कहते हैं, न बताते हैं, न बात करते हैं, न समझाते हैं, (कि) वाद-विवाद, झगड़े, ... में पवित्रता, स्वच्छता और पूर्ण शुद्धता है; अलगाव, मुक्ति और वैराग्य है।

66 · जैसे योद्धा राजा के भोजन से पोषित होता है, वैसे ही शत्रु योद्धा से लड़ने के लिए दहाड़ता है, हे वीर! कृपया वहाँ जाओ, मेरे पास पहले यह नहीं था, अर्थात्: (किसी चीज़ से लड़ने के लिए) लड़ना।

“राजा के भोजन से पोषित योद्धा”: “योद्धा,” योद्धा, योद्धा-अभिनेता, डरपोक नहीं, भयभीत नहीं, भयभीत नहीं, और भागने वाला नहीं। “राजा के भोजन से पोषित,” राजा के भोजन से पोषित, राजा के कोमल भोजन से पाला-पोसा और विकसित होता है।

“शत्रु योद्धा को पाने के लिए दहाड़ना”: दहाड़ने वाला (गरज की तरह), चिल्लाने वाला, दहाड़ने वाला आता है, पहुँचता है, (के पास) शत्रु योद्धा, शत्रु, प्रतिद्वंद्वी का दांव, लाभार्थी, आशावान, उत्साही, याचक।

“हे वीर (सूरा - यह पसूरा का संक्षिप्त रूप भी हो सकता है)! कृपया वहाँ जाइए”: कृपया आक्रमण कीजिए, चलिए, दौड़िए और उस दुष्ट की ओर बढ़िए। वह आपका शत्रु योद्धा, दुश्मन और प्रतिद्वंद्वी है।

“(मेरे पास) पहले यह नहीं था, यानी: लड़ने की क्षमता”: पहले, बोधि वृक्ष के नीचे, शत्रुतापूर्ण, विरोधी, शत्रु द्वारा उत्पन्न सभी प्रदूषण, यह नहीं था, अस्तित्व में नहीं था, ज्ञात नहीं था, खोजा नहीं गया था, काट दिया गया था, अलग कर दिया गया था, शांत कर दिया गया था, रोक दिया गया था, उत्पन्न नहीं हो सकता था, ज्ञान की अग्नि से जल गया था। “अर्थात: लड़ने की क्षमता,” अर्थात्, लड़ने के लिए, झगड़े के लिए, बहस करने के लिए...

67 · जब वे इस दृष्टिकोण पर महारत हासिल कर लेते हैं, तो वे तर्क देते हैं, वे कहते हैं: "यह सच है," कृपया उन्हें बताएं कि जब बहस उठती है, तो यहाँ कोई शत्रुतापूर्ण अभिनेता नहीं हैं।

“वे इसे पूरी तरह से सीख लेने के बाद बहस करते हैं”: बासठ बुरी धारणाओं में से किसी एक बुरी धारणा को अपनाने, उस पर अड़े रहने और उसे पकड़ लेने के बाद, वे बहस करते हैं, झगड़ते हैं, ..., : “तुम इस धर्म और उस धर्म को नहीं जानते, मैं इस धर्म और उस धर्म को जानता हूँ; तुम धर्म को जानते हो, धर्म क्या है! तुम दुष्ट हो, मैं धर्मी हूँ; मेरा धर्म सुसंगत है, तुम्हारा असंगत है: पहले क्या कहना चाहिए और बाद में क्या कहना चाहिए (उलट); जिस चीज़ में तुम लंबे समय से निपुण रहे हो, वह उलट गई है; तुम्हारा सिद्धांत (मेरे) सिद्धांत से टूट गया है, अपने सिद्धांत को बचाओ; तुम समझौता कर चुके हो, कृपया इसे अलग कर दो, यदि तुम कर सकते हो।”

वे कहते हैं: 'यह सच है': "दुनिया स्थिर है, यह सच है, और बाकी सब व्यर्थ है।" वे कहते हैं, बताते हैं, बात करते हैं, समझाते हैं, और कहते हैं कि दुनिया बहुत स्थिर है। ...(कुछ अंश हटा दिया गया)।

“कृपया उन्हें बता दें कि जब बहस छिड़ती है, तो यहाँ कोई शत्रुतापूर्ण पक्षकार नहीं होते”: कृपया उन लोगों को बता दें जिनके विचार बुरे हैं: बहस करने वाले, तर्कों से बहस करने वाले, ...(अस्पष्ट), जो आपके शत्रु योद्धा, दुश्मन, विरोधी हैं। “कृपया उन्हें बता दें कि जब बहस छिड़ती है, तो यहाँ कोई शत्रुतापूर्ण पक्षकार नहीं होते।” जब बहस छिड़ती है, जन्म लेती है, घटित होती है और प्रकट होती है, तो शत्रुतापूर्ण पक्षकार, विरोधी पक्षकार और शत्रु पक्षकार झगड़ा करेंगे, बहस करेंगे, ... जो अस्तित्व में नहीं हैं, ज्ञात नहीं हैं, खोजे नहीं गए हैं, और अलग-थलग कर दिए गए हैं..., ज्ञान की अग्नि से झुलस गए हैं।

68 · लेकिन सेना छोड़ने के बाद, जो विरोधियों का सामना नहीं करते, पसूरा! उनमें आपको क्या मिल सकता है? जो यहाँ किसी को भी सर्वोच्च नहीं मानते।

लेकिन जब वे सेना छोड़ देते हैं”: “सेना को दानव सेना कहा जाता है, ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

जब सभी दानव सेना और सभी शत्रुतापूर्ण अशुद्धियाँ चारों पवित्र मार्गों द्वारा पराजित, नष्ट, विघटित और तितर-बितर हो जाती हैं, तब सेना से विदा होना कहलाता है। वे अरहंत हैं, वे जिन्होंने अपने सभी कष्टों को समाप्त कर दिया है। वे जीवित रहते हैं, कार्य करते हैं, आगे बढ़ते हैं, रक्षा करते हैं और अस्तित्व बनाए रखते हैं।

“जो लोग विचारों को नहीं देखते और उनका विरोध नहीं करते”: उनके लिए बासठ बुरे विचार काट दिए गए हैं, अलग कर दिए गए हैं, ... वे विरोध नहीं देखते, खंडन नहीं करते, त्याग नहीं देते, पलटवार नहीं करते, (विचारों के) प्रेक्षकों को पीछे नहीं हटाते।

“पसुरा! तुम उनसे क्या पा सकते हो?”: उन अरहंतों से, जिन्होंने अपनी सारी परेशानियाँ टल ली हैं, तुम किस प्रकार के शत्रु योद्धाओं, विरोधियों, दुश्मनों को पा सकते हो?

“जो लोग यहाँ किसी भी चीज़ को सर्वोच्च नहीं मानते”: जो अरहंत हैं और जिन्होंने अपने सारे कष्ट समाप्त कर दिए हैं, उनके लिए “यही सर्वोच्च है, प्रथम है, सबसे विजयी है, सर्वश्रेष्ठ है, शीर्ष है,” पकड़ रखने वाले, आसक्त, थामे हुए, लिए हुए, माने हुए, वे नहीं मानते, उनका अस्तित्व नहीं है, वे नहीं जानते, वे खोजे नहीं गए हैं, वे अलग हो गए हैं, विच्छेदित हो गए हैं, ...

69 · आप फिर से चिंतन में आ रहे हैं, आप केवल अपने हृदय की इच्छा से बुराई देखते हैं, जब आप शुद्ध व्यक्ति से मिलते हैं, तो आप निश्चित रूप से आगे नहीं बढ़ पाएंगे।

“तुम फिर से चिंतन में आ रहे हो”: “फिर से,” वाक्यों का सिलसिला जारी है; ..., जिसका अर्थ है “फिर से”। “चिंतन में आना,” मनन करना, विचार करना, चिंतन करना: क्या मैं विजेता बनूँगा? क्या मैं निराश हो जाऊँगा? ...(अधूरा)। चिंतन करने, विचार करने, मनन करने और मुझ तक पहुँचने, मेरे पास आने, मेरे पास आने और मुझसे मिलने का यह तरीका।

“केवल हृदय की इच्छा से उत्पन्न बुरे विचार”: हृदय, मन, हृदय, श्वेत (शुद्ध), अर्थ, आशय, चेतना, ज्ञान और संबंधित चेतना क्षेत्र: “संसार स्थिर है,” या “संसार अत्यंत स्थिर है”... (छोड़ा गया) या “मृत्यु के बाद तथागत न तो विद्यमान होते हैं और न ही विद्यमान नहीं होते।”

“जब आप शुद्ध व्यक्ति से मिलते हैं, तो निश्चित रूप से आपके लिए आगे बढ़ना असंभव हो जाएगा”: शुद्धि को ज्ञान कहा जाता है, जो कि ज्ञान है, ...(अधूरा भाग, पिछले भाग देखें)। शुद्धि को ज्ञान क्यों कहा जाता है? .... भगवान बुद्ध पूर्णतः इन धर्मों से परिपूर्ण हैं, जो शुद्ध किए जा सकते हैं, इसलिए भगवान बुद्ध ही शुद्ध हैं, वे ही लोभ को दूर करते हैं, वे ही बुराई को दूर करते हैं, वे ही अशुद्धता को दूर करते हैं, वे ही ऊष्मा को दूर करते हैं।

“शुद्ध व्यक्ति से मिलने पर तुम निश्चित रूप से आगे नहीं बढ़ पाओगे”: पसूर (मार्गदर्शक) के लिए शुद्ध व्यक्ति, बुद्ध और भगवान से मिलना, मुलाकात करना, विवाद के बाद चर्चा करना, आपस में बातचीत करना और चर्चा में शामिल होना असंभव है। इसका कारण क्या है? प्रदर्शनकारी पसूर हीन, नीच, तुच्छ, तुच्छ इरादे वाला और महत्वहीन है, जबकि भगवान प्रथम, सबसे विजयी, श्रेष्ठ, सर्वोच्च, सर्वोच्च और सर्वोच्च हैं। उदाहरण के लिए, एक खरगोश के लिए नशे में धुत हाथी से मिलना और मिलने के बाद प्रतिस्पर्धा करना असंभव है; उदाहरण के लिए, एक सियार के लिए शेर से प्रतिस्पर्धा करना, पशु राजा से मिलना और मिलने के बाद प्रतिस्पर्धा करना असंभव है; ...एक छोटा, दूध पीने वाला बछड़ा बैल से नहीं मिल सकता...; ...एक कौआ सुनहरे पंखों वाले पक्षी से नहीं मिल सकता...; ...एक बहिष्कृत व्यक्ति राजा से नहीं मिल सकता...; ...एक कीचड़ का भूत इंदा से नहीं मिल सकता...; ठीक इसी प्रकार, प्रदर्शनकारी पसूरा के लिए प्रतियोगिता के बाद मिलना, विचार-विमर्श करना, बातचीत करना और शुद्धिकृत व्यक्ति, बुद्ध और भगवान से चर्चा करना असंभव है। इसका कारण क्या है? प्रदर्शनकारी पसूरा ही निम्न कोटि का है, ... ज्ञान से लाभान्वित होने वाले, ज्ञान को समझने वाले, चतुर, ज्ञान का विकास करने वाले, निर्भीक सिद्ध होने वाले, चार निर्भीकों को प्राप्त करने वाले, दस शक्तियों को धारण करने वाले, बैल के समान, सिंह के समान, गुणी, अपार धनवान, असीम ज्ञान रखने वाले, असीम प्रतिभा रखने वाले, असीम प्रतिष्ठा रखने वाले, धनी, धनवान, मार्गदर्शक, मध्यस्थ, सांत्वना देने वाले, सूचना देने वाले, विचार करने वाले, दृष्टि प्रदान करने वाले, स्पष्ट करने वाले, भगवान वास्तव में अजन्मे मार्ग के संस्थापक, अजन्मे मार्ग के निर्माता, अघोषित उपदेशक, मार्ग के ज्ञाता हैं; इसके अतिरिक्त, उनके शिष्य वर्तमान में मार्ग के सानिध्य में रहते हैं, और भविष्य में भी इसे धारण करने वाले होंगे।

भगवान बुद्ध वास्तव में ज्ञाता और द्रष्टा हैं, जो सब कुछ जानते और देखते हैं; वे जन्म से ही नेत्रों से युक्त, बुद्धि से युक्त, धर्म से युक्त और ब्रह्म से युक्त हैं; वे धर्म के व्याख्याकार और संवर्धक, अमर दाता, धर्म के राजा, तथागत हैं; ऐसा कोई नहीं है जिसे भगवान बुद्ध न जानते हों, न देखते हों, न अज्ञात हों, न साक्षी हों, न ही बुद्धि से स्पर्श करते हों; भूतकाल, भविष्यकाल और वर्तमान काल के सभी कर्म बुद्ध के समक्ष आते हैं। ज्ञान के क्षेत्र में,

कोई भी धर्म जिसे तर्क द्वारा निर्देशित किया जाना चाहिए, उसे जाना जा सकता है: चाहे वह स्वयं का धर्म हो या दूसरों का धर्म हो या दोनों, या वर्तमान धर्म हो या परलोक का धर्म हो या दोनों, या गहरा हो या गुप्त, या जिसका अनुमान लगाया जाना चाहिए या जिसे निर्धारित किया गया हो, या जो दोषरहित हो या प्रदूषण रहित हो, या स्पष्ट और शुद्ध हो या सर्वोच्च हित हो, ये सभी बुद्ध के ज्ञान में समाहित हैं।

सभी शारीरिक कर्म बुद्ध और भगवान के ज्ञान में स्थानांतरित हो जाते हैं; सभी भाषाई कर्म...; सभी मानसिक कर्म...; बुद्ध और भगवान का भूतकाल का ज्ञान अवरोध रहित है; भविष्य...; वर्तमान...; जो कुछ भी अनुमान लगाने के लिए निर्देशित किया जाना चाहिए वह ज्ञान की पहुँच है; सभी ज्ञान अनुमान लगाने के लिए निर्देशित किया जाता है, और जो कुछ भी अनुमान लगाने के लिए निर्देशित किया जाना चाहिए वह परम ज्ञान है; परम ज्ञान वह है जो अनुमान लगाने के लिए निर्देशित किया जाता है, और अनुमान लगाने के लिए निर्देशित किए गए ज्ञान से परे कोई ज्ञान नहीं है; निर्देशित और अनुमानित ज्ञान से परे जाने का कोई मार्ग नहीं है। ये धर्म परस्पर सीमित रहते हैं, जैसे दो बक्से, जिनके ढक्कन पूरी तरह से एक दूसरे के संपर्क में हैं; निचला ढक्कन ऊपरी ढक्कन के ऊपर नहीं जाता है, और ऊपरी ढक्कन निचले ढक्कन के ऊपर नहीं जाता है; एक दूसरे से सीमित। (इसी प्रकार,) जो कुछ भी निर्देशित किया जाना चाहिए... (छोड़ा गया); ये धर्म परस्पर सीमित रहते हैं।

बुद्ध और भगवान बुद्ध का ज्ञान समस्त धम्म में व्याप्त है, समस्त धम्म बुद्ध ही हैं, भगवान बुद्ध का ध्येय है, आशा है ध्येय है, आशय है ध्येय है, मन का जागरण है, बुद्ध और भगवान बुद्ध का ज्ञान समस्त जीवों में व्याप्त है, भगवान बुद्ध समस्त जीवों के आशयों को जानते हैं, कष्टों की संभावित प्रवृत्ति को जानते हैं, व्यवहार को जानते हैं, समाधान को जानते हैं, कम धूल वाले और अधिक धूल वाले जीवों को जानते हैं; जड़ से जुड़े और जड़ से मंद जड़ वाले जीवों को जानते हैं, अच्छे कर्मों को जानते हैं, बुरे कर्मों को जानते हैं, और प्राणियों की शिक्षाप्रदता और अशिक्षाप्रदता को जानते हैं; सक्षम और अक्षम सभी चेतन प्राणियों को जानते हैं, जिनमें स्वर्ग, राक्षस और ब्राह्मण जगत शामिल हैं; समन, ब्राह्मण, स्वर्ग और मनुष्य की पीढ़ियाँ सभी बुद्ध के ज्ञान में समाहित हैं।

जैसे सभी मछलियाँ, कछुए और यहाँ तक कि बड़ी-बड़ी मछलियाँ निगलने वाली नावें समुद्र में घूमती हैं, वैसे ही स्वर्ग, राक्षस और ब्राह्मण सहित पूरा संसार बुद्ध के ज्ञान में समाहित है; समण, ब्राह्मण, स्वर्ग और मनुष्य सहित सभी पीढ़ियाँ बुद्ध के ज्ञान में समाहित हैं। जैसे कोई पक्षी और यहाँ तक कि सुनहरे पंखों वाले पक्षी भी आकाश में चक्कर लगाते हैं। उसी प्रकार, सारिपुत्त के समान ज्ञान रखने वाले भी बुद्ध के ज्ञान में समाहित हैं। बुद्ध का ज्ञान सर्वव्यापी है और स्वर्ग और मनुष्य (लोकों) से परे है।

वे बुद्धिमान क्षत्रिय, बुद्धिमान ब्राह्मण, बुद्धिमान गृहस्थ, बुद्धिमान समन, बुद्धिमान विरोधी, और दुष्ट विचारों को बुद्धिमानी से प्रकट करने वाले उग्र विद्रोही, तथागत से गुप्त प्रश्न पूछने के लिए बाद में समस्याएँ तैयार करते हैं; भगवान बुद्ध ने उन प्रश्नों पर विचार-विमर्श किया और तर्क सहित उत्तर दिए, (और) उन्होंने उन्हें त्याग दिया और भगवान बुद्ध के शिष्य बन गए। उस समय, भगवान बुद्ध ज्ञान से प्रकाशमान थे। [भजन संहिता 21]

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> निद्देसा >> निद्देसा 1.9

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

<<<< पिछला अगला >>>>

9. मागंदिया
70 · तन्हा, आरती और रागा को देखने के बाद, मेरे मन में कामवासना नहीं रही, (तो) यह मूत्र और मल से भरा हुआ क्यों? मैं इसे अपने पैरों से छूना भी नहीं चाहता।

“रामा की पुत्रियों तन्हा, आरती और रागा (जिनके नाम का अर्थ 'प्यास, घृणा और आसक्ति' है) को देखने के बाद, मेरे मन में कामवासना की कोई इच्छा नहीं रही”: “राक्षस की पुत्रियों तन्हा, आरती और रागा को देखने के बाद, मेरे मन में कामवासना, लोभ या प्रेम की कोई इच्छा नहीं रही।”

"(तो) मैं इसे क्यों चाहूँ, जो मूत्र और मल से भरा है? मैं इसे पैरों से छूना भी नहीं चाहता": मैं इसे क्यों चाहूँ जो मूत्र से भरा है, मल से भरा है, कफ से भरा है, रक्त से भरा है, हड्डियों और नसों से जुड़ा है, मांस और रक्त से लिपटा है, रक्त वाहिकाओं से ढका है, त्वचा से ढका है, जिसमें एक से अधिक छेद हैं जिनसे रिसाव और मवाद टपकता है, कीड़े-मकोड़े और हर तरह की लार और गंदगी से भरा है; जिसे मैं अपने पैरों से छूना भी नहीं चाहता, साथ रहना या सहवास करना तो दूर की बात है?

71 · यदि आप इस प्रकार का खजाना नहीं चाहते हैं, तो एक ऐसी महिला जिसे कई लोगों के राजा चाहते हैं, आप जीवन, अस्तित्व और पुनर्जन्म के बारे में किस प्रकार के विचार, उपदेश और निषेध सोचते हैं?

(स्रोत के आधार पर, निम्नलिखित व्याख्या या तो इस छंद के नीचे, या पिछले छंद के नीचे दी गई है।)

"यह अविश्वसनीय है: जो स्वर्ग की इच्छा रखते हैं वे पृथ्वी की इच्छाओं को नहीं चाहेंगे, या जो पृथ्वी की इच्छाओं को रखते हैं वे स्वर्ग की इच्छाओं को नहीं चाहेंगे; जो कोई भी दोनों में से किसी को नहीं चाहता, न चाहता है, न प्रार्थना करता है, आपका क्या विचार है, और आप किस विचार को मानते हैं?" (मागंदिया) ने पूछा।

72 · [भगवान: "मागंदिया"] "मैं कहता हूँ कि यह (दृष्टिकोण)" उसके लिए विद्यमान नहीं है, और धम्मों में चुने जाने के बाद इसे कसकर पकड़ लिया गया था, लेकिन जब दृष्टियों में देखने वाले व्यक्ति ने इसे (दृष्टिकोण) नहीं उठाया, तो वह भीतर मौन देखता है।

"मैं कहता हूँ कि यह उसके लिए अस्तित्व में नहीं है": "मैं यह कहता हूँ," मैंने यह कहा; मैंने ऐसा कहा; मैंने इतना कहा; मैंने कहा कि यह इस सीमा में है; मैंने यह बुरा विचार व्यक्त किया: "संसार शाश्वत है... (छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)।" "यह उसके लिए अस्तित्व में नहीं है," यह अस्तित्व में नहीं है। "मैंने कहा कि इस सीमा में" उसके लिए अस्तित्व में नहीं है।

भगवान बुद्ध ने ब्राह्मण को उनके नाम से "मागंदिया" कहकर पुकारा। "भगवान बुद्ध," एक आदरपूर्ण पर्यायवाची शब्द है... (यह भाग हटा दिया गया है, पिछले भाग देखें)।

"धर्मों में चुने जाने के बाद, इसे दृढ़ता से पकड़ लिया जाता है": "धर्मों में," बासठ बुरे विचारों में। "चुने जाने के बाद," ...(छोड़ दिया गया)। "यह सत्य है," ...; पकड़े जाने, आसक्त होने, लिए जाने, विश्वास किए जाने पर, वह नहीं है, अस्तित्व में नहीं है, ज्ञात नहीं है, ...।

लेकिन जो विचारों में कमियां देखता है, वह उन्हें नहीं अपनाता: जब मैं विचारों में कमियां देखता हूं, तो मैं उस विचार को पकड़ता नहीं, उससे चिपका नहीं रहता, या मुझे उसे पकड़ना नहीं चाहिए, उससे चिपका नहीं रहना चाहिए, उस पर अड़े नहीं रहना चाहिए।

या फिर, "संसार शाश्वत है, यही वास्तविकता है, और बाकी सब व्यर्थ है।" यह बुराई, जंगल, रेगिस्तान, विकृत और अस्थिर विचार हैं, जो पीड़ा और चिड़चिड़ाहट से भरे हैं। इसमें निराशा है, इसमें पीड़ा है, और यह घृणा, लोभ, शांति, मौन, ज्ञान, आत्मज्ञान और निर्वाण की ओर नहीं ले जाता। जब मैं विचारों में दोष देखता हूँ, तो मैं उन्हें पकड़ता नहीं, उन पर मोहित नहीं होता...

या, "दुनिया बहुत स्थिर है..." (छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

या फिर, "जो लोग इस विचार को मानते हैं, जो इस मार्ग का अनुसरण करते हैं, और जो इस मार्ग में रुचि रखते हैं, उनका परलोक इस प्रकार का होगा।" जब मुझे विचारों में कमियां दिखती हैं, तो मैं उन पर विश्वास नहीं करता...

या फिर, "यह दृष्टिकोण नरक-उन्मुख, पशु-उन्मुख और बुराई-उन्मुख है।" जब मैं विभिन्न दृष्टिकोणों में कमियाँ देखता हूँ, तो मैं उन्हें नहीं मानता...

या, "यह दृष्टिकोण क्षणभंगुर, उत्पादक और परिस्थितियों से ग्रस्त है। यह विलुप्ति, विघटन, लुप्त होना और अंत है।" जब मैं विभिन्न अंतर्दृष्टियों में कमियाँ देखता हूँ, तो मैं उन्हें स्वीकार नहीं करता...

"वह अपने भीतर की शांति को देखता है": अपने भीतर की शांति, अपने भीतर के लोभ की शांति है; घृणा की शांति; अज्ञान की शांति; क्रोध..., द्वेष... (छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)...; सब शांत, स्थिर, शांत होना, शीतलता, समाप्ति और स्थिरता। जब नहीं, जब सरल; जब चयन करते समय; जब बाध्यकारी रूप से चयन करते समय; जब मापते समय; जब निर्णय करते समय; जब भेद करते समय; जब स्पष्ट करते समय: "सब कुछ अनित्य है" भेद करते समय..., "सभी कर्म दुखदायी हैं"... "सभी धर्म निस्वार्थ हैं"..., "धर्मों का कोई भी संग्रह नष्ट हो जाता है"...। "देखना," देखना, भेदना।

73 · [इस प्रकार, मागंदिया:] जहाँ कहीं भी (दृष्टिकोण का) निर्णय हो, मुनि! आप वास्तव में उन्हें उठाकर यह नहीं कहते कि बुद्धिमानों द्वारा "अपने भीतर मौन" के सत्य की घोषणा कैसे की जाती है?

"सभी स्थिर विचारों का निर्णय": निर्णय को बासठ बुरे विचारों का निर्णय कहा जाता है। "स्थिर विचार," जो निर्मित, स्थिर, सृजित और सह-अस्तित्व में हैं, या अनित्य, सक्रिय और सशर्त हैं, वे विनाश का धर्म, अपव्यय का तरीका, लुप्त होने का तरीका, विलुप्त होने का तरीका और परिवर्तन का तरीका हैं।

"इस प्रकार मागंदिया": "इस प्रकार," वाक्यों का निरंतरता, ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)। "मागंदिया," नाम, ...।

"मुनि! आप सचमुच उन विचारों को उठाकर यह नहीं कह सकते कि 'अपने भीतर की शांति' ही सत्य है": "वे" बासठ बुरे विचार हैं। "मुनि," .... "उठाने के बाद," आप कहते हैं: "जब मैं विचारों में विपत्तियाँ देखता हूँ, तो मैं उन्हें ग्रहण नहीं करूँगा..." और आप कहते हैं: "अपने भीतर की शांति।" "यह सत्य," सर्वोच्च सत्य है।

"बुद्धिमान व्यक्ति द्वारा इसका प्रचार कैसे किया जाता है?": "कैसे?", संदेह का प्रश्न, ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)। "बुद्धिमान व्यक्ति" का अर्थ है बुद्धिमान व्यक्ति, ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)। "घोषित किया जाना," अनुभव किया जाना, घोषित किया जाना, समझाया जाना, सिखाया जाना, बताया जाना, स्थापित किया जाना, प्रकट किया जाना, विश्लेषण किया जाना, स्पष्ट किया जाना, समझाया जाना।

74 · [भगवान: "मागंदिया!"] न तो देखने (दृष्टिकोण) पर आधारित, न सुनने (सुनने) पर आधारित, न ही ज्ञान पर आधारित, न ही यह कहा जाता है कि नियमों और निषेधों का पालन करना शुद्ध है, न ही अज्ञान (दृष्टिकोण) के कारण, न सुनने (ज्ञान की कमी), न नियमों, न निषेधों के कारण, बल्कि इन सब का त्याग करने और इन्हें न अपनाने के बाद, मौन रहने वाले इनके प्रति उत्सुक नहीं होंगे यदि वे इनसे आसक्त न रहें।

"न देखना, न सुनना, न ज्ञान": देखना शुद्ध, पवित्र और सर्व शुद्ध है; पृथक, मुक्त और स्वतंत्र होने के लिए, वह कुछ कहता नहीं, बोलता नहीं, बात नहीं करता, व्याख्या नहीं करता या कुछ कहता नहीं; सुनी हुई बात को शुद्ध मानते हुए, ...; ज्ञान को शुद्ध मानते हुए, ...।

"मागंदिया," .... "धन्य पुरुष," ....

"यह भी नहीं कहा गया है कि नियमों और निषेधों का पालन करना पवित्रता है": नियमों को पवित्र, शुद्ध मानना, ...; निषेधों को पवित्र मानना, ...।

"यह इसलिए भी नहीं है कि कुछ न देखा जाए, कुछ न सुना जाए, कुछ न जाना जाए, नियमों का अभाव हो, निषेध न हों": देखना वांछनीय है, दस बातें सही दृष्टि हैं: उदारता है, दान है, भेंट हैं, अच्छे और बुरे कर्मों के फल और पुरस्कार हैं, यह संसार है, अन्य लोक हैं, माता-पिता हैं, और जैविक जीवन है, संसार में धर्मात्मा समण और ब्राह्मण हैं जो अपनी बुद्धिमत्ता का प्रमाण देते हैं। सुनना भी वांछनीय है: परलोक की वाणी, सूत्र, गेय्या, वेय्याकरण, गाथा, उदाना, इतिवुत्तक, जातक, अब्भूत धम्म, वेदल्ल। ज्ञान भी वांछनीय है: कर्म ज्ञान, सच्चे अनुसरण का ज्ञान, अलौकिक ज्ञान, आदि। नियम भी वांछनीय हैं: पातिमोक्ख का आत्म-संयम। इन बातों पर भी रोक लगनी चाहिए: जंगल में रहना, अक्सर भोजन के लिए भीख मांगना, गोबर साफ करने वाले कपड़े पहनना, केवल तीन कपड़े पहनना, दूसरी बार भीख मांगना, खाने के बाद कुछ न खाना, अक्सर बैठे रहना (लेटना नहीं), कहीं भी रहना।

"यह अज्ञान, अनसुनेपन, अज्ञानता, उपदेशहीनता, निषेधहीनता की स्थिति के कारण भी नहीं है": केवल सही दृष्टि से ही नहीं; केवल सुनने से ही नहीं; केवल ज्ञान से ही नहीं; केवल उपदेशों से ही नहीं, यह केवल अपने भीतर की शांति को प्राप्त करने से रोकना या इन धर्मों के द्वारा अपने भीतर की शांति को प्राप्त करना ही नहीं है, बल्कि इन धर्मों को साधन बनाकर अपने भीतर की शांति को प्राप्त करना, उस तक पहुँचना, उसे पाना और उसकी गवाही देना है।

लेकिन इन्हें त्यागने और न उठाने के बाद": "ये," काले धर्म के नाश से उत्पन्न होते हैं, इनके त्याग की इच्छा की जा सकती है; अच्छे धर्म के तीनों लोकों में ऐसी कोई समतुल्य अवस्था नहीं है जिसकी इच्छा की जा सके। जब काले धर्म का नाश हो जाता है और उसकी जड़ें कट जाती हैं, ठीक वैसे ही जैसे बिना जड़ों का ताड़ का पेड़ भविष्य में अस्तित्वहीन, निर्जीव हो जाता है, और तीनों लोकों में अन्य के समान अवस्था में होता है, तब वह न तो इन्हें धारण करता है, न पकड़ता है, न इनसे आसक्त रहता है। या, (इन्हें) न धारण करना चाहिए, न पकड़ना चाहिए, न इनसे आसक्त रहना चाहिए। जब प्रेम, दृष्टि और अहंकार की प्यास कट जाती है, तो जड़ कट जाती है, ठीक वैसे ही जैसे बिना जड़ों का ताड़ का पेड़, वह अस्तित्वहीन हो जाता है, भविष्य में बढ़ने वाला नहीं। यह स्थिति भी ऐसी है कि वह न तो इन्हें उठाता है, न पकड़ता है, न इनसे आसक्त रहता है।

जब पुण्य और पुण्य कर्म तथा अचल कर्म काट दिए जाते हैं, तो जड़ें कट जाती हैं, ठीक वैसे ही जैसे बिना जड़ों वाला ताड़ का पेड़ भविष्य के लिए अस्तित्वहीन, अजन्मा हो जाता है, इस स्थिति में भी वह किसी चीज को पकड़ता नहीं है, जकड़ता नहीं है या उससे चिपका नहीं रहता है।

"मौन व्यक्ति आसक्ति छोड़ने के बाद अस्तित्व के लिए तरसता नहीं है": "मौन व्यक्ति," "लालच शांत होने की अवस्था" मौन अवस्था है; "घृणा शांत होने की अवस्था" मौन अवस्था है; "अज्ञान शांत होने की अवस्था" मौन अवस्था है; क्रोध..., आक्रोश..., (छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें), शांत अवस्था, स्थिर अवस्था, बुझने की अवस्था, शीतल अवस्था, विदा अवस्था और रुकी हुई अवस्था मौन, रुकी हुई, शांत, शीतल और रुकी हुई अवस्थाएँ हैं।

"निर्भरता न रखने के बाद," दो प्रकार की निर्भरता होती है: लालसा की निर्भरता और दृष्टि की निर्भरता...(विलंबित, पिछले खंड देखें)। त्याग करने के बाद, जो प्रेम की प्यास तोड़ देता है, मन के त्याग के बाद, जो आँखों से आसक्ति नहीं रखता; ...कानों से; ...नाक, जीभ, शरीर, सभी रूपों, सभी ध्वनियों, गंधों, स्वादों, स्पर्शों, धर्मों, घर, समूह, ...(विलंबित, पिछले खंड देखें)..., सभी धर्म जो देखे, सुने, महसूस किए और समझे जा सकते हैं, उनका पालन नहीं किया जाता; पकड़ न रखने के बाद, पकड़ न रखने के बाद, आसक्ति न रखने के बाद। "मैं वहाँ नहीं रहना चाहता," मैं उसे नहीं चाहता; मैं रूप धारण नहीं करना चाहता; वह निराकारता नहीं चाहता, वह आशा नहीं करेगा; वह प्रार्थना नहीं करेगा।

75 · [इस प्रकार, मागंदिया:] यदि यह सत्य है कि यह देखने, सुनने, ज्ञान से, न ही नियमों और निषेधों के बल पर, न ही न देखने, न सुनने, न ज्ञान से, न ही नियमों या निषेधों के अभाव से शुद्ध नहीं होता, तो मुझे लगता है कि यह भ्रामक विधि है; कुछ लोग (दृष्टिकोण) देखकर शुद्धता की ओर लौटते हैं।

"यदि यह सच है कि यह देखने पर आधारित नहीं है, जो सुना गया है उस पर आधारित नहीं है, ज्ञान पर आधारित नहीं है": शुद्ध के रूप में देखना, ...(छोड़ा गया)।

"इस मागंदिया की तरह": ....

"और न ही यह कहा जाता है कि नियमों और निषेधों का पालन करना पवित्रता है":...

"न तो कुछ न देखने, न कुछ सुनने, न कुछ जानने के कारण, न ही नियमों के अभाव में, न ही निषेधों के अभाव में":...

"मुझे लगता है कि यह भ्रम का तरीका (धम्म, शिक्षा) है": यह भ्रम, मूर्खता, अज्ञानता और छल (धोखे) का तुम्हारा तरीका है। मुझे ऐसा लगता है; मुझे ऐसा पता है; मैं ऐसा नहीं करता; मुझे यह पक्का पता है; मुझे यह अच्छी तरह से पता है।

"कुछ लोग दृष्टियों के माध्यम से पवित्रता की ओर लौटते हैं": कुछ समण और ब्राह्मण शुद्ध दृष्टियों को शुद्ध, स्वच्छ और सर्वस्व शुद्ध रूप में देखने लगते हैं; वैराग्य, मुक्ति, विरक्ति: कुछ समण और ब्राह्मण "संसार स्थिर है, यही सत्य है, और बाकी सब व्यर्थ हैं" की ओर लौटते हैं। दृष्टि शुद्ध, स्वच्छ, सर्वव्यापी रूप से शुद्ध है...; "संसार अत्यंत स्थिर है..."...

76 · [भगवान: "मागंदिया!"] इसे देखकर बार-बार प्रश्न करने के बाद (मागंदिया का अपना दृष्टिकोण), और इसे पकड़कर अज्ञान में आने के बाद, तुम यहाँ से एक सूक्ष्म विचार भी नहीं देख पाते, इसलिए तुम इसे भ्रमित समझते हो।

"देखने और बार-बार प्रश्न पूछने के बाद": मागंदीय ब्राह्मण ने देखने और प्रश्न पूछने के बाद जोर दिया; आसंजन पर जोर देने के बाद, उन्होंने आसंजन के बारे में पूछा; बंधन पर भरोसा करने के बाद, उन्होंने बंधन के बारे में पूछताछ की; और अवरोध उत्पन्न करने के बाद, वे अवरोधों के बारे में पूछताछ कर रहे थे। बार-बार प्रश्न पूछते रहे।

"मागंदिया," ....

"दृढ़ता से पकड़े रहने पर अज्ञानता की ओर जाना": जब भी आप उस विचार को पकड़े रहते हैं, उससे चिपके रहते हैं, उसे थामे रहते हैं, उस पर विश्वास करते हैं और उसे मानते हैं, तो आप अपने विचार के साथ मूर्ख, भ्रमित और अज्ञानी हो जाएंगे; मूर्खता की ओर बढ़ेंगे, भ्रम की ओर बढ़ेंगे, उलझन में पड़ जाएंगे, भ्रम में कूद पड़ेंगे।

"परन्तु यहाँ से सूक्ष्म विचार दिखाई नहीं देते": यहाँ से, अपने भीतर की शांति से, या मार्ग से, या धम्म की शिक्षाओं से, उसे उचित विचार प्राप्त नहीं हुए, उत्पत्ति के विचार, घटनाओं के विचार, कारणों के विचार, यह सोचते हुए कि "ज्ञान कहाँ से आता है?" यही कारण है कि वह यहाँ से सूक्ष्म विचार नहीं देख पाता। या, "उसे अनित्यता या अनित्यता का विचार प्राप्त नहीं होता; दुख या विस्मृति का विचार; अनात्महीनता या अनात्महीनता का विचार; केवल उत्पन्न होने की इच्छा या केवल ज्ञान, ज्ञान कहाँ से आता है?"

"इसलिए आप इसे भ्रामक समझते हैं": "इसलिए," ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें), को भ्रम, मूर्खता, अज्ञानता, कुतर्क के रूप में स्थापित, देखा, परखा, विचार किया और समझा जाता है।

77 · बराबर या श्रेष्ठ या हीन, जो (यह) सोचता है वह इसके कारण बहस करेगा, जब तीनों प्रकारों में अविचल होता है, तो वह "बराबर, श्रेष्ठ" होने की परवाह नहीं करता।

"बराबर हो या श्रेष्ठ हो या हीन, वह जिसे भी (इनमें से एक) समझता है, उसी कारण से बहस करेगा": जो कोई भी यह सोचता है कि "मैं समान हूँ" या "मैं विजेता हूँ" या "मैं हीन हूँ," उस घमंड के साथ, जो उसे देखकर उससे झगड़ा, बहस, विवाद या असहमति जताता है: "तुम इस धर्म को नहीं जानते, ...(अधूरा भाग, पिछले भाग देखें)... ।"

जब वह इन तीनों प्रकारों में अविचलित रहता है, तो वह "समान और श्रेष्ठ" नहीं बनना चाहता: उसके लिए, ये तीनों गुण समाप्त हो जाते हैं, विच्छेदित हो जाते हैं, शांत हो जाते हैं, रुक जाते हैं, उत्पन्न होने में असमर्थ हो जाते हैं, और ज्ञान की अग्नि से झुलस जाते हैं; वह अविचलित रहता है, डगमगाता नहीं है, और एक अविचल व्यक्ति बन जाता है: "मैं समान हूँ" या "मैं विजेता हूँ" या "मैं हीन हूँ।" "वह नहीं बनना चाहता" का अर्थ है "मैं" नहीं बनना चाहता।

78 · ब्राह्मण "सत्य" क्यों कहेंगे, या वे किसके साथ "असत्य" पर बहस करेंगे? जब कोई बराबर या असमान नहीं है, तो वे किससे विवाद करेंगे?

"वह ब्राह्मण ऐसा क्यों कहेगा 'सत्य'": "ब्राह्मण," .... "ब्राह्मण ऐसा क्यों कहेगा 'सत्य': ब्राह्मण ऐसा क्यों कहता है, बताता है, बात करता है, समझाता है, कहता है: "संसार शाश्वत है, ...?"

“या वह ‘झूठे’ से किससे बहस करेगा?”: “मेरा सत्य है, और तुम्हारा व्यर्थ।” ब्राह्मण किस अहंकार से और किस व्यक्ति से झगड़ा, बहस, विवाद, उपेक्षा करेगा: “तुम इस धर्म को नहीं जानते...।”

जिसके लिए कोई 'समान' या 'असमान' नहीं है: "जो है...", जो एक व्यक्ति है, एक अरहंत है, जिसने कष्टों को समाप्त कर दिया है, जो "मैं समान हूँ" के रूप में अभिमानी नहीं है, "मैं विजेता हूँ" के रूप में अभिमानी नहीं है, और "मैं हीन हूँ" के रूप में अभिमानी नहीं है, वह अस्तित्व में नहीं है, ज्ञात नहीं है, खोजा नहीं गया है, विच्छेदित हो गया है, ..., ज्ञान की अग्नि से झुलस गया है।

“वह किससे मुकाबला करेगा”: वह किस व्यक्ति से, किस अहंकार और किन विचारों से मुकाबला कर पाएगा, झगड़ा करते हुए, बहस करते हुए, ...: “तुम इस धम्म को नहीं जानते, ...।”

79 · घर छोड़ने के बाद, वह बिना रहने की जगह के एक मुसाफिर बन गया, और मुनि ने गाँव में किसी से घनिष्ठ संबंध नहीं बनाए। जिनकी इच्छाएँ समाप्त हो चुकी हैं, जिनकी कोई अपेक्षा नहीं है, वे दूसरों के साथ वाद-विवाद में संलग्न नहीं होंगे।

एक बार, गृहस्वामी हलिदिकानी पूज्य महाकच्चाना से मिलने गए। वहाँ पहुँचकर उन्होंने पूज्य महाकच्चाना से कुछ प्रश्न पूछे और फिर एक तरफ बैठ गए। एक तरफ बैठने के बाद गृहस्वामी हलिदिकानी ने पूज्य महाकच्चाना से कहा [SN.22.3]:

"महाकच्चाना! भगवान बुद्ध द्वारा पूछे गए मागंदिया के इन आठ प्रश्नों के समूह में:

'अपना घर छोड़ने के बाद, वह बेघर होकर भटकने लगा। गाँव में मुनि ने किसी से घनिष्ठ संबंध नहीं बनाए। जिनकी इच्छाएँ समाप्त हो चुकी हैं, जिनकी कोई अपेक्षाएँ नहीं हैं, वे दूसरों के साथ वाद-विवाद में संलग्न नहीं होते।'

हे महाकच्चाना, महान सद्‌गुण! भगवान बुद्ध ने संक्षेप में जिन सिद्धांतों का उल्लेख किया है, उन्हें विस्तार से कैसे समझा जाए?

"गृहस्वामी! रूप का क्षेत्र चेतना का घर है, और जो लोग रूप के लोभ से बंधे होते हैं, उन्हें 'घर वाले यात्री' कहा जाता है; भावना चेतना का घर है, और जो लोग भावना के लोभ से बंधे होते हैं, उन्हें 'घर वाले यात्री' कहा जाता है, गृहस्वामी! यही चेतना का घर है।"

गृहस्वामी! बेघर कौन होता है? गृहस्वामी! इच्छा, लोभ, प्रसन्नता, प्यास, आसक्ति, प्रेम, हृदय आसक्ति, मोह, भौतिक जगत की परेशानियाँ: तथागत के लिए ये सब काट दिए गए हैं, जड़ काट दी गई है, ठीक वैसे ही जैसे ताड़ के पेड़ की जड़ काट दी जाती है, जिससे उसका अस्तित्व समाप्त हो जाता है और वह भविष्य में फिर कभी जन्म नहीं लेगा। इसलिए तथागत को 'बेघर' कहा जाता है। गृहस्वामी! भावना, बोध, चुनाव, चेतना, ये सब तथागत के लिए काट दिए गए हैं, इसलिए तथागत को 'बेघर' कहा जाता है। गृहस्वामी! यही बेघर व्यक्ति है।

घर मालिक! रहने की जगह वाला यात्री कौन है? घर मालिक! जो लोग रूप के निवास में विलीन और बंधे रहते हैं, उन्हें 'आवास वाले यात्री' कहा जाता है; ध्वनि में..., गंध में..., स्वाद में..., स्पर्श में..., 'आवास वाला यात्री,' घर मालिक! यही वह है जिसके पास रहने की जगह है।

गृहस्वामी! बिना स्थान के यात्री क्या है? गृहस्वामी! तथागत के लिए निवास स्थान के रूप में व्यभिचार और बंधन का नाश हो चुका है, इसलिए तथागत को 'बिना स्थान का यात्री' कहा जाता है। ध्वनि में ...(विलुप्त), ...धम्म निवास में, ...जो भविष्य में नहीं रहेगा। इसलिए तथागत को 'बिना स्थान का यात्री' कहा जाता है, गृहस्वामी! यह वह है जिसके पास रहने का कोई स्थान नहीं है।

गृहस्वामी! गाँव में घनिष्ठ मित्र कैसे बनते हैं? गृहस्वामी! यहाँ एक विशेष प्रकार का भिक्षु अपने परिवार के सदस्यों के साथ मेलजोल रखते हुए, सुख-दुख बाँटते हुए जीवन व्यतीत करता है: वे जब सुख में होते हैं, जब वे दुखी होते हैं, तब वह स्वयं उनके मामलों और दायित्वों में शामिल होता है, गृहस्वामी! इस प्रकार गाँव में घनिष्ठ मित्र बनते हैं।

गृहस्वामी! गाँव में घनिष्ठ मित्र कैसे नहीं हो सकते? गृहस्वामी! यहाँ एक विशेष प्रकार का भिक्षु अपने परिवार के सदस्यों से सुख-दुख में मेलजोल रखे बिना रहता है: न तो उनकी खुशी में, न ही उनके दुख में, वह स्वयं को उनके मामलों और दायित्वों में शामिल नहीं मानता, गृहस्वामी! इस प्रकार गाँव में कोई घनिष्ठ मित्र नहीं बन पाते।

गृहस्वामी! इच्छाएँ कैसे नहीं त्यागी जातीं? गृहस्वामी! यहाँ, एक विशेष प्रकार का भिक्षु लोभ, वासना, प्रेम, जुनून और इच्छा की प्यास से मुक्त नहीं है, गृहस्वामी! यही वह है जिसने सभी इच्छाओं का त्याग नहीं किया है।

गृहस्वामी! वह कौन है जिसने त्याग कर दिया है? गृहस्वामी! यहाँ, एक विशेष प्रकार का भिक्षु लोभ, प्रेम, इच्छा, चिड़चिड़ी और इच्छा की प्यास से विरक्त है, गृहस्वामी! यही वह है जिसने त्याग कर दिया है।

गृहस्वामी! आशावान कौन है? गृहस्वामी! यहाँ, एक विशेष प्रकार का भिक्षु इस प्रकार सोचता है: 'भविष्य में मेरा यह रूप होगा।' वह वहाँ आनंद की खोज करता है [एमएन.132]; 'ऐसी भावनाएँ होंगी..., ऐसे विचार होंगे..., ऐसे व्यवहार होंगे...' 'भविष्य में मुझे ऐसा ज्ञान प्राप्त होगा।' वह वहाँ आनंद की खोज कर रहा था। गृहस्वामी! यही आशावान है।

गृहस्वामी! वह कौन है जिसकी कोई अपेक्षा नहीं है? गृहस्वामी! यहाँ, एक विशेष प्रकार का भिक्षु इस प्रकार सोचता है: 'भविष्य में मेरा यही रूप होगा।' वह वहाँ आनंद की तलाश नहीं कर रहा है; वहाँ ऐसी भावनाएँ होंगी...। वह वहाँ आनंद की तलाश नहीं कर रहा है। गृहस्वामी! यही वह है जिसकी कोई अपेक्षा नहीं है।

गृहस्वामी! लोगों से बहस करने वाला वार्ताकार कौन होता है? गृहस्वामी! यहाँ, कोई इस तरह से बात कर रहा है: 'तुम्हें धम्म का ज्ञान नहीं है...(अधूरा अंश)।' गृहस्वामी! यही वह वार्ताकार है जो लोगों से बहस करता है।

गृहस्वामी! वह वार्ताकार कौन है जो दूसरों से बहस नहीं करता? गृहस्वामी! यहाँ, कोई इस तरह से बात करने वाला नहीं है: 'तुम्हें यह धम्म नहीं पता...' गृहस्वामी! यह वह वार्ताकार है जो दूसरों से बहस नहीं करता। इस प्रकार, गृहस्वामी! भगवान बुद्ध द्वारा मागंदिया में पूछे गए आठ प्रश्नों के समूहों में:

'अपना घर छोड़ने के बाद, वह बेघर होकर भटकने लगा। गाँव में मुनि ने किसी से घनिष्ठ संबंध नहीं बनाए। जिनकी इच्छाएँ समाप्त हो चुकी हैं, जिनकी कोई अपेक्षाएँ नहीं हैं, वे दूसरों के साथ वाद-विवाद में संलग्न नहीं होते।'

गृहस्वामी! भगवान बुद्ध ने संक्षेप में जो कहा है, उसके विस्तृत तर्क को इस प्रकार समझा जाना चाहिए।

80 · संसार में जो एकांत में रहते हैं, वे समर्थ होते हैं, और श्रेष्ठ पुरुष उन बातों को नहीं उठाते और कहते हैं, जैसे जल में खिलने वाला काँटेदार कमल, जो जल और कीचड़ से अछूता रहता है, उसी प्रकार मुनि मौन, लोभ रहित व्यक्ति हैं, और इच्छा और संसार से अछूते हैं।

"संसार में, जो दूर हैं वे ऐसा कर सकते हैं": उन लोगों से दूर, उन बुरी सोचों से दूर। उन लोगों से दूर जिन्होंने अपने शरीर से बुराई की है, जो खाली हो गए हैं, और जो अलग हो गए हैं; जिन्होंने शब्दों से बुराई की है..., इरादों से बुराई की है..., लालच से बुराई की है...। "कर सकते हैं," करने में सक्षम, जीने में, कार्य करने में, आगे बढ़ने में, रक्षा करने में, अस्तित्व में रहने में और जीवित रहने में। "संसार में," मानव जाति के संसार में।

"नेक जन (नाग; जिसका अर्थ हाथी भी होता है) उन बातों को बाद में नहीं दोहराएंगे": "नेक जन," "अपराध मत करो"; "मत जाओ"; "मत आओ"। नेक जन के लिए "अपराध न करना" का क्या अर्थ है? अपराधों को बुराई और अस्वास्थ्यकर धर्म कहा जाता है: वे जो दूषित हैं, जो पुनरावर्ती हैं, जो भयभीत करने वाले हैं, जिनके परिणाम भुगतने पड़ते हैं, और जो भविष्य में मृत्यु का कारण बनेंगे।

भगवान [सं.3.6, 527]: 'संसार में कोई अपराध न करो, सभी बंधनों और बंधनों को त्यागकर, किसी भी चीज से चिपके न रहो, इस प्रकार मुक्त लोग ही वास्तव में महान कहलाते हैं।'

"न जाना" एक श्रेष्ठ कार्य कैसे है? एक श्रेष्ठ व्यक्ति न चाहने के कारण नहीं जाता; न भय के कारण; न अहंकार के कारण; न मत के कारण; न संदेह के कारण; न संभावित परेशानियों के कारण; न ही वह झगड़ों (असामंजस्य) से बहककर जाता है, न ही बहकावे में आकर चलता है।

"न आना" श्रेष्ठ कैसे है? सोतापन्न मार्ग द्वारा जो भी अशुद्धि दूर हो जाती है, वह अशुद्धि अब अनुभव नहीं होती, न लौटती है, न वापस जाती है; सकदागामी मार्ग द्वारा...; अनागामी मार्ग द्वारा...; अरहंत मार्ग द्वारा...

"नेक लोग उन बातों को नहीं उठाएंगे और न ही कहेंगे": "नेक लोग उन बुरे विचारों को पकड़ेंगे, उन पर अड़े रहेंगे और फिर बोलेंगे, बताएंगे, बात करेंगे, समझाएंगे या कहेंगे कि दुनिया शाश्वत है... (छोड़ा गया)।" बाद में, बात करना, कहना, समझाना, बोलना।

"जलीय काँटेदार कमल की तरह, जो जल और कीचड़ से अछूता रहता है": जल (एलं) को जल (उदक) कहा जाता है; कमल (अम्बुजं) को कमल (पदुम) कहा जाता है; काँटों को मोटे तने वाला कहा जाता है; जल (वारी) को जल कहा जाता है; कमल (वारीजं) को कमल कहा जाता है; जल (जलं) को जल कहा जाता है; कीचड़ (पंको) को कीचड़ (कद्दमो) कहा जाता है। उदाहरण के लिए, जल से उत्पन्न होने वाला जलीय कमल जल और कीचड़ से अछूता रहता है, न तो अत्यधिक अछूता रहता है, न ही पूरी तरह से अछूता रहता है, न ही उससे थोड़ा-बहुत अछूता रहता है।

"इस प्रकार के मुनि शांत, लोभी नहीं होते और न ही वे इच्छा और संसार से दूषित होते हैं": "इस प्रकार" एक लाक्षणिक व्यवस्था है। "मुनि," .... "मौन," मुनि मौन हैं (मौन के समर्थक), चिकित्सक हैं, शरण हैं, आश्रय हैं, भयमुक्त हैं, अमर हैं, निर्वाण हैं और निर्वाण हैं। मुनि मौन हैं। "लोभरहित," भोग को भोग कहते हैं, अर्थात् लोभ...। जिनके लिए यह लोभ समाप्त हो जाता है, ..., उन्हें लोभरहित कहा जाता है; वे रूप (आकार) में, ध्वनि में..., गंध में..., ...(छोड़ा गया), ...जो धर्म देखे, सुने, अनुभव किए और जाने जा सकते हैं, वे लोभी नहीं हैं, वे बंधे नहीं हैं, वे आसक्त नहीं हैं और पापी नहीं हैं। जो लोभ से मुक्त हो गए हैं, जिनमें लोभ नहीं है, जिन्होंने लोभ का त्याग कर दिया है, जिन्होंने लोभ को समाप्त कर दिया है, जो लोभ से मुक्त हो गए हैं, जिन्होंने लोभ का त्याग कर दिया है, जिनमें लोभ नहीं है, जो भूखे नहीं हैं, जो शांत हो गए हैं, जो प्रसन्न हैं, जो ब्राह्मण के रूप में जीवन व्यतीत करते हैं।

"इच्छा और संसार में दूषित न होना," "इच्छा," .... "संसार में": .... "आसक्ति," .... जब मुनि प्यास और प्रेम की आसक्ति तोड़ देते हैं, दृष्टि की आसक्ति तोड़ देते हैं, तो वे जो देखते हैं उससे दूषित नहीं होंगे; इच्छा और संसार के संसार में वे दूषित नहीं होते, ... उन्होंने छोड़ दिया है, ...

81 · जो व्यक्ति वेदों को जानता है, वह देखने या समझने में अहंकारी नहीं होता, क्योंकि वह दूसरों के बराबर नहीं है (उनके जैसा नहीं है), वह कर्म या सुनी-सुनाई बातों से निर्देशित नहीं होता, वह निवास में अनुयायी नहीं होता।

"वेदों का ज्ञान रखने वाला व्यक्ति देखने या महसूस करने से अहंकार में नहीं पड़ जाता।" "नहीं" नकारात्मक है। "वेदों का ज्ञान रखने वाला व्यक्ति।" वेदों को ज्ञान कहा जाता है, ...(अंशित भाग देखें)।

"न देखना," उसके लिए, बासठ बुरी धारणाएँ समाप्त हो चुकी हैं, ..., वह देखने के बहकावे में नहीं आएगा, ..., उस बुरी धारणा को मूल मानकर वापस नहीं लौटेगा। "अनुभूत न होना," अनुभूति के रूप में, या अन्य ध्वनियों में, या जनता की स्वीकृति से, वह अहंकारपूर्वक नहीं आता, नहीं आता, नहीं पकड़ता, नहीं जकड़ता, नहीं चिपकता।

"क्योंकि वह दूसरे के बराबर नहीं है": वह प्यास के कारण, दृष्टि के कारण दूसरे के बराबर नहीं है; वह सर्वोच्च है, वह दूसरी ओर है। उसके लिए प्यास, दृष्टि और अहंकार का नाश हो चुका है... यह स्थिति दूसरे के बराबर नहीं है; दूसरा सर्वोच्च है, और दूसरा दूसरे किनारे पर है।

“कर्म और सुनी-सुनाई बातों से निर्देशित न होना”: “कर्म के वश में न होना,” शुभ कर्म, अशुभ कर्म या अटल कर्म से बहकना, दूर ले जाना या स्थानांतरित होना नहीं। “सुनी-सुनाई बातों से निर्देशित न होना,” पवित्र लोगों की बातों को न सुनना, न ही दूसरों की आवाज़ों से बहकना, न ही जनता की सहमति से बहकना, दूर ले जाना या स्थानांतरित होना नहीं।

“वही है जो निवास में अनुसरण नहीं करता”: “अनुसरण”: अनुसरण दो प्रकार के होते हैं: तृष्णा का अनुसरण और दृष्टि का अनुसरण... (छोड़ा गया)। उसके लिए, तृष्णा का अनुसरण समाप्त हो गया है,... निवास में वह निर्देशित, अपवित्र, संपर्कित, कलंकित या निर्देशित नहीं होता है। उसने छोड़ दिया है,...

82 · जो बंधन तोड़ देते हैं, उनके लिए कोई बंधन नहीं होता, और जो ज्ञान से मुक्त हो जाते हैं, उनके लिए कोई भ्रम नहीं होता, जो कोई भी देखने (बोध करने) और देखने (दृष्टिकोण) को धारण करता है, वे संसार में घर्षण के साथ चलेंगे।

“बंधन तोड़ने वालों के लिए कोई बंधन नहीं रहता”: पवित्र मार्ग के साधकों के लिए, जहाँ समाथा अग्रदूत है, जब प्रारंभिक बंधन समाप्त हो जाता है, जब वे अरहंत की अवस्था प्राप्त कर लेते हैं, तो अरहंत के लिए, गांठें, भ्रम, सभी प्रकार के आवरण, इच्छाएँ, द्वेषपूर्ण विचार, हानिकारक विचार और दृश्य विचार कट जाते हैं, ...

“ज्ञान के माध्यम से मुक्त हुए लोगों के लिए कोई भ्रम नहीं रहता”: विपश्यना प्रमुख अभ्यास है, इसमें प्रारंभिक अज्ञान का दमन शामिल है, और जब अरहंत अरहंत की अवस्था को प्राप्त कर लेता है, तो अरहंत के लिए अज्ञान, बंधन, अहंकार, इच्छा, द्वेष और उत्पीड़न का नाश हो जाता है...

“जो भी विचार रखता है और देखता है, वह कलह उत्पन्न करता है और संसार में विचरण करता है”: जो भी विचार रखता है: इच्छाएँ, द्वेषपूर्ण विचार और हानिकारक विचार, वे अपने विचारों के कारण आपस में कलह और आपसी कलह उत्पन्न करते हैं: राजा और राजा का सिद्धांत, क्षत्रिय और क्षत्रिय..., ब्राह्मण और ब्राह्मण, गृहस्वामी और गृहस्वामी, माता और पुत्र, पुत्र और माता, पिता और पुत्र, पुत्र और पिता, भाई और भाई, बहन और बहन, भाई और बहन, बहन और भाई, मित्र और मित्र। जब वे झगड़ा करते हैं, लड़ते हैं और बहस करते हैं, तो वे एक-दूसरे पर मुक्कों, ढेलों, लाठियों और तलवारों से आक्रमण करते हैं, वहाँ वे मृत्यु या मृत्यु के समान पीड़ा भोगते हैं [एम.एन.13]। जो लोग यह मानते हैं कि “संसार शाश्वत है”...(उद्धृत अंश), उनमें देखने के कारण टकराव और परस्पर टकराव होता है: गुरु-गुरु के बीच टकराव, धर्म के वर्णनकर्ता-वर्णनकर्ता के बीच टकराव, समूहों-समूहों के बीच टकराव, देखने (दृष्टिकोणों) के बीच टकराव, मार्ग-मार्ग के बीच टकराव और मार्ग-मार्ग के बीच टकराव।

या फिर वे बहस करते हैं, झगड़ते हैं, लड़ते हैं, विवाद करते हैं और असहमत होते हैं: “तुम्हें धम्म का ज्ञान नहीं है...।” उनका व्यवहार और विभिन्न व्यवहारों की अवस्था एक दूसरे से अलग नहीं होती; वे अपने हितों के केंद्र में घर्षण उत्पन्न करते हैं: नरक में घर्षण, पशु जगत में..., प्रेतलोक में..., मनुष्य जगत में..., स्वर्गलोक में घर्षण, स्वार्थ और रुचि..., मृत्यु और पुनर्जन्म..., जन्म और पुनर्जन्म..., अस्तित्व और अस्तित्व..., पुनर्जन्म और पुनर्जन्म..., चक्र और चक्र में घर्षण, एक दूसरे से रगड़ते हुए, बात करते हुए, चलते हुए, ठहरते हुए, कार्य करते हुए, आगे बढ़ते हुए, रक्षा करते हुए, जीवित रहते हुए। “संसार में,”...

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> निद्देसा >> निद्देसा 1.10

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

<<<< पिछला अगला >>>>

10. विघटन से पहले

83 · जिन्हें “मौन” कहा जाता है, वे किस प्रकार के उपदेशों का पालन करते हैं? गौतम! कृपया मुझे इसके बारे में बताइए, (जब) सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति के बारे में पूछा जाए।

“जिसे ‘मौन’ कहा जाता है, वह किस प्रकार के उपदेश देखता है?”: “देखने वाला” किस प्रकार का दृष्टिकोण रखता है, किस प्रकार की स्थापना करता है, किस प्रकार का विरोधाभासी अवलोकन करता है। “किस प्रकार के उपदेश” किस प्रकार के उपदेश धारण किए जाते हैं, किस प्रकार के उपदेश स्थापित किए जाते हैं, और किस प्रकार के विरोधाभास होते हैं। किस प्रकार के साक्षी के लिए कौन से उपदेश हैं। “जिसे ‘मौन’ कहा जाता है”: उसे शांत व्यक्ति, मौन व्यक्ति, शांत, शीतल और विश्राम करने वाला कहा जाता है। “किस प्रकार का द्रष्टा” जिज्ञासाओं के लिए ज्ञान बढ़ाता है; “किस प्रकार के उपदेश” जिज्ञासाओं के लिए उपदेश बढ़ाते हैं; “मौन” जिज्ञासाओं के लिए मन को बढ़ाते हैं।

“गौतम! कृपया मुझे इसके बारे में बताइए”: “वह,” हर वो बात जो मैं पूछता हूँ; हर वो बात जिसके लिए मैं विनती करता हूँ; हर वो बात जिसके बारे में मैं पूछताछ करता हूँ; हर वो बात जो मुझे स्पष्ट करती है। “गौतम,” वो व्यक्ति जिसे बुद्ध और भगवान उनके नाम से पुकारते हैं। “कृपया बताइए,” कृपया बताइए, कृपया समझाइए, कृपया सिखाइए, कृपया जानकारी दीजिए, कृपया स्थापित कीजिए, कृपया उजागर कीजिए, कृपया विश्लेषण कीजिए, कृपया स्पष्ट कीजिए।

“(जब) सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति के बारे में पूछा जाए”: “जिससे पूछा जा रहा है,” जिससे पूछताछ की जा रही है; जिससे पूछा जा रहा है, जिसके बारे में पूछा जा रहा है, जिससे पूछा गया है, जो स्पष्ट करता है। “सर्वोच्च सत्ता,” प्रथम, सबसे विजयी, असाधारण, शीर्ष, सर्वोच्च व्यक्ति।

84 · [धन्य पुरुष, इस प्रकार:] विघटन से पहले, वह एक है जो प्यास से विरक्त है, अतीत पर निर्भर नहीं है, मध्य में नहीं गिना जाता है, उसके लिए (कुछ भी) मूल्यवान (वरीयता) नहीं है।

“शरण से पहले प्यास से विरक्त”: शरीर के विघटन से पहले, आत्मा के विघटन से पहले, शव के त्याग से पहले, जीवन के मूल के कटने से पहले; प्यास रहित, प्यास से मुक्त, जिन्होंने अपनी प्यास त्याग दी है, जो अपनी व्यथाओं से मुक्त हो गए हैं, जिन्होंने अपनी प्यास बुझा दी है, जिन्होंने अपनी प्यास का त्याग कर दिया है; जिन्होंने लोभ का त्याग कर दिया है, जिनमें लोभ नहीं है, जिन्होंने लोभ को समाप्त कर दिया है, जो लोभ से मुक्त हो गए हैं, जिन्होंने लोभ का त्याग कर दिया है; जो भूखे नहीं हैं, जो शीतल हो गए हैं, जो शांत हो गए हैं, जो प्रसन्न हैं, और जो ब्राह्मण के रूप में जीवन व्यतीत करते हैं।

“धन्य प्रभु,” ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

“जो अतीत पर निर्भर नहीं रहते”: अतीत को पूर्व जन्म कहा जाता है, अतीत की लालसा का नाश हो चुका है, दृष्टि का नाश हो चुका है, जिस अवस्था में लालसा का नाश हो चुका है, उस नाश की अवस्था को देखते हुए, यही अतीत पर निर्भर न रहना है। इसके अतिरिक्त, “मैं अतीत में ऐसा रूप धारण करता था...”, वहाँ आनंद की खोज करना। “मुझे ऐसी भावनाएँ होती थीं...” ...(अंशित, पिछले भाग देखें)।

“मध्य में क्या नहीं गिना जाना चाहिए”: मध्य को वर्तमान काल कहा जाता है, वर्तमान काल की लालसा समाप्त हो गई है, ..., मन की अवस्था को “संक्रमित” नहीं गिना जाना चाहिए, “घृणित” नहीं गिना जाना चाहिए, “अज्ञानी” नहीं गिना जाना चाहिए, “बंधे हुए व्यक्ति” नहीं गिना जाना चाहिए, “चिपके रहने वाले” नहीं गिना जाना चाहिए, “अराजकता की ओर आने वाले” नहीं गिना जाना चाहिए, “अवांछित की ओर आने वाले” नहीं गिना जाना चाहिए, “धैर्य की ओर आने वाले” नहीं गिना जाना चाहिए, उन कर्मों को त्याग दिया गया है, जब कर्म त्याग दिए गए हैं, तो उन्हें हितों में नहीं गिना जाना चाहिए: “जो नरक (लोक) में गिरता है” या “पशु लोक”, या “भूखे प्रेत लोक”, या “मनुष्य”, या “स्वर्ग”, या “निर्मित”, या “निराकार”, या “सोचने वाला”, या “न सोचने वाला” या “न सोचने वाला” नहीं, उसके गिरने का कोई कारण नहीं है, कोई पूर्वनियति नहीं है, और कोई कारक नहीं है।

“उसके लिए क्या मूल्यवान नहीं है”: “उसके लिए,” अरहंत के लिए, उस व्यक्ति के लिए जिसने अपने सारे कष्ट समाप्त कर दिए हैं। “मूल्यवान” शब्द पर दो प्रकार से ज़ोर दिया जाता है: उत्सुकता पर ज़ोर और देखने पर ज़ोर... (छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)। उसके लिए, लालसा का मूल्य समाप्त हो गया है, देखने का मूल्य समाप्त हो गया है..., वह पहले या बाद में प्यासी प्रेम को नहीं देखता, प्रेम की प्यास ध्वज की तरह नहीं उठाई जाती, प्रेम की प्यास का निर्माण नहीं होता..., बढ़ती नहीं,..., देखना ध्वज नहीं है..., प्यासा न होना या विचारों का अनुसरण न करना, यह उसके लिए मूल्यवान

नहीं है। इसके अलावा, “मुझे भविष्य के जीवन में इस प्रकार का रूप मिलेगा,” इसमें कोई आनंद नहीं है;... (छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)। हृदय को अप्राप्य के लिए कोई आशा नहीं है, हृदय की निराशा के कारण, वह इसे पसंद नहीं करता; जब वह इसे पसंद नहीं करता, तो यह उसके लिए मूल्यवान नहीं होता।

85 · जो क्रोधित नहीं होते, जो भयभीत नहीं होते, जो दिखावा नहीं करते, जो पछताते नहीं, विचारपूर्वक बोलने वाले, जो हार नहीं मानते, वे वास्तव में संयमित वाणी वाले मुनि हैं।

“जो क्रोधित नहीं हैं, जो भयभीत नहीं हैं”: जिसे “क्रोधित नहीं” कहा जाता है, उसके क्रोध की बात सर्वप्रथम की जानी चाहिए (यह अंश स्पष्ट नहीं है: 'अक्कोधनोति यंहि खो वुत्तं. अपि च कोधो ताव वत्तब्बो.')। क्रोध दस रूपों में उत्पन्न होता है: “उसने मेरे विरुद्ध कार्य किया है,” [एएन.9.29] क्रोध उत्पन्न होता है; “वह मेरे व्यवहार के विरुद्ध है,” क्रोध उत्पन्न होता है; “वह मेरे विरुद्ध कार्य करेगा,” क्रोध उत्पन्न होता है; “वह मेरे प्रिय और वांछनीय व्यवहार के प्रति प्रतिकूल रहा है..., प्रतिकूल है..., प्रतिकूल होगा,” क्रोध उत्पन्न होता है; “उसने उस चीज़ से लाभ उठाया है जो मुझे प्रिय नहीं है, अवांछनीय है...,” क्रोध उत्पन्न होता है; या अनुचित क्रोध उत्पन्न होता है। किसी भी प्रकार का क्रोध, शत्रुता, घृणा, अरुचि, बुराई, हृदय की अरुचि, क्रोध की अवस्था, आक्रामकता, क्रूर क्रोध, रोष, अप्रसन्न हृदय, यही क्रोध कहलाता है।

इसके अतिरिक्त, क्रोध की चरम और सूक्ष्म अवस्थाओं को समझना चाहिए: कभी-कभी क्रोध केवल गुस्से की चरम सीमा तक सीमित होता है, लेकिन भौंहें चढ़ाने जितना नहीं; कभी-कभी क्रोध केवल भौंहें चढ़ाने जितना ही होता है, लेकिन दांत पीसने जितना नहीं; कभी-कभी क्रोध केवल दांत पीसने जितना ही होता है, लेकिन मौखिक दुर्व्यवहार जितना नहीं; कभी-कभी क्रोध केवल मौखिक दुर्व्यवहार के स्तर तक सीमित होता है, लेकिन हथियार खोजने जितना नहीं; कभी-कभी क्रोध केवल चारों दिशाओं में (हथियार की तलाश में) देखने जितना होता है, लेकिन छड़ी उठाने जितना नहीं; कभी-कभी क्रोध केवल छड़ी उठाने जितना होता है, लेकिन छड़ी निकालने जितना नहीं; कभी-कभी क्रोध केवल छड़ी उठाने जितना होता है, लेकिन छड़ी से मारने जितना नहीं; कभी-कभी क्रोध केवल छड़ी से मारने जितना होता है, लेकिन इतना नहीं कि शरीर टूट जाए; कभी-कभी क्रोध केवल टूटने जितना होता है, लेकिन शरीर के हर अंग को नोचने जितना नहीं। कभी-कभी क्रोध केवल शरीर के हर अंग को चीर-फाड़ देने जैसा होता है, लेकिन इतना नहीं कि जान ले ले; कभी-कभी क्रोध केवल जीवन छीन लेने जैसा होता है, लेकिन इतना नहीं कि व्यक्ति स्वयं को ही त्याग दे। जब क्रोधित व्यक्ति दूसरों को मारने के बाद स्वयं को मार डालता है, तो यह स्थिति क्रोध के और भी बढ़ने का संकेत देती है। जिसके लिए यह क्रोध समाप्त हो जाता है, शांत हो जाता है, रुक जाता है, उत्पन्न होने में असमर्थ हो जाता है, और ज्ञान की अग्नि से जल जाता है, उसे क्रोधहीन कहा जाता है। क्रोध का त्याग करना क्रोधहीनता कहलाता है; क्रोध के ज्ञान की अवस्था क्रोधहीनता कहलाती है; क्रोध से मुक्त होना क्रोधहीनता कहलाती है।

“जो भयभीत नहीं हैं,” यहाँ एक प्रकार का व्यक्ति वह है जो भयभीत है, वे जो डरे हुए हैं, और वे जो आतंकित हैं। वे कांपते हैं, भयभीत होते हैं, आतंकित होते हैं, और डर जाते हैं: “मुझे घर नहीं मिल रहा है, या मुझे लोगों का समूह नहीं मिल रहा है, या मुझे आश्रय नहीं मिल रहा है, या मुझे लाभ नहीं मिल रहा है, या मुझे प्रतिष्ठा नहीं मिल रही है, या मुझे प्रशंसा नहीं मिल रही है, या मुझे सुख नहीं मिल रहा है, या मुझे कपड़े नहीं मिल रहे हैं, या मुझे सामूहिक भोजन नहीं मिल रहा है, या मुझे बिस्तर नहीं मिल रहा है, या मुझे रोगी की आवश्यक वस्तुएँ और चिकित्सा संबंधी ज़रूरतें नहीं मिल रही हैं, या मुझे देखभाल नहीं मिल रही है, या मैं किसी को नहीं जानता।” वह कांप रहा था, भयभीत था, डरा हुआ था, और भयभीत था।

यहां भिक्षु वह है जो भयभीत नहीं होता, जिसे कोई डर नहीं होता और जो निर्भीक होता है। वह कांपता नहीं, डरता नहीं और न ही भयभीत होता है: “मुझे घर नहीं मिल रहा...” वह कांपता नहीं, न ही भयभीत होता है।

“जो दिखावा नहीं करते, जो पछतावा नहीं करते”: यहाँ एक प्रकार का व्यक्ति घमंड और दिखावा कर रहा है: मैं “पर्याप्त व्यक्ति” हूँ, या “नियमों का पालन करने वाला व्यक्ति” हूँ, या “निषेधों का पालन करने वाला व्यक्ति” हूँ, या “जन्म से, या उपनाम से, या अच्छे परिवार से, या कमल के समान सुंदर रूप से, या संपत्ति से, ...(विलुप्त, पिछले भाग देखें)”, वह घमंड और दिखावा करता है। वह इस तरह घमंड या दिखावा नहीं करता। घमंड और दिखावे से विरक्ति, संयम, त्याग है; वह निर्बल हृदय से जीवन व्यतीत करता है।

“जो पश्चाताप नहीं करते,” “पश्चाताप,” हाथों का अनुचित व्यवहार पश्चाताप है, पैरों का अनुचित व्यवहार भी पश्चाताप है, हाथों और पैरों का अनुचित व्यवहार भी पश्चाताप है, अनुचित विचार को उचित समझना, उचित विचार को अनुचित समझना, असमय विचार को समय पर समझना,

समय पर विचार को असमय समझना, निर्दोष को पाप समझना, पापी को निर्दोष समझना, इसी प्रकार का सारा पश्चाताप, पश्चाताप का मार्ग, पश्चाताप की अवस्था, हृदय का पश्चाताप, मन का भ्रम, यही पश्चाताप कहलाता है।

इसके अतिरिक्त, पछतावा, हृदय का पछतावा और मन की दुविधा दो कारकों से उत्पन्न होती है: जो किया गया है और जो नहीं किया गया है...(विलंबित भाग देखें)। उसे पछतावा है, हृदय का पछतावा है और मन की दुविधा है। यही वह है जो किया गया है और जो नहीं किया गया है, और इसी से पछतावा, हृदय का पछतावा और मन की दुविधा उत्पन्न होती है।

या, "मैं उपदेशों में पूर्णतः पारंगत व्यक्ति नहीं हूँ..." जिसके लिए पश्चाताप समाप्त हो गया हो, शांत हो गया हो, रुक गया हो, और ज्ञान की अग्नि से भस्म हो गया हो, उसे पश्चाताप न करने वाला कहा जाता है।

“विचार करने के बाद बोलने वाला, जो हार नहीं मानता”: विचार करने के बाद, उसे बुद्धिमत्ता कहते हैं, जो बुद्धिमत्ता है, ...(अधूरा)। जब बहुत बातें होती हैं; जब बहुत स्पष्टीकरण होता है; जब बहुत चर्चा होती है, तो वह विचार करता है, खोजबीन करता है, और फिर बोलता है। वह बुराई की बातें नहीं कहता। “जो भटकते नहीं,” कहाँ, क्या भटक रहा है? जहाँ भी हृदय भटक रहा है, वहाँ मौन नहीं है; हृदय बिखरा हुआ है; हृदय भ्रमित है, जिसे भटकना कहते हैं। जिसके लिए यह कट गया है...

“वह वास्तव में संयमित वाणी वाला मुनि है”: यहाँ, भिक्षु अपने शब्दों का त्याग करने के बाद, वह झूठा नहीं, सत्यवादी, सच्चा, विश्वसनीय, भरोसेमंद और संसार के प्रति छलरहित होता है। वाणी त्यागने के बाद, वह एक दूरस्थ वक्ता होता है: यहाँ से सुनकर, वह लोगों को विभाजित करने के लिए वहाँ नहीं बोलता, इस प्रकार, वह विभाजन का मध्यस्थ, सद्भाव का प्रसारक, मेल-मिलाप करने को इच्छुक, मेल-मिलाप पसंद करने वाला और मेल-मिलाप का वक्ता होता है। कठोर और बुरे शब्दों का त्याग करने के बाद, वह कठोर और बुरे शब्दों को छोड़ने वाला होता है; वह कोमल, सुखद, सुंदर और लुभावने, सुरुचिपूर्ण, सुखद और सभी को प्रिय शब्दों का उच्चारण करता है। अश्लील भाषा का त्याग करने के बाद, वह अश्लील भाषा से मुक्त होता है: वह सही समय पर बोलने वाला, तथ्यों का वक्ता, लाभ का वक्ता, धम्म का वक्ता होता है; वह उचित समय पर उचित, तर्कसंगत, संयमित और लाभदायक शब्दों का वक्ता है [एएन.4.198]। उसके चार प्रकार के अच्छे कर्म और चार प्रकार के निर्दोष शब्द हैं। वह बत्तीस पशुवत शब्दों से मुक्त हो चुका है, उनका त्याग कर चुका है, उन्हें छोड़ चुका है, उनसे मुक्त हो चुका है, अपने बंधनों को त्याग चुका है, वह निर्बल हृदय से जीवन व्यतीत करता है।

वे दस बातों के बारे में बात करते हैं, अर्थात्: कम इच्छा का सिद्धांत, संतोष का सिद्धांत..., एकांतवास का सिद्धांत..., संवादहीनता का सिद्धांत..., जीवन शक्ति का सिद्धांत..., आज्ञा का सिद्धांत..., निष्कर्ष..., ज्ञान का सिद्धांत..., मुक्ति का सिद्धांत..., मुक्ति ज्ञान का सिद्धांत..., सचेतनता का सिद्धांत..., उचित परिश्रम का सिद्धांत..., दिव्य आधारों का सिद्धांत..., मूल सिद्धांत..., शक्ति का सिद्धांत..., ज्ञानोदय का सिद्धांत..., पथ सिद्धांत..., फल सिद्धांत और निर्वाण सिद्धांत। “आत्म-संयम वाले शब्द” सतर्क, विवेकपूर्ण, संरक्षित, सुरक्षित और मौन होते हैं। “मुनि,”...

86 · भविष्य में कोई बंधन नहीं है, वह अतीत पर शोक नहीं करता, वह स्पर्श को दूर देखता है, और वह (दृष्टिकोण) देखने में निर्देशित नहीं होता।

“भविष्य में बंधनों से मुक्त व्यक्ति”: आसक्ति को भोग कहते हैं, जो लालच है...। उसके लिए, जो लोग इस आसक्ति से मुक्त हैं, जिनकी भोग-विलास समाप्त हो गई है..., वे ही भविष्य में बंधनमुक्त हैं। इसके अतिरिक्त, “भविष्य में मेरा ऐसा रूप होगा।”...(अस्पष्ट)। हृदय में आशा की कमी के कारण, उसे यह पसंद नहीं आता; जब यह पसंद नहीं आता, तो यह भी भविष्य में बंधनमुक्त होने का कारण है। “भविष्य में मेरे कान ऐसे होंगे, और मेरी आवाज ऐसी होगी।”...। इसके अतिरिक्त, “मैं इस सद्गुण, निषेध, तपस्या और ब्रह्म के साथ स्वर्ग या स्वर्गों में से एक में प्रवेश करूँगा।” वह उस चीज़ की आशा नहीं करता जो प्राप्त नहीं होती, और हृदय में आशा की कमी के कारण, उसे यह पसंद नहीं आता।

वह अतीत पर शोक नहीं करता: वह जो बदल गया है उसके लिए दुखी नहीं होता, न ही जो बदल रहा है उसके लिए उदास होता है: "मेरी आँखें बदल गई हैं," वह उदास नहीं है; मेरे कान... वह उदास नहीं है, थका हुआ नहीं है, रो नहीं रहा है, विलाप नहीं कर रहा है, न ही उलझन में पड़ रहा है।

स्पर्श को दूर से देखना: आँख का संपर्क, कान का संपर्क, नाक का संपर्क, जीभ का संपर्क, शरीर का संपर्क, इरादे का संपर्क, नाम का संपर्क, विपरीत संपर्क [DN.15], एक ऐसा स्पर्श जो सुखद होना चाहिए, एक ऐसा स्पर्श जो कड़वा होना चाहिए, एक ऐसा स्पर्श जो न तो पीड़ा और न ही सुख का अनुभव कराए, अच्छा स्पर्श, अस्वस्थ स्पर्श, स्मरणहीन स्पर्श, इच्छा का स्पर्श, शारीरिक स्पर्श, निराकार स्पर्श, खाली स्पर्श, संपर्कहीनता, अनिच्छुक स्पर्श, सांसारिक स्पर्श, संसार से परे स्पर्श, अतीत, भविष्य, वर्तमान, और स्पर्श की अवस्था, संपर्क, पूर्ण संपर्क, और इस प्रकार पूर्ण संपर्क की अवस्था को स्पर्श कहा जाता है।

स्पर्श को दूर देखना: "मैं", या "जो मेरे पास है", या स्थिरता, या शाश्वतता, या अपरिवर्तनीय विधियों के साथ, वह नेत्र संपर्क को दूर देखता है; ..., वह कान संपर्क को दूर देखता है; ...(छोड़ा गया) "मैं", या "मैं जो हूँ", या "हमेशा", या "शाश्वत", या "अपरिवर्तनीय" से दूर।

या, वह अतीत को भविष्य और वर्तमान से प्रभावित देखता है; वह भविष्य को अतीत और वर्तमान से प्रभावित देखता है; वह वर्तमान को अतीत और भविष्य से प्रभावित देखता है, या, जहाँ वे पवित्र, चिंतामुक्त, संसार से परे, और शून्य से संबंधित स्पर्श करते हैं, वहाँ वह लोभ के स्पर्श को दूर देखता है; क्रोध..., अज्ञान..., (छोड़ा गया)।

"वह देखने में निर्देशित नहीं होता": उसके लिए, बासठ बुरे विचार काट दिए गए हैं, ..., और वह देखने से बहक नहीं जाएगा, बहक नहीं जाएगा, बहक नहीं जाएगा, और न ही उस बुरे विचार को मूल रूप में अपनाएगा।

87 · वे जो पीछे हट गए हैं, षड्यंत्रकारी नहीं हैं, उत्सुक नहीं हैं, कंजूस नहीं हैं, जो अभिमानी नहीं हैं, (नैतिक रूप से) घृणित नहीं हैं, (विभाजनकारी) प्रवचन के इच्छुक नहीं हैं।

"एकाग्र, षड्यंत्र रहित": "एकाग्र," लोभ का त्याग करने की अवस्था एकाग्रता है, ...विरोध..., ...अज्ञान..., ...क्रोध... (छोड़ा गया)। भगवान बुद्ध ने कहा: "भिक्षुओं! भिक्षु कैसे एकाग्र होते हैं? भिक्षुओं! यहाँ, भिक्षुओं के आत्म-अस्तित्व का अहंकार कट गया है, और जड़ें कट गई हैं, जैसे बिना जड़ों वाला ताड़ का पेड़, भविष्य के लिए अस्तित्वहीन हो जाता है, भिक्षुओं! भिक्षु इस प्रकार एकाग्र होता है। [एएन.4.38]"

"षड्यंत्रकारी न होने" की बात करें तो, षड्यंत्र तीन प्रकार के होते हैं: संसाधनों का उपयोग करने का षड्यंत्र, व्यवहार का षड्यंत्र और लाभ के लिए इधर-उधर की बातें करने का षड्यंत्र।

संसाधनों के उपयोग में छल क्या है? यहाँ, घर के मालिक भिक्षुओं को वस्त्र, भोजन, आश्रय, रोगियों की ज़रूरतों और चिकित्सा संबंधी आवश्यकताओं के साथ आमंत्रित करते हैं। वह एक दुष्ट इच्छा वाला व्यक्ति है, प्रकृति के प्रति सजग व्यक्ति है और आशावान व्यक्ति है। वह एक ऐसा व्यक्ति है जिसके पास वस्त्र, भोजन, आश्रय, रोगी की ज़रूरतें और चिकित्सा संबंधी आवश्यकताएँ हैं। अधिक की आशा में, वस्त्रों को अस्वीकार करते हुए, भोजन देने से इनकार करते हुए, आश्रय देने से इनकार करते हुए, रोगियों की ज़रूरतों और चिकित्सा संबंधी आवश्यकताओं से इनकार करते हुए, उसने कहा: "एक समण के लिए उच्च मूल्य के वस्त्रों का क्या अर्थ है!" यह उचित है कि एक समण टीले, कूड़े के ढेर या दुकान के सामने से चिथड़े-चिथड़े कपड़े लेकर कोट बनाए। एक समण के लिए उच्च मूल्य के भोजन का क्या अर्थ है! यह उचित है कि एक समण भिक्षा माँगकर जीवन यापन करे। उच्च मूल्य के आवास में एक समण के लिए क्या है! ...एक समण वह होता है जो वृक्षों के नीचे, टीलों के बीच या खुले में रहता है। ...रोगियों की ज़रूरतों और चिकित्सा संबंधी आवश्यकताओं का ध्यान रखता है! ...किण्वित गाय के मूत्र या कुचली हुई हरी सब्ज़ियों से बनी औषधि का प्रयोग करता है। यह जानकर वह मोटे वस्त्र पहनता है; मोटा भोजन ग्रहण करता है; मोटे घरों में रहता है; रोगियों और चिकित्सा संबंधी मोटी-मोटी वस्तुओं का उपयोग करता है। घर के मालिक उसे इस प्रकार जानते थे: "यह समण कम इच्छाओं वाला, संतुष्ट, एकांतप्रिय, भीड़-भाड़ से दूर रहने वाला, ऊर्जावान और आध्यात्मिक गुरु है।" वे उसे वस्त्र, भोजन, आश्रय, रोगियों की ज़रूरतों और चिकित्सा संबंधी आवश्यकताओं के साथ अधिकाधिक आमंत्रित करते हैं। उन्होंने कहा: "तीनों अवस्थाओं में ऐसे नेक लोग हैं जो बहुत पुण्य कमाते हैं: आस्था की अवस्था में नेक लोग हैं, पुण्य और दान की अवस्था में ऐसे नेक लोग हैं जो बहुत पुण्य कमाते हैं, और सहायता के योग्य व्यक्ति की अवस्था में ऐसे नेक लोग हैं जो बहुत पुण्य कमाते हैं। आप विश्वासी हैं, दान मौजूद है, और मैं दान लेने वाला हूँ। यदि मैं इसे स्वीकार नहीं करता, तो आप पुण्य से वंचित हो जाएँगे। यह मेरे लिए आवश्यक नहीं है, बल्कि दयावश, मैं आपसे स्वीकार करता हूँ।" इसके बाद, वे बहुत से वस्त्र, बहुत से भोजन, बहुत से आवास और बहुत से

रोगियों की ज़रूरत की चीज़ें और चिकित्सा संबंधी ज़रूरतें स्वीकार करते हैं। इस प्रकार भौंहें चढ़ाने वाले किसी भी व्यक्ति की भौंहें छल के मार्ग पर हैं, छल की अवस्था में हैं, यह संसाधनों को प्राप्त करने के लिए छल है।

व्यवहार की छल-कपट क्या है? यहाँ कुछ प्रकार के बुरे भोगी हैं, कुछ प्रकृति के भोगी और कुछ मान-सम्मान के भोगी, (विचार): "इस तरह लोग मेरा आदर करेंगे।" वह चलने, खड़े होने, बैठने, लेटने की मुद्रा में बैठता है, इच्छा के लिए चलता है, इच्छा के लिए खड़ा होता है, इच्छा के लिए बैठता है, इच्छा के लिए लेटता है, एकाग्रता में बैठे व्यक्ति की तरह चलता है, ध्यानमग्न व्यक्ति की तरह खड़ा होता है, ध्यानमग्न व्यक्ति की तरह बैठता है, ध्यानमग्न व्यक्ति की तरह लेटता है, और ध्यानमग्न व्यक्ति के रूप में प्रकट होता है। इस प्रकार के व्यवहारों को स्थापित करना, मजबूत करना और पूर्ण रूप से स्थापित करना; इस व्यंजक व्यक्ति की भौंहें छल-कपट का मार्ग और छल-कपट की अवस्था हैं, यही व्यवहार की छल-कपट है।

लाभ के लिए हर जगह बातें करने का छल क्या है? यहाँ कुछ प्रकार के दुष्ट इच्छाधारी हैं, कुछ प्रकृति की लालसा रखते हैं, और कुछ मान-सम्मान की लालसा रखते हैं (सोचते हैं): "इस तरह लोग मेरा आदर करेंगे।" उन्होंने पवित्र धम्म के अनुसार कहा, "जो कोई इस प्रकार वस्त्र धारण करता है, वह एक शक्तिशाली समण है।" उन्होंने कहा, "जो कोई इस प्रकार का कटोरा धारण करता है..., तांबे का कटोरा धारण करता है..., जल छानने का यंत्र धारण करता है..., चाबियाँ धारण करता है, जूता पहनता है, कमरबंद पहनता है... वह एक महान शक्तिवान समण है।" उन्होंने कहा, "जिसके अनुयायी इस प्रकार के हैं, वह एक शक्तिशाली समण है।" उन्होंने कहा, "जिसके गुरु इस प्रकार के हैं..., भिक्षु के समान व्यक्ति इस प्रकार के हैं..., गुरु, मित्र, परिचित, निकट संबंधी, साथी के समान व्यक्ति इस प्रकार के हैं..., वह एक शक्तिशाली समण है।" उन्होंने कहा: "जो कोई भी इस तरह के आवास में रहता है..., आधे छत वाले घर में, ऊँची इमारत में, समतल घर में, गुफा में, झोपड़ी में, भारी मंडप में, वेधशाला में, गोल घर में, शेड में, व्याख्यान कक्ष में, तम्बू में, पेड़ के नीचे रहता है..., वह महान शक्ति का समण है।"

या फिर वे लोग जो लगातार भौंहें चढ़ाए रहते हैं; निरंतर भौंहें चढ़ाए रहते हैं; जो छल करते रहते हैं; जो लगातार शिकायत करते रहते हैं; जो अपनी ज़ुबान की वजह से सम्मान पाते हैं, जो ऐसी गहरी, गुप्त, सूक्ष्म, अलौकिक और खोखली बातें कहते हैं: "यह समण इस तरह इस शांत निवास में रहता है और प्रतीक्षा करता है।" जो भी इस तरह भौंहें चढ़ाता है, उसकी भौंहें चढ़ाना; छल का मार्ग, छल की अवस्था, यही आसपास की भाषा का छल है।

"जो आशा नहीं रखते, जो कंजूस नहीं हैं": आशा को प्यास कहा जाता है, यह लालच है...। उसके लिए, यह उत्सुकता और प्यास समाप्त हो गई है..., और उसे उत्सुक न होने वाला कहा जाता है, रूप..., ध्वनियाँ..., ...(छोड़ा गया)। "जो कंजूस नहीं हैं," कंजूसी पाँच प्रकार की होती है: ...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)। जिसके लिए यह समाप्त हो गया है, ...।

"जो अहंकारी नहीं हैं, जो घृणा नहीं करते": "अहंकार" तीन प्रकार का होता है: देह अहंकार, वाणी अहंकार और हृदय अहंकार। देह अहंकार क्या है? यहाँ, एक विशेष प्रकार के लोग संघ में आकर अपना देह अहंकार प्रदर्शित करते हैं, समूह में आते समय देह अहंकार प्रदर्शित करते हैं, भोजनालय में देह अहंकार प्रदर्शित करते हैं, स्नानघर में देह अहंकार प्रदर्शित करते हैं, घर में प्रवेश करते समय देह अहंकार प्रदर्शित करते हैं और (अशिष्ट) घर में प्रवेश करते समय देह अहंकार प्रदर्शित करते हैं।

वह संघ में देह-प्रवंचना का प्रदर्शन कैसे करता है? यहाँ संघ में आने वाले कुछ खास तरह के लोग सम्मान का व्यवहार नहीं करते। वे बड़े भिक्षुओं को स्पर्श करते समय खड़े रहते हैं, और जब वे उन्हें स्पर्श करते हैं तो बैठ जाते हैं, बड़े भिक्षुओं के सामने खड़े होते हैं, आगे बैठते हैं, और ऊँची सीटों पर बैठते हैं। सिर ढँककर बैठने के बजाय, वह खड़े होकर बात करता है, और बात करते समय अपने हाथ हिलाता है, इस प्रकार वह संघ में अपनी देह-प्रवंचना का प्रदर्शन करने आया है।

शरीर का प्रदर्शन करने के लिए समूह में आना किस प्रकार का अहंकार है? यहाँ, कुछ विशेष प्रकार के लोग समूह का अनादर करने के लिए आते हैं। जो बड़े भिक्षु बिना जूते के चलते हैं, उनके सामने वह जूते पहनकर चलता है, जो नीची जगहों पर चलते हैं, उनके सामने वह ऊँची जगहों पर चलता है, और जो ज़मीन पर चलते हैं, उनके सामने वह ऊँची जगहों पर चलता है। वह गलियारे से होकर गुजरा, स्पर्श करते समय खड़ा हुआ, स्पर्श करते समय बैठा, आगे खड़ा हुआ, आगे बैठा, ऊँची कुर्सी पर बैठा, सिर लपेटकर बैठा, खड़ा होकर बातें कीं, बाहें हिलाते हुए बातें कीं, यह सब समूह में शरीर का अहंकार दिखाने के लिए किया जाता है।

कैफ़ेटेरिया में शारीरिक आडंबर दिखाना क्या होता है? यहाँ एक खास तरह का व्यक्ति कैफ़ेटेरिया में अशोभनीय व्यवहार करता है। वह वरिष्ठ भिक्षुओं के स्थान पर अतिक्रमण करता है और फिर बैठ जाता है, नए भिक्षुओं के लिए अपनी सीट से रास्ता अवरुद्ध कर देता है, खड़े होकर छूता है, फिर बैठ जाता है, आदि, इस प्रकार वह कैफ़ेटेरिया में अपने शारीरिक आडंबर का प्रदर्शन करता है।

स्नानघर में शरीर का अहंकार कैसे प्रदर्शित किया जाता है? यहाँ, एक विशेष प्रकार का व्यक्ति स्नानघर में सम्मान का व्यवहार नहीं करता। वह बड़े भिक्षुओं को छूते समय खड़ा रहता है, छूते समय बैठता है, आगे खड़ा रहता है, ... बिना पूछे लकड़ियाँ हटा देता है, बिना पूछे दरवाजा बंद कर देता है, हाथ हिलाकर बातें करता है, यह सब स्नानघर में शरीर का अहंकार प्रदर्शित करना है।

स्नान में शरीर का अहंकार कैसे प्रदर्शित होता है? यहाँ, एक विशेष प्रकार का व्यक्ति स्नान स्थल में सम्मानजनक नहीं माना जाता। जब वह वरिष्ठ भिक्षुओं को स्पर्श करता है, तो वह पानी में कूद जाता है, उनके आगे कूद जाता है, स्पर्श होने पर स्नान करता है, आगे स्नान करता है, ऊपर स्नान करता है, स्पर्श होने पर पानी से बाहर निकलता है, आगे पानी से बाहर निकलता है, ऊपर पानी से बाहर निकलता है, यह स्नान में शरीर के अहंकार को प्रदर्शित करने के लिए है।

घर में प्रवेश करते समय देह का अहंकार दिखाना कैसा होता है? यहाँ एक विशेष प्रकार का व्यक्ति (अशिष्ट) घर में प्रवेश करते समय सम्मान का व्यवहार नहीं करता। वह बड़े भिक्षुओं को स्पर्श करते समय, उनके आगे-आगे चलता है, और सही मार्ग से भटककर बार-बार उनके आगे से निकल जाता है। घर में प्रवेश करते समय देह का अहंकार दिखाना ऐसा ही होता है।

किसी (अनैतिक) घर में प्रवेश करते समय शरीर का प्रदर्शन करना किस प्रकार का अहंकार है? यहाँ, जब एक विशेष प्रकार के लोग किसी (अनैतिक) घर में प्रवेश करते हैं, तो प्रवेश करने पर वे कहते हैं, "हे महान गुण! कृपया प्रवेश न करें।" प्रवेश करने पर वे खड़े हो जाते हैं, जबकि उन्हें कहा जाता है, "हे महान गुण! कृपया खड़े न हों।" जब ऐसा कहा जाता है, तो वे बैठ जाते हैं, वे बिना जगह छोड़े प्रवेश करते हैं, वे बिना जगह छोड़े खड़े होते हैं, और वे बिना जगह छोड़े बैठ जाते हैं, जहाँ उस (अनैतिक) परिवार का भीतरी कमरा छिपा हुआ और गुप्त है: गृहिणी, बहू, गृहिणी और कन्या बैठी रहती हैं, जहाँ वे अभद्रता से प्रवेश करते हैं और लड़के के सिर को छूते हैं। यह (अनैतिक) घर में प्रवेश करते समय शरीर के अहंकार को दर्शाता है। यह शरीर के अहंकार का प्रदर्शन है।

शब्दों का अहंकार क्या दर्शाता है? यहाँ, एक विशेष प्रकार के लोग संघ में आने पर शाब्दिक अहंकार प्रदर्शित करते हैं, समूह में आने पर शाब्दिक अहंकार प्रदर्शित करते हैं और (अशिष्ट) परिवार में प्रवेश करने पर शाब्दिक अहंकार प्रदर्शित करते हैं।

संघ में शब्दों का अहंकार कैसे प्रकट होता है? यहाँ कुछ खास तरह के लोग संघ में बिना आदर दिखाए आते हैं। वरिष्ठ भिक्षुओं से पूछने के बाद, या मठ में प्रवेश करने वाले भिक्षुओं से बिना पूछे ही, उनके प्रश्नों का उत्तर देने और पातिमोक्ख का पाठ करने के बाद, वे खड़े होकर बोलने लगते हैं, हाथ हिलाकर बोलने का इशारा करते हैं; यही संघ में आने का अहंकार है।

किसी समूह में शब्दों का अहंकार कैसे प्रकट किया जा सकता है? यहाँ, कुछ खास तरह के लोग समूह में अनादर करने के लिए आते हैं। बड़े भिक्षुओं से पूछे बिना, या मठ के बगीचे में प्रवेश करने वाले भिक्षुओं से बात करने और उनके प्रश्नों का उत्तर देने के लिए बिना पूछे ही, वह खड़ा होकर हाथ हिलाते हुए भिक्षुओं से बात करता है। बगीचे में मौजूद भिक्षुणियाँ, पुरुष गृहस्थ भक्त और महिला गृहस्थ भक्त भी बोलते और प्रश्नों का उत्तर देते हैं। वह खड़ा होकर हाथ हिलाते हुए बोलता है। यह समूह में वाणी का अहंकार दिखाने का एक तरीका है।

किसी (अशिष्ट) घर में प्रवेश करते समय वाणी का अहंकार दिखाना क्या होता है? यहाँ, जब कुछ खास तरह के लोग (अशिष्ट) घरों में प्रवेश करते हैं, तो वे महिलाओं या लड़कियों से कहते हैं: "इस व्यक्ति का नाम और उपनाम क्या है? क्या यहाँ दूध का दलिया, भोजन और ठोस भोजन है? हम क्या पिएंगे? हम क्या खाएंगे? हम क्या चबाएंगे? या फिर: आप मुझे क्या देंगी?" वे बुदबुदाते हैं। जो कोई भी इस तरह की वाणी, निरर्थक शब्दों, बुदबुदाहट और अत्यधिक वाचालता में किसी आम आदमी के घर में प्रवेश करता है, वह वाणी का अहंकार दिखाता है। यही शब्दों का अहंकार है।

हृदय का अहंकार क्या है? यहाँ, एक विशेष प्रकार के लोग जो कुलीन परिवार से नहीं हैं, उनमें से एक अहंकारी व्यक्ति स्वयं को कुलीन भिक्षु के समान समझता है, और एक ऐसा व्यक्ति जो बड़े परिवार से नहीं है, वह स्वयं को और बड़े परिवार को अपने हृदय से एक समान समझता है। जो भिक्षु नहीं बनते, वे समान हैं; जो धनी परिवार से नहीं हैं, वे अहंकारी लोगों के समान हैं; और जो धनी परिवार से नहीं हैं, वे भिक्षु नहीं हैं, वे भिक्षु नहीं हैं, उनके समान हैं। अहंकारी व्यक्ति स्वयं को और सूत्र शिक्षक को अपने हृदय में समान समझता है, और जो धर्म का पालन नहीं करता, ऐसे अहंकारी लोग भी हैं जो कुछ नहीं कहते, जो वनों में नहीं रहते, और जो भोजन के लिए बहुत भीख मांगते हैं... (कुछ भाग हटा दिए गए हैं, पिछले भाग देखें)। यही हृदय का अहंकार है। उसके लिए, वे तीनों प्रकार के अहंकार समाप्त हो जाते हैं, ..., उसे अहंकाररहित कहा जाता है।

"जो घृणित नहीं हैं," कुछ घृणित हैं और कुछ नहीं। घृणित व्यक्ति कौन है? यहाँ, एक निश्चित प्रकार के लोग वे हैं जो नियमों का उल्लंघन करते हैं, जो दुष्ट हैं, जो अपवित्र और संशयी हैं, जो गुप्त रूप से व्यवहार करते हैं, जो समण नहीं हैं लेकिन स्वयं को समण कहते हैं, जो ब्राह्मण नहीं हैं लेकिन स्वयं को ब्राह्मण कहते हैं, जो आंतरिक पतन से ग्रस्त हैं, जिनके व्यक्तित्व बुरे हैं [AN.7.72]। या फिर, वह आसानी से क्रोधित हो जाता है और क्रोध से ग्रसित हो जाता है, और थोड़ा सा बोलने पर ही क्रोधित, आहत, दुखी, विद्रोही, क्रोध, घृणा और असंतोष प्रकट करता है [AN.3.25]। या फिर, वह क्रोधशील, द्वेषी, दुष्ट, दबंग, ईर्ष्यालु, कंजूस, धूर्त, पाखंडी, हठी, अभिमानी, बुरी इच्छाओं वाला, गलत दृष्टिकोण वाला और त्याग न कर पाने वाला व्यक्ति है [AN.6.36]। इसे घृणित व्यक्ति कहा जाता है।

जो व्यक्ति कर्मों में घृणित नहीं है, वह क्या है? यहाँ भिक्षु एक ऐसा गुरु है जो पातिमोक्खा के आत्म-संयम से सुरक्षित रहता है। उसके पास पर्याप्त धार्मिकता और उचित परिस्थितियाँ होती हैं। वह छोटे पापों में भी भयावहता देखता है और गुरु से शिक्षा प्राप्त करने के बाद सीखता है। [AN.2.37] या, वह ऐसा व्यक्ति है जो आसानी से क्रोधित नहीं होता और हमेशा चिड़चिड़ेपन से मुक्त रहता है। अधिक चर्चा करते समय, वह विचलित, क्रोधित, उत्तेजित नहीं होता, विरोध नहीं करता और कोई द्वेष, घृणा या असंतोष नहीं दिखाता। [MN.135] या, वह आसानी से क्रोधित नहीं होता, द्वेष नहीं रखता, बुराई नहीं छुपाता, अभिमानी नहीं होता, ...(विलुप्त), जो हठी नहीं होते और जो आसानी से त्याग देते हैं, उन्हें घृणित कर्मों में घृणित कहा जाता है। सभी अज्ञानी साधारण लोग घृणित हैं, और आठ संतों सहित गुणी साधारण लोग घृणित नहीं हैं।

"और जो लोग फूट डालने वाली बातों के पक्षधर नहीं हैं": यहाँ "फूट डालने वाली बातें" से तात्पर्य एक विशेष प्रकार के व्यक्ति से है जो फूट डालने वाला वक्ता होता है। जब वह किसी से ऐसी बात सुनता है, तो वह वहाँ जाकर लोगों को बाँटने के लिए बोलता है, या जब वह किसी से ऐसी बात सुनता है, तो वहाँ जाकर उन लोगों को बाँटने के लिए वही बात कहता है; इस प्रकार, वह सद्भाव का नाश करने वाला, फूट फैलाने वाला, अप्रिय, असामंजस्य का वक्ता, असहमति का वक्ता होता है; इसे फूट डालने वाली बातें कहते हैं।

इसके अतिरिक्त, विभाजन के दो कारण हैं: सुंदर बनने की इच्छा, या विभाजन की इच्छा। सुंदर बनने की इच्छा से विभाजन कैसे उत्पन्न होता है? "इसके लिए, मैं सुंदर बनूँगा, मैं आकर्षक बनूँगा, मैं निकट रहूँगा, मैं घनिष्ठ मित्र बनूँगा, मैं दयालु बनूँगा।" इस प्रकार, सुंदर बनने की इच्छा से विभाजन उत्पन्न होता है। विभाजन की इच्छा से विभाजन कैसे उत्पन्न होता है? "ये कैसे भिन्न-भिन्न हो जाएँगे, अलग हो जाएँगे, विभाजित हो जाएँगे, दो प्रकार के हो जाएँगे, विरोधाभासी हो जाएँगे, दो गुट बन जाएँगे, टूट जाएँगे, पुनर्मिलन नहीं करेंगे, पीड़ा और बेचैनी का कारण बनेंगे।" यह विभाजन की इच्छा से उत्पन्न विभाजन है। जो अलग-थलग है, वह (विवाद में) उत्साही नहीं है, अनियंत्रित है, दृढ़ता से नियंत्रित नहीं है, जो पूरी तरह से नियंत्रित नहीं हैं, वे पूर्ण रूप से नियंत्रित नहीं हैं।

88 · जो संतुष्टि में कोई रिसाव नहीं करते, जो अहंकार में उत्साही नहीं होते, जो कोमल और वाक्पटु होते हैं, अविश्वासी, वह कलंकित नहीं होगा।

"संतोष में रिसाव रहित लोग": संतोषी लोगों को पाँच इच्छाएँ कहा जाता है। संतोषी लोगों को पाँच इच्छाएँ क्यों कहा जाता है? वे पाँच इच्छाएँ जिन्हें अधिकांश लोग चाहते हैं, स्वीकार करते हैं, आशा करते हैं, उत्साह रखते हैं और अभिलाषा रखते हैं, इसी कारण से संतोषी कहलाती हैं। जिसने त्याग नहीं किया है, उसके लिए संतोषी इच्छा उसकी आँखों के रूप से प्रवाहित होती है, उत्पन्न होती है और स्थानांतरित होती है; कान की ध्वनि, नाक की गंध, जीभ के स्वाद, शरीर के स्पर्श आदि से उत्पन्न होने वाली लालसा, मन के धर्म से उत्पन्न होने वाली लालसा प्रवाहित होती है, उत्पन्न होती है और स्थानांतरित होती है। जिसके लिए यह संतोषी लालसा समाप्त हो गई है, उसकी आँखों के रूप से उत्पन्न होने वाली लालसा न तो प्रवाहित होती है, न उत्पन्न होती है और न ही प्रवाहित होती है; कान की ध्वनि के कारण...(विलुप्त)।

"और जो लोग अहंकार के प्रति उत्साही नहीं हैं": अहंकार क्या है? यहाँ, जन्म से या उपनाम से एक विशेष प्रकार का व्यक्ति... (अधूरा)। पद, उच्चता, गौरव, ध्वज, हृदय का घमंड, यही अहंकार कहलाता है। जिसके लिए यह अहंकार समाप्त हो गया है, ..., वह उत्साही नहीं रहता, नियंत्रित नहीं रहता, ...।

"कोमल और वाक्पटु": "कोमल," "कोमल देह कर्म" कोमल है, "कोमल वाणी कर्म" कोमल है, "कोमल मानसिक कर्म" कोमल है, "कोमल जागरूकता" कोमल है, ..., कोमल प्रयास, कोमल चार (इद्धिपाद), ..., "कोमल आठ मार्गों" कोमल है।

"वाक्पटु व्यक्ति" की वाक्पटुता तीन प्रकार की होती है: ज्ञान से, प्रश्न पूछने से और सिद्ध करने से। विद्वान वाद-विवादकर्ता कौन होता है? यहाँ, एक विशेष प्रकार के लोग मूलतः शिक्षार्थी होते हैं: सुत्त, गेय्या, वेय्याकरण, गाथा, उदाना, इतिवुत्तक, जातक, अब्भूत धम्म, वेदल्ल, और वे अपने ज्ञान पर आधारित होकर ही अपने तर्कों का बचाव करते हैं। प्रश्न पूछने वाला वाद-विवादकर्ता कौन होता है? यहाँ, एक विशेष प्रकार का व्यक्ति अपने हितों, धार्मिक हितों, विशेषताओं, कारणों, संभावना और असंभवता के संदर्भ में प्रश्न पूछता है, और बार-बार प्रश्न पूछने के बाद ही उसे उत्तर मिलता है। सिद्ध वाद-विवादकर्ता कौन होता है? यहाँ, एक विशेष प्रकार का व्यक्ति चार प्रकार की चेतना, चार प्रकार के धर्म, चार प्रकार के आध्यात्मिक आधार, पाँच इंद्रियाँ, पाँच शक्तियाँ, सात प्रकार के ज्ञानोदय कारक, आठ प्रकार के पवित्र मार्ग, चार प्रकार के समान फल, चार प्रकार के वाद-विवाद और छह प्रकार की जादुई शक्तियों का ज्ञाता होता है। जो लोग कारण, विधि और शब्द को जानते हैं, वे ही ज्ञात कारण के आधार पर तर्क करते हैं; धम्म का तर्क ज्ञात धम्म के आधार पर किया जाता है; और शब्द का तर्क ज्ञात शब्द के आधार पर किया जाता है। इन तीनों प्रकार की बुद्धि के बारे में कोई संदेह नहीं है। बुद्धि को बाधित करने वाला, उसे प्राप्त करना, उसे पूर्णतः प्राप्त करना, उसमें प्रवेश करना, उसे प्राप्त करना, उसे प्राप्त बुद्धि की समझ में बाधा नहीं डालता; ऐसे व्यक्ति को वाद-विवाद करने में सक्षम व्यक्ति कहा जाता है। यदि उसने सीखा, प्रश्न किया और सिद्ध नहीं किया, तो वह क्या उत्तर देगा?

"अविश्वासी, वह अपवित्र नहीं होगा": "अविश्वासी," जिसने स्वयं स्वयं को स्वयं-प्रतिनिधित्वित धम्म का सिद्ध कर लिया है, वह किसी अन्य समण, ब्राह्मण, स्वर्ग, मनुष्य या ब्रह्म में विश्वास नहीं करता: "सभी कर्म अनित्य हैं," उसने स्वयं इसे सिद्ध कर लिया है..., "सभी कर्म दुखदायी हैं"..., "सभी धर्म निस्वार्थ हैं"..., "कर्म अज्ञान पर आधारित है"..., "अस्तित्व जीवन, आयु और मृत्यु पर आधारित है"..., "अज्ञान से मृत्यु अंतःस्रावी की ओर ले जाती है"..., "जन्म और मृत्यु जीवन और मृत्यु की ओर ले जाते हैं"..., "यह दुख है"..., "ये दोष हैं"..., "यह दोषों की ओर ले जाने वाला मार्ग है"..., "इन धर्मों को जानने के लिए सिद्ध किया जाना चाहिए"..., "इन धर्मों को देखा जाना चाहिए"..., "स्पर्श का एकत्रीकरण, विनाश, सुख, कष्ट, वैराग्य...", पाँच स्कंधों का एकत्रीकरण..., चार प्रमुख समूह। स्वयं के ज्ञान से ही अनायास, सुख, कष्ट, वैराग्य का औचित्य सिद्ध होता है... "धर्मों का कोई भी संग्रह धर्मों का संहार है।" जो स्वयं धर्म को जानता है, स्वयं सिद्ध हो चुका है, वह किसी अन्य समण, ब्राह्मण, स्वर्ग, मनुष्य या ब्रह्म में विश्वास नहीं करता।

भगवान बुद्ध ने कहा [SN.48.44]: "सारिपुत्त! क्या तुम्हें विश्वास है कि जब आस्था की जड़ का बार-बार अभ्यास किया जाता है, तो वह अमर आधार, अमर तट, अमरता का अंत है?; जब प्राण शक्ति की जड़..., मन की जड़..., एकाग्रता की जड़..., जब ज्ञान की जड़...?"

"हे महान गुण! यहाँ, मैं भगवान बुद्ध पर विश्वास नहीं करता कि जब आस्था की जड़..., जब जीवन शक्ति की जड़..., जब मन की जड़..., जब एकाग्रता की जड़..., जब ज्ञान की जड़..., हे महान गुण! यदि यह ज्ञात न हो, देखा न जा सके, खोजा न जा सके, प्रमाणित न हो, ज्ञान से स्पर्श न किया गया हो, तो वे अन्य लोगों के पास इस विश्वास के साथ आएंगे कि जब आस्था की जड़ का अभ्यास किया जाता है..., तो एक अमर आधार, एक अमर परलोक और एक अमर अंत होता है; परन्तु, हे महान गुण! जिन्होंने जाना है, देखा है, खोजा है, प्रमाणित किया है और ज्ञान से स्पर्श किया है, वे आश्वस्त और निर्विवाद हैं कि आस्था की जड़..., और अमरता का अंत होता है। हे महान गुण! मेरे लिए, यह ज्ञात है, देखा है, खोजा गया है, प्रमाणित है, ज्ञान से स्पर्श किया गया है, जहाँ मैं आश्वस्त और निर्विवाद हूँ कि जब आस्था की जड़..., तो एक आधार होता है...।"

"अच्छा! बढ़िया! सारिपुत्त! सारिपुत्त! यदि यह ज्ञात नहीं है, अदृश्य है, अनछुआ है, अनपरीक्षित है, ज्ञान से अछूता है, तो वे दूसरों के पास इस विश्वास के साथ आएंगे कि जब आस्था की जड़..., जब ज्ञान की जड़ का अभ्यास और अधिक अभ्यास किया जा चुका है, तो एक अमर आधार, एक अमर तट और अमरता का अंत है।"

"अविश्वासी और अज्ञात लोग, और वे जिन्होंने पुनर्जन्म को नकार दिया है, अवसर को नष्ट करने वाला और उसे त्यागने वाला, वही वास्तव में श्रेष्ठ व्यक्ति है।" [ध्म् 97]

"अविश्वासी अपवित्र नहीं होंगे": सभी अज्ञानी साधारण लोग अपवित्र हैं, भले साधारण लोग, यहाँ तक कि सात प्रकार के विद्वान भी, अपवित्र हैं, और अरहंत न तो अपवित्र हैं और न ही अपवित्रता से मुक्त हैं: जो व्यक्ति अपवित्रता से मुक्त है, उसके लिए लोभ का नाश लोभ से मुक्ति की अवस्था बन जाता है; क्रोध का नाश क्रोध से मुक्ति की अवस्था बन जाता है; भ्रम का नाश भ्रम से मुक्ति की अवस्था बन जाता है, वह व्यक्ति उस अवस्था में उतर चुका है, उसने उस व्यवहार का अभ्यास किया है... (अंतःखंडित), जन्म-मृत्यु के चक्र में, बिना पुनर्जन्म के।

89 · लाभ प्राप्त करना न सीखना, लाभ न होने पर क्रोधित न होना, शत्रुता की लालसा न रखना, और स्वाद में लालची न होना।

"लाभ की अपेक्षा न करना, या लाभ न होने पर क्रोधित होना": लाभ के लिए कैसे सीखा जाए? भिक्षुओं! यहाँ भिक्षु देखता है कि वह वस्त्र, भोजन, आश्रय, रोगियों की आवश्यकताओं और चिकित्सा संबंधी आवश्यकताओं का लाभ उठाता है। इस प्रकार सोचते हुए: "यह आदरणीय व्यक्ति वस्त्र, भोजन, आश्रय, रोगियों की आवश्यकताओं और चिकित्सा संबंधी आवश्यकताओं का लाभ किस आधार पर उठाता है?" उसने इस प्रकार सोचा: "यह आदरणीय व्यक्ति एक सूत्र शिक्षक है, जिसके कारण यह वस्त्र, भोजन, आश्रय, रोगी की आवश्यकताओं और चिकित्सा संबंधी आवश्यकताओं का लाभ उठाता है।" लाभ ही कारण है, लाभ ही स्थिति है, और लाभ की उत्पत्ति का कारण भी लाभ ही है, अतः लाभ के लिए सीखना चाहिए।

या, जब भिक्षु देखता है कि (दूसरे) भिक्षु को वस्त्र, भोजन, आश्रय, रोगी की ज़रूरतें और चिकित्सा संबंधी आवश्यक वस्तुएँ मिल रही हैं, तो वह इस प्रकार सोचता है: "इस पूज्य भिक्षु को वस्त्र, भोजन, आश्रय, रोगी की ज़रूरतें और चिकित्सा संबंधी आवश्यक वस्तुएँ किस लाभ के लिए मिल रही हैं? कौन?" वह इस प्रकार सोचता है: "यह पूज्य भिक्षु धर्म का ज्ञाता है... वक्ता है... अभिधम्म का ज्ञाता है, जिसके कारण इसे वस्त्र, भोजन, आश्रय, रोगी की ज़रूरतें और चिकित्सा संबंधी आवश्यक वस्तुएँ मिल रही हैं।" लाभ ही कारण है, लाभ ही पूर्वनियोजित है, लाभ ही लाभ की उत्पत्ति का कारण है, जिससे लाभ से वह परिचित हो जाता है और अभिधम्म सीखता है।

या, जब भिक्षु देखता है कि दूसरे भिक्षु को वस्त्र, भोजन, आश्रय, रोगी की आवश्यक वस्तुएँ और चिकित्सा संबंधी आवश्यकताएँ प्राप्त हो रही हैं, तो वह इस प्रकार सोचता है: "यह भिक्षु वस्त्र, भोजन, आश्रय, रोगी की आवश्यक वस्तुएँ और चिकित्सा संबंधी आवश्यकताएँ प्रदान करने वाला कौन है? कौन?" वह इस प्रकार सोचता है: "यह पूजनीय व्यक्ति वन में रहने वाला व्यक्ति है..., एक भिखारी है..., ...(विकल्प हटा दिया गया है, पिछले भाग देखें), वह व्यक्ति जो कहीं भी रहता है, जिसके कारण इस पूजनीय व्यक्ति को वस्त्र प्राप्त हो रहे हैं...।" लाभ ही कारण है...।

बिना लाभ के कैसे सीखें? "भिक्षुओं! यहाँ भिक्षुओं के लिए लाभ का कारण, लाभ की स्थिति, लाभ का तर्क, लाभ की उत्पत्ति, लाभ की परिपक्वता, केवल आत्म-नियमन (लाभों) के उद्देश्य से, अपने स्वयं के मौन के उद्देश्य से है, ताकि वे निर्वाण के उद्देश्य को प्राप्त कर सकें, ताकि वे शास्त्रों का अध्ययन कर सकें, वे धर्म का अध्ययन कर सकें और वे अभिधम्म का अध्ययन कर सकें।"

या फिर, भिक्षुओं को लाभ की इच्छा होती है, ..., केवल कम इच्छा, संतोष, संयम और एकांतवास के लिए; इस अवस्था के कारण, मैं वनों में रहने वाला बन जाता हूँ, ...एक भिखारी, ...।"

"और जब कुछ हासिल न हो तो गुस्सा करना," जब कुछ हासिल न हो तो गुस्सा करना कैसा होता है? यहाँ, एक खास तरह के लोग (सोचते हैं): "मुझे घर नहीं मिल रहा, या मुझे कोई समूह नहीं मिल रहा," ...(अधूरा)। वह गुस्से में है, ठुकराया हुआ है, जिद्दी है, क्रोध, घृणा और असंतोष दिखा रहा है।

जब कोई लाभ न हो तो क्रोधित न होने का क्या तरीका है? यहाँ, भिक्षु (सोचते हैं): "मुझे घर नहीं मिल रहा है..." वे क्रोधित नहीं होते, अस्वीकार नहीं करते, हठ नहीं करते, क्रोध, घृणा या असंतोष नहीं दिखाते।

"शत्रुता की प्यास या स्वाद में लोभ के बिना": "शत्रुता की प्यास," नश्वर हृदय का क्रोध, शत्रुता, घृणा, अरुचि, क्रोध, दुष्ट हृदय, आक्रामकता, क्रूर क्रोध, रोष, अप्रसन्न हृदय, यही शत्रुता कहलाती है। जिसके लिए यह क्रोध समाप्त हो जाता है, शांत हो जाता है, रुक जाता है, उत्पन्न होने में असमर्थ हो जाता है, और ज्ञान की अग्नि से जल जाता है, वह शत्रुता रहित व्यक्ति कहलाता है। "प्रेम की प्यास," रूप की लालसा, ध्वनि की लालसा, गंध की लालसा, स्वाद की लालसा, स्पर्श की लालसा, धम्म की लालसा।

स्वाद में जड़, शाखा, छिलका, पत्ता, फूल, फल, खट्टा, मीठा, कड़वा, तीखा, नमकीन, क्षारीय, कसैला, सुखद, अप्रिय, ठंडा और गर्म स्वाद होते हैं। कुछ समण और ब्राह्मण स्वाद के लोभी होते हैं। वे अपनी जीभ से सर्वोत्तम स्वाद की खोज में भटकते रहते हैं। खट्टा स्वाद मिलने पर वे खट्टापन दूर करने की इच्छा करते हैं, और खट्टापन दूर होने पर खट्टापन की इच्छा करते हैं; ...(अस्पष्ट) मिठास ...(अस्पष्ट); कड़वापन, तीखापन, नमकीन, क्षारीय; खट्टा स्वाद मिलने पर वे कसैलेपन की खोज करते हैं, कसैलेपन मिलने पर वे खट्टे स्वाद की खोज करते हैं; ...सुखद स्वाद..., अप्रिय...; ...अप्रिय..., सुखद...; ...गर्म..., ठंडा...; ...ठंडा..., गर्म। वे स्वाद की लालसा में लीन, लोभी, बंधे हुए, मोहित, दूषित, आसक्त, स्थिर होते हैं। अवरुद्ध होने के कारण, एकमात्र प्रबुद्ध व्यक्ति के लिए स्वाद, प्यास और प्रेम का अभाव हो जाता है, ... उसने भोजन का तार्किक रूप से निरीक्षण करने के बाद ग्रहण किया: "न तो सुख के लिए, न ही नशे के लिए, न ही सुंदर दिखने के लिए, न ही मान-सम्मान के लिए, बल्कि इस शरीर के अस्तित्व के लिए, हानि को रोकने के लिए और ब्रह्म का पालन-पोषण करने के लिए। इस प्रकार, मैं पूर्व भावनाओं को दूर भगाऊंगा, नई भावनाओं को जागृत नहीं होने दूंगा, स्वस्थ रहूंगा, दोषरहित रहूंगा और शांति से जीवन व्यतीत करूंगा।"

उदाहरण के लिए, यदि वह घाव पर तेल लगाता है, तो केवल मांस बढ़ाने के उद्देश्य से, या यदि वह धुरी पर तेल लगाता है, तो केवल माल परिवहन के उद्देश्य से, या यदि वह अपने पुत्र का मांस खाता है, तो केवल रेगिस्तान पार करने के उद्देश्य से। उसी प्रकार, भिक्षु ने जाँच-परख कर भोजन किया: "न तो आनंद के लिए... (छोड़ दिया) ताकि शांति से रह सकें।" उसने स्वाद की प्यासी लालसा का त्याग किया, उसे दूर भगाया, समाप्त किया और उसका अस्तित्व समाप्त कर दिया। वह स्वाद और प्यास से विरक्त हो गया है, त्याग कर चला गया है, मुक्त हो गया है, बंधन का त्याग कर गया है, वह निर्बल हृदय से जीवन व्यतीत करता है।

90 · शांत स्वभाव वाला, हमेशा सचेत रहने वाला, और स्वयं को न तो बराबर समझने वाला, न श्रेष्ठ और न ही हीन समझने वाला, उसके लिए कोई वृद्धि नहीं होती।

"शांत, सदा सचेत रहने वाला": "शांत रहने वाले" में शांति की छह शाखाएँ होती हैं: आँखों से रूप देखने के बाद, वह न तो सुखी होता है और न दुःखी, बल्कि शांति से, सचेतनता और धार्मिक ज्ञान के साथ जीवन व्यतीत करता है; कानों से ध्वनि सुनने के बाद... (विलुप्त), चेतना से धम्म का ज्ञान प्राप्त करने के बाद, ... [डीएन.33, 6]। मनभावन रूप देखने के बाद, वह इच्छा, अरुचि और लोभ उत्पन्न नहीं करता। उसका शरीर पहले से ही स्थिर होता है, उसका मन पहले से ही स्थिर होता है, वह दया से निर्मित और मुक्त होता है, और रूप देखने के बाद वह इच्छाहीन होता है, वह निराश नहीं होता, उसका मन अनियंत्रित नहीं होता, अनजाने में दुःख या द्वेष नहीं होता, उसका शरीर पहले से ही स्थिर होता है, उसका मन स्थिर होता है, और वह दया से निर्मित और मुक्त होता है। कानों से ध्वनि सुनने के बाद... (विलुप्त)।

आँखों से रूप देखने के बाद, शरीर और मन दोनों सुखद और अवांछनीय रूपों में शरीर और मन द्वारा स्थापित और मुक्त हो जाते हैं; कान से ध्वनि सुनने के बाद... [एस.एन.46.6]।

आँखों से रूप देखने के बाद, जो मोह पैदा करता है उससे मोहित मत हो, जो क्रोधित करता है उससे क्रोधित मत हो, जो मूर्खतापूर्ण है उसमें मूर्ख मत बनो, ...विमुख..., ...मस्त..., ...दूषित...; कानों से ध्वनि सुनने के बाद... जो तुम देखते हो उसमें सीमित है; जो तुम सुनते हो उसमें सीमित है; जो तुम समझते हो उसमें सीमित है; जो तुम जानते हो उसमें सीमित है [SN.35.95], जो तुम देखते हो उसमें दूषित मत हो; जो तुम सुनते हो उससे दूषित मत हो; जो तुम जानते हो उससे दूषित मत हो; और जो असंतुष्ट है, (सद्गुण) बिना हानि के, आश्रित नहीं, और जो तुम जानते हो उससे बंधा नहीं, बंधन से मुक्त, वह एक अप्रतिबंधित हृदय से जीता है; जो वह सुनता है उसके संदर्भ में... (लोप दिया गया)।

अरहंतों की आंखें होती हैं, अरहंतों की आंखें रूप देखने के लिए होती हैं, अरहंतों में कोई इच्छा नहीं होती, और अरहंतों का हृदय अच्छा और मुक्त होता है; अरहंतों के कान होते हैं, अरहंत ध्वनियों को सुनने के लिए कानों का उपयोग करते हैं, ...; ...सूंघने के लिए नाक...; ...स्वाद लेने के लिए

जीभ...; ...शरीरों से स्पर्श...; अरहंतों के इरादे होते हैं, अरहंत चेतना के साथ धर्मों को जानते हैं, और अरहंतों में लालच करने की कोई इच्छा नहीं होती, अरहंत का हृदय दयालु और मुक्त होता है [SN.35.232]।

आँखें रूप में आनंदित हैं, और अरहंत को सुलझाया गया है, संरक्षित किया गया है, नियमित किया गया है, सुरक्षित रखा गया है, और इसे नियंत्रित करना सिखाया गया है; कान ध्वनि में आनंदित हैं... ...(छोड़ा गया); (मन) धर्मों में आनंदित होता है, धर्मों में प्रसन्न होता है, और अरहंत को सुलझाया गया है, ..., और इसे आत्म-नियंत्रण सिखाया गया है [एम.एन.75]।

"वश में किया हुआ (नियंत्रित) (हाथी) सभा में लाया जाता है, राजा वश में किए हुए (हाथी) पर सवार होता है; जो व्यक्ति वश में किया गया है, वह लोगों में सर्वोच्च विजेता है, वह जो अपमान सहता है।"

पालतू बनाया गया खच्चर असाधारण होता है, और महान सिंधी घोड़े, और बड़े दांतों वाले हाथी, महान हाथी; स्वयं को वश में करने वाले लोग तो और भी बेहतर होते हैं।

इन पर सवार होकर कोई उस दिशा में नहीं जाता, जहाँ कोई पहुँच नहीं सकता, जैसे कोई वश में किया हुआ व्यक्ति स्वयं को वश में करके जाता है। [ध्वप.321-323]

“वे हर प्रकार के अहंकार में अडिग हैं, मुक्त होकर पुनर्जन्म प्राप्त कर चुके हैं, उन्होंने सुस्थापित साम्राज्यवादी स्थिति प्राप्त कर ली है, वे संसार के विजेता हैं।” [SN.22.76]

“जिन्होंने अपने भीतर और बाहर, संसार में अपनी जड़ों को मजबूत किया है, वे इस और अन्य लोकों को भेदते हैं। जब वे मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे होते हैं, तब वे ही सर्वथा वश में होते हैं।” [सं. 3.6, 521]

“शांत स्वभाव वाला व्यक्ति हमेशा (सचेत) रहता है”: “हमेशा,” हमेशा, सब कुछ; ...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)। “सचेत,” चार प्रकार से सचेत: ...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें); उसे सचेत कहा जाता है।

“दुनिया में बराबरी की उम्मीद न करना”: न जन्म से, न उपनाम से... (छोड़ा गया)।

“न श्रेष्ठ और न ही हीन”: ...(हटा दिया गया)।

“उसके लिए कोई वृद्धि नहीं है”: “उसके लिए,” अरहंत के लिए, उन लोगों के लिए जिन्होंने अपने सारे कष्ट समाप्त कर दिए हैं। “वृद्धि,” सात प्रकार की वृद्धि होती है: लोभ, घृणा, अज्ञान, अहंकार, दृष्टि, अपव्यय, कर्म; उसके लिए ये वृद्धि विद्यमान नहीं हैं, ज्ञात नहीं हैं, खोजी नहीं जा सकतीं, समाप्त हो चुकी हैं, विच्छेदित हो चुकी हैं, शांत हो चुकी हैं, रुक चुकी हैं, उत्पन्न होने में असमर्थ हैं, ज्ञान की अग्नि से भस्म हो चुकी हैं।

91 · उसके लिए निर्भरता की कोई अवस्था नहीं है: धम्म को जानने के बाद, वह एक अनासक्त व्यक्ति बन जाता है, चाहे वह हो या न हो, उसके लिए प्यास नहीं पाई जाती।

“उसके लिए कोई निर्भरता नहीं है”: “उसके लिए,” अरहंत के लिए, वे लोग जिन्होंने अपने सारे कष्ट समाप्त कर दिए हैं। “निर्भरता,” निर्भरता दो प्रकार की होती है: लालसा की निर्भरता और दृष्टि की निर्भरता... उसके लिए, प्यास की निर्भरता कट गई है, ..., ज्ञान की अग्नि से जलकर भस्म हो गई है।

“धम्म को जानने के बाद, वह अनासक्त हो जाता है”: “जानने के बाद,” जानने के बाद, समझने के बाद... “सभी कर्म अनित्य हैं” जानने के बाद... “सभी कर्म दुखदायी हैं”... “सभी धर्म अनात्ममय हैं”... “धर्मों का कोई भी संग्रह विनाश है”... “अनासक्त” के लिए दो प्रकार की निर्भरताएँ हैं: तृष्णा की निर्भरता और दृष्टि की निर्भरता... प्यास का त्याग करने के बाद, देखने पर आँखों का पालन न करने के बाद... कानों का...

“अस्तित्व की प्यास उसके लिए नहीं है”: “प्यास,” रूप की प्यास, ध्वनि की प्यास... “उसके लिए,” अरहंत के लिए... “अस्तित्व की प्यास,” अस्तित्व की प्यास, होने की प्यास। “या नहीं,” मृत्यु को देखना। “अस्तित्व के लिए,” बार-बार अस्तित्व, बार-बार रुचि, बार-बार पुनर्जन्म, बार-बार व्यक्तिगत उद्भव। उसके लिए, प्रेम करना या न करना, अस्तित्वहीन है, ज्ञात नहीं है, खोजा नहीं गया है, कट गया है, अलग हो गया है, शांत हो गया है, रुक गया है, उठने में असमर्थ है, ज्ञान की अग्नि से झुलस गया है।

92 · मैं कहता हूँ “वह मौन है”: वह जिसकी इच्छा में कोई अपेक्षा नहीं है, उसकी विभिन्न गांठें नहीं पाई जातीं, उसने प्रेम (प्यास) को पार कर लिया है।

मैं कहता हूँ कि वह 'मौन' है: मौन वह है जो शांत, स्थिर और विश्राम करता है। मैं उसके बारे में कहता हूँ, उसके बारे में बताता हूँ, उसके बारे में बात करता हूँ, उसकी व्याख्या करता हूँ, उसके बारे में बोलता हूँ।

“जिनकी इच्छाओं में कोई अपेक्षा नहीं होती”: “इच्छा,” दो प्रकार की इच्छाएँ होती हैं: ... वस्तुओं की इच्छा को जानने के बाद, त्यागने के बाद, छोड़ने के बाद, दूर भगाने के बाद, अंत के बाद, उसे अस्तित्वहीन बनाने के बाद, जब वस्तुओं की इच्छा में कोई अपेक्षा नहीं रहती, तो वह त्यागी हुई, खारिज की हुई, समाप्त हो जाती है; जो लोभ से मुक्त हो गए हैं, जिन्होंने लोभ का त्याग कर दिया है, जिन्होंने लोभ को छोड़ दिया है, जो भूखे नहीं हैं, जो शांत हो गए हैं, जो प्रसन्न हैं, और जो ब्राह्मण के रूप में जीवन व्यतीत करते हैं।

“उसकी गांठें नहीं खोजी गईं”: “गांठें,” चार प्रकार की गांठें हैं: ...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)। “उसकी,” अरहंत की, ... “उसकी गांठें नहीं खोजी गईं”: उसके लिए, गांठें अस्तित्वहीन, अज्ञात, अनखोजी हैं, उन्हें काट दिया गया है...।

“उसने प्रेम को पार कर लिया है”: प्रेम को प्यास कहा जाता है, जो लालच है... “प्रेम को पार कर लिया,” प्रेम क्या है? “फैलाव” प्रेम के लिए है; “विस्तार” प्रेम के लिए है; ...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)। “उसने प्रेम को पार कर लिया है”: इस प्रेम की प्यास को उसने पार कर लिया है, उससे आगे निकल गया है, उसे पार कर लिया है, उससे ऊपर उठ गया है, उस पर विजय प्राप्त कर ली है।

93 · उसके बेटे, पशुधन, खेत और घर नहीं मिलते, कुछ भी प्राप्त या अस्वीकृत, वह उसमें नहीं मिलता।

“उसके पुत्र, पशुधन, भूमि और घर नहीं मिलेंगे”: “नहीं” नकारात्मक है। “उसका,” अरहंत का, जिसके कष्ट समाप्त हो गए हैं। “पुत्र,” चार प्रकार के पुत्र हैं: स्वयं से जन्मे पुत्र, खेत में जन्मे पुत्र, दत्तक पुत्र और प्रशिक्षु पुत्र। “पशुधन,” बकरी और भेड़, मुर्गी और सुअर, हाथी, गाय, घोड़ा और खच्चर। “खेतों” में धान के खेत शामिल हैं, ...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)। “गृहस्थी” से तात्पर्य आवासीय घरों, गोदाम के सामने वाले आंगन के घरों, पिछवाड़े वाले घरों, बगीचे वाले घरों और आवासीय भूमि से है। “उसका पुत्र, पशुधन, भूमि और गृहस्थी नहीं मिलेंगे”: पुत्र के प्रति उसका लगाव, या पशुधन के प्रति लगाव, या भूमि के प्रति लगाव, या गृहस्थी के प्रति लगाव, वे मौजूद नहीं हैं, और ज्ञात नहीं हैं, अज्ञात हैं, कटे हुए हैं, ...।

“उसमें किसी भी चीज़ को प्राप्त करना या अस्वीकार करना नहीं पाया जाता”: “प्राप्त” उसका अपना दृष्टिकोण है, “अस्वीकृत” एक निर्णय है; उसने “प्राप्त” को नहीं धारण किया है, “अस्वीकृत” को नहीं; जो ग्रहण नहीं किया गया है वह मुक्ति के लिए नहीं है, और जो मुक्ति के लिए नहीं है वह ग्रहण नहीं किया गया है; अरहंत वह है जिसने ग्रहण और मुक्ति, और वृद्धि और पतन को पार कर लिया है, वह वह है जो उस अवस्था में उतर गया है, वह जिसने... (विलुप्त) पुनर्जन्म के बिना जीवन और मृत्यु के चक्र का अभ्यास किया है।

95 · साधारण लोग, समण, ब्राह्मण, दूसरों के बारे में क्या कहा जा सकता है, जिसके लिए इसका कोई महत्व नहीं है, इसलिए वह कही गई बातों के बारे में विचलित नहीं होता।

“साधारण लोगों, समणों और ब्राह्मणों, आप दूसरों के बारे में क्या कह सकते हैं?”: “साधारण लोग,” ...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)। “समण,” .... “ब्राह्मण,” जो भी दूसरों को मित्र कहता है। “साधारण लोगों, समणों और ब्राह्मणों, वे दूसरों से क्या कह सकते हैं?” साधारण लोग लोभ से कह सकते हैं; जो घृणा से कह सकता है; जो अज्ञान से कह सकता है; जो अहंकार से कह सकता है; जो भी देखकर कह सकता है; जो भी उत्साह से कह सकता है; जो भी संदेह से कह सकता है; जो कोई यह कह सकता है कि वह “संक्रमित,” या “घृणित,” या “अज्ञानी,” या कष्टों की अंतर्निहित प्रवृत्ति से “बंधा हुआ” है, जो “आसक्ति में आ जाता है,” या “विचलित हो जाता है,” या “असंतोष में आ जाता है,” या “धैर्य में आ जाता है,” जिनके कर्म नष्ट हो गए हैं, और जिन्होंने हित की अवस्था का त्याग कर दिया है, क्या वह यह कह सकता है कि वह “नरक में गिरा हुआ व्यक्ति,” या “पशुवत व्यक्ति,” या “भूखा प्रेतलोक व्यक्ति,” या “मनुष्य,” या “स्वर्ग,” या “रूपहीन व्यक्ति,” या “विचारशील,” या “विचारहीन,” या “न विचारशील और न विचारशील” है? उसके पास कोई कारण नहीं है, कोई पूर्वनिर्धारित स्थिति नहीं है, कोई ऐसा कारक नहीं है जिसके द्वारा वह बोल सके, कह सके, बात कर सके, समझा सके और चर्चा कर सके।

“जिसका महत्व नहीं समझा जाता”: “उसके लिए,” अरहंत के लिए, उन लोगों के लिए जिन्होंने अपने सारे कष्ट भोग लिए हैं। “महत्व,” ध्यान देने के दो प्रकार होते हैं... उसके लिए प्यास का महत्व समाप्त हो गया है... (अंशित भाग देखें)।

इसलिए वह कही गई बातों के बारे में विचलित नहीं होता: इसलिए... कही गई बातों के बारे में: फटकार, आरोप, निंदा, प्रशंसा या निंदा; वह नहीं डगमगाता, नहीं डगमगाता, नहीं हिलता, नहीं कांपता, नहीं थरथराता, और न ही बहुत कांपता है।

95 · जो लोभ से मुक्त और कंजूस नहीं हैं, मुनि यह नहीं कहेंगे कि वे श्रेष्ठ हैं, न ही समतुल्य हैं, न ही हीन हैं, और जो निर्माण नहीं करते वे निर्माणों तक नहीं पहुँचते।

“जो लोभ से मुक्त हो और कंजूस न हो”: भोग को लोभ कहते हैं, यह लोभ है... उसके लिए यह लोभ समाप्त हो जाता है... उसे लोभ से मुक्त कहा जाता है, वह देखने में लोभी नहीं होता... (छोड़ा गया); ब्राह्मण के रूप में निवास करना। “कंजूस न होना” और “बचत करना”, कंजूसी पाँच प्रकार की होती है:... समाप्त होने पर... उसे कंजूस न होने वाला कहा जाता है।

“मुनि यह नहीं कहेंगे कि वे श्रेष्ठों में हैं, न ही समानों में और न ही हीन में”: “मुनि,” .... “श्रेष्ठ,” या “मैं समान हूँ,” या “मैं हीन हूँ” वे नहीं कहते, नहीं बताते, नहीं बोलते, नहीं समझाते, नहीं कहते।

“जो सृजन नहीं करता, वह सृजन तक नहीं पहुँचता”: “संयोजन” के दो रूप होते हैं: इच्छा का सृजन और दृष्टि का सृजन... उसके लिए, प्यास का सृजन समाप्त हो गया है... वह नहीं आता, नहीं पहुँचता, नहीं ग्रहण करता, नहीं थामता, नहीं चिपकता। सृजन तक न पहुँचना। “निष्पादक,” “संयोजन,” दो प्रकार के सृजन होते हैं..., वह न तो सृजन करता है, न उत्पन्न करता है, न जन्म देता है, न उत्पन्न करता है।

96 · उसके लिए संसार में कुछ भी अपना नहीं है, और वह उस चीज़ के लिए शोक नहीं करता जो अस्तित्व में नहीं है, धर्मों में चले बिना, उसे वास्तव में "मौन" कहा जाता है।

“उसके लिए संसार में कोई नहीं है”: अरहंत के अनुसार, “उसके लिए संसार में कोई नहीं है।” उसके लिए, रूप, भावना, विचार, कर्म, चेतना जैसी कोई चीज नहीं है, जिसके बारे में वह सोचे कि “यह मेरा है, या यह किसी और का है।” जिसे पकड़ा जा सके, जिससे चिपका जा सके, जिससे जुड़ा जा सके, जिसे लिया जा सके, जिस पर विश्वास किया जा सके, वह नहीं है, उसका अस्तित्व नहीं है..., ज्ञान की अग्नि से झुलसा हुआ।

“वह उन चीजों के लिए शोक नहीं करता जो अस्तित्व में नहीं हैं”: वह उन चीजों के लिए शोक नहीं करता जो बदल गई हैं: “मेरी आँखें बदल गई हैं” वह दुखी नहीं है; “मेरे कान..., मेरी नाक..., जीभ, शरीर, मन, रूप, आवाजें, गंध, स्वाद, स्पर्श, धर्म, घर, समूह, निवास, लाभ, प्रतिष्ठा, प्रशंसा, सुख, वस्त्र, ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)...” वह दुखी नहीं है, थका हुआ नहीं है, रो नहीं रहा है, सीना पीटकर रो नहीं रहा है, और भ्रमित नहीं हो रहा है।

या, स्पर्श किए जाने पर, यातना दिए जाने पर, मिश्रित होने पर, झूठे कष्टों से ग्रसित होने पर, वह दुखी नहीं होता, थका हुआ नहीं होता, रोता नहीं है, चिल्लाता और विलाप नहीं करता, भ्रमित नहीं होता: स्पर्श किए जाने पर, यातना दिए जाने पर, मिश्रित होने पर, नेत्र रोगों से ग्रसित होने पर, वह दुखी नहीं होता...; ...कान के रोग से...; ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

या फिर, उस अस्तित्वहीन, अज्ञात और अनदेखे (विचार) में: "आह! जो मेरा था, वह सचमुच चला गया। अगर मेरा कुछ था भी, तो वह भी मुझे नहीं मिला।" वह दुखी नहीं है, ...

"धर्मों में न जाना": इच्छा में न जाना, घृणा में न जाना, अज्ञान में न जाना, भय में न जाना, लोभ के कारण न जाना, घृणा के कारण न जाना, आसक्ति के कारण न जाना, दृष्टि के कारण न जाना, त्याग के कारण न जाना, संदेह के कारण न जाना, संभावित कष्टों के कारण न जाना, धर्मों की वाणी से बहक न जाना, बहक न जाना।

"उसे सचमुच 'मौन' कहा जाता है": वह मौन है, रुका हुआ है, शांत है, शीतल है, मौन है। इसलिए उसे इसी नाम से पुकारा जाता है, कहा जाता है, बताया जाता है, समझाया जाता है, वर्णन किया जाता है।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> निद्देसा >> निद्देसा 1.11

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

<<<< पिछला अगला >>>>

11. झगड़े और बहस

97 · इतने सारे झगड़े और बहसें, रोना, उदासी और कंजूसी कहाँ से आती हैं? अहंकार, घमंड और फूट कहाँ से आती हैं? आइए! कृपया मुझे इसके बारे में बताइए।

"जहाँ बहुत झगड़े और बहसें होती हैं": "झगड़े" एक ही व्यवहार पर आधारित झगड़े होते हैं, और "बहसें" भी वैसी ही होती हैं। जो भी बहस करता है, वह झगड़ा है; जो भी बहस करता है, वह बहस है। या दूसरे शब्दों में, बहस को झगड़े का पहला भाग कहा जाता है। राजा राजा से बहस करता है, क्षत्रिय क्षत्रिय से बहस करता है, ब्राह्मण ब्राह्मण से बहस करता है, गृहस्वामी गृहस्वामी से बहस करता है, माता पुत्र से बहस करती है, पुत्र माता से बहस करता है, पिता पुत्र से बहस करता है, पुत्र पिता से बहस करता है, भाई भाई से बहस करता है, भाई बहनों से बहस करते हैं, बहनें भाइयों से बहस करती हैं, मित्र मित्रों से बहस करते हैं [एम.एन.13]। झगड़ा क्या है? जो घर में गुटबाजी के शौकीन होते हैं, वे अपने शरीर और शब्दों से झगड़ा करते हैं, और जो नियमों का उल्लंघन करते हैं, वे अपने शरीर और शब्दों से झगड़ा करते हैं।

"कहाँ इतने झगड़े और बहसें होती हैं?": "कहाँ इतने झगड़े और बहसें होती हैं? ये कहाँ से शुरू होती हैं? कहाँ से उत्पन्न होती हैं? कहाँ पैदा होती हैं? इनके कारण क्या हैं? इनका सार क्या है? इनका जन्म कहाँ से हुआ? इनकी जड़ क्या है?" उन्होंने झगड़े और बहस की जड़ के बारे में पूछा; उन्होंने कारण के बारे में पूछा; उन्होंने उत्पत्ति के बारे में पूछा; उन्होंने उत्पत्ति के बारे में पूछा; उन्होंने पूछा और प्रतीक्षा की; उन्होंने पोषण के बारे में पूछा; उन्होंने भाग्य के बारे में पूछा; उन्होंने सार के बारे में पूछा; उन्होंने दृढ़ता से पूछा, विनती की, निवेदन किया और स्पष्टीकरण मांगा।

"रोना, शोक और कंजूसी": "रोना," ...(हटा दिया गया, पिछले अनुभाग देखें)। "शोक," ...(हटा दिया गया, पिछले अनुभाग देखें)। "कंजूसी," ...(हटा दिया गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"अभिमान और अभिमान के साथ निंदा (विभाजनकारी भाषण)": "अभिमान," ...(हटा दिया गया, पिछले अनुभाग देखें)। "अभिमान," ...(हटा दिया गया, पिछले अनुभाग देखें)। "विभाजनकारी भाषा," ...(हटा दिया गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"ये सब इतनी मात्रा में कहाँ से आते हैं? आइए! कृपया मुझे इसके बारे में बताइए": ये आठ प्रकार के प्रदूषण, "झगड़ा, बहस, रोना, उदासी, कंजूसी, अहंकार, घमंड और फूट डालने वाली बातें," इतनी अधिक मात्रा में कहाँ से आते हैं? इनका जन्म कहाँ होता है? ये कहाँ से उत्पन्न होते हैं? ...(अधूरा)। इसकी जड़ क्या है? उन्होंने इन आठ प्रकार के प्रदूषण की जड़ों के बारे में पूछा; उन्होंने कारण पूछा; ...(अधूरा)... "ये कहाँ से आते हैं? आइए! कृपया बताइए": आइए! कृपया बताइए, कृपया समझाइए, कृपया सिखाइए, कृपया जानकारी दीजिए, कृपया निर्माण कीजिए, कृपया उजागर कीजिए, कृपया विश्लेषण कीजिए, कृपया स्पष्ट कीजिए।

98 · जो सुंदर है, उससे अनेक झगड़े और बहसें होती हैं, रोना, उदासी और कंजूसी, अहंकार, घमंड, और फूट डालने वाली बातें, झगड़े और बहसें कंजूसी से जुड़ी होती हैं, और विवाद उत्पन्न होने पर फूट डालने वाली बातें होती हैं।

"सुंदरता से बहुत सारे झगड़े, रोना, उदासी और कंजूसी भी होती है": "सुंदरता," दो प्रकार की होती है: ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

वे सुंदर वस्तुओं की चोरी होने के संदेह पर झगड़ा करते हैं, चोरी होने पर भी झगड़ा करते हैं, और चोरी हो जाने के बाद भी झगड़ा करते हैं; ...(अंशित भाग देखें)।

"अहंकार, घमंड और फूट डालने वाले शब्द": सुंदर वस्तुओं पर निर्भरता उन्हें अहंकारी बनाती है; सुंदर वस्तुओं पर निर्भरता उन्हें घमंडी बनाती है। सुंदर वस्तुओं पर निर्भरता उन्हें अहंकारी कैसे बनाती है? "हम मनभावन रूपों, ध्वनियों, गंधों, स्वादों और स्पर्शों के प्राप्तकर्ता हैं।" यह सुंदर वस्तुओं के साथ अहंकार का उत्पादन है। सुंदर वस्तुओं पर निर्भरता घमंड कैसे पैदा करती है? "हम मनभावन रूपों के प्राप्तकर्ता हैं, ..., और ये अन्य लोग मनभावन रूपों के प्राप्तकर्ता नहीं हैं, ...।" यह सुंदर वस्तुओं पर निर्भरता उन्हें घमंडी बनाती है। "फूट डालने वाली बातें," ...(हटा दिया गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"झगड़े और बहस कंजूसी से जुड़े हैं": झगड़ा, बहस, रोना, शोक, अहंकार, घमंड और फूट डालने वाली बातें; ये सात अशुद्धियाँ आपस में जुड़ी हुई हैं, मजबूती से जुड़ी हुई हैं और पूरी तरह से जुड़ी हुई हैं।

"और जब कोई विवाद उत्पन्न होता है, तो फूट डालने वाले शब्द होते हैं": जब कोई विवाद उत्पन्न होता है, जब वह जन्म लेता है, जब वह प्रकट होता है, तो वह विभाजन पैदा करता है: वह यहाँ से सुनता है और वहाँ बोलता है ताकि इन लोगों को अलग कर सके, ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

99 · संसार में सुंदरता का कारण कहाँ है? संसार में लालच कहाँ घूम रहा है? इच्छा और पूर्ति का कारण कहाँ है? क्या किसी को अगला जीवन मिलेगा?

"दुनिया में सुंदरता कहाँ से आती है?": "सुंदरता कहाँ से आती है? इसका जन्म कहाँ होता है? ...(अंशित)। इसकी जड़ क्या है?" उन्होंने सुंदरता के बारे में पूछा... (अंशित)।

"जो भी लोभी है, वह संसार में घूमता है": यहाँ "जो..." से तात्पर्य क्षत्रिय, ब्राह्मण, वेस, शुद्ध, गृहस्थ परिवार, भिक्षु, स्वर्ग और मनुष्य से है। "लोभ" सभी लोभ, इच्छा और प्यास की अवस्था है, लोभी, दूषित, कलंकित और अस्वस्थ होने की अवस्था है। "घूमना" का अर्थ है चलना, जीना, कर्म करना, आगे बढ़ना, रक्षा करना और जीवित रहना। "संसार में" का अर्थ है दुख के संसार में, मानव जाति के संसार में, स्वर्ग के संसार में, समुच्चय के संसार में, लोकों के संसार में, स्थानों के संसार में।

“इच्छा और पूर्ति का कारण कहाँ है?”: “इच्छा और पूर्ति का कारण कहाँ है? वे कहाँ से उत्पन्न होते हैं? ...(अस्पष्ट)। इसकी जड़ क्या है?” उन्होंने इच्छा और पूर्ति की जड़ के बारे में पूछा... (अस्पष्ट)। “जिसका अगला जीवन है”: जिस किसी के पास आधार, आश्रय, शरण, वापसी का स्थान, पूर्णता और अगला जीवन है।

100 · संसार में सुंदरता का कारण इच्छा है, हर लालची व्यक्ति संसार में घूमता है, इच्छा और पूर्ति ही यहाँ से कारण है, हर किसी का परलोक है।

“संसार की सुंदरता का कारण इच्छा है”: “इच्छा,” इच्छाओं की सभी इच्छाएँ, इच्छाओं का लोभ, इच्छाओं का आनंद, इच्छाओं की प्यास, इच्छाओं का प्रेम, इच्छाओं का आकर्षण, इच्छाओं की चिंता, इच्छाओं का जुनून, इच्छाओं की बाढ़, इच्छाओं का बंधन, इच्छाओं से आसक्ति, इच्छाओं का आवरण। इसके अतिरिक्त, पाँच प्रकार की इच्छाएँ होती हैं: खोज की इच्छा, प्राप्ति की इच्छा, ग्रहण करने की इच्छा, संचय करने की इच्छा और खर्च करने की इच्छा। खोज की इच्छा क्या है? यहाँ, एक विशेष प्रकार का व्यक्ति ग्रहणशील, आशावान और जन्म लेने की इच्छा रखने वाला होता है। वह सभी रूपों..., सभी ध्वनियों..., सभी गंधों..., सभी स्वादों..., सभी स्पर्शों की खोज करता है। यही सभी खोज की इच्छा है। प्राप्ति की इच्छा क्या है? यहाँ, एक विशेष प्रकार का व्यक्ति ग्रहणशील, आशावान और जन्म लेने की इच्छा रखने वाला होता है। वह सभी रूपों...(अधूरा) को ग्रहण करता है। यह प्राप्ति की इच्छा है। उपयोग करने की इच्छा क्या है? यहाँ, एक विशेष प्रकार का व्यक्ति ग्रहणकर्ता, आशावान और आकांक्षी है। वह रूप ग्रहण करता है... यह उपयोग करने की इच्छा है। संचय का इरादा क्या है? यहाँ, एक विशेष प्रकार का व्यक्ति ठीक वही है जो ग्रहण करता है, आशावान है, जन्म लेने की इच्छा रखता है, वह संपत्ति का संचय करने वाला है (यह सोचते हुए): “विपदाएँ तो आएंगी।” यह संचय करने की इच्छा है। खर्च करने का इरादा क्या है? यहाँ, एक विशेष प्रकार का व्यक्ति ग्रहणकर्ता, आशावान और उत्तरजीवी है। वह अपना धन हाथी सैनिकों, घुड़सवार सैनिकों, रथ सैनिकों, धनुर्धारियों और पैदल सेना पर खर्च करता है (यह सोचते हुए): “ये मेरी रक्षा करेंगे, मेरी सुरक्षा करेंगे और मेरी सेवा करेंगे।” यह खर्च करने की इच्छा है। “सुंदर,” दो प्रकार के सुंदर होते हैं: सजीव प्राणी या कर्म... (छोड़ा गया)। “संसार में सुंदर इच्छा ही उसका कारण है”: सुंदर इच्छा ही उसका कारण है; इच्छा ही उसका संग्रह है; इच्छा ही उसका जन्म है; इच्छा ही उसकी जड़ है।

“लालची हर कोई संसार में घूमता है”: “क्या...” क्षत्रिय, ब्राह्मण, ...(हटा दिया गया)। “लालच,” सभी लालच की अवस्था, ...(हटा दिया गया)। “घूमना,” चलना, जीना, ...। “संसार में”: दुख के संसार में...।

“इच्छा और उसकी पूर्ति यहाँ कारण है”: इच्छा को लालसा कहा जाता है, जो लोभ है, ..., ये अस्वस्थ मूल हैं। “पूर्ति” यहाँ, जब एक विशेष प्रकार का व्यक्ति विभिन्न रूपों की खोज करता है, तो उसे वह रूप प्राप्त होता है और वह उस रूप से परिपूर्ण हो जाता है; ...ध्वनियाँ..., गंध..., स्वाद..., स्पर्श, (...धर्म)..., ...घर..., समूह..., आवास, लाभ, प्रतिष्ठा, प्रशंसा, वस्त्र, भोजन, आवास, रोगियों की आवश्यकताएँ और चिकित्सा संबंधी आवश्यकताएँ, सूत्र, धम्म, अभिधम्म, वनवास, नियमित भिक्षावृत्ति, गोबर साफ करने वाले वस्त्र, केवल तीन वस्त्र, द्वितीय भिक्षावृत्ति, भोजन के बाद भोजन न करना, अक्सर बैठना (लेटना नहीं), प्रथम ध्यान, द्वितीय ध्यान, तृतीय ध्यान, चतुर्थ ध्यान, शून्य की असीमता में निवास करना (पाँचवाँ/प्रथम अमूर्त), चेतना की असीमता में निवास करना (छठा), शून्यता में निवास करना (सातवाँ), न तो बोध में और न ही अबोध में निवास प्राप्त करना (आठवाँ)।

“इच्छाओं से खेतों की जुताई करने वाला, इच्छाओं से बीज बोने वाला, इच्छा से व्यापार शुरू करने वाला, समुद्र के पार माल ढोने वाला, जो भी इच्छाओं के सहारे खड़ा रहता है, (यह सोचते हुए) 'मेरी इच्छा पूरी हो।'” [थाग.530]

किसी इच्छा की पूर्ति को पूर्णता (पूर्ति) कहते हैं। "इच्छा और उसकी पूर्ति यहीं से शुरू होती है": इच्छा और उसकी पूर्ति यहीं से शुरू होती है; कामना ही उसका सार है; कामना ही उसका जीवन है; कामना ही उसकी जड़ है।

“जिस किसी का भी परलोक (अगला जीवन) हो”: ...(हटा दिया गया)।

101 · तो संसार में इच्छा का कारण कहाँ है? और अनेक निर्णय कहाँ से आते हैं? क्रोध, झूठे वचन और संदेह, तथा समणों द्वारा कहे गए अन्य सभी धर्म कहाँ से आते हैं?

“तो फिर संसार में इच्छा का स्रोत कहाँ है?”: “इच्छा कहाँ से आती है? यह कहाँ से उत्पन्न होती है? ...(अधूरा)” वह इच्छा के मूल के बारे में पूछता है...

“और इतने सारे निर्णय कहाँ से आते हैं?”: “निर्णय कहाँ से आते हैं? उनका जन्म कहाँ होता है?...” उन्होंने निर्णय के मूल के बारे में पूछा...

“क्रोध, झूठे शब्द और संदेह”: क्रोध तो क्रोध ही है, ...(अंशित, पिछले अनुभाग देखें)। झूठे शब्दों को झूठ कहते हैं, संदेह को शंका कहते हैं।

“और सभी धर्म जिनका उल्लेख समणों ने किया है”: “और सभी (धर्म),” वे सभी जो क्रोध और असत्य में बोले जाते हैं, संदेह के साथ चलते हैं, सहअस्तित्व में रहते हैं, आपस में घुलमिल जाते हैं, मेल खाते हैं और एक ही निर्भरता स्थान, एक ही लक्ष्य रखते हैं, इन्हें “और सभी धर्म” कहा जाता है। या, अन्य प्रकार के वे सभी अपवित्रताएँ जो अन्य सहभागिता से दूषित होती हैं, इन्हें भी “और सभी धर्म” कहा जाता है। “समणों द्वारा वर्णित,” वे समण जिन्होंने बुराई को शांत किया है, वे ब्राह्मण जिन्होंने बुराई का त्याग किया है, वे भिक्षु जिन्होंने अपवित्रता की जड़ों को नष्ट किया है, वे जिन्होंने सभी बुराई और अस्वास्थ्यकर जड़ों को मुक्त किया है, जिन्होंने कहा, समझाया, सिखाया, बताया, स्थापित किया, उजागर किया, विश्लेषण किया और व्याख्या की।

102 · दुनिया में, वे जिसे "वांछनीय" या "अवांछनीय" कहते हैं, वे इच्छा उत्पन्न करने के लिए उस पर निर्भर करते हैं, भौतिक रूप के अस्तित्व और गैर-अस्तित्व को देखने के बाद, लोग दुनिया में निर्णय लेते हैं।

“इस दुनिया में जहाँ वे 'वांछनीय, अवांछनीय' कहते हैं”: “वांछनीय,” सुखद और वांछनीय बातें। “अवांछनीय,” कष्टदायक और अवांछनीय बातें। “इस दुनिया में, वे जो कुछ भी कहते हैं,” वे जो कुछ भी कहते हैं, वे जो कुछ भी बताते हैं, ...

“इच्छा उत्पन्न करने के लिए उस पर भरोसा करो”: वांछनीय और अवांछनीय पर भरोसा करो; सुख और दुख पर भरोसा करो; सुख और दुःख पर भरोसा करो; वांछनीय और अवांछनीय पर भरोसा करो; घृणा के बाद प्रेम पर भरोसा करो, इच्छा उत्पन्न होती है, घटित होती है, उत्पन्न होती है और जन्म लेती है।

“अस्तित्वहीनता और रूप में अस्तित्व को देखने के बाद”: “रूप में,” चार महा तत्व और उन चार महा तत्वों से निर्मित रूप। रूप का अस्तित्व क्या है? सभी रूपों का अस्तित्व, उत्पत्ति, सृजन, जन्म और प्रकट होना ही रूप का अस्तित्व है। रूप का अस्तित्वहीनता क्या है? सभी रूपों का विलुप्त होना, अपव्यय, विनाश, असंयम, अनित्यता और लुप्त होना ही रूप का अस्तित्वहीनता है। “अस्तित्वहीनता और रूप में अस्तित्व को देखने के बाद”: रूप में अस्तित्व और अस्तित्वहीनता को देखने, मापने, परखने, अलग करने और स्पष्ट करने के बाद।

“संसार में लोग निर्णय लेते हैं”: “निर्णय” दो प्रकार के होते हैं: भोग-विलास का निर्णय और प्रत्यक्ष निर्णय। भोग-विलास का निर्णय क्या है? यहाँ, किसी विशेष प्रकार के व्यक्ति में जो गुण उत्पन्न नहीं हुआ है, वह उत्पन्न नहीं होता, और जो गुण उत्पन्न हो चुका है, वह समाप्त हो जाता है। उसने इस प्रकार सोचा: “मेरा अजन्मा (न उत्पन्न) गुण क्यों नहीं उत्पन्न होता, और जो गुण उत्पन्न हो चुका है, वह समाप्त क्यों हो जाता है?” उसने फिर सोचा: “शराब, फल मदिरा और शराब पीने के कारण मेरा अजन्मा गुण उत्पन्न नहीं होता, और जो गुण उत्पन्न हो चुका है, वह समाप्त हो जाता है; जो साधक समय के अनुकूल न रहने वाले मार्ग पर चलता है, उसका अजन्मा गुण उत्पन्न नहीं होता, और जो धन उत्पन्न हुआ है, वह सब जगह चला जाता है; जो साधक प्रदर्शन में समय बिताते हैं..., जो साधक जुआ और आराम में लिप्त रहते हैं..., जो साधक बुरे मित्रों की संगति में रहते हैं..., जो साधक आलस्य में लिप्त रहते हैं...।” [डीएन.31] ऐसा बुद्धिमानी से करने के बाद, वह छह गुणों की विफलताओं के करीब नहीं पहुँचता; छह गुणों के लाभों के करीब पहुँचना, यह उत्सुकता का निर्णय है।

या फिर वह खेत जोतता है, या खरीद-फरोख्त करता है, या मवेशी चराता है, चोरी करता है, या सरकारी सेवा करता है, या अन्य कौशल का उपयोग करता है, जो प्यास का भी एक निर्णय है। देखने का निर्णय क्या है? यहाँ, जब आँखें प्रकट होती हैं, तो वह अनुभव करता है (जानता है): “मेरा सच्चा स्वरूप प्रकट हुआ है।” जब उसकी आँखें लुप्त हो जाती हैं, तो वह अनुभव करता है: “मेरा सच्चा स्वरूप लुप्त हो गया है; मेरा सच्चा स्वरूप चला गया है।” यह देखने का निर्णय है। जब कान..., नाक..., जीभ..., शरीर..., रूप..., ध्वनि..., स्वाद..., गंध... प्रकट होते हैं... यह भी देखने का निर्णय है; वह इसे प्रकट करता है, उत्पन्न करता है, जन्म देता है। “मनुष्य” सभी प्राणी हैं, ... “संसार में”: ...

103 · क्रोध, झूठे शब्द और संदेह (उत्पन्न होते हैं) जब दो प्रकार के धर्म होते हैं, संदेही को इसे ज्ञान के मार्ग पर सीखना चाहिए; इसे जानने के बाद, धर्मों की व्याख्या समणों द्वारा की जाती है।

"क्रोध, झूठे शब्द और संदेह": "क्रोध"..., झूठे शब्दों को झूठ कहा जाता है, संदेह को शंका कहा जाता है। वांछित कार्यों के बाद क्रोध उत्पन्न होता है; अवांछित वस्तुओं पर निर्भरता के बाद भी क्रोध उत्पन्न होता है। अवांछित कार्यों पर निर्भरता के बाद झूठ उत्पन्न होता है; ...(अस्पष्ट)। संदेह...(अस्पष्ट)।

अवांछित मामलों पर निर्भर रहने के बाद क्रोध कैसे उत्पन्न होता है? अवांछित मामलों पर निर्भर रहने के बाद स्वाभाविक रूप से क्रोध उत्पन्न होता है: "वह मेरे विरुद्ध रहा है... (अंश छोड़ दिया गया है, पिछले अनुभाग देखें)।"

किसी वांछित कार्य पर निर्भर रहने के बाद क्रोध कैसे उत्पन्न होता है? लूटपाट की आशंका होने पर क्रोध उत्पन्न होता है, ...

अवांछित मामलों पर निर्भर रहने के बाद झूठी बातें कैसे उत्पन्न होती हैं? यहाँ, एक विशेष प्रकार का व्यक्ति हथकड़ियों में जकड़ा हुआ है, और उस विरक्ति के लिए जानबूझकर व्यर्थ बातें कहता है..., या रस्सियों से बंधा हुआ है..., या बेड़ियों से बंधा हुआ है..., या लताओं से बंधा हुआ है..., या बेलों से बंधा हुआ है..., या बेड़ियों में जकड़ा हुआ है..., या बाड़ की बेड़ियों से बंधा हुआ है..., या गाँवों, कस्बों, शहरों और देशों की बेड़ियों से बंधा हुआ है..., या इलाके की बेड़ियों से बंधा हुआ है, इन बेड़ियों से मुक्त होने के लिए वह जानबूझकर झूठ बोलता है।

आप अपनी इच्छा के आधार पर झूठी बातें कैसे बोलते हैं? यहाँ, एक विशेष प्रकार के लोग जानबूझकर मनचाहे रूप, मनचाही गंध आदि के लिए व्यर्थ बातें करते हैं, रोगी की ज़रूरतों और चिकित्सा संबंधी आवश्यकताओं के लिए वे जानबूझकर व्यर्थ शब्द बोलते हैं।

अवांछित मामलों पर निर्भरता के बाद संदेह कैसे उत्पन्न हो सकता है? "क्या मेरी आंखों की बीमारी ठीक हो जाएगी? क्या मेरी आंखों की बीमारी ठीक नहीं होगी? क्या मेरे कान की समस्या ठीक हो जाएगी? ...(अधूरा)।"

मनचाही बातों पर भरोसा करने के बाद संदेह कैसे उत्पन्न हो सकता है? "क्या मुझे मनचाहा रूप मिलेगा? क्या मुझे मनचाहा रूप नहीं मिलेगा?..."

"जब दो प्रकार होते हैं, तब ये धर्म होते हैं": जब सुखद और अप्रिय होते हैं; जब सुख और दुख होते हैं; जब आनंद और शोक होते हैं; जब अभाव और अभाव होते हैं; जब प्रेम और घृणा होती है, जब यह ज्ञात होता है, और जब (दोनों) मौजूद होते हैं।

"संदेह करने वाले को ज्ञान के मार्ग पर चलना चाहिए": ज्ञान ही ज्ञान का मार्ग है; ज्ञान का विषय भी ज्ञान का मार्ग है; ज्ञान से उत्पन्न होने वाला धम्म भी ज्ञान का मार्ग है, जैसे पवित्र मार्ग पवित्र मार्ग है; स्वर्ग का मार्ग स्वर्ग का मार्ग है; ब्राह्मण का मार्ग ब्राह्मण मार्ग है; ज्ञान ही ज्ञान का मार्ग है; ज्ञान का विषय भी ज्ञान का मार्ग है; ज्ञान से उत्पन्न होने वाला धम्म भी ज्ञान का मार्ग है।

"अधिगम," अधिगम तीन प्रकार का होता है: ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"संदेही व्यक्ति को ज्ञान के मार्ग पर सीखना चाहिए": संशयी व्यक्ति, वह व्यक्ति जिसे संदेह, भ्रम और झिझक है, ज्ञान तक पहुँचने के लिए, ज्ञान प्राप्त करने के लिए और ज्ञान की गवाही देने के लिए, उसे और अधिक सीखना चाहिए... (छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"जानने के बाद, धम्म की व्याख्या समणों द्वारा की जाती है": "जानने के बाद," जानने के बाद, ..., कहा गया, समझाया गया, ...: "सभी कर्म अनित्य हैं" जानने के बाद, ...; "सभी कर्म दुखदायी हैं"...; "सभी धर्म निस्वार्थ हैं"...; "अज्ञान पर आधारित कर्म है"...; "जीवन पूर्वनिर्धारित अवस्था है, और वृद्धावस्था और मृत्यु है"...; "अज्ञान और मृत्यु के साथ, कर्म और मृत्यु है"...; "जन्म और मृत्यु से, वृद्धावस्था और मृत्यु है"...; "यह दुख है"...; "यह दुख की ओर ले जाने वाला मार्ग है"...; "ये कष्ट हैं"...; "यह कष्टों की ओर ले जाने वाला मार्ग है"...; "इन धर्मों को सिद्ध किया जाना चाहिए"...; "इन धर्मों को जाना जाना चाहिए"...; "इन धर्मों का त्याग किया जाना चाहिए"...; "इस धर्म का अभ्यास किया जाना चाहिए"...; "इस धर्म की गवाही दी

जानी चाहिए"...; छह स्पर्श बिंदुओं का संग्रह, विनाश, सुख, कष्ट और त्याग... पांच समुच्चय...; चार प्रमुख...; "धर्मों का कोई भी संग्रह विनाश है," जानने के बाद, ..., कहे जाने के बाद, ...।

भगवान बुद्ध ने कहा: "भिक्षुओं! मैं धर्म का उपदेश ज्ञान के साथ देता हूँ, ज्ञान के बिना नहीं; मैं धर्म का उपदेश कारण और स्थिति के साथ देता हूँ, कारण और स्थिति के बिना नहीं; मैं धर्म का उपदेश दिव्य रूपांतरण के साथ देता हूँ, दिव्य रूपांतरण के बिना नहीं, भिक्षुओं! जब मैं धर्म का उपदेश ज्ञान के साथ देता हूँ, तब उपदेश दिया जाना चाहिए; उपदेश दिया जाना चाहिए, भिक्षुओं! यही आपके लिए संतुष्ट, प्रसन्न और आनंदित होने के लिए पर्याप्त है: भगवान बुद्ध प्रबुद्ध हैं, धर्म अच्छा है, और संघ वह है जो अच्छाई के अनुसार चलता है।" [एएन.3.126] और जब यह भाष्य कहा गया, तो दस हजार लोक कांप उठे [डीएन.1]।

104 · वांछनीय और अवांछनीय का कारण क्या है? जब कोई चीज अस्तित्व में नहीं होती, तो क्या वह अस्तित्वहीन हो जाती है? अस्तित्वहीनता और अस्तित्व का सत्य क्या है? कृपया मुझे इसका कारण बताइए।

"मनभावन और अवांछनीय का कारण क्या है?": "मनभावन और अवांछनीय का कारण क्या है? वे कहाँ से उत्पन्न होते हैं?..." वह सुखद और अवांछनीय के मूल कारणों की खोज करता है...।

"जब कोई चीज अस्तित्व में नहीं होती, तो ये चीजें अस्तित्व में नहीं होतीं": जब कोई चीज अस्तित्व में नहीं होती, जब वह ज्ञात नहीं होती, तो वे चीजें अस्तित्व में नहीं होतीं; जब वांछनीय और अवांछनीय चीजों की खोज नहीं होती, तो वे अस्तित्व में नहीं होतीं, घटित नहीं होतीं, उत्पन्न नहीं होतीं, पैदा नहीं होतीं, जन्म नहीं लेतीं।

"अस्तित्वहीनता और अस्तित्व का सत्य": वांछनीय और अवांछनीय अस्तित्व क्या है? कोई भी वांछनीय और अवांछनीय अस्तित्व और घटना, उत्पन्न होती है, जन्म लेती है, घटित होती है और प्रकट होती है। यही वांछनीय और अवांछनीय का अस्तित्व है। अवांछनीय और अवांछनीय का अस्तित्वहीनता क्या है? वांछनीय और अवांछनीय का विनाश, विघटन, अनित्यता और लुप्त होना। वांछनीय और अवांछनीय का अस्तित्वहीनता। "यह सत्य क्या है," जो भी सर्वोच्च सत्य है।

"कृपया मुझे बताइए कि इसका कारण कहाँ है": "यह," मैं जो कुछ भी पूछता हूँ; ...(अंशित)। "कृपया मुझे बताइए," कृपया मुझे बताइए, ...(अंशित)। "कारण कहाँ से है," कारण कहाँ है, संग्रह कहाँ है, जन्म कहाँ है, जड़ कहाँ है।"

105 · वांछनीय और अवांछनीय, स्पर्श ही कारण हैं, और ये तब अस्तित्व में नहीं होते जब स्पर्श अस्तित्व में नहीं होता, अस्तित्वहीनता और अस्तित्व का सत्य, मैं तुम्हें बताता हूँ कि यही कारण है।

"सुखद और अनपेक्षित स्पर्श (संपर्क) इसका कारण है": वह स्पर्श जिससे सुख का अनुभव होना चाहिए, आनंद उत्पन्न करता है, और उस सुखद स्पर्श का विलुप्त होना उस भावना के अनुरूप है: सुख उत्पन्न करने वाले स्पर्श का आनंद नष्ट हो जाता है; वह शांत हो जाता है। पीड़ा उत्पन्न करने वाले स्पर्श से पीड़ा उत्पन्न होती है, और उस पीड़ा का विलुप्त होना उस भावना के अनुरूप है: पीड़ा उत्पन्न करने वाले स्पर्श से उत्पन्न पीड़ा नष्ट हो जाती है; वह शांत हो जाती है। यह भावना के कारण है कि वह स्पर्श जो पीड़ादायक या अप्रिय नहीं है, उत्पन्न होता है, और उस स्पर्श का विलुप्त होना पीड़ादायक या अप्रिय नहीं होना चाहिए। उस भावना के अनुरूप जो महसूस की जानी चाहिए: यह भावना के कारण है कि वह स्पर्श जो पीड़ादायक या अप्रिय नहीं है, उत्पन्न होता है; पीड़ादायक या सुखद न होने के कारण उसका विनाश होता है; वह शांत हो जाता है। "सुखद और अनपेक्षित संपर्क इसका कारण है": सुखदायक और अनपेक्षित संपर्क इसका कारण है; संपर्क इसका संग्रह है; संपर्क इसका जन्म है; संपर्क इसकी जड़ है।

"जब स्पर्श का अस्तित्व नहीं होता, तब इनका अस्तित्व नहीं होता": जब स्पर्श का अस्तित्व नहीं होता, जब इसका ज्ञान नहीं होता, तब इनका अस्तित्व नहीं होता; जब यह पाया नहीं जाता, तब वांछनीय और अवांछनीय का अस्तित्व नहीं होता, वे घटित नहीं होते, उत्पन्न नहीं होते, पैदा नहीं होते, प्रकट नहीं होते।

“अस्तित्वहीनता और अस्तित्व का कारण”: अस्तित्व का दृष्टिकोण ही कारण है; अस्तित्वहीनता का दृष्टिकोण भी कारण है। “यह सत्य” सर्वोच्च सत्य है।

“मैं तुमसे कहता हूँ, यहीं से कारण है”: “यह,” तुम जो भी पूछो; .... “मैं कहता हूँ,” मैं कहता हूँ, ... “यहीं से कारण है,” यहीं से: स्पर्श ही इसका संग्रह है; स्पर्श ही इसका जन्म है; स्पर्श ही इसकी जड़ है।

106 · तो संसार में स्पर्श का कारण क्या है? और अनेक वस्तुएँ कहाँ से आती हैं? जब जो अस्तित्व में नहीं है, क्या उसका कोई आत्म-धारणा नहीं है? जब जो लुप्त हो गया है, क्या उसका कोई स्पर्श नहीं है?

“तो दुनिया में स्पर्श का कारण क्या है?” “स्पर्श की उत्पत्ति कहाँ से होती है?...” उसने स्पर्श के मूल के बारे में पूछा;...

“और ये सारी चीजें कहाँ से आती हैं?”: “चीजें कहाँ से आती हैं? उनका जन्म कहाँ होता है?...” उन्होंने सभी चीजों के मूल के बारे में पूछा;...

“जब जो अस्तित्व में नहीं है, तब क्या आत्म-आसक्ति (स्वयं की गलत धारणा से चिपके रहना) नहीं होती?”: जब कोई चीज अस्तित्व में नहीं होती, तो वह तब अस्तित्व में नहीं होती जब वह ज्ञात नहीं होती; जब आत्म-आसक्ति अस्तित्व में नहीं होती, तो वह ज्ञात नहीं होती, ..., ज्ञान की अग्नि से जलकर।

“जब कोई चीज लुप्त हो जाती है, तो क्या उसका स्पर्श नहीं रहता”: जब कोई चीज लुप्त हो जाती है; जब उसका अस्तित्व नहीं रहता; जब वह पार हो जाती है; जब वह गुजर जाती है; जब उस पर विजय प्राप्त कर ली जाती है, तो उसका स्पर्श नहीं रहता।

107 · संपर्क नाम और रूप के कारण होता है, चाहने का कारण अधिकार है, जब चाहत अस्तित्वहीन होती है तो कोई आत्म-लगाव नहीं होता, और जब रूप स्पष्ट होता है तो स्पर्श नहीं हो सकता।

“संपर्क नाम और रूप के कारण होता है”: नेत्र-चेतना आँख और रूप से उत्पन्न होती है। तीनों मिलते हैं और स्पर्श करते हैं। आँख और रूप में मौजूद रूप (रूप से संबंधित रूप), नेत्र संपर्क के अतिरिक्त, नाम में भी संगत धर्म होते हैं (नाम से संबंधित), इसलिए यह नाम और रूप के बीच संपर्क के कारण होता है। कान... नाक... जीभ... शरीर... (मन-)चेतना मन और धर्म के कारण उत्पन्न होती है। जब तीनों मिलते हैं, तो संपर्क होता है। (मन) पदार्थ में है। निर्मित धर्म पदार्थ में हैं। नाम में संगत धर्म हैं, इसलिए यह नाम और रूप के बीच संपर्क के कारण होता है।

“इच्छा का कारण अधिकार है”: इच्छा को लालसा कहा जाता है, जो लोभ है... “संपत्ति” दो प्रकार की अधिकारिताएँ हैं: प्यास की अधिकारिताएँ और दृष्टि की अधिकारिताएँ... “इच्छा का कारण अधिकारिताएँ हैं”: हर चीज इच्छा को अपना कारण, इच्छा को अपना कारण, इच्छा को अपनी स्थिति और इच्छा को अपना मूल मानती है।

“जब चाहत का अस्तित्व नहीं होता, तब आत्म-आसक्ति नहीं होती”: चाहत को व्याकुलता कहते हैं, ... आत्म-आसक्ति दो प्रकार की होती है: .... “जब चाहत का अस्तित्व नहीं होता, तब आत्म-आसक्ति नहीं होती”: जब चाहत का अस्तित्व नहीं होता, वह ज्ञात नहीं होती, उसकी खोज नहीं होती, तब आत्म-आसक्ति का अस्तित्व नहीं होता..., वह कट जाती है..., ज्ञान की अग्नि से जल जाती है।

“जब रूप समझ में आ जाता है, तब स्पर्श नहीं रहता”: “रूप,” ...(अंशित)। “जब रूप समझ में आ जाता है,” तो रूप के चारों रूप समझ में आ जाते हैं: जानना, समझना, मापना, काटना और गुजरना। जो ज्ञात है, उसके आधार पर कैसे समझा जाए? वह रूप को जानता है: “कोई भी रूप, सभी रूप चार महान तत्व हैं और चार महान तत्वों से निर्मित हैं।” वह जानता है; जब वह देखता है, तो उसे जानने और समझने से स्पष्टता मिलती है।

मापन और समझ के माध्यम से कैसे समझा जाए? ऐसा करने के बाद, वह रूप को क्षणभंगुर, कड़वा, बीमार, ट्यूमर, तीर, अभिशाप, रोग, दूसरी ओर, भ्रष्ट, आपदा, बुराई, आतंक, विपत्ति, गति, नाशवान, अस्थिर, आश्रयहीन, शरणहीन, वापसीहीन, अनिच्छुक, पाखंडी, खाली, निस्वार्थ, दोष,

परिवर्तन, झूठा, दुर्भाग्यपूर्ण मूल, हत्यारा, कुछ नहीं, कष्टदायक, आशाजनक, जादुई भोजन (लालच), जन्म विधि, वृद्धावस्था विधि, रोग विधि, मृत्यु विधि, शोक और निराशा विधि, प्रदूषण विधि, सभा (सभा), विलुप्ति, सुख, कष्ट और त्याग के रूप में मापता है; इस प्रकार मापन और समझ के माध्यम से समझा जा सकता है।

रूप के विदारण से कैसे स्पष्टता प्राप्त होती है? इस प्रकार विचार करने के बाद, रूप की इच्छा, लोभ, को त्याग दिया जाएगा, दूर भगा दिया जाएगा, समाप्त कर दिया जाएगा और उसका अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। भगवान बुद्ध ने कहा: "भिक्षुओं! रूप के प्रति सभी इच्छाएँ और लोभ का विदारण हो जाएगा। इस प्रकार, वह रूप और उसकी जड़ें कट जाएँगी, जैसे बिना जड़ों वाला ताड़ का पेड़ भविष्य में अस्तित्वहीन और निर्जीव हो जाता है।" [SN.22.25] इस प्रकार, रूप के विदारण से स्पष्टता प्राप्त होती है।

रूप से परे जाकर कैसे समझा जा सकता है? चार निराकार लोकों में, रूपों को प्रकट (विलुप्त) किया जाता है, प्रकट (नष्ट) किया जाता है, उनसे होकर गुजरा जाता है, उन्हें पार किया जाता है और उन पर विजय प्राप्त की जाती है, जिससे होकर गुजरने पर वे प्रकट होते हैं। इन चार व्यवहारों से ही इसे समझा जा सकता है।

"जब रूप समझ लिया जाता है, तो उसे छुआ नहीं जा सकता": जब रूप समझ लिया जाता है; जब वह स्पष्ट हो जाता है; जब उसे पार कर लिया जाता है; जब उस पर विजय प्राप्त कर ली जाती है, तो उसे छुआ नहीं जा सकता: आँख का संपर्क, कान का संपर्क, नाक..., जीभ, शरीर।

108 · रूप को कैसे समझा जाए (उस पर विजय कैसे पाई जाए)? सुख और दुख को कैसे समझा जाए (उस पर विजय कैसे पाई जाए)? कृपया मुझे इस बारे में बताएं (समझने (विजय पाने) के लिए। हम यह जान लें: यही मेरा उद्देश्य है।

"रूप को कैसे समझा जाए (उस पर विजय कैसे पाई जाए)?": "यह कैसे है?" यह कैसे है; व्यक्ति का तरीका क्या है; क्रिया क्या है; व्यक्ति की गतिविधियाँ क्या हैं; बचाव क्या है; अंत क्या है; इसे स्पष्ट रखने वाला व्यक्ति कैसा है; पार किया जाना; पकड़ा जाना; पराजित होना।

"सुख और दुख को कैसे समझें": सुख और दुख को कैसे समझें; इसे स्पष्ट करें; बाधाओं का सामना करें; उन पर विजय प्राप्त करें।

"कृपया मुझे समझ के बारे में यह बताएं": "यह," मैं जो भी पूछूं; .... "कृपया मुझे बताएं," "कृपया मुझे बताएं, ..." "समझ के बारे में," समझने के बारे में, इसे स्पष्ट करने के लिए, पार करने के लिए, पर काबू पाने के लिए।

"क्या हम यह जान सकते हैं: मेरा यही इरादा है": "क्या हम यह जान सकते हैं," क्या हम यह जान सकते हैं; हमें जानने दो; क्या हम निश्चित रूप से जान सकते हैं; क्या हम इससे गुजर सकते हैं। "क्या यही मेरा इरादा है," क्या यही मेरा इरादा है; क्या यही मेरा हृदय है; क्या यही मेरी चेतना है।

109 · वह ऐसा व्यक्ति है जो बोध के द्वारा नहीं सोचता, ऐसा व्यक्ति जो इच्छा के द्वारा नहीं सोचता, और ऐसा व्यक्ति जो (सोचते हुए) गायब नहीं होता, यह उसके लिए स्पष्ट करता है, क्योंकि झूठे नाम को कारण माना जाता है।

"वह ऐसा व्यक्ति है जो प्रत्यक्ष अनुभव से नहीं सोचता, और न ही इच्छा से सोचता है": प्रत्यक्ष अनुभव से सोचने वाले व्यक्ति को साधारण जीवन जीने की इच्छा रखने वाला कहा जाता है, परन्तु वह साधारण जीवन जीने की इच्छा रखने वाला व्यक्ति नहीं है। जिसके मन में ये विचार आते हैं, उसे पागल और भ्रमित मन वाला व्यक्ति कहा जाता है, परन्तु वह न तो पागल है और न ही भ्रमित हृदय वाला व्यक्ति है।

"और न ही वह जो (विचार करते हुए) विलीन हो जाता है": जो विलीन नहीं होना चाहते, उन्हें विलीन होने वाले और विचारहीन कहा जाता है, परन्तु वह न तो विलीन होने वाला है और न ही विलीन न होना चाहता है। जो विलीन होना चाहता है, उसे चार निराकार (अमूर्त ध्यान) में निवास करने वाला कहा जाता है, परन्तु वह चार निराकार में निवास करने वाला नहीं है।

"रूप को समझने का यही तरीका है": यहाँ, भिक्षु चौथे ध्यान में प्रवेश करने के बाद विमुख हो जाता है... (उद्धृत) जब मन इतना तल्लीन, पूर्णतः शुद्ध, पवित्र और निर्मल, अपवित्र, लचीला, कर्म के योग्य, स्थिर या स्थिर अवस्था में होता है, असीम शून्य को प्राप्त करने के लिए, वह निथार होकर अपना मन निराकारता की ओर मोड़ लेता है। यही वह है; इसी प्रकार; कर्ता ऐसा है; आगे बढ़ने वाला ऐसा है; रक्षक ऐसा है; रक्षक ऐसा है; रक्षक स्पष्ट है; इसे स्पष्ट करो; पार किया जाए; पार किया जाए; परास्त किया जाए।

"क्योंकि झूठा नाम ही इसका कारण है": झूठ का नाम झूठा है: लालसा का झूठा नाम, दृष्टि का झूठा नाम, अहंकार का झूठा नाम; सोच ही इसका कारण है; चाहत ही इसका संग्रह है; चाहत ही इसका जन्म है; सोच ही इसकी जड़ है।

110 · हम आपसे जो भी पूछते हैं, आप हमें बताते हैं; हम आपसे कुछ और पूछना चाहते हैं, आइए! कृपया इसके बारे में बताइए, क्या यहाँ के कुछ ज्ञानी पुरुष इस विषय पर बताते हैं: सर्वोपरि (सर्वोत्तम) यक्ष (आत्मा) की शुद्धता, या वे कुछ और (अलग) कहते हैं?

"हम आपसे जो भी पूछते हैं, आप हमें बताते हैं": हम आपसे जो भी पूछते हैं, ... "आप हमें बताते हैं," आपने कहा, ...

"हम आपसे कुछ और बातें पूछना चाहते हैं, आइए! कृपया इसके बारे में बताइए": हम आपसे कुछ और बातें पूछना चाहते हैं; .... "आइए! कृपया इसके बारे में बताइए," आइए! कृपया बताइए; कृपया समझाइए; ....

"क्या यहाँ कुछ ज्ञानी पुरुष इस क्षेत्र के बारे में बताते हैं: सर्वोपरि यक्ष की शुद्धता है (Sn के अनुवादों में आम तौर पर 'यक्ष' के स्थान पर 'आत्मा' का प्रयोग किया जाता है, जो शाब्दिक रूप से नहीं लिखा गया है, लेकिन शायद यही सही आशय है)": कुछ समण और ब्राह्मण कहते हैं, बताते हैं, चर्चा करते हैं, व्याख्या करते हैं कि यह निराकारता आदि ही सर्वोपरि, श्रेष्ठ और सर्वोच्च है। "यक्ष," चेतन प्राणी... "शुद्ध," शुद्ध, स्वच्छ, सर्वत्र शुद्ध; वैराग्य, मुक्ति, विरक्ति। "यहाँ के ज्ञानी पुरुष," यहाँ के ज्ञानी वक्ता, दृढ़ वचन वाले, विधियाँ, तर्क, गुण और आधार रखने वाले, और अपने मतों को सिद्ध करने वाले।

"क्या वे अन्य बातों की चर्चा कर रहे हैं?": या क्या कुछ समण और ब्राह्मण जो निराकारता से होकर गुजरते हैं, उसे पार करते हैं, उस पर विजय प्राप्त करते हैं और बोलने, बताने, समझाने आदि की प्रतीक्षा करते हैं, वे यह कहते हैं कि इस निराकारता आदि के अलावा अन्य उच्चतर यक्ष भी हैं? क्या वे पूर्णतः शुद्ध, निर्मल, मुक्त और विरक्तिशील हैं?

111 · कुछ बुद्धिमान लोग इस क्षेत्र के बारे में बताते हैं: यक्खा की पहली (सर्वोत्तम) शुद्धता, लेकिन कुछ ऐसे भी हैं जो कुशल होने का दावा करते हैं, और वे कहते हैं कि कोई अवशेष नहीं है।

"यहाँ कुछ ऋषि हैं जो इस विषय पर चर्चा करते हैं: यक्ष की प्रथम शुद्धता": कुछ समण और ब्राह्मण हैं जो निरंतर आलोचक हैं। वे कहते हैं, बताते हैं, चर्चा करते हैं, व्याख्या करते हैं, कहते हैं कि यह निराकार है, इत्यादि। प्रथम, सबसे विजयी, असाधारण, सबसे श्रेष्ठ, शीर्ष। "यक्ष," चेतन प्राणी, ... "शुद्ध," .... "यहाँ के ज्ञानी पुरुष," ....

लेकिन उनमें से कुछ जो कुशल होने का दावा करते हैं, वे उन लोगों के बारे में बताते हैं जो विलुप्त हो चुके हैं और जिनका कोई अवशेष नहीं है। वे समण और ब्राह्मण जो विनाश के सिद्धांत का प्रचार करते हैं और जिन्हें कोई भय नहीं है। वे किसी बात पर प्रसन्न नहीं होते। वे "सभी जीवित प्राणियों के मौन, शांति, समाप्ति, विलुप्ति, ठहराव" के बारे में बताते हैं: जो भी सच्चे आत्म के शरीर के विघटन के बाद से अलग होकर लुप्त हो गया है, वह मृत्यु के बाद अस्तित्वहीन हो जाता है, और इस स्थिति में उसका कोई अवशेष नहीं रहता। "कुशल की घोषणा करते हुए," कुशल वक्ता, बुद्धिमान वक्ता, ...

112 · यह जानने के बाद कि "ये आश्रित हैं," निर्भरता जानने के बाद, अन्वेषक, मुनि, यह जानने के बाद, वह एक मुक्त व्यक्ति बन जाता है, वह तर्कों में नहीं पड़ता, और बुद्धिमान व्यक्ति सभी प्रकार की चीजों (अस्तित्वों) से नहीं मिलता।

“यह जानते हुए कि ‘ये आश्रित हैं’”: “ये” बुरे विचारों वाले हैं। “भरोसा करना,” यह जानने के बाद कि “(ये) आश्रित हैं;” यह जानने के बाद कि “निर्णय पर भरोसा करना;” यह जानने के बाद कि “अक्सर जो देखा जाता है उस पर भरोसा करना,” यह समझने के बाद कि वह तौलता है, तौलता है, न्याय करता है, अलग करता है, स्पष्ट करता है।

“यह जानने के बाद, मुनि निर्भरता के संदर्भ में एक प्रेक्षक हैं”: “मुनि,” ...(छोड़ा गया, पिछले खंड देखें)। मुनि यह जानने के बाद कि “(ये) सामान्य हैं; जब वह “निर्णयों के अनुसार” जान लेते हैं; जब वह “सामान्य निर्णयों के अनुसार” जान लेते हैं, तो वे समझते हैं, ... “वे एक निरीक्षक हैं,” वे एक बुद्धिमान व्यक्ति हैं, एक प्रबुद्ध व्यक्ति हैं, और एक विशिष्ट व्यक्ति हैं। “जानने के बाद, वे तर्क करने नहीं आएंगे”: जानने के बाद, समझने के बाद, ... “मुक्त,” जो दयालु और मुक्त हैं, वे वास्तव में उनसे आसक्ति न रखने के कारण मुक्त हैं: “सभी कर्म अनित्य हैं।” यह जानने के बाद कि..., मुक्त होकर, अनासक्त होकर, पूर्णतः वियोग मुक्त होकर, परम राहत प्राप्त होती है, मुक्त व्यक्ति अंततः किसी भी चीज़ से आसक्ति न रखने के कारण ही मुक्त होता है; “सभी कर्म दुखदायी हैं”..., “सभी धर्म निस्वार्थ हैं”..., “सभी धर्म एक अंत हैं”...। “वह वाद-विवाद करने नहीं आता,” वह झगड़ा नहीं करता, बहस नहीं करता, विवाद नहीं करता, अवहेलना नहीं करता। भगवान बुद्ध ने कहा: “अग्गिवेसना! ऐसा मुक्त भिक्षु किसी भी बात से असहमत नहीं होता, संसार की किसी भी बात पर बहस नहीं करता, आसक्ति नहीं रखता।” [एमएन.74]

“ज्ञानी व्यक्ति सभी प्रकार की चीजों (अस्तित्वों) से नहीं मिलता”: “सभी प्रकार की चीजों से,” कर्म और इच्छाओं से, कर्म और इच्छाओं से, और रूपों से, निराकार अस्तित्व के साथ विद्यमान कर्म से, निराकार अस्तित्व के साथ कर्म से, और बार-बार होने वाले जन्म से, बार-बार होने वाले व्यथा से, बार-बार होने वाले पुनर्जन्म से, और व्यक्ति के बार-बार होने वाले पुनर्जन्म से सामंजस्य नहीं होगा। एकत्र करना, पकड़ना नहीं, थामना नहीं, आसक्ति नहीं। “ज्ञानी व्यक्ति,”...

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> निद्देसा >> निद्देसा 1.12

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

<<<< पिछला अगला >>>>

12. छोटा दर्रा

113 · जो लोग इसे धारण करने के बाद भी अपने-अपने मतों में बने रहते हैं, उनके बारे में कुशल लोग कहते हैं: जो कोई इसे जान लेगा, वह धम्म को जान लेगा, और जो कोई इसे अस्वीकार करता है, वह अपूर्ण है।

“अपने ही विचारों में स्थिर रहने वाले”: कुछ समण और ब्राह्मण बुरे विचारों वाले होते हैं। जब वे बासठ बुरे विचारों में से किसी एक को अपना लेते हैं, पकड़ लेते हैं, धारण कर लेते हैं और उससे चिपके रहते हैं, तो वे अपने-अपने विचारों में रहते हैं, साथ रहते हैं, निवास करते हैं और बने रहते हैं, जैसे कि परिवार में रहना, पापी व्यक्ति का पाप में रहना, या अपवित्र करने वाले का अपवित्रता में रहना। इसी प्रकार, कुछ समण और ब्राह्मण बुरे विचारों वाले होते हैं, जब वे बासठ बुरे विचारों में से किसी एक को अपना लेते हैं, पकड़ लेते हैं, धारण कर लेते हैं और उससे चिपके रहते हैं, तो वे अपने-अपने विचारों में रहते हैं, साथ रहते हैं, निवास करते हैं और बने रहते हैं।

“समझने के बाद, कुशल लोग हर तरह की बातें बताते हैं”: “समझने के बाद,” समझने, थामने, उठाने, पकड़ने के बाद, वे हर तरह की बातें बताते हैं; वे कई तरीकों से बताते हैं; वे आपस में मतभेद रखते हैं; वे व्यक्तिगत रूप से जानकारी देते हैं; वे अलग-अलग तरीके से जानकारी देते हैं (बोलते हैं), वे बताते हैं, वे बात करते हैं, वे समझाते हैं, वे कहते हैं। “कुशल लोग,” कुशल वक्ता, ...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)।

जो कोई इस मार्ग को जानता है, वह धम्म को खोज लेता है: जो कोई इस मार्ग को जानता है, वह धम्म को खोज लेता है: जो कोई इस मार्ग को जानता है, वह मार्ग को समझता है, जानता है, देखता है और उसमें प्रवेश करता है।

"जो इसे अस्वीकार करता है वह अपूर्ण है": जो कोई भी इस धम्म, दृष्टिकोण, मार्ग और पथ को अस्वीकार करता है वह अपूर्ण है; वह अपूर्ण है; वह हीन, नीच, घटिया, तुच्छ इरादे वाला, महत्वहीन है।

114 · इस तरह बोलने के बाद, उन्होंने बहस की, और कहा "विरोधी मूर्ख है, अकुशल है," तो इन वक्ताओं में से कौन सा सत्य है? क्योंकि ये सभी लोग कुशल होने का दावा करते हैं।

"इस तरह धारण करने के बाद, वे बहस करते हैं": इस तरह धारण करने के बाद, समझने के बाद, ..., वे बहस करते हैं, झगड़ा करते हैं, विवाद करते हैं और अवहेलना करते हैं: "आप इस धम्म को नहीं जानते, (छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)..., कृपया इसे तोड़ दें, यदि आप कर सकते हैं।"

और कहते हैं, 'विरोधी मूर्ख है, अकुशल है': "विरोधी मूर्ख है, हीन है, नीच है, घटिया है, तुच्छ इरादे वाला है, महत्वहीन है, अकुशल है, अज्ञानी है, नासमझ है और उदासीन है।" (वे) इसे इस तरह कहते हैं; इस तरह बताते हैं; इस तरह बात करते हैं; इस तरह समझाते हैं; इस तरह कहते हैं।

"तो इन लोगों में से कौन सा वक्ता सत्य है?": इन समणों और ब्राह्मणों में से कौन सा वक्ता सत्य, ईमानदार, तथ्यात्मक, सही और भ्रामक नहीं है?

"क्योंकि ये सभी लोग स्वयं को कुशल वक्ता होने का दावा करते हैं": ये सभी समण और ब्राह्मण कुशल वक्ता हैं, बुद्धिमान वक्ता हैं, ...

115 · यदि वह विरोधी के धम्म को नहीं पहचानता, तो वह मूर्ख है, मूर्ख है, नीच है, सभी मूर्ख और नीच बुद्धिमान हैं: ये सभी लोग अपने-अपने विचारों में रुके हुए हैं।

"यदि आप विरोधी के धम्म को स्वीकार नहीं करते": जब आप विरोधी के धम्म, दृष्टिकोण, मार्ग, पथ को स्वीकार नहीं करते, समर्थन नहीं करते, सहमत नहीं होते, अनुसरण नहीं करते।

"वह मूर्ख है, मूर्ख है, नीच आदमी है": विरोधी मूर्ख है, हीन है, आदि, नासमझ है, कम बुद्धिमान है, निम्न स्तर का बुद्धिमान है, महत्वहीन बुद्धिमान है।

"ये सब मूर्ख हैं, अत्यंत नीच बुद्धिमान हैं": ये समण और ब्राह्मण सब मूर्ख हैं, निम्न कोटि के हैं, ...

"ये सभी लोग अपने विचारों को देखने में ही रुक गए हैं": ये सभी समण और ब्राह्मण बुरे विचारों को देखने वाले हैं। बासठ बुरे विचारों में से किसी एक को अपनाकर, उससे चिपककर, उसे ग्रहण करके, उससे चिपके रहकर, वे अपने ही विचारों में लीन रहते हैं, जैसे घर में परिवार के साथ रहना...। इसी प्रकार, ये सभी समण और ब्राह्मण बुरे विचारों को देखने वाले हैं...।

116 · परन्तु यदि तुम अपने ही दृष्टिकोण से निर्दोष (शुद्ध) हो जाते हो, तो तुम पूर्णतः शुद्ध, बुद्धिमान, कुशल और सजग हो, तब उन लोगों में कोई हीन व्यक्ति (बुद्धि में) नहीं है, क्योंकि उन लोगों का दृष्टिकोण इसी प्रकार पूर्ण है।

लेकिन यदि तुम अपने ही दृष्टिकोण से निर्दोष हो जाओ (यह सकारात्मक या नकारात्मक दोनों हो सकता है; मैं इसे सकारात्मक मानता हूँ, जैसा कि वी. फॉसबॉल और बी. बोधि भी मानते हैं; निम्नलिखित श्लोक को देखते हुए यह अधिक तर्कसंगत लगता है)": अपने ही विचारों, अपनी ही पसंदों, अपनी ही प्रवृत्तियों, अपने ही मतों से निर्दोष, शुद्ध रहो, स्वच्छ रहो, न तो प्रदूषित रहो, न ही दूषित रहो।

"जो पूर्णतः शुद्ध और बुद्धिमान है, जो कुशल है, जो ज्ञान से अवगत है": जो पूर्णतः शुद्ध और बुद्धिमान है, जो प्रकाशमान और बुद्धिमान है, या जो शुद्ध दृष्टि रखता है, शुद्ध द्रष्टा, श्वेत (शुद्ध) द्रष्टा और प्रकाशमान द्रष्टा, वे ही पूर्णतः शुद्ध और बुद्धिमान हैं। "कुशल," कुशल वे हैं जो बुद्धिमान, चतुर, विशिष्ट और बुद्धिमान हैं। पूर्णतः शुद्ध और बुद्धिमान, कुशल हैं। "बुद्धिमान," बुद्धिमान वे हैं जो बुद्धिमान हैं, ...

"तब उनमें कोई निम्न स्तर की बुद्धि नहीं होती": वे निम्न स्तर के नहीं हैं..., समन और ब्राह्मणों में, सभी सर्वश्रेष्ठ, बुद्धिमान, बुद्धि में श्रेष्ठ, परम बुद्धिमान, सबसे बुद्धिमान और बुद्धि में शीर्ष पर हैं।

"क्योंकि उन लोगों के विचार इस प्रकार पूर्ण हो गए हैं": उन समन और ब्राह्मणों के विचार इस प्रकार पूर्ण, धारण, ग्रहण, ग्रहण, आसक्त, विश्वास और समझे गए हैं।

117 · मैं यह नहीं कहता कि "यह सत्य है," क्योंकि वे कहते हैं कि विरोधी मूर्ख है, वे अपने विचारों को सत्य मानते हैं, इसलिए वे अपने विरोधियों को "मूर्ख" कहते हैं।

"मैं यह नहीं कहता कि 'यही सत्य है'": "नहीं" नकारात्मक है। "यह," बासठ बुरे विचार, यह सत्य है, सही है, ... मैं नहीं बताऊंगा (कहूँगा), मैं नहीं समझाता, ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"वे अपने प्रतिद्वंदी को मूर्ख कहते हैं": एक "प्रतिद्वंदी" दो लोग होते हैं, दो झगड़ालू, दो विवाद करने वाले, दो तर्क करने वाले, दो दावेदार, दो बचाव करने वाले, दो वार्ताकार, वे एक दूसरे से ऐसा कहते हैं, ऐसी बातें करते हैं, ऐसा बोलते हैं, ऐसा समझाते हैं, (विरोधी को) मूर्ख, हीन आदि कहते हैं...

"वे अपने विचारों को सत्य मान लेते हैं": "संसार स्थिर है, यही सत्य है, और बाकी सब व्यर्थ है।" उनके लिए उनके विचार ही सत्य हैं। "संसार अत्यंत स्थिर है, यही वास्तविकता है, और बाकी सब व्यर्थ है।" ...(अंशित, पिछले भाग देखें)। "मृत्यु के बाद तथागत न तो विद्यमान होते हैं और न ही असत्य, यही वास्तविकता है, और बाकी सब व्यर्थ है।"

इसलिए वे अपने विरोधियों को 'मूर्ख' कहते हैं: इसलिए; यही कारण है; यही नियति है; यही वजह है; वे अपने विरोधियों को मूर्ख, हीन, आदि के रूप में देखते, समझते और उनका अवलोकन करते हैं...

118 · जहाँ कुछ लोग कहते हैं कि (यह) "सत्य और सही है," वहीं दूसरे कहते हैं कि "यह पाखंडी और झूठा है।" इस तरह का मत रखने के बाद वे तर्क देते हैं; समण इन विचारों को अलग-अलग क्यों बताते हैं?

"जहां कहीं भी कुछ लोग 'सच्चा, सही' कहते हैं": प्रत्येक धम्म, दृष्टिकोण, मार्ग, पथ पर कुछ समण और ब्राह्मण यही कहते हैं, यही बताते हैं, यही बात करते हैं, यही समझाते हैं, यही कहते हैं: "यह सत्य है, सही है, ...।"

"दूसरों ने कहा, 'यह पाखंडी और झूठा है'": धम्म, दृष्टिकोण, मार्ग, पथ के बारे में कुछ समणों और ब्राह्मणों ने कहा, ...: "यह पाखंडी है, यह झूठा है, यह सत्य नहीं है, यह गलत है।"

"इस तरह पकड़ने के बाद, वे बहस करते हैं": इस तरह पकड़ने के बाद, समझने के बाद, ..., वे बहस करते हैं, झगड़ा करते हैं, ...: "तुम इस धम्म को नहीं जानते, ..."

"समण उन्हें अलग-अलग क्यों बताते हैं?": क्यों? क्यों? कारण क्या है? वजह क्या है? स्थिति क्या है? समूह क्या है? उत्पत्ति क्या है? मूल कारण क्या है? वे अलग-अलग कहते हैं; वे कई तरीकों से बताते हैं; वे एक-दूसरे से (विवाद में) बात करते हैं; वे व्यक्तिगत रूप से बताते हैं, वे बात करते हैं, वे समझाते हैं, वे कहते हैं।

119 · वास्तव में कोई दूसरा सत्य नहीं है। जो समझते हैं उन्हें किसी भी बात पर बहस नहीं करनी चाहिए। वे अपने सभी सत्यों का प्रचार करते हैं, इसलिए समण उन्हें अलग तरह से बताते हैं।

“यह सत्य है कि एक ही वास्तविकता (सत्य) में कोई दूसरा सत्य नहीं है”: एक ही वास्तविकता को दुखों का निवारण, निर्वाण कहा जाता है, जो सभी कर्मों का निवारण, सभी आसक्तियों का निवारण, भोग-विलास का निवारण और अंत में निर्वाण है। या, एक ही सत्य को मार्ग का सत्य, वैराग्य का सत्य, दुखों का मार्ग और पवित्र मार्ग की आठ शाखाएँ कहा जाता है, अर्थात्: सही दृष्टि, सही इरादा, सही वाणी, सही कर्म, सही आजीविका, सही प्रयास, सही ज्ञान और सही एकाग्रता।

“समझदार व्यक्ति को किसी भी बात पर बहस नहीं करनी चाहिए”: चाहे कुछ भी हो, वास्तविकता चाहे जो भी हो। “मनुष्य (व्यक्ति)”, सभी जीवित प्राणियों का पर्यायवाची है। “समझदार (समझदार व्यक्ति)”, जो वास्तव में समझता है, जो जानता है, जो दूसरों को जानता है, जो निश्चित रूप से जानता है, जो समझता है, उसे झगड़ा नहीं करना चाहिए, बहस नहीं करनी चाहिए, ..., उसे इसे जाने देना चाहिए, उसे दूर भगा देना चाहिए, उसे इसे समाप्त कर देना चाहिए, और उसे अस्तित्वहीन कर देना चाहिए।

“वे सभी प्रकार की वास्तविकताओं (सत्यों) की स्वयं प्रशंसा करते हैं”: वे सभी प्रकार की वास्तविकताओं की प्रशंसा करते हैं, कहते हैं, बताते हैं, बात करते हैं, समझाते हैं और बोलते हैं; “संसार स्थिर है, यह सत्य है, और बाकी सब कुछ व्यर्थ है।” वे स्वयं प्रशंसा करते हैं, सूचित करते हैं, बताते हैं, बात करते हैं, समझाते हैं, बोलते हैं; संसार अत्यंत स्थिर है... (उद्धृत) “मृत्यु के बाद, तथागत न तो विद्यमान होते हैं और न ही विद्यमान, यह सत्य है, और बाकी सब कुछ व्यर्थ है।” वे स्वयं प्रशंसा करते हैं, कहते हैं, बताते हैं, बात करते हैं, समझाते हैं, बोलते हैं।

इसलिए समण उन्हें अलग-अलग बातें बताते हैं: इसलिए... वे अलग-अलग बातें बताते हैं; वे सभी अलग-अलग बातें बताते हैं;...

120 · वे लोग, जो इस बारे में बात करते हैं, जो खुद को कुशल होने का दावा करते हैं, वे हर तरह की सच्चाई क्यों बताते हैं? क्या वे वास्तविकताएँ असंख्य और विविध हैं, या वे अनुमानों पर आधारित हैं?

“वे हर तरह की सच्चाई क्यों बताते हैं?”: क्यों, क्यों? इसका क्या कारण है?... वे तरह-तरह की बातें बताते हैं; वे बहुत सी बातें बताते हैं;...

“कुशल होने का दावा करने वाले अच्छे टिप्पणीकार (चर्चाकर्ता)”: “अच्छे टिप्पणीकार,” “वे खंडन करते हैं” अच्छे टिप्पणीकार हैं, या वे कहते हैं, बताते हैं, बात करते हैं, समझाते हैं और अपने विचार व्यक्त करते हैं: “दुनिया स्थिर है, ...” “कुशल होने का दावा करते हैं,” ....

“क्या वे वास्तविकताएँ अनेक और विविध हैं”: क्या वे वास्तविकताएँ अनेक, विविध, बहुआयामी, परस्पर (विरोधी) और व्यक्तिगत हैं।

या वे अनुमान का अनुसरण करते हैं: या वे अनुमान और चिंतन के द्वारा निष्कर्ष निकालते हैं, ले जाते हैं और आगे बढ़ाते हैं। या, वे अनुमानों से प्रभावित होते हैं, जांच-पड़ताल करते हैं और साथ चलते हैं, बोलते हैं, बताते हैं, बात करते हैं, समझाते हैं, अपने तर्कों के साथ बोलते हैं।

121 · वास्तविकता वास्तव में असंख्य और विविध नहीं है, सिवाय इसके कि वह दुनिया में अभ्यस्त (स्थायी) चीजों को पहचान लेता है, लेकिन अपने विचारों पर निष्कर्ष निकालने के बाद, उन्होंने कहा कि "सत्य" और "झूठ" के दो धर्म हैं।

“वास्तविकता वास्तव में असंख्य और विविध नहीं है”: वास्तविकता वास्तव में असंख्य, विविध, बहुआयामी, परस्पर (विरोधी), व्यक्तिगत नहीं है।

“संसार में स्थायी चीजों को (गलत तरीके से) पहचानने के बाद ही”: स्थायी आसक्तियों को जानने के अतिरिक्त, संसार में केवल एक ही सत्य है जिसे बताया, समझाया और कहा जा सकता है: दुख और निर्वाण, जो सभी कर्मों का अंत है, ... या, उस एक सत्य को सार कहा जाता है, सार से दुख का मार्ग, आठ श्रेष्ठ मार्ग, अर्थात्: सही दृष्टिकोण, ...

लेकिन दृष्टिकोण पर निष्कर्ष निकालने के बाद, उन्होंने 'सत्य और असत्य' के दो धर्मों का उल्लेख किया: चिंतन करना, खोज करना, चिंतन के बाद चुनाव करना, चिंतन के बाद बुरे विचार उत्पन्न होना, जन्म लेना और उत्पन्न होना; बुरे विचारों के उत्पन्न होने के बाद, वे यह कहते हैं: "मेरा सत्य है, और तुम्हारा असत्य है।"

123 · देखने, सुनने, उपदेशों और निषेधों, या बोध में, इन पर भरोसा करने के बाद, वह एक हल्के अपमानजनक द्रष्टा बन जाता है, निर्णय के बाद (तिरस्कारपूर्ण) हंसी पर आकर, वह कहता है कि उसका विरोधी "मूर्ख, अकुशल" है।

“जो कुछ तुम देखते, सुनते, उपदेश और निषेध, या धारणाएँ, उन पर भरोसा करके अश्लील (अपमानजनक, निंदनीय) दृष्टियाँ धारण करना”: जो कुछ तुम देखते हो उसकी पवित्रता; जो कुछ तुम सुनते हो उसकी पवित्रता; ...उपदेशों..., निषेधों, धारणाओं की; भरोसा करने के बाद, निर्भरता के बाद, उठाने के बाद, पकड़ने के बाद, आसक्ति के बाद। “इन पर भरोसा करके, एक हल्के अपमान की दृष्टि धारण करने वाला (दृष्टिकोण) बनना,” “अनादर” एक हल्का अपमान की दृष्टि धारण करने वाला है, या “दुःख उत्पन्न करना” भी एक हल्का अपमान की दृष्टि धारण करने वाला है।

“निर्णय लेने के बाद हँसी आना”: निर्णय को बासठ बुरी दृष्टियों (दृष्टि का निर्णय) कहा जाता है, देखने के निर्णय में, निर्णय खड़े होने के बाद, स्थापित करने के बाद, उठाने के बाद, पकड़ने के बाद, चिपके रहने के बाद देखता है। “हँसी आना” का अर्थ है एक आनंदित व्यक्ति होना, हँसमुख व्यक्ति होना, प्रसन्न व्यक्ति होना, प्रसन्न व्यक्ति होना, पूर्णतः संतुष्ट व्यक्ति होना, या ऐसा व्यक्ति होना जो अपने दाँत दिखाता रहे और हँसता रहे।

“और वह कहता है कि प्रतिद्वंदी ‘मूर्ख, अकुशल’ है”: “प्रतिद्वंदी मूर्ख है, हीन है, ...” वह इसे इस तरह कहता है; इस तरह बताता है; ....

123 · क्योंकि उसने अपने प्रतिद्वंदी को “मूर्ख” कहा, उसने कहा कि वह एक “कुशल व्यक्ति” है, अपने बारे में बोलते हुए, वह कुशल होने का दावा करता है और दूसरे लोगों को तुच्छ समझता है, (लेकिन) वह (भी) ऐसा कहता है।

“क्योंकि वह अपने प्रतिद्वंदी को ‘मूर्ख’ समझता है”: वह प्रतिद्वंदियों को मूर्ख, हीन और तुच्छ समझता है, क्योंकि वे इसी कारण, इसी स्थिति, इसी वजह से, इसी स्रोत से हीन हैं...

इसलिए वह स्वयं को 'कुशल व्यक्ति' कहता है: वह (ātumāno) स्वयं को (attā) कहता है। वह स्वयं को (attā) उसी कारण, उसी स्थिति, उसी तर्क और उसी मूल से संबोधित करता है: मैं अच्छा, चतुर, बुद्धिमान, प्रबुद्ध, विवेकशील और ज्ञानी हूँ।

“स्वयं के बारे में बोलते हुए, वह स्वयं को कुशल वक्ता होने का दावा करता है”: स्वयं को एक कुशल वक्ता, एक बुद्धिमान वक्ता के रूप में प्रस्तुत करना...

“दूसरों को तुच्छ समझते हुए उसने ऐसा कहा”: “अपमान” का अर्थ है दूसरों को तुच्छ समझना, या “दुःख पहुँचाना” भी दूसरों को तुच्छ समझना है। “उसने ऐसा कहा,” उसने ऐसा बुरा कहा: इस तरह, इस व्यक्ति का दृष्टिकोण गलत है, विपरीत है।

124 · वह उल्लंघन किए गए दृष्टिकोण से परिपूर्ण हो गया, अहंकार से मदहोश हो गया और घमंडी व्यक्ति बन गया, वह अपने ही मन से सशक्त हो गया, क्योंकि उसकी दृष्टि उसी प्रकार परिपूर्ण हो गई थी।

“वह अपने उल्लंघनकारी दृष्टिकोण से परिपूर्ण हुआ”: उल्लंघनकारी दृष्टिकोण को बासठ बुरे दृष्टिकोण कहा जाता है। उल्लंघनकारी दृष्टिकोण को बासठ बुरे दृष्टिकोण क्यों कहा जाता है? ये सभी दृष्टिकोण तर्क, विशेषताओं और संभावनाओं से परे हैं। इसी कारण उल्लंघनकारी दृष्टिकोण को बासठ बुरे दृष्टिकोण कहा जाता है। सभी दृष्टिकोण उल्लंघनकारी दृष्टिकोण हैं। सभी दृष्टिकोण उल्लंघनकारी दृष्टिकोण क्यों कहलाते हैं? वे एक दूसरे को पार करते हैं, एक दूसरे से गुजरते हैं और एक दूसरे पर विजय प्राप्त करते हैं, जिससे बुरे दृष्टिकोण उत्पन्न होते हैं; वे उन्हें उत्पन्न करते हैं, उन्हें जन्म देते हैं और उन्हें जन्म देते हैं। इसी कारण सभी दृष्टिकोण उल्लंघनकारी दृष्टिकोण कहलाते हैं। “वह उल्लंघनकारी दृष्टिकोण से परिपूर्ण हुआ”: वह उल्लंघनकारी दृष्टिकोण से परिपूर्ण हुआ और सिद्ध हुआ।

“अभिमान में चूर होकर पूर्णता का घमंड करना”: अपने ही दृष्टिकोण में चूर होकर, अहंकार से देखना, घमंड करना, हद से ज़्यादा करना। “पूर्णता का घमंड करना”, पूर्णता का घमंड करना, परिपूर्णता का घमंड करना।

मैं अपने इरादे से स्वयं को सशक्त बनाता हूँ: मैं अपने हृदय से स्वयं को सशक्त बनाता हूँ: मैं कुशल, बुद्धिमान, ... हूँ।

"क्योंकि उसका दृष्टिकोण इस प्रकार पूर्ण है": उसका दृष्टिकोण इस प्रकार पूर्ण, धारण किया हुआ, ग्रहण किया हुआ, समझा हुआ, संलग्न, विश्वास किया हुआ और ज्ञात है।

125 · यदि कोई विरोधी शब्दों के कारण नीच व्यक्ति बन जाता है, तो वह भी उसके साथ नीच व्यक्ति बन जाता है, परन्तु यदि वह स्वयं वेदों में ज्ञानवान और बुद्धिमान हो, तो समनों में कोई मूर्ख नहीं होता।

"यदि विरोधी शब्दों के कारण नीच हो जाते हैं": शब्दों से फटकार, अपमान, अपशब्दों के कारण विरोधी मूर्ख, हीन आदि हो जाते हैं...। "तो वह स्वयं भी नीच बुद्धिमान हो जाता है": इसके कारण वह भी हीन, नीच आदि हो जाता है...।

लेकिन यदि वह स्वयं वेदों में पारंगत है, तो वह बुद्धिमान है": लेकिन यदि वह स्वयं वेदों से परिचित है, तो वह बुद्धिमान, प्रबुद्ध, विशिष्ट (पृथक), बुद्धिमान है।

"समणों में कोई मूर्ख नहीं है": समणों में कोई मूर्ख, हीन आदि नहीं है। वे सभी अत्यंत बुद्धिमान, श्रेष्ठ आदि हैं।

126 · जो कोई भी यहाँ (बाहर से) दूसरे धर्मों के बारे में बताता है, वे शुद्धता से रहित, अपूर्ण हैं, सभी प्रकार के बाहरी (संप्रदायों) ने भी यही कहा, क्योंकि वे अपने स्वयं के विचारों के लालच से दूषित थे।

"जो कोई यहाँ से (बाहर से) दूसरे धर्मों का वर्णन करता है, वे शुद्धता से रहित और अपूर्ण हैं": जो कोई यहाँ से दूसरे धर्मों, विचारों, मार्गों और पथों का वर्णन करता है, वे शुद्ध पथ के नहीं हैं, उन्होंने अपनी सारी शुद्धता खो दी है, वे भटक गए हैं, वे पतित हैं, वे शुद्ध श्वेत पथ के नहीं हैं, वे उज्ज्वल और शुद्ध पथ के नहीं हैं, वे बौद्धिक रूप से पूरी तरह से वंचित हैं, वे अपूर्ण हैं, वे हीन हैं, ...

"विभिन्न संप्रदाय भी यही कहते हैं": संप्रदायों को बुरी विचारधाराएँ कहा जाता है, और बाहरी लोगों को बुरी विचारधाराएँ कहा जाता है। सभी प्रकार के संप्रदाय हर तरह की बुरी विचारधाराओं का प्रचार, वर्णन, व्याख्या और प्रसार करते हैं।

"क्योंकि वे अपने ही विचारों के लालच से दूषित हैं": क्योंकि वे अपने ही विचारों, अपने लालच और अपनी अतिवादिता से दूषित हैं।

127 · उन्होंने कहा "केवल यहीं शुद्धता है," उन्होंने कहा कि अन्य तरीकों में कोई शुद्धता नहीं है, सभी प्रकार के बाहरी (संप्रदाय) भी इसी तरह से स्थिर हैं, जहाँ वे अपने तरीके में मजबूत होने का दावा करते हैं।

"वे कहते हैं 'केवल यहीं शुद्धता है'": वे कहते हैं, बताते हैं, ...(छोड़ा गया)।

"वे कहते हैं कि अन्य धर्मों में कोई शुद्धि नहीं है": अपने गुरु, समूह, ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें) को छोड़कर।

"सभी प्रकार के संप्रदाय भी इसी प्रकार स्थिर हैं": संप्रदायों को बुरे विचार कहा जाता है, और सभी पराक्रमी मार्ग बुरे विचार कहलाते हैं। वे अपने हृदयों की ओर निर्देशित सभी प्रकार के बुरे विचारों में स्थिर, अवरुद्ध, अटके हुए, प्रवेशित, संक्रमित और जकड़े हुए हैं।

"वह कौन है जो स्वयं को अपने तरीके से बलवान घोषित करता है?": धम्म ही उसका अपना मार्ग है; देखना (दृष्टिकोण) ही उसका अपना मार्ग है; कर्म ही उसका अपना मार्ग है; मार्ग ही उसका अपना मार्ग है; बलवान वक्ता ही स्थापित वक्ता है।

128 · लेकिन अपने ही तरीके से वह बलवान होने का दावा करता है, यहाँ वह किस विरोधी को "मूर्ख" कह सकता है? वही अपने विरोधी को मूर्ख और अपवित्र धर्म का वक्ता कहकर असहमति उत्पन्न करेगा।

लेकिन अपने तरीके से, वह खुद को बलवान होने का दावा करता है": अपना धम्म, अपना दृष्टिकोण, अपना मार्ग, अपना तरीका, अपने तरीके से, व्यक्ति ही बलवान वक्ता, दृढ़ वक्ता, स्थापित वक्ता होता है।

"यहाँ, वह किस प्रतिद्वंदी को 'मूर्ख' कह सकता है?": "यहाँ," अपने स्वयं के विचारों, अपनी पसंदों, अपनी प्रवृत्तियों और अपने मतों के संदर्भ में; वह किसे रख सकता है, किसे देख सकता है, किसे निहार सकता है, किसे देख सकता है, किसे देख सकता है, किन प्रतिद्वंदियों को मूर्ख, किसे हीन, आदि के रूप में देख सकता है...।"

"वही मतभेद पैदा करेगा (यह कहकर): "विरोधी अपवित्र धर्म का मूर्ख वक्ता है": "विरोधी मूर्ख है, नीच है, ..., अपवित्र धर्म है, वे हैं जो धर्म को शुद्ध नहीं करते, वे हैं जो शुद्ध धर्म में व्याप्त नहीं हैं, और वे हैं जो धर्म को शुद्ध नहीं करते।" जो ऐसा कहते हैं, जो ऐसा बोलते हैं, ..., वे स्वयं ही उन्हें लाएंगे; वे कारण बनेंगे; वे उन्हें ले जाएंगे; वे उन्हें इकट्ठा करेंगे; वे उन्हें खींचेंगे; वे उन्हें आकर्षित करेंगे; वे उन्हें थामे रखेंगे; वे उनसे चिपके रहेंगे; वे झगड़े, बहस, विवाद और असहमति में लगे रहेंगे।

129 · स्वयं न्याय करने और मापने के बाद, वह संसार में बहस करने आता है, सभी निर्णयों को त्यागकर, लोग संसार में असहमति में संलग्न नहीं होंगे।

"निर्णय लेने के बाद, स्वयं से मापन करने के बाद": निर्णय को बासठ बुरे विचार कहा जाता है... (उद्धृत)। "स्वयं से मापन करने के बाद," स्वयं से मापन करने के बाद: "यह गुरु सभी में सबसे बुद्धिमान है।" स्वयं से मापन करने के बाद; "यह धर्म अच्छा कहा जाता है..." (उद्धृत, पिछले भाग देखें)।

"बाद में वह संसार में वाद-विवाद करने आता है": बाद को भविष्य कहा जाता है। अपना सिद्धांत स्थापित करने के बाद, वह आया, पहुँचा, पकड़ लिया, आसक्ति दिखाई, झगड़ा करने, वाद-विवाद करने, विवाद करने और असहमति जताने पर अड़ा रहा। इस प्रकार वह संसार में वाद-विवाद करने आया। या, बाद में, अन्य सिद्धांतों के साथ झगड़ा, वाद-विवाद करते हुए: "तुम धर्म को नहीं जानते, ...(अस्पष्ट)।"

"सभी निर्णयों को त्यागने के बाद": निर्णय को बासठ बुरे विचार (दृष्टिकोण के निर्णय) कहा जाता है, देखने (दृष्टिकोण) के निर्णय में, सभी निर्णयों को त्यागने के बाद, त्यागने के बाद, हमेशा के लिए त्यागने के बाद, छोड़ने के बाद, त्यागने के बाद, निष्कासित करने के बाद, समाप्त करने के बाद, इसे अस्तित्वहीन करने के बाद।

"संसार के लोग असहमति में संलग्न नहीं होते": झगड़ा मत करो, बहस मत करो, ... भगवान बुद्ध ने कहा: "अग्गिवेसना! ऐसा मुक्त भिक्षु किसी बात से सहमत नहीं होता, संसार की बातों पर बहस नहीं करता, आसक्ति रहित होता है।" [एमएन.74] "मनुष्य (लोग)," .... "संसार में," ....
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> निद्देसा >> निद्देसा 1.13

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

<<<< पिछला अगला >>>>

13. ग्रेटर पास
130 · जिन लोगों ने ये (विचार) देखे हैं, और जो कहते हैं "यह सच है," क्या वे सभी केवल निंदा के पात्र हैं, या उन्हें वहाँ प्रशंसा भी मिलती है?

“इनमें से किसी को भी देखने वाला”: “कोई भी,” पूर्णतः, प्रत्येक पहलू पूर्णतः, कोई अतिरिक्त नहीं, पूरी पृथ्वी, यह सर्वव्यापकता की भाषा है, “कोई भी।” “देखना (दृष्टिकोण),” कुछ समण और ब्राह्मण बुरे विचारों वाले हैं। नियंत्रण के बाद, ...(छोड़ा गया, पिछले खंड देखें)।

और जो कहते हैं 'यह वास्तविक है': “दुनिया स्थिर है, ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।” वे कहते हैं, ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

“(क्या) उन सभी को केवल फटकार ही मिली”: उन सभी समणों और ब्राह्मणों ने केवल फटकार, केवल डांट, केवल निंदा ही पाई।

“या उन्हें वहाँ भी प्रशंसा मिली”: वहाँ उन्हें अपने विचारों, अपनी पसंदों, अपने झुकावों और अपनी राय के साथ प्रशंसा और सराहना मिली।

131 · यह (प्रशंसा) शांति के लिए छोटी और अपर्याप्त है। मैंने कहा था कि बहस करने के दो परिणाम होते हैं। इसे देखने के बाद, बहस नहीं करनी चाहिए; जो बहस नहीं करता वह स्थिर होता है।

“यह शांति के लिए छोटा और अपर्याप्त है”: “यह छोटा है,” यह कम है; यह घटिया है; यह केवल कुछ है; यह नीच है; यह घटिया इरादा है; यह महत्वहीन है। “शांति के लिए पर्याप्त नहीं,” जो लोभ से संबंधित है वह शांति के लिए है, जो क्रोध से संबंधित है वह शांति के लिए है, ...मूर्खता..., ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)..., सभी अस्वास्थ्यकर कृत्रिम चीजें शांति, मौन, शांत होने, शीतलता, रुकने और समाप्ति के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

मैंने कहा था कि बहस के दो परिणाम होते हैं: देखने का झगड़ा, देखने का तर्क, देखने का विवाद, असहमति देखने का परिणाम, दो परिणाम होते हैं: जीत और हार; लाभ और हानि; प्रतिष्ठा और बदनामी; निंदा और प्रशंसा; दुख और सुख; आनंद और अवसाद; संतुष्टि और असंतुष्टि; प्रेम और घृणा; अभिमान और अवसाद; आज्ञापालन और विरोध। या, “वह कर्म नरक की ओर ले जाएगा, पशु जगत की ओर ले जाएगा, प्रेतलोक की ओर ले जाएगा।” मैंने कहा, मैंने समझाया, मैंने सिखाया, मैंने सूचित किया, मैंने स्थापित किया, मैंने उजागर किया, मैंने विश्लेषण किया, मैंने स्पष्ट किया।

“इसे देखकर उसे बहस नहीं करनी चाहिए”: “इसे देखकर,” यह परेशानी: देखने के झगड़े में, ..., देखने के बाद, तौलने के बाद, निर्णय लेने के बाद, अलग करने के बाद, स्पष्ट करने के बाद। “उसे बहस नहीं करनी चाहिए,” उसे झगड़ा नहीं करना चाहिए, बहस नहीं करनी चाहिए, ..., उसे त्याग देना चाहिए, ...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)। उसे झगड़े, बहस, ..., संयम, प्रस्थान, त्याग, मुक्त, स्वतंत्रता से दूर जाना चाहिए, उसे निश्चिंत हृदय से जीना चाहिए।

“जो तर्क नहीं करता, वही स्थिर है”: जो तर्क नहीं करता, उसे निर्जीव, निर्वाण कहा जाता है, अर्थात् सभी कर्मों का अंत, सभी आसक्तियों का अंत, लालसा और लोभ का नाश, निर्वाण। देखना, अवलोकन करना, मनन करना और निश्चिंत रूप से स्थिर, आश्रय, शरण, निर्भय, अमर, निर्जीव और निर्वाण है।

132 · इन सांसारिक सामान्य अंतर्दृष्टियों में से किसी के लिए भी, बुद्धिमान लोग इन सभी को प्राप्त नहीं कर पाते, तो अनासक्त व्यक्ति आसक्ति में क्यों आएगा, जब उसे वह पसंद नहीं आता जो वह देखता और सुनता है?

“इनमें से कोई भी सामान्य राय”: “कुछ भी,” पूरी तरह से, ... “सामान्य राय,” सामान्य राय को बासठ बुरी राय की सामान्य राय कहा जाता है। “साधारण,” “साधारण लोगों से उत्पन्न सामान्य राय” साधारण होती हैं, या “सभी प्रकार के लोगों से व्यापक रूप से उत्पन्न सामान्य राय” साधारण होती हैं।

“ज्ञानी व्यक्ति इन सब बातों तक नहीं पहुँच पाता”: ज्ञानी वह है जो संसार को जान चुका है, जो ज्ञानी है। सांसारिक दृष्टिकोण, जो इन सब बातों का मार्गदर्शन करता है, वह उस तक नहीं पहुँच पाता, उसे समझ नहीं पाता, उसे ग्रहण नहीं कर पाता, उससे आसक्त नहीं हो पाता।

“अनासक्त व्यक्ति आसक्ति की ओर क्यों आकर्षित होगा?”: “आसक्ति” दो प्रकार की होती है: ...(विलंबित, पिछले भाग देखें)। उसके लिए प्यास की आसक्ति समाप्त हो चुकी है; ... अनासक्त लोग अपने सच्चे स्वरूप को अभिव्यक्त करने, उसे प्राप्त करने, उसे थामने, उसे ग्रहण करने और

उससे आसक्त होने के लिए क्यों प्रेरित होंगे? भावना..., चिंतन..., कर्म..., ज्ञान..., रुचि..., मृत्यु..., जन्म..., अस्तित्व..., पुनर्जन्म..., वह क्यों अभिव्यक्त होगा, ...?

“जो लोग जो देखते और सुनते हैं, उन्हें पसंद नहीं करते”: जो व्यक्ति जो देखे, सुने या महसूस किए गए किसी भी बात को पसंद नहीं करता, न ही अपनी इच्छा (इरादे) में, वह प्रेम नहीं करता और न ही लालची होता है; जो व्यक्ति जन्म से ही उत्पन्न नहीं होता, वह पैदा नहीं होता।

133 · जो लोग उपदेशों को सर्वोच्च मानते हैं, वे कहते हैं कि (स्वयं) संयम ही पवित्र है; जो लोग संयमित होकर प्रकट होते हैं, वे कहते हैं: चलो यहीं सीख लें, फिर पवित्रता प्राप्त होगी; कुशल होने का दावा करते हुए, वे वहाँ (आगे के अस्तित्व में) पहुँच जाएँगे।

“जो लोग उपदेशों को सर्वोच्च मानते हैं, वे कहते हैं कि (स्वयं) संयम शुद्ध है”: ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

“निषेध के बाद प्रकट होने वाले”: “निषेध,” हाथी निषेध, या घोड़ा निषेध, या मवेशी निषेध, या कुत्ता निषेध, या कौवा निषेध, या विष्णु निषेध, या बलदेव निषेध, या पूर्णतः शुभ (पुण-भद्ध) निषेध, या शुभ रत्न (मणि-भद्ध) निषेध, या अग्नि निषेध, या ड्रैगन निषेध, या स्वर्ण-पंख वाले पक्षी निषेध, या यक्ष निषेध, या असुर निषेध, या गंधर्व निषेध, या राजा निषेध, या चंद्रमा निषेध, या दिन निषेध, या इंदा निषेध, या ब्रह्मा निषेध, या स्वर्ग निषेध, या पद निषेध, उनके आसक्ति के बाद, धारण किए जाने के बाद, लेने के बाद, ग्रहण करने के बाद, ग्रहण करने के बाद, पकड़ने के बाद, आसक्ति के बाद, प्रकट होने के बाद, चिपके रहने के बाद, प्रवेश करने के बाद, संक्रमित होने के बाद, और की ओर निर्देशित होने के बाद।

“यहाँ अध्ययन करें, फिर पवित्रता प्राप्त होगी”: “यहाँ,” मेरे अपने विचारों, मेरी पसंदों, मेरी प्रवृत्तियों और मेरे मतों के अनुसार। “सीखें,” सीखें, अभ्यास करें, अमल में लाएँ और निरंतर सीखते हुए आगे बढ़ें। “यहाँ अध्ययन करें।” “फिर पवित्रता प्राप्त होगी,” और फिर पवित्रता, स्वच्छता और सर्वांगीण पवित्रता प्राप्त होगी; वैराग्य, मुक्ति, विरक्ति।

“कुशल घोषित करना, अस्तित्व में लाया जाना”: “अस्तित्व में लाया जाना,” अस्तित्व में लाया जाना, अस्तित्व में फँस जाना, अस्तित्व की ओर ले जाया जाना, अस्तित्व की ओर निर्देशित होना। “कुशल घोषित करना,” कुशल वक्ता, बुद्धिमान वक्ता, ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

134 · यदि वह नियमों और निषेधों से भटक गया, तो वह इस व्यवहार में असफल होने के बाद कांपता है, वह पवित्रता के लिए आशा और प्रार्थना करता है, जैसे कोई यात्री अपने घर से भागकर कारवां से अलग हो गया हो।

“यदि वह उपदेशों और निषेधों से भटक गया”: वह दो कारणों से उपदेशों और निषेधों से भटक गया: या तो दूसरों ने उसे बाधित किया, या वह तब भटक गया जब वह उन तक नहीं पहुँचा। दूसरों द्वारा बाधित किए जाने पर वह कैसे भटक सकता है? “दूसरों द्वारा बाधा”: वह गुरु सर्वज्ञानी नहीं है, ...(विलंबित, पिछले खंड देखें), और तुच्छ है। यही “दूसरों द्वारा बाधा” है। इस प्रकार, गुरु बाधित होने पर भटक जाएगा, और उसके द्वारा बताया गया धर्म भटक जाएगा, समूह भटक जाएगा, दृष्टि भटक जाएगी, मार्ग भटक जाएगा, पथ का पालन भटक जाएगा, इसलिए वह दूसरों द्वारा बाधित हुआ। जब वह नहीं पहुँचा तो वह कैसे भटक सकता है? जब वह उपदेश तक नहीं पहुँचा, जब वह निषेध तक नहीं पहुँचा, जब वह उपदेश और निषेध दोनों तक नहीं पहुँचा, इसलिए निषेध तक न पहुँचने पर वह भटक गया।

“व्यवहार में असफल होने पर वह कांप उठा”: “वह कांप उठा,” “मैंने नियम या निषेध या दोनों को खो दिया; मेरे द्वारा, मेरे द्वारा उल्लंघन किया गया, मेरे द्वारा उलट दिया गया, मेरे द्वारा खो गया, और मैं अनजाने में उल्लंघनकर्ता हूँ।” वह कांप रहा था, ...(अस्पष्ट)। “कार्य के असफल होने पर,” “धन्य या अपाहिज या अचल मेरे द्वारा खो गया; मेरे द्वारा उल्लंघन किया गया; ... ।” वह कांप रहा था, थरथरा रहा था, बहुत कांप रहा था।

“वह पवित्रता चाहता है और उसके लिए प्रार्थना करता है”: “वह चाहता है,” वह नियमों की पवित्रता के लिए तरसता है, या वह निषेधों की पवित्रता के लिए तरसता है, या वह नियमों और निषेधों दोनों की पवित्रता के लिए तरसता है, वह आशा करता है और प्रार्थना करता है। “और पवित्रता के लिए प्रार्थना करता है,” वह नियमों की पवित्रता के लिए प्रार्थना करता है, या वह निषेधों की पवित्रता के लिए प्रार्थना करता है, या वह नियमों और निषेधों दोनों की पवित्रता के लिए प्रार्थना करता है।

“(जैसे) कोई व्यक्ति जो घर से निकलकर यात्रा कर रहा हो और किसी काफिले से बिछड़ जाए”: जैसे कोई व्यक्ति घर छोड़कर किसी काफिले में सफर करता है और किसी दूर के यात्री या निवासी के रूप में उसका साथ देता है, और काफिला उसे छोड़ देता है, तो वह उस काफिले का पीछा कर सकता है या घर लौट सकता है। उसी प्रकार, बुरी दृष्टि वाला व्यक्ति या तो किसी स्वामी या अन्य स्वामियों को धारण करता है; या उस विधि के वर्णन को धारण करता है, या अन्य विधियों के वर्णन को; या उस समूह को धारण करता है, या अन्य समूहों को; या उस दृष्टि को धारण करता है, या अन्य दृष्टियों को; या उस मार्ग को धारण करता है, या दूसरे मार्ग को; या उस पथ को धारण करता है, या अन्य पथों को, और उनसे चिपका रहता है।

135 · परन्तु सभी नियमों और निषेधों को त्यागने के बाद, और अपराध और निर्दोषता के कार्यों को, “शुद्धता और अशुद्धता,” जो प्रार्थना नहीं करते, त्यागने के बाद मौन को मत पकड़ो।

लेकिन सभी नियमों और निषेधों का त्याग करने के बाद”: नियमों की सारी पवित्रता समाप्त हो जाने के बाद, त्याग दिए जाने के बाद, दूर भगा दिए जाने के बाद, अंत के बाद, उन्हें अस्तित्वहीन बना दिए जाने के बाद; निषेधों की सारी पवित्रता के बाद...; ...नियमों और निषेधों की पवित्रता...।

“और इस दोषी और निर्दोष आचरण के बाद”: दोषी आचरण को काला फल कहा जाता है; निर्दोष आचरण को सफेद फल कहा जाता है। दोषी आचरण और निर्दोष आचरण के समाप्त होने के बाद, त्याग दिए जाने के बाद, निष्कासित किए जाने के बाद, अंत के बाद, इसे अस्तित्वहीन बना दिया जाता है।

“'शुद्ध और अशुद्ध' (वे) प्रार्थना नहीं करते”: “अशुद्धता,” वे अशुद्धता चाहते हैं: वे अस्वस्थ धम्म चाहते हैं; “शुद्ध,” वे शुद्धता चाहते हैं: वे पाँच इच्छाएँ चाहते हैं। वे अशुद्धता चाहते हैं: वे बुराई चाहते हैं, और वे पाँच इच्छाएँ चाहते हैं; वे शुद्धता चाहते हैं: वे बासठ बुरे विचार चाहते हैं। वे अशुद्धता चाहते हैं: वे अस्वस्थ धम्म चाहते हैं, वे पाँच इच्छाएँ चाहते हैं, वे बासठ बुरे विचार चाहते हैं; वे शुद्धता चाहते हैं: वे तीनों लोकों में अच्छे धम्म चाहते हैं। वे अशुद्धता चाहते हैं: वे अस्वस्थ धम्म चाहते हैं, वे पाँच इच्छाएँ चाहते हैं, वे बासठ बुरे विचार चाहते हैं, वे तीनों लोकों में अच्छे धम्म चाहते हैं; वे शुद्धता चाहते हैं: अच्छे साधारण लोग प्रवेश करना चाहते हैं, छात्र अरहंत अवस्था के प्रथम लोक की आशा करते हैं। अरहंत अवस्था प्राप्त कर चुके अरहंत न तो अस्वास्थ्यकर धर्म की इच्छा रखते हैं, न पाँचों इच्छाओं की, न बासठ बुरे विचारों की, न तीनों लोकों के अच्छे धर्म की, और न ही प्रथम अरहंत लोक में प्रवेश करने का निर्णय लेते हैं। जिस पारलौकिकता की वे कामना करते हैं, उस अरहंत ने विकास और पतन को पार कर लिया है; वे एक ऐसी अवस्था में अवतरित हो चुके हैं, एक ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने... (अंतःखंडित) का अभ्यास किया है, जन्म और मृत्यु के चक्र को बिना पुनर्जन्म के पार कर लिया है।

“जिसने मौन धारण किए बिना संयम बरता है, वह ऐसा कर सकता है”: “जिसने संयम बरता है,” “वह शुद्ध और अशुद्ध से विभाजित हो चुका है, उसने संयम बरता है, त्याग दिया है, छोड़ दिया है, मुक्त हो गया है, वह बंधनमुक्त है, वह निर्बल हृदय से जीता है। वही संयम बरतने वाला है।” वह करने में सक्षम है,” करने में, चलने में, जीने में, कार्य करने में, आगे बढ़ने में, रक्षा करने में, बनाए रखने में, जीवित रहने में। संयम बरतने वाले व्यक्ति के लिए यह संभव है। “मौन धारण न करने के बाद,” मौन को बासठ बुरे विचारों का मौन कहा जाता है। वह न तो धारण करता है, न ग्रहण करता है, और न ही आसक्त होता है।

136 · तपस्या या घृणा पर भरोसा करते हुए, या देखने या सुनने या महसूस करने के बाद भी, आगे बढ़ने के बाद, उन्होंने घोषणा की कि वे शुद्ध हैं, वे जो सभी प्रकार के अस्तित्व में प्यासे हैं।

“तपस्या या घृणा पर निर्भर”: कुछ समण और ब्राह्मण कठोर और घृणाप्रिय होते हैं, कुछ ऐसे होते हैं जिनका मूल कठोरता और घृणा है, कुछ ऐसे होते हैं जो तपस्या और घृणा पर निर्भर रहते हैं, कुछ ऐसे होते हैं जो इनसे विमुख हो जाते हैं, कुछ ऐसे होते हैं जो इनमें लिप्त हो जाते हैं, और कुछ ऐसे होते हैं जो अपना मन इन चीजों की ओर लगाते हैं।

“या देखने, सुनने या महसूस करने के बाद भी”: जो तुम देखते हो उसकी पवित्रता; जो तुम सुनते हो उसकी पवित्रता; जो तुम महसूस करते हो उसकी पवित्रता; निर्भर रहने के बाद, भरोसा करने के बाद, उठाने के बाद, पकड़ने के बाद, आसक्ति के बाद।

आगे बढ़ने के बाद उन्होंने पवित्रता का प्रचार किया: कुछ समण और ब्राह्मण आगे बढ़ने के बाद आलोचक (टीकाकार) हैं। आगे बढ़ने के बाद कौन से समण और ब्राह्मण आलोचक हैं? कुछ समण और ब्राह्मण परम शुद्ध, पुनर्जन्म में शुद्ध, कर्म रहित द्रष्टा, निरंतर टीकाकार हैं। ये समण और ब्राह्मण आगे बढ़ने के बाद टीकाकार हैं। वे प्रशंसा करते हैं, जानकारी देते हैं, बताते हैं, चर्चा करते हैं, व्याख्या करते हैं और कहते हैं कि पुनर्जन्म शुद्ध, स्वच्छ और सर्व-शुद्ध है; वैराग्य, मुक्ति और अनासक्ति है।

"सभी प्रकार के अस्तित्व में प्यास": "प्यासी प्रेम," रूप की प्यास, ध्वनि की प्यास, गंध की प्यास, स्वाद की प्यास, स्पर्श की प्यास, धम्म की प्यास। "सभी प्रकार के अस्तित्व में," ...(विलुप्त, पिछले खंड देखें); जो प्यासे हैं, जिन्होंने अपनी प्यास नहीं छोड़ी है, जिन्होंने प्यास मिटाई नहीं है, जिन्होंने अपनी प्यास से मुक्ति नहीं पाई है, जिन्होंने अपनी प्यास नहीं बुझाई है।

137 · बेशक, जो चाहते हैं उनके लिए कई आकांक्षाएँ हैं, लेकिन स्थिर दृष्टि में कांपना भी है, जिनके लिए यहाँ मृत्यु और पुनर्जन्म नहीं है, वे क्यों कांपेंगे या किस बात की कामना करेंगे?

"आशावान व्यक्ति की अनेक आकांक्षाएँ होती हैं": आशा को लालसा कहा जाता है, जो लोभ है... "आशावान व्यक्ति के लिए," चाहने वाले के लिए, खोज करने वाले के लिए, इच्छा रखने वाले के लिए, प्राप्तकर्ता के लिए, इच्छा करने वाले के लिए और प्रार्थना करने वाले के लिए। "अत्यंत आकांक्षाएँ होती हैं," इच्छा को लालसा कहा जाता है, यह लोभ है...

"स्थिर दृष्टि में भी कांपना": "स्थिर दृष्टि," दो प्रकार की स्थिर दृष्टि होती है: प्यास की स्थिर दृष्टि और देखने की स्थिर दृष्टि...। "स्थिर दृष्टि में भी कांपना": वे तब कांपते हैं जब स्थिर की गई चीजों के चोरी होने का संदेह होता है, ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"जिनके लिए यहाँ मृत्यु और पुनर्जन्म नहीं है": "जिनके लिए...", अरहंत के लिए, जिनके सारे कष्ट समाप्त हो चुके हैं। उनके सभी अंत:क्रियाएँ, संपर्क, मृत्यु का समय, हर प्रकार की मृत्यु, भूतपूर्व जीवन, जन्म, विघटन, पुनर्जन्म, वृद्धावस्था, मृत्यु, ये सब उनके लिए नहीं हैं, उनका अस्तित्व नहीं है, वे ज्ञात नहीं हैं, उनका पता नहीं लगाया जा सकता है, वे कट चुके हैं, विच्छेदित हो चुके हैं, शांत हो चुके हैं, रुक चुके हैं, उनका पुनरुत्पादन नहीं हो सकता, वे ज्ञान की अग्नि से भस्म हो चुके हैं।

वह क्यों कांपेगा या किस बात की बेसब्री से प्रतीक्षा करेगा? वह लालच से क्यों कांपेगा? वह क्यों कांप रहा होगा? वह अज्ञान से क्यों कांप रहा होगा? वह अहंकार से क्यों कांप रहा होगा? वह किस प्रकार के व्यवहार से कांपेगा? वह किस प्रकार के संदेह से कांपेगा? वह किन अंतर्निहित विपत्तियों से कांपेगा, जिनके कारण वह "बीमार," या "घृणित," या "मूर्ख," या "बंधा हुआ," या "चिपका हुआ," या "अव्यवस्था में पड़ जाएगा," या "अप्रियता में पड़ जाएगा," या "धैर्य में पड़ जाएगा?" वे रचनाएँ कट चुकी हैं, उनके कर्म कट चुके हैं, वह कांपेगा और "नरक," या "पशु (लोक)," या "भूखा प्रेत," या "व्यक्ति," या "स्वर्ग," या "निर्मित," या "निराकार," या "सोचने वाला," या "न सोचने वाला" या "न सोचने वाला" बन जाएगा? उसके पास न कोई कारण है, न कोई पूर्वनियोजित नियति, न कोई कारक, तो वह क्यों कांपेगा, क्यों थरथराएगा, और क्यों बहुत अधिक कांपेगा? वह क्यों कांपेगा? वह किस बात के लिए उत्सुक होगा? या किस बात की उसे चाह होगी? वह किस बात की प्रतीक्षा करेगा? वह किस बात के लिए उत्सुक होगा; क्या वह आशा करेगा; क्या वह प्रार्थना करेगा?

138 · कुछ लोग धम्म में कहते हैं, "यह सर्वोच्च है," लेकिन दूसरे कहते हैं, "यह निम्न है।" तो इनमें से कौन सा वक्ता सत्य है? क्योंकि ये सभी लोग कुशल होने का दावा करते हैं।

"धम्म में कुछ लोग कहते हैं कि 'यह सर्वोच्च है'": धम्म, दृष्टिकोण, ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

लेकिन दूसरे लोगों ने कहा, 'यही तो हीन है।' धम्म के दृष्टिकोण के बारे में...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"तो इन लोगों में से कौन सा वक्ता सत्य है?": इन समणों और ब्राह्मणों में से कौन सा वक्ता सत्य है, ...

“क्योंकि ये सभी लोग स्वयं को कुशल वक्ता बताते हैं”: ये सभी समण और ब्राह्मण कुशल वक्ता हैं, …

139 · वे कहते हैं कि उनका अपना धर्म परिपूर्ण है, और वे कहते हैं कि दूसरों का धर्म निम्नतर है। इस प्रकार तर्क करने के बाद, वे कहते हैं कि उनके अपने मत सत्य हैं।

“यह सच है कि वे कहते हैं कि उनका अपना धम्म पूर्ण है”: उनका अपना धम्म, …, कुछ समण, ब्राह्मण कहते हैं… : “यह पूर्ण और परिपूर्ण है।”

“और अन्य लोगों का धम्म निम्न स्तर का है”: अन्य लोगों का धम्म, …, कुछ समण और ब्राह्मण कहते हैं …: “यह निम्न स्तर का है, … ।”

“इस तरह पकड़ने के बाद, वे बहस करते हैं”: इस तरह पकड़ने के बाद, समझने के बाद, …, वे बहस करते हैं, झगड़ा करते हैं, …: “तुम इस धम्म को नहीं जानते, ….”

उन्होंने कहा कि उनके विचार सत्य हैं: "दुनिया स्थिर है, ..."

140 · यदि तुम अपने विरोधी के तिरस्कार से हीन हो जाओ, तो किसी भी धर्म में कोई विजेता नहीं होगा, क्योंकि उनमें से प्रत्येक दूसरों को बताता है कि उनका धर्म घृणित है, और स्वयं को बलवान बताता है।

“यदि अपने प्रतिद्वंदी के तिरस्कार से तुम हीन हो जाओगे”: यदि प्रतिद्वंदी अपने द्वारा तिरस्कृत किए जाने, फटकार लगने, दोषारोपण होने या गाली-गलौज के कारण मूर्ख, हीन, आदि हो जाता है।

“किसी भी धम्म में कोई श्रेष्ठ नहीं होगा”: धम्म में कोई प्रथम, सबसे श्रेष्ठ, उच्चतर, शीर्ष नहीं होगा।

क्योंकि उनमें से प्रत्येक दूसरों को धम्म के बारे में बताता है: अधिकांश लोग बहुसंख्यक धम्मों को हीन बताकर उनका अपमान करते हैं, उन पर आरोप लगाते हैं और उनकी निंदा करते हैं… एक व्यक्ति अधिकांश अन्य धम्मों को हीन बताकर उनका अपमान करता है… एक व्यक्ति यह भी कहता है कि अन्य धम्म हीन है…

“अपने बारे में वे मजबूत (दृढ़, स्थिर) होने का दावा करते हैं”: मेरा अपना धम्म, मेरा अपना दृष्टिकोण, मेरा अपना तरीका, मेरा अपना मार्ग, अपने ही मार्ग पर वह एक सशक्त वक्ता है, एक दृढ़ वक्ता है, जो स्थापित है।

141 · जिस धम्म का वे आदर करते हैं, वह सत्य है, (जैसे) वे अपने मार्ग की प्रशंसा करते हैं, कही गई हर बात सत्य हो जाएगी, क्योंकि उन लोगों के लिए पवित्रता उनकी अपनी है।

“जिस धम्म का स्वयं आदर किया जाता है, वही सत्य है”: अपने धम्म का आदर क्या है? अपने गुरु का आदर, पूजा, आराधना और प्रशंसा करना: “यह गुरु सर्वज्ञानी हैं।” यही अपने धम्म का आदर है। अपने धम्म, अपने समूह, अपने विचारों, अपने मार्ग, अपने पथ के बारे में बात करते हुए, आदर, पूजा, आराधना और प्रशंसा करना: “यही मार्ग त्याग है।” यही अपने मार्ग का आदर करना है। “जिस धम्म का स्वयं आदर किया जाता है, वही सत्य है”: “केवल अपने धम्म का आदर ही सत्य, सत्यनिष्ठ, तथ्यात्मक, सही और अपरिवर्तनीय है।”

“वे अपने ही मार्ग की प्रशंसा करते हैं”: धम्म उनका अपना मार्ग है, दृष्टिकोण उनका अपना मार्ग है, रास्ता उनका अपना मार्ग है, पथ उनका अपना मार्ग है, वे अपने ही मार्ग की प्रशंसा और सराहना करते हैं।

“तब कही गई हर बात सत्य हो जाएगी”: कही गई हर बात सत्य, सच, … हो जाएगी।

"क्योंकि उन लोगों के लिए पवित्रता ही उनकी अपनी विशेषता है": उन समण और ब्राह्मणों के लिए, वे शुद्ध, स्वच्छ और सर्व-शुद्ध हैं; वैराग्य, मुक्ति और अनासक्ति ही उनकी अपनी विशेषता है।

142 · उन ब्राह्मणों के लिए जो दूसरों द्वारा निर्देशित नहीं होते, (या) धम्म में चयन करने के बाद दृढ़ता से पकड़े रहते हैं, इसलिए वे तर्कों से मुक्त हो गए हैं, क्योंकि वे अन्य धम्मों को सबसे विजयी नहीं मानते।

"अन्य द्वारा निर्देशित न होने वाले ब्राह्मणों के लिए": "नहीं" नकारात्मक है। "ब्राह्मण," .... "अन्य द्वारा निर्देशित न होने वाले ब्राह्मणों के लिए": ब्राह्मणों के लिए, वे जो अन्य द्वारा निर्देशित नहीं होते। ब्राह्मण वे हैं जो अन्य द्वारा निर्देशित नहीं होते, अन्य पर निर्भर नहीं होते, अन्य के ऋणी नहीं होते और अन्य से बंधे नहीं होते। वह (सच्चाई से) जानता और देखता है कि वह अज्ञानी नहीं है, वह सत्यनिष्ठा से जानता है और वह स्मरण रखता है: "सभी कर्म अनित्य हैं" एक ब्राह्मण के लिए जो अन्य द्वारा निर्देशित नहीं होता, ...(छोड़ा गया, पिछले खंड देखें)।

"धम्म में चुने जाने के बाद, दृढ़ता से धारण करना": "धम्म में," बासठ बुरे विचारों में। "चुने जाने के बाद," ...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)। "दृढ़ता से धारण करना," सीमित धारण, आंशिक धारण, सर्वोच्च धारण, निश्चित मात्रा में धारण, संचित धारण, पूर्णतः संचित धारण: "यह सत्य है, ...।" उन्हें धारण किया जाता है, उनसे आसक्ति होती है, वे जुड़े होते हैं, उन्हें ग्रहण किया जाता है और उन पर विश्वास किया जाता है। वे अस्तित्व में नहीं हैं, वे ज्ञात नहीं हैं, ...।

इसलिए बहस को त्याग दिया गया है: इसलिए... विचारों के बीच का झगड़ा, बहस... दूर हो गया है, पार हो गया है, उस पर विजय प्राप्त कर ली गई है।

"क्योंकि वह अन्य धर्मों को सबसे विजयी नहीं मानता": धर्म के अतिरिक्त, समस्त धार्मिकता के अतिरिक्त, दिव्य आधारों के अतिरिक्त, जड़ों के अतिरिक्त, शक्तियों के अतिरिक्त, ज्ञानों के अतिरिक्त, पवित्र मार्ग की आठ शाखाओं के अतिरिक्त, उसने प्रथम और सबसे विजयी, श्रेष्ठ, सर्वोच्च, शीर्ष विधि को नहीं देखा, नहीं देखा, नहीं उसका अवलोकन नहीं किया।

143 · (कहते हुए) मुझे पता है, मैं इसे इस तरह देखता हूँ, कुछ लोग विचारों के माध्यम से पवित्रता की ओर लौटते हैं, अगर वह इसे स्वयं देख ले तो वह क्या कर सकता है? बहुत दूर चलने के बाद, वे कहते हैं कि अन्य चीजों में पवित्रता है।

"मैं जानता हूँ, मैं इसे इस तरह देखता हूँ": "मैं जानता हूँ," या अपने मन से, या अपने अतीत के ज्ञान से। "मैं देखता हूँ," मैं अपनी आँखों से देखता हूँ, या स्वर्ग की दृष्टि से। "यह ऐसा ही है।" यह सच है, ...

"कुछ लोग शुद्ध माने जाने वाले विचारों की ओर लौटते हैं": कुछ समण और ब्राह्मण शुद्ध माने जाने वाले विचारों की ओर लौटते हैं, ...: "संसार स्थिर है, ..."

"यदि वह स्वयं देखे कि वह क्या कर सकता है": "वह देखता है," या उसने अपने मन से देखा, या पिछले जन्मों की स्मृति के ज्ञान से, उसने प्रत्यक्ष दृष्टि से देखा, या आकाश की दृष्टि से। "उसके लिए, उससे क्या किया जा सकता है," उसके लिए, उस दृष्टि से, क्या किया गया है? दुख का कोई ज्ञान नहीं, कोई न्याय नहीं, मार्ग का कोई अभ्यास नहीं, बिना परिणाम के गवाही देना नहीं, लोभ का त्याग नहीं, क्रोध का त्याग नहीं, मोह का त्याग नहीं, सभी प्रकार के अपवित्रता का त्याग नहीं, और संसार का कोई नाश नहीं।

"अति करने के बाद, उन्होंने कहा कि वे अन्य तरीकों से शुद्ध थे": चार ध्यान अवस्थाओं में बने रहने के अतिरिक्त, धर्म के अतिरिक्त, ..., उन्होंने शुद्ध मार्ग, निर्मल मार्ग और शुद्ध श्वेत मार्ग को पार किया, पार किया और उस पर विजय प्राप्त की। उनके कहने, बताने के बाद, ..., सर्व-शुद्ध; वैराग्य...।

या, बुद्धों और बुद्धों के शिष्यों और भिक्षु बुद्धों द्वारा बाह्य मार्ग के अशुद्ध, अस्पष्ट, अपवित्र, अपवित्र और अशुद्ध श्वेत मार्गों को पार करने और उन पर विजय प्राप्त करने के बाद, उन्होंने चार प्रकार की जागरूकता का अभ्यास किया, ..., सूचित करने के लिए, बताने के लिए, ...।

144 · जो लोग इसे देखते हैं, वे नाम और रूप देखते हैं, और जो इसे देखते हैं वे (केवल यही) जानेंगे, वह कमोबेश अपनी इच्छा अनुसार देखे; वास्तव में, कुशल लोग यह नहीं कहते कि वह शुद्ध है।

"जो देखता है, वह नाम और रूप देखता है": जो देखता है, वह इसे या तो अपने मन से, या पूर्व जन्मों की स्मृतियों के ज्ञान से, या प्रत्यक्ष रूप से, या आकाश की दृष्टि से देखता है। वह केवल नाम और रूप को ही स्थिर, सुखी, सच्चे स्वरूप के रूप में देखता है; वह उन धर्मों के संचय, विनाश, सुख, कष्ट या त्याग को नहीं देखता।

"उन्हें देखने के बाद, वे ज्ञात हो जाएँगे": "देखने के बाद," .... जो स्थिर, सुखी, सच्चे स्व, उन धर्मों के एकत्रीकरण, विलीनता, सुख, या कष्ट, या त्याग के रूप में ज्ञात होते हैं, वे ज्ञात हो जाते हैं।

"उसे अपनी इच्छानुसार कमोबेश देखने दो": जब वह अपनी इच्छानुसार कमोबेश नाम और रूप देखता है, तो यह स्थिर, सुखद और सत्य होता है।

"निःसंदेह, कुशल लोग यह नहीं कहते कि यह शुद्ध है": "कुशल लोग," ...(छोड़ा गया, पिछले खंड देखें)..., या स्वर्ग की दृष्टि से, बोलते नहीं, बताते नहीं, ...: नाम और रूप को शुद्ध देखकर, ...।

145 · जुनूनी आलोचक वास्तव में वे लोग हैं जिन्हें समायोजित करना आसान नहीं है: वे लोग जो निश्चित दृष्टिकोण को महत्व देते हैं, जब यह घोषित किया जाता है कि वहां विश्राम करने वाला हर कोई शुद्ध है, तो शुद्धतावादी उसे उसी तरह देखता है।

"जो लोग किसी बात को लेकर बहुत जुनूनी होते हैं, उनके साथ तालमेल बिठाना आसान नहीं होता": "दुनिया स्थिर है..." जुनूनी लोगों का यही मानना होता है; "दुनिया बहुत ही स्थायी है..." "यह सच है कि तालमेल बिठाना आसान नहीं है।" जुनूनी लोग वे होते हैं जिनके साथ तालमेल बिठाना मुश्किल होता है, जिन्हें समझना मुश्किल होता है, जिनके बारे में बताना मुश्किल होता है, जिन्हें देखना मुश्किल होता है और जिन्हें समझना मुश्किल होता है।

"निश्चित दृष्टिकोण को महत्व देने वाले लोग": निर्मित, निश्चित, बनावटी और साझा दृष्टिकोण, और फिर ध्यान देने के बाद कार्य करना। झंडे के रूप में देखना, मीनार के रूप में देखना, वृद्धि के रूप में देखना, अनुसरण करते हुए दिखना।

जब यह घोषित किया जाता है कि जो कोई भी उस पर निर्भर रहता है वह शुद्ध है": "जो कोई भी उस पर निर्भर रहता है," गुरुओं पर, धम्म पर, ..., निर्भरता, निष्ठा, उसमें लीन होना, स्थिर होना और अपना हृदय उसकी ओर मोड़ना, वही उस पर निर्भर है। "वहाँ" का अर्थ है स्वयं की दृष्टि में, अपनी पसंद में, अपनी प्रवृत्ति में, अपने मत में। "जब इसे (शुद्ध) घोषित किया जाता है" तो वह शुद्ध वक्ता, बुद्धिमान वक्ता, ... होता है।

"शुद्धतावादी वहाँ है, वह इस प्रकार देखता है": "शुद्धतावादी," सर्वव्यापी शुद्धतावादी, स्पष्ट करने वाला, सर्वव्यापी शुद्धतावादी। या, शुद्ध द्रष्टा (दृष्टिकोण का), सर्वव्यापी शुद्ध दृष्टि, शुद्धता देखने वाला, संपूर्ण श्वेतता देखने वाला। "वहाँ," अपने ही दृष्टिकोण में, ... "सत्य," सत्यवादी, ... वह देखता और समझता है।

146 · ब्राह्मण विचार-विमर्श के बाद रचनाएँ नहीं करते, वे (दृष्टिकोण) देखने के लिए यात्री नहीं हैं, न ही ज्ञान के रिश्तेदार हैं, और सांसारिक की सामान्य राय जानने के बाद, वे देखते हैं कि दूसरे इसे कैसे ग्रहण करते हैं (समझते हैं)।

"ब्राह्मण विचार करने के बाद निर्माण में नहीं आते": "नहीं" नकारात्मक है। "ब्राह्मण," .... "निर्माण," ...(छोड़ा गया, पिछले खंड देखें)। विचार करने के बाद, इसे ज्ञान कहा जाता है, ... "ब्राह्मण विचार करने के बाद निर्माण में नहीं आते": ब्राह्मण विचार करने के बाद, जानने के बाद, ... सभी कर्म अनित्य हैं... (छोड़ा गया)। वह इच्छा के निर्माण या बोध के निर्माण में नहीं आते, न पहुँचने के लिए, न पकड़ने के लिए, न लेने के लिए, न आसक्ति के लिए।

"वह दृष्टियों का अनुयायी नहीं है, न ही ज्ञान का संबंधी है": उसके लिए, बासठ बुरी दृष्टियाँ काट दी गई हैं, ..., और वह बहक नहीं जाता, न ही उस बुरी दृष्टि को मूल मानकर उसकी ओर लौटता है। "न ही वह ज्ञान का संबंधी है," न ही ज्ञान की आठवीं श्रेणी का, न ही ज्ञान की पाँच शक्तियों का, न ही वह वासनापूर्ण संबंध स्थापित करता है, उत्पन्न करता है, न ही उत्पन्न करता है।

"और आम लोगों की आम राय जानने के बाद": "जानने के बाद,"... आम राय को बासठ बुरी राय की आम राय कहा जाता है। "आम", "आम लोगों से उत्पन्न आम राय" सांसारिक हैं, या "विभिन्न लोगों से उत्पन्न आम राय" सांसारिक हैं।

"वह देख रहा है और दूसरे उठा रहे हैं": दूसरे अपनी प्यास और देखने के कारण पकड़ रहे हैं, ले रहे हैं और चिपके हुए हैं; अरहंत देखता रहता है, न पकड़ता है, न लेता है और न चिपका रहता है।

147 · मुनि के इस संसार में बंधन छोड़ने के बाद, वे उत्पन्न हुए विवाद में शामिल समूह के सदस्य नहीं थे। मौन व्यक्ति मौन लोगों के बीच शांत रहता है, और वह व्यक्ति जो दूसरों के कुछ उठाने पर भी कुछ नहीं उठाता।

"मुनि ने यह बंधन यहीं संसार में छोड़ दिया": "बंधन," बंधन के चार प्रकार होते हैं: ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)। "मुनि," .... "यहाँ," ....

"उत्पन्न विवादों में समूह में प्रवेश न करना": जो विवाद उत्पन्न हुए हैं, जो पैदा हुए हैं, जो प्रकट हुए हैं, उनमें वे लोग न चलें जो इच्छाओं के अनुसार नहीं चलना चाहिए, जो उत्तेजित हैं, जो भयानक हैं, उन्हें व्यवहार नहीं करना चाहिए, जो मूर्ख नहीं होने चाहिए, उन्हें व्यवहार नहीं करना चाहिए यदि वे नहीं चाहते, उन्हें व्यवहार नहीं करना चाहिए यदि वे क्रोधित नहीं होते, उन्हें व्यवहार नहीं करना चाहिए यदि वे भयभीत नहीं होते, मूर्ख व्यक्ति को कार्य नहीं करना चाहिए, न तो लोभ के कारण, न घृणा के कारण, न अज्ञान के कारण, न अहंकार के कारण, न दृष्टि के कारण, न व्यभिचार के कारण, न संदेह के कारण, न ही संभावित संकटों के कारण समूह छोड़ें, और न ही कलह और धर्म संबंधी बहस से प्रेरित, निर्देशित, बहकाए या पराजित हों।

"मौन रहने वाला मौन रहने वालों में शांतिप्रिय है": "मौन रहने वाला," ...(विलुप्त, पिछले भाग देखें)। "उन लोगों में जो मौन नहीं हैं," जो मौन नहीं हैं, जो स्थिर नहीं हैं, जो बुझ नहीं रहे हैं, जो शीतल नहीं हो रहे हैं, जो विश्राम नहीं कर रहे हैं। "वह शांत है," अरहंत छह प्रकार की शांति धारण करता है: अपनी आँखों से रूप देखने के बाद, वह न तो प्रसन्न होता है और न ही दुखी, बल्कि शांति से, विचारों और धार्मिक ज्ञान के साथ रहता है; अपने कानों से ध्वनि सुनने के बाद...(विलुप्त); मृत्यु के समय: वह वह है जो अच्छी तरह से वश में है (मौन रहने वाला)।

"जो लोग नहीं उठाते, जबकि दूसरे उठा लेते हैं": दूसरे लोग प्यास और दृष्टि के कारण पकड़े रहते हैं, और अरहंत देखते रहते हैं, ...

148 · पिछली परेशानियों को त्यागकर, नई परेशानियाँ न पैदा करके, जो लोग इच्छा या आसक्ति (हठधर्मिता) तक नहीं पहुँचते, वही बुद्धिमान व्यक्ति है जिसने अपने आप को बुरी राय से मुक्त कर लिया है, और संसार में अपने आप को दूषित या निंदा नहीं करता।

"पिछली परेशानियों को त्याग दो और नई परेशानियाँ पैदा मत करो": पिछली परेशानियाँ अतीत की संवेदना, बोध और चेतना कहलाती हैं। अतीत के उन कर्मों के संबंध में जो प्रदूषण का कारण बन सकते हैं, उन प्रदूषणों को त्यागने के बाद, त्यागने के बाद, हमेशा के लिए त्यागने के बाद, दूर भगाने के बाद, अंत करने के बाद और उन्हें अस्तित्वहीन बना देने के बाद, "नई परेशानियाँ पैदा मत करो," नई परेशानियाँ वर्तमान संवेदना, बोध और चेतना कहलाती हैं। कर्म इच्छा, प्रेम और लोभ का अजन्मा स्रोत है; वे जिन्हें जन्म लेने, उत्पन्न होने, उत्पन्न होने और जन्म लेने की अनुमति नहीं है।

"न तो इच्छा की पूर्ति करने वाला और न ही आसक्त": जो अभाव के कारण नहीं जाता, ...(उद्धृत)। "न ही आसक्त (हठधर्मी)," गैर-"संसार स्थिर है, यह सत्य है, ...(उद्धृत)।"

"वह बुद्धिमान व्यक्ति है जिसने अपने आप को बुरे विचारों से मुक्त कर लिया है": उसके लिए, बासठ बुरे विचार दूर हो चुके हैं, ... अंतर्दृष्टि बंधन से मुक्त है, और वह एक स्वतंत्र हृदय से जीवन व्यतीत करता है। "बुद्धिमान व्यक्ति," ...

“संसार में अपने आप को दूषित न करना, और अपने आप को धिक्कारना नहीं”: “संलग्नता,” दो प्रकार की संलग्नता होती है: ... उसके लिए, प्यास की संलग्नता टूट गई है, ..., वह दुख के संसार में दूषित नहीं है, मनुष्य के संसार में दूषित नहीं है, स्वर्ग के संसार में दूषित नहीं है, समूह के संसार में दूषित नहीं है, संसार के संसार में दूषित नहीं है, और स्थानों के संसार में दूषित नहीं है; न तो अत्यधिक दूषित है, न ही घनिष्ठ रूप से दूषित है, अब दूषित नहीं है, अब अत्यधिक दूषित नहीं है, अब घनिष्ठ रूप से दूषित नहीं है। उसने बंधन छोड़ दिया है, वह चला गया है, वह मुक्त हो गया है, वह बंधन से अलग हो गया है, वह एक अप्रतिबंधित हृदय से निवास करता है।

“स्वयं को फटकारना नहीं,” स्वयं को दो कारणों से फटकारना चाहिए: ...(विलंबित, पिछले अनुभाग देखें)। जो सृजन नहीं करते, जन्म नहीं देते, उत्पन्न नहीं होते, वे स्वयं को फटकारते नहीं हैं।

149 · वह ऐसा व्यक्ति है जिसने सभी धर्मों में अपने सारे बंधनों को त्याग दिया है: जो कुछ भी देखा या सुना जाता है, मुनि का बोझ हल्का हो गया है और वे निर्माण कार्य में नहीं लगते, रुकते नहीं और उनमें कोई इच्छा नहीं होती। [इस प्रकार भगवान बुद्ध ने कहा।]

“वही है जिसने सभी धर्मों में सेना को पीछे छोड़ दिया है: जो कुछ भी वह देखता है, सुनता है और समझता है”: ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

“उस मुनि का बोझ हल्का और मुक्त हो गया है”: “बोझ” तीन प्रकार के होते हैं: सामूहिक बोझ, अशुद्धता का बोझ और सृजनात्मक बोझ। सामूहिक बोझ क्या है? परिणामी रूप, भावना, विचार, व्यवहार और चेतना, यही सामूहिक बोझ है। अशुद्धता का बोझ क्या है? लोभ, घृणा, अज्ञान... (विलुप्त), सभी अस्वास्थ्यकर कर्म अशुद्धता का बोझ हैं। सृजनात्मक बोझ क्या है? आशीर्वाद, अपराध, गतिहीनता, यही सृजनात्मक बोझ है। क्योंकि सामूहिक बोझ, अशुद्धता का बोझ और सृजनात्मक बोझ कट गए हैं, जड़ें कट गई हैं, जैसे बिना जड़ों वाला ताड़ का पेड़ भविष्य में अस्तित्वहीन हो जाता है, इसे बोझ का उतर जाना, बोझ का गिर जाना, बोझ का हट जाना, बोझ का पूरी तरह से गिर जाना, बोझ का कम हो जाना और बोझ का समाप्त हो जाना कहते हैं।

“मुनि,”...

“मुक्त,” मुनि का मन लोभ से मुक्त हो गया है, दयालुता से मुक्त और निर्मल हो गया है; हृदय क्रोध से मुक्त हो गया है..., मन भ्रम से मुक्त हो गया है..., (उतारा गया) मन सभी बुरी आदतों से मुक्त हो गया है, दयालुता और राहत से मुक्त हो गया है।

“जो निर्माण नहीं करता, जो रुकता नहीं, जो आशा नहीं रखता [इस प्रकार, मुहम्मद (ने कहा)]”: “निर्माण,” दो प्रकार का निर्माण है: .... “जो रुकता नहीं,” सभी अज्ञानी साधारण लोग दूषित हैं, अच्छे साधारण लोग, जिनमें सात प्रकार के ज्ञान शामिल हैं, जो प्राप्त होने चाहिए थे लेकिन नहीं प्राप्त हुए, जो प्राप्त होने चाहिए थे लेकिन नहीं प्राप्त हुए, उन्हें गवाही देनी चाहिए, लेकिन जिन्होंने गवाही नहीं दी वे दूर रहते हैं, परहेज करते हैं और बचते हैं। अरहंत अलग हो गया है, परहेज कर चुका है, त्याग चुका है, छोड़ चुका है, प्रस्थान कर चुका है, बंधन से मुक्त हो चुका है, और वह एक निश्चिंत हृदय से जीवन व्यतीत करता है। “जो इच्छा नहीं करते,” इच्छा को प्यास कहा जाता है, यह लोभ है, ..., बुरी जड़ें। जो इच्छा करता है, उसकी लालसाएँ कट जाती हैं, ..., उसे इच्छाहीन कहा जाता है।

“हे भगवान,” ...(विलुप्त, पिछले अनुभाग देखें)। गैर-निर्माता, निरंतर चलने वाले, खोज न करने वाले के लिए। [इस प्रकार भगवान ने कहा]।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> निद्देसा >> निद्देसा 1.14

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

<<<< पिछला अगला >>>>

14. त्वरित निर्देश

150 · सूर्य के सगे-संबंधियों! हे महान ऋषि! मैं आपसे सुदूर और मौन के लोक के बारे में पूछता हूँ! उसे देखने के बाद भिक्षु निर्वाण कैसे प्राप्त करता है और संसार से अनासक्त कैसे हो जाता है?

"सूर्य के वंशज! मैं तुमसे पूछता हूँ": "जांच," तीन प्रकार की जांच होती हैं: अदृश्य की व्याख्या के बारे में जांच, दृश्य के संगम के बारे में जांच और संदेह के निवारण के बारे में जांच।

अदृश्य के बारे में पूछताछ क्या है? अज्ञात, अदृश्य, अमापनीय, अनपढ़, अस्पष्ट विशेषता के बारे में, अपनी बुद्धि के उद्देश्य से, देखकर, मापकर, परखकर, स्पष्ट रूप से, उसने एक प्रश्न पूछा।

प्रत्यक्ष के संगम के बारे में पूछताछ क्या है? एक ऐसी विशेषता जो ज्ञात, देखी, मापी, परखी, स्पष्ट और समझी गई थी। उसने अन्य बुद्धिमान पुरुषों के साथ सामंजस्य स्थापित करने के उद्देश्य से प्रश्न पूछे।

संदेह को दूर करने के लिए पूछताछ क्या है? एक संशयवादी, जन्मजात संशयवादी और जन्मजात संशयवादी पूछता है: "क्या ऐसा है? क्या यह सच नहीं है? तो फिर यह क्या है? यह कैसे है?" वह संदेह को दूर करने के उद्देश्य से प्रश्न पूछता है।

पूछताछ के अगले तीन प्रकार हैं: मानवीय पूछताछ, गैर-मानवीय पूछताछ और सृजित (निम्मितपुच्छा) की पूछताछ।

मानवीय जिज्ञासा क्या है? बुद्ध, भगवान बुद्ध के दर्शन करने के बाद लोगों ने प्रश्न पूछे: भिक्षुओं, उपासकों, उपासिकाओं, राजाओं, क्षत्रिय, ब्राह्मणों, वेस्स, सुद्धों, गृहस्थों और भिक्षुओं ने।

अमानवीय पूछताछ क्या है? बुद्ध, भगवान के दर्शन करने के बाद, गैर-मनुष्यों ने प्रश्न पूछे: अजगर, सुनहरे पंखों वाले पक्षी, यक्ष, असुर, गंधर्व, राजा, इंद्र, ब्रह्मा, देव।

सृष्टि की जिज्ञासा क्या है? भगवान बुद्ध के मन द्वारा निर्मित सभी भौतिक शरीर और अंग उन्हें देखकर उनके पास आते हैं और प्रश्न पूछते हैं, और भगवान बुद्ध उनका उत्तर देते हैं।

आगे तीन प्रकार की पूछताछ: स्वयं के लाभ के लिए पूछताछ, दूसरों के लाभ के लिए पूछताछ और दोनों के लाभ के लिए पूछताछ। आगे तीन प्रकार की पूछताछ: वर्तमान हितों के बारे में पूछताछ, भविष्य के हितों के बारे में पूछताछ और सर्वोच्च हितों के बारे में पूछताछ। आगे तीन प्रकार की पूछताछ: दोषरहितता के लाभ के लिए पूछताछ, प्रदूषणरहितता के लाभ के लिए पूछताछ और शुद्ध लाभ के लिए पूछताछ। आगे तीन प्रकार की पूछताछ: अतीत के बारे में पूछताछ, भविष्य के बारे में पूछताछ और वर्तमान के बारे में पूछताछ। आगे तीन प्रकार की पूछताछ: स्वयं के भीतर पूछताछ, स्वयं के बाहर पूछताछ और स्वयं के भीतर और बाहर दोनों के बारे में पूछताछ। आगे तीन प्रकार की पूछताछ: अच्छे कर्म, बुरे कर्म और अनिर्दिष्ट (अव्यक्तपुच्छा) के बारे में। आगे तीन प्रकार की पूछताछ: जनसमूह, अवशेष और संस्थाओं के बारे में। आगे तीन प्रकार की पूछताछ: जागरूकता, परिश्रम और आध्यात्मिक सार के बारे में। आगे तीन प्रकार की पूछताछ: मूल, शक्ति और ज्ञान के बारे में। आगे तीन प्रकार की पूछताछ: मार्ग, फल और निर्वाण के बारे में।

"सूर्य वंश के सदस्य! मैं आपसे पूछता हूँ": मैं आपसे पूछता हूँ; मैं आपसे विनती करता हूँ; कृपया मुझे स्पष्ट करें; कृपया मुझे बताएं। "सूर्य वंश," सूर्य (आदिको) को सूर्य (सूरियो) कहा जाता है, सूर्य का उपनाम गौतम है, भगवान बुद्ध का उपनाम भी गौतम है, भगवान बुद्ध सूर्य उपनाम के रिश्तेदार हैं, सूर्य के उपनाम के रिश्तेदार हैं, इसलिए बुद्ध सूर्य वंश के सदस्य हैं।

"दूर और शांत, महान ऋषि": "दूर," दूरी के तीन प्रकार होते हैं: ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

“महान ऋषि,” महान ऋषि भगवान हैं, और “महान उपदेशों के साधक और अनुयायी” महान ऋषि हैं। ...महान एकाग्रता के..., ...महान मुक्ति के समूह के..., “ज्ञान और अंतर्दृष्टि की महान मुक्ति के साधक और अनुयायी” महान ऋषि हैं; अंधकार द्वारा एकत्रित अंश..., महान उलटफेर का विनाश..., प्यास के बड़े तीर को निकालना..., दृष्टि के संचय का खुलना..., बड़े अहंकार के ध्वज को उठाना..., ...महान कार्य का शांत होना..., बड़ी धारा का शांत होना..., भारी बोझ को उतारना..., महान पुनर्जन्म के चक्र का टूटना..., महान गर्मी का गायब होना..., महान गर्मी का रुकना..., “अपने हृदय में धम्म का ध्वज उठाने वाला साधक और अनुयायी” महान ऋषि बन जाता है; महान बुद्धि..., महान परिश्रम..., महान देवता..., महान जड़ें..., शक्ति..., महान ज्ञान की शाखाएँ..., पवित्र मार्ग की आठ बड़ी शाखाएँ..., “सर्वोच्च लाभ की अमरता, निर्वाण का साधक, उसका अनुसरण करने वाला” महान ऋषि हैं; “शक्तिशाली प्राणियों द्वारा खोजा, अनुसरण किया और तलाशा गया: बुद्ध कहाँ हैं? भगवान कहाँ हैं? देवताओं में भगवान कहाँ हैं? मनुष्यों में बैल राजा कहाँ हैं?”

“देखने के बाद भिक्षु निर्वाण कैसे प्राप्त करता है?”: देखने, नापने, तौलने, परखने, अलग करने, स्पष्ट करने के बाद अपने लोभ को कैसे बुझाया जाए (निर्वाण प्राप्त करने के लिए), अपने क्रोध को कैसे बुझाया जाए, अपने अज्ञान को कैसे बुझाया जाए... (विलुप्त, पिछले भाग देखें), ...सभी अहितकर कर्मों को कैसे नष्ट किया जाए, उन्हें कैसे शांत किया जाए, उन्हें कैसे शांत किया जाए, उन्हें कैसे रोका जाए। “भिक्षु” से तात्पर्य एक भिक्षु, एक गुणी भिक्षु या एक विद्वान भिक्षु से है।

“संसार में आसक्ति रहित बनो”: चारों प्रकार के कर्मों से मुक्त होकर, ऐसा बनो जो ग्रहण न करे, किसी चीज को थामे न रखे, किसी चीज से आसक्त न हो, किसी चीज से चिपका न रहे। “संसार में,” दुख के संसार में, मनुष्य के संसार में, स्वर्ग के संसार में, समुच्चय के संसार में, लोकों के संसार में, अस्तित्व के संसार में। “किसी भी,” किसी भी रूप, भावना, विचार, व्यवहार, चेतना में।

151 · [इस प्रकार भगवान (ने कहा):] झूठे नाम का मूल: विचार करने के बाद, सभी (विचारों) “मैं हूँ” को रोक देना चाहिए, अपने भीतर की किसी भी लालसा को, हमेशा सचेत रूप से उनके समायोजन के लिए सीखना चाहिए।

“[इस प्रकार भगवान बुद्ध ने कहा:] झूठे नाम का मूल: विचार करने के बाद, हमें 'मैं हूँ' के सभी विचारों को त्याग देना चाहिए”: कल्पना व्यर्थ (अवधारणा/ज्ञान) का नाम है: प्यासी प्रेम का झूठा नाम, झूठी दृष्टि का नाम। प्रेम की लालसा के भ्रामक नाम का मूल क्या है? अज्ञान ही मूल है; तर्क के मूल के रूप में नहीं; अहंकार के मूल के रूप में; लज्जा रहित मूल के रूप में; लज्जा के मूल के रूप में; पतन के मूल के रूप में, यही नाम की लालसा का झूठा मूल है। देखने के झूठे नाम का मूल क्या है? अज्ञान ही मूल है...।

“धन्य प्रभु,” ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

विचार करने के बाद, आपको 'मैं हूँ' के सभी भावों को त्याग देना चाहिए: विचार करने के बाद, इसे ज्ञान कहा जाता है... रूप के बारे में "मैं हूँ", "मैं हूँ", अहंकार "मैं हूँ" और इच्छा "मैं हूँ" जैसी परेशानियों का एक अंतर्निहित रुझान है, भावना के बारे में..., विचार के बारे में..., व्यवहार के बारे में..., चेतना "मैं हूँ" के बारे में, अहंकार "मैं हूँ" और इच्छा "मैं हूँ" की परेशानियों का संभावित रुझान है। "[इस भगवान (कहते हुए) की तरह:] झूठे नाम की जड़: विचार करने के बाद, 'मैं हूँ' से संबंधित सभी चीजों को रोक देना चाहिए": विचार करने के बाद, इसे रोका जाना चाहिए, समाप्त किया जाना चाहिए, शांत किया जाना चाहिए, बुझाया जाना चाहिए, सभी झूठे नामों और "मैं हूँ" की जड़ के अहंकार को रोकना चाहिए।

“अपने भीतर की कोई भी प्यास”: “कुछ भी,” .... “प्यास,” रूप की लालसा... “अपने भीतर,” अपने भीतर उस लालसा की प्रतीक्षा। या, अपने भीतर को हृदय कहते हैं: हृदय, मन, हृदय, श्वेत (शुद्ध), आशय, मन का स्थान, मन का मूल, चेतना, चेतना का संचय, चेतना के क्षेत्र के अनुरूप, मन सह-अस्तित्व में है, सह-अस्तित्व में है, और उस लालसा से अंतर्विमग्न है, पत्राचार, सह-अस्तित्व, सह-विलुप्ति, निर्भरता का एक ही स्थान, और एक ही वस्तु।

“उन समायोजनों के लिए, हमें इसे हमेशा सचेतनता के साथ सीखना चाहिए”: “हमेशा,” .... “सचेत (के प्रति),” ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

“अधिगम,” अधिगम तीन प्रकार का होता है: ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

जो लोग सामंजस्य स्थापित करना चाहते हैं, उन्हें हमेशा सचेत होकर सीखना चाहिए: जो लोग सामंजस्य स्थापित करना, चीजों को मिटाना, छोड़ना, शांत होना, संबंध तोड़ना और रुकना चाहते हैं, उन्हें सिद्धांतों को बढ़ाना सीखना चाहिए... इन तीनों शिक्षाओं को उस दिशा में आगे बढ़ते समय सीखना चाहिए...

152 · जो कोई भी धम्म को सिद्ध कर सकता है और जान सकता है, चाहे वह अपने भीतर हो या बाहर, उसे इसके कारण हठधर्मिता नहीं रखनी चाहिए, क्योंकि धर्मात्माओं द्वारा इसे मौन नहीं कहा जाता है।

"जो कोई अपने भीतर धम्म के ज्ञान को सिद्ध कर सकता है": वह अपने किसी भी सद्गुण को जान सकता है, चाहे वह अच्छा हो या न हो। उसका अपना गुण क्या है? वह किसी कुलीन परिवार का भिक्षु हो सकता है, या किसी धनी परिवार का भिक्षु हो सकता है, या किसी अत्यंत धनी परिवार का भिक्षु हो सकता है, या भिक्षु के ही घर में रहने वाला कोई प्रसिद्ध व्यक्ति हो सकता है, या यह वस्त्र, भोजन, आश्रय, रोगियों की आवश्यकताओं और चिकित्सा संबंधी आवश्यकताओं में योगदान दे सकता है; वह लेखक हो सकता है, या वक्ता हो सकता है... (विस्तार से उद्धृत, पिछले भाग देखें), इसे उसका अपना गुण कहा जाता है। उसके जो भी गुण हों, वह उन्हें जान सकता है, समझ सकता है। "या बाह्य रूप से": वे जो गुरु के समर्थक हैं, या गुरु का गुण।

"आपको इसके कारण धैर्य नहीं रखना चाहिए": आपको अपने या दूसरों के गुणों के आधार पर धैर्य, हठ, अहंकार, घमंड और अभिमान नहीं रखना चाहिए। इसके कारण अहंकार उत्पन्न नहीं होना चाहिए। ऐसा करने से आप एक कठोर, अति कठोर और अहंकारी व्यक्ति बन जाते हैं।

"क्योंकि धर्मात्मा लोग यह नहीं कहते कि यह मौन है": भले लोगों (सतानम्), भले लोगों (सन्तानम्), भले लोगों (सप्पुरिसानम्), बुद्ध, बुद्ध के शिष्यों और भिक्षु बुद्ध को यह नहीं बताया जाता कि यह मौन है, न ही इसकी व्याख्या की जाती है...

153 · किसी को स्वयं को विजेता, हीन या समकक्ष नहीं समझना चाहिए, क्योंकि एक से अधिक रूपों से प्रभावित होने के कारण, किसी को अपना वर्गीकरण नहीं रखना चाहिए।

"इस वजह से उसे विजेता नहीं माना जाना चाहिए": जन्म से नहीं, ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

या निम्नतर या समकक्ष": ....

"एक से अधिक रूपों द्वारा स्पर्श (संपर्क) किया जाना": विभिन्न रूपों द्वारा स्पर्श किया जाना, प्रताड़ित किया जाना, संयुक्त होना, प्रेतबाधित होना।

उसे स्वयं का वर्गीकरण नहीं करना चाहिए: उसे 'मैं' कहा जाता है। उसे 'मैं' (स्वयं) का निर्माण, वर्गीकरण और अहंकारपूर्वक भेद नहीं करना चाहिए।

154 · केवल अपने भीतर ही मौन होना चाहिए, भिक्षुओं को दूसरों से मौन नहीं मांगना चाहिए, जो व्यक्ति अपने भीतर मौन है, वह क्या ग्रहण करता है और क्या त्यागता है?

"केवल अपने भीतर ही शांत रहना चाहिए": अपने भीतर के लोभ को शांत करना चाहिए; क्रोध को शांत करना चाहिए; ..., शांत करना चाहिए, शांत करना चाहिए, मौन करना चाहिए और समाप्त करना चाहिए।

"भिक्षुओं को अन्य चीजों से मौन की खोज नहीं करनी चाहिए": अशुद्ध मार्गों, बुरे मार्गों और अविभाज्यता जैसी अन्य चीजों से, ध्यान के अलावा, धर्म के अलावा, किसी को मौन, शांति, स्थिरता, समाप्ति और निश्चिंतता की खोज नहीं करनी चाहिए।

"अपने भीतर का मौन": वह जो अपने भीतर की इच्छाओं को शांत करता है; वह जो घृणा को शांत करता है;...

“न तो अस्वीकृति है और न ही ग्रहण करना”: “ना” नकारात्मक है। “ग्रहण करना” स्वयं के लिए है, लेकिन वह इन्हें धारण नहीं करता, और “अस्वीकार करना” उन चीजों के लिए है जिन्हें छोड़ देना चाहिए, वह उन्हें अस्वीकार नहीं करता। जिस चीज को धारण करना चाहिए, उसके साथ कुछ ऐसा भी है जिसे छोड़ देना चाहिए (जिसे छोड़ना चाहिए, उसके साथ वे चीजें भी हैं जिन्हें धारण करना चाहिए)। उसके लिए, यह धारण और त्याग का पारलौकिक अनुभव है। अरहंत ने विकास और पश्चात्ताप को पार कर लिया है, उन्होंने पुनर्जन्म के बिना जीवन और मृत्यु के चक्र का अभ्यास किया है।

155 · जैसे समुद्र के बीच में, यह स्थिर रहता है और इसमें कोई लहर उत्पन्न नहीं होती। जो लोग इस प्रकार रहते हैं और विचलित नहीं होते, वह भिक्षु चाहे कहीं भी हो, वृद्धि नहीं करेगा।

“जैसे समुद्र के बीच में, बिना लहरें उठे स्थिर रहता है।” समुद्र चौरासी हजार योजन तक ऊंचा और गहरा है। चालीस हजार योजन नीचे का पानी मछलियों और कछुओं से हिलता है, और चालीस हजार योजन ऊपर का पानी हवा से हिलता है, और चालीस हजार योजन के बीच में, पानी न तो हिलता है, न ही बहुत अधिक हिलता है, न ही कांपता है, न ही बहुत अधिक कांपता है, न ही निष्क्रिय है, न ही हलचल पैदा करता है, न ही लहरें उठाता है, न ही झूलता है, न ही घूमता है, वह शांत है; जहां कोई लहरें उत्पन्न नहीं होतीं, वह एक स्थिर समुद्र है।

या फिर, सात पर्वतों के बीच में एक ऐसा समुद्र है, जहाँ का पानी हिलता नहीं है,...

“इस प्रकार, जो जीवित रहता है और विचलित नहीं होता”: “इस प्रकार” एक लाक्षणिक व्यवस्था है। “जो (स्थिर) रहता है,” वह प्राप्त होने पर भी नहीं डगमगाता; न प्राप्त होने पर भी नहीं डगमगाता; प्रसिद्ध होने पर भी नहीं डगमगाता; प्रतिष्ठा न होने पर भी नहीं डगमगाता; प्रशंसा मिलने पर भी नहीं डगमगाता; फटकार मिलने पर भी नहीं डगमगाता; प्रसन्न होने पर भी नहीं डगमगाता; कष्ट सहने पर भी नहीं डगमगाता, यहाँ तक कि तीव्र रूप से भी नहीं डगमगाता...। “जो विचलित नहीं होता,” उसकी विचलितता को प्यास कहा जाता है, जो लोभ है...। जो विचलित होता है, उसकी लालसा समाप्त हो जाती है..., उसे अविचलित कहा जाता है। अविचलित अवस्था को ही अविचलित माना जाता है। वह प्राप्त होने पर भी नहीं डगमगाता;...।

“भिक्षुओं की संख्या में वृद्धि नहीं होगी चाहे वे कहीं भी हों”: “वृद्धि” में सात प्रकार की वृद्धि होती है: ...(विलंबित, पिछले अनुभाग देखें)। “चाहे कहीं भी हों,” ....

156 · विवेकशील व्यक्ति (खुली आँखों से) कहता है, हे गुरु! कृपया मुझे पथ, पातिमोक्खा, या एकाग्रता के बारे में बताइए।

“विवेकी व्यक्ति बोलता है”: “कथा,” कहना, समझाना, सिखाना, सूचित करना, स्थापित करना, उजागर करना, विश्लेषण करना, स्पष्ट करना। “आँख,” पाँचों आँखें स्पष्ट आँखें हैं: नग्न आँख स्पष्ट आँख है, दिव्य आँख भी स्पष्ट आँख है, स्पष्ट आँख भी स्पष्ट आँख है, बुद्ध की आँख भी स्पष्ट आँख है, और सभी आँखें स्पष्ट आँख हैं।

भगवान बुद्ध नग्न आंखों को "आंखें" क्यों मानते हैं? भगवान बुद्ध की आंखों में पांच रंग हैं: नीला, पीला, लाल, काला और सफेद। उनकी आंखों के बाल नीले, अत्यंत नीले, उत्तम, सुंदर और सन के समान हैं, और अन्य बाल पीले, अत्यंत पीले, सुनहरे और उत्तम, सुंदर हैं, जो बयूर के फूल के समान हैं। भगवान बुद्ध की दोनों आंखें लाल, अत्यंत लाल, सीधी और सुंदर हैं, जो बारिश के बाद जमीन से निकलने वाले कीड़ों के समान लाल हैं, और बीच वाली आंख काली, अत्यंत काली, कोमल, चिकनी, सीधी और नम है। बाहरी आंखें सफेद, अत्यंत सफेद, सफेद, पीली-सफेद, मनभावन और सुंदर हैं, जो ओसाधी नक्षत्र के समान हैं। भगवान बुद्ध की नग्न आंखों से, जो उन्हें पिछले अच्छे कर्मों के फलस्वरूप प्राप्त हुई हैं, वे दिन और रात में सब कुछ देखते हैं, जब अंधकार की चार शाखाएं होती हैं: सूर्यास्त, अमावस्या की रात, घने जंगल का अंधकार और घने बादलों का अंधकार। इसी प्रकार, जब चारों शाखाओं का अंधकार छाया रहता है, तब भी वह दिन-रात सब कुछ देख पाता है। उसके दर्शन में न तो कोई दीवार, न पर्दा, न बाड़, न पहाड़, न झाड़ियाँ, न वनक्षेत्र बाधा बनते हैं। यदि तिल पर निशान लगा हो और उसे तिलों से भरी गाड़ी में रख दिया जाए, तो वह उस तिल को चुन सकता है। इस प्रकार, भगवान बुद्ध की स्वाभाविक नंगी आँख शुद्ध है, और भगवान बुद्ध नंगी आँख को आँख के समान मानते हैं।

भगवान बुद्ध दिव्य दृष्टि को "आँखों वाला" क्यों मानते हैं? शुद्ध और दिव्य दृष्टि से, भगवान बुद्ध देखते हैं कि जब सभी प्राणी मरते हैं और चले जाते हैं, तो वे हीन, विजयी, सुंदर, कुरूप, भाग्यशाली और दुर्भाग्यशाली होते हैं, यह जानते हुए कि सभी प्राणी अपने कर्मों के अनुसार चलते हैं: "ये प्राणी और राजा शरीर के बुरे कर्म, आचरण के बुरे कर्म, इरादों के बुरे कर्म करते हैं, संतों की निंदा करते हैं, गलत विचार रखते हैं और गलत विचार रखने का कर्म करते हैं, वे मृत्यु के बाद दुख के लोक, नरक में चले जाते हैं; या वे प्राणी, जो शरीर के अच्छे कर्म, वाणी के अच्छे कर्म, इरादों के अच्छे कर्म करते हैं, संतों की निंदा नहीं करते हैं, और कर्म के सही दृष्टिकोण का पालन करते हैं, वे अपने शरीर को नष्ट करके मृत्यु के बाद अच्छाई के लोक और स्वर्ग में चले जाते हैं।" इस प्रकार, शुद्ध और दिव्य दृष्टि से, उन्होंने देखा कि जब सभी प्राणी मरते और चले जाते हैं, तो हीनता, विजय, सौंदर्य, कुरूपता, सौभाग्य और दुर्भाग्य की अवस्थाओं में, वे कर्म के अनुसार सभी प्राणियों के प्रवाह को जानते हैं। जब वे चाहें, तो भगवान एक लोक, दो लोक, तीन लोक, चार लोक, पांच लोक और दस लोक देख सकते हैं। साथ ही, बीस लोक, तीस लोक, चालीस, पचास, सौ, ये हजार छोटे लोक, दो हजार मध्य लोक, और ये तीन लाख बड़े लोक [एएन.3.81] भी देख सकते हैं। यदि वे चाहें, तो वे इसे देख सकते हैं। इस प्रकार, भगवान की दिव्य आँखें पूर्णतः शुद्ध हैं, और भगवान अपनी दिव्य आँखों को आँखों के समान मानते हैं।

भगवान बुद्ध ज्ञानी आँखों को आँखों वाला क्यों मानते हैं? भगवान बुद्ध महान बुद्धि, व्यापक बुद्धि, तीव्र बुद्धि, तीक्ष्ण बुद्धि, भेदक बुद्धि, सलाह देने वाली बुद्धि हैं: जो कुशल हैं, जिन्होंने बुद्धि का विकास किया है, जिन्होंने निर्बाध सिद्ध किया है, जिन्होंने चार निर्भीकों को प्राप्त किया है, जो दस शक्तियों से युक्त हैं, जो बैल के समान हैं, जो सिंह के समान हैं, जो अपार धनवान हो सकते हैं, जिनके पास असीम बुद्धि है, जिनके पास असीम चमक है, जिनके पास असीम प्रसिद्धि है, जो धनी हैं, जो मार्गदर्शक हैं, जो मध्यस्थ हैं, जो सांत्वना देने वाले हैं, जो सूचना देने वाले हैं, जो दृश्य बनाते हैं, जो स्पष्ट करते हैं, भगवान बुद्ध वास्तव में अजन्मे मार्ग के संस्थापक हैं, अजन्मे मार्ग के निर्माता हैं, जो अनायास उपदेशक हैं; जो मार्ग को जानता है, मार्ग का ज्ञाता है, और उसके शिष्य अब मार्ग के साथ रहते हैं, और भविष्य में भी उसके अनुयायी होंगे।

भगवान बुद्ध वास्तव में सर्वज्ञ और द्रष्टा हैं, जो सब कुछ जानते और देखते हैं; वे जन्म से ही नेत्रों से युक्त, ज्ञान से युक्त, धर्म से युक्त और ब्रह्म से युक्त हैं; वे धर्म के व्याख्याकार और संवर्धक, अमर दाता, धर्म के राजा, तथागत हैं; ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे भगवान बुद्ध ने न जाना हो, न देखा हो, न प्रमाणित किया हो, न ही ज्ञान से स्पर्श किया हो; भूतकाल, भविष्यकाल और वर्तमान काल ज्ञान के क्षेत्र में सभी कर्मों के साथ बुद्ध और भगवान बुद्ध के पास आए; कोई भी व्यक्ति, चाहे उसका नाम कुछ भी हो, जिसे तर्क द्वारा निर्देशित किया जाना चाहिए, वह जान सकता है: अपना धर्म, दूसरों का धर्म या दोनों, या वर्तमान जीवन का धर्म या अगले जीवन का धर्म या दोनों, चाहे वह गहरा हो या छिपा हुआ, या जिसे निष्कर्ष निकालने के लिए निर्देशित किया जाना चाहिए, या जिसे निर्धारित करने के लिए निर्देशित किया गया है, या कोई दोष या अशुद्धि नहीं है, या स्पष्ट या सर्वोच्च हित है, सब कुछ बुद्ध के ज्ञान में समाहित है।

सभी शारीरिक कर्म बुद्ध और भगवान के ज्ञान में स्थानांतरित हो जाते हैं; सभी भाषाई कर्म...; सभी मानसिक कर्म...; बुद्ध और भगवान का भूतकाल का ज्ञान अवरोध रहित है; भविष्य...; वर्तमान...; जो कुछ भी अनुमान लगाने के लिए निर्देशित किया जाना चाहिए वह ज्ञान की पहुँच है; सभी ज्ञान अनुमान लगाने के लिए निर्देशित किया जाता है, और जो कुछ भी अनुमान लगाने के लिए निर्देशित किया जाना चाहिए वह परम ज्ञान है; परम ज्ञान वह है जो अनुमान लगाने के लिए निर्देशित किया जाता है, और अनुमान लगाने के लिए निर्देशित किए गए ज्ञान से परे कोई ज्ञान नहीं है; निर्देशित और अनुमानित ज्ञान से परे जाने का कोई मार्ग नहीं है। ये धर्म परस्पर सीमित रहते हैं, जैसे दो बक्से, जिनके ढक्कन पूरी तरह से एक दूसरे के संपर्क में हैं; निचला ढक्कन ऊपरी ढक्कन के ऊपर नहीं जाता है, और ऊपरी ढक्कन निचले ढक्कन के ऊपर नहीं जाता है; एक दूसरे से सीमित। (इसी प्रकार,) जो कुछ भी निर्देशित किया जाना चाहिए... (छोड़ा गया); ये धर्म परस्पर सीमित रहते हैं।

बुद्ध और भगवान बुद्ध का ज्ञान समस्त धम्म में व्याप्त है, समस्त धम्म बुद्ध ही हैं, भगवान बुद्ध का ध्यान, आशा, इरादा, मन, सभी जीवों में समाहित है। बुद्ध और भगवान बुद्ध का ज्ञान समस्त जीवों में व्याप्त है। भगवान बुद्ध समस्त जीवों के इरादों को जानते हैं, संकटों की संभावित प्रवृत्ति, व्यवहार और समाधान, कम धूल वाले और अधिक धूल वाले जीवों, जड़ से जुड़े और सुस्त जड़ वाले जीवों, अच्छे कर्मों और बुरे कर्मों, और जीवों की शिक्षायोग्यता और अशिक्षायोग्यता, सक्षम और अक्षम सभी जीवों, स्वर्गलोक, राक्षस और ब्राह्मणों सहित, सभी बुद्ध के ज्ञान में समाहित हैं।

यदि कोई मछली, कछुआ और यहाँ तक कि बड़ी मछलियाँ निगलने वाली नावें भी समुद्र में घूमती हैं, तो उसी प्रकार स्वर्गलोक, राक्षसलोक और ब्राह्मणलोक सहित सभी पीढ़ियाँ, जिनमें समन, ब्राह्मण, स्वर्ग और मनुष्य सभी शामिल हैं, बुद्ध ज्ञान में घूमती रहती हैं, जैसे कोई पक्षी और यहाँ तक

कि स्वर्ण-पंख वाले पक्षी भी अंतरिक्ष में घूमते हैं। उसी प्रकार, सारिपुत्त के समान ज्ञान रखने वाले भी बुद्ध ज्ञान के क्षेत्र में घूमते रहते हैं। बुद्ध का ज्ञान सर्वव्यापी है और स्वर्ग और मनुष्य से परे है।

वे बुद्धिमान क्षुद्र, बुद्धिमान ब्राह्मण, बुद्धिमान गृहस्थ, बुद्धिमान समन, चतुर विद्रोही, और बुराई पर बुद्धिमानी से कार्य करने वाले तीक्ष्ण बुद्धि वाले लोग, वे बाद में सामने आने वाली समस्याओं को तैयार करते हैं; उन्होंने तथागत के दर्शन किए और गुप्त और छिपे हुए विषय के बारे में पूछा। भगवान बुद्ध ने उन प्रश्नों पर विचार-विमर्श किया और तर्क सहित उत्तर दिए, और उन्होंने आस-पास के अन्य लोगों को त्यागकर भगवान बुद्ध के शिष्य बन गए। उस समय, भगवान बुद्ध वहाँ ज्ञान से परिपूर्ण होकर विराजमान थे। इस प्रकार, भगवान बुद्ध अंतर्दृष्टि को आँख के समान मानते हैं।

बुद्ध की आँखें "वही हैं जो आँखों के समान हैं" ऐसा कैसे संभव है? जब भगवान बुद्ध की आँखों से संसार का अवलोकन करते हैं, तो वे कम धूल वाले और अधिक धूल वाले लोगों को देखते हैं; जड़ वाले और कुंद जड़ वाले लोगों को; अच्छे कर्मों वाले और बुरे कर्मों वाले लोगों को; सिखाने में आसान और सिखाने में कठिन लोगों को; अन्य लोकों के विद्यमान पापों और भयों को, और उन लोगों को जो अन्य लोकों में पाप और भय को देखे बिना जीवन व्यतीत करते हैं। जैसे हरे कमल के तालाब, लाल कमल के तालाब और सफेद कमल के तालाब में, कुछ हरे कमल, लाल कमल और सफेद कमल पानी में उगते हैं, पानी की सतह पर रहते हैं, डूबते हैं और पानी के नीचे बढ़ते हैं; कुछ पानी में जन्म लेते हैं और पानी में बढ़ते हैं, और सतह के समान ऊँचाई पर रहते हैं; कुछ पानी से ऊपर उठते हैं और पानी से अछूते रहते हैं। इसी प्रकार, जब भगवान बुद्ध की आँखों से संसार का अवलोकन करते हैं, तो वे कम धूल वाले और अधिक धूल वाले लोगों को देखते हैं; ... [डीएन.14]। भगवान बुद्ध जानते हैं: "यह व्यक्ति लालची है, यह व्यक्ति दुर्व्यवहार करने वाला है, यह व्यक्ति मूर्ख है, यह व्यक्ति मार्गदर्शक है, यह व्यक्ति विश्वासी है और यह व्यक्ति बुद्धिमान है।" भगवान बुद्ध लालची लोगों से बात करते हैं, वे करुणा के मार्ग पर चलने वालों से घृणा करने वालों को सूचित करते हैं, वे उन्हें उचित समय पर धम्म का पाठ करने, प्रश्न पूछने, सुनने और चर्चा करने और गुरुओं के साथ सहजीवन जीने में स्थिर करते हैं। भगवान बुद्ध मार्ग की खोज करने वाले व्यक्ति को सूचित करते हैं, वे विश्वास रखने वालों को बताते हैं: बुद्ध की विवेकशीलता, धम्म का अच्छा स्वभाव, संघ और उनके उपदेशों का अच्छा अभ्यास। भगवान बुद्ध बुद्धिमान अभ्यासियों को विपश्यना सिखाते हैं: अनित्यता, दुख और अनात्म।

"यदि आप किसी पथरीले पर्वत की चोटी पर खड़े हों, तो आप अपने आस-पास के सभी लोगों को देख सकते हैं। उसी प्रकार, जो गुणी और सर्वज्ञ हैं, वे धम्म के ऊंचे भवन पर चढ़ गए हैं। जो लोग चले गए हैं, वे दुखी लोगों को देख रहे हैं, जो जन्म और बुढ़ापे से पराजित हैं। कृपया उठिए! वीरों! युद्ध के मैदान में विजय प्राप्त करने वालों! कारवां के नेताओं! ऋणमुक्त लोगों, संसार में चलो, हे भगवान! कृपया धम्म का उपदेश दीजिए! समझने वाले अवश्य होंगे।" [डीएन.14]

भगवान बुद्ध सभी आँखों को आँखें क्यों मानते हैं? सभी आँखों को सर्वज्ञ ज्ञान की अवस्था कहा जाता है। भगवान बुद्ध आते हैं (उनके पास है), पूरी तरह से आते हैं (उनके पास है), प्रवेश करते हैं, पूरी तरह से प्रवेश करते हैं, उनके पास पर्याप्त ज्ञान है, उनके पास सर्वज्ञ ज्ञान की अवस्था है।

"उनके लिए इस संसार में कुछ भी अदृश्य नहीं है, ऐसा कोई ज्ञान नहीं है जिसे जाना न जा सके। वे सिद्ध करते हैं कि अस्तित्व में मौजूद हर चीज का मार्गदर्शन अनुमान के आधार पर ही होना चाहिए, क्योंकि तथागत तो मानो सर्वदृष्टि वाले हैं।" [भजन संहिता 1]

"परेशानी से निपटने की स्वतः सिद्ध विधि": "स्वतः सिद्ध विधि," अफवाहों से नहीं, ...(हटा दिया गया, पिछले अनुभाग देखें)। "परेशानी का समायोजन" और "परेशानी"। दो प्रकार के खतरे (परेशानी) हैं: ...(हटा दिया गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"संकट (खतरा)", ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"दुख का नियंत्रण", दुख का नियंत्रण, दुख का त्याग, दुख की मृत्यु, दुख का त्याग, दुख का अंत, निर्जीवता और निर्वाण।

"गुरुजी! कृपया मुझे मार्ग बताइए": "कृपया मुझे मार्ग बताइए," सही मार्ग, अनुसरण करने वाला मार्ग, ...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें), निर्वाण की ओर ले जाने वाला मार्ग, कृपया बताइए, कृपया समझाइए, ...। "गुरुजी," वह व्यक्ति भगवान को पुकारता है। या, जो कोई भी उत्तम, शुभ, अच्छे और दोषरहित आचरण का वर्णन करता है, सिखाता है, ...।

“पातिमोक्खा या एकाग्रता”: “पातिमोक्खा” संयम का आधार है, व्यवहार का (स्वयं) अवरोध है, आत्म-नियंत्रण का प्रवेश द्वार है, इत्यादि, अच्छे धर्म की सर्वोच्च उपलब्धि है। “या एकाग्रता” का अर्थ है मन का स्थिर होना, स्थिरता, अविचलित मन, समाथा (विराम), स्थिर मूल, स्थिर बल, एकाग्रता।

157 · अपनी आँखों से अस्थिर (अशांत) न हो, अपने कानों को गाँव के सिद्धांतों (चर्चाओं) से अलग रखो। स्वाद में लालची न बनो, और संसार में किसी भी चीज़ को अपना न मानो।

“अपनी आँखों को अस्थिर मत करो”: अस्थिर आँखों वाला व्यक्ति कौन होता है? यहाँ उन लोगों की एक श्रेणी है जिनकी आँखें बेचैन रहती हैं: “जो दिखने चाहिए वे अदृश्य हो जाते हैं, और जो अदृश्य होने चाहिए वे दिखने लगते हैं।” वह बागों से बागों तक, गाँवों से गाँवों तक, कस्बों से कस्बों तक, शहरों से शहरों तक, देशों से देशों तक, इलाकों से इलाकों तक, लंबी और अनियमित शोभायात्राओं को देखने के लिए घूमता रहा। जो लोग ऐसा करते हैं, वे ही बेचैन आँखों वाले होते हैं।

या फिर, जब भिक्षु किसी के घर में मेहमान होता है, या सड़क पर टहल रहा होता है, तो वह निश्चिंत होकर चलता है: चलते-चलते वह हाथी, घोड़े, बैलगाड़ी, पैदल सेना, लड़के और लड़की को देखता है। स्त्रियों को देखना, पुरुषों को देखना, बाजार को देखना, घर के दरवाजे को देखना, ऊपर देखना, नीचे देखना और चारों दिशाओं में देखना, यह भी बेचैनी भरा होता है।

या, जब भिक्षु अपनी आँखों से किसी रूप को देखता है, तो वह बाहरी रूप और सूक्ष्म रूप का लोभी बन जाता है, क्योंकि जब वह अपनी आँखों की जड़ में रहता है, तो लोभ, दुःख और बुराई उसमें प्रवाहित होने लगती है। वह अपने आत्म-संयम के अनुसार कार्य नहीं करता, आँखों की जड़ों की रक्षा नहीं करता, और आँखों की जड़ों का आत्म-संयम प्राप्त नहीं करता। [SN.35.120]

या यदि कुछ समण और ब्राह्मण गुरुओं ने श्रद्धापूर्वक अर्पित भोजन ग्रहण किया, तो वे प्रदर्शनों में ठहरते और इस प्रकार देखते रहे: नृत्य, गायन, संगीत, नाटक, प्राचीन काल के बारे में बातें, घंटियाँ, झांझ, ढोल, जादू, लोहे की गेंदें, बांस की छड़ी से खेलना, करतब, हाथी की लड़ाई, घोड़े की लड़ाई, भैंस की लड़ाई, बैल की लड़ाई, बकरी की लड़ाई, मेढ़े की लड़ाई, मुर्गे की लड़ाई, बटेर की लड़ाई, गदा की लड़ाई, मुक्केबाजी, कुश्ती, व्यायाम, अभ्यास, सेना की संरचनाएँ, सैन्य परेड [डीएन.1], आदि, जो इस प्रकार के विभिन्न प्रदर्शनों को देखने में लगे रहते हैं, जो बेचैनी भी है।

आप बेचैन व्यक्ति कैसे नहीं हो सकते? यहाँ, जब भिक्षु अपने घर में मेहमान के रूप में और सड़क पर टहलते हुए दिखाई देते हैं, तो वे सतर्कता से चलते हैं: वे हाथी, घोड़े आदि की ओर नहीं देखते। यह बेचैन व्यक्ति नहीं है।

या फिर, जब भिक्षु अपने नेत्रों से रूप को देख लेता है, तो वह न तो रूप का लोभी बनता है और न ही सूक्ष्म रूप का, क्योंकि जब वह नेत्र के मूल में स्थिर रहता है, तो लोभ, दुःख और बुराई का प्रवाह होता है, और वह अपने आत्मसंयम के अनुसार कार्य करता है, नेत्रों के मूल की रक्षा करता है, और नेत्रों के मूल पर आत्मसंयम प्राप्त करता है, जिससे वह अस्थिर व्यक्ति नहीं बनता।

या फिर, कुछ समण और ब्राह्मण गुरुओं द्वारा श्रद्धापूर्वक अर्पित भोजन ग्रहण करने के बाद, वे प्रदर्शनों को देखने में समय नहीं लगाते थे, अर्थात् नृत्य, गायन आदि। प्रदर्शन देखने से परहेज करने वाला व्यक्ति अशांत नहीं होता।

“आँखों में अस्थिरता न लाओ”: उसे आँखों की अस्थिरता को त्याग देना चाहिए, उसे दूर भगा देना चाहिए, उसका अंत कर देना चाहिए और उसे अस्तित्वहीन हो जाने देना चाहिए। आँखों की अस्थिरता से अलग होकर, संयमित होकर, पूर्ण रूप से त्यागकर, त्यागकर, मुक्त होकर, बंधनमुक्त होकर, उसे त्याग और संयम के हृदय से जीना चाहिए।

“कानों को ग्राम सिद्धांत से अलग रखा जाना चाहिए”: ग्राम वार्तालापों को बत्तीस पशुवत सिद्धांत कहा जाता है, अर्थात्: राजा सिद्धांत, चोर सिद्धांत, मंत्री सिद्धांत, सेना सिद्धांत, भय सिद्धांत, युद्ध सिद्धांत, भोजन सिद्धांत, पेय सिद्धांत, वस्त्र सिद्धांत, बिस्तर सिद्धांत, माला सिद्धांत, गंध सिद्धांत, आत्मीयता सिद्धांत, ग्राम सिद्धांत, नगर सिद्धांत, शहर सिद्धांत, भूमि सिद्धांत, स्त्री सिद्धांत, (पुरुष सिद्धांत), नायक सिद्धांत, गली सिद्धांत, जल कुआँ

सिद्धांत, पूर्वज आत्मा सिद्धांत, विभिन्न सिद्धांत, विश्व उत्पत्ति सिद्धांत, महासागर उत्पत्ति सिद्धांत, यदि कोई पदार्थ नहीं है [DN.1], आदि। "कानों को ग्राम सिद्धांत से अलग रखा जाना चाहिए": कानों को ग्राम सिद्धांत से अलग रखा जाना चाहिए, इसे रोका जाना चाहिए, इसे आत्म-नियंत्रित किया जाना चाहिए, इसकी रक्षा की जानी चाहिए, इसे संरक्षित किया जाना चाहिए, इसे बंद किया जाना चाहिए, इसे काट दिया जाना चाहिए।

"स्वाद में लालची नहीं होना चाहिए": "स्वाद में," मूल है, ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"और तुम्हें संसार में किसी भी चीज़ को अपना नहीं मानना चाहिए": आत्म-लगाव दो प्रकार के होते हैं: ...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)। "कोई भी चीज़," कोई भी रूप, भावना, विचार, व्यवहार, ज्ञान, इत्यादि। "संसार में," ....

158 · स्पर्श किए जाने पर (संपर्क किए जाने पर), भिक्षु को रोना नहीं चाहिए चाहे कहीं भी हो, उसे अस्तित्व के लिए प्रार्थना नहीं करनी चाहिए, और भय से कांपना नहीं चाहिए।

"स्पर्श किए जाने पर": "स्पर्श," रोग के संपर्क में आना। रोग के संपर्क में आने से स्पर्शित होना, प्रताड़ित होना, संलयन होना, ग्रस्त होना; ...आँखों के रोग से..., ...कानों के रोग से..., ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें), हवा, सूर्य और साँप।

"भिक्षुओं को जहाँ कहीं भी हों, रोना नहीं चाहिए": विलाप, रोना, शोक, विलाप, व्यर्थ की बातें, बड़बड़ाना, विलाप जैसी अवस्था उत्पन्न नहीं होनी चाहिए, न ही पैदा होनी चाहिए, न ही उत्पन्न होने देनी चाहिए। "जहाँ कहीं भी,"...

"अस्तित्व के लिए प्रार्थना नहीं करनी चाहिए": अस्तित्व की इच्छा नहीं होनी चाहिए; रूप की इच्छा नहीं होनी चाहिए; निराकारता की आशा नहीं होनी चाहिए; उसे आशा नहीं करनी चाहिए; उसे अस्तित्व के लिए प्रार्थना नहीं करनी चाहिए।

"और तुम्हें डर से बहुत कांपना नहीं चाहिए": "जो भयभीत है," जो किसी न किसी रूप में भयभीत है, वही भयभीत है। यह बात भगवान बुद्ध ने कही: "यदि भय और आतंक को त्यागना असंभव है, तो यदि वह आ ही जाए तो क्या होगा?" बाहरी वस्तुएँ शेर, बाघ, तेंदुए, भालू, कुत्ते, भेड़िये, बाइसन, घोड़े, हाथी, साँप, बिच्छू, कनखजूरा, या चोर या गुंडे हो सकते हैं जो बुरे काम करते हैं या बुरे काम करने को तैयार हैं। या अन्य व्यवहारों का भय हृदय के लिए प्रतीक्षा का भय, भय की कठोर अवस्था, शरीर का भय, हृदय का भय कहलाता है: जीवन का भय, बुढ़ापे का भय, बीमारी का भय, मृत्यु का भय, राजा का भय, चोरों का भय, आग का भय, पानी का भय, आत्म-निंदा का भय, दूसरों का भय, लाठियों का भय, भय का भय, लहरों का भय, अजगरों का भय, भंवरों का भय, मगरमच्छों का भय [AN.4.122], जीविका का भय, बेईमानी का भय, समूह में कायरता का भय, नशा का भय, बुराई के भय का भय, भय की कठोर अवस्था, शरीर के रोंगटे खड़े होने की अवस्था, हृदय के भय का भय। "और तुम्हें डर से बहुत अधिक नहीं कांपना चाहिए": भय के (कारण) को देखने या सुनने के बाद, तुम्हें कांपना नहीं चाहिए, ..., तुम्हें डरना नहीं चाहिए, भयभीत नहीं होना चाहिए, डरपोक नहीं होना चाहिए, भयभीत नहीं होना चाहिए, भागना नहीं चाहिए, भय के डर से मुक्त होकर जीना चाहिए, शरीर के रोंगटे खड़े होने की अवस्था में रहना चाहिए।

159 · (नरम) भोजन, पेय पदार्थ, कठोर भोजन, कपड़े, इन्हें प्राप्त करने के बाद संग्रहित नहीं करना चाहिए, और इन्हें न मिलने पर घबराना नहीं चाहिए।

"भोजन, पेय पदार्थ, ठोस भोजन और वस्त्र": "भोजन" में चावल, दलिया, नूडल्स, मछली और मांस शामिल हैं। "पेय पदार्थों" में आठ प्रकार के पेय हैं: आम का रस, जामुन का रस, केले का रस, प्लांटैन का रस, शहद का रस, अंगूर का रस, कमल की जड़ का रस, लोवी-लोवी का रस। अगले आठ प्रकार के पेय हैं: कोसंबी का रस (इसका अर्थ स्पष्ट नहीं है, क्योंकि कोसंबी एक शहर का नाम है), खजूर का रस, बेर का रस, घी का पेय, तिल आदि के तेल का पेय, दूध का पेय, ठंडा दलिया पेय, सब्जी आदि के रस का पेय। "ठोस भोजन" में पाउडर से बना ठोस भोजन, बिस्कुट, जड़ से बना ठोस भोजन, चमड़े की सामग्री से बना ठोस भोजन, पत्तों से बना ठोस भोजन, फूलों से बना ठोस भोजन, फलों से बना ठोस भोजन शामिल हैं। "वस्त्र" में छह प्रकार के वस्त्र हैं: लिनन, सूती, रेशम, स्वेटर, बोरी और भांग।

“इसे प्राप्त करने के बाद, इसे जमा न करें”: “इसे प्राप्त करने के बाद,” इसे प्राप्त करने के बाद, इसे हासिल करने के बाद, इसे अपने पास रखने के बाद, इसे पाने के बाद: कोई छल नहीं, कोई बात नहीं, कोई संकेत नहीं, कोई व्यंग्य नहीं, अन्य लाभों के बदले लाभ का आदान-प्रदान नहीं, वस्तुएँ देने के लिए लकड़ी का उपयोग न करें, वस्तुएँ दान करने के लिए बांस का उपयोग न करें, वस्तुएँ दान करने के लिए पत्तियों का उपयोग न करें, वस्तुएँ दान करने के लिए फूलों का उपयोग न करें, वस्तुएँ दान करने के लिए स्नान वस्त्रों का उपयोग न करें, वस्तुएँ दान करने के लिए वाशिंग पाउडर का उपयोग न करें, वस्तुएँ दान करने के लिए मिट्टी का उपयोग न करें, दांतों से वस्तुएँ न दें, सफाई के पानी से वस्तुएँ न दें, चापलूसी का उपयोग न करें, शब्दों से बात न करें, निंदा न करें, गृहस्थी का उपयोग न करें, पशु जीवन का उपयोग न करें, ज्योतिष का उपयोग न करें, दूत न बनें, दूत न भेजें, छोटे-मोटे काम न करें, चिकित्सा उपचार का उपयोग न करें, नई नौकरी न बनाएँ, भोजन या बदले में भोजन न दें, और कुछ भी न देकर, वह धर्म के अनुसार धर्मी है, प्राप्त करने के बाद, ..., ग्रहण करने के बाद। "भंडारण नहीं करना चाहिए," भोजन का भंडारण, पेय पदार्थों का भंडारण, कपड़ों का भंडारण, गाड़ियों का भंडारण, बिस्तरों का भंडारण, मसालों का भंडारण, संपत्ति का भंडारण नहीं करना चाहिए, उत्पन्न नहीं करना चाहिए, ..., उत्पन्न नहीं होने देना चाहिए।

“और जब आपको वो चीज़ें न मिलें तो आपको घबराना नहीं चाहिए”: “मुझे खाना नहीं मिला, या मुझे पानी नहीं मिला, ...(अधूरा भाग, पिछले भाग देखें),” उसे डरना नहीं चाहिए: “मैं कोई मशहूर व्यक्ति नहीं हूँ।” उसे डरपोक नहीं, भयभीत नहीं होना चाहिए...।

160・भटकने के बजाय ध्यान करने वाला बनो; पछतावा करना बंद कर दो और जाने मत दो, और बैठने और सोने के स्थान में, भिक्षु को शांत स्थान में रहना चाहिए।

“भटकने के बजाय ध्यानमग्न हो जाओ”: “ध्यानमग्न,” प्रथम ध्यान से ध्यानमग्न हो जाओ, द्वितीय ध्यान से भी ध्यानमग्न हो जाओ, और तृतीय..., चतुर्थ..., तर्क और चिंतन से भी ध्यानमग्न हो जाओ, तर्कहीन केवल चिंतन से भी ध्यानमग्न हो जाओ, सुख से भी ध्यानमग्न हो जाओ, और दुःख से भी ध्यानमग्न हो जाओ। ध्यानमग्न आनंद से चलने वाले ध्यान से भी ध्यानमग्न हो जाता है, सचेतनता से चलने वाले ध्यान से भी ध्यानमग्न हो जाता है, मंत्रोच्चार से चलने वाले ध्यान से भी ध्यानमग्न हो जाता है, और शांति से चलने वाले ध्यान से भी ध्यानमग्न हो जाता है। वह शून्यता से भी ध्यानमग्न हो जाता है, अवस्थाहीन ध्यान से भी ध्यानमग्न हो जाता है, अनिच्छुक ध्यान से भी ध्यानमग्न हो जाता है, सांसारिक ध्यान से भी ध्यानमग्न हो जाता है, और पारलौकिक ध्यान से भी ध्यानमग्न हो जाता है। वह ध्यान प्रेमी, एकाकी अभ्यासी और सर्वोच्च हितों का प्रशंसक है।

“भटकने वाला नहीं,” भला कोई भटकने वाला कैसे हो सकता है? यहाँ एक खास तरह के लोग भटक रहे हैं: एक बाग से दूसरे बाग तक, ...(अधूरा)।

या फिर भिक्षुओं के बगीचे में भटकता हुआ भिक्षु: बिना किसी लाभ, बिना किसी कारण के, जड़विहीन, चुपचाप भिक्षुओं के कमरे से भिक्षुओं के कमरे तक, निवास से निवास तक, आधी छत वाले मकान से..., ऊंची इमारत से..., समतल मकान से, गुफा से, झोपड़ी से, मंडप से, अवलोकन चबूतरे से, तंबू से, शेड से, व्याख्यान कक्ष से, गोल घर से, पेड़ से, या जहाँ भिक्षु बैठते हैं, वहाँ वह चलता है, जहाँ पहला दूसरा बन जाता है, या दूसरा स्थान तीसरा बन जाता है, या तीसरा स्थान चौथा बन जाता है। वहाँ कई तरह की बातें होती हैं, जैसे: राजाओं का सिद्धांत (चर्चा), ...चोरों का सिद्धांत...।

“भटकने वाला नहीं,” उसे भटकने की प्रवृत्ति का त्याग करना चाहिए, उसे दूर भगा देना चाहिए, उसका अंत कर देना चाहिए, उसे अस्तित्वहीन बना देना चाहिए। उसे भटकने से अलग रहना चाहिए, संयमी रहना चाहिए, ..., उसे एकाग्र हृदय से जीना चाहिए, अभ्यास करना चाहिए, कर्म करना चाहिए, ...। उसे एकांत में बैठने को इच्छुक होना चाहिए, एकांत में बैठना पसंद करने वाला व्यक्ति होना चाहिए, आंतरिक शांति का अभ्यास करने वाला होना चाहिए, ध्यान का तिरस्कार न करने वाला व्यक्ति होना चाहिए, एक दर्शक होना चाहिए, और एक खाली घर प्राप्त करने वाला होना चाहिए [एम.एन.32], एक ध्यानी, ध्यान प्रेमी, एकता का अभ्यास करने वाला, सर्वोच्च हित का प्रशंसक होना चाहिए।

“पछतावा करना बंद कर देना चाहिए और जाने नहीं देना चाहिए”: “पछतावा,” ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

“आराम से मत रहो,” एक आदरणीय कर्ता, एक नियमित कर्ता, एक निरंतर कर्ता, एक ऐसा व्यक्ति जिसे अटकने की आदत न हो, जो अपनी इच्छाओं की उपेक्षा न करे, जो जिम्मेदारी की उपेक्षा न करे, और जो अच्छे धम्म का त्याग न करे। “मैं अधूरे उपदेशों को कैसे पूरा करूँ, या क्या मैं पूर्ण

उपदेशों को ज्ञान से पोषित करूँ?" जहाँ अच्छे धम्म में इच्छा, परिश्रम, साहस, कड़ी मेहनत, धैर्य, संकोच न करना, सजगता, धार्मिक ज्ञान, उत्साह, जोश, स्थापना, अभ्यास और दृढ़ता हो; मैं अधूरी एकाग्रता..., अधूरे ज्ञान संचय..., मुक्तिदायक संचय..., मुक्तिदायक ज्ञान दर्शन संचय... को कैसे पूरा करूँ? "मैं अज्ञात के दुख को कैसे समझूँ, या उस अपवित्रता का त्याग कैसे करूँ जिसका मैंने त्याग नहीं किया है, या उस मार्ग का अभ्यास कैसे करूँ जिसका मैंने अभ्यास नहीं किया है, या उसकी गवाही कैसे दूँ जिसकी मैंने गवाही नहीं दी है?" जहाँ इच्छा, परिश्रम, ...

"और बैठने और सोने की जगह में, भिक्षु को शांत स्थान में रहना चाहिए": "और," वाक्य का आगे का भाग... जिस स्थान पर वह बैठता है उसे आसन कहते हैं: ...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)। घर, आवास, अर्धछत वाले घर, ऊँची इमारतें, समतल घर और गुफाएँ सोने की जगह कहलाती हैं।

"भिक्षु को शांत स्थान पर रहना चाहिए," यह कम शोर और शांत वातावरण में होना चाहिए...

161 · अधिक सोना नहीं चाहिए, जागते रहना चाहिए और उत्साही रहना चाहिए; आलस्य, छल, हँसी, मनोरंजन, वासना, अलंकरण, उसे त्याग देना चाहिए।

"अधिक नींद नहीं लेनी चाहिए": दिन और रात को छह भागों में विभाजित किया जाना चाहिए, जिनमें से पांच भाग मार्ग की ओर होने चाहिए और एक भाग (चार घंटे) लेटने में व्यतीत होना चाहिए।

"जागते रहो और उत्साही बनो": यहाँ, दिन के समय, भिक्षु शांतिपूर्वक चलने और बैठने से मन को बाधाओं से मुक्त करते हैं। रात के पहले (पश्चात्) में (रात को तीन पश्चों में विभाजित किया गया है), शांतिपूर्वक चलने और बैठने से मन को बाधाओं से शुद्ध करना चाहिए। मध्यरात्रि में, शेर की तरह दाहिनी ओर लेटकर, बाएँ पैर को दाहिने पैर पर रखकर, सचेतनता और धार्मिक ज्ञान में लीन होकर चिंतन करना चाहिए। रात के उत्तरार्ध में, बाधाओं के धर्म से मन को शुद्ध करने के लिए शांतिपूर्वक चलना और बैठना चाहिए। [SN.35.120]

"जागते रहना चाहिए," रखना चाहिए, पूरी तरह रखना चाहिए, आज्ञा माननी चाहिए, आज्ञा मानने के लिए झुकना चाहिए, पूरी तरह आज्ञाकारी होना चाहिए, जागते रहने की ओर निर्देशित होना चाहिए।

उत्साह को जीवन शक्ति कहा जाता है, जो हृदय की जीवन शक्ति, परिश्रम, मेहनत, साहस, दृढ़ता, प्रयास, लगन, विश्राम न करने की भावना, साहस की अवस्था, 'हार न मानने' की अवस्था, जिम्मेदारी का पालन करने की अवस्था, जिम्मेदारी का समर्थन, जीवन शक्ति, जीवन शक्ति का मूल, जीवन शक्ति की शक्ति और सकारात्मक प्रगति का उद्दीपन है। किसी लक्ष्य तक पहुँचने, पूर्णतः पहुँचने, प्रवेश करने, पूर्णतः प्रवेश करने, सक्षम होने, पूर्णतः सक्षम होने और इस उत्साह को धारण करने वाले व्यक्ति को उत्साही कहा जाता है।

"आलस्य, छल, हँसी, मनोरंजन, वासना, सजावट, उसे त्याग देना चाहिए": "आलस्य": आलसी व्यक्ति आलस्य की अवस्था है जिसका उद्देश्य आलस्य है, और हृदय आलस्य से बोधित (पराजित) होता है; आलस्य आलस्य के उद्देश्य से किया जाने वाला आलस्य है।

"धोखा": ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"जोर से हंसना": यहाँ एक विशेष प्रकार के लोग अत्यधिक खिलखिलाते हैं। इस पर भगवान बुद्ध कहते हैं, "भिक्षुओं! श्रेष्ठ जनों की शिक्षा में यह बचकाना व्यवहार है, अर्थात् अत्यधिक खिलखिलाना।" [एएन.3.107]

"मनोरंजन" में दो प्रकार के मनोरंजन होते हैं: शारीरिक मनोरंजन और मौखिक मनोरंजन। शारीरिक मनोरंजन क्या है? हाथियों, घोड़ों, गाड़ियों, धनुषों, तलवारों और अन्य हथियारों से खेलना, अष्टकोणीय शतरंज, दस-आंखों वाला शतरंज, हवाई शतरंज और हॉपस्कॉच, साथ ही पत्थर की पहेलियाँ, पासे का बोर्ड, लकड़ी की छड़ी, हाथ, पासे, पत्तों की बांसुरी, खिलौना कुदाल, कलाबाजियाँ, खिलौना पवनचक्कियाँ, खिलौना नापने के उपकरण,

गाड़ी के खेल, खिलौना धनुष और बाण, शब्दों का अनुमान लगाना, विचारों का अनुमान लगाना और कमियों की नकल करना [DN.1], यह शारीरिक मनोरंजन है।

मौखिक मनोरंजन क्या है? मुंह से ढोल बजाने की आवाज़, मुंह से ढोल पर रगड़ने की आवाज़, मुंह से ढोल को गिराने की आवाज़, होंठों को मोड़ने की आवाज़, मुंह से ढोल बजाना, मुंह से ढोल की खोखली आवाज़ की नकल करना, ज़ोरदार जयकार, नर्तकों पर शोर मचाना, गाना और मज़ाक करना मौखिक मनोरंजन है।

कामवासना का धर्म व्यभिचार का नियम है, ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"सजावट": सजावट दो प्रकार की होती है: गृहस्थों की सजावट और भिक्षुओं की सजावट। परिवार की सजावट क्या है? बाल, दाढ़ी, माला, मसाले, बाम, आभूषण, सहायक वस्तुएँ, वस्त्र, बिस्तर, सिर का दुपट्टा, मालिश, स्नान, दर्पण, नेत्र मरहम लगाना, माला (मसाले), बाम, चेहरे का पाउडर, चेहरे की क्रीम, कंगन, रिबन के आभूषण, छड़ें, बैरल, तलवारें, छतरियाँ, रंगीन जूते, जूड़े, गहने, झाड़ू, लंबे और छोटे सफेद वस्त्र आदि। यह गृहस्थ की सजावट है। भिक्षुओं की सजावट क्या है? वस्त्रों की सजावट, कुंडों की सजावट, बिस्तरों की सजावट, देह की सजावट या आवश्यक वस्तुओं की सजावट, सौंदर्यीकरण (गंभीरता), सजने-संवरने की इच्छा, सुंदर दिखना, लालची अवस्था, उतावली अवस्था, उतावलापन और सतहीपन, यह भिक्षुओं की सजावट है।

"आलस्य, छल, हँसी, मनोरंजन, वासना, अलंकरण, उसे त्याग देना चाहिए": आलस्य..., अलंकरण, अनुयायियों के साथ, लोगों से घिरा हुआ, आवश्यकताओं के साथ, उसे यह सब त्याग देना चाहिए, उसे भगा दिया जाना चाहिए, इसका अंत हो जाना चाहिए, इसे अस्तित्वहीन कर देना चाहिए।

162 · जादू, सपने देखना, संकेत और ज्योतिष में संलग्न नहीं होना चाहिए; जानवरों की आवाजें, गर्भावस्था तकनीकें, चिकित्सा तकनीकें; विश्वासियों को इनमें संलग्न नहीं होना चाहिए।

"जादू-टोना, स्वप्न व्याख्या, राशिफल और ज्योतिष का प्रयोग नहीं करना चाहिए": जादूगर जादू-टोना करते हैं: जब शहर घेराबंदी में हो या युद्ध छिड़ जाए, तो वे शत्रु, शत्रुतापूर्ण लोगों में विपत्ति उत्पन्न करते हैं; हानि पहुंचाते हैं; रोग फैलाते हैं; महामारी फैलाते हैं; पेट दर्द पैदा करते हैं; हैजा फैलाते हैं; पेचिश फैलाते हैं।

स्वप्न व्याख्याकार स्वप्न के बारे में बताते हैं: जो कोई दोपहर से पहले स्वप्न देखता है, उसे ऐसा पुरस्कार मिलता है; जो कोई दोपहर में स्वप्न देखता है, उसे ऐसा पुरस्कार मिलता है; शाम को, पहली रात में, आधी रात में, देर रात; जो कोई दाहिनी ओर, बाईं ओर, सीधा या उल्टा लेटता है; जो कोई चंद्रमा, सूर्य, समुद्र, मेरु पर्वत, हाथी, घोड़ा, रथ, पैदल सेना, सैन्य टुकड़ियाँ, सुंदर उद्यान, सुंदर वन, सुंदर भूमि, सुंदर कमल का तालाब देखता है..., उसे ऐसा पुरस्कार मिलता है।

सांकेतिक भाषा के व्याख्याकार इन संकेतों के बारे में जानकारी देते हैं: गोलाकार चिन्ह, छड़ी चिन्ह, वस्त्र चिन्ह, तलवार चिन्ह, तीर चिन्ह, धनुष चिन्ह, हथियार चिन्ह, स्त्री चिन्ह, पुरुष चिन्ह, लड़की चिन्ह, लड़का चिन्ह, दासी चिन्ह, दासी चिन्ह, हाथी, घोड़ा, भैंस, गाय राजा, बैल, बकरी, मेढ़ा, मुर्गी, बटेर, छिपकली, कमल का छिलका, कछुए का खोल और हिरण एक ही हैं।

ज्योतिषी नक्षत्रों की व्याख्या करते हैं: अट्ठाईस नक्षत्र हैं। लेखक को इस नक्षत्र में प्रवेश करना चाहिए, इस नक्षत्र को सिर के आभूषण से बांधना चाहिए, इस नक्षत्र को विवाह के लिए बनाना चाहिए, इस नक्षत्र के बीजों का परिवहन करना चाहिए, और इस नक्षत्र में सहवास करना चाहिए।

"जादू-टोना, सपने, संकेत और ज्योतिष में संलग्न नहीं होना चाहिए": जादू-टोना, सपने, संकेत और ज्योतिष में संलग्न नहीं होना चाहिए, इनका अभ्यास नहीं करना चाहिए, इनका (पूरी तरह से) अभ्यास नहीं करना चाहिए, इन्हें जारी रखने के बाद नहीं रखना चाहिए, या इनका अध्ययन नहीं करना चाहिए, इन्हें याद नहीं करना चाहिए, इन्हें समझना नहीं चाहिए, इनका भेद नहीं करना चाहिए और इनके प्रति समर्पित नहीं होना चाहिए।

“आस्तिकों को पशु ध्वनियों, गर्भाधान तकनीकों और चिकित्सा कौशलों की व्याख्या में संलग्न नहीं होना चाहिए”: पशु ध्वनियों को पशु भाषा कहा जाता है। पशु-फुसफुसाहटें पशुओं के बारे में बताती हैं: वे पक्षियों या चार पैरों वाले पशुओं की गर्जना और पुकार को जानते हैं। इसी प्रकार, पशु-फुसफुसाहटें पशुओं के बारे में बताती हैं। वे गर्भाधान तकनीकों का उपयोग भ्रूण को जीवित रखने के लिए करते हैं, और भ्रूण दो कारणों से जीवित नहीं रह पाता: (परजीवी) कृमियों के कारण या हवा के झटकों के कारण। कीड़ों या हवा के झटकों से बचाव के लिए जड़ी-बूटियाँ दी जाती हैं, और इसी प्रकार, वे गर्भाधान तकनीकों का उपयोग भ्रूण को जीवित रखने के लिए करते हैं। “उपचार” के पाँच प्रकार हैं: नेत्र विज्ञान, शल्य चिकित्सा, आंतरिक चिकित्सा, भूत-प्रेत भगाने की विधि और बाल चिकित्सा। “आस्तिक,” बुद्ध में विश्वास करने वाले, धम्म में विश्वास करने वाले, संघ में विश्वास करने वाले। वह बुद्ध को अपना मानता है, या बुद्ध उस व्यक्ति को धारण करते हैं। भगवान बुद्ध ने कहा: “भिक्षुओं! छल करने वाले, हठी, निंदा करने वाले, पाखंडी, अहंकारी और अनिश्चित भिक्षुओं! वे भिक्षु मेरे अनुयायी नहीं हैं! उन्होंने इस धर्म को त्याग दिया है, और वे इस धर्म में वृद्धि और विस्तार करने के लिए नहीं आए हैं। परन्तु, भिक्षुओं! छल रहित, बातूनी, बलवान, मूर्ख न होने वाले और दयालु भिक्षुओं! वे भिक्षु मेरे अनुयायी हैं! उन्होंने इस धर्म को नहीं त्यागा, बल्कि वे इस धर्म में वृद्धि और विस्तार करने के लिए आए हैं।”

“धूर्त, हठी, झूठे, पाखंडी, अभिमानी, अनिश्चित, वे प्रबुद्ध व्यक्ति द्वारा सिखाए गए धम्म में प्रगति नहीं करते। जो कपटी नहीं, बातूनी, दृढ़, कठोर नहीं, सौम्य स्वभाव के होते हैं, वे प्रबुद्ध व्यक्ति द्वारा सिखाए गए धम्म में प्रगति करते हैं।” [एएन.4.26]

“पशुओं की आवाज़ें, गर्भावस्था संबंधी तकनीकें, चिकित्सा संबंधी तकनीकें, विश्वासियों को इनमें संलग्न नहीं होना चाहिए”: पशुओं की आवाज़ें, गर्भावस्था संबंधी तकनीकें, चिकित्सा संबंधी तकनीकें, इनमें संलग्न नहीं होना चाहिए, इनमें संलग्न होने के लिए इच्छुक नहीं होना चाहिए, इनमें पूरी तरह से संलग्न नहीं होना चाहिए, इनमें संलग्न होने की ओर उन्मुख नहीं होना चाहिए, इनका अभ्यास नहीं करना चाहिए, इनका अच्छी तरह से अभ्यास नहीं करना चाहिए, और इन्हें धारण करने के बाद जारी नहीं रखना चाहिए, या इन्हें सीखना नहीं चाहिए, इन्हें याद नहीं रखना चाहिए, इन्हें समझना नहीं चाहिए, इनका बोध नहीं करना चाहिए, और इनके प्रति समर्पित नहीं होना चाहिए।

163 · किसी को भी आरोपों से भयभीत नहीं होना चाहिए, और भिक्षुओं को प्रशंसा में अहंकारी या घमंडी नहीं होना चाहिए। लोभ और कंजूसी, क्रोध और फूट, इन सब से उसे छुटकारा पाना चाहिए।

“आरोपों से भयभीत नहीं होना चाहिए”: कुछ लोग जन्म से ही...(अस्पष्ट भाग, पिछले अनुभाग देखें), या तो आम सहमति में, या बहस में, या किसी बात की निंदा में, वे आरोप लगाते हैं, डांटते हैं और फटकारते हैं; जब उन पर आरोप लगाया जाता है, उन्हें डांटा जाता है, उन्हें फटकारा जाता है, तो वे दोषी ठहराए जाने, डांटने, फटकारने, प्रशंसा न करने, प्रशंसा न मिलने पर कांपने, अत्यधिक भयभीत होने आदि से कांपते हैं; व्यक्ति को डरपोक, भयभीत आदि नहीं होना चाहिए।

“भिक्षुओं को अहंकारी या घमंडी नहीं होना चाहिए”: कुछ लोग जन्म से ही प्रशंसा, स्तुति और सम्मान करते हैं, और जब उनकी प्रशंसा, स्तुति और सम्मान किया जाता है, तो वे अहंकारी, घमंडी, अभिमानी और हठी हो जाते हैं; ऐसा नहीं होना चाहिए, और इस कारण से कठोर और बहुत अकड़ू नहीं होना चाहिए, सिर ऊंचा नहीं रखना चाहिए।

“लालच और कंजूसी, क्रोध और असहमतिपूर्ण शब्दों से उसे छुटकारा पाना चाहिए”: “लालच,” यानी लालच की अवस्था, ... कंजूसी पाँच प्रकार की होती है: ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)। “क्रोध,” .... “विभाजनकारी भाषा,” ....

164 · भिक्षु को खरीद-फरोख्त में शामिल नहीं होना चाहिए, भिक्षु चाहे जहाँ भी हो उसे फटकार नहीं लगानी चाहिए, उसे गाँव से आसक्त नहीं होना चाहिए, और लाभ के लिए लोगों की चापलूसी नहीं करनी चाहिए।

“व्यापार में संलग्न नहीं होना चाहिए”: धर्म में अस्वीकृत कोई भी व्यापार यहाँ हित में नहीं है। व्यापार में संलग्न कैसे हुआ जा सकता है? पाँच प्रकार के लोगों के बीच, चाहे वे बर्तन हों, वस्त्र हों या अन्य आवश्यक वस्तुएँ, धोखा देने वाली वस्तुएँ बनाना या वृद्धि की इच्छा रखना, खरीद-बिक्री में संलग्न है। खरीद-बिक्री में संलग्न कैसे न हों? पाँच प्रकार के लोगों के बीच, चाहे वे बर्तन हों, वस्त्र हों या अन्य आवश्यक वस्तुएँ, धोखा देने वाली वस्तुएँ न बनाएँ या वृद्धि की इच्छा न रखें, यह व्यापार में संलग्न नहीं है। “व्यापार में संलग्न नहीं होना चाहिए”: व्यापार में संलग्न नहीं होना चाहिए,

स्थापित नहीं करना चाहिए, व्यापार को त्याग देना चाहिए, दूर भगा देना चाहिए, समाप्त कर देना चाहिए, अस्तित्वहीन हो जाने देना चाहिए। उसे व्यापार से अलग हो जाना चाहिए, त्याग देना चाहिए, बाहर निकल जाना चाहिए, छोड़ देना चाहिए, त्याग देना चाहिए, मुक्त हो जाना चाहिए, उसे त्याग के भाव से जीना चाहिए।

"भिक्षुओं को चाहे वे कहीं भी हों, निंदा नहीं करनी चाहिए": निंदा का कारण बनने वाला दोष क्या है? कुछ समण और ब्राह्मण ऐसे होते हैं जिनके पास जादुई शक्तियाँ होती हैं, दिव्य दृष्टि होती है और जो अपने हृदय को जानते हैं। वे दूर से देखते हैं, निकट से नहीं। हृदय हृदय को जानता है। कुछ देवता भी ऐसे होते हैं जिनके पास जादुई शक्तियाँ और दिव्य दृष्टि होती है...। उन्हें स्थूल दोष, मध्यम दोष या सूक्ष्म दोष के कारण फटकारा जाएगा। स्थूल दोष क्या है? देह दोष, वाणी दोष और मन दोष स्थूल दोष कहलाते हैं। मध्यम दोष क्या है? द्वेषपूर्ण खोज, दुर्भावनापूर्ण खोज और हानि की खोज मध्यम दोष कहलाते हैं। सूक्ष्म दोष क्या है? परिवार में खोज, भूमि की खोज, मृतकों की खोज, दूसरों से सहानुभूति की खोज, प्रतिष्ठा की खोज, तिरस्कार से बचने की खोज सूक्ष्म दोष कहलाते हैं। उन्हें स्थूल दोष, मध्यम दोष या सूक्ष्म दोष के लिए दोषी नहीं ठहराया जाएगा। उन्हें दोषारोपण नहीं करना चाहिए, दोषारोपण करने वाला प्रदूषण नहीं फैलाना चाहिए, न ही उत्पन्न होना चाहिए, न ही पैदा होना चाहिए और न ही बनाया जाना चाहिए। इसे निंदा का कारण बनने वाले प्रदूषण से अलग किया जाना चाहिए, इससे परहेज किया जाना चाहिए, इसे त्याग दिया जाना चाहिए, ... "चाहे कहीं भी हो," ...

"और गाँव से आसक्त नहीं होना चाहिए": गाँव से आसक्ति कैसे होती है? यहाँ, भिक्षु अपने परिवार के सदस्यों के साथ मेलजोल करने, सुख-दुख बाँटने के लिए गाँव में रहता है: जब वे खुश होते हैं, और जब वे कष्ट में होते हैं, तो वह उनके मामलों और कर्तव्यों में शामिल होता है [SN.22.3]।

या फिर, भिक्षु दोपहर के समय अपने वस्त्र धारण करता है और लबादा ओढ़ लेता है। वह भीख मांगने के लिए गाँव या कस्बे में प्रवेश करते समय अपने शरीर, वाणी, हृदय, मन, विचार और जड़ों की रक्षा नहीं करता [एसएन. 20.10], वह हर जगह फँस जाता है, हर जगह उलझ जाता है, हर जगह बंध जाता है और हर जगह दुर्भाग्य और विपत्ति का शिकार हो जाता है [एसएन.17.4]।

कोई गाँव से कैसे अलग रह सकता है? यहाँ भिक्षु अपने परिवार के सदस्यों से संवाद के अभाव में रहता है, और उसके सुख-दुख अलग-अलग होते हैं: न तो उनके सुख में, न ही उनके कष्ट में, वह उनके मामलों और कर्तव्यों में शामिल नहीं होता।

या फिर, भिक्षु दोपहर के समय वस्त्र धारण करके आहुति देता है। उसने अपने शरीर, वाणी, हृदय, मन और जड़ों की रक्षा की है। जब वह गाँव या नगर में प्रवेश करता है, तो वह कहीं भी स्थिर नहीं होता, कहीं भी बंधा नहीं होता, और कहीं से भी दुर्भाग्य और विपत्ति का सामना नहीं करता। "और गाँव से आसक्त नहीं होना चाहिए": गाँव से आसक्त नहीं होना चाहिए, कहीं भी बंधा नहीं होना चाहिए, कहीं भी बंधा नहीं होना चाहिए। उसे लोभ रहित, बंधन रहित, आसक्त, निर्दोष, लोभी से पृथक होना चाहिए, ...(अस्पष्ट), ब्राह्मण के समान जीवन जीना चाहिए।

"लाभ के लिए लोगों की चापलूसी नहीं करनी चाहिए": चापलूसी क्या है? यह प्रतिष्ठा, बुरी इच्छाओं, लालच, संपत्ति पर ध्यान केंद्रित करने, हर तरह की बातों, छोटी-मोटी बातों, बातचीत, संवाद, उलझाव, पूर्ण उलझाव, झूठी बातें, पूर्ण झूठी बातें, चापलूसी, पूर्ण चापलूसी, वाक्पटुता, पीठ पीछे निंदा, जहां मीठी भाषा, मधुर भाषा, धीमी भाषा और अभद्र भाषा का प्रयोग किया जाता है, पर आधारित है।

इसके अलावा, लोगों की चापलूसी दो तरीकों से की जा सकती है: स्वयं को विनम्र बनाकर दूसरों को उच्च पद पर स्थापित करना और उनकी चापलूसी करना; या दूसरों को विनम्र बनाकर स्वयं को उच्च पद पर स्थापित करना और उनकी चापलूसी करना। स्वयं को विनम्र बनाकर दूसरों को उच्च पद पर स्थापित करने और उनकी चापलूसी करने का तरीका क्या है? (विचार:) "आप मेरे लिए बहुत सहायक हैं। मैं कपड़े, भोजन, आश्रय, बीमारों की देखभाल और चिकित्सा संबंधी ज़रूरतों के लिए आप पर निर्भर हूँ। जो कोई भी देता है या देना चाहता है, वह सोचता है कि मैं आप पर निर्भर हूँ। आप जैसे लोगों के कारण मेरे माता-पिता के सभी पुराने नाम मेरे लिए लुप्त हो गए हैं, क्योंकि आप ऐसे व्यक्ति के रूप में जाने जाते हैं जो अक्सर किसी के घर आते-जाते रहते हैं।"

दूसरों को विनम्र कैसे बनाएं, स्वयं को श्रेष्ठ कैसे बनाएं और दूसरों की चापलूसी कैसे करें? (विचार करते हुए:) "मैं तुम्हारे लिए अत्यंत लाभकारी व्यक्ति हूँ। मेरे कारण ही तुम बुद्ध, धम्म और संघ की ओर मुड़े हो। तुम हत्या से मुक्त हो, लेन-देन से मुक्त हो, व्यभिचार से मुक्त हो, झूठी वाणी से

मुक्त हो, मादक पेय, फल मदिरा और मादक पेय के सेवन से मुक्त हो। मैं तुम्हें उपदेश दूंगा, मुझसे बहुत से प्रश्न पूछो, मैं उपोसथ की व्याख्या करूंगा और मंदिर बनवाऊंगा। परन्तु मुझे त्यागने के बाद तुम अन्य लोगों का आदर, सम्मान और आदर करोगे।"

"हमें लाभ के लिए लोगों की चापलूसी नहीं करनी चाहिए": हमें लाभ को कारण, शर्त या तर्क बनाकर लोगों की चापलूसी नहीं करनी चाहिए, न ही लाभ प्राप्त करने के लिए, न ही दूसरों को लाभ से परिचित कराने के लिए, और न ही लोगों की चापलूसी करने के लिए। उसे चापलूसी छोड़ देनी चाहिए और उसे दूर भगा देना चाहिए, उसका अंत हो जाना चाहिए, उसका अस्तित्व समाप्त हो जाना चाहिए। उसे चापलूसी से अलग रहना चाहिए, उससे दूर रहना चाहिए, ...

165 · भिक्षुओं को घमंड नहीं करना चाहिए, और उन्हें चुभने वाले शब्द नहीं बोलने चाहिए, अहंकार नहीं सीखना चाहिए, विवादास्पद चर्चाओं के बारे में बात नहीं करनी चाहिए।

"भिक्षुओं को घमंड नहीं करना चाहिए": यहाँ एक विशेष प्रकार के लोग घमंडी और शेखीबाज़ होते हैं, जो अपनी बड़ाई करते हैं: ...(अंश हटा दिया गया है, पिछले भाग देखें)। इस प्रकार उसे घमंड नहीं करना चाहिए, उसे दिखावा नहीं करना चाहिए। घमंड को त्याग देना चाहिए, उसे दूर भगा देना चाहिए...।

"और व्यंग्यात्मक शब्द नहीं बोलने चाहिए": व्यंग्यात्मक शब्द क्या होते हैं? यहाँ, एक विशेष प्रकार के लोग कपड़ों के बारे में, भोजन देने से संबंधित शब्दों में, निवास से संबंधित शब्दों में, और रोगियों की ज़रूरतों और चिकित्सा संबंधी ज़रूरतों से संबंधित व्यंग्यात्मक शब्द बोलते हैं।

या, वस्त्रों को कारण बनाकर, भोजन को कारण बनाकर, आश्रय को कारण बनाकर, रोगी की ज़रूरतों और चिकित्सा आवश्यकताओं को कारण बनाकर सत्य कहना भी असत्य है; यह कहना कि वियोग का अर्थ वियोग न होना नहीं है; यह कहना कि बुराई का अर्थ बुराई न होना नहीं है; और यह कहना कि निरर्थक भी ज्ञानवर्धक भाषा बोलता है। या, दूसरों को मन शुद्ध करने का धम्म सिखाना: "अहा! मुझे वास्तव में अपना धम्म सुनना चाहिए। धम्म सुनने के बाद मैं निर्मल और शुद्ध हो जाऊँगा। मेरे निर्मल और शुद्ध कर्मों से निर्मलता उत्पन्न होगी।" "और अपशब्द न बोलें": धम्म की शिक्षाओं के बारे में अपशब्द भी नहीं बोलने चाहिए, नहीं कहने चाहिए... अपशब्दों को त्याग देना चाहिए...

"तुम्हें अहंकार नहीं सीखना चाहिए": "अभिमान," अहंकार तीन प्रकार का होता है: ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"अहंकार करना नहीं सीखना चाहिए", अहंकार करना नहीं सीखना चाहिए; इसका अभ्यास नहीं करना चाहिए, पूरी तरह से अभ्यास नहीं करना चाहिए, और एक बार धारण करने के बाद इसे बदलना नहीं चाहिए। अहंकार को काट देना चाहिए, उसे दूर भगा देना चाहिए...

"विवादास्पद चर्चाओं पर बात नहीं करनी चाहिए": विवादास्पद चर्चा क्या है? यहाँ, कुछ खास तरह के लोग इस तरह बात कर रहे हैं: "तुम्हें धम्म का ज्ञान नहीं है...(अधूरा अंश)।" भगवान बुद्ध ने कहा: "मोग्गल्लाना! जब कोई विवादास्पद तर्क होता है, तो बेचैनी होना स्वाभाविक है; बेचैनी होने पर व्यक्ति अपना आत्म-नियंत्रण खो देता है (आत्म-नियंत्रण खोने पर मन ध्यान से भटक जाता है)" [एएन.7.61]। हमें विवादों पर कैसे बात नहीं करनी चाहिए? विवादास्पद चर्चाओं पर बात नहीं करनी चाहिए, उनके बारे में चर्चा नहीं करनी चाहिए, उनकी व्याख्या नहीं करनी चाहिए, उनके बारे में बोलना नहीं चाहिए। विवादास्पद चर्चाओं को त्याग देना चाहिए, उन्हें दूर भगा देना चाहिए...।

166 · किसी को झूठी बातों में नहीं बहकना चाहिए, जानबूझकर धोखा नहीं देना चाहिए, और किसी को भी जीवनयापन, ज्ञान, उपदेश और संयम के मामले में दूसरों का तिरस्कार नहीं करना चाहिए।

"झूठे भाषण में बहकना नहीं चाहिए": झूठा भाषण, ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)। "झूठे भाषण में बहकना नहीं चाहिए": झूठे भाषण में बहकना नहीं चाहिए, बहकना नहीं चाहिए, बहकना नहीं चाहिए, झूठे भाषण को त्याग देना चाहिए, भगा देना चाहिए, ...।

"जानबूझकर धोखाधड़ी नहीं करनी चाहिए": धोखाधड़ी क्या है? यहाँ, एक विशेष प्रकार के लोग ठग और जालसाज कहलाते हैं। जहाँ धोखाधड़ी, छल, कपट, झूठ और ढोंग होता है, उसे धोखाधड़ी कहते हैं। "जानबूझकर छल नहीं करना चाहिए": जानबूझकर छल करने के बाद, उसे (निर्माण) नहीं करना चाहिए, उत्पादन नहीं करना चाहिए और न ही उसे उत्पन्न करना चाहिए। उसे अलग हो जाना चाहिए...

"तुम्हें जीवनयापन, ज्ञान, उपदेश और संयम (निषेध) रखने वाले अन्य लोगों का तिरस्कार नहीं करना चाहिए": "फिर," वाक्य का निरंतरता... यहाँ, एक प्रकार का क्रूर जीवन समर्थक अन्य विजयी जीवन समर्थकों का उपहास करता है: "यह कितना समृद्ध है, यह सब कुछ खाता है, अर्थात्: जड़ों, तनों, कलमों या जोड़ों से पौधे, और पाँचवाँ, नियमित बीजों से पौधे, हथौड़े जैसे गर्जनाशील दाँत — इसे समण भी कहा जाता है!" [DN.25, 61] उसने उस क्रूर जीवन से अन्य जीवित बचे लोगों का उपहास किया।

यहां, एक विशेष प्रकार का अद्भुत जीवन जीने वाला व्यक्ति क्रूर जीवन जीने वाले अन्य लोगों का तिरस्कार करता है: "यह अज्ञात अयोग्य व्यक्ति वस्त्र, भोजन, आश्रय, रोगियों की ज़रूरतों और चिकित्सा संबंधी आवश्यकताओं का लाभ नहीं उठा सकता।" उसने उस अद्भुत जीवन का उपयोग क्रूर जीवन जीने वालों का तिरस्कार करने के लिए किया। यहां, एक विशेष प्रकार का व्यक्ति बुद्धिमान है। उसने पूछे गए प्रश्न का उत्तर दिया। उसने इस प्रकार सोचा: "मैं बुद्धिमान हूं, लेकिन ये अन्य लोग बुद्धिमान नहीं हैं।" उसने उस बुद्धिमत्ता से अन्य लोगों का तिरस्कार किया। यहां, एक विशेष प्रकार के व्यक्ति संयम से परिपूर्ण हैं। वे पतिमोक्ख के आत्म-संयम से जीते हैं और सुरक्षित रहते हैं। उनका जीवन पूर्ण धार्मिकता और सुखमय है। वे छोटे पापों में भय देखते हैं और गुरु से शिक्षा प्राप्त करने के बाद सीखते हैं। वह इस प्रकार सोचता है: "मैं पूर्ण संयम रखने वालों में से हूं, लेकिन ये अन्य भिक्षु नियम तोड़ने वाले और दुष्ट आत्माओं से प्रभावित हैं।" उसने उस संयम से अन्य लोगों का तिरस्कार किया। यहां, एक विशेष प्रकार के लोगों को पर्याप्त भोजन से वंचित रखा गया है: वे जो जंगलों में रहते हैं, या वे जो अक्सर भीख मांगते हैं, ...(अंश हटा दिया गया है, पिछले भाग देखें)। उसने इस प्रकार सोचा: "मुझे पर्याप्त भोजन से वंचित रखा गया है, लेकिन इन अन्य लोगों को पर्याप्त भोजन से वंचित नहीं रखा गया है।" उसने इस प्रतिबंध के कारण अन्य लोगों का तिरस्कार किया। "आपको जीवन, ज्ञान, उपदेशों और संयमों के कारण अन्य लोगों का तिरस्कार नहीं करना चाहिए": आपको बुरी आदतों के साथ नहीं जीना चाहिए, या अच्छे से बेहतर जीवन नहीं जीना चाहिए, या ज्ञान, संयम या निषेधों के साथ दूसरों का अपमान और तिरस्कार नहीं करना चाहिए। इससे अहंकार उत्पन्न नहीं होना चाहिए, और इसके कारण कठोर, अति कठोर और सिर ऊंचा नहीं करना चाहिए।

167 · समणों या आम लोगों से बहुत कुछ सुनने के बाद, उकसाए जाने पर, किसी को भी असभ्य तरीके से जवाब नहीं देना चाहिए, क्योंकि मौन रहने वाले पलटवार नहीं करते।

"आम लोगों या साधारण लोगों के अनेक शब्द सुनकर जब आप चिढ़ जाते हैं": "चिढ़ने पर," जब आपकी निंदा की जाती है, आपको फटकारा जाता है, आपको परेशान किया जाता है, आपकी बदनामी की जाती है, आपको अपमानित किया जाता है या आपका अपमान किया जाता है। "आम लोग," .... "साधारण लोग," .... वे अनेक अप्रिय और अप्रिय शब्द कहेंगे, अपमान करेंगे, निंदा करेंगे, चिढ़ाएंगे, क्रोधित करेंगे, चोट पहुँचाएंगे, कष्ट पहुँचाएंगे, जान से मारेंगे, परेशान करेंगे और हानि पहुँचाएंगे। उनके अनेक अप्रिय और अप्रिय शब्द सुने जाते हैं; समझने के बाद, बोध करने के बाद, विवेक करने के बाद।

"अशिष्ट तरीके से वापस नहीं जाना चाहिए": "अशिष्टता से," आपको अशिष्ट और असभ्य तरीके से वापस नहीं जाना चाहिए, आपको बहस में वापस नहीं जाना चाहिए, आपको अपमान करने वाले व्यक्ति के पास वापस नहीं जाना चाहिए, और आपको क्रोधित व्यक्ति को और क्रोधित नहीं करना चाहिए, बहस और झगड़े में वापस जाना चाहिए [SN.7.2], बहस नहीं करनी चाहिए..., उसे हार मान लेनी चाहिए, ...

"क्योंकि मौन रहने वाला पलटवार नहीं करता": "मौन रहने वाला," .... "क्योंकि मौन रहने वाले पलटवार नहीं करते": मौन रहने वाले पलटवार नहीं करते, विरोधियों, शत्रुओं, शत्रुता से लड़ते नहीं, वे इसे उत्पन्न नहीं करते, न ही इसका कारण बनते हैं, और न ही इसे जन्म देते हैं।

168 · इस विधि को जानने के बाद, जो भिक्षु इसे चुनता है उसे हमेशा ध्यानपूर्वक इसका अध्ययन करना चाहिए; यह जानने के बाद कि "मौन" का अर्थ है निःसंयम, उसे गौतम की शिक्षाओं को नहीं छोड़ना चाहिए।

“इस धम्म को जानने के बाद”: इस धम्म की व्याख्या, शिक्षा, वर्णन, स्थापना, प्रकटीकरण, विश्लेषण और स्पष्टीकरण किया गया है। जानने के बाद, समझने के बाद, परखने के बाद... या, सही और गलत, (सही) मार्ग और बुरा मार्ग, पापी और निर्दोष, नीच और विजयी, काला और सफेद, ऋषि की निंदा और बुद्धिमान की प्रशंसा, समझने के बाद, तौलने के बाद... या, सही मार्ग, मार्ग का अनुसरण करने वाला मार्ग... (छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)। जानने के बाद...

“भिक्षु जो जाँच-परख कर चयन करते हैं, उन्हें सदा सजगता से सीखना चाहिए”: “जाँच,” जाँच करते समय; कड़ी जाँच करते समय; मापते समय; निर्णय लेते समय; भेद करते समय; स्पष्टीकरण करते समय: “सभी कर्म अनित्य हैं”... (छोड़ा गया, पिछले भाग देखें); ...स्पष्टीकरण करते समय।” चयन करने वाला भिक्षु। “सदा,” .... “सजगता से,” .... “सीखना चाहिए,” ....

“यह जानते हुए कि मृत्यु (विनाश) के बाद 'मौन' होता है”: मृत्यु के बाद लोभ का “मौन” ज्ञात है, ...क्रोध..., अज्ञान..., (छोड़ा गया); जानने और समझने के बाद, ...

“गौतम की शिक्षाओं को नहीं छोड़ना चाहिए”: गौतम की शिक्षाएँ, बुद्ध की शिक्षाएँ, विजेता की शिक्षाएँ, तथागत की शिक्षाएँ, देवताओं की शिक्षाएँ और अरहंत की शिक्षाएँ। “नहीं छोड़ना चाहिए,” एक सम्मानजनक कर्ता होना चाहिए, ...(अंशित)।

169 · क्योंकि वे अजेय विजेता हैं, उन्होंने धर्म को सुनी-सुनाई बातों के बजाय स्वयंसिद्ध रूप से देखा, इसलिए यह सत्य है कि जो लोग धर्म का त्याग नहीं करते, उन्हें सदा आदरपूर्वक भगवान बुद्ध की शिक्षाओं का पालन करना चाहिए। [इस प्रकार, भगवान बुद्ध ने कहा।]

क्योंकि वह एक अजेय विजेता है: रूप का विजेता, ध्वनि का विजेता, गंध का विजेता, स्वाद का विजेता, स्पर्श का विजेता, धर्म का विजेता, किसी भी अशुद्धि से पराजित नहीं होता; वह उन बुरे और अस्वास्थ्यकर धर्मों पर विजय प्राप्त करता है; अशुद्धि, अन्य चीजों, भय, कड़वे फल, वृद्धावस्था और भविष्य में मृत्यु से दूर रहता है।

“वह सुनी-सुनाई बातों (अफवाहों) के बजाय स्वयंसिद्ध धम्म को देखता है”: “स्वयं-प्रमाणीकरण” न तो सुनी-सुनाई बातों पर आधारित है, न ही इस प्रकार के कर्मों पर, न ही विरासत पर, न ही तीन संपत्तियों पर, न ही सैद्धांतिक चिंतन पर, न ही ध्यान पर। उनकी अंतर्दृष्टि उस धम्म में देखी और समझी गई जिसे उन्होंने स्वयं सिद्ध किया और अनुभव किया।

अतः यह वास्तव में भगवान बुद्ध की आज्ञा है: अतः, ... “भगवान बुद्ध की आज्ञा,” भगवान बुद्ध की आज्ञा, गौतम बुद्ध की शिक्षाएँ, बुद्ध की शिक्षाएँ, विजेता बुद्ध की शिक्षाएँ, तथागत बुद्ध की शिक्षाएँ, देवताओं की शिक्षाएँ, अरहंतों की शिक्षाएँ।

“जो व्यक्ति आराम नहीं करता, उसे सदा आदर करना चाहिए और अपनी पढ़ाई जारी रखनी चाहिए। [इस प्रकार, भगवान बुद्ध ने कहा]”: “जो व्यक्ति आराम नहीं करता,” एक आदरपूर्ण कर्ता... “सदा,” .... “आदर,” शरीर से, शब्दों से, हृदय से आदर करना, या यूँ कहें कि आदर करना, प्रणाम करना, श्रद्धा करना और सम्मान देना। “अध्ययन का पालन करो,” तीन प्रकार के अध्ययन होते हैं: .... “विश्व सम्मानित,” आदर का पर्यायवाची...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> निद्देसा >> निद्देसा 1.15

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

<<<< पिछला अगला >>>>

15. जिसने दंड उठाया है

170 · लाठी उठाने वालों से उत्पन्न आतंक; कृपया असंतुष्ट लोगों को देखें। मैं तात्कालिकता की भावना के बारे में बात करूँगा; मैं तात्कालिकता की भावना से उत्तेजित हूँ।

"लाठी लेने वाले से उत्पन्न भय": "लाठी" तीन प्रकार की होती है: शारीरिक लाठी, वाणी लाठी और मन लाठी; शारीरिक रूप से किए गए तीन प्रकार के बुरे कर्म, वाणी से किए गए चार प्रकार के बुरे कर्म और बुरी मंशा से उत्पन्न तीन प्रकार की लाठी। "आतंक" दो प्रकार का भय होता है: वर्तमान जीवन का भय और परलोक का भय। वर्तमान जीवन का भय क्या है? यहाँ, एक विशेष प्रकार के लोग शरीर से बुरे कर्म करते हैं, शब्दों से बुरे कर्म करते हैं और इरादों से बुरे कर्म करते हैं; वे हत्या करते हैं, बिना दिए लेते हैं, आक्रमण करते हैं, लूटपाट करते हैं, पत्नियों का अपहरण करते हैं और झूठ बोलते हैं। पकड़े जाने पर वे राजा के पास जाते हैं: "महाराज! यह चोर है, अपराधी है, कृपया इसे दंड दें।" राजा ने उस पर दोष लगाया। उसने दोष का उपयोग भय उत्पन्न करने के लिए किया। उसे कड़वाहट और दुःख का अनुभव हुआ। यह भय, कड़वाहट और दुःख कहाँ से आया? लाठी लेने वाले व्यक्ति से ही यह उत्पन्न हुआ, पैदा हुआ और प्रकट हुआ।

राजा इस स्थिति से संतुष्ट नहीं था। राजा ने उसे हथकड़ियों, रस्सियों, बेड़ियों, लताओं, कुडज़ू लताओं से जकड़कर, जंजीरों में डालकर, बाड़ लगाकर, गाँव, कस्बे, शहर, देश या किसी स्थान से बांधकर कैद कर लिया और यहाँ तक कि यह घोषणा भी कर दी: "तुम यहाँ से बाहर नहीं जा सकते।" वह भी इस बंधन से पीड़ा और दुख का अनुभव करता है, यह भय, पीड़ा और दुख कहाँ से उत्पन्न होता है?...

राजा इस स्थिति से संतुष्ट नहीं है। राजा अपनी संपत्ति उससे ले जाएगा: सैकड़ों, हजारों या एक लाख (धन)। उसे यह भी लगता है...

राजा इस स्थिति से संतुष्ट नहीं थे। उन्होंने उस पर अनेक दंड लगाए: कोड़े मारना, डंडे से पीटना, बेंत से पीटना, हाथ-पैर काटना, कान काटना, नाक काटना, खट्टी दलिया से भरा बर्तन में डालने की सजा, सिर मुंडवाने की सजा, राहु के मुख में आग लगाने की सजा, मोमबत्ती से हाथ काटने की सजा, भूत-प्रेत भगाने की सजा, छाल के वस्त्र पहनाने की सजा, हिरण जैसी सजा, कांटे से मांस निकालने की सजा, धन से दंडित करना, क्षार से स्नान कराने की सजा, दरवाज़े के ताले को मरोड़ने की सजा, भूसे से पैर रखने की सजा, गर्म तेल से लथपथ करना, कुत्ते से कटवाना, जीवित अवस्था में छेद करना, तलवार से सिर काटना; राजा इन चारों प्रकार के दंडों के स्वामी हैं।

अपने कर्मों और शरीर के विघटन के कारण, मृत्यु के बाद वह दुख, बुराई, निम्न लोक और नरक के संसार में पुनर्जन्म लेता है। जेलरों ने उस पर पाँच प्रकार के दंड लगाए: उन्होंने लाल गर्म लोहे की छड़ को उसकी पहली हथेली से, फिर दूसरी हथेली से और उसके बाद पैर के पहले तलवे से, फिर पैर के दूसरे तलवे से और अंत में छाती के मध्य भाग से गुज़ारा। उसे वहाँ कड़वी, भयंकर, हिंसक और तीव्र पीड़ा का अनुभव होता है, और जब तक उसका बुरा कर्म नष्ट नहीं हो जाता, तब तक उसकी मृत्यु नहीं होती। यह भय, पीड़ा और दुख कहाँ से उत्पन्न हुआ?

जेलरों ने उसे लिटाकर कुल्हाड़ी से काट डाला... (अंश हटा दिया गया) जेलरों ने उसे पैरों तले दबाकर छोटी कुल्हाड़ी से काट डाला..., जेलरों ने उसे गाड़ी में जोतकर आग लगा दी, जिससे वह जलती हुई, तेज आग में झुलस गया..., जेलरों ने उसे जलते, चमकते कोयले के ज्वालामुखी पर ऊपर-नीचे चढ़ाया..., जेलरों ने उसे ऊपर-नीचे पकड़कर गर्म, धधकते, जलते, लाल चमकते तांबे के बर्तन में फेंक दिया; वह वहाँ झाग में उबल गया, और एक बार ऊपर उठा, एक बार नीचे गया, और एक बार इधर-उधर चला गया। उसे कड़वाहट महसूस हुई...। यह भयावहता, यह पीड़ा कहाँ से आई...। जेलरों ने उसे नरक में फेंक दिया, और नरक में:

चारों कोनों में चार द्वार हैं, जो बराबर भागों में विभाजित हैं, लोहे की दीवारों से घिरे हुए हैं, और ऊपर का भाग लोहे से ढका हुआ है। पृथ्वी लोहे की बनी है, और यह आग की ज्वाला से चमक रही है, जो सौ योजन तक चारों ओर व्याप्त है, सदा विद्यमान है। कष्टदायक जलन भयानक है, तेज लपटों के पास जाना कठिन है, पीड़ा के भय से रोंगटे खड़े हो जाते हैं। पूर्वी दीवार से आग का एक गोला निकलता है, जो बुरे कर्मों को जलाते हुए पश्चिम की ओर प्रहार करता है। पश्चिमी दीवार से आग का एक गोला निकलता है, जो बुरे कर्मों को जलाते हुए पूर्व की ओर प्रहार करता है। उत्तरी दीवार से आग का एक गोला निकलता है, जो बुरे कर्मों को जलाते हुए दक्षिण की ओर प्रहार करता है। दक्षिणी दीवार से आग का एक गोला निकलता है, जो बुरे कर्मों को जलाते हुए उत्तर की ओर प्रहार करता है। नीचे से आग का एक गोला निकलता है, जो बुरे कर्मों को जलाते हुए छत की ओर प्रहार करता है। ऊपर से आग का एक गोला निकलता है, जो बुरे कर्मों को जलाते हुए छत की ओर प्रहार करता है। ज़मीन। धधकती हुई लोहे की आग, जलने जैसा दर्द, ठीक इसी तरह यह भयानक नरक ऊपर और नीचे से दिखाई देता है। यहाँ प्राणी अत्यंत क्रूर हैं, जिन्होंने बड़े-बड़े अपराध किए हैं, निरंतर

पापी, बिना मरे यातना भोगते हैं। इस नरक में रहने वाले का शरीर आग के समान है, स्थिर कर्म वाले के लिए, आग में न राख होती है न कालिख। वे पूरब की ओर भागते हैं, फिर वहाँ से पश्चिम की ओर; वे उत्तर की ओर भागते हैं, फिर वहाँ से दक्षिण की ओर; वे जहाँ भी भागते हैं, द्वार बंद हो जाते हैं, वे बाहर जाना चाहते हैं, वे मुक्ति की तलाश करते हैं। वे वहाँ से बाहर नहीं जा सकते, उन्हें यह कर्मों के माध्यम से प्राप्त होती है, क्योंकि उन पापियों के प्रचुर कर्म अभी पूरी तरह से परिपक्व नहीं हुए हैं।

यह भय, पीड़ा और दुख उसे कहाँ से मिला? यह उसी व्यक्ति से उत्पन्न होता है, जन्म लेता है और प्रकट होता है जो छड़ी उठाता है। इसी प्रकार, नरक की पीड़ा, पशु जगत की पीड़ा, प्रेत जगत की पीड़ा और मनुष्य की पीड़ा कहाँ से उत्पन्न होती है, कहाँ पैदा होती है, कहाँ घटित होती है, कहाँ जन्म लेती है और कहाँ प्रकट होती है? यह उत्पन्न होती है, ...

"कृपया असंतुष्ट लोगों को देखिए": "लोग," ...(विलुप्त, पिछले अनुभाग देखें)। असंतुष्ट लोग झगड़ालू लोग हैं, शत्रुतापूर्ण लोग हैं, विरोध करने वाले लोग हैं, प्रहार करने वाले लोग हैं, पलटवार करने वाले लोग हैं, जिन पर हमला किया जाता है, जिन पर पलटवार किया जाता है, कृपया देखिए, कृपया ध्यान से देखिए, कृपया गौर कीजिए, कृपया अवलोकन कीजिए।

"मैं तात्कालिकता की भावना के बारे में बात करूँगा": तात्कालिकता की भावना भय, आतंक, उत्पीड़न, प्रहार, हानि, आपदा है। "मैं बताऊँगा," मैं घोषणा करूँगा, मैं कहूँगा, मैं समझाऊँगा, मैं सिखाऊँगा, मैं बताऊँगा, मैं निर्माण करूँगा, मैं उजागर करूँगा, मैं विश्लेषण करूँगा, मैं स्पष्ट करूँगा।

"मुझे एक तात्कालिकता की भावना ने उत्तेजित कर दिया": बस अपने आप का अनुसरण करते हुए, मुझे एक तात्कालिकता की भावना ने उत्तेजित कर दिया, भयभीत कर दिया, और एक तात्कालिकता की भावना उत्पन्न कर दी।

171 · धड़कते हुए लोगों को देखकर, जैसे कोई मछली थोड़े से पानी में हो, और एक-दूसरे के प्रति शत्रुतापूर्ण हो रही हो; इसे देखकर मेरे मन में भय का संचार हुआ।

"उन लोगों को देखकर जो धड़क रहे हैं": "लोग" सभी प्राणियों का पर्यायवाची है। लोग इच्छा की धड़कन से धड़क रहे हैं...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)। "देखने के बाद,"...

"जैसे कोई मछली कम पानी वाली जगह पर हो": ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"एक दूसरे के प्रति शत्रुतापूर्ण हो जाओ": सभी प्राणी एक दूसरे के प्रति शत्रुतापूर्ण हैं, विरोध करते हैं, प्रहार करते हैं, प्रतिवाद करते हैं, हमला करते हैं, प्रतिवादित होते हैं: राजा और राजा, ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"देखने के बाद, मेरे भीतर भय समा गया": "देखने के बाद," देखने के बाद, ... आतंक, उत्पीड़न, आघात, हानि, आपदा समा गई।

172 · दुनिया में कुछ भी ठोस नहीं है, सभी दिशाएँ पूरी तरह से हिल गई हैं, रहने के लिए जगह चाहिए, (लेकिन) मुझे कोई खाली जगह नहीं दिखी।

"संसार में कुछ भी स्थिर नहीं है": "संसार," नरक लोक, पशु जगत, दुष्ट आत्माओं का जगत, मानव जगत, स्वर्ग लोक, समुच्चय जगत, संसारों का जगत, सजीव जगत, यह संसार, अन्य संसार, ब्रह्म जगत, स्वर्ग लोक, इसे संसार कहते हैं। (वह) नरक लोक सदा स्थिर है, या सुख की स्थिरता, या मेरे की स्थिरता, या स्थिर, या स्थिर, या शाश्वत, या अपरिवर्तनीय धम्म, जो अस्थिर, अविश्वसनीय और पृथक है। पशु जगत... (छोड़ा गया)।

एक और उदाहरण यह है कि सरकंडे दृढ़ नहीं होते, ठोस नहीं होते, और ठोसपन से अलग हो चुके होते हैं, जैसे अरंडी का पौधा दृढ़ नहीं होता, अंजीर..., सफेद सरकंडे..., पलाश का पेड़..., झाग, छाले, सूर्य की ज्वाला, सूखा केला, भ्रम...। इसी प्रकार, नरक लोक...।

“सभी दिशाएँ पूरी तरह से हिल गई हैं”: पूर्व दिशा में सब कुछ हिल गया है, पूरी तरह से हिल गया है, गतिमान है: अनित्यता से विचलित, जन्म के साथ, बुढ़ापे के बाद, रोग से पराजित, मृत्यु से पीड़ित, पीड़ा से ग्रस्त, कोई आश्रय नहीं, कोई शरण नहीं, कोई वापसी नहीं। पश्चिम दिशा में..., उत्तर..., दक्षिण..., पूर्व के मध्य में..., पश्चिम के मध्य में..., उत्तर के मध्य में..., दक्षिण के मध्य में..., निचली दिशा में..., ऊपरी दिशा में..., दसों दिशाओं में...। फिर से, यही कहा गया है:

“भले ही आपका महल उत्तर दिशा को रोशन करते हुए चमक रहा हो, फिर भी रूप की खामी देखकर मन कांप उठता है। इसलिए, बुद्धिमान व्यक्ति रूप से संतुष्ट नहीं होता।” [एस.एन.6.6]

“यह संसार मृत्यु से त्रस्त है, वृद्धावस्था से घिरा है, लालसा के तीर से घायल है, और हमेशा इच्छा की ज्वाला से सुलगता रहता है।” [SN.1.66]

“सारा संसार जल रहा है, सारा संसार धुआँ उगल रहा है, सारा संसार धधक रहा है, सारा संसार काँप रहा है।” [SN.5.7]

“मेरी जगह चाहो”: मेरा निवास, मेरा आश्रय, मेरी शरण, मेरा स्थान, मेरी शरणस्थली, जो चाहते हैं, स्वीकार करते हैं, आशा रखते हैं, उत्सुक हैं और प्रार्थना करते हैं। “(पर) मुझे कोई खाली नहीं दिखा”: मैंने केवल कब्जे में लिए हुए लोगों को देखा, लेकिन खाली लोगों को नहीं देखा: सभी युवा बूढ़ों के कब्जे में हैं, सभी रोगमुक्त लोग रोग से ग्रसित हैं, सारा जीवन मृत्यु से ग्रसित है, सारा लाभ निष्लाप के कब्जे में है, सारी प्रतिष्ठा प्रतिष्ठाहीनता से ग्रसित है, सारी प्रशंसा निंदा से ग्रसित है और सारा सुख दुख से ग्रसित है।

“लाभ और हानि, यश और अपमान, निंदा और प्रशंसा, सुख और दुख, ये धर्म मनुष्य में क्षणिक हैं, शाश्वत नहीं, बल्कि परिवर्तनशील हैं।” [एएन.8.5]

173 · अंत में, सारी शत्रुता देखकर, मुझे अरुचि (नाखुशी) हुई, उस समय, मैंने यहाँ चुभने वाला तीर देखा: जिसे देखना मुश्किल है, जो दिल से जुड़ा है।

लेकिन अंत में, सभी शत्रु”: “फिर भी अंत में,” सभी युवा और वृद्ध इसे समाप्त कर देते हैं, सभी रोगमुक्त और रोगग्रस्त इसे समाप्त कर देते हैं, सभी जीवन और मृत्यु इसे समाप्त कर देते हैं, सभी लाभ और हानि इसे समाप्त कर देते हैं, सभी प्रसिद्धि और बदनामी इसे समाप्त कर देते हैं, सभी प्रशंसा और निंदा इसे समाप्त कर देते हैं, और सभी सुख और दुख इसे समाप्त कर देते हैं। “सभी शत्रु,” युवा लोग बूढ़ों का विरोध करना चाहते हैं, ..., जो प्रशंसा चाहते हैं उन्हें निंदा और विरोध का सामना करना पड़ता है, और जो सुख चाहते हैं उनका विरोध और पिटाई की जाती है, उन पर पलटवार किया जाता है, उन पर हमला किया जाता है, उन पर पलटवार किया जाता है।

“देखने के बाद, मेरा दुख”: “देखने के बाद,” .... “मेरा दुख,” जो कोई खुश नहीं है, जो कोई आनंदित नहीं है, जो कोई असंतुष्ट है, जो कोई भयभीत है।

“उस समय तीर को देखना”: “उस समय,” वाक्य का आगे का भाग... (छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)। “यहाँ,” सभी प्राणियों में। “तीर,” सात प्रकार के चुभने वाले तीर होते हैं: लोभ का चुभने वाला तीर, क्रोध का चुभने वाला तीर, पागलपन का चुभने वाला तीर, अहंकार का चुभने वाला तीर, दृष्टि का चुभने वाला तीर, चिंता का चुभने वाला तीर, संदेह का चुभने वाला तीर। “उसने देखा,” उसने देखा और समझा।

“दिखाई न देने वाला, हृदय से जुड़ा हुआ”: “दिखाई न देने वाला,” दिखाई न देने वाला, देखा न जा सकने वाला, प्रबुद्ध होना कठिन, सचेत होना कठिन, सुलभ होना कठिन। “हृदय से जुड़ा हुआ।” हृदय को हृदय कहा जाता है, जो मन, ज्ञान, इंद्रिय, श्वेत (सर्व शुद्ध), मन, चेतना और चेतना के समूह का मूल है, जो चेतना के क्षेत्र के अनुरूप है। “हृदय से जुड़ा हुआ,” हृदय से जुड़ा हुआ, हृदय के साथ चलना, जुड़ा हुआ, सहअस्तित्व, निर्भरता का एक ही स्थान और एक ही वस्तु।

174 · जिसे भी चुभने वाला तीर लगता है, वह चारों दिशाओं में भागता है, परन्तु चुभने वाला तीर निकल जाने के बाद, वह न तो भागता है और न ही डूबता है।

"जिस किसी को भी चुभने वाला तीर लगता है, वह चारों दिशाओं में भागता है": "चुभने वाला तीर," चुभने वाले तीर सात प्रकार के होते हैं: .... लालच का तीर क्या है? वह लालच है, ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

क्रोध का चुभने वाला तीर क्या है? "वह प्रतिकूल रहा है...(विलंबित भाग देखें, पिछले अनुभाग देखें)।" घृणा का जन्म हुआ...(विलंबित भाग) क्रूर क्रोध, रोष और हृदय की अप्रसन्नता।

अज्ञान का चुभने वाला तीर क्या है? दुख में डूबा अज्ञान... अहंकार का भेदक तीर क्या है? "मैं विजेता हूँ" का अहंकार... दृष्टि का भेदक तीर क्या है? शरीर के बीस दृश्य होते हैं... दुख का तीर क्या है? रिश्तेदारों के खोने का दुख... संदेह का तीर क्या है? दुख में डूबा संशय...

"जो कोई भी चुभने वाले तीर से घायल होता है, वह हर दिशा में भागता है": जो कोई भी चुभने वाले तीर से घायल होता है, भेदा जाता है, छुआ जाता है, यातना दी जाती है, किसी वस्तु से जुड़ता है, और अपने शरीर से, शब्दों से, और इरादे से बुरे कर्म करता है: हत्या करना, बिना दिए लेना, लोगों पर आक्रमण करना, शिकार करना, रास्ता रोकना, लूटपाट करना, पत्नी का अपहरण करना, झूठ बोलना, इस तरह, गोली लगने से घायल होने, भेदे जाने, छुए जाने, यातना दिए जाने, लालची तीर से जुड़ने से, किसी वस्तु से जुड़कर भागता है, इधर-उधर भागता है, इधर-उधर घूमता है, और लगातार इधर-उधर घूमता रहता है। या, गोली लगने से, ..., गर्मी, भूख, प्यास बढ़ जाती है, मक्खी, मच्छर, हवा, धूप और सांपों के संपर्क से यातना होती है, बार-बार भूख और प्यास से मर जाता है; चला जाता है (विभिन्न स्थानों को यहाँ सूचीबद्ध किया गया है, अध्याय सात देखें); रेगिस्तान में खतरनाक सड़क पर चलता है; घुटनों के बल उस सड़क पर चलता है जिसे पार किया जा सकता है; वह सड़क जिस पर बकरियाँ चल सकती हैं; वह सड़क जिस पर भेड़ें चल सकती हैं; वह सड़क जिसे केवल खंभों के सहारे ही पार किया जा सकता है; वह रास्ता जिसे केवल पैराशूट पकड़कर ही पार किया जा सकता है; वह रास्ता जिसे केवल बांस की झाड़ी काटकर ही पार किया जा सकता है; पक्षियों के रास्ते पर चलना; चूहों के रास्ते पर चलना; दरारों वाले रास्ते पर चलना; लताओं वाले रास्ते पर चलना, बार-बार पूछने पर भी उसे नहीं मिलता, न मिलने की भावना में डूबा हुआ, पीड़ा का अनुभव करता है; पूछने पर उसे मिल जाता है, रक्षक भाव में डूबा हुआ, चिंता का अनुभव करता है: "क्या मेरी संपत्ति राजा द्वारा छीन ली जाएगी, चोर उसे नहीं ले जाएंगे, आग उसे नहीं जलाएगी, पानी उसे बहाकर नहीं ले जाएगा, और अयोग्य उत्तराधिकारी उसे नहीं ले जाएंगे।" जब वह इस तरह से रक्षा और संरक्षण करता है, तो उसकी संपत्ति नष्ट हो जाती है, वह वियोग में डूबा हुआ है और पीड़ा का अनुभव करता है, जब वह इस तरह से रक्षा और संरक्षण करता है, तो उसकी संपत्ति नष्ट हो जाती है, वह वियोग में डूबा हुआ है और पीड़ा का अनुभव करता है। इसी तरह गोली मार दी जानी है, ...

क्रोध के तीर से घायल होना..., मोह के तीर से घायल होना..., अहंकार के तीर से घायल होना...

किसी भेदी तीर से घायल, शरीर में छेद हो गया, ..., नग्न घूमने के लिए विवश, (सामान्य) तरीकों की अनदेखी करते हुए, अपने हाथ चाटते हुए, बिना बुलाए आना, बुलाए जाने पर न आना, विशेष रूप से उनके लिए तैयार किया गया भोजन न खाना, कटोरे या बर्तन से भोजन न खाना, भेड़ पालने वाले व्यक्ति से, या फावड़ा या हथियार रखने वाले व्यक्ति से, या जहाँ कोई जोड़ा भोजन कर रहा हो, या गर्भवती महिला से, या स्तनपान कराने वाली महिला से, या जिसके घर में कोई पुरुष हो, या उन स्थानों से जहाँ कुत्ते या मक्खियाँ हों, भोजन न खाना; मछली, मांस, शराब, वाइन, किण्वित दलिया (बीयर) स्वीकार करता है; वह अपना कटोरा लेकर एक परिवार के पास एक निवाला, या दो परिवारों के पास दो निवाले ... (छोड़ा गया), या सात परिवारों के पास सात निवाले के लिए जाता है; या वह अपना जीवन चलाने के लिए एक छोटी थाली (भोजन की) का उपयोग करता है, या दो ..., या सात ...; या दिन में एक बार भोजन करता है, या दो दिनों तक एक बार भोजन करता है, ..., सात दिनों तक एक बार भोजन करता है, या यहाँ तक कि आधे महीने तक एक बार भोजन करता है; वह नियमित अंतराल पर भोजन करने के अभ्यास के प्रति समर्पित जीवन जीता है [DN.8]। इस तरह देखा जाए तो, चुभने वाला तीर, ...

या, चुभने वाले तीर के निशान देखकर, वह सलाद खाने वाला, या खरपतवार खाने वाला, या कच्चा चावल खाने वाला, या पौधे खाने वाला, या खट्टी काई खाने वाला, या चावल की भूसी खाने वाला, या चावल का पानी पीने वाला, या अलसी का पाउडर खाने वाला, या घास खाने वाला, या गाय का

गोबर खाने वाला बन जाता है। वह जंगल की जड़ों और फलों पर, और गिरे हुए फलों पर अपना जीवन यापन करता है। वह लिनन, भांग मिश्रित कपड़ा, कफ़न, गोबर साफ करने वाले कपड़े, छाल, हिरण की खाल, भेड़ की खाल, फूस के कपड़े, छाल के कपड़े, लकड़ी के बुरादे के कपड़े, बालों से बुने हुए कपड़े, जानवरों की खाल के कपड़े, उल्लू के पंखों से बनी जैकेट पहनता है। वह दाढ़ी नोचने वाला है, वह दाढ़ी नोचने के लिए समर्पित साधक के रूप में रहता है, वह खड़ा रहता है, बैठने से इनकार करता है, उकड़ू बैठा रहता है, एक मेहनती साधक है, कांटों पर लेटा रहता है। वह कांटों वाले पलंग पर सोता है, तख्तों वाले पलंग और कठोर फर्श पर। वह खुले में और हर जगह रहने वाला व्यक्ति है। वह एक ऐसा व्यक्ति है जो सड़ा हुआ भोजन खाता है और एक ऐसा साधक है जो सड़ा हुआ भोजन खाने में स्वयं को समर्पित करता है। वह एक ऐसा व्यक्ति है जो पेय पदार्थ नहीं पीता और एक ऐसा साधक है जो पेय पदार्थ नहीं पीता। जो साधक सूर्यास्त से पहले तीन बार जल स्नान करता है, वह इस प्रकार तपस्या और शरीर पर कष्ट के अनेक रूपों में जीवन व्यतीत करता है। इस प्रकार, उसे भेदी तीरों का भी सामना करना पड़ता है, ...

काँटेदार तीर चलाए गए, आर-पार हो गए, छुए गए, यातना दी गई, संयोजित हुए, वश में किए गए और दुखी, थके हुए, रोते हुए, पीटते हुए और विलाप करते हुए, और भ्रम की स्थिति में आ गए। यह धन्य व्यक्ति द्वारा कहा गया है [एम.एन.87]:

"ब्राह्मण! एक समय की बात है, श्रावस्ती नगर में एक स्त्री की माता का निधन हो गया। जब उनका निधन हुआ, तो वह बहुत क्रोधित और हताश हो गईं। वह गली-गली, चौराहे-चौराहे भटकती रहीं और फिर बोलीं, 'क्या आप मेरी माता को देख पा रहे हैं? क्या आप मेरी माता को देख पा रहे हैं?'"

हे ब्राह्मण! एक समय की बात है, श्रावस्ती नगर में एक स्त्री के पिता का निधन हो गया..., भाई का निधन हो गया..., बहन का निधन हो गया..., पुत्र का निधन हो गया..., पुत्र का निधन हो गया..., पति का निधन हो गया...। उनके निधन पर वह व्याकुल और हताश होकर गली-गली, चौराहे-चौराहे भटकती रही और फिर बोली, 'क्या आपने मेरे पति को देखा? क्या आपने मेरे पति को देखा?'

हे ब्राह्मण! एक समय की बात है, श्रावस्ती नगर में एक व्यक्ति की माता का देहांत हो गया। जब वह मरी तो वह व्यथित और हताश होकर गली-गली, चौराहे-चौराहे भटकने लगा और फिर बोला, 'क्या तुमने मेरी माता को देखा? क्या तुमने मेरी माता को देखा?'

ब्राह्मण! एक समय की बात है, श्रावस्ती नगर में एक व्यक्ति रहता था जिसके पिता की मृत्यु हो गई थी... (अंशित)।

हे ब्राह्मण! एक बार श्रावस्ती नगर में एक स्त्री अपने उन रिश्तेदारों के घर गई जो उसके पति को ले जाना चाहते थे और फिर उसे किसी और को देना चाहते थे जिसे वह नहीं चाहती थी। तब स्त्री ने अपने पति से कहा, "स्वामी! मेरे रिश्तेदार आपको ले जा रहे हैं (और फिर मुझे किसी और को देना चाहते हैं जिसे मैं नहीं चाहती), और हम दोनों मर जाएँगे।" तब पति ने स्त्री के शरीर के दो टुकड़े कर दिए और यह सोचकर आत्महत्या कर ली: "मृत्यु के बाद भी हम एक जोड़ी बने रहेंगे।" इसी प्रकार, दुख के बाण से घायल हो जाते हैं...

एक को तीर लगा, आर-पार हो गया, छुआ गया, यातना दी गई, मिला दिया गया, संदेह भरे चुभते तीर ने उसे वश में कर लिया और वह संशयवादी बन गया, एक ऐसा संशयवादी जो संदेह में डूब गया, और एक संशयी व्यक्ति: "क्या मैं अपने पिछले जन्म में अस्तित्व में था? क्या मैं अपने पिछले जन्म में अस्तित्व में नहीं था? मेरा पिछला जन्म क्या था? मेरा पिछला जन्म कैसा था? मेरा पिछला जन्म क्या था, और बाद में वह क्या बन गया? क्या मैं भविष्य में अस्तित्व में रहूंगा?..." या, उसके मन में वर्तमान संसार के बारे में संदेह उठेंगे: "क्या मैं अस्तित्व में हूं? क्या मैं नहीं हूं? मैं क्या हूं? मेरी स्थिति कैसी है? ये सजीव प्राणी कहां से आए हैं और कहां जाएंगे?" [SN.12.20] इस प्रकार, चुभता तीर अंदर घुसा, आर-पार हो गया, ...

उसने ये भेदक बाण बनाए। जब उसने ये भेदक बाण बनाए, तो वह इनके कारण पूरब, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण दिशाओं में दौड़ा। वे भेदक बाण टूटे नहीं, और वह उन्हीं बाणों के साथ अपने लक्ष्य की ओर दौड़ता रहा: नरक की ओर, पशुलोक की ओर, प्रेतों के लोक की ओर, मनुष्यलोक की ओर, स्वर्गलोक की ओर, अपने लक्ष्य से अपने लक्ष्य तक, जन्म-जन्म, जन्म-जन्म, अस्तित्व-अस्तित्व, पुनर्जन्म-जन्म, चक्र-चक्र, दौड़ता-दौड़ता, चलता-फिरता और निरंतर गतिमान रहा।

लेकिन जब भेदन करने वाला तीर निकाल लिया जाता है, तो वह न तो भागता है और न ही डूबता है": परन्तु वह लोभ का भेदन करने वाला तीर, क्रोध का भेदन करने वाला तीर, ..., निकाले जाने के बाद, निकालने के बाद, हटाने के बाद, पूरी तरह से हटाने के बाद, त्यागने के बाद, निकालने के

बाद, समाप्त करने के बाद, अस्तित्व से मिटाने के बाद, वह न तो पूरब भागेगा और न पश्चिम, न उत्तर भागेगा और न दक्षिण। वे भेदन करने वाले तीर काट दिए गए हैं, और उस अवस्था में जब वे भेदन करने वाले तीर काट दिए गए हैं, कोई रुचिकर स्थान की ओर नहीं भागेगा: न नरक की ओर नहीं भागेगा, ..., और निरंतर इधर-उधर घूमता रहेगा। “न डूबना,” इच्छा की बाढ़ में न डूबना, क्रोध की बाढ़ में न डूबना, अज्ञान की बाढ़ में न डूबना, न डूबना, पूरी तरह से न डूबना, नीचे की ओर न डूबना, न जाना, नीचे न जाना।

175 · वहाँ शिक्षा का पाठ किया जाता है: संसार में किसी भी बंधन के प्रति आसक्त नहीं होना चाहिए; सभी इच्छाओं को भेदने के बाद, अपने स्वयं के निर्वाण के लिए सीखना चाहिए।

“यहाँ गाए (पाठ किए) जा रहे ज्ञान के लिए: संसार में बंधे हुए किसी भी व्यक्ति के लिए”: “ज्ञान,” हाथी विज्ञान, अश्व विज्ञान, रथ यात्रा, तीरंदाजी, नेत्र विज्ञान, शल्य चिकित्सा, शरीर का उपचार, भूत-प्रेत भगाना, बाल चिकित्सा का ज्ञान। “गाया जा रहा है,” जप किया जा रहा है, पाठ किया जा रहा है, चर्चा की जा रही है, समझाया जा रहा है, बोला जा रहा है। या, जप किया जा रहा है, सीखा जा रहा है, याद किया जा रहा है, समझा जा रहा है, भेद किया जा रहा है, प्राप्त करने के लिए बाध्य है। “बंधे हुए” को पाँच इच्छाएँ कहा जाता है: दृष्टि, जिसे आँख से पहचाना जा सके, वांछनीय, सुंदर, सुखद, इच्छाओं से युक्त, लालची रूप; ध्वनि...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)। बंधने को पाँच इच्छाएँ क्यों कहा जाता है? अधिकांश लोग पाँच इच्छाओं को चाहते हैं, स्वीकार करते हैं, आशा करते हैं, आकांक्षा करते हैं और उनके लिए प्रार्थना करते हैं। इसी कारण इन्हें पाँच इच्छाएँ कहा जाता है। “संसार में,”...

“उनमें उत्साह नहीं होना चाहिए”: उनमें, या उन अध्ययनों में, या पांच प्रकार की इच्छाओं में, व्यक्ति को उत्साहित नहीं होना चाहिए, उसे लक्ष्य नहीं बनाना चाहिए, और ऐसा व्यक्ति नहीं बनना चाहिए जो कड़ी मेहनत न करे या उसकी ओर झुकाव न रखे, वृद्धि की ओर न जाए।

“सभी इच्छाओं को भेदने के बाद”: “भेदने के बाद” का अर्थ है भेदने के बाद: “सभी कर्म क्षणभंगुर हैं” भेदने के बाद, ...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)। प्रवेश के बाद। “सब कुछ,” ...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)। “इच्छा,” ...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)।

“अपने निर्वाण के लिए सीखना चाहिए”: “अध्ययन,” तीन प्रकार के अधिगम हैं: ...(विलंबित भाग देखें)। “अपने निर्वाण के लिए,” अपने लोभ को बुझाने के लिए; अपने क्रोध को बुझाने के लिए; अपने मोह को बुझाने के लिए... (विलंबित), शांत, मौन, शांत हो जाओ, शांत हो जाओ, विचारों को रोक दो, तुम्हें उपदेशों को बढ़ाना सीखना चाहिए, तुम्हें मन को बढ़ाना सीखना चाहिए, और तुम्हें बुद्धि को बढ़ाना सीखना चाहिए। इन तीनों विद्याओं को तब सीखना चाहिए जब वे ज्ञात हों (उल्लेखित); जब वे ज्ञात हों, तब उन्हें सीखना चाहिए..., तुम्हें सीखना चाहिए, अभ्यास करना चाहिए, अच्छी तरह अभ्यास करना चाहिए, और स्वीकार करने के बाद आगे बढ़ना चाहिए।

176 · व्यक्ति को सत्यवादी होना चाहिए, अभिमानी नहीं, छल करने वाला नहीं, विभाजनकारी नहीं, क्रोध रहित, मुनि लोभ और कंजूसी पर विजय प्राप्त कर सकता है।

“सच्चाई का पालन करना चाहिए, अहंकार नहीं”: “सच्चाई का पालन करना चाहिए,” सत्य का ज्ञान होना चाहिए, सही दृष्टिकोण होना चाहिए, आठ पवित्र मार्गों का अनुसरण करना चाहिए। “अहंकार नहीं,” “अहंकार,” अहंकार तीन प्रकार का होता है: ...(विकल्प हटा दिया गया है, पिछले भाग देखें)। उसके लिए, ये तीनों अहंकार समाप्त हो जाते हैं, ..., उसे अहंकार रहित कहा जाता है।

“जो छल नहीं करते, और जो फूट डालने वाली बातों का त्याग करते हैं”: छल... (विलंबित भाग देखें)। जो इस छल से मुक्त हो गया है, उसे छल न करने वाला कहा जाता है। “फूट डालने वाली बातों से दूर रहो,” फूट डालने वाली बातें, ...(विलंबित भाग देखें)। जो इससे मुक्त हो गया है, उसे फूट डालने वाला, फूट डालने से दूर रहने वाला और फूट डालने से अलग रहने वाला कहा जाता है।

“जो क्रोधित नहीं होते, मुनि लोभ और कंजूसी पर विजय प्राप्त कर सकते हैं”: उन्हें “क्रोधित नहीं” कहा जाता है, परन्तु केवल क्रोधित लोगों के बारे में ही ऐसा कहा जा सकता है। क्रोध दस रूपों में उत्पन्न होता है: ...(विलुप्त, पिछले भाग देखें)। जिनके लिए क्रोध समाप्त हो जाता है, ..., उन्हें क्रोधित नहीं कहा जाता है। क्रोध की अवस्था को त्यागकर अक्रोधित माना जाता है; क्रोध के ज्ञान की अवस्था को अक्रोधित माना जाता है; “लोभ,” अर्थात्

लोभ की अवस्था, ... कंजूसी को पाँच प्रकार की कंजूसी कहा जाता है: .... "मुनि," .... "जो क्रोधित नहीं होते, मुनि लोभ और कंजूसी की बुराई पर विजय प्राप्त कर सकते हैं": मुनि लोभ और कंजूसी की बुराई से बच निकलते हैं, उससे ऊपर उठते हैं, उसे पार करते हैं और उस पर विजय प्राप्त करते हैं।

177 · नींद, आलस्य और सुस्ती पर विजय प्राप्त करनी चाहिए, और आराम से नहीं रहना चाहिए, अहंकार के साथ नहीं खड़ा होना चाहिए: वह व्यक्ति जिसका मन निर्वाण में है।

"नींद, आलस्य और उनींदापन पर विजय प्राप्त करनी चाहिए": "नींद" से तात्पर्य शरीर की असहनीय, काम के लिए अनुपयुक्त अवस्था, आलस्य, आंतरिक सुस्ती, उनींदापन, स्वप्न में ऊंघना, स्वप्न में सोना, नींद में सो जाना जैसी स्थिति से है। "आलस्य" ...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)। "उदासी" से तात्पर्य असहनीय, काम के लिए अनुपयुक्त, सुस्त, अलग-थलग, उदास, उनींदा और अज्ञानी होने की स्थिति से है। "नींद, आलस्य और उनींदापन पर विजय प्राप्त करनी चाहिए": नींद, आलस्य और उनींदापन पर विजय प्राप्त करनी चाहिए, उन पर काबू पाना चाहिए, उन्हें पराजित करना चाहिए, उन्हें पूरी तरह से खत्म कर देना चाहिए, उन्हें कुचल देना चाहिए।

"आराम में नहीं रहना चाहिए": आराम का अर्थ है शरीर के बुरे कर्मों में, वाणी के बुरे कर्मों में, मन के बुरे कर्मों में, या पाँचों इच्छाओं में लिप्त रहना। आराम से मुंह मोड़ा जा सकता है और हृदय को त्यागा जा सकता है। जागृति की अवस्था, अच्छे धर्म के अभ्यास के प्रति अनादर की अवस्था, अनित्यता की अवस्था, निरंतर कार्य करने की अवस्था, आदत से चिपके रहने की अवस्था, इच्छाओं की उपेक्षा करने की अवस्था, उत्तरदायित्व की उपेक्षा करने की अवस्था, अभ्यास न करने की अवस्था, ठीक से अभ्यास न करने की अवस्था, अधिक अभ्यास न करने की अवस्था, स्थापना न करने की अवस्था और त्याग देना। त्याग देने जैसी किसी भी अवस्था को आराम कहते हैं। "आराम में नहीं रहना चाहिए": आराम में नहीं रहना चाहिए, साथ रहना, जीना, ठहरना, ढील देना, अलग हो जाना, दूर भगा दिया जाना, ...

"अहंकार के साथ खड़ा नहीं होना चाहिए": "अहंकार," .... किसी को अहंकार के साथ खड़ा नहीं होना चाहिए, ...

"जिनका मन निर्वाण में लीन है": यहाँ, एक विशेष प्रकार के लोग दाता, दीक्षित, कर्म करने वाले, पीने-पिलाने का पानी देने वाले, धोने का पानी देने वाले, भिक्षुओं के कमरों की सफाई करने वाले, मीनार मंदिर का आदर करने वाले, शिवालय मंदिर में धूप चढ़ाने वाले, शिवालय मंदिर के दाहिनी ओर परिक्रमा करने वाले और तीनों लोकों में कोई भी अच्छा काम करने वाले हैं, (पर) स्वार्थ से नहीं, पुनर्जन्म से नहीं, अवतार से नहीं, अस्तित्व से नहीं, पुनर्जन्म से नहीं, चक्र से नहीं, वह यह सब बंधन से मुक्ति के हित में, निर्वाण की ओर झुकाव रखते हुए, निर्वाण की ओर प्रवृत्त होते हुए करता है। या, जब मन सभी लोकों से मुक्त हो जाता है, तो मन अमर लोक में एकत्रित हो जाता है: यही मौन है, यही विजय है, अर्थात्: सभी कर्मों का अंत, सभी आसक्तियों का अंत, जागरूकता, प्यास का अंत, लोभ का अंत, निर्वाण।

ज्ञानी पुरुष आसक्ति के सुख या पुनर्जन्म की लालसा में दान नहीं देते, वे आसक्ति से मुक्ति पाने और पुनर्जन्म से बचने के लिए दान देते हैं। ज्ञानी पुरुष आसक्ति के सुख या पुनर्जन्म की लालसा में विभिन्न ध्यान साधनाएँ नहीं करते, वे आसक्ति से मुक्ति पाने और पुनर्जन्म से बचने के लिए विभिन्न ध्यान साधनाएँ करते हैं। वे अपने आप को मिटाकर दान देने की आशा रखते हैं, उनका हृदय उसी ओर, उसी विजय के मार्ग की ओर उन्मुख होता है। जैसे नदी सागर में समा जाती है, वैसे ही वे दूसरी ओर निर्वाण का अभ्यास करते हैं।

178 · झूठे शब्दों में बहकना नहीं चाहिए, और प्रेम को रूप में नहीं गढ़ना चाहिए। अहंकार को भलीभांति जानना चाहिए, और मनमानी से बचना चाहिए।

"झूठे शब्दों में बहकाया नहीं जाना चाहिए": झूठा शब्द...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)। "झूठे शब्दों में बहकाया नहीं जाना चाहिए": झूठे शब्दों में बहकाया नहीं जाना चाहिए, बहकाया नहीं जाना चाहिए, बहकाया नहीं जाना चाहिए, ले जाया नहीं जाना चाहिए। हमें झूठे शब्दों का त्याग करना चाहिए, उन्हें दूर भगाया जाना चाहिए,...।

“रूप में प्रेम उत्पन्न नहीं करना चाहिए”: “रूप” चार महा तत्व हैं और इन चार महा तत्वों से निर्मित रूप हैं। “शारीरिक रूप से स्नेह उत्पन्न नहीं करना चाहिए”: शारीरिक रूप से स्नेह उत्पन्न नहीं करना चाहिए, इच्छा उत्पन्न नहीं करनी चाहिए, प्रेम उत्पन्न नहीं करना चाहिए, लोभ उत्पन्न नहीं करना चाहिए, उत्पन्न नहीं करना चाहिए, कारण नहीं बनना चाहिए, जन्म नहीं लेना चाहिए।

“अहंकार को भलीभांति जानना चाहिए”: अहंकार का एक प्रकार है: ....

“अहंकार को जानना चाहिए”: जानने के तीन प्रकार होने चाहिए: ज्ञात, मापन और त्याग। ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

“मनमानी से परहेज करना चाहिए”: मनमानी क्या है? लालच से ग्रस्त लोग मनमानी करते हैं, क्रोधित लोग घृणा से भरी मनमानी करते हैं, मूर्ख लोग मूर्खतापूर्ण मनमानी करते हैं, बंधे हुए लोग अहंकार से मनमानी करते हैं, कार्यकारी अपने दृष्टिकोण से मनमानी करते हैं, उलझन में पड़ा व्यक्ति मनमानी करता है, अनिर्णायक व्यक्ति संदेह से मनमानी करता है, दृढ़ निश्चयी व्यक्ति अपने व्यवहार की छिपी प्रवृत्ति के बारे में चिंतित रहता है, यह मनमानी है। “मनमानी से परहेज करना चाहिए”: मनमानी से अलग रहना चाहिए, परहेज करना चाहिए, ...

179 · पुराने में आनंद नहीं लेना चाहिए, और नए को पसंद नहीं करना चाहिए; लुप्त होने के कारण दुखी नहीं होना चाहिए, और मोहक चीजों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए।

अतीत में आनंद नहीं लेना चाहिए: अतीत से तात्पर्य अतीत के रूपों, भावनाओं, विचारों, कार्यों और चेतना से है। अतीत के कार्यों पर आनंद नहीं लेना चाहिए, उनका स्वागत नहीं करना चाहिए, उन पर लालसा नहीं करनी चाहिए, उन्हें देखना नहीं चाहिए, उन पर डटे रहना नहीं चाहिए, उनसे चिपके नहीं रहना चाहिए, उन्हें छोड़ देना चाहिए, उन्हें दूर भगा देना चाहिए, आदि।

“नए में रुचि उत्पन्न नहीं करनी चाहिए”: नया से तात्पर्य वर्तमान रूप, भावना, विचार, व्यवहार और चेतना से है। वर्तमान व्यवहारों में लालसा और दृष्टि के कारण रुचि और इच्छा उत्पन्न नहीं करनी चाहिए; प्रेम, लोभ आदि उत्पन्न नहीं करने चाहिए, उन्हें जन्म नहीं देना चाहिए, उन्हें जीवन में नहीं आने देना चाहिए।

“जो लुप्त हो रहा है, उसके कारण दुखी नहीं होना चाहिए”: जब कुछ लुप्त हो रहा हो, खो रहा हो, घट रहा हो, क्षीण हो रहा हो, छूट रहा हो, कम हो रहा हो और विलुप्त हो रहा हो, तो दुखी नहीं होना चाहिए, थका हुआ नहीं होना चाहिए, शोक नहीं करना चाहिए, रोना नहीं चाहिए, सीना पीटकर रोना नहीं चाहिए, भ्रमित नहीं होना चाहिए: जब आँखें गायब हो जाएँ, खो जाएँ, कमज़ोर हो जाएँ, ..., कान में... (छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)।

“आकर्षक चीज़ों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए”: आकर्षण को लालसा कहते हैं, जो लोभ है... आकर्षण को प्यास क्यों कहते हैं? जो कोई भी प्यास और प्रेम से उसे खींचता है, पकड़ता है, लेता है, जकड़ता है, उससे चिपकता है... (अधूरा), इसी कारण उसे लालसा कहते हैं। “आकर्षक चीज़ों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए”: प्यास पर निर्भर नहीं होना चाहिए। प्यास को काट देना चाहिए...

180 · मैं कहता हूँ कि लोभ एक "महान जलप्रपात" है, मैंने कहा कि इच्छा एक जलप्रपात है, वस्तु का स्थिर दृष्टिकोण, इच्छा के कीचड़ पर काबू पाना कठिन है।

मैंने कहा कि लोभ एक 'महान जलप्रपात' है: लालसा को लालसा कहा जाता है, वही लोभ है, ... महान जलप्रपात को लालसा कहा जाता है, वही लोभ है, ... मैं कहता हूँ कि लोभ एक 'महान जलप्रपात' है: मैं कहता हूँ, मैं समझाता हूँ, ... कि लोभ एक "महान जलप्रपात" है।

“मैंने कहा कि उत्सुकता जल्दबाजी है”: उत्सुकता को लालसा कहा जाता है, ... जल्दबाजी को भी लालसा कहा जाता है, ... “मैंने कहा कि उत्सुकता जल्दबाजी है”: मैंने कहा, ...कि वह उत्सुकता “जल्दबाजी” है।

“स्थिर विचार”: स्थिर विचारों को लालसा भी कहा जाता है, ...

"इच्छाओं के कीचड़ से पार पाना कठिन है": इच्छाओं का कीचड़, इच्छाओं का दलदल, इच्छाओं का प्रदूषण, इच्छाओं का कीचड़ और इच्छाओं की बाधाएं पार पाना कठिन है, उनसे पार पाना कठिन है, उनसे बचना कठिन है, उन्हें पार करना कठिन है।

181 · मुनि सत्य से विचलित नहीं होते, ब्राह्मण उच्च स्थान पर खड़े होते हैं, सब कुछ काट देने के बाद, उन्हें वास्तव में मौन कहा गया।

"मुनि सत्य से विचलित नहीं होते": जो सत्य से विचलित नहीं होते; जो सही दृष्टि से विचलित नहीं होते; जो अष्टमार्ग से विचलित नहीं होते। "मुनि,"...

"ब्राह्मण उच्च भूमि पर विराजमान": उच्च भूमि को निर्जीव, निर्वाण कहा जाता है, अर्थात् समस्त कर्मों का अंत... "ब्राह्मण," ...(विलुप्त, पिछले खंड देखें)। "ब्राह्मण उच्च भूमि पर विराजमान": वे उच्च भूमि पर, द्वीप पर, आश्रय में, शरण में, निर्भय स्थान पर, अमरता में, निर्वाण में विराजमान हैं।

"सब कुछ काट डालने के बाद": सब कुछ बारह स्थानों के नाम से जाना जाता है: ...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)। क्योंकि उसके भीतर और बाहर की इच्छा और लोभ काट डाले गए हैं, जड़ें काट डाली गई हैं, जैसे बिना जड़ों का ताड़ का पेड़, जो अस्तित्वहीन हो जाता है, जो भविष्य में जन्म नहीं लेगा। इस स्थिति में, सब कुछ त्याग दिया जाता है, थूक दिया जाता है, मुक्त कर दिया जाता है, काट दिया जाता है, अलग कर दिया जाता है। प्रेम और दृष्टि की प्यास और अहंकार के कट जाने के कारण, जड़...। यह स्थिति भी वह स्थिति है जहाँ सब कुछ त्याग दिया जाता है...। क्योंकि आशीर्वाद और अनाशीकरण कर्म और गतिहीनता काट डाली जाती है...। इस स्थिति में, सब कुछ त्याग दिया जाता है...।

"उसे सचमुच मौन कहा जाता है": उसे "मौन, रुका हुआ, बुझा हुआ, शांत, विश्राम करने वाला" कहा जाता है, उसके बारे में बात की जाती है, समझाया जाता है, कहा जाता है।

182 · वह वास्तव में एक बुद्धिमान व्यक्ति है, वह वेदों का ज्ञाता है, वह धम्म को जानने के बाद अनासक्त हो जाता है, वह संसार में सही ढंग से कार्य करता है, वह यहाँ किसी भी चीज़ की अपेक्षा नहीं करता है।

"वह वास्तव में एक बुद्धिमान व्यक्ति है, वह वेदों का ज्ञाता है": "बुद्धिमान व्यक्ति" ...(विलुप्त, पिछले अनुभाग देखें)। "वेदों का ज्ञाता," वेद ...(विलुप्त, पिछले अनुभाग देखें)।

"धम्म को जानने के बाद, अनासक्त होना": "जानने के बाद," .... "अनासक्त" पर दो प्रकार की निर्भरता है: ...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)। जो लोग धर्म का पालन नहीं करते, जो उससे जुड़े नहीं रहते, जो ज्ञान के धर्मों में नहीं पड़ते, जो अपना मन (इन बातों की ओर) नहीं मोड़ते, वे धर्म से मुक्त हो चुके हैं, वे बंधन से अलग हो चुके हैं, वे बंधनमुक्त हृदय से जीवन व्यतीत करते हैं।

"वही है जो संसार में सही काम करता है": क्योंकि उसके भीतर और बाहर की इच्छा और लोभ काट दिए गए हैं, उसकी जड़ें काट दी गई हैं, ठीक वैसे ही जैसे बिना जड़ों वाला ताड़ का पेड़ अस्तित्वहीन हो जाता है और आगे नहीं बढ़ता, इसी स्थिति में वह संसार में सही ढंग से चलता है, जीता है, कार्य करता है, आगे बढ़ता है, रक्षा करता है और जीवित रहता है... आशीर्वाद और अपराध तथा गतिहीनता के कट जाने के कारण...

"उसे यहाँ किसी चीज़ की लालसा नहीं है": आशा को लालसा कहा जाता है, ... उसके लिए, यह लालसा, यह लालसा समाप्त हो गई है, ..., उसे किसी चीज़ की लालसा नहीं है: क्षत्रिय, या ब्राह्मण, या वेस, या शुद्ध, या गृहस्थ, या भिक्षु, या स्वर्गीय (प्राणी), या मनुष्य।

183 · जो कोई भी यहाँ इच्छा और बंधनों से परे है, जिन्हें संसार में पार करना कठिन है, वह शोक या चिंता नहीं करता: वे जिन्होंने प्रवाह को काट दिया है, वे जिनके पास कोई गांठ नहीं है।

“जो कोई भी यहाँ इच्छाओं और बंधनों को पार कर लेता है, जिन्हें संसार में पार करना कठिन है”: “कौन,” किस प्रकार का, समान प्रयास, समान व्यवस्था, समान प्रकार, प्रत्येक स्थान जहाँ वह पहुँचा है, प्रत्येक क्षत्रिय जिसके पास धम्म है, या ब्राह्मण, ... “इच्छा,” .... “बंधन,” सात प्रकार के बंधन हैं: लोभ के बंधन... “संसार में”: .... “संसार में वह बंधन जिसे पार करना कठिन है,” सभी इच्छाएँ और बंधन: जिन्हें पार करना कठिन है, जिन्हें पार करना कठिन है, जिनसे बचना कठिन है, जिन्हें पार करना कठिन है, वह पार करता है, पार करता है, पार करता है, विजय प्राप्त करता है।

“वह दुखी या चिंतित नहीं है”: वह उन चीजों पर शोक नहीं करता जो बदल गई हैं, या जो बदल रही हैं: ...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)। “या चिंतित,” चिंता मत करो, याद मत करो, सोचो मत, मनन मत करो, गहराई से मत सोचो। या, जन्म न लेना, बूढ़ा न होना, मरना न, पुनर्जन्म न लेना।

“जिनने प्रवाह को रोक दिया है और जिन पर कोई बंधन नहीं है”: प्रवाह को प्यास कहते हैं, ... उनके लिए प्रवाह, लालसा, रुक जाती है... “मुक्त व्यक्ति,” लोभ का बंधन, घृणा का बंधन, अज्ञान का बंधन, अहंकार का बंधन, मतों का बंधन, अपवित्रता का बंधन, बुरे कर्मों का बंधन। उनके लिए ये सभी बंधन टूट जाते हैं...

184 · इससे पहले जो कुछ भी हो, कृपया उसे मुरझाने दें, इसके बाद कुछ भी न रखें, यदि आप मध्य में नहीं टिके रहेंगे, तो आप एक मौन जीवन जिएंगे।

“जो कुछ भी पहले हुआ है, कृपया उसे नष्ट होने दें”: अतीत में हुए प्रदूषण के कारण जो प्रदूषण हुआ है, कृपया उसे सुखा दें, कृपया उसे नष्ट होने दें, कृपया उसे पूरी तरह से सुखा दें, कृपया उसके बीज न बनने दें, कृपया उसे जाने दें, कृपया उसे दूर भगा दें, कृपया उसे समाप्त कर दें, कृपया उसे अस्तित्वहीन कर दें। या, अतीत में किए गए कर्मों का जो फल अभी तक नहीं मिला है, कृपया उन्हें नष्ट होने दें...

“कृपया बाद में कुछ भी न चाहो”: बाद को भविष्य कहा जाता है। कोई भी लालच, कोई भी घृणा, ..., इनमें से कोई भी क्रिया भविष्य में उत्पन्न हो सकती है। इसलिए, न चाहो, न बनाओ, न पैदा करो, न उत्पन्न करो, न इसे जन्म दो, कृपया त्याग दो, ...।

“यदि तुम मध्य में स्थित को नहीं पकड़ोगे”: मध्य में स्थित को वर्तमान रूप, भावना, विचार, क्रिया और चेतना कहा जाता है। वर्तमान क्रियाओं के संबंध में, तुम लालसा, दृष्टि आदि के कारण उन्हें पकड़ नहीं पाओगे; त्याग दोगे, दूर भगा दोगे...।

“तुम एक मौन जीवन जिओगे”: लोभ की मौन अवस्था, शांति की अवस्था, मौन की अवस्था, शांत अवस्था, ..., शांत अवस्था, बुझी हुई अवस्था, गैर-ज्वलनशील अवस्था, ठंडी अवस्था, विदा अवस्था, रुकी हुई अवस्था, मौन, शांत, ठंडी, रुकी हुई अवस्था के रूप में, तुम जीते हो, कार्य करते हो, आगे बढ़ते हो, रक्षा करते हो और जीवित रहते हो।

185 · सभी नामों और रूपों में, वह उन्हें अपना नहीं मानता, और जो अस्तित्व में नहीं है उसके लिए उसे कोई दुख नहीं है, वह दुनिया में कुछ भी नहीं खोता।

“सभी नामों और रूपों में, वह उन्हें अपना मानता है”: “सब कुछ,” .... “नाम,” चार निराकार समुच्चय। “रूप,” चार महा तत्व और उन चार महा तत्वों से व्युत्पन्न कोई भी रूप। “उसके लिए सब कुछ,” अरहंत के लिए, उसके लिए जिसने अपने सारे कष्ट समाप्त कर दिए हैं। “अपना माना जाना,” आत्मधारणा के दो प्रकार हैं: ...(छोड़ा गया, पिछले खंड देखें)। “सभी नामों और रूपों में, वह उन्हें अपना नहीं मानता”: सभी नामों और रूपों में, चाहे कोई उन्हें धारण करे, वे विद्यमान नहीं होते, ज्ञात नहीं होते, खोजे नहीं जाते, और त्याग दिए गए होते हैं, ...

“उन चीजों की चिंता मत करो जो मौजूद नहीं हैं”: ...(हटा दिया गया, पिछले अनुभाग देखें)।

वह संसार में कभी नहीं हारता: चाहे वह रूप हो, भावना हो, विचार हो, कर्म हो, चेतना हो, जो कुछ भी उसे प्रतीत होता है, वह कहता है, "यह मेरा है, या यह दूसरों का है।" जो लोग किसी चीज को पकड़ते हैं, लेते हैं और उस पर विश्वास करते हैं, उनके लिए उसमें हानि होती है।

यह भी कहा गया है: [Jat.5.1,1-3]

जब रथ, रत्न और बालियाँ खो जाती हैं, जब पुत्र और पत्नी बिछड़ जाते हैं, जब सारा धन व्यर्थ हो जाता है, तो दुःख के समय तुम दुखी क्यों नहीं होते? यहाँ तक कि जिन्होंने पहले अपना धन त्याग दिया है, जो लोग निश्चित रूप से मरने वाले हैं, वे भी उसे त्याग देंगे, इच्छा-साधक की संपत्ति बहुत स्थिर होती है, इसलिए मैं दुःख के समय दुखी नहीं होता। चंद्रमा बढ़ता है, भरता है और गायब हो जाता है, और सूर्य अस्त हो जाता है, शत्रु के सांसारिक धर्म का मुझे ज्ञान है, इसलिए मैं दुःख के समय दुखी नहीं होता।

जो कुछ भी उसे रूप में दिखाई देता है, ... जो लोग उसे धारण नहीं करते, ग्रहण नहीं करते और उस पर विश्वास नहीं करते, उन्हें कोई हानि नहीं होती। यह भी कहा गया है [SN.2.18]: “समण! क्या तुम प्रसन्न हो?” “मित्र! तुम्हें क्या मिला?” “तो फिर, समण! क्या तुम दुखी हो?” “मित्र! तुमने क्या खोया?” “तो फिर, समण! क्या तुम न प्रसन्न हो और न दुखी?” “हाँ, मित्र!”

"बहुत समय बाद, अंततः, मैंने परिनिर्वाण के ब्राह्मण को देखा, वे भिक्षु जो सुख-सुविधाओं से रहित हैं और संसार के प्रति अपने आसक्ति को त्याग देते हैं।"

186 · जिसके पास “यह मेरा है” या दूसरों का भी नहीं है, उसे पकड़ने के लिए कुछ नहीं मिलता, और वह “मेरा कुछ भी नहीं है” पर शोक नहीं करता।

“जिसके पास ‘यह मेरा है’ या यहाँ तक कि दूसरों का भी नहीं है”: “कोई भी” अरहंत है, जिसने अपने सारे कष्ट समाप्त कर दिए हैं। उसके लिए, चाहे वह भौतिकता हो, भावना हो, विचार हो, व्यवहार हो, चेतना हो, आदि कुछ भी हो, “यह मेरा है, या यह किसी और का है”। पकड़े जाना, जकड़ा जाना, आसक्त होना, धारण किया जाना, लिया जाना और विश्वास किया जाना, ये सब उसके लिए अस्तित्वहीन हैं, अज्ञात हैं, अज्ञात हैं, विच्छेदित हैं...

भगवान बुद्ध ने कहा [SN.12.37]: “भिक्षुओं! यह शरीर न तो तुम्हारा है, न ही दूसरों का, भिक्षुओं! यह पुराना कर्म है, जिसे सृजित, विचार द्वारा सृजित, और अनुभव किया जा सकता है। वहाँ, भिक्षुओं! वहाँ वे पवित्र शिष्य हैं जिन्होंने तर्क-आधारित उत्पत्ति के बारे में सुना है: 'इस प्रकार, जब यह विद्यमान होता है, तो वह होता है; जब यह उत्पन्न होता है, तो वह उत्पन्न होता है; जब यह विद्यमान नहीं होता, तो वह नहीं होता; जब यह विसर्जित होता है, तो दूसरा विसर्जित हो जाता है: अज्ञान कर्म की पूर्व शर्त है; कर्म ज्ञान की पूर्व शर्त है; ... (अंशित); यह संपूर्ण दुख का सार है। परन्तु यह अज्ञान के साथ लुप्त हो जाता है। यह विसर्जन के साथ विसर्जन है; यह संपूर्ण दुख समूह का विसर्जन है।'”

भगवान बुद्ध ने कहा: [सं.5.15-नि.32] “हे मोगराज, संसार को निःसंकोच देखो, सदा ध्यान से देखो। अपने आप को दृष्टि से ओझल करके, इस प्रकार मृत्यु को पार किया जा सकता है। जो इस प्रकार संसार को देखते हैं, उन्हें मृत्यु का राजा नहीं देख सकता।”

भगवान बुद्ध ने भी यही कहा है: [SN.22.33] "भिक्षुओं! जो कुछ भी तुम नहीं हो, उसे त्याग दो! यदि तुम उसे त्याग दोगे, तो वह तुम्हारे लिए दीर्घकालिक लाभ और सुखदायी होगा। और, भिक्षुओं! जो तुम्हारा नहीं है? भिक्षुओं! जो तुम्हारा नहीं है, उसे जाने दो! उसे जाने दो, वह तुम्हारे लिए दीर्घकालिक लाभ और सुखदायी होगा; स्वीकार करो..., सोचो..., करो..., यदि वे तुम्हें नहीं जानते, तो उसे जाने दो! उसे जाने दो...।"

भिक्षुओं! क्या आप सोचते हैं कि इस जंगल में लोग घास, ईंधन की लकड़ी, टहनियाँ, पत्ते ले जाएँगे, जलाएँगे या जो चाहें करेंगे? आप ऐसा सोचेंगे: 'लोग हमें ले जाते हैं, जलाते हैं या जो चाहें करते हैं?' 'नहीं, हे महान पुण्य! इसका क्या कारण है? हे महान पुण्य! क्योंकि यह मैं नहीं हूँ, न ही यह मेरा है।' 'इसी प्रकार, भिक्षुओं! जो कुछ भी तुम्हारा नहीं है, उसे त्याग दो! उसे दान कर दो, ... और, भिक्षुओं! जो तुम्हारा नहीं है? ....' यह भी कहा जाता है:

“यह विशुद्ध रूप से धर्मों का उद्‌भव है, विशुद्ध रूप से कर्मों की निरंतरता है। जो इसे सत्यनिष्ठा से देखते हैं, ग्राम प्रधान, उन्हें कोई भय नहीं होता। संसार एक ही घास और वृक्षों से बना है; जब इसे ज्ञान से देखते हैं, तो पुनर्जन्म न होने के अलावा और कुछ नहीं मांगना चाहिए।” [थग.715-717]

वजीरा भिक्खुनी ने मारा से यह कहा: [एसएन.5.10]

“तुम ‘सभी प्राणियों’ जैसी कल्पना क्यों करते हो? राक्षस! क्या यही तुम्हारा दुष्ट विचार है? यह तो अनेक कर्मों का साधारण संकलन है, और यहाँ किसी भी सजीव प्राणी का पता नहीं चला है। जैसे भागों के समूह को रथ कहा जाता है, वैसे ही जब समूह होते हैं, तो ‘सभी प्राणियों’ की पहचान हो जाती है। केवल दुख की उत्पत्ति होती है, दुख का अस्तित्व और उसका अंत होता है; दुख के सिवा कुछ भी उत्पन्न नहीं होता, और दुख के सिवा कुछ भी नष्ट नहीं होता।”

भगवान बुद्ध ने यह भी कहा: [SN.35.246] “इसी प्रकार, भिक्षुओं! भिक्षु शारीरिकता की खोज तब तक करते हैं जब तक कि शारीरिकता के सभी रुचिकर स्थान उनकी पहुँच में न आ जाएँ; भावना..., चिंतन..., कर्म..., चेतना की खोज तब तक करते हैं जब तक कि चेतना के सभी रुचिकर स्थान प्राप्त न हो जाएँ, जब वह शारीरिकता की खोज करता है, जब तक कि सभी भावना..., चिंतन..., कर्म..., ज्ञान की खोज तब तक करते हैं जब तक कि चेतना के सभी रुचिकर स्थान समयबद्ध न हो जाएँ, जहाँ भी उसके लिए 'मैं', या 'मेरा' या 'मैं हूँ' का अस्तित्व नहीं रह जाता।”

आदरणीय आनंद ने भगवान बुद्ध से कहा, “हे महानुभाव! 'संसार शून्य है, संसार शून्य है' कहे जाने को किस स्थिति को 'संसार शून्य है' कहा जाता है?” “आनंद! क्योंकि मैं या मेरा स्वरूप शून्य है, इसीलिए इसे 'संसार शून्य है' कहा जाता है।” आनंद! मुझमें या मेरे भीतर क्या शून्य है? आनंद! मुझमें या मेरे भीतर आँखें शून्य हैं, मेरे रूप शून्य हैं, और आँखें शून्यता हैं, और नेत्र संपर्क शून्यता है, अर्थात्, नेत्र संपर्क से उत्पन्न होने वाली कोई भी चीज़ या तो सुख है, या दुख है, या अप्रिय है या अप्रिय नहीं है, वह शून्यता है। कान शून्य हैं..., ध्वनि शून्य है..., नाक शून्य है..., गंध शून्य है..., जीभ शून्य है..., स्वाद शून्य है..., शरीर शून्य है..., स्पर्श शून्य है..., मन शून्य है..., धम्म शून्यता है..., चेतना शून्यता है..., चेतना शून्यता है, अर्थात्, मानसिक स्पर्श से उत्पन्न होने वाली हर चीज़, चाहे वह सुख हो, दुख हो, या दुख न हो या अप्रिय हो, वह भी मुझे या मेरे अस्तित्व को शून्य मानना है। आनंद! क्योंकि मैं या मेरा अस्तित्व शून्यता है, इसलिए इसे 'संसार शून्य है' कहा जाता है।

“उसमें ‘मैं जो हूँ’ से चिपके रहने की प्रवृत्ति नहीं पाई जाती”: “मैं चिपका हुआ हूँ,” मुझसे चिपके रहने के दो प्रकार हैं: ... प्यास के आत्म-पकड़ का त्याग करने के बाद, ...वही है जिसमें आत्म-पकड़ का पता नहीं चला या पाया गया, वे जो नहीं पहुँचे, वे जिन्होंने ग्रहण नहीं किया।

“वह इस बात पर शोक नहीं करता कि 'मेरा कुछ नहीं है'”: वह उन चीजों के लिए शोक नहीं करता जो बदल गई हैं, ...

187 · जो ईर्ष्यालु नहीं हैं, जो लालच का पालन नहीं करते, जो विचलित नहीं होते, सब कुछ में समान हैं, मैं उसे लाभ कहता हूँ, जब अविचल के बारे में पूछा जाता है।

“ईर्ष्यालु, लोभरहित, अविचलित और सर्वत्र समतुल्य”: ईर्ष्या क्या है? ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)। “लोभ नहीं है,” ....

“अविचलित, सर्वत्र समतुल्य”: अशांति...(विलुप्त, पिछले खंड देखें)। “सभी स्थानों में समतुल्य,” सब कुछ बारह स्थानों कहलाता है: .... क्योंकि भीतर और बाहर की इच्छा और लोभ का नाश हो गया है, ..., यह स्थिति जो सब कुछ है, त्याग दी गई है, थूक दी गई है, मुक्त कर दी गई है, काट दी गई है, अलग कर दी गई है। क्योंकि प्रेम और दृष्टि की प्यास और अहंकार का नाश हो गया है, ..., उसे सर्वत्र समतुल्य कहा जाता है। वह सभी चीजों में ऐसा ही है, तटस्थ और शांत।

“जब मुझसे अविचल व्यक्ति के बारे में पूछा जाता है, तो मैं इसे लाभ कहता हूँ”: जब मुझसे अविचल व्यक्ति के बारे में प्रश्न पूछा जाता है; पूछताछ की जाती है; अनुरोध किया जाता है; तो मैं चार लाभों के बारे में बात करता हूँ: वह विचलित नहीं होता, हर चीज में समतुल्य होता है, मैं बताता हूँ, मैं समझाता हूँ...।

188 · जो विचलित नहीं होता, जो जानता है, वह कुछ नहीं करता, अपने प्रयासों से मुक्त होकर, वह हर जगह स्थिरता देख सकता है।

“जो विचलित नहीं होता, जो जानता है”: विचलित होना... विचलित न होने की अवस्था में भी, वह उसे पाकर विचलित नहीं होता; (छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)। “जो जानता है,” वह जानता है, ..., और भेद करता है। “सभी कर्म क्षणभंगुर हैं”: ....

“कुछ करने को नहीं है”: कर्मों को आशीर्वाद, अपराह और अटल कर्म कहा जाता है। क्योंकि आशीर्वाद, अपराह और अटल कर्म समाप्त हो चुके हैं, ...

“प्रयासों (कठिनाई) से बच निकलना”: प्रयासों को आशीर्वाद, अपुष्टि आदि कहा जाता है...

“वह हर जगह स्थिरता देखता है”: लोभ भय का जनक है, क्रोध भय का जनक है, अज्ञान भय का जनक है... (अधूरा अंश), प्रदूषण भय का जनक है। लोभ और भय के जनक को त्याग दिया गया है... वह हर जगह स्थिरता देखता है, हर जगह भय नहीं, हर जगह आपदा नहीं, हर जगह खतरा नहीं, और हर जगह उत्पीड़न नहीं।

189 · उन्हीं में, उन्हीं में, और उन्हीं में श्रेष्ठ, मुनि यह नहीं कहते कि वह है; वह मौन पुरुष है, वह पहले से ही कंजूसी से मुक्त है; वह न लेता है और न ही मना करता है। [इस प्रकार, भगवान बुद्ध ने कहा।]

“समानों के बीच, निम्न लोगों के बीच और श्रेष्ठ लोगों के बीच, मुनि नहीं कहते”: “मुनि,” ... “मैं विजेता हूँ,” या “मैं समान हूँ,” या “मैं निम्न हूँ,” वह नहीं कहते, नहीं बोलते, नहीं बात करते, नहीं समझाते, नहीं कहते।

“वह मौन है, वह जो कंजूसी से मुक्त हो चुका है”: “मौन,” .... “वह कंजूसी से मुक्त हो चुका है”। कंजूसी पाँच प्रकार की होती है: ....

“वह न तो लेता है, न ही इनकार करता है। [इस प्रकार भगवान (ने कहा)]”: “वह नहीं लेता,” वह नहीं लेता, ...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)। वह नहीं लेता। “इनकार नहीं करता,” ...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)। “भगवान,” ...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> निद्देसा >> निद्देसा 1.16

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

<<<< पिछला अगला >>>>

16. सारिपुत्त

190 · [आदरणीय सारिपुत्त ने ऐसा कहा:] मैंने पहले कभी नहीं देखा था, न ही किसी ने इसके बारे में सुना था; ऐसे वाक्पटु शब्दों के स्वामी, तुषित स्वर्ग से आए स्वामी।

“मैंने पहले कभी नहीं देखा”: इससे पहले मैंने भगवान को इन आँखों और इस स्वरूप में कभी नहीं देखा था: जब भगवान तैंतीस दिनों के लोक में पीले रंग के वृक्ष के नीचे विराजमान थे, जब मैं वर्षा ऋतु में वहाँ बसा, तब वे देवताओं के एक समूह से घिरे हुए थे और रत्नजड़ित सीढ़ी से बिखरे हुए शहर में उतरे। यह दृश्य पहले कभी नहीं देखा गया था।

"[इस आदरणीय सारिपुत्त की तरह]": "इस तरह," वाक्य का निरंतरता; वाक्य का जुड़ाव; वाक्य का समापन; शब्दों का संयोजन; शब्दों का संबंध; यह वाक्यों का क्रम है, जो "इस तरह" है। "आदरणीय," यह प्रेम, आदर और आज्ञाकारिता की भाषा है। "सारिपुत्त," नाम, उपाधि, सुरक्षा, उपनाम, शब्द, वाक्यांश, संबोधन।

"या किसी ने नहीं सुना": "नहीं" नकारात्मक है। "या," वाक्य का निरंतरता; वाक्य का संबंध; .... "कोई भी," क्षत्रिय, या ब्राह्मण, या वेस, या शुद्ध, या गृहस्थ, या भिक्षु, या स्वर्ग, या मनुष्य।

"ऐसे बुद्धिमान (अद्‌भुत) शब्दों के उस्ताद": "ऐसे बुद्धिमान शब्द, अच्छे शब्द, प्यारे शब्द, सुखद शब्द, (जैसे) प्यारे पक्षियों की मधुर गर्जना। इसके अलावा, भगवान बुद्ध के मुख से निकलने वाली वाणी में आठ (विशेषताएं) हैं: स्पष्ट, ज्ञानवर्धक, सुंदर, सुरुचिपूर्ण, संक्षिप्त, शांत, गहन और भव्य। भगवान बुद्ध अपनी वाणी से भीड़ को सजग करते हैं, और उनकी वाणी भीड़ से बाहर नहीं होती, और भगवान बुद्ध ब्रह्मा की वाणी के समान हैं, एक सुंदर पक्षी की ध्वनि के समान हैं।"

"हे स्वामी," भगवान बुद्ध स्वामी हैं, कारवां के नेता हैं, जैसे कारवां का नेता सभी प्राणियों को खतरे के क्षेत्र से पार कराता है: उन्हें चोरों, जानवरों, भुखमरी, पानी की कमी के खतरे से पार कराता है, उन्हें पार कराता है, उन्हें पार कराता है, उन्हें स्थिरता के अंतिम स्थान तक पहुंचाता है। उसी प्रकार, भगवान बुद्ध कारवां के नेता हैं, जो सभी प्राणियों को खतरे के क्षेत्र से पार करा सकते हैं: उन्हें जीवन, वृद्धावस्था, रोग, मृत्यु, दुःख, पीड़ा, चिंता, निराशा, लोभ, क्रोध, अज्ञान, अहंकार, दृष्टि (विचार), प्रदूषण, बुराई के खतरे के क्षेत्र से पार कराता है; लोभ के घने जंगल से, क्रोध के जंगल से, (कुछ भाग हटा दिया गया है); वह उन्हें बाहर निकालता है, उन्हें पार कराता है, उन्हें स्थिरता, निर्जीवता और निर्वाण तक पहुंचाता है।

या यूं कहें कि भगवान ही मार्गदर्शक, मध्यस्थ, दिलासा देने वाले, सूचना देने वाले, इसे सोच-समझकर करने वाले, इसे देखने वाले और इसे स्पष्ट करने वाले हैं।

या यूँ कहें कि भगवान बुद्ध अजन्मे मार्ग के संस्थापक, अजन्मे मार्ग के निर्माता, अघोषित उपदेशक हैं; वे मार्ग को जानने वाले, मार्ग के ज्ञाता, मार्ग के परिचित हैं, और उनके शिष्य वर्तमान में मार्ग पर चल रहे हैं और भविष्य में भी मार्ग के स्वामी होंगे।

"तुषिता स्वर्ग से भगवान": "तुषिता स्वर्ग से भगवान की मृत्यु के बाद, वे बुद्धि और ज्ञान के साथ गर्भ में प्रवेश कर गए।"

या, स्वर्ग के देवता संतुष्ट कहलाते हैं, वे प्रसन्न, सुखी, प्रसन्न, आनंदित और प्रसन्न हैं, जो जन्म से ही स्वर्ग में आए हैं। या, अरहंत संतुष्ट कहलाते हैं, ...(अस्पष्ट), वे जो पूर्णता प्राप्त करना चाहते हैं, वे स्वामी जो अरहंत बने। हे गुरुओं! भगवान बुद्ध ही गुरु हैं, समूह के गुरु ही गुरु हैं, समूह के स्वामी ही गुरु हैं, समूह के संरक्षक ही गुरु हैं, समूह को शिक्षा देने वाले गुरु ही गुरु हैं, समूह को उपदेश देने वाले गुरु ही गुरु हैं, निडर होकर समूह से मिलने गए गुरु ही गुरु हैं, समूह जिसे सुनना, समझना और हृदय से जानना चाहता है, उसे गुरु ही गुरु हैं, समूह के बुरे दिखने पर उसे अच्छाई स्थापित करने वाले गुरु ही गुरु हैं, भिक्षुओं के गुरु हैं, भिक्षुणियों के गुरु हैं, पुरुष गृहस्थ भक्तों के गुरु हैं, स्त्री गृहस्थ भक्तों के गुरु हैं, राजाओं के गुरु हैं, क्षत्रियों के गुरु हैं, ब्राह्मणों के गुरु हैं, व्यषियों के गुरु हैं, शुद्धों के गुरु हैं, स्वर्ग के गुरु हैं, ब्रह्मा के गुरु हैं, संघ के गुरु हैं, और सभी के गुरु हैं। समुदाय। "आओ," आ गया, पूरी तरह से आ गया, बिखरे हुए शहर में।

191 · देवताओं सहित संसार, यदि कोई इसे देखता है, तो वह सभी अंधकार को दूर भगाता है और अकेले ही आनंद प्राप्त करता है।

"देवताओं सहित संसार": देवताओं, राक्षसों, ब्रह्मा, समण और ब्राह्मणों सहित सभी पीढ़ियों, स्वर्ग और मनुष्यों सहित संसार।

"यदि कोई आँखों से देखे": जब भगवान बुद्ध तैंतीस देवताओं के लोक में मूंगा वृक्ष के नीचे बैठकर धर्म का उपदेश दे रहे थे, तो जैसा देवताओं ने देखा, वैसा ही मनुष्यों ने देखा; जैसा मनुष्यों को दिखाई दिया, वैसा ही देवताओं को दिखाई दिया। या फिर, जैसे कुछ समण और ब्राह्मण गुरु, जो गुरु नहीं हैं, उन्हें ऐसा ही समझा जाता है। जो लोग कारावास के आदी हो चुके हैं; जो चुप नहीं रहते, उन्हें चुप माना जाता है; जो चुप नहीं रहते, उन्हें निर्वाण प्राप्त माना जाता है; जो निर्वाण प्राप्त नहीं कर पाए हैं, उन्हें निर्वाण प्राप्त मान लिया जाता है, इत्यादि।

“मिट्टी से बनी नकली बालियों की तरह, सोने से ढका हुआ आधा पैसा तांबे का, दुनिया भर के भ्रमण और सांचों से ढका हुआ, भीतर से शुद्ध नहीं, बाहर से बहुत चमकदार।” [SN.3.11]

भगवान बुद्ध ऐसे नहीं दिखते। भगवान बुद्ध को सत्य, सच्चाई, तथ्य, शुद्धता, यथार्थता और वास्तविकता से परिपूर्ण माना जाता है; जो मौन रहते हैं उन्हें मौन ही माना जाता है, और जो निर्वाण प्राप्त कर लेते हैं उन्हें निर्वाण प्राप्त ही माना जाता है। बुद्ध और भगवान बुद्ध व्यवहारों का सृजन नहीं करते, बल्कि आकांक्षाओं से भरे लोगों का सृजन करते हैं।

या फिर, भगवान की वाणी स्पष्ट है, उनकी स्तुति की आवाज की प्रशंसा है, चाहे वह नाग का राज्य हो, स्वर्ण-पंख वाले पक्षी का राज्य हो, यक्ष का राज्य हो, असुर का राज्य हो, गंधर्व का राज्य हो, राजा का राज्य हो, इंदा का राज्य हो, ब्रह्मा का राज्य हो, देवताओं का राज्य हो, इत्यादि।

या यूँ कहें कि भगवान बुद्ध के पास दस शक्तियाँ, चार निर्भीकताएँ, चार अचूक समाधान, छह महाज्ञान, शक्तियाँ, छह बुद्ध धर्म (चाहि बुद्धधम्मेहि), प्रतिष्ठा, बल, सद्गुण, जीवन शक्ति और बुद्धि है। उन्होंने सब कुछ देखा और जाना है।

“दूर से अच्छे लोग हिमालय की तरह दिखाई देते हैं, बुरे लोग यहाँ रात में फेंके गए तीरों की तरह नहीं दिखते।” [Dph.21, 304]

“आँखें,” भगवान पाँच आँखों को 'जिनके पास आँखें हैं' के रूप में मानते हैं: ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

“सारा अंधकार दूर भगाने के बाद”: लोभ का अंधकार, घृणा का अंधकार, अज्ञान का अंधकार, अहंकार का अंधकार, दृष्टिहीनता का अंधकार, अपवित्रता का अंधकार, बुरे कर्मों का अंधकार, अंधत्व का अंधकार, दृष्टिहीनता का अंधकार, बुद्धिहीनता का अंधकार, कष्टदायी गुट, वह सब जो निर्वाण की ओर नहीं ले जाता; उसे दूर करने, हटाने, त्यागने, त्यागने, भगाने, समाप्त करने और उसे अस्तित्वहीन कर देने के बाद।

“अकेले आनंद प्राप्त करना”: “अकेले”, भगवान अकेले ही भिक्षु बन गए हैं, बिना साथी के धर्म ही अकेला है, प्रेम की प्यास का धर्म ही अकेला है, “हमेशा लोभ से दूर रहना” अकेला है, “हमेशा क्रोध से दूर रहना” अकेला है, “हमेशा हृदय से दूर रहना” का अर्थ है अकेला, “हमेशा अपवित्रता से मुक्त रहना” का अर्थ है अकेला, “बिना मोड़ वाले मार्ग को पार कर लिया है” का अर्थ है अकेला, और “एकल ज्ञान प्राप्त कर लिया है” का अर्थ है अकेला।

भगवान बुद्ध अकेले ही भिक्षु कैसे बने? जब भगवान बुद्ध युवा थे, तब वे काले बालों वाले युवक थे और यौवन के सुख से परिपूर्ण थे। जीवन के आरंभ में, माता-पिता की अनिच्छा के बावजूद, वे आँसू बहाते, आहें भरते हुए भी, अपने रिश्तेदारों को त्याग देते हैं, घर के सभी बंधनों को तोड़ देते हैं, अपने बच्चों, पत्नी, परिवार, मित्र, भंडार आदि के बंधनों को तोड़ देते हैं, बाल मुंडवाकर वस्त्र धारण कर लेते हैं और घर से निकलकर एक निर्जन भिक्षु के रूप में जीवन व्यतीत करते हैं, संपत्तिहीन अवस्था में चले जाते हैं, फिर अकेले ही जीवन व्यतीत करते हैं, कर्म करते हैं, रक्षा करते हैं और जीवित रहते हैं।

भगवान बुद्ध अकेले बिना साथी के कैसे रह सकते हैं? जब वे ऐसे भिक्षु थे, तब वे जंगलों, घने वनों और सीमावर्ती आवासों (बैठने के स्थानों) में अकेले रहते थे: शांत, वातावरण से दूर, अकेले रहते थे, अकेले बैठने के लिए उपयुक्त; वे अकेले चलते, अकेले खड़े होते, अकेले बैठते, अकेले लेटते, भिक्षा मांगने के लिए अकेले गाँव जाते, अकेले आगे बढ़ते, अकेले लौटते, शांत स्थान पर अकेले बैठते, अकेले कर्म करते, अकेले रहते, चलते, आगे बढ़ते, पहरा देते और अकेले ही अपना जीवन यापन करते।

भगवान बुद्ध प्यासी प्रेम की पीड़ा से अकेले कैसे निपट सकते हैं? वे इतने अकेले और बिना साथी के थे, जब वे अनिच्छा, उत्साह और स्वयं के प्रयासों से जीवन व्यतीत कर रहे थे। नेरांजरा नदी के किनारे बोधि वृक्ष के नीचे, उन्होंने परिश्रम और प्रयास से सेना सहित राक्षस (मारा), दुष्ट दानव और उनके रिश्तेदारों का नाश किया; उसके बाद, उन्होंने जाल में फँसे, तीव्र गति से बहने वाले, उलझे हुए प्यासे प्रेम को त्याग दिया, भगा दिया, समाप्त कर दिया और उसका अस्तित्व समाप्त कर दिया।

“जिन लोगों का साथी प्यासी प्रेम होता है, वे लंबे समय तक पुनर्जन्म लेते हैं, ऐसी अवस्था में पहुँच जाते हैं, अन्य अवस्थाओं में पहुँच जाते हैं, पुनर्जन्म से परे नहीं जा पाते। इस प्रकार के कष्ट को जानकर: लालसा ही दुख का मूल है, प्यासी प्रेम से विमुख होकर, बिना कुछ ग्रहण किए, भिक्षुओं को सचेतन होकर आगे बढ़ना चाहिए।” [इत.15/स्न.3.12,745-746]

भगवान बुद्ध "सदालोभ से दूर" रहने की अवस्था में अकेले कैसे हो सकते हैं? लोभ का त्याग करना ही एकांत है, क्रोध का त्याग करना ही एकांत है, भ्रम का त्याग करना ही एकांत है, अपवित्रता का त्याग करना ही एकांत है।

भगवान बुद्ध, जिन्होंने “बिना मोड़ वाले मार्ग को पार किया है”, अकेले कैसे हो सकते हैं? बिना मोड़ वाले मार्ग को चार पवित्र मार्ग कहा जाता है... (अस्पष्ट) आठ पवित्र मार्ग।

“जो जीवन की मृत्यु (पुनर्जन्म) को देखता है, जो करुणामय है, जो बिना मोड़ वाले मार्ग को जानता है, इसी मार्ग से उन्होंने अतीत में बाढ़ पार की, भविष्य में भी पार करेंगे, और वर्तमान में भी पार कर रहे हैं।” [SN.47.18]

भगवान बुद्ध की “एकमात्र ज्ञान प्राप्ति” का अर्थ अकेले रहना कैसे है? ज्ञान प्राप्ति को बुद्धि, बुद्धि का मूल, बुद्धि की शक्ति, चयन का ज्ञान, अन्वेषण, विपश्यना, चारों लोकों का सही दृष्टिकोण कहा जाता है। भगवान बुद्ध ने यह अनुभव किया कि “सभी कर्म अनित्य हैं,” ...“धर्मों का प्रत्येक संग्रह नष्ट हो जाता है।” या, जो कुछ भी अनुभव किया जाना चाहिए, जिसके प्रति सचेत होना चाहिए, जिसे जागृत किया जाना चाहिए, जिसे प्रबुद्ध किया जाना चाहिए, जिसे बोध किया जाना चाहिए, जिसे स्पर्श किया जाना चाहिए, जिसकी गवाही दी जानी चाहिए, वह सब उस चेतना, जागृति, ज्ञान प्राप्ति, उपलब्धि, पहुंच और गवाही के प्रति सचेत है।

“आनंद प्राप्त करने के लिए,” “आनंद,” संयम का आनंद, वियोग का आनंद, मौन का आनंद, ज्ञानोदय का आनंद, वह प्राप्त करता है, पहुँचता है, हासिल करता है, और गवाही देता है।

192 · जो प्रबुद्ध है, जो आश्रित नहीं है, जो ऐसा है, जो छल नहीं करता, मैं भगवान के पास आया हूँ, यहाँ मौजूद कई बंधे हुए लोगों में से जरूरतमंदों की ओर से एक प्रश्न लेकर।

“जो प्रबुद्ध है, जो किसी पर निर्भर नहीं है, जो ऐसा है”: “प्रबुद्ध” वह है जो संसार में प्रतिष्ठित है, जो एकाकी है, और जिसका कोई गुरु नहीं है, जो अब तक अनसुने धम्म से प्रबुद्ध है। सत्य सभी ज्ञान की अवस्थाओं तक पहुँचने, शक्ति में स्वतंत्रता की अवस्था तक पहुँचने के लिए विद्यमान है। “प्रबुद्ध” का क्या अर्थ है? “जो सत्य को अनुभव करता है” वह प्रबुद्ध है, “जीव को जागरूक करता है”..., सर्वज्ञान की अवस्था..., सर्वदृष्टि की अवस्था..., और जो दूसरों द्वारा निर्देशित नहीं है, वह प्रबुद्ध है। जो प्रवाहित हो चुके हैं वे प्रबुद्ध हैं, जिन्होंने अपने कष्टों को समाप्त कर दिया है उन्हें प्रबुद्ध कहा जाता है, जिनके कोई कष्ट नहीं हैं..., जो हमेशा लोभ से मुक्त रहे हैं वे प्रबुद्ध हैं, और जो हमेशा घृणा से मुक्त रहे हैं वे भी प्रबुद्ध हैं। ज्ञानी व्यक्ति के लिए, "जो सदा अज्ञान से दूर रहा हो" वही ज्ञानी व्यक्ति है, "जो सदा अपवित्रता से मुक्त रहा हो"..., वह जिसने बिना चौराहे के मार्ग पार किया हो..., और वह जो बिना उपदेश दिए स्वयं ही ज्ञानी हो गया हो। ज्ञानी व्यक्ति के लिए, मृत्यु से मुक्त अवस्था ही ज्ञानी व्यक्ति है, और ज्ञानी अवस्था ही ज्ञानी व्यक्ति है। "ज्ञानी व्यक्ति" यह नाम न तो माता ने दिया है, न पिता ने, न भाई-बहनों ने, न मित्रों ने, न ब्राह्मणों ने; न स्वर्ग ने, यही परम मुक्ति है; बुद्ध, भगवान बुद्ध और बोधि वृक्ष के ज्ञान और साक्ष्य को समस्त ज्ञान और बुद्धि के साथ प्राप्त करना ही ज्ञानी व्यक्ति है।

“निर्भर” के लिए दो प्रकार की निर्भरता होती है: तृष्णा की निर्भरता और दृष्टि की निर्भरता। तृष्णा की निर्भरता क्या है? सभी को सीमाएँ (क्षेत्र के रूप में), एक दायरा, एक सीमा कहा जाता है, जिसे ग्रहण किया जाना है, जिसे अपना माना जाना है: यह मेरा है, यह मेरा है, इसका इतना भाग मेरा है, और यह दायरा मेरा है; मेरा रूप, ध्वनि, गंध, स्वाद, स्पर्श, जमीन पर पड़ी वस्तुएँ, वस्त्र, दासियाँ और पुरुष सेवक, बकरियाँ और भेड़ें, मुर्गियाँ और सूअर, हाथी, गायें और घोड़े, खच्चर, खेत, घर, सोना, सोने के सिक्के, गाँव, कस्बे, राजधानियाँ, स्थान, खजाने, गोदाम, सारी भूमि, क्योंकि वे प्यासे हैं और उन्हें अपना मानते हैं, सभी एक सौ आठ प्यासी प्रवृत्तियाँ [AN.4.199], यही तृष्णा पर निर्भरता है।

दृष्टियों को नकारना क्या है? शरीर की बीस दृष्टियाँ हैं, दस बुरी दृष्टियाँ हैं, दस पार्श्व दृष्टियाँ हैं, इस प्रकार की सभी दृष्टियाँ बुरी दृष्टियाँ हैं, जंगल (उलझी हुई) दृष्टियाँ हैं, रेगिस्तान (बंजर) दृष्टियाँ हैं, विकृत दृष्टियाँ हैं, विचलित दृष्टियाँ हैं; बंधी हुई दृष्टि से आसक्ति, स्वीकृति, पकड़, जकड़न, वह स्थान जहाँ बुरा मार्ग, बुरा स्वभाव, बाहरी मार्ग निर्भर करते हैं, विपरियेस की जकड़न, विपरीत (विपरीत) की जकड़न, विपल्लास (विपरीत), बुराई की पकड़, बुराई की जकड़न, असत्य में सत्य (देखने) की पकड़, ये सभी बासठ बुरी दृष्टियों की पहुँच में आती हैं, जो दृष्टि को नकारना है।

बुद्ध और भगवान के लिए, तृप्ति की निर्भरता समाप्त हो गई है, दृष्टि की निर्भरता समाप्त हो गई है, ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"जो लोग ऐसे हैं," भगवान पांच पहलुओं से ऐसे ही हैं: जो संतुष्ट या असंतुष्ट हैं वे ऐसे ही हैं, जो त्यागे गए हैं वे ऐसे ही हैं, जो इससे गुजर चुके हैं वे ऐसे ही हैं, और "मुक्त" लोग ऐसे ही हैं।

भगवान बुद्ध संतुष्ट हों या असंतुष्ट, वे कैसे ऐसे हो सकते हैं? वे प्राप्त करने में भी वैसे ही हैं; न प्राप्त करने में भी वैसे ही हैं; प्रतिष्ठा प्राप्त करने में भी वैसे ही हैं; प्रतिष्ठा न होने में भी वैसे ही हैं; प्रशंसा और निंदा में भी वैसे ही हैं; सुख और दुख में भी वैसे ही हैं। कुछ लोग कलाई पर मसाला लगाते हैं, और कुछ लोग कुल्हाड़ी से काम करते हैं: उन्हें ऐसा होने में कोई लोभ नहीं है; उन्हें ऐसा होने में कोई घृणा नहीं है; उन्होंने लोभ और घृणा का त्याग कर दिया है; उन्होंने विजय और पराजय पर विजय प्राप्त कर ली है; उन्होंने आज्ञापालन और विरोध दोनों को पार कर लिया है।

भगवान बुद्ध का "त्याग" किस प्रकार हुआ? भगवान बुद्ध का लोभ त्याग दिया गया, थूक दिया गया, मुक्त कर दिया गया, काट दिया गया और विरक्त कर दिया गया; ...क्रोध..., अज्ञान, द्वेष, बुराई छिपाना, प्रभुत्व, कंजूसी, पाखंड, धूर्तता, हठ, वासना, अहंकार, घमंड, आलस्य, सुस्ती, सभी प्रकार की अशुद्धियाँ, सभी बुराइयाँ, सभी कष्ट, सभी प्रकार की चिड़चिड़ी गर्मी (यातना), सभी प्रकार की चिड़चिड़ाहट, सभी बुरे कर्म त्याग दिए गए, थूक दिए गए, मुक्त कर दिए गए, त्याग दिए गए और विरक्त कर दिए गए।

भगवान बुद्ध को किस प्रकार "पार कर लिया गया" है? सांसारिक इच्छाओं की उग्र धाराएँ पार हो चुकी हैं; अस्तित्व की बाढ़ें पार हो चुकी हैं; दृष्टि की बाढ़ें पार हो चुकी हैं; अज्ञान की उग्र धाराएँ पार हो चुकी हैं; सभी चक्रों को पार कर लिया है, सभी पार कर लिए हैं, सभी बाधाओं को पार कर लिया है, सभी पर विजय प्राप्त कर ली है; वही अवतरित हुआ है, वही अभ्यासी है, वही यात्रा पूर्ण कर चुका है, वही दिशा तक पहुँच गया है, वही अंत तक पहुँच गया है, वही ब्रह्म की रक्षा करता है, वही सर्वोच्च दृष्टि तक पहुँच गया है, वही मार्ग का अभ्यास करता है, वही अशुद्धियों को दूर करता है, वही अविचल है, वही विनाश का साक्षी है; उसके लिए दुख ज्ञात है, उसने संगति का त्याग कर दिया है, उसने मार्ग का अभ्यास किया है, विनाश का साक्षी है; वही ज्ञात सिद्ध हुआ है, ज्ञान ज्ञात हो सकता है; जिसने त्याग का वचन त्याग दिया है, जिसने अभ्यास का वचन ग्रहण किया है, और जिसने गवाही दी है। वह है जिसकी बाधा दूर हो गई है, जिसकी खाई भर गई है, जिसका स्तंभ उखाड़ दिया गया है, जिसका कोई बंधन नहीं है, जिसका पवित्र ध्वज गिर गया है, जिसका बोझ हटा दिया गया है, जो अलग हो गया है, जिसकी पाँच शाखाएँ काट दी गई हैं, और जिसकी छह शाखाएँ हैं। जिनके एक संरक्षक और चार सहारे हैं, वे वे हैं जिनके सत्य दूर हो गए हैं, जो त्याग और पूर्ण क्षय की तलाश में हैं, जिनके कोई अशुद्ध इरादे नहीं हैं, जिन्होंने अपने जीवन को शांत कर लिया है, जो दयालु और मुक्त हैं, जो ज्ञान से मुक्त हैं; सर्वोच्च पुरुष, सर्वोच्च पुरुष, जिसने सर्वोच्च सिद्धि प्राप्त कर ली है, न तो रचना करता है और न ही विघटन करता है, न ही संचय करके खड़ा होता है; न तो त्यागता है और न ही आसक्ति रखता है, बल्कि त्यागने के बाद खड़ा रहता है; न तो निथारता है और न ही संचय करता है, निथारने के बाद खड़ा रहता है; न बुझाने वाला, न जलने वाला, बुझने के बाद स्थिर रहने वाला [SN.22.79], वह व्यक्ति जो उपदेशों को सीखने की अवस्था में नहीं है, और जो ज्ञानहीन निवास की अवस्था में है, वह निवासी जो बिना ज्ञान के ज्ञान की अवस्था में है, वह निवासी जो ज्ञान की प्रचुरता के बावजूद अज्ञान की अवस्था में है, वह निवासी जो बिना ज्ञान के मुक्ति की अवस्था में है, ज्ञान की अवस्था में है, और सत्य की पूर्णता और अंतर्दृष्टि के बाद स्थिर रहने वाला है, वे जो विक्षोभ (लालसा) से मुक्त हो चुके हैं, वे जो अशुद्धता की आग बुझने के बाद स्थिर रहते हैं, वे जो अब बिल्कुल नहीं आते, वे जिन्होंने (विजय) प्राप्त कर ली है, वे जो उपयोग से मुक्त हैं, करुणा के शुद्ध निवासी, दया के शुद्ध निवासी, आनंद के शुद्ध निवासी, शांति के शुद्ध निवासी, सभी के शुद्ध निवासी, समानता की अवस्था में, सर्वव्यापी रूप से शुद्ध निवासी, वे जो मुक्त हो चुके हैं, वे जो परिपूर्ण हो चुके हैं, वे जो परम (सीमा) में हैं, वे जो संसार में हैं।और जो परम सत्ता में निवास करते हैं, जो अंतिम जन्म स्थान पर निवास करते हैं, जो अंतिम पुनर्जन्म में निवास करते हैं, जो जीवन के अंतिम छोर पर निवास करते हैं (अस्तित्व के अंत में निवास करते हैं, पुनर्जन्म के अंत में निवास करते हैं, अंतिम शरीर में निवास करते हैं, अंतिम चक्र में निवास करते हैं, अंतिम यात्रा में निवास करते हैं, अंत में सर्वोच्च सत्ता में निवास करते हैं), अंतिम सभा (शरीर) में निवास करते हैं, जो अंतिम शरीर धारण करने वाले देवता हैं।

"यह उनका अंतिम है, यह अंतिम मिलन (शरीर) है, जीवन और मृत्यु का चक्र, उनके पुनर्जन्म के बिना।"

भगवान बुद्ध का हृदय इस प्रकार कैसे "मुक्त" हुआ? भगवान बुद्ध का हृदय लोभ से मुक्त, निर्मल और परोपकारी हो गया है; ...क्रोध से मुक्त...; (अंशित)...

भगवान बुद्ध का वर्णन किस प्रकार किया गया है? भगवान बुद्ध ने "नियमों में उपदेश धारण करने वाले" का वर्णन इसी प्रकार किया है; "विश्वासियों" का वर्णन भी इसी प्रकार किया है; "जो जीवन शक्ति से परिपूर्ण" हैं... ...मन में विचार रखने वाले... ...एकाग्रचित्त, ज्ञान से परिपूर्ण, "तीन मन वाले", "छह अलौकिक शक्तियों वाले", "दस शक्तियों में दस शक्तियाँ रखने वाले"...; यही भगवान बुद्ध का ऐसा स्वरूप है। प्रबुद्ध, जो आश्रित नहीं, ऐसा ही व्यक्ति।

"जो भगवान बुद्ध के पास आते हैं, वे छल-कपट रहित हैं": "छल-कपट रहित", छल-कपट के तीन प्रकार: ...(विलंबित, पिछले भाग देखें)। बुद्ध और भगवान बुद्ध के लिए, संसाधनों का उपयोग करने के छल, व्यवहार के छल और लाभ के लिए इधर-उधर की बातें करने के छल, ये तीनों प्रकार के छल-कपट समाप्त हो गए हैं, शांत हो गए हैं, रुक गए हैं, उत्पन्न होने में असमर्थ हैं और ज्ञान की अग्नि से भस्म हो गए हैं, इसलिए बुद्ध छल-कपट रहित हैं।

"जो गुरु के पास आता है," गुरु, ...

"यहाँ, अनेक बंधुआ लोगों से संबंधित": अनेक क्षत्रियों से संबंधित, ... "बंधुआ से संबंधित," बंधुआ से संबंधित, परिचारक से संबंधित, सेवक से संबंधित, शिष्यों से संबंधित।

"जरूरतमंद सवाल लेकर आते हैं": मैं जरूरत पड़ने पर सवाल लेकर आता हूँ, मैं सवाल पूछने के लिए आता हूँ, और मैं सवाल सुनने के लिए आता हूँ। या, सवाल से जुड़ी जिज्ञासाएँ जरूरतमंद होती हैं, जो सवाल पूछना चाहते हैं, और जो सुनना चाहते हैं, उन्हें आने, संपर्क करने और मिलने की जरूरत होती है। या, जब आपके पास कोई सवाल हो, तो आप बता सकते हैं और आपके पास मेरे पूछे गए सवाल का जवाब देने का पर्याप्त कारण है, कृपया इस बोझ को उठाएँ।

193 · जब भिक्षु को निष्कासित किया जाता है, खाली आसन के निकट, या किसी वृक्ष के नीचे, किसी टीले के बीच, या किसी गुफा में,

"जब एक भिक्षु को घृणा होती है": "एक भिक्षु," एक गुणी भिक्षु, या एक विद्वान भिक्षु। "घृणा होना," जन्म से घृणा, वृद्धावस्था से घृणा, ...बीमारी, ...मृत्यु, दु:ख, पीड़ा, चिंता, निराशा, नरक लोक, पशु लोक, प्रेत लोक, मानव लोक, जन्म के कष्ट में जड़े रहना, गर्भ में, जन्म में, जन्म से बंधे होने का कष्ट, ...प्रयास का कष्ट, दूसरों के प्रयासों का कष्ट; ...आँखों की बीमारी, कान की बीमारी, ...नाक..., जीभ, शरीर, सिर, बाहरी कान, मुँह, दाँत, खाँसी, साँस फूलना, बाहरी नाक, बुखार, वृद्धावस्था, पेट की बीमारी, बेहोशी, पेचिश, पेट दर्द, हैजा, कुष्ठ रोग, ट्यूमर, दाद, फेफड़ों की बीमारी, मिर्गी, खुजली, गठिया, खरोंच (त्वचा रोग), सूखी और फटी त्वचा, खून बहना, पित्ताशय, मधुमेह, बवासीर, चकत्ते (फोड़े), अल्सर; पित्त के कारण होने वाली बीमारी, ...थूक के कारण, ...हवा के कारण, (तीन) समूह, ऋतुओं का परिवर्तन, अनुचित मुद्रा, अचानक बीमारी, ...कर्म से उत्पन्न, सर्दी, गर्मी, भूख, प्यास, मल, मूत्र; ...मक्खी, मच्छर, हवा, सूर्य, सांप के संपर्क में आना; ...माता का शोक, ...पिता, भाई, बहन, परिवार, संपत्ति का शोक, बीमारी का नुकसान, सद्गुण का नुकसान, दृष्टि का नुकसान; घृणा, व्यथ, चिंता और घृणा होना।

"मानवरहित सीट के करीब": जिस स्थान पर वह बैठता है उसे सीट कहा जाता है: ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"या पेड़ के नीचे या टीले के बीच": पेड़ के नीचे का भाग पेड़ के नीचे होता है, और टीला टीले के बीच का भाग होता है। "या गुफा में": पहाड़ पहाड़ है, गुफा गुफा (कंकाल) है, और गुफा गुफा (कंकाल) है; पहाड़ के भीतरी भाग को पहाड़ की गुफा कहा जाता है।

194 · सभी प्रकार के सोने के स्थानों में कितनी भयानक (चीजें) हैं, (जिनके कारण) भिक्षु को शांत स्थान में नहीं कांपना चाहिए?

"सभी प्रकार के सोने के स्थानों में": सभी प्रकार के स्थानों में, सभी प्रकार के, निम्न और विजयी, पवित्र और दुष्ट। घर, आवास, आधी छत वाले घर, ऊँची इमारतें, समतल घर और गुफाएँ सोने के स्थान कहलाते हैं। "कितनी भयानक (चीजें) हैं": "कितनी," कितनी चहचहाहटें, गर्जनाएँ, ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं। या, "कितनी," कितनी, कितनी संख्या में, किस हद तक। "भयानक": शेर, बाघ, तेंदुए, भालू, कुत्ते, भेड़िये, बाइसन, हाथी, साँप, बिच्छू, कनखजूरे, या चोर या गुंडे जो बुरे काम करते हैं या बुरे काम करने को तैयार हैं।

"(ए) भिक्षु को उन चीजों के कारण नहीं कांपना चाहिए": "उन चीजों के कारण," क्योंकि उसे उन भयानक (चीजों) को देखने या सुनने के बाद नहीं कांपना चाहिए, (तेज कंपन) नहीं होना चाहिए, बहुत अधिक नहीं कांपना चाहिए, डरना नहीं चाहिए, भयभीत नहीं होना चाहिए, पूरी तरह से भयभीत नहीं होना चाहिए, डरना नहीं चाहिए, कायर नहीं होना चाहिए, भयभीत नहीं होना चाहिए, डरना नहीं चाहिए, भागना नहीं चाहिए, भय से मुक्त होकर, शरीर के रोंगटे खड़े होकर निवास करना चाहिए।

"एक शांत जगह": एक ऐसी जगह जहाँ कोई शोर न हो, एक शांत जगह, मानवीय वातावरण से दूर, एकांत में, अकेले बैठने के लिए उपयुक्त।

195 · संसार में कितने खतरे हैं, उन लोगों के लिए जो उस दिशा में नहीं गए हैं, जिनके बीच भिक्षुओं को विजय प्राप्त करनी चाहिए, सीमा पर रहते हुए?

"दुनिया में कितने खतरे हैं": "कितने," .... "खतरा," दो प्रकार के खतरे हैं: ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)। "दुनिया में," मानव जगत में।

"जो लोग उस दिशा में यात्रा नहीं कर चुके हैं": "जिस दिशा में यात्रा नहीं की गई है" उसे निर्जीव, निर्वाण कहा जाता है, जो सभी कर्मों का अंत, सभी आसक्तियों का अंत, लालसा का अंत, निर्वाण है। वह दिशा जिसमें पहले यात्रा नहीं की गई है, न कि वह दिशा जिसमें पहले यात्रा की जा चुकी है; यह लंबी यात्रा।

जैसे तेल से लदे कटोरे को किनारे तक ले जाना, ठीक वैसे ही, जो लोग पहले कभी उस दिशा में नहीं गए हैं, उन्हें अपने हृदय की रक्षा करनी चाहिए। जो लोग पहले कभी उस दिशा में नहीं गए, जो चले हैं, जो आगे बढ़े हैं।

"भिक्षुओं को उन पर विजय प्राप्त करनी चाहिए": "उन," उन संकटों पर उसे विजय प्राप्त करनी चाहिए, उन्हें पराजित करना चाहिए, उन्हें अभिभूत करना चाहिए, उनका अंत करना चाहिए, उन्हें कुचल देना चाहिए।

सीमा पर निवास: सीमा पर, किनारे पर, सीमांत पर, पहाड़ के पास, या जंगल के पास, या नदी के पास, या पानी के पास, जहाँ खेती या बुवाई नहीं होती है, मानवीय सीमाएँ, पार करने के बाद, लोग उस स्थान के पास नहीं पहुँचेंगे।

196 · कौन सी भाषा होनी चाहिए? कौन सा राज्य होना चाहिए? किस प्रकार के नियम और निषेध लागू किए जाने चाहिए, जो भिक्षु के स्वयं के प्रयास से संबंधित हों?

"भाषा कैसी होनी चाहिए?": "भाषा किस प्रकार की होनी चाहिए, किस प्रकार की व्यवस्था होनी चाहिए, किस प्रकार का भाव और किस प्रकार का विरोधाभास होना चाहिए।" उन्होंने वाणी की शुद्धता के बारे में पूछा। वाणी की शुद्धता क्या है? यहाँ, भिक्षु द्वारा अपने शब्दों का त्याग करने के बाद, ...(अंशित, पिछले भाग देखें)। ...सावधान, विवेकपूर्ण, सतर्क, संरक्षित और आत्म-संयमित शब्द ही शुद्ध शब्द हैं। व्यक्ति को इसी प्रकार की वाणी की शुद्धता धारण करनी चाहिए।

"यहाँ किस प्रकार का राज्य होना चाहिए?": "यहाँ एक ऐसा राज्य होना चाहिए जो कैसा दिखता हो, किस प्रकार की व्यवस्था हो, किस प्रकार का हो और किस प्रकार का विरोधाभास हो।" उन्होंने राज्य के बारे में पूछा। यहाँ व्यवस्था की स्थिति और गैर-राज्य की स्थिति है।

अपुष्टता क्या है? यहाँ, एक विशेष प्रकार के लोग वेश्याओं, विधवाओं, अविवाहित महिलाओं, हिजड़ों या भिक्षुणियों [एएन.5.102] के साथ रहते हैं, या कोई शराबखाने में होता है, वह राजाओं, उच्च अधिकारियों, बाहरी लोगों और शिष्यों के साथ अनुचित संपर्क में रहता है। या, जो अविश्वासी हैं, भिक्षुणियाँ, पुरुष गृहस्थ भक्त, स्त्री गृहस्थ भक्त, वे लोग जिनका कोई विश्वास नहीं है, वे लोग जो जल के स्रोत के समान हैं, अपशब्द बोलने वाले और निंदा करने वाले, वे लोग जो लाभ की इच्छा नहीं रखते, वे लोग जो शांति की इच्छा नहीं रखते, यदि वह स्थिर घरों के निकट रहना चाहता है, तो वह ऐसे घरों के निकट जाता है, उनसे मित्रता करता है और उनका दौरा करता है।

या, जब भिक्षु अपने घर में आगंतुक होता है, सड़क पर टहल रहा होता है, तो वह असुरक्षित रूप से चलता है: ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

या, भिक्षु रूप का और सूक्ष्म रूप का भी भक्षक बन जाएगा...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

या यदि कुछ समण और ब्राह्मण गुरुओं ने श्रद्धापूर्वक अर्पित भोजन ग्रहण किया, ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

पांचों इच्छाएँ भी अरुचिकर अवस्थाएँ हैं। भगवान बुद्ध ने कहा: "भिक्षुओं! अनुचित अवस्था या अन्य अवस्था में मत चलो। भिक्षुओं! जो अनुचित अवस्था या अन्य अवस्था में चलते हैं, उन्हें राक्षस का अवसर मिलेगा, राक्षस को उनका लाभ मिलेगा। भिक्षुओं! भिक्षुओं की अनुचित अवस्थाएँ और अन्य अवस्थाएँ क्या हैं? अर्थात्: पाँच इच्छाएँ, कौन सी पाँच? वह रूप जो आँखों से देखा जा सकता है, जो आकर्षक, सुंदर, मनभावन, लुभावनी और लोभी है; ध्वनि..., गंध, जीभ, स्पर्श... [SN.47.7]। भिक्षुओं! इसे भिक्षु की अनुचित अवस्था, अन्य अवस्थाएँ कहा जाता है।"

यात्रा क्या है? यहाँ भिक्षु किसी वेश्या, विधवा, अविवाहित स्त्री, हिजड़े, भिक्षुणी या शराबखाने में नहीं होता। वह राजाओं, उच्च अधिकारियों, विदेश मंत्रियों और विदेशी शिष्यों के साथ उचित रूप से संपर्क में रहता है। या, जो भिक्षुओं, भिक्षुणियों, पुरुष गृहस्थ भक्तों, स्त्री गृहस्थ भक्तों में आस्था रखते हैं, जो सच्चे विश्वासी हैं, जो जलस्रोत के समान हैं, जिनके पास वस्त्र और प्रकाश हैं, जो शुभचिंतक हैं, जो लाभ चाहते हैं, जो सुख चाहते हैं, जो बंधन और स्थिर घर छोड़ना चाहते हैं, वह उनके निकट जाता है, उनसे मित्रता करता है और उनके घरों में जाता है।

या फिर, जब भिक्षु उसके घर पर मेहमान बनकर आता है, तब...

या, भिक्षु द्वारा अपनी आँखों से रूप देखने के बाद, ...

या यदि कुछ समण और ब्राह्मण गुरुओं ने श्रद्धापूर्वक अर्पित भोजन ग्रहण किया, तो...

चार प्रकार की जागरूकता मन की अवस्था है। भगवान बुद्ध ने कहा: "भिक्षुओं! भिक्षु की उचित अवस्था, उसके पिता और दादा की अवस्था क्या है? अर्थात्: चार प्रकार की जागरूकता, वे कौन सी हैं? भिक्षुओं! यहाँ, भिक्षु शरीर में रहते हुए शरीर का अवलोकन करता है (उत्साह, धार्मिक ज्ञान और जागरूकता के साथ, लोभ और संसार की चिंताओं को नियंत्रित कर सकता है); भाव में..., हृदय में..., धर्म में...। भिक्षुओं! यही भिक्षु की उचित अवस्था है, उसके पिता और दादा की अवस्था।" इसे यात्रा की अवस्था भी कहा जाता है। व्यक्ति को ऐसी ही स्थिति में रहना चाहिए।

"किस प्रकार के नियम और निषेध होने चाहिए?": "किस प्रकार के नियम और निषेध होने चाहिए, किस प्रकार की व्यवस्था होनी चाहिए, किस प्रकार का और किस प्रकार का अंतर होना चाहिए?" उन्होंने नियमों और निषेधों की पवित्रता के बारे में पूछा। नियम और निषेध क्या हैं? ...(अधूरा भाग, पिछले अनुभाग देखें)।

"यह भिक्षु के स्वयं के प्रयास से संबंधित है": "यह स्वयं के प्रयास से संबंधित है," यह सक्रिय ऊर्जा से संबंधित है, उस व्यक्ति से संबंधित है जिसने धैर्य प्राप्त कर लिया है, दृढ़ प्रयास से, उस व्यक्ति से जो इच्छा की उपेक्षा नहीं करता है, और उस व्यक्ति से जो अच्छे धम्म में दायित्व की उपेक्षा नहीं करता है। या, स्वयं से संबंधित लक्ष्य स्वयं के हितों में, सत्य में, गुणों में, तर्क और अतर्क में उत्पन्न होता है: "सभी कर्म अनित्य हैं" स्वयं द्वारा उत्पन्न होते हैं; "सभी कर्म दुखदायी हैं"...; "सभी कर्म आत्महीन हैं"...; "अज्ञान पर आधारित कर्म ही आत्म-उत्पत्ति का कारण हैं," "जन्म और मृत्यु

वृद्धावस्था और मृत्यु का कारण बनते हैं," "अज्ञान के कारण होने वाली मृत्यु कर्मों और मृत्यु की ओर ले जाती है," "जन्म और मृत्यु मृत्यु और मृत्यु की ओर ले जाते हैं," "यह दुख है," "यह दुख की ओर ले जाने वाला मार्ग है," "यह कष्ट है," "यह कष्टों की ओर ले जाने वाला मार्ग है," "इन धर्मों का ज्ञान होना चाहिए," "इन धर्मों की गवाही देनी चाहिए," प्रवेश द्वार के छह स्पर्श, संचय, संहार, सुख, कष्ट और वैराग्य...; पाँच स्कंध..., चार प्रमुख स्कंध; "धर्मों का कोई भी संग्रह संहार है" यह कथन स्वयं द्वारा ही कहा गया है। "भिक्षु से संबंधित," जो किसी भिक्षु का हो, या जो किसी भिक्षु से सीखता हो।

197 · उसे क्या सीखना चाहिए, समर्पण, बुद्धिमत्ता और सचेतनता के साथ, जैसे एक लोहार चांदी से काम करता है, क्या उसे अपनी गंदगी से छुटकारा पाना चाहिए?

"उठाने के बाद उसे क्या सीखना चाहिए": उसे समझने, थामने, लेने और उठाने के बाद क्या सीखना चाहिए।

"समर्पित (एकमात्र), बुद्धिमान, सचेत": "समर्पित," एक ही अवस्था में मन, विचलित न होने वाला मन, स्थिर मन, समाधि, स्थिर जड़, एकाग्रता, सही एकाग्रता।" "बुद्धिमान," ...(हटा दिया गया, पिछले भाग देखें)। "सचेत," ...(हटा दिया गया, पिछले भाग देखें)। "स्वीकार करने के बाद उसे क्या सीखना चाहिए?" उसने उपदेश ज्ञान को जोड़ने के बारे में पूछा। "विशेष रूप से," उसने और अधिक सीखने के लिए कहा। "बुद्धि," उसने बुद्धि ज्ञान के बारे में पूछा।

"जैसे एक लोहार चांदी का काम करता है, वैसे ही उसे अपनी गंदगी दूर करनी चाहिए": लोहार को सुनार कहा जाता है, और चांदी को सोना (कीमती धातु) कहा जाता है। जैसे एक लोहार सोने का काम करता है, वैसे ही वह स्थूल गंदगी को फूँककर, हवा देकर और पिघलाकर [AN.3.102] हटाता है, और मध्यम गंदगी को फूँककर, हवा देकर और घोलकर हटाता है, और महीन गंदगी को फूँककर, हवा देकर और घोलकर हटाता है। इसी प्रकार, भिक्षु अपनी स्थूल अशुद्धियों को फूँककर, हवा देकर और घोलकर हटाते हैं, उन्हें काट कर, दूर भगाकर, समाप्त करके और उनका अस्तित्व समाप्त कर देते हैं। ...मध्यम अशुद्धियाँ..., ...सूक्ष्म अशुद्धियाँ...

या, भिक्षुओं, आग को फूँकें, प्रज्वलित करें, लोभ की गंदगी, क्रोध की गंदगी, अज्ञान की गंदगी, अहंकार की गंदगी, दृष्टि की गंदगी, अपवित्रता की गंदगी, बुरे कर्मों की गंदगी, अंधता की गंदगी, दृष्टिहीनता की गंदगी, भ्रम की गंदगी, जो बुद्धि को नष्ट करती है, परेशान करने वाले गुटों की गंदगी, और जो निर्वाण की ओर नहीं ले जाती, उसे नष्ट करें [एएन.3.72]; त्याग दें, भगा दें, समाप्त कर दें, और उन्हें अस्तित्वहीनता में भेज दें।

या, सही दृष्टिकोण का उपयोग करके, उसे मिटा देना। सही इच्छाशक्ति, बुरी इच्छाशक्ति, सही वाणी, बुरी वाणी, सही कर्म, बुरे कर्म, भाग्य, शब्द, प्रयास, विचार, एकाग्रता, ज्ञान; सकारात्मक मुक्ति का उपयोग करके उसे मिटा देना।

या फिर, हमारे लिए आठ पवित्र मार्ग हैं, जिनसे आग को हवा दी जा सके, उसे प्रज्वलित किया जा सके, समस्त प्रदूषण, समस्त बुरे कर्म, समस्त कष्ट, समस्त झुलसा देने वाली गर्मी, समस्त जलन, समस्त अस्वास्थ्यकर कर्मों को नष्ट किया जा सके, उन्हें दूर भगाया जा सके, उनका अंत किया जा सके और उन्हें अस्तित्वहीन बना दिया जा सके।

198 · [भगवान: "सारिपुत्त!"] घृणा करने वालों के लिए, निर्जन आसन और विश्राम स्थल के निकट रहना ही वास्तव में शांति है। जो ज्ञान प्राप्त करना चाहता है, वह धम्म का अनुसरण करेगा, मैं यह बात तुम्हारे लिए, क्योंकि मैं इसे जानता हूँ, कह रहा हूँ।

"जिनको घृणा होती है..., उनके लिए शांति है": "जिनको घृणा होती है," जिनको घृणा होती है, ...(अंशित)। "वही शांति है," जो भी शांति से जीवन व्यतीत करेगा, उसे मैं बताऊंगा। सुखी जीवन क्या है? सही मार्ग, अनुसरण करने वाला मार्ग, ...(अंशित, पिछले भाग देखें), यही निर्वाण का मार्ग है।

"[भगवान: 'सारिपुत्त!']": उस व्यक्ति को उसके नाम से पुकारना। "भगवान," ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

जो ज्ञान की इच्छा रखता है, वह धम्म का अनुसरण करता है। ज्ञान को बुद्धि, बुद्धि का मूल, बुद्धि की शक्ति, धम्म ज्ञान, अन्वेषण, विपश्यना, सही दृष्टिकोण और चारों मार्गों पर चलने वाला प्रबुद्ध व्यक्ति कहा जाता है। जो ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं, जो जागृत होना चाहते हैं, जो पाना चाहते हैं, जो पहुंचना चाहते हैं और जो गवाही देना चाहते हैं।

"धम्म के अनुसार": ज्ञान प्राप्ति का मार्ग क्या है? वह मार्ग जो सही है, ..., और उचित ज्ञान का मार्ग है। इसे ही ज्ञान प्राप्ति का निम्नलिखित धम्म कहा जाता है।

"मैं तुम्हारे लिए यह कहूंगा, जो जानता है": "यह," मार्ग के अनुसार। "मैं कहूंगा," मैं कहूंगा, मैं समझाऊंगा, मैं सिखाऊंगा, मैं बताऊंगा, मैं स्थापित करूंगा, मैं उजागर करूंगा, मैं विश्लेषण करूंगा, मैं स्पष्ट करूंगा। "जानकार के रूप में," ज्ञाता के रूप में, निश्चित ज्ञाता के रूप में, जिसने गहरी समझ प्राप्त की है, न सुनी-सुनाई बातों से, न अफवाहों से, न विरासत से, न शास्त्रों की शिक्षाओं से, न तार्किक निष्कर्ष से, न तर्क से, न सैद्धांतिक चिंतन से, न चिंतन के बाद प्राप्त अंतर्दृष्टि से, उस विधि से जो व्यक्तिगत रूप से सिद्ध और स्वयं सिद्ध है, मैं यह कहूंगा।

199 · बुद्धिमान व्यक्ति को पाँच प्रकार के भयों से नहीं डरना चाहिए, विचारशील और संयमित भिक्षु को: मक्खियाँ, पतंगे, साँप, मानव संपर्क, चार पैरों वाले जानवर।

"बुद्धिमान व्यक्ति को पाँच भयों से नहीं डरना चाहिए": बुद्धिमान व्यक्ति वह है जो बुद्धिमान है, ...(अंशित, पिछले भाग देखें)। बुद्धिमान व्यक्ति को पाँच भयों से नहीं डरना चाहिए, उसे भयभीत नहीं होना चाहिए, कांपना नहीं चाहिए, डरना नहीं चाहिए, ...।

"सजग और संयमित भिक्षु": "भिक्षु," ...(विलुप्त, पिछले अनुभाग देखें)। "सजग," .... "संयमित," "संयमित कर्म" में चार प्रकार की सीमाएँ होती हैं: संयम की सीमाएँ, मूल आत्म-नियंत्रण की सीमाएँ, सही मात्रा में आहार जानने की सीमाएँ और संयम में विशेषज्ञता की सीमाएँ।

संयम की सीमा क्या है? यहाँ भिक्षु एक गुरु है जो पातिमोक्ख के आत्म-संयम से सुरक्षित रहता है। उसके पास पर्याप्त धार्मिकता और उचित परिस्थितियाँ हैं। वह छोटे पापों की भयावहता को देखता है और गुरु से शिक्षा प्राप्त करने के बाद उनसे सीखता है। आंतरिक पतन की स्थिति का परीक्षण करते समय, वह आत्म-संयम के आंतरिक नियमों का पालन करता है, सीमाओं का उल्लंघन नहीं करता। यही आत्म-संयम का नियम है।

आत्मसंयम की सीमा क्या है? यहाँ, भिक्षु जब रूप को अपनी आँखों से देखता है, तो वह रूप का लोभी नहीं बन जाता, सूक्ष्म रूप का लोभी नहीं बन जाता... (उद्धृत) वह अपनी आँखों के आधार पर आत्मसंयम प्राप्त करता है। कानों से ध्वनि सुनने के बाद..., नाक से सूंघने के बाद..., जीभ से स्वाद लेने के बाद..., शरीर से स्पर्श करने के बाद..., चेतना से धम्म को जानने के बाद..., क्योंकि जब मन की जड़ सुरक्षित नहीं रहती, तो लोभ, दुःख और बुराई का प्रवाह होता है। वह अपने आत्मसंयम के अनुसार कार्य करता है, मन की जड़ की रक्षा करता है, और मन की जड़ पर आत्मसंयम प्राप्त करता है। जब वह अग्नि विधि का अध्ययन करता है, तो वह आंतरिक आत्मसंयम की सीमाओं का अभ्यास करता है और उन्हें भंग नहीं करता। यही मूल आत्मसंयम की सीमा है।

आहार संबंधी ज्ञान की सीमा क्या है? यहाँ भिक्षु निरीक्षण के बाद भोजन ग्रहण करता है: "न तो आनंद के लिए, न ही नशे के लिए, न ही सुंदर शरीर के लिए, न ही मान-सम्मान के लिए, बल्कि इस शरीर के अस्तित्व और पालन-पोषण के लिए, हानि को रोकने के लिए, और ब्रह्म का समर्थन करने के लिए। इस प्रकार, मैं पूर्व भावनाओं को दूर करूँगा, नई भावनाओं को जागृत नहीं होने दूँगा, स्वस्थ रहूँगा, दोषरहित रहूँगा और शांति से जीवन व्यतीत करूँगा।" धुरों पर तेल लगाने, घावों को ढकने [SN.35.239], और पुत्र के मांस के उपमा [SN.12.63] की जाँच करते समय, उसने सही मात्रा जानने के लिए आंतरिक सीमा का अभ्यास किया, सीमाओं का उल्लंघन नहीं किया, यही आत्म-संयम के रूप में आहार की सही मात्रा जानने की सीमा है।

संयम में एकाग्रता की सीमा क्या है? यहाँ, दिन के दौरान, भिक्षु शांतिपूर्वक चलने और बैठने से मन को बाधाओं से मुक्त करता है। रात्रि के पहले पहर में, शांतिपूर्वक चलने और बैठने से मन को बाधाओं से शुद्ध करना चाहिए। मध्यरात्रि में, सिंह की तरह दाहिनी ओर लेटकर, (बाएँ) पैर को (दाएँ) पैर पर रखकर, सचेतनता और धार्मिक ज्ञान के साथ चिंतन करना चाहिए। पश्चात रात्रि में, शांत रूप से चलने और बैठने से मन को बाधाओं से शुद्ध

करना चाहिए [SN.35.120]। जब सद्गुणी रात्रिकालीन आत्मनिरीक्षण करता है [MN.131], तो वह आंतरिक संयमित सीमाओं पर ध्यान केंद्रित करता है, सीमाओं को तोड़े बिना; यही आत्मसंयम का मूल है।

"मक्खियाँ, पतंगे, साँप": छोटी मक्खियों को मक्खी कहते हैं। बाकी सभी मक्खियों को पतंगा कहते हैं। सभी मक्खियों को पतंगा क्यों कहते हैं? क्योंकि वे उड़ती हैं और बार-बार काटती हैं, इसलिए सभी मक्खियों को पतंगा कहते हैं। रेंगने वाले साँपों को साँप कहते हैं।

"मनुष्यों से संपर्क, चार पैरों वाले जानवरों से संपर्क": चोर और गुंडे जो बुरे काम करते हैं या बुरे काम करने की तैयारी करते हैं, उन्हें मनुष्यों से संपर्क कहा जाता है। वे भिक्षु से प्रश्न पूछ सकते हैं, चर्चा में शामिल हो सकते हैं, गाली दे सकते हैं, निंदा कर सकते हैं, क्रोधित कर सकते हैं, परेशान कर सकते हैं, चोट पहुँचा सकते हैं, कष्ट दे सकते हैं, मार सकते हैं, चिढ़ा सकते हैं या नुकसान पहुँचा सकते हैं। मनुष्यों द्वारा किया गया कोई भी संपर्क कष्टदायी होता है। "चार पैरों वाले जानवर," जैसे शेर, बाघ, तेंदुए, भालू, कुत्ते, भेड़िये, बाइसन और हाथी, भिक्षु को कुचल सकते हैं, खा सकते हैं, चोट पहुँचा सकते हैं, कष्ट दे सकते हैं, मार सकते हैं, चिढ़ा सकते हैं या नुकसान पहुँचा सकते हैं। चार पैरों वाले जानवरों से होने वाली चिड़चिड़ाहट सभी चार पैरों वाले जानवरों के लिए भय का कारण होती है।

200 · आपको अन्य अभ्यासकर्ताओं (अन्य शिक्षाओं के) से डरना नहीं चाहिए: उनमें कई भयानक चीजें देखने के बाद भी, सभी खतरों पर विजय प्राप्त करना अधिक महत्वपूर्ण है, हे अच्छे साधकों।

"दूसरे धम्मों के अनुयायियों से भयभीत न हों, चाहे आप उनमें अनेक भयानक बातें देखें": दूसरे धम्मों के अनुयायी, वे सभी जिन्होंने अभी तक बुद्ध, धम्म या संघ में विश्वास नहीं किया है, दूसरे धम्मों के अनुयायी कहलाते हैं। वे भिक्षु से प्रश्न पूछ सकते हैं, चर्चा में शामिल हो सकते हैं, या अपमान, निंदा, चिढ़ाने, क्रोधित करने, पीड़ा पहुँचाने, कष्ट देने, हत्या करने, परेशान करने या चोट पहुँचाने का कार्य कर सकते हैं। इनमें से अनेक बातें भयानक हैं। यह देखकर भी भिक्षु को भयभीत नहीं होना चाहिए...

"हे साधकों, हमें सभी खतरों पर विजय प्राप्त करनी चाहिए": "इसके अलावा," ऐसी चीजें हैं जिन पर विजय प्राप्त करनी चाहिए, जिन्हें पराजित करना चाहिए, जिन्हें पूरी तरह से दबा देना चाहिए और जिन्हें समाप्त कर देना चाहिए, जिन्हें कुचल देना चाहिए। "खतरा," दो प्रकार के खतरे हैं: .... "हे साधक," सही मार्ग ..., और निर्वाण की ओर ले जाने वाला मार्ग, खोजना, सभी संकटों पर विजय प्राप्त करनी चाहिए, उन्हें पराजित करना चाहिए, ...

201 · बीमारी और भूख से पीड़ित होने पर, व्यक्ति को ठंड और गर्मी सहन करनी चाहिए, बेघर व्यक्ति इन सभी चीजों से प्रभावित होता है, और उसे जीवन शक्ति और कड़ी मेहनत में मजबूत होना चाहिए।

"बीमारी और पीड़ा से संपर्क, भूख से संपर्क": बीमारी और पीड़ा से संपर्क को रोग से संपर्क कहा जाता है। रोग से प्रभावित होना, पीड़ा सहना, उससे जुड़ जाना, उस पर हावी हो जाना: आँखों के रोगों से प्रभावित होना, पीड़ा सहना, उससे जुड़ जाना, उस पर हावी हो जाना; कान के रोगों से प्रभावित होना...(अंशित)। भूख को भूख कहा जाता है। भूख से प्रभावित होना, पीड़ा सहना, उससे जुड़ जाना, उस पर हावी हो जाना।

"शीत और सर्दी सहन करनी चाहिए": "शीत" दो कारणों से होती है: आंतरिक उत्तेजना के कारण या बाहरी मौसमों के कारण। "गर्मी" दो कारणों से होती है: आंतरिक उत्तेजना के कारण या बाहरी मौसमों के कारण। "सहन करना चाहिए": सर्दी, गर्मी, भूख, प्यास, मक्खियों, मच्छरों, हवाओं, धूप और सांपों के संपर्क में आने जैसी किसी भी स्थिति में सहन करना चाहिए। अपमान, निंदा और शारीरिक पीड़ा, चाहे वह तीव्र, हिंसक, अवांछनीय, अत्यंत अवांछनीय, जानलेवा आदि हो, सहन करना चाहिए।

"जो बेघर है, वह इन चीजों से प्रभावित होता है": "वह इन चीजों से प्रभावित होता है," बीमारी से प्रभावित होगा, ... "विभिन्न प्रकार की (उन चीजों से)," "सभी प्रकार के व्यवहारों से प्रभावित होगा।" वह इन चीजों से प्रभावित होता है। "बेघर," चेतना द्वारा संचय का अवसर नहीं मिलता। [SN.22.3]। या, शरीर, शब्दों और इरादों में बुरे काम करने का अवसर न मिलना।

“ऊर्जावान, मेहनती, दृढ़ रहना चाहिए”: नश्वर हृदय की जीवंतता, परिश्रम, मेहनत, साहस, प्रयास, धैर्य, पीछे न हटने की भावना, दृढ़ता, निरंतर, बिना शिथिल हुए साहस, इच्छा की अवस्था का त्याग न करना, जिम्मेदारी की अवस्था में लापरवाही न करना, जिम्मेदारी का आधार, जीवंतता, जीवंतता का मूल, जीवंतता की शक्ति और सही प्रगति को जीवंतता और प्रयास कहा जाता है। “जीवंतता, प्रयास, दृढ़ रहना चाहिए”: जीवंतता, प्रयास, दृढ़ रहना चाहिए, दृढ़ रहना चाहिए, दृढ़ धारक होना चाहिए, एक स्थापित धारक होना चाहिए।

202 · तुम्हें चोरी नहीं करनी चाहिए और व्यर्थ की बातें नहीं करनी चाहिए, और कमजोर और बलवान दोनों के साथ दयालुता से पेश आना चाहिए। जब भी मन विचलित हो, उसे यह जानना चाहिए कि उसे "अंधकारमय पक्ष" को दूर करना चाहिए।

“चोरी न करो, व्यर्थ की बातें न करो”: यहाँ, भिक्षु द्वारा देने और लेने से इनकार करने के बाद, उसे वह होना चाहिए जिसने न दिया हो और न लिया हो, वह जो दिया गया हो, और जिन्हें दिया गया है उनसे अपेक्षा की जानी चाहिए; उन्हें चोरी न करने और पवित्र जीवन जीने के लिए प्रेरित होना चाहिए। “व्यर्थ की बातें न करो”: यहाँ, भिक्षु द्वारा झूठ का त्याग करने के बाद, उसे झूठ बोलने वालों, सच बोलने वालों, सत्यवादी, विश्वसनीय, भरोसेमंद और संसार को धोखा न देने वालों से मुक्त होना चाहिए।

“कमजोर और बलवान दोनों को दया भाव से स्पर्श करना चाहिए”: “दया” का अर्थ है सभी प्राणियों के प्रति दया, करुणा, करुणा, सहानुभूति, दया, निःस्वार्थता, द्वेष रहित, हानि रहित, और अच्छे स्वभाव वाले व्यक्ति। “कायर (कमजोर)” वे हैं जो कांपते हैं, प्यास से कांपते हैं, और वे जो भय से मुक्त हैं, साथ ही वे जो भय से मुक्त होने से भयभीत हैं। उन्हें कायर क्यों कहा जाता है? वे कांपते हैं, भयभीत होते हैं, आतंकित होते हैं, और इसी कारण उन्हें कायर कहा जाता है। “बलवान” वे हैं जो कांपने और प्यास से मुक्त हैं, और वे जो भय से मुक्त हैं। उन्हें बलवान क्यों कहा जाता है? वे कांपते या डरते नहीं, न आतंकित होते हैं, न भयभीत होते हैं, इसीलिए उन्हें बलवान कहा जाता है। "कमजोर और बलवान दोनों को दयालुता से स्पर्शित और परिपूर्ण होना चाहिए, दयालुता से चलने वाले हृदय से, विशालता, उत्कृष्टता, असीमता से, और बिना किसी द्वेष के, पूरे संसार को एक निर्दोष हृदय से भर देना चाहिए और वहीं निवास करना चाहिए।"

“जब भी मन अशांत हो, उसे जानना चाहिए”: “जब भी” का अर्थ है जब भी। “मन” से तात्पर्य सभी प्रकार के मन, इरादे, हृदय, शुद्ध मन, मूल मन, चेतना, चेतना का संचय और उससे संबंधित चेतना से है। शरीर से बुराई करने पर मन अशांत, उत्तेजित, गतिशील, प्रभाव डालने वाला, अस्थिर, घूमने वाला और बेचैन हो जाता है; शब्दों से बुराई करने पर...(अस्पष्ट), ...इरादे से..., लोभ, पीड़ा, अज्ञानता, ...(अस्पष्ट)। “जब भी मन अशांत हो, उसे जानना चाहिए”: उसे मन की अशांत अवस्था को जानना और समझना चाहिए।

“उसे ‘अंधकारमय पक्ष’ से दूर भगा देना चाहिए”: “अंधकार” का अर्थ है राक्षस के रिश्तेदार, अंधकार का स्वामी, वह जो अपनी सीमा तक पहुँच चुका है, और बहिष्कृत। अंधकारमय पक्ष शैतान का पक्ष है, शैतान का फँसाने का जाल है, शैतान का काँटा है, राक्षस का भोजन है, राक्षस का क्षेत्र है, राक्षस का निवास स्थान है, राक्षस की यात्रा अवस्था है, और राक्षस का बंधन है। इसे मिटा देना चाहिए। या, अंधकारमय पक्ष शैतान का पक्ष है, अस्वास्थ्यकर पक्ष है, वह पक्ष है जो पीड़ा का कारण बनता है, वह पक्ष है जो नरक की ओर ले जाता है, वह पक्ष है जो पशु जगत की ओर ले जाता है, और वह पक्ष है जो प्रेतलोक की ओर ले जाता है। उसे त्याग देना चाहिए, भगा देना चाहिए, समाप्त कर देना चाहिए और इसे मिटा देना चाहिए।

203 · किसी को क्रोध या अहंकार के वश में नहीं आना चाहिए; अपनी जड़ों को खोदकर स्थिर खड़े रहना चाहिए, दूसरे, चाहे वह वांछनीय हो या अवांछनीय, जीवित रहने वाले को वास्तव में विजय प्राप्त करनी चाहिए।

“क्रोध या अहंकार के वश में नहीं आना चाहिए”: “क्रोध,” ...(हटा दिया गया, पिछले अनुभाग देखें)। “अहंकार,” ...(हटा दिया गया, पिछले अनुभाग देखें)। “क्रोध और अहंकार के वश में नहीं आना चाहिए”: क्रोध और अहंकार के वश में नहीं आना चाहिए, क्रोध और अहंकार को त्याग देना चाहिए, दूर भगा देना चाहिए, समाप्त कर देना चाहिए और उसका अस्तित्व ही समाप्त कर देना चाहिए।

“उनकी जड़ों को उखाड़ फेंकने के बाद, उन्हें स्थिर खड़े रहना चाहिए”: क्रोध की जड़ क्या है? अज्ञान ही जड़ है, तर्क भी जड़ है, अहंकार जड़ है, लज्जाहीनता जड़ है, हठ जड़ है। यही क्रोध की जड़ है। अहंकार की जड़ क्या है? अज्ञान ही जड़ है, ... यही अहंकार की जड़ है। “उनकी जड़ों को उखाड़ फेंकने के बाद, उन्हें स्थिर खड़े रहना चाहिए”: क्रोध और अहंकार की जड़ों को उखाड़ फेंकने के बाद, उखाड़ फेंकने के बाद, निकालने के बाद,

हटाने के बाद, पूरी तरह से हटाने के बाद, काटने के बाद, भगाने के बाद, समाप्त करने के बाद, अस्तित्वहीन करने के बाद, व्यक्ति को स्थिर खड़े रहना चाहिए, और पूरी तरह से स्थिर खड़े रहना चाहिए।

“द्वितीय, चाहे प्रिय हो या अप्रिय, जीवित रहने वालों को ही विजय प्राप्त करनी चाहिए”: “द्वितीय,” वाक्यों का क्रम; वाक्यों का जुड़ाव; वाक्यों की पूर्णता; शब्दों का संयोजन; वाक्यांशों का संबंध; यही वाक्यों का क्रम है, जो “द्वितीय” है। “सुंदर,” सुंदरता दो प्रकार की होती है: ...(छोड़ा गया, पिछले खंड देखें)। “वास्तव में,” यही निर्णायक भाषा है, निर्विवाद भाषा है, आत्मविश्वास से भरी भाषा है, अद्वैत है, निर्विवाद पठन है, आदेशात्मक भाषा है, त्रुटिरहित भाषा है (असफलता रहित भाषा), यही पुष्टि का शब्द है, जो “वास्तव में” है। “द्वितीय, चाहे प्रिय हो या अप्रिय, विजेता को ही विजय प्राप्त करनी चाहिए”: प्रिय, अप्रिय; वांछनीय, अवांछनीय; सुखी, कड़वी; आनंद, दुःख; वांछनीय, अस्वीकार्य, विजेता को ही विजय प्राप्त करनी चाहिए, या विजयी को ही विजय प्राप्त करनी चाहिए।

204 · जब ज्ञान को आगे रखा जाता है, जब अच्छा आनंद होता है, तो उन खतरों पर काबू पाना चाहिए, व्यक्ति को सीमा पर पड़े रहने के दुख पर विजय प्राप्त करनी चाहिए, और रोने के चारों तरीकों पर विजय प्राप्त करनी चाहिए।

“बुद्धि को आगे रखा जाता है, और उसमें आनंद होता है”: “बुद्धि,” ...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)। “बुद्धि को आगे रखा जाता है,” यहाँ, एक विशेष प्रकार के लोग बुद्धि को आगे रखते हैं और पीछे चलते हैं। बुद्धि ध्वज है, बुद्धि पताका है, बुद्धि वृद्धि है, अधिक विवेकशील, अधिक सरल, अधिक गहराई से विचार करने वाला, अधिक समग्र रूप से विचार करने वाला, और उन लोगों की तरह जीने वाला जो समझते हैं, जिनके पास चरित्र है, जिनके पास अधिक है, जो जोर देते हैं, जो उसे लक्ष्य बनाते हैं, जो मेहनती हैं, जो उनकी ओर झुकते हैं, जो उन पर विजय प्राप्त करते हैं, जो सुधार करते हैं, जिनके पास अधिक चरित्र है, जिनके पास अधिक है, जो उस पर जोर देते हैं, जो उसे लक्ष्य बनाते हैं, जो मेहनती हैं, जो उसकी ओर झुकते हैं, जो विजय प्राप्त करते हैं, जो वृद्धि करते हैं।

या फिर, चलते समय, वह जानता है: "मैं चलता हूँ।" या, खड़े होते समय, वह जानता है: "मैं खड़ा हूँ।" या, बैठते समय, वह जानता है: "मैं बैठा हूँ।" या, लेटते समय, वह जानता है: "मैं लेटा हूँ।" या, वह शरीर की गति को जानता है।

या, “जब आप आगे और पीछे चलते हैं, तो आप कर्ता के प्रति सही रूप से सजग होते हैं; जब आप आगे और पीछे देखते हैं, तो आप कर्ता के प्रति सही रूप से सजग होते हैं; जब (शरीर) झुकता और फैलता है, ...; कपड़े पहने हुए, कटोरे और कोट पकड़े हुए, ...; पीते, खाते, चबाते और स्वाद लेते समय कर्ता का सही ज्ञान होना; पेशाब और शौच करते समय कर्ता का सही ज्ञान होना; चलते, रहते, बैठते, लेटते, जागते, बोलते और चुप रहते समय कर्ता का सही ज्ञान होना।” [MN.10/DN.22]

“अच्छी खुशी,” बुद्ध स्मरण से उत्पन्न होती है, और खुशी अच्छी खुशी है। ...धम्म के कारण..., ...भिक्षु स्मरण के कारण..., उपदेश, दान, स्वर्ग, श्वास लेना और छोड़ना, मृत्यु, शरीर, मौन... [एएन.1.297] आनंद उत्पन्न होता है, और आनंद अच्छी खुशी है।

“उन खतरों को दबा देना चाहिए”: “खतरे,” दो प्रकार के खतरे हैं: .... “उन खतरों को दबा देना चाहिए”: उन खतरों को दबा देना चाहिए, पराजित कर देना चाहिए, कुचल देना चाहिए, समाप्त कर देना चाहिए, रौंद देना चाहिए।

“सीमा पर पड़े रहने के दुख पर विजय प्राप्त करनी चाहिए”: “दुखी,” वह व्यक्ति जो खुश नहीं है, दुखी है, बहुत दुखी है, बेहद दुखी है, असंतुष्ट है और भयभीत है। “सीमा पर पड़ा रहना,” यदि वह सीमावर्ती निवास में या उच्चतर सद्गुण धर्म में दुखी है, तो उसे इस दुख पर विजय प्राप्त करनी चाहिए, विजयी होना चाहिए, इसे पार करना चाहिए...

“रोने के चार तरीकों पर विजय प्राप्त करनी चाहिए”: रोने के चार तरीकों पर विजय प्राप्त करनी चाहिए, उन्हें पूरी तरह से जीत लेना चाहिए, उन्हें पराजित करना चाहिए, ...

205 · मैं क्या खाऊँगा, या कहाँ खाऊँगा? मुझे अच्छी नींद नहीं आई, या आज मैं कहाँ सोऊँगा? ये विलापपूर्ण विचार, विद्वानों को संयमित करने चाहिए, बेघर यात्री।

"मैं क्या खाऊँगा, या कहाँ खाऊँगा?": "मैं क्या खाऊँगा?" मैं किस प्रकार का चावल, या दलिया, या नूडल्स, या मछली, या मांस खाऊँगा? "मैं कहाँ खाऊँगा?" मैं इसे (भोजन) कहाँ से प्राप्त करूँगा: खत्तीय परिवार में, या ब्राह्मण परिवार में, या वेस परिवार में, या शुद्ध परिवार में?

"सचमुच मुझे अच्छी नींद नहीं आई, वरना आज मैं कहाँ सोऊँगा?": आज रात मुझे अच्छी नींद नहीं आई: लकड़ी के तख्ते पर, या छोटी चटाई पर, या चमड़े के तकिये पर, या घास की चटाई पर, या पत्तों की चटाई पर, या पुआल की चटाई पर। मैं रात को कहाँ सोऊँगा: पलंग पर, या पलंग पर बैठकर, या तकिये पर, या लंबे तकिये पर, या भिक्षु के कमरे में, या आधे छत वाले घर में, या ऊँची इमारत में, या समतल घर में, या गुफा में?

"ये विलापपूर्ण विचार": "ये विचार" भोजन से संबंधित दो विचार और निवास से संबंधित दो विचार हैं। जो रोएंगे, वे ही रोएंगे। जो विलाप करेंगे, वे ही विलाप करेंगे।

"विद्वानों को संयम बरतना चाहिए, बेघर राहगीरों": "विद्वान," उन्हें विद्वान क्यों कहा जाता है? एक विद्वान के रूप में वह "सीखता है"। वह क्या अध्ययन करता है? वह उपदेशों को बढ़ाना सीखता है, वह बुद्धि को बढ़ाना सीखता है, और वह ज्ञान को बढ़ाना भी सीखता है। ...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)। ये तीनों शिक्षाएँ वह तब सीखता है जब वह (ध्यान देते हुए) का सामना करता है; .... इसी कारण उसे विद्वान कहा जाता है। संयम बरतने, दूर करने, जाने देने, शांत होने, काटने, खारिज करने और रुकने के लिए, उसे उपदेशों को बढ़ाना सीखना चाहिए, उसे बुद्धि को बढ़ाना सीखना चाहिए, और उसे ज्ञान को बढ़ाना भी सीखना चाहिए। ये तीनों शिक्षाएँ तब सीखनी चाहिए जब वह (ध्यान देते हुए) का सामना करता है; ....

"बेघर यात्री," घर पर यात्री कैसा होता है? यहाँ, एक विशेष प्रकार के लोगों के सामने घर की बाधाएँ, समूह (भीड़) की बाधाएँ, निवास, वस्त्र, सामूहिक भोजन, आवास, रोगियों की ज़रूरतें और चिकित्सा संबंधी आवश्यकताएँ होती हैं। यही घर का यात्री है। बेघर यात्री क्या होता है? यहाँ, भिक्षु के सामने घर की बाधाएँ, समूह की बाधाएँ नहीं होतीं...

"मगध, कोसल और वज्जीय क्षेत्र में कुछ भिक्षु जंगली हिरण की तरह बंधनमुक्त होकर भूमि पर विचरण करते हैं और बिना आश्रय के रहते हैं।" [एसएन.9.4]

"भटकना अच्छा है, कुशलता से जीना अच्छा है, बेघर होना हमेशा अच्छा है, अर्थ की खोज करना, कुशल व्यवहार करना, यही सब कुछ से रहित व्यक्ति के लिए समान रूप है।" [थग.1.36]

206 · सही समय पर भोजन और वस्त्र प्राप्त करने के बाद, उसे उचित मात्रा का ज्ञान होना चाहिए और यहीं संतुष्ट रहना चाहिए। इन (वस्तुओं) के प्रति सतर्क और गाँव में संयमित रहते हुए, उसे उकसाए जाने पर भी कठोर शब्द नहीं बोलने चाहिए।

समय पर भोजन और वस्त्र प्राप्त करने के बाद: भोजन में चावल, दलिया, नूडल्स, मछली और मांस शामिल हैं। वस्त्रों में छह प्रकार के कपड़े शामिल हैं: लिनन, कपास, रेशम, स्वेटर, बोरी और भांग। "समय पर भोजन और वस्त्र प्राप्त करने के बाद": वस्त्र प्राप्त करने के बाद, भोजन प्राप्त करने के बाद: बिना किसी छल, बिना किसी बात, बिना किसी संकेत, बिना किसी व्यंग्य, बिना किसी अन्य लाभ के बदले में कोई लाभ, बिना लकड़ी का दान, बिना बांस का उपयोग करके वस्तुएँ न दें, बिना पत्तों वाली वस्तुएँ दें, बिना फूलों वाली वस्तुएँ दें, बिना स्नान वस्त्र वाली वस्तुएँ दें, बिना वाशिंग पाउडर का उपयोग करें, बिना मिट्टी का उपयोग करें, बिना दाँत साफ करने वाली लकड़ी का उपयोग करें, बिना चेहरे धोने वाले कपड़े का उपयोग करें, बिना चापलूसी, बिना स्वीकारोक्ति, बिना निंदा, बिना घर बसाए (पालतू पशु), बिना पशु, बिना ज्योतिष, बिना दूत के रूप में कार्य करना, बिना दूत भेजना, बिना छोटे-मोटे काम करना, बिना चिकित्सा उपचार का उपयोग करना (नया काम शुरू करना), बिना भोजन देना या बदले में कुछ देना, बिना दान देना, प्राप्त करने के बाद, प्राप्त करने के बाद, और धम्म के अनुसार उचित रूप से प्राप्त करने के बाद।

“उसे यहाँ संतुष्ट होने के लिए उचित मात्रा का ज्ञान होना चाहिए”: “उसे उचित मात्रा का ज्ञान होना चाहिए,” उसे उचित मात्रा का ज्ञान दो तरीकों से होना चाहिए: ग्रहण करने से या उपयोग करने से। ग्रहण करने से उचित मात्रा का ज्ञान कैसे प्राप्त करें? भले ही देने के लिए कुछ ही वस्तुएँ हों, वह दाता के घर के प्रति दया भाव से, उसकी रक्षा करते हुए और उसके प्रति सहानुभूति रखते हुए उसे स्वीकार करता है; यद्यपि देने के लिए बहुत सी वस्तुएँ हों, वह केवल उन्हीं वस्त्रों से पेट भरता है जो उसके द्वारा ग्रहण किए गए शरीर की रक्षा करते हैं। यही ग्रहण करने से उचित मात्रा का ज्ञान है। उपयोग करने से उचित मात्रा का ज्ञान कैसे प्राप्त करें?

जांच के बाद उपयोग किए जाने वाले कपड़े: केवल ठंड से बचाव, गर्मी से बचाव, मक्खी, मच्छर, धूप और सांप के संपर्क से बचाव और जननांगों को छिपाने के लिए।

इसका उपयोग निरीक्षण के बाद ही किया जाता है और इसे पोषण दिया जाता है: न तो आनंद के लिए, न ही नशे के लिए, न ही सुंदर शरीर के लिए, न ही मान-सम्मान के लिए, बल्कि केवल इस शरीर के अस्तित्व और संरक्षण के लिए, हानि को रोकने के लिए और ब्रह्म का पालन-पोषण करने के लिए। इस प्रकार, मैं पिछली भावनाओं को दूर भगाऊंगा, नई भावनाओं को जागृत नहीं होने दूंगा, स्वस्थ रहूंगा, दोषरहित रहूंगा और शांति से जीवन व्यतीत करूंगा।

निरीक्षण के बाद जिम्मेदार निवास: केवल सर्दी से बचाव, गर्मी से बचाव, मक्खी-मच्छर, धूप और सांप के संपर्क से बचाव, जलवायु संबंधी खतरों को दूर करने और अकेले बैठने के आनंद के लिए।

जांच के बाद, रोगी की ज़रूरतों और चिकित्सीय ज़रूरतों का इस्तेमाल केवल उत्पन्न हुई झुंझलाहट की भावना को शांत करने के लिए किया जाता है, और ज़्यादा से ज़्यादा गुस्से को रोकने के लिए। [एम.एन.2]

उसे इस प्रकार उपयोग करने के लिए सही मात्रा का ज्ञान होना चाहिए। "उसे सही मात्रा का ज्ञान होना चाहिए," इन दो पहलुओं से, उसे सही मात्रा का ज्ञान और समझ होनी चाहिए।

“यहाँ जिस धार्मिक सिद्धांत की संतुष्टि होती है,” यहाँ भिक्षु वह व्यक्ति है जो किसी भी वस्त्र में संतुष्ट रहता है और किसी भी वस्त्र की प्रशंसा करता है। वह वस्त्रों के कारण अनुचित इच्छाओं में नहीं पड़ता, और जब उसे वस्त्र नहीं मिलते तो वह भयभीत नहीं होता, उनके प्रति लालची नहीं होता, निराश नहीं होता, बल्कि उस हानि को देखकर भी निर्दोष भाव से उसका सदुपयोग करता है [SN.16.1], और वह इन वस्त्रों को संतुष्टिदायक नहीं मानता तथा दूसरों को तुच्छ समझकर अपनी प्रशंसा नहीं करता। जो कुशल, आलसी नहीं, सही ज्ञान रखने वाले और सचेत होते हैं, वे ही सर्वोच्च पवित्र जाति में रहने वाले भिक्षु कहलाते हैं [DN.33/AN.4.28]।

इसके अलावा, भिक्षु वह व्यक्ति होता है जो उसे जो भी भोजन दिया जाता है, उससे संतुष्ट रहता है, ...(छोड़ा गया)।

इसके अलावा, भिक्षु वह व्यक्ति है जो किसी भी निवास स्थान से संतुष्ट रहता है, ...(छोड़ा गया)।

इसके अलावा, भिक्षु वह व्यक्ति है जिसने किसी भी रोगी की जरूरतों और चिकित्सा संबंधी आवश्यकताओं को पूरा किया है, ...(छोड़ा गया)।

“वह इन सबमें संरक्षक है और गाँव में आत्मसंयम रखता है”: “वह इन सबमें संरक्षक है,” वह वस्त्र, भोजन, आश्रय, रोगियों की ज़रूरतों और चिकित्सा संबंधी आवश्यकताओं में संरक्षक और रक्षक है। संरक्षक, रक्षक। या, वह हर जगह संरक्षक, रक्षक, संरक्षक है।

"गांव में वह संयमित पैदल यात्री है," गांव में वह संयमित, विवेकशील, सतर्क, रक्षक और संरक्षक है।

“उकसाए जाने पर भी उसे कठोर शब्द नहीं बोलने चाहिए”: जब उसकी निंदा की जाए, उसे फटकारा जाए, उसकी बदनामी की जाए, उसे नाराज किया जाए, अपमानित किया जाए या उसका अपमान किया जाए, तो उसे हिंसक रूप से जवाब नहीं देना चाहिए, बहस नहीं करनी चाहिए, डांटना

और अपमान नहीं करना चाहिए, क्रोध नहीं भड़काना चाहिए, पलटकर बहस नहीं करनी चाहिए [SN.7.2], झगड़ा नहीं करना चाहिए, विवाद नहीं करना चाहिए, उसे त्याग देना चाहिए, भगा देना चाहिए, ...

207 · जिनकी निगाहें नीचे की ओर हैं और जो भटकते नहीं हैं, जो ध्यान में लीन हैं और जो अधिक गंभीर हैं, शांत अवस्था में जाने के बाद, उन्हें सोचने और पछताने का इरादा छोड़ देना चाहिए।

"जिसकी निगाहें झुकी हुई हैं और जिसकी निगाहें इधर-उधर नहीं भटकतीं": आँखें कैसे भ्रमित होती हैं? ...(अस्पष्ट भाग, पिछले अनुभाग देखें)। आँखें कैसे भ्रमित नहीं होतीं? ...(अस्पष्ट भाग, पिछले अनुभाग देखें)।

"और गैर-भटकन," यह भटकन कैसे है? ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"भटकन रहित रहने से," उसे भटकने की प्रवृत्ति का त्याग करना चाहिए, उसे दूर भगा देना चाहिए, उसका अंत कर देना चाहिए, उसे अस्तित्वहीन कर देना चाहिए। उसे भटकने से अलग होना चाहिए, संयमी होना चाहिए, प्रस्थान करना चाहिए, विरक्त होना चाहिए, त्याग देना चाहिए, मुक्त होना चाहिए, बंधनों से मुक्त होना चाहिए, उसे बंधनों से दूर रहना चाहिए, उसे एकांत में बैठने के लिए इच्छुक और एकांत में बैठना पसंद करने वाला व्यक्ति बनना चाहिए, जो ध्यान का तिरस्कार नहीं करता, जिसके दर्शक होते हैं, जो खाली घर प्राप्त करते हैं, ध्यान करने वाले, जो ध्यान से प्रेम करते हैं, एकता का अभ्यास करने वाले, अपने हितों के प्रशंसक।

"जो लोग ध्यान में लीन हैं, वे अधिक संयमी हैं": "जो लोग ध्यान में लीन हैं" वे दो प्रकार से ध्यान में लीन होते हैं: या तो अविकसित प्रथम ध्यान के उद्‌भव के लिए, उसे सुदृढ़ रूप से नियंत्रित करने के लिए, या उस द्वितीय ध्यान के लिए जो अभी तक उत्पन्न नहीं हुआ है... (छोड़ा गया), तृतीय ध्यान..., चतुर्थ ध्यान...। या, प्रथम ध्यान अभ्यास, अभ्यास और अधिक अभ्यास में उत्पन्न हुआ है, या द्वितीय ध्यान..., तृतीय ध्यान..., चतुर्थ ध्यान अभ्यास, अभ्यास और अधिक अभ्यास में है।

"अधिक संयमी लोग।" यहाँ, भिक्षु दिन के दौरान शांतिपूर्वक चलने और बैठने से मन को बाधाओं से शुद्ध करता है, ...

"जब आप शांत होने लगते हैं, तो आप एकाग्रता की अवस्था में होते हैं": "शांति," अर्थात् चौथे ध्यान की शांति, असावधानी, अवलोकन, मन की स्थिरता, मन की समता, मन की शांत अवस्था और मन की तटस्थ अवस्था। "स्थिर अवस्था," अर्थात् मन की स्थिरता, स्थिरता, अविचलित, स्थिर मन, एकाग्रता, स्थिर मूल और समाधि। "शांत होने के बाद एकाग्रता की अवस्था": चौथे ध्यान में, व्यक्ति शांत मन की अवस्था में आ जाता है, जो अशांत नहीं बल्कि स्थिर होता है।

उसे सोचने और पछताने की इच्छा को त्याग देना चाहिए: "सोच" नौ प्रकार की होती है: स्वार्थपूर्ण सोच, द्वेषपूर्ण सोच, हानिकारक सोच, परिवार की सोच, भूमि की सोच, मृत्यु की सोच, दूसरों के प्रति सहानुभूति की सोच, मान-सम्मान और प्रतिष्ठा की सोच, और तिरस्कार से बचने की सोच। उसके लिए, स्वार्थपूर्ण सोच, द्वेषपूर्ण सोच की इच्छा होती है... या, अज्ञानतापूर्ण सोच, चिंतन और मनन की इच्छा; अनुचित सोच...; अहंकार...; घमंड...; लापरवाही...; हेकड़ी...।

"अफसोस," ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"उसे सोचने और पछताने के इरादे को काट देना चाहिए": खोज करने, सोचने और पछताने के इरादे को काट देना चाहिए, अलग कर देना चाहिए, नष्ट कर देना चाहिए, दूर भगा देना चाहिए, समाप्त कर देना चाहिए, उसका अस्तित्व समाप्त कर देना चाहिए।

208 · जब शब्दों द्वारा प्रेरित किया जाए तो उसे सचेत और प्रसन्न होना चाहिए, उसे साथी ब्राह्मणों की बंजरता को नष्ट करना चाहिए, उसे दयालु शब्द कहने चाहिए (पर) सीमा से अधिक नहीं होना चाहिए, उसे लोगों के धर्म पर विवाद करने का इरादा नहीं करना चाहिए।

"जब कोई गुरु, या कोई प्रतिष्ठित व्यक्ति, या गुरु के समतुल्य कोई व्यक्ति, या कोई मित्र, या परिचित, या कोई करीबी व्यक्ति, या कोई साथी उसे डांटते हुए कहे: "भिक्षुओं! यह तुम्हारे लिए उचित नहीं है; यह वह चीज है जो तुमने हासिल नहीं की है; यह तुम्हारे लिए उपयुक्त नहीं है; यह तुम्हारे लाभ के लिए बिना उपदेशों के है।" इस आग्रह को याद करके, उसे प्रसन्न होना चाहिए, खुश होना चाहिए, चाहना चाहिए, स्वीकार करना चाहिए, आशा रखनी चाहिए और प्रार्थना करनी चाहिए। उदाहरण के लिए, एक युवती या पुरुष जिसे सिर सजाना पसंद है, उसने अपना सिर धोया और हरे कमल के फूल की अंगूठी, चमेली के फूलों की एक बड़ी माला और सिर पर पहनने के लिए एक पुष्पमाला प्राप्त की, जिसे दोनों हाथों से ग्रहण करके सिर के ऊपर पहना जा सकता है। [MN.5] उसे प्रसन्न होना चाहिए, खुश होना चाहिए, चाहना चाहिए, स्वीकार करना चाहिए, आशा रखनी चाहिए और प्रार्थना करनी चाहिए।

"जैसे कोई खजाने की ओर इशारा करता है, वैसे ही पाप को देखने वाले को उसकी ओर देखना चाहिए। आरोप लगाने वाले, बुद्धिमान, ऐसे बुद्धिमान व्यक्ति को उसके निकट रहना चाहिए। ऐसा निकट व्यक्ति बुराई से श्रेष्ठ हो सकता है। वह शिक्षा दे और चेतावनी दे, वह नीचता से रक्षा करे। वह वास्तव में अच्छे लोगों का प्रिय है, बुरे लोगों का नहीं।" [ध. 76-77]

"शब्दों से प्रेरित लोगों को सचेत होकर प्रसन्न होना चाहिए और सहोदर ब्राह्मण की उदासी को नष्ट करना चाहिए": "उसी सहोदर ब्राह्मण," जिसका आचरण, व्रत और शिक्षार्थी एक ही है। "उसे उसी ब्राह्मण की उदासी को नष्ट करना चाहिए," उसे सहोदर ब्राह्मण के हृदय की पीड़ा और उत्पन्न हो रही कठोरता को नष्ट करना चाहिए। उसे पाँच प्रकार की हृदयहीनता [MN.16] को तोड़ना चाहिए और तीन प्रकार की बांझपन [SN.45.166] को भी तोड़ना चाहिए: लोभ की बांझपन, क्रोध की बांझपन, अज्ञान की बांझपन को तोड़ना चाहिए, नष्ट करना चाहिए, पूर्णतः नष्ट करना चाहिए।

"उसे अच्छे शब्द बोलने चाहिए (पर) सीमा से अधिक नहीं": "उसे बुद्धिमानी से बोलना चाहिए और लाभप्रद, धर्म से युक्त शब्दों की प्रतीक्षा करनी चाहिए, उचित समय, तर्क और संयम के साथ, उसे बोलना चाहिए। (पर) सीमा से अधिक नहीं होना चाहिए।" "सीमा," दो प्रकार की सीमाएँ हैं: उचित समय की सीमा और उपदेशों की सीमा। उचित समय की सीमा क्या है? जिन शब्दों के लिए उचित समय बीत चुका है, उन्हें नहीं बोलना चाहिए, जिन शब्दों ने सीमा पार कर ली है, उन्हें नहीं बोलना चाहिए, जो शब्द सीमा पार कर चुके हैं, उन्हें उचित समय पर नहीं बोलना चाहिए, जो शब्द भविष्य में उचित समय पर आएंगे, उन्हें नहीं बोलना चाहिए, और जो शब्द भविष्य में उचित समय पर आएंगे, उन्हें नहीं बोलना चाहिए। उसे भविष्य में समय और सीमाओं पर निर्भर शब्दों को नहीं बोलना चाहिए।

"जो सही समय पर आता है, और लंबे समय तक बोलता है, उसे कोयल के बच्चे की तरह सो जाने की स्थिति में माना जाता है।" [जात.4.121]

यह उचित समय की सीमा है। उपदेशों की सीमाएँ क्या हैं? उसे दूषित शब्द, घृणित शब्द, मूर्खतापूर्ण शब्द नहीं बोलने चाहिए, उसे झूठ नहीं बोलना चाहिए, उसे फूट डालने वाले शब्द नहीं बोलने चाहिए, उसे बुरे शब्द नहीं बोलने चाहिए, उसे किसी को बताना नहीं चाहिए, उसके बारे में बात नहीं करनी चाहिए, उसे समझाना नहीं चाहिए, उसके बारे में बोलना नहीं चाहिए, यही उपदेशों की सीमा है।

"उसे लोगों के धर्म पर विवाद करने का इरादा नहीं रखना चाहिए": "लोग" क्षत्रिय, ब्राह्मण, वेस, शुद्ध, गृहस्थ परिवार, भिक्षु, स्वर्ग और मनुष्य हैं। विवाद, निंदा, फटकार, लोगों का अपमान, प्रशंसा न मिलना, बुराई देखना, बुरी आजीविका, इन सब बातों का मन न बनाना चाहिए, ऐसा इरादा न पैदा करना चाहिए, ऐसा कुछ भी नहीं होने देना चाहिए।

209 · इसके अलावा, दुनिया में पाँच प्रकार की धूल है, जिसके लिए सचेत लोगों को संयम सीखना चाहिए, सभी रूपों, ध्वनियों और गंधों में, सभी स्वादों और स्पर्शों में, उसे लालच पर विजय प्राप्त करनी चाहिए।

"इसके अलावा, दुनिया में पांच प्रकार की धूल होती है": "इसके अलावा," वाक्यों का निरंतरता; .... "पांच प्रकार की धूल," आकार की धूल, ध्वनि की धूल, गंध की धूल, स्वाद की धूल और स्पर्श की धूल।

मैल के बदले लालच को मैल (धूल) कहा जाता है। "धूल" का अर्थ लालच के समान ही है। मैल का त्याग करने के बाद, ऋषि-मुनि मैल से दूर रहने वालों की शिक्षाओं में निवास करते हैं। मैल के बदले घृणा... मैल के बदले अज्ञान...

"इस दुनिया में," ...।

जो लोग सचेत हैं, उन्हें अपने विचारों को नियंत्रित करने के लिए सीखना चाहिए: रूप, ध्वनि, गंध और स्पर्श के प्रति आसक्ति को नियंत्रित करने के लिए। जो लोग विचार करते हैं, उन्हें विचार, स्मरण, स्मरण की अवस्था, प्रतिधारण, अपभ्रंश न होना, न भूलने की अवस्था, मन का मूल, मन की शक्ति, सचेतनता और अपभ्रंश का मार्ग, यही सचेतनता कहलाता है; पूर्ण रूप से धारण करने वाला व्यक्ति विचारशील कहलाता है, जो पूर्ण रूप से लीन रहता है, जिसके पास पर्याप्तता है, और जो इस सचेतनता को धारण करता है। उन्हें सीखना चाहिए...। जो लोग विचार करते हैं, उन्हें अपने विचारों को नियंत्रित करने के लिए सीखना चाहिए: रूप, ध्वनि, गंध और स्वाद के प्रति आसक्ति को नियंत्रित करने, त्यागने, शांत होने, काटने और रोकने के लिए, उन्हें उपदेशों को बढ़ाना सीखना चाहिए...।

"उसे रूपों, ध्वनियों, गंधों, स्वादों और स्पर्शों में लालच पर विजय प्राप्त करनी चाहिए": उसे रूपों, ध्वनियों, गंधों, स्वादों और स्पर्शों में लालच पर विजय प्राप्त करनी चाहिए, (इसे) पूरी तरह से जीत लिया जाना चाहिए, पराजित किया जाना चाहिए, अभिभूत किया जाना चाहिए, समाप्त किया जाना चाहिए, कुचल दिया जाना चाहिए।

210 · एक सचेत और मुक्त हृदय वाला भिक्षु इन धर्मों में अपनी इच्छाओं को संयमित करे, धर्म पर समयपूर्वक और उचित ढंग से विचार करे, और जब वह एक (एकीकृत) व्यक्ति बन जाए तो अंधकार का नाश करे। [इस प्रकार भगवान बुद्ध ने कहा।]

"इन धर्मों में उसे अपनी इच्छाओं को संयमित करना चाहिए": "इनमें," रूपों, ध्वनियों, गंधों, स्वादों, स्पर्शों में। "इच्छा," ...(छोड़ा गया, पिछले खंड देखें)। "उसे इन धर्मों में अपनी इच्छाओं को संयमित करना चाहिए": इन धर्मों में इच्छाओं को संयमित, निष्कासित, त्यागा, काटा, समाप्त किया जाना चाहिए और उनका अस्तित्व समाप्त कर दिया जाना चाहिए।

"सजग और मुक्त हृदय वाले भिक्षु": "भिक्षु," गुणी भिक्षु, या विद्वान भिक्षु। "जो सचेत हैं," सभी विचार, यादृच्छिक विचार... (हटा दिया गया), सजगता, विचारशीलता, और विचलित न होने का मार्ग विचार कहलाते हैं। रखना, पूरी तरह से रखना... (हटा दिया गया)।

"मन में दयालुता और विचारों वाले भिक्षु": प्रथम ध्यान का हृदय (मन) अलग हो गया है, ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"उन्होंने धम्म पर समयोचित और उचित ढंग से विचार किया": "समयोचित ढंग से," जब मन भटक रहा हो, तब समाथा का सही समय होता है, और जब मन एकाग्र हो, तब विपश्यना का सही समय होता है।

सही समय पर वह अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करता है, और अन्य समयों पर रुक जाता है। इसके अलावा, वह सही समय पर प्रसन्न होता है, सही समय पर हृदय पर ध्यान केंद्रित कर सकता है, सही समय पर अवलोकन करता है, सही समय पर ध्यान करने वाला और निपुण होता है। अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करने का सही समय कब है? संयम बरतने का सही समय कब है? आनंद का सही समय कब है? और समाधि का सही समय क्या है? मन को शांत करने का सही समय: इसे ध्यान करने वाले को कैसे समझाया जाए? जब हृदय एकाग्र हो, तब अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करो, और जब वह विलीन हो रहा हो, तब संयम बरतो। जब हृदय में कोई रुचि न हो, तब उसे तुरंत प्रसन्न होना चाहिए। जब भी हृदय प्रसन्न होता है, तब वह अविचलित और अत्यावश्यक बन जाता है। यही समाधि का सही समय है, अपने भीतर की भावना प्रसन्न होनी चाहिए। जब भी इन विधियों में से किसी एक का उपयोग ज्ञान प्राप्त करने के लिए किया जाता है, अपने मन को जानने और एकाग्रता में प्रवेश करने के बाद, तुरंत अवलोकन करना चाहिए। ज्ञानी व्यक्ति सही समय पर ज्ञाता बन जाता है, सही समय को जानने वाला और सही समय पर परिचित बन जाता है। सही समय पर हृदय की स्थिति के आधार पर भेदभाव किया जाना चाहिए।

"धर्म का समय पर और सही ढंग से अध्ययन करो": धर्म का सही अध्ययन करो: "सभी कर्म अनित्य हैं।" धर्म का सही अध्ययन करो: ....

"एकाग्रचित्त होकर उसे अंधकार का नाश करना चाहिए। [इस प्रकार भगवान बुद्ध ने कहा]": "एकाग्रचित्त होना, एक ही मन की अवस्था, विचलित न होने वाला मन, स्थिर मन, समाधि, स्थिर मन, एकाग्रता, ये सभी एकाग्रचित्तता हैं। उसे अंधकार का नाश करना चाहिए," लोभ के अंधकार का, घृणा के अंधकार का, अज्ञान के अंधकार का, दृष्टिहीनता के अंधकार का, अहंकार के अंधकार का, अपवित्रता के अंधकार का, बुरे कर्मों के अंधकार का, अंधत्व का, दृष्टिहीनता का, बुद्धिहीनता का, कष्टदायक गुटों का, जो निर्वाण की ओर नहीं ले जाते; उसका नाश करना चाहिए, उसे त्याग देना चाहिए, उसे दूर भगा देना चाहिए, उसका अंत कर देना चाहिए और उसका अस्तित्व समाप्त कर देना चाहिए।

"धन्य प्रभु," ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> निद्देसा >> निद्देसा 2.ए

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

<<<< पिछला अगला >>>>

Cūḷa Niddesa
परम पूज्य, अरहंत, प्रबुद्ध को नमस्कार।

दूर तट तक जाने के मार्ग की व्याख्या
प्रस्तावना
कोसल के रमणीय नगर से, दक्षिण मार्ग पर, शून्यता की इच्छा रखते हुए, वेदों का ज्ञान रखने वाला एक ब्राह्मण गया।

अस्सका राज्य में, दो देशों के बीच अलाका में, गोधावरी नदी के किनारे वह भीख मांगते और फल तोड़ते हुए रहता था।

जिस स्थान पर उसने शरण ली थी, उसके पास ही एक बड़ा गाँव था, जिसकी आमदनी से वह एक बड़ा बलिदान आयोजित करता था।

यज्ञ के बाद वह अपने फूस के घर लौट आया, और जब वह दोबारा अंदर आया, तो एक और ब्राह्मण वहाँ मौजूद था।

थके हुए पैरों, प्यासे, गंदे दांतों और धूल से सने सिर के साथ, वह (बाद वाला) उससे (पहले वाले से) मिलने गया, और पाँच सौ (इकाइयाँ) की भीख माँगी।

जब बावरी (पूर्वज) ने उसे देखा, तो उसने उसे बैठने के लिए आमंत्रित किया, पूछा कि क्या वह स्वस्थ और शांत है, और कहा:

मेरे पास जो भी धन था, मैंने वह सब दान कर दिया है, मुझे क्षमा करें, ब्राह्मण, मेरे पास पाँच सौ भी नहीं हैं।

(बाद वाला:) यदि तू इसे मुझे, जो माँगता हूँ, नहीं देगा, तो सातवें दिन तेरा सिर सात टुकड़ों में फट जाए।

जब उस धोखेबाज ने (सामान्य शिष्टाचार के साथ) यह भयानक श्राप दिया; ये शब्द सुनकर बावरी व्यथित हो गया।

वह कम खाने के कारण दुबला हो गया, मानो किसी तीर से घायल हो गया हो; जिनका हृदय ऐसा होता है, उनका मन ध्यान में प्रसन्न नहीं रहता।

उन्हें इतना दुखी देखकर, एक देवता जो उनका भला करना चाहते थे, बावरी के पास आए और बोले:

यह ढोंगी जो पैसे मांगता है, उसे सिर के बारे में कुछ नहीं पता, न ही सिर फोड़ने के बारे में, उसे इस बात का ज्ञान नहीं है।

(बावरी:) यदि ऐसा है, यदि आप जानते हैं, तो कृपया पूछे जाने पर मुझे बताएं, सिर और सिर फोड़ने के बारे में, मुझे आपके शब्द सुनने दें।

(देवता:) न तो मुझे यह पता है, न ही मेरी बुद्धि को यह ज्ञात है, केवल विजेता ही सिर फोड़ने के बारे में जानते हैं।

(बावरी:) यदि ऐसा है, तो इस धरती पर कौन जानता है, सिर और सिर फोड़ने के बारे में: कृपया मुझे उसके बारे में बताएं!

(देवता:) पूर्व में कपिलवस्तु के एक भिक्षु, जगत के गुरु, ओक्काक राजा के वंशज, शाक्यों के पुत्र, प्रकाश लाने वाले;

उनका धम्म दूसरे छोर तक पहुँच चुका है, सभी सिद्धांतों से परे जा चुका है, महान ज्ञान और शक्ति से परिपूर्ण ब्राह्मण बुद्ध, सभी धर्मों के ज्ञान से परिपूर्ण, भ्रष्टाचार से मुक्त, वह मुक्त व्यक्ति जो आसक्ति में विलीन हो चुका है।

वे बुद्ध हैं, जिनका संसार आदर करता है, जो संसार को धम्म का उपदेश देते हैं, उनके पास आओ और पूछो, वे तुम्हें समझा देंगे।

“प्रबुद्ध पुरुष” शब्द सुनकर बावरी प्रसन्न हुए। उनका दुःख कम हुआ, उनकी खुशी अपार हो गई।

प्रसन्न, उत्साहित और आनंदित होकर बावरी ने देवता से पूछा: किस गाँव, कस्बे या स्थान पर जाकर हम उस प्रबुद्ध व्यक्ति, सर्वोच्च द्विपाद प्राणी के दर्शन कर सकते हैं?

(देवता:) कोसल की भूमि में, सावत्थी में, विजेता, ज्ञानी पुरुष, शाक्यमुनि विराजमान हैं, जो अतुलनीय, संकटमुक्त, अनासक्त और मनुष्यों के श्रेष्ठ हैं।

तब ब्राह्मण ने अपने शिष्यों को बुलाया, जो वेदों के ज्ञाता थे: "विद्यार्थियों! आओ! मैं तुमसे कुछ कहूँगा, कृपया मेरी बातें ध्यान से सुनो।"

एक दुर्लभ दर्शन, अब वह संसार में प्रकट हो रहा है; वह प्रबुद्ध के रूप में जाना जाता है, इस दो पैरों वाले प्राणी के दर्शन के लिए सावत्थी की ओर शीघ्र प्रस्थान करो।

(छात्र:) हे ब्राह्मण, हम बुद्ध को कैसे जानेंगे? जो लोग उन्हें नहीं जानते, उन्हें बताइए कि हम उन्हें कैसे जान सकते हैं।

(बावरी:) वेदों में उनका वर्णन किया गया है, बत्तीस लक्षणों का क्रमवार पूर्ण वर्णन किया गया है।

जिनके शरीर पर ये गुण मौजूद हैं, एक महान व्यक्ति के ये लक्षण, उनके लिए दो ही रास्ते हैं, तीसरा रास्ता नहीं मिल सकता।

यदि वह घर पर रहता है, इस भूमि को जीतने के बाद, बिना लाठी और बिना तलवार के, वह न्याय से शासन करता है।

लेकिन यदि वह बेघर हो जाता है, तो वह पर्दा उठाने वाला, प्रबुद्ध और सर्वोच्च अरहंत बन जाता है।

मेरे वंश, उपनाम, विशेषताओं, वेदों, शिष्यों और आगे सिर तथा सिर विच्छेदन के बारे में: कृपया उनसे केवल मन में ही पूछें।

यदि वह बुद्ध हैं, निर्बाध द्रष्टा हैं, तो जब आप अपने मन से उनसे प्रश्न करेंगे, तो वे शब्दों में उत्तर देंगे।

बावरी के शब्दों को सुनने के बाद, सोलह ब्राह्मण शिष्य: अजिता, तिस्सा मेटेय्या, पुण्क, और मेट्टागु,

साथ ही धोतका और उपासिव, नंदा और हेमका, दो तोदेय और कप्पा, और बुद्धिमान जटुकन्नि।

भद्रावुध और उदय, ब्राह्मण पोसाला, चतुर मोगराज और महान ऋषि पिंगीय भी;

वे सभी जिनके शिष्य या अनुयायी हों, विश्व के प्रसिद्ध लोग, ध्यान करने वाले, ध्यान प्रेमी, अतीत में दृढ़ अभ्यास वाले;

बावरी से पूछने के बाद, वे उठे, उसके दाहिनी ओर घेरा बनाया, अपनी भेड़ की खाल पहनी और उत्तर की ओर चले गए।

पहले अलका का पतितथाना, फिर महिस्सती, उज्जेनी और गोनाधा, वेदिसा और वनसा,

कोसंबी और साकेत को भी, और सर्वोच्च नगर सावत्थी, सेतव्य, कपिलवस्तु, और कुसिनारा नगर को भी।

पावा और भोगा शहर, वेसाली, मगध शहर, और पसांक सीटिया (रॉक टेम्पल), सुखद और आकर्षक।

जैसे प्यासे व्यक्ति को ठंडा पानी सुकून देता है, जैसे व्यापारी को बड़ा लाभ मिलता है, जैसे गर्मी से परेशान लोगों को सूरज की छाया सुकून देती है, वैसे ही वे पहाड़ पर चढ़ गए।

उस समय, भगवान भिक्षु संघ के सामने विराजमान थे, और जंगल में दहाड़ते हुए शेर की तरह धम्म का उपदेश दे रहे थे।

अजिता ने बुद्ध को देखा: प्रकाश से बुने हुए सूर्य की तरह, पंद्रहवें दिन अपनी पूर्णता पर पहुँचते चंद्रमा की तरह।

बुद्ध और उनके संपूर्ण स्वरूप को देखकर, अजिता एक तरफ खड़ा हो गया और मन ही मन प्रश्न पूछने लगा:

कृपया हमें हमारे गुरु के जन्म के बारे में बताइए, कृपया हमें उनका उपनाम और उनके गुण बताइए, कृपया हमें वेदों में उनकी निपुणता के बारे में बताइए, और ब्राह्मण कितने छात्रों को शिक्षा देते हैं?

(भगवान:) उनकी आयु एक सौ बीस वर्ष है, उनका उपनाम बावरी है, उनके शरीर पर तीन विशेषताएं हैं, और वे तीनों वेदों के ज्ञाता हैं।

विशेषताओं और प्राचीन कथाओं के संदर्भ में, शब्दावली और अनुष्ठानों सहित, वह पाँच सौ (छात्रों) को शिक्षा देता है, और उसने अपने शिक्षण में पूर्णता प्राप्त कर ली है।

(अजिता, बिना बोले:) हे भगवान, जिनकी प्यास बुझ चुकी है, हमें बावरी के गुणों के बारे में बताइए ताकि हमें कोई संदेह न रहे।

(भगवान:) वह अपनी जीभ से अपना चेहरा ढक सकता है, उसकी भौहों के बीच सफेद बालों का गुच्छा है, उसका पुरुष अंग ढका हुआ है, यह जान लो, विद्यार्थी।

प्रश्न सुने बिना ही उत्तर सुनकर संघ में (धार्मिक) आनंद उत्पन्न हुआ, और हाथ जोड़कर उन्होंने विचार किया:

कौन सा देव या ब्रह्मा, या यहाँ तक कि सुजा के पति इंद्र, ये प्रश्न मन में पूछते हैं? वे किसे उत्तर देते हैं?

(अजिता, मौखिक रूप से): बावरी ने सिर और सिर फटने के बारे में पूछा, हे भगवान, कृपया उत्तर दें, हमारे संदेहों को दूर करने के लिए, हे महान ऋषि!

(भगवान:) अज्ञान "सिर" है, ज्ञान "दिमाग को चीरने वाला" है, जब इसे विश्वास, जागरूकता, एकाग्रता, इच्छा और जीवन शक्ति के साथ मिलाया जाता है।

धार्मिक भावनाओं से प्रेरित होकर, शिष्य ब्राह्मण ने अपनी खाल एक कंधे पर रखी और भगवान के चरणों में सिर झुकाकर गिर पड़ा।

(अजिता:) हे ब्राह्मण स्वामी बावरी, अपने शिष्यों सहित, प्रसन्न और आदरपूर्वक, हम आपके चरणों में प्रणाम करते हैं, हे प्रत्यक्षदर्शी।

(भगवान:) ब्राह्मण बावरी अपने शिष्यों के साथ सुखी हों; हे शिष्य, तुम भी सुखी रहो और दीर्घायु हो!

बावरी के संदेह हों या आपके, सभी के संदेह, पूछे जाने की अनुमति दी गई है, कृपया जो चाहें पूछें।

ज्ञानी पुरुष की अनुमति प्राप्त करके, वे बैठ गए और अपनी हथेलियों को आपस में दबाया, और अजित ने तथागत से अपना पहला प्रश्न पूछा।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> निद्देसा >> निद्देसा 2.ए.1

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

<<<< पिछला अगला >>>>

1. अजिता
(अध्याय शीर्षकों में संक्षिप्तता के लिए, इन्हें विद्यार्थी के नाम से संक्षिप्त किया जाएगा। पूरा शीर्षक है: ब्राह्मण विद्यार्थी अजिता द्वारा पूछे गए प्रश्नों की व्याख्या।)

1 · [आदरणीय अजिता, इस प्रकार:] संसार किससे घिरा हुआ है? यह किस कारण से प्रकाशित नहीं होता? आप इसकी आसक्ति क्या कहते हैं? इसका सबसे बड़ा भय क्या है?

“यह संसार किससे घिरा है?”: “यह संसार,” नरक लोक, पशु जगत, दुष्ट आत्माओं का लोक, मानव जगत, स्वर्ग लोक, समुच्चय जगत, लोकों का लोक, सजीव जगत, यह संसार, अन्य लोक, ब्रह्म जगत, स्वर्ग लोक, यही संसार कहलाता है। यह संसार ढका हुआ, आच्छादित, अस्पष्ट, बंद और छिपा हुआ है।

आदरणीय अजिता, इस प्रकार: “इस प्रकार,” वाक्यों का क्रम; वाक्यों का जुड़ाव; वाक्यों का समापन; शब्दों का संयोजन; शब्दों का जुड़ाव; यही वाक्यों का क्रम है, जो “इस प्रकार” है। “आदरणीय,” यह प्रेम, आदर, सम्मान और आज्ञाकारिता का पर्यायवाची है। यह “आदरणीय” है। “अजिता,” नाम, उपाधि, सुरक्षा, सामान्य नाम, नामकरण, उपनाम, शब्द, वाक्यांश, उपनाम।

“यह किस कारण से चमक नहीं रहा है”: यह किस कारण से चमक नहीं रहा है, प्रकाशमान नहीं है, उज्ज्वल नहीं है, ज्ञात नहीं है।

“इसके आसंजन से आपका क्या तात्पर्य है?”: संसार का आसंजन, बंधन और अपवित्रता क्या है? संसार किस कारण से दूषित, अत्यधिक दूषित, घनिष्ठ रूप से दूषित (प्रदूषित), मलिन, मिश्रित, जुड़ा हुआ, स्थिर, अवरुद्ध है? क्या आप कहते हैं, समझाते हैं, सिखाते हैं, सूचित करते हैं, निर्माण करते हैं, उजागर करते हैं, विश्लेषण करते हैं, स्पष्ट करते हैं?

“यह भयानक आतंक क्या है?”: दुनिया का आतंक, बड़ा डर, उत्पीड़न, हमला, विपत्ति और आपदा क्या है?

2 · [भगवान बुद्ध: “अजिता!”] संसार अज्ञान से घिरा हुआ है, क्योंकि यह कंजूस और बेलगाम है। मैं कहता हूँ कि लालसा इसका बंधन है, और पीड़ा इसका सबसे बड़ा भय है।

“संसार अज्ञान से घिरा हुआ है”: “अज्ञान,” दुख का अज्ञान, दुख की ओर ले जाने वाले मार्ग का अज्ञान, अतीत का अज्ञान, भविष्य का अज्ञान, अतीत और भविष्य दोनों का अज्ञान, विशिष्ट परिस्थिति और उससे उत्पन्न होने वाले धर्मों का अज्ञान, ऐसा सभी अज्ञान, अदृश्य, अनदेखा, अचेतन, अज्ञानी, अगम्य, अचेतन, अनन्वेषित, गलत दृष्टिकोण, अननिगरानी, गलत ढंग से देखा गया, निम्न स्तर की बुद्धि, अधार्मिक ज्ञान, आसक्ति, अज्ञान की उग्र धाराएँ, अज्ञान का बंधन, चिंता की अंतर्निहित प्रवृत्ति का अज्ञान, अज्ञान का उलझाव, अज्ञान की बाड़ और अज्ञान की जड़, ये सभी अज्ञान कहलाते हैं।

“लोक”: नरक लोक, पशु लोक, दुष्ट आत्माओं का लोक, मनुष्य लोक, स्वर्ग लोक, समुच्चय लोक, लोकों का लोक, अस्तित्व का लोक, यह लोक, अन्य लोक, ब्रह्मा का लोक, स्वर्ग लोक — इन सभी को लोक कहा जाता है। यह लोक अज्ञान से घिरा हुआ, ढका हुआ, अस्पष्ट, बंद, छिपा हुआ है।

“अजिता”: भगवान ब्राह्मण को उनके नाम से पुकारते हैं। “भगवान” आदर का पर्यायवाची है। इसके अतिरिक्त, “लालच का नाश करने वाले” भगवान हैं; “रोग का नाश करने वाले” भगवान हैं; “अहंकार का नाश करने वाले” भगवान हैं; “कांटों का नाश करने वाले” भगवान हैं; “अशुद्धियों का नाश करने वाले” भगवान हैं; “समाप्त करने वाले” भगवान हैं; “शरीर, उपदेश, मन और बुद्धि का अभ्यास करने वाले” भगवान हैं; या “भगवान वनों, जंगली जंगलों और सीमावर्ती आवासों (बैठने की जगह) के निकट हैं, जहाँ बोलना कम होता है, शांति होती है, मानवीय वातावरण से दूर, एकांत और अकेले बैठने के लिए उपयुक्त स्थान होता है” भगवान हैं। या “भगवान वही हैं जो वस्त्र, भोजन, आश्रय, रोगियों की आवश्यकताओं और चिकित्सा संबंधी ज़रूरतों को अलग-अलग करते हैं”; या “भगवान वही हैं जिन्हें धर्म का स्वाद, धम्म का स्वाद, मुक्ति का स्वाद, उपदेशों की अधिकता, मन और ज्ञान का अनुभव होता है”; या “भगवान चार प्रकार के ध्यान, चार असीम, चार निराकार आदि हैं; जो अलग-अलग करते हैं वही भगवान हैं”; या भगवान वही हैं जिन्हें आठवीं मुक्ति, आठवीं विजय, नौवां निवास स्थान आदि प्राप्त है; या भगवान दस विचारों, दस अवस्थाओं का अभ्यास करने वाले, श्वास के आने-जाने का ध्यान रखने वाले हैं; जो शुद्ध रूप से विभाजित हैं वही भगवान हैं। या फिर भगवान बुद्ध चार प्रकार की चेतना, चार प्रकार के धर्म, चार प्रकार के दिव्य आधार (इद्धिपाद), पाँच इंद्रियों, पाँच शक्तियों, सात ज्ञान के कारकों और पवित्र मार्ग की आठ शाखाओं को विभाजित करते हैं; या फिर भगवान बुद्ध दस तथागत, चार निर्भीकता, चार अबाधित समाधान, छह अलौकिक शक्तियाँ और छह ज्ञान के मार्ग हैं। “भगवान बुद्ध,” यह नाम न तो माता ने दिया है, न पिता ने, न भाई ने, न बहन ने, न मित्रों ने, न रिश्तेदारों ने, न समणों ने, न ब्राह्मणों ने, न स्वर्ग ने; यह परम मुक्ति है; बोधि वृक्ष के नीचे स्थित भगवान बुद्ध और समस्त ज्ञान एवं बुद्धि, अर्थात् भगवान बुद्ध के ज्ञान और गवाही के लिए (इस उपनाम की स्थापना) की स्थापना है।

“कंजूसी और संयम न करने के कारण क्या प्रकाशमान नहीं होता?”: कंजूसी पाँच प्रकार की कंजूसी है: (सही) जीवन कंजूसी, गृहस्थी कंजूसी, लाभ कंजूसी, प्रशंसा कंजूसी, धर्म कंजूसी, इस प्रकार की सभी कंजूसी, कंजूसी की अवस्था, लोभ, हृदय जकड़न, इसे कंजूसी कहते हैं। इसके अतिरिक्त, कंजूसी का संचय भी कंजूसी है; संसार में कंजूसी भी कंजूसी है; मत में कंजूसी भी कंजूसी है, इसे कंजूसी कहते हैं। शरीर के बुरे कर्मों में, या वाणी के बुरे कर्मों में, या इरादे के बुरे कर्मों में, या पाँचों इच्छाओं में, संयमित रहना विमुख होना है, हृदय का परित्याग उत्पन्न नहीं होता, या अच्छे धर्म का पालन नहीं किया जाता। अनित्यता की अवस्था, निरंतर कार्य करने की अवस्था, आदत से चिपके रहने की अवस्था, इच्छा की उपेक्षा करने की अवस्था, कर्तव्य की उपेक्षा करने की अवस्था, अभ्यास न करना, अधिक अभ्यास न करना, स्थापना न करना; विश्राम; इस तरह की मुक्ति की अवस्था को ही

संयमहीनता कहते हैं। "कंजूसी और शिथिलता के कारण संसार प्रकाशमान नहीं है": यह संसार कंजूसी और शिथिलता के कारण ही प्रकाशित, प्रकाशित नहीं हो रहा, उज्ज्वल नहीं है और प्रसिद्ध नहीं हो रहा है।

"मैं कहता हूँ कि उत्साह ही उसका पालन है": आकांक्षा को लालसा कहा जाता है, अर्थात् लोभ, वासना, सहमति, अनुरूपता, आनंद, इच्छा, जुनून, लेना, दूषित, अशांति, छल, (पुनर्जन्म) मूल कारण, (कड़वी) उर्वरता, (लोभ) बनाना, जाल, नदी, बंधन, रस्सी, आसक्ति, संचय, साथ, इच्छा, घनिष्ठ संपर्क, जंगल, वन, प्रेम, अपेक्षा, संबंध, रूप की इच्छा, ध्वनि की इच्छा, गंध की इच्छा, स्वाद की इच्छा, स्पर्श की इच्छा, अधिग्रहण की इच्छा, धन की इच्छा, पुत्रों की इच्छा, जीवन की इच्छा, इच्छा की अवस्था, आशा, प्रार्थना, लोभपूर्ण रूप, लोभ धारण करना, लाभ की खोज, अवैध लोभ, अनुचित लोभ, आशा, ईर्ष्या, इच्छा की इच्छा, शून्यता की इच्छा, रूप की इच्छा, निराकार प्यास, बुझी हुई प्यास, रूप की प्यास, ध्वनि की प्यास, गंध की प्यास, स्वाद की प्यास, स्पर्श की प्यास, धम्म की प्यास, जलप्रपात, लगाम, बंधन, आसक्ति, बाधाएँ, आवरण, अशुद्धियाँ, संभावित संकटों की प्रवृत्तियाँ, उलझाव। लताएँ, कंजूसी, पीड़ा की जड़ें, पीड़ा के कारण, पीड़ा का घटित होना, जादुई जाल, जादुई काँटे, जादुई भोजन, शैतान का क्षेत्र, शैतान का निवास, शैतान की अवस्था, शैतान का बंधन, प्यास की नदी, प्यास का जाल, प्यास की रस्सी, प्यास का सागर, लालसा, लोभ और अस्वास्थ्य की जड़। इसे ही इच्छा कहते हैं। संसार के लिए, आसक्ति, बंधन और अपवित्रता, इस इच्छा के कारण संसार दूषित, प्रदूषित, घोर दूषित, अत्यधिक दूषित, मलिन, मिश्रित, आसक्त, अपवित्र और अवरुद्ध है; मैं कहता हूँ, मैं समझाता हूँ, मैं सिखाता हूँ, मैं बताता हूँ, मैं निर्माण करता हूँ, मैं उजागर करता हूँ, मैं विश्लेषण करता हूँ, मैं स्पष्ट करता हूँ।

"पीड़ा ही इसका सबसे बड़ा भय है": "पीड़ा": जन्म की पीड़ा, बुढ़ापे की पीड़ा, बीमारी की पीड़ा, मृत्यु की पीड़ा, शोक की पीड़ा, निराशा की पीड़ा, नरक की पीड़ा, पशु जगत की पीड़ा, बुरी आत्माओं की पीड़ा, मनुष्य की पीड़ा, पीड़ा का मूल कारण, गर्भ में प्रवेश की पीड़ा, गर्भ में रहने की पीड़ा, जन्म की पीड़ा, आश्रित प्राणी की पीड़ा, दूसरों द्वारा नियंत्रित प्राणी की पीड़ा, अपने कर्मों की पीड़ा, दूसरों के कर्मों की पीड़ा, कड़वाहट, आँख, कान, नाक, जीभ, शरीर, सिर, बाहरी कान, मुँह, दाँत की बीमारियाँ, खाँसी, अस्थमा, बाहरी नाक की बीमारी, बुखार, बुढ़ापा, पेट की बीमारी, कोमा, पेचिश, पेट दर्द, हैजा, कुष्ठ रोग, ट्यूमर, दाद, फेफड़ों की बीमारी, मिर्गी, खुजली, वात रोग, खरोंच (रोग), शुष्क त्वचा, बवासीर, मधुमेह, दाने (फोड़े और छाले), अल्सर, पित्ताशय की बीमारी, बलगम से होने वाली बीमारियाँ, वायु से होने वाले रोग, (तीन) सामूहिक रोगों से होने वाले रोग, ऋतुओं के परिवर्तन से होने वाले रोग, अनुचित मुद्रा से होने वाले रोग, अचानक होने वाली बीमारियाँ, कर्मों के फलस्वरूप उत्पन्न रोग, सर्दी, गर्मी, भूख, प्यास, मल-मूत्र, मच्छर, वायु-जलाने वाले साँप, माता-पिता की मृत्यु से होने वाला कष्ट, पिता-पुत्रों की मृत्यु से होने वाला कष्ट, भाई-बहनों की मृत्यु से होने वाला कष्ट, संतान-पुत्रियों की मृत्यु से होने वाला कष्ट, सगे संबंधियों की मृत्यु से होने वाला कष्ट, धन-हानि से होने वाला कष्ट, रोग-हानि से होने वाला कष्ट, उपदेश के पतन से होने वाला कष्ट, दृष्टि के पतन से होने वाला कष्ट। समस्त धर्मों के लिए, आरंभ से ही यह ज्ञात था; मृत्यु से मृत्यु तक, कर्म पर आधारित कर्म, रूप नाम पर आधारित नाम पर आधारित नाम। जन्म-जन्म के क्रम में, जन्म-जन्म के साथ, वृद्धावस्था के क्रम में, रोग से पराजित, मृत्यु से आहत, कष्ट में आश्रयित, बिना आश्रय के, बिना वापसी के और बिना शरण के रहने वाले सभी कष्ट कहलाते हैं। यह पीड़ा ही संसार का आतंक है, भीषण आतंक है, उत्पीड़न है, प्रहार है, बुराई है और आपदा है।

3 · [आदरणीय अजिता, इस प्रकार:] नदियाँ हर जगह बहती हैं, इन नदियों से कौन रक्षा करता है? कृपया नदियों के नियंत्रण के बारे में बताइए, इन्हें कैसे रोका जाता है?

"धाराएँ हर जगह बहती हैं": "धाराएँ," प्यास की धारा, दृष्टि की धारा, अपवित्रता की धारा, बुरे कर्मों की धारा और अज्ञान की धारा। "हर जगह," सभी स्थानों में। "प्रवाह," धाराएँ, जलधाराएँ; आँखों से रूपों की ओर, प्रवाह; कानों से ध्वनियों की ओर..., नाक से गंध की ओर..., जीभ से स्वाद की ओर..., शरीर से स्पर्श की ओर..., इरादों से, प्रवाह, बहता है और संचारित होता है। आँखों से रूप की ओर बहने वाली तृष्णाएँ, कानों से ध्वनि की ओर बहने वाली तृष्णाएँ, नाक से गंध की ओर..., जीभ से स्वाद की ओर..., शरीर से स्पर्श की ओर..., इरादे से धर्म की ओर बहने वाली तृष्णाएँ।

"[इस प्रकार, आदरणीय अजिता]": "इस प्रकार," वाक्य का निरंतरता... (हटा दिया गया) यह वाक्य का क्रम है, "इस प्रकार" ...(हटा दिया गया)।

"धाराओं से बचाव क्या है?": धाराओं से बचाव क्या है: आत्म-संयम, सतर्कता और सुरक्षा।

"कृपया धाराओं के आत्म-नियंत्रण के बारे में बात करें": धाराओं का आश्रय, आत्म-नियंत्रण, संरक्षण, कृपया समझाएँ, कृपया सिखाएँ, कृपया सूचित करें, कृपया स्थापित करें, कृपया उजागर करें, कृपया विश्लेषण करें, कृपया स्पष्ट करें।

"धाराएँ किससे बंद होती हैं?": धाराएँ कैसे बंद या अवरुद्ध होती हैं? जब वे प्रवाहित नहीं होतीं।

4 · [भगवान: "अजिता!"] संसार की सभी धाराएँ, जागरूकता ही उनकी रक्षा है, मैं कहता हूँ कि यह विभिन्न धाराओं का संयम है, ये ज्ञान द्वारा बंद हैं।

"संसार की सभी धाराएँ": वे सभी धाराएँ जिनके बारे में मैंने बताया, समझाया, सिखाया, स्थापित किया, उजागर किया, विश्लेषण किया, स्पष्ट किया, अर्थात्: इच्छा, दृष्टि, अपवित्रता, बुरे कर्म और अज्ञान की धाराएँ। "संसार में," दुख के संसार में, मानव जगत में, स्वर्ग जगत में, समुच्चय जगत में, लोकों के संसार में, स्थानों के संसार में। संसार की सभी धाराओं के लिए। "अजिता": भगवान बुद्ध ने ब्राह्मण को उनके नाम से पुकारा।

"सजगता ही उनकी सुरक्षा है": "सजगता," सामान्य सजगता, आकस्मिक सजगता, स्मरण, सजगता की सजगता, स्मरण, भटकाव न होना, विस्मृति न होना, शक्ति, विचार का सहारा, बिना मोड़ वाला मार्ग, इसे ही मन कहते हैं। "सुरक्षा," आवरण, आत्म-नियंत्रण, रक्षा।

"मैं धाराओं के आत्म-नियंत्रण की बात करता हूँ": धाराओं का आश्रय, आत्म-नियंत्रण, रक्षा, संरक्षण, मैं कहता हूँ, मैं समझाता हूँ...

"ये ज्ञान द्वारा बंद हैं": "ज्ञान," यानी बुद्धि, ज्ञान और समझ... (विलुप्त), कोई भ्रम नहीं, धम्म का चुनाव, सही दृष्टिकोण। "ये ज्ञान द्वारा बंद हैं": ये प्रवाह ज्ञान द्वारा बंद और अवरुद्ध हैं, वे प्रवाहित नहीं होते और न ही बाहर निकलते हैं। "सभी कर्म अनित्य हैं," जब ज्ञात और देखे जाते हैं, तो ये प्रवाह ज्ञान द्वारा बंद और अवरुद्ध हो जाते हैं, वे प्रवाहित नहीं होते और न ही प्रसारित होते हैं; "सभी कर्म दुखदायी हैं," जब ज्ञात और देखे जाते हैं, तो ये प्रवाह ज्ञान द्वारा बंद और अवरुद्ध हो जाते हैं, वे प्रवाहित नहीं होते और न ही प्रसारित होते हैं; "सभी कर्म निस्वार्थ हैं," जब ज्ञात और देखे जाते हैं, तो ये प्रवाह ज्ञान द्वारा बंद और अवरुद्ध हो जाते हैं, वे प्रवाहित नहीं होते और न ही प्रसारित होते हैं; "ज्ञान व्यवहारिक परिस्थितियों पर आधारित है"... "ज्ञान नाम और रूप की एक शर्त है"... "अवस्था के कारण छह इंद्रिय आधार हैं"... "छह इंद्रिय आधारों के साथ स्पर्श की स्थिति है"... "संवेदना संपर्क के कारण है"... "संवेदना के साथ प्यास है"... "प्यास की स्थिति के साथ, आसक्ति है"... "आसक्ति अस्तित्व की एक शर्त है"... "होना जीने की एक शर्त है"... "जीवन वृद्धावस्था की एक शर्त है"... "अज्ञान के लुप्त होने के साथ नष्ट करना"... "कर्मों के साथ नष्ट करना"... "चेतना और रूप के साथ नष्ट करना"... "नाम और रूप के विलुप्त होने के साथ छह इंद्रिय आधारों का विलुप्त होना"... "छह इंद्रिय आधारों का विलुप्त होना"... "संपर्क का विलुप्त होना"... "प्यास का विलुप्त होना"... "प्यास और प्रेम का विलुप्त होना"... "आसक्ति का बुझना"... "जन्म और मृत्यु अस्तित्व और क्षय के साथ हैं"... "जन्म और मृत्यु वृद्धावस्था और मृत्यु की ओर ले जाते हैं"... "यही पीड़ा है"... "यही है "दुखों का समूह"... "यह दुखों का निवारण है"... "यह दुखों के निवारण का मार्ग है"... "ये धर्म दोष हैं"... "ये धर्म दोषों का समूह हैं"... "यह दोष है"... "यह दोषों की ओर ले जाने वाला मार्ग है"... "इस धर्म का ज्ञान होना चाहिए"... "इस धर्म का व्यापक ज्ञान होना चाहिए"... "इस धर्म का त्याग करना चाहिए"... "इस धर्म का अभ्यास करना चाहिए"...; "इस धर्म की गवाही देनी चाहिए," जब ज्ञात और देखे जाते हैं, तो ये प्रवाह ज्ञान द्वारा बंद कर दिए जाते हैं, काट दिए जाते हैं, वे प्रवाहित नहीं होते; छह स्पर्श बिंदुओं का एकत्रीकरण, विनाश, सुख, कष्ट और वैराग्य, जब ज्ञात और देखे जाते हैं, तो ये प्रवाह ज्ञान द्वारा बंद और काट दिए जाते हैं, वे प्रवाहित नहीं होते; पांच स्कंदों का एकत्रीकरण, विनाश, सुख, कष्ट और वियोग..., चार प्रमुख प्रकारों का एकत्रीकरण, विनाश और सुख, स्वाद, कष्ट, त्याग..., दृष्टि... "धर्मों का कोई भी संग्रह विनाश है," जानने और देखने पर, ये प्रवाह ज्ञान द्वारा बंद और अवरुद्ध हो जाते हैं, वे प्रवाहित नहीं होते, प्रसारित नहीं होते।

5 · [आदरणीय अजिता ने इस प्रकार कहा:] हे प्रभु, ज्ञान और जागरूकता, और नाम और रूप! जब इसके बारे में पूछा जाए, तो कृपया बताएं: यह कहाँ नष्ट होता है?

"बुद्धि और मन": "बुद्धि," अर्थात् बुद्धिमान होना, समझ, सरल चयन, अन्वेषण, विवेक, पहचान, भेदभाव, गहन अवलोकन, निरीक्षण, सद्गुणी बुद्धि, निपुणता, चतुराई, अध्ययन, चिंतन, समीक्षा, मनन, परीक्षा, सामान्य व्यापक बुद्धि, विपश्यना, सही ज्ञान, ज्ञान का मूल, बुद्धि की तलवार, बुद्धि का महल, बुद्धि का प्रकाश, छल रहित होना, धम्म का चयन, सही दृष्टिकोण। "मन," सामान्य मन, मुक्त मन... (निरस्त) सजगता।

“नाम और रूप, महोदय”: “नाम” चार निराकार तत्वों का समूह है। “रूप” चार महातत्वों और उनसे व्युत्पन्न किसी भी रूप का समूह है। “महोदय,” यह प्रेम, सम्मान, आदर और आज्ञाकारिता की भाषा है।

“जब आपसे इसके बारे में पूछा जाए, तो कृपया मुझे बताएँ”: “मैं...यह,” मैं जो कुछ भी पूछता हूँ; जो कुछ भी विनती करता हूँ; जो कुछ भी माँगता हूँ; जो कुछ भी स्पष्ट करता है। “जब पूछा जाए,” जब प्रश्न पूछा जाए; जब विनती की जाए; जब अनुरोध किया जाए; जब स्पष्टता बताई जाए। “कृपया बताएँ,” कृपया समझाएँ, कृपया सिखाएँ, कृपया सूचित करें, कृपया स्थापित करें, कृपया उजागर करें, कृपया विश्लेषण करें, कृपया स्पष्ट करें।

“यह कहाँ नष्ट हुआ है”: यह कहाँ बुझ गया है, शांत हो गया है, अस्तित्वहीनता की ओर बढ़ गया है, समाप्त हो गया है।

6 · (भगवान:) हे अजिता, जब तुम यह प्रश्न पूछते हो, तो मैं तुम्हें बताता हूँ, जहाँ नाम और रूप बिना किसी शेष के नष्ट हो जाते हैं: चेतना के विलुप्त होने के साथ ही वे नष्ट हो जाते हैं।

“जब प्रश्न पूछा जाता है”: “जब यह” ज्ञान, मन, नाम और रूप है। “पूछो,” तुम पूछते हो; तुम क्या मांगते हो; तुम पूछते हो; तुम्हें स्पष्ट करते हो।

“अजिता! मैं तुम्हें बताता हूँ”: “अजिता,” .... “वह” ज्ञान, मन, नाम और रूप है। “मैं बताता हूँ,” मैं समझाता हूँ, मैं सिखाता हूँ, मैं सूचित करता हूँ, मैं निर्माण करता हूँ, मैं उजागर करता हूँ, मैं विश्लेषण करता हूँ, मैं स्पष्ट करता हूँ।

“जहाँ नाम और रूप दोनों अक्षत नष्ट हो जाते हैं”: “नाम” ...(हटा दिया गया)। “रूप,” ...(हटा दिया गया)। “अक्षत रहित,” पूरी तरह से, बिना किसी अतिरिक्त भाग के, और पूरी पृथ्वी। “नष्ट,” नष्ट हो गया, शांत हो गया, अस्तित्वहीनता की ओर बढ़ गया, समाप्त हो गया।

“चेतना का नाश, यहाँ उसका नाश होता है”: ज्ञान के द्वारा चेतना का नाश होता है। सात प्राणियों को छोड़कर, पुनर्जन्म के अंतहीन चक्र में उत्पन्न होने वाले सभी नाम और रूप यहाँ नष्ट हो जाते हैं, शांत हो जाते हैं, अस्तित्वहीन हो जाते हैं और समाप्त हो जाते हैं। ज्ञान के मार्ग से, चेतना का नाश करने के लिए, दो प्राणियों को छोड़कर, पाँच प्राणियों में उत्पन्न होने वाले सभी नाम और रूप यहाँ नष्ट हो जाते हैं, शांत हो जाते हैं, अस्तित्वहीन हो जाते हैं और समाप्त हो जाते हैं। ज्ञान के अनावर्ती होने के द्वारा, चेतना का नाश करने के लिए, एक प्राणी को छोड़कर, भौतिक और अभौतिक लोकों में उत्पन्न होने वाले सभी नाम और रूप यहाँ नष्ट हो जाते हैं, शांत हो जाते हैं, अस्तित्वहीन हो जाते हैं और समाप्त हो जाते हैं। अरहंत निर्वाण के समय अंतिम चेतना को समाप्त करने के लिए निर्वाण लोक से होकर गुजरते हैं। यहां ज्ञान, जागरूकता, नाम और रूप सब नष्ट होकर शांत हो जाते हैं, नीचे आओ, अस्तित्वहीनता में जाओ, समाप्त हो जाओ।

7 · (अजिता:) जो धम्म को जानते हैं, और यहाँ अध्ययन करने वाले सभी लोग, जब मैं किसी ज्ञानी से उनके आचरण के बारे में पूछता हूँ, हे महोदय, कृपया मुझे बताएँ। [एस.एन.12.31]

“जो धम्म को जानते हैं”: जो धम्म को समझते हैं, उन्हें अरहंत कहा जाता है, वे वे हैं जिन्होंने अपने सारे कष्टों को समाप्त कर दिया है। प्रबुद्ध व्यक्ति को अरहंत, यानी जिसने अपने सारे कष्टों को समाप्त कर दिया है, क्यों कहा जाता है? वे धम्म को समझने वाले, धम्म को जानने वाले, धम्म को परखने वाले, धम्म को परखने वाले, धम्म को स्पष्ट करने वाले हैं। “सभी कर्म अनित्य हैं,” धम्म को समझने वाला, धम्म को जानने वाला, धम्म को परखने वाला, धम्म को परखने वाला; “सभी कर्म दुखदायी हैं”..., “सभी कर्म अनात्म हैं”..., “कर्म अज्ञान पर आधारित हैं”..., “सभी धर्म नष्ट हो जाते हैं”...। या, उनके लिए, वह समग्र का प्रबुद्ध व्यक्ति है, लोक का प्रबुद्ध व्यक्ति है, स्थान का प्रबुद्ध व्यक्ति है, जन्म-जन्म का प्रबुद्ध व्यक्ति है, पुनर्जन्म को समझने वाला है। या फिर, वे परम (सीमा) के निवासी हैं, संसार में परम, स्थान में परम, परिक्रमा के स्थान में परम, पुनर्जन्म में परम, वे जो परम का अनुभव करते हैं, वे जिनके पास परम है, वे जो पुनर्जन्म में परम हैं, वे जो चक्र में परम हैं, वह अरहंत जो अंतिम शरीर धारण करता है।

“(अनगिनत कष्टों में, वे ही शरीर प्राप्त करते हैं,) यह उनका अंतिम शरीर है। जीवन और मृत्यु का पुनर्जन्म, बिना उनके पुनर्जन्म के।” [थाग.202]

इसीलिए ज्ञानी व्यक्ति को अरहंत कहा जाता है, वह व्यक्ति जिसने अपने सारे कष्ट समाप्त कर लिए हों। "जो धम्म को जानते हैं, और यहाँ सभी जो सीख रहे हैं": "सीख रहे हैं," उन्हें सीख रहे क्यों कहा जाता है? "वे सीखते हैं," इसलिए सीखना। और वे क्या सीखते हैं? वे नियमों को बढ़ाना सीखते हैं, वे मन को बढ़ाना सीखते हैं, और वे ज्ञान को भी बढ़ाना सीखते हैं।

"उपदेशों को बढ़ाना" से क्या तात्पर्य है? यहाँ भिक्षु एक गुरु है जो पातिमोक्खा के आत्म-संयम के संरक्षण में रहता है। उसके पास पर्याप्त धार्मिकता और सुख-सुविधाएँ हैं। वह छोटे पापों की भयावहता को देखता है और गुरु से शिक्षा प्राप्त करने के बाद उनसे सीखता है। छोटे उपदेशों का समूह और बड़े उपदेशों का समूह संयम, व्यवहार पर नियंत्रण, आत्म-संयम का प्रवेश, उत्तम धर्म आदि का आधार है; यही उपदेशों के ज्ञान को बढ़ाना है।

"मन को बढ़ाना" से क्या तात्पर्य है? यहाँ भिक्षु पहले ध्यान से शुरुआत करता है... (उदासीन) दूसरा ध्यान..., तीसरा ध्यान..., फिर प्रवेश करने के बाद वह चौथे ध्यान में रहता है (न तो दुखमय और न ही आनंदमय, शांत और जपमय अवस्था में), यही "मन को बढ़ाना सीखना" है।

ज्ञान बढ़ाने का ज्ञान क्या है? यहाँ भिक्षु एक ज्ञानी व्यक्ति है, जिसे उत्पत्ति और मृत्यु का ज्ञान है; पवित्रता, अंतर्दृष्टि और दुखों का पूर्ण निवारण ही (ज्ञान) है; वह सत्यपूर्वक जानता है, "यह दुख है... (अंश)" "यह कठिन परिश्रम है"... "यह दुख की ओर ले जाने वाला मार्ग है"... "ये परेशानियाँ हैं"... "यह परेशानियों का समूह है"... "यह झुंझलाहट है"... "यह परेशानियों की ओर ले जाने वाला मार्ग है"; यही ज्ञान का संवर्धन है। ये तीन शिक्षाएँ वे तब सीखते हैं जब वे सामना करते हैं (टिप्पणी); वे तब सीखते हैं जब वे जानते हैं; वे तब सीखते हैं जब वे देखते हैं (आत्मनिरीक्षण से सीखते हैं); वे तब सीखते हैं जब मन स्थिर होता है (किसी निर्णय में); वे तब सीखते हैं जब विश्वास प्रबल होता है; वे जोश और परिश्रम से सीखते हैं; जब जागरूकता उत्पन्न होती है, वे सीखते हैं; जब मन स्थिर होता है (केंद्रित होता है), वे सीखते हैं; जब ज्ञान प्राप्त होता है, वे सीखते हैं; जब उनका ज्ञान सिद्ध हो जाता है, वे सीखते हैं; वे त्याग के माध्यम से सीखते हैं; वे अभ्यास से सीखते हैं। वे अच्छी तरह अभ्यास करते हैं, और जब उन्हें प्रमाण मिलता है तो वे उसे बनाए रखते हैं, फिर आगे बढ़ते हैं। इसी कारण उन्हें ज्ञानी कहा जाता है। "सभी" से तात्पर्य जनसमूह से है। ये ज्ञानी अभ्यासी सोतापन्न, सकदागामी, अनागामी और अरहंत हैं। "यहाँ," इस दृष्टिकोण में, इस पसंद में, इस झुकाव में, इस प्रस्ताव में, इस धम्म में, इस शिक्षा में, इस अभ्यास में, इस गुरु की शिक्षाओं में, इस व्यक्ति में, इस मानव जगत में।

"जब ज्ञानी व्यक्तियों से उनके आचरण के बारे में पूछा जाता है, हे महोदय! कृपया मुझे बताइए": आप ही ज्ञानी और प्रबुद्ध हैं, जो धम्म को जानते हैं और आचरण, व्यवहार, साधना, यात्रा, निवास और मार्ग का ज्ञान रखते हैं। "पूछा जाता है," प्रश्न पूछा जाना; विनती करना, पूछताछ की जाना; स्पष्ट करना। "कृपया बताइए": कृपया समझाएं, कृपया सिखाएं, ... "प्रिय महोदय," ....

8 · (भगवान:) तुम्हें इच्छाओं में लालची नहीं होना चाहिए, और तुम्हारा मन मैला नहीं होना चाहिए, सभी धर्मों में निपुण भिक्षु को ध्यानपूर्वक विचरण करना चाहिए।

"इच्छाओं में लोभ नहीं करना चाहिए": इच्छा दो प्रकार की होती है: वस्तुओं की इच्छा और अशुद्धता की इच्छा। वस्तुओं की इच्छाएँ क्या हैं? वांछनीय दृश्य, ध्वनि, गंध, स्वाद, स्पर्श; बिस्तर, वस्त्र, नौकरानियाँ, बकरियाँ और भेड़ें, मुर्गियाँ और सूअर, हाथी, गायें, घोड़े, खच्चर, खेत, घर, सोना, सोने के सिक्के, गाँव और शहर, राजधानियाँ, देश, क्षेत्र, खजाने, गोदाम; हर वह चीज़ जो लोभ से दूषित हो सकती है, वस्तुओं की इच्छा है।

इसके अतिरिक्त, अतीत की इच्छाएँ, भविष्य की इच्छाएँ, वर्तमान की इच्छाएँ, आंतरिक इच्छाएँ, बाह्य इच्छाएँ, आंतरिक और बाह्य इच्छाएँ, निम्न इच्छाएँ, मध्यम इच्छाएँ, उच्च इच्छाएँ; दुखमय संसार की इच्छाएँ, मानवीय इच्छाएँ, स्वर्गीय इच्छाएँ, विद्यमान इच्छा, सृजित इच्छा, असृजित इच्छा, दूसरों द्वारा सृजित इच्छा, अधिकार प्राप्त इच्छा, अनाधिकृत इच्छा, प्रिय इच्छा, अप्रसन्न इच्छाएँ; सभी इच्छा लोकों की इच्छाएँ, भौतिक जगतों की इच्छाएँ, अभौतिक जगतों की इच्छाएँ, प्रेम की प्यास और इच्छा पर निर्भरता, धर्म की इच्छा, धर्म का लोभ, धर्म और सुख के नशे में चूर होने की इच्छा, इन सभी को वस्तुओं की इच्छा कहा जाता है।

अपवित्रता की इच्छा क्या है? इच्छा की इच्छा, लोभ की इच्छा, लोभ की इच्छा की इच्छा, इरादे की इच्छा, वासना की इच्छा, इरादे की इच्छा, इच्छा का आनंद, प्रेम का जुनून, इच्छा का बंधन, आसक्ति, आवरण की इच्छा।

"इच्छा की उन जड़ों को देखकर, जो विचार (इच्छा) से उत्पन्न होना चाहती हैं, मैं उनके बारे में नहीं सोचूंगा, इसलिए इच्छा का अस्तित्व नहीं होगा।" [जात.8.421]

इन्हें दूषित इच्छाएँ कहा जाता है। प्यास, आसक्ति, लोभ, कामवासना... (निरस्त) अस्वास्थ्यकर मूल। "इच्छाओं में लोभी नहीं होना चाहिए": दूषित करने वाली इच्छा में लोभी नहीं होना चाहिए, वस्तुओं की इच्छा में अवरुद्ध नहीं होना चाहिए, लोभ से विरक्त होना चाहिए, और जिन्होंने लोभ को त्याग दिया है, लोभ से मुक्त हो गए हैं, लोभ का त्याग कर दिया है, लोभ रहित हैं, लोभ को समाप्त कर दिया है, जिन्होंने लोभ की समाप्ति प्राप्त कर ली है, उन्हें भूख और प्यास नहीं लगती, जिन्होंने इसे बुझा दिया है, शीतल हो गए हैं, और आनंद का अनुभव करते हैं, उन्हें ब्राह्मण के समान जीवन जीना चाहिए।

"मन मैला नहीं होना चाहिए": "मन": हृदय, मन, हृदय, श्वेत (स्वच्छ), अर्थ, इरादे, चेतना, उस चेतना के अनुरूप। शरीर के बुरे कर्मों से मन मैला, उत्तेजित, गतिशील, प्रभावकारी, अस्थिर, उतार-चढ़ाव वाला, घूमने वाला और बेचैन हो जाता है; शब्दों से बुराई करना... (छोड़ा गया), इरादे से बुराई करना..., लोभ से..., घृणा से..., अज्ञान से..., क्रोध से..., द्वेष से..., बुराई छुपाने से..., प्रभुत्व से..., ईर्ष्या से..., कंजूसी से..., पाखंड से..., धूर्तता से..., हठ से..., जुनून से..., अहंकार से..., घमंड से..., शिथिलता से..., सभी प्रकार की अशुद्धियों से..., सभी बुरे कर्मों से..., सभी कष्टों से..., सभी कष्टों की गर्मी से...; अस्वस्थ मन, मैला, उत्तेजित, अस्थिर, उतार-चढ़ाव वाला, घूमने वाला और बेचैन। "मन मैला नहीं होना चाहिए": मन धुंधला नहीं होना चाहिए: विचलित नहीं होना चाहिए, विचलित नहीं होना चाहिए, विचलित नहीं होना चाहिए, घूमना नहीं चाहिए, शांत होना चाहिए, और सभी अशुद्धियों को त्याग देना चाहिए, दूर कर देना चाहिए, समाप्त कर देना चाहिए, अस्तित्वहीन कर देना चाहिए; व्यक्ति को मैलापन और अशुद्धियों से अलग हो जाना चाहिए, कुचल देना चाहिए, परहेज करना चाहिए, अलग हो जाना चाहिए, छोड़ देना चाहिए, मुक्त हो जाना चाहिए; बंधन से मुक्त होकर, व्यक्ति को एक अप्रतिबंधित हृदय से जीना चाहिए।

"यह धर्म का ज्ञाता है": "सभी कर्म अनित्य हैं", धर्म का ज्ञाता जानता है; "सभी कर्म दुखदायी हैं"..., "सभी कर्म आत्महीन हैं"..., "अज्ञान सभी कर्मों का कारण है"...।

या (यह देखते हुए कि) अनित्य, सभी धर्मों में निपुण व्यक्ति; यह दुख है... (छोड़ा गया), यह रोग है..., यह ट्यूमर है..., यह तीर है..., अभिशाप है..., दूसरा पक्ष है..., भ्रष्टाचार है..., विपत्ति है..., चल..., नाशवान..., अस्थिर..., यह कोई शरण नहीं है..., यह दुखी है..., दुर्भाग्य का मूल है..., पाखंडी..., खाली..., निस्वार्थ..., यह अनित्यता का धर्म है..., हत्यारा..., बढ़ता हुआ..., चारा..., जीवन है..., वृद्धावस्था की विधि..., दुःख और निराशा की विधि..., प्रदूषण की..., सुख..., विनाश..., कष्ट..., एक अच्छा व्यक्ति जो सभी धर्मों की निपुणता के लिए त्याग करता है।

या, वह व्यक्ति जो समुच्चय, ...प्रकृति, ...स्थान, ...आश्रित उत्पत्ति, जागरूकता, धर्म, दिव्य आधार, ...मूल, शक्ति, चेतना, आधार, मार्ग, फल और निर्वाण के साथ निपुण हो।

या फिर, समस्त धर्म को बारह स्थान कहा जाता है: आंखें और रूप, कान और ध्वनि, नाक और गंध, जीभ और स्वाद, शरीर और स्पर्श, मन और धर्म; और क्योंकि अपने भीतर और बाहर के हिस्सों में इच्छा और लोभ का विच्छेद हो जाता है, इसलिए जड़ें कट जाती हैं, ठीक वैसे ही जैसे बिना जड़ों वाला ताड़ का पेड़ भविष्य में अस्तित्वहीन, निर्जीव हो जाता है।

"भिक्षुओं को सचेतन होकर चलना चाहिए": "सचेतनता" चार तरीकों से: शरीर पर सचेतनता का अभ्यास करते समय, धारणा पर सचेतनता का अभ्यास करते समय, हृदय में मन को देखते समय, और जब अभ्यास शिक्षाओं के अनुरूप हो, तब वह सचेतन होता है।

और फिर से चार तरीकों से: मन से बचने की अवस्था, मन के प्रति किए जाने वाले धम्म की अवस्था, मन द्वारा बाधित धम्म की अवस्था, और सचेतनता कारक (चरण) को न भूलने की अवस्था।

और चार तरीकों से: सचेतनता की अवस्था, सचेतनता में बने रहने की अवस्था, सचेतनता का अनुभव करने की अवस्था और सचेतनता का कम न होने की अवस्था।

और फिर चार तरीकों से: सचेतनता की अवस्था को ध्यान का विषय बनाकर, शांत अवस्था को विषय बनाकर, मौन अवस्था को विषय बनाकर; बुद्ध का स्मरण, धम्म का स्मरण, संघ का स्मरण, उपदेशों का स्मरण, भिक्षाओं का स्मरण, मन का स्मरण; श्वास, मृत्यु, शरीर, मौन का स्मरण; सर्वांगीण ध्यान, मुक्त ध्यान..., निर्बाध मार्ग, ये सब ध्यान कहलाता है। पूर्णतः लीन होकर, पूर्णतः पहुँचकर, प्राप्त करके, इस विचार के साथ, वह सचेत कहलाता है। "भिक्षु," जिसने सात धर्मों की अवस्था का नाश किया, वह भिक्षु कहलाता है; दृष्टि नष्ट हो जाती है, संशय नष्ट हो जाता है, निषेध..., लोभ..., क्रोध..., मोह..., आलस्य...; वे सभी दुष्ट और अस्वास्थ्यकर धर्म नष्ट हो जाते हैं: अपवित्रता (विधर्म) से बचना, अन्य, भय, कड़वा फल, भविष्य में जीवित नहीं रहेंगे।

भगवान [सं.3.6, 519]: "अपने स्वयं के अभ्यास से, निर्वाण को प्राप्त करते हुए, संशयवादियों को पार करते हुए, शून्यता और अस्तित्व का त्याग करने के बाद, जो पूर्ण हो गया है, जो विरक्त हो गया है, वह भिक्षु है।"

"भिक्षुओं को सजग होकर चलना चाहिए": भिक्षुओं को सजग होकर आगे बढ़ना चाहिए, सजग होकर चलना चाहिए, सजग होकर खड़े रहना चाहिए, सजग होकर बैठना चाहिए, सजग होकर लेटना चाहिए, सजग होकर आगे बढ़ना चाहिए, पीछे हटना चाहिए..., आगे देखना चाहिए..., अवलोकन करना चाहिए..., झुकना चाहिए..., सीधा होना चाहिए..., कोट, कटोरे और कपड़े सजग होकर पकड़ना चाहिए, सजग होकर चलना और जीना चाहिए, कार्य करना चाहिए, आगे बढ़ना चाहिए, रक्षा करना चाहिए, जीवित रहना चाहिए।

श्लोक के अंत में, जो ब्राह्मणों के समान ही इरादे, समान ही प्रयास, समान ही झुकाव और समान ही निवास स्थान में रहते हैं, उनके लिए हजारों जीवों की दूर की धूल और धम्म दृष्टि प्रकट होती है: "धर्मों का कोई भी संग्रह विनाश का कारण है।" ब्राह्मण का मन आसक्ति रहित होकर सभी दोषों से मुक्त होता है। अरहंत के लोक में पहुँचने के साथ ही, उनके भेड़ की खाल के वस्त्र, गुंथे हुए बाल, छाल के वस्त्र, डंडे, लंबे मुँह वाली पानी की बोतलें, बाल और दाढ़ी गायब हो जाते हैं, वे गंजे हो जाते हैं और उनके स्थान पर वस्त्र, कपड़े, ओवरकोट और कटोरे आ जाते हैं। वे भगवान बुद्ध को आदर दिखाने के लिए हाथ जोड़ते हैं और बैठ जाते हैं: "हे महान गुण! भगवान बुद्ध मेरे गुरु हैं और मैं उनका शिष्य हूँ।"

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> निद्देसा >> निद्देसा 2.ए.2

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

<<<< पिछला अगला >>>>

2. तिस्सा मेत्तेय्या
(यह तिस्सा मेत्तेय्या संभवतः वही व्यक्ति नहीं है जिसका उल्लेख अष्टक खंड के सातवें सूत्र में है।)

9 · [इस प्रकार, पूज्य तिस्सा मेत्तेय्या:] संसार में कौन संतुष्ट है? किसके लिए कोई दुविधा नहीं है? दोनों पक्षों पर विचार करने के बाद कौन बीच में नहीं अटकेगा? आप किसे "महान पुरुष" कहते हैं? यहाँ किसने दर्जी से भी बढ़कर उपलब्धि हासिल की?

इस संसार में कौन संतुष्ट है?: संतुष्ट व्यक्ति कौन है, तृप्त व्यक्ति कौन है, वह व्यक्ति कौन है जिसके इरादे पूर्ण हैं?

"[इस प्रकार]": "इस प्रकार," वाक्यों की निरंतरता, शब्दों का जुड़ाव, वाक्यों का समापन, शब्दों का संयोजन, यही वाक्य का क्रम है, जो "इस प्रकार" है। "आदरणीय," यह प्रेम, आदर और आज्ञाकारिता का पर्यायवाची है। "तिस्सा," ब्राह्मण का नाम, उपाधि, सुरक्षा, उपाधि, शब्द, वाक्यांश। "तिस्सा मेत्तेय," ब्राह्मण का उपनाम, नाम, उपाधि और सामान्य नाम।

"जिनके लिए कोई संदेह नहीं है": प्रेम का संदेह, दृष्टि का संदेह, आलस्य का संदेह, अपवित्रता का संदेह, इच्छा का संदेह; जिनके लिए ये संदेह अस्तित्व में नहीं हैं, ज्ञात नहीं हैं, समाप्त हो गए हैं, शांत हो गए हैं, रुक गए हैं, उत्पन्न होने में असमर्थ हैं, और ज्ञान की अग्नि से जल गए हैं।

“जिसने दोनों पक्षों का परीक्षण किया है”: वह व्यक्ति जिसने दोनों पक्षों के ज्ञान का परीक्षण करने के बाद, समझने के बाद, तौलने के बाद, निर्णय करने के बाद, अलग करने के बाद, स्पष्ट करने के बाद।

विचार करने के बाद, मध्य में कोई संदूषण नहीं रहेगा: विचार करने के बाद, मध्य में संदूषण नहीं है, अब संदूषण नहीं है, निकट से संदूषण नहीं है। वह अलग हो गया है, छोड़ गया है, मुक्त हो गया है, बंधन से मुक्त हो गया है, और वह चला गया है, और संयमित हृदय से मुक्त होकर निवास किया है।

“आप किसे 'महान व्यक्ति' कहते हैं?”: महान व्यक्ति सर्वोच्च व्यक्ति होता है, सबसे विजयी व्यक्ति होता है, विजेता होता है, प्रथम होता है, शीर्ष पर होता है। आप किसे कह रहे हैं, आप किसके बारे में बात कर रहे हैं?

“यहाँ दर्जी को किसने पीछे छोड़ा है”: जो यहाँ पहुँचा, जिसने दर्जी को, प्रेम की प्यास को, पार कर लिया, जिसने विजय प्राप्त कर ली।

10 · [भगवान: “मत्तेय”] इच्छाओं में ऐसे ब्राह्मण भी हैं जो सदा सचेत और इच्छा से विरक्त रहते हैं। इस निर्मल भिक्षु पर विचार करने के बाद, उनके लिए कोई संदेह नहीं रहता।

“इच्छाओं में ब्राह्मण हैं”: “इच्छा,” दो प्रकार की इच्छाएँ होती हैं: वस्तुओं की इच्छा और अपवित्रता की इच्छा... (विलुप्त, पिछले खंड देखें)। ब्रह्म को विरक्ति, संयम, त्याग, प्रस्थान, निष्क्रियता, अपराध न करना और सुधार न करने आदि कहा जाता है। या, बिना किसी भेद के, ब्राह्मण को पवित्र मार्ग की आठ शाखाएँ कहा जाता है, अर्थात्: सही दृष्टि, सही इच्छा, सही वाणी, सही कर्म, सही आजीविका, सही परिश्रम, सही जागरूकता, सही एकाग्रता। जिन्होंने इन आठ पवित्र मार्गों को पूर्णतः धारण किया है, उनमें प्रवेश किया है, उन पर चले हैं, उन्हें ब्राह्मण कहा जाता है। उदाहरण के लिए, उन्हें संपत्ति के आधार पर “संपन्न व्यक्ति” कहा जाता है; उन्हें धनवान व्यक्ति कहा जाता है; उन्हें प्रतिष्ठावान व्यक्ति कहा जाता है; और उन्हें प्रौद्योगिकी में निपुण व्यक्ति कहा जाता है; उपदेशों को “उपदेश” कहा जाता है; बलवान व्यक्ति को “बलवान व्यक्ति” कहा जाता है; ज्ञानवान लोगों को “ज्ञानी” कहा जाता है; उसी प्रकार, जो कोई भी इन आठ श्रेष्ठ मार्गों को पूर्णतः धारण करता है, उसे ब्राह्मण कहा जाता है।

भगवान बुद्ध ब्राह्मण को उनके उपनाम "मेत्तेय" से पुकारते हैं। "भगवान बुद्ध" एक सम्मानजनक पर्यायवाची शब्द है... (यह भाग हटा दिया गया है, पिछले भाग देखें)।

“सदा सचेत, इच्छा से विरक्त”: “प्रेम की इच्छा” धर्मों की प्यास है। जिसके लिए प्रेम की इच्छा समाप्त हो गई हो, शांत हो गई हो, रुक गई हो, उत्पन्न न हो पा रही हो, ज्ञान की अग्नि से भस्म हो गई हो, उसे प्यास से विरक्त, प्यास त्यागने वाला, प्यास मिटाने वाला, प्यास मुक्त करने वाला, प्यास त्यागने वाला, प्यास का त्याग करने वाला, लोभी न होने वाला, लोभ त्यागने वाला, लोभ से मुक्त होने वाला, लोभ का त्याग करने वाला, भूख-प्यास से मुक्त होने वाला, शीतल होने वाला, सुखी महसूस करने वाला, स्वयं को ब्राह्मण मानने वाला कहा जाता है। “सदा”, सदा, सब कुछ, हर समय, शाश्वत रूप से, निरंतर, लगातार, निर्बाध, क्रमिक रूप से; जैसे पानी में लहरें बिना रुके उठती हैं; सुबह, दोपहर, रात के पहले पहर, आधी रात, अंतिम रात; अमावस्या, शुक्ल पक्ष, बरसात, सर्दी, गर्मी; युवावस्था, मध्य आयु और वृद्धावस्था में। "सचेत व्यक्ति" चार तरीकों से सचेत होता है: ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

“विचार करने के बाद, यह भिक्षु शांत हो गया”: विचार करने के बाद, इसे ज्ञान कहा जाता है। यह समझ है, सरल चयन है, जांच है... (छोड़ा गया), कोई भ्रम नहीं, चुनाव है, सही दृष्टिकोण है। “विचार करने के बाद,” जानने के बाद, समझने के बाद, माप के बाद, निर्णय के बाद, पृथक्करण के बाद, स्पष्टीकरण के बाद: “सभी कर्म अनित्य हैं” विचार करने के बाद..., “सब कुछ दुख है...,” सभी चीजें अनात्म हैं”...,”अज्ञान से उत्पन्न”...,”धर्मों का कोई भी संग्रह धर्मों का विनाश है”...।

या, (इसे) अनित्यता के विचार के रूप में देखा जाए, तो जानने के बाद..., यह दुख है..., यह रोग है..., यह ट्यूमर है..., यह तीर है...। “निरस्त,” लोभ उत्पन्न करने की अवस्था, क्रोध, अज्ञान, द्वेष, घृणा, बुराई को छुपाना, प्रभुत्व (मनमानी, हुक्म, अत्याचार), ईर्ष्या, कंजूसी, छल, धूर्तता, हठ, वासना, आलस्य, सुस्ती, असुविधा, सभी प्रकार के अपवित्रता, सभी बुरे कर्म, सभी कष्ट, सभी प्रकार की चिड़चिड़ाहट, सभी प्रकार की पीड़ा, सभी

अस्वास्थ्यकर कृत्रिम चीजें निरस्त हो जाती हैं। "भिक्षु," सात धर्मों की अवस्था को नष्ट करने वाला भिक्षु है... (छोड़ा गया); पूर्ण हो चुका और नष्ट हो चुका भिक्षु है।

"उसके लिए कोई संदेह नहीं है": "उसके लिए," अरहंत के लिए, उसके लिए जिसने अपने सारे कष्ट समाप्त कर दिए हैं। "संदेह," तृप्ति का संदेह, दृष्टि का संदेह, ...आलस्य का संदेह, ...अशुद्धता का संदेह, ...इच्छा का संदेह, उसके लिए ये संदेह न तो अस्तित्व में हैं, न ज्ञात हैं, न पाए जाते हैं, और ज्ञान की अग्नि से भस्म होकर समाप्त हो गए हैं, शांत हो गए हैं, समाप्त हो गए हैं, उत्पन्न होने में असमर्थ हैं।

11 · दोनों पक्षों को जानने के बाद, विचार करने पर वह बीच में नहीं फंसा, मैं कहता हूँ कि वह एक "महान व्यक्ति" था, और वह यहाँ दर्जी से श्रेष्ठ है। [एएन.6.61]

"दोनों पक्षों को जानकर, विचार करने के बाद, वह मध्य में दूषित नहीं होगा": "पक्ष," स्पर्श (संपर्क) एक पक्ष है, स्पर्श का समूह दूसरा पक्ष है, स्पर्श का रुकना मध्य में है; भूतकाल एक पक्ष है, भविष्य दूसरा पक्ष है, और वर्तमान मध्य में है; सुख एक पक्ष है, दुख दूसरा पक्ष है, और न तो दुख और न ही सुख मध्य में है; नाम एक पक्ष है, रूप दूसरा पक्ष है, चेतना मध्य में है; छह आंतरिक स्थान एक पक्ष हैं, और छह बाह्य स्थान दूसरा पक्ष हैं, और चेतना मध्य में है; शरीर एक पक्ष है, शरीर का समूह दूसरा पक्ष है, और शरीर मध्य में विलीन हो जाता है। विचार करने के बाद, इसे ज्ञान कहा जाता है, जो जानना, समझना है...(अंशित)।

"आसक्ति": आसक्ति दो प्रकार की होती है: लालसा की आसक्ति और दृष्टि की आसक्ति...; यह लालसा की आसक्ति है...; यह दृष्टि की आसक्ति है। लालसा की आसक्ति क्या है? सभी सीमाएँ, क्षेत्र, दायरे, हदें, सब कुछ पकड़ लिया जाता है और अपना मान लिया जाता है: यह मेरा है, यह मेरा है, इतना मेरा है, यह क्षेत्र मेरा है; (मेरा) रूप, ध्वनि, गंध, स्वाद, स्पर्श, ज़मीन पर पड़ी वस्तुएँ, वस्त्र, दासियाँ और नौकर, बकरियाँ और भेड़ें, मुर्गियाँ और सूअर, हाथी, गायें और घोड़े, खच्चर, खेत, घर, सोना, सिक्के, गाँव, कस्बे, राजधानियाँ, स्थान, खजाने, गोदाम, सारी भूमि; क्योंकि वे लालसा करते हैं और उन्हें अपना मानते हैं, सभी एक सौ आठ प्रकार की लालसाएँ। [एएन.4.199] यह लालसा की आसक्ति है।

दृष्टि का आसंजन क्या है? बीस लोग शरीर पर निर्भर होकर देखते हैं, दस लोग गलत दृष्टि पर निर्भर होकर देखते हैं, और दस लोग पार्श्व दृष्टि पर निर्भर होकर देखते हैं, सभी प्रकार की दृष्टियाँ, बुरी दृष्टियाँ, उलझी हुई दृष्टियाँ और बंजर दृष्टियाँ। दृष्टि का आसंजन, स्वीकृति, आसक्ति, विकृत दृष्टि, अस्थिर दृष्टि, बंधी हुई दृष्टि, बुरा मार्ग, बुरा स्वभाव, बाहरी मार्ग, विपरीत दृष्टि का आसंजन और उलटाव (विपरीत), बुराई की पकड़, असत्य में सत्य देखना, ये सभी मिलकर बासठ बुरी दृष्टियाँ बनाते हैं। यही दृष्टि का आसंजन है।

"दोनों पक्षों को जानने के बाद, विचार करने के बाद, वह मध्य में अपवित्र नहीं होता": विचार करने के बाद, जानने के बाद, समझने के बाद, तौलने के बाद, न्याय करने के बाद, अलग करने के बाद, स्पष्ट करने के बाद वह अपवित्र नहीं होता; वह बंधा हुआ नहीं, विरक्त नहीं, बंधन से मुक्त नहीं, वह वैराग्य और संयम के हृदय से जीवन व्यतीत करता है।

मैंने कहा कि वह एक 'महान व्यक्ति' हैं: यह व्यक्ति सर्वोच्च व्यक्ति है, सबसे विजयी व्यक्ति है, विजेता है, प्रथम व्यक्ति है, शीर्ष व्यक्ति है। मैं उन्हें पुकारता हूँ, मैं उनके बारे में कहता हूँ, मैं उनका वर्णन करता हूँ, मैं उनके बारे में बोलता हूँ।

पूज्य सारिपुत्त ने भगवान बुद्ध से कहा, "हे महान गुण! 'एक पुरुष, एक महान पुरुष' के रूप में जाने जाने वाले, हे महान गुण! किसी को महान पुरुष क्या बनाता है?" "सारिपुत्त! मैं कहता हूँ कि जो मुक्त हैं वे 'महान पुरुष' हैं; मैं कहता हूँ कि जो मुक्त नहीं हैं वे 'महान पुरुष नहीं' हैं।"

सारिपुत्त! मुक्ति कैसे प्राप्त करें? सारिपुत्त! यहाँ, भिक्षु अपने शरीर में रहकर शरीर, उत्साह, धार्मिक ज्ञान और जागरूकता का अवलोकन करता है, और संसार के प्रति इच्छा और चिंता को नियंत्रित कर सकता है। जब वह शरीर में रहकर शरीर का अवलोकन करता है, तो मन दोषों से मुक्त होता है, और वह आसक्ति से मुक्त होता है। सभी दोषों से मुक्ति; भाव में...(विलुप्त) हृदय में..., धम्म में रहकर और धम्म का अनुसरण करते हुए, उत्साही, धार्मिक और जागरूक होकर, संसार के प्रति लालसा और चिंता को नियंत्रित कर सकता है। जब वह धम्म में रहकर और धम्म का अनुसरण करता

है, तो मन दोषों से मुक्त होता है, और सभी दोषों से मुक्त होकर वह आसक्ति से मुक्त होता है। सारिपुत्त! इस प्रकार, भिक्षु का हृदय मुक्त होता है। सारिपुत्त! मैं कहता हूँ कि जो मुक्त हैं वे 'महान पुरुष' हैं; मैं कहता हूँ कि जो मुक्त नहीं हैं वे 'महान पुरुष' नहीं हैं।

“उसने यहाँ दर्जी को परास्त कर दिया”: दर्जी को लालसा कहा जाता है, जो लोभ, प्यास, ...(अस्पष्ट) और अस्वस्थ जड़ों से उत्पन्न होती है। उसके लिए, यह दर्जी, जिसकी प्यास मिट गई है, शांत हो गई है, समाप्त हो गई है, फिर से उत्पन्न नहीं हो सकती, ज्ञान की अग्नि से झुलस गई है, उसने दर्जी को परास्त कर दिया है, प्रेम की उसकी इच्छा को पार कर लिया है, उसे पार कर लिया है, उस पर विजय प्राप्त कर ली है।

इन श्लोकों के अंत में... (निकाल दिया गया)। “परमेश्वर मेरे गुरु हैं और मैं उनका शिष्य हूँ।”

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> निद्देसा >> निद्देसा 2.ए.3

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

<<<< पिछला अगला >>>>

3. पुण्का

12 · [आदरणीय पुणक ने इस प्रकार कहा:] हे अविचलित प्रभु, मूलों के द्रष्टा, मैं आपसे आवश्यक प्रश्न लेकर आया हूँ, अनेक ऋषि, मनुष्य, क्षत्रिय और ब्राह्मण इस संसार में यज्ञ क्यों करते हैं? हे भगवान, मैं आपसे विनती करता हूँ, कृपया मुझे इसका उत्तर दीजिए।

“जो विचलित नहीं होता, जो मूल को देखता है”: “विचलित होना तृष्णा कहलाता है, अर्थात् लोभ, ...(विलुप्त, पिछले खंड देखें)..., और अस्वस्थ मूल। बुद्धों और भगवान बुद्ध के लिए, वह विचलितता दूर हो जाती है, जड़ कट जाती है, ठीक वैसे ही जैसे बिना जड़ों वाला ताड़ का पेड़ भविष्य में अस्तित्वहीन हो जाता है, निर्जीव हो जाता है, वैसे ही बुद्ध विचलित नहीं होते। वियोग की विचलित अवस्था में भी, भगवान बुद्ध विचलित नहीं होते; कुछ न मिलने पर भी नहीं कांपते; प्रतिष्ठा होने पर भी नहीं कांपते; प्रतिष्ठा न होने पर भी नहीं कांपते; प्रशंसा से भी नहीं कांपते; निंदा से भी नहीं कांपते; समय-समय पर भी नहीं कांपते; कांपते नहीं, हिलते नहीं, थरथराते नहीं।” “जो मूल को देखता है,” भगवान बुद्ध मूल को देखते हैं, कारण के द्रष्टा हैं, उत्पत्ति के द्रष्टा हैं, मूल के द्रष्टा हैं, पोषण के द्रष्टा हैं, विषय के द्रष्टा हैं। स्थिति का द्रष्टा, विचारों के समूह का द्रष्टा।

तीन हानिकारक मूल हैं: लोभ का हानिकारक मूल, घृणा का हानिकारक मूल और अज्ञान का हानिकारक मूल।

भगवान बुद्ध ने कहा: भिक्षुओं! इन तीन कर्मों के कारण और परिस्थितियाँ हैं; वे तीन कौन-से हैं? लोभ कर्म का कारण और परिस्थिति है, घृणा कर्म का कारण और परिस्थिति है, और मोह कर्म का कारण और परिस्थिति है। भिक्षुओं! लोभ, घृणा या मोह के कारण स्वर्ग ज्ञात नहीं है, मनुष्य ज्ञात नहीं हैं, और न ही कोई अच्छा हित ज्ञात है। भिक्षुओं! बल्कि लोभ, घृणा और मोह के कारण ही नरक लोक ज्ञात है, पशु लोक ज्ञात है, प्रेत लोक ज्ञात है, या कोई अन्य बुरा हित ज्ञात है [एएन.6.39]; नरक, पशु लोक और प्रेत लोक में रहने वाले व्यक्ति ज्ञात हैं। इन तीनों अस्वास्थ्यकर जड़ों को भगवान बुद्ध जानते और देखते हैं, और इसलिए भगवान इन जड़ों के द्रष्टा हैं... (अंशित)। तीन अच्छे मूल हैं: लोभ रहित, घृणा रहित और मोह रहित होने का अच्छा मूल।

भगवान बुद्ध ने कहा: भिक्षुओं! ये तीन हैं... (अंशित) भिक्षुओं! ऐसा नहीं है कि लोभ, घृणा, मोह से रहित नरक ज्ञात है, पशु जगत ज्ञात है, प्रेतलोक ज्ञात है, या कोई भी बुरी रुचि ज्ञात है, भिक्षुओं! बल्कि लोभ, घृणा, मोह के बिना स्वर्ग ज्ञात है, मनुष्य ज्ञात है,

या कोई भी अच्छी रुचि: स्वर्ग और संसार में वे उत्पन्न होते हैं और ज्ञात होते हैं। भगवान बुद्ध इन तीन अच्छे मूलों को जानते और देखते हैं, इसलिए भगवान मूल के द्रष्टा हैं...

भगवान बुद्ध ने कहा: भिक्षुओं! कोई भी अहितकर धर्म, अहितकर विभाजन, अहितकर गुट [AN.1.56], जो कुछ भी अज्ञान में निहित है, अज्ञान में समाहित है और अज्ञान से ही नष्ट हो जाता है, वह सब नष्ट हो जाएगा। [SN.20.1] भगवान बुद्ध सब जानते और देखते हैं...

भगवान बुद्ध ने कहा: भिक्षुओं! कोई भी अच्छा धर्म, अच्छा विभाजन और अच्छा गुट [एएन.1.57], जो विश्राम न करने में दृढ़ हो और पुनर्मिलन के समान अनियंत्रित हो, वह उन धर्मों में श्रेष्ठ माना जाता है। [एसएन.45.139] भगवान बुद्ध सब जानते और देखते हैं...

या यूँ कहें कि भगवान बुद्ध जानते और देखते हैं: अज्ञान कर्म का मूल है, कर्म चेतना का मूल है, चेतना नाम और रूप का मूल है, नाम और रूप छह इंद्रियों के मूल हैं, छह इंद्रियों के मूल स्पर्श हैं, स्पर्श संवेदना का मूल है, संवेदना लालसा का मूल है, लालसा आसक्ति का मूल है, आसक्ति जन्म का मूल है, जन्म जन्म का मूल है, और जन्म वृद्धावस्था (और मृत्यु) का मूल है। भगवान बुद्ध जानते और देखते हैं...

या यूँ कहें कि भगवान बुद्ध सब जानते और देखते हैं: आँख आँखों की बीमारी की जड़ है, कान कानों की बीमारी की जड़ है, नाक..., जीभ..., शरीर..., और मन दुखों की जड़ है। भगवान बुद्ध सब जानते और देखते हैं...।

"[इस आदरणीय पुण्णक की तरह]": "इस तरह," वाक्य का आगे का भाग... (हटा दिया गया, पिछले भाग देखें)। आदरणीय पुण्णक ...(हटा दिया गया, पिछले भाग देखें)।

"जरूरतमंद लोग सवाल लेकर आते हैं": मैं जरूरत पड़ने पर सवाल लेकर आता हूँ, मैं सवाल पूछने के लिए आता हूँ, मैं सवाल सुनने के लिए आता हूँ, जरूरतमंद लोग सवाल लेकर आते हैं। या, सवाल पूछने वालों को जरूरत होती है, सवाल पूछने वाले को, सुनने वाले को, जरूरतमंद लोग आते हैं, संपर्क करते हैं, मिलते हैं। या, जब आपके पास कोई सवाल हो, तो आप बता सकते हैं और आपके पास बताने और मेरे पूछे गए सवाल का जवाब देने का पर्याप्त कारण है, "कृपया इस बोझ को उठाएँ।"

"जो लोग भरोसा करते हैं, ऋषि": किसी चीज़ पर भरोसा करना, उससे जुड़े रहना, उसमें प्रवेश करना या अपना हृदय उसकी ओर मोड़ना। "ऋषि" वे लोग हैं जिन्हें अमर कहा जाता है, और वे सभी भिक्षु जो संन्यासी बन जाते हैं। "लोग" मनुष्य कहलाते हैं।

"क्षुत्तियों, ब्राह्मणों, देवताओं को": "क्षुत्तियों," क्षुत्तियों से उत्पन्न होने वाली हर चीज। "ब्राह्मणों," जो दूसरों को सज्जन कहते हैं। "देवताओं को," अन्य तपस्वी (आजीवका) अपने देवता को, जैन अपने देवता को, जटाधारी तपस्वी अपने देवता को, विचरण करने वाले भिक्षु अपने देवता को, निर्वासित देवता..., हाथी देवता..., अश्व देवता, बैल देवता, कुष्ठ देवता, कौवा देवता, विष्णु देवता, शक्ति के रक्षक की शक्ति, पुण्य वलय का पुरुष, पुण्य वलय का रत्न, अग्नि..., नाग..., स्वर्ण-पंख वाले..., यक्ष, असुर, गंधर्व, रक्षकों के महान राजा (स्वर्ग), चंद्र देवता, सूर्य देवता, इंद्र, ब्रह्मा...। जो उन्हें अर्पण करने के योग्य हैं, वे उनके देवता हैं।

"संसार में अनेक बलिदान हैं": "बलिदान" को दान कहा जाता है: वस्त्र, भोजन, आश्रय, रोगियों के लिए आवश्यक वस्तुएँ, चिकित्सा संबंधी आवश्यकताएँ, भोजन, पेय, वस्त्र, परिवहन, मालाएँ, मसाले, तेल, पलंग, घर, दीपक और मोमबत्तियाँ। "बलिदान के रूप में," जहाँ कहीं भी वे वस्त्र, भोजन (अस्पष्ट) की तलाश करते हैं, उसे प्राप्त करने का प्रयास करते हैं और भीख मांगते हैं... उन्हें बलिदान के रूप में उपयोग किया जाता है; जहाँ कहीं भी वे वस्त्र, भोजन तैयार करते हैं... उन्हें भी बलिदान के रूप में उपयोग

किया जाता है; जहाँ कहीं भी वे वस्त्र, भोजन देते हैं, प्रदान करते हैं और दान करते हैं... वे भी बलिदान हैं। "अनेक," ये बलिदान अनेक हैं, या इन बलिदानों के पुरोहित अनेक हैं, या अनेक योग्य दाता हैं। बलिदान अनेक कैसे हैं? वस्त्र, भोजन... अनेकों के हैं, इसलिए ये बलिदान अनेक हैं।

इन यज्ञों के अनेक पुरोहित कैसे होते हैं? इन यज्ञों के अनेक पुरोहित हैं: क्षत्रिय, ब्राह्मण, वेस, शुद्ध, गृहस्थ, भिक्षु, स्वर्ग और मनुष्य, अतः इन यज्ञों के अनेक पुरोहित हैं।

क्या दान देने के योग्य लोगों की संख्या बहुत अधिक है? यहाँ बहुत से समण, ब्राह्मण, भिखारी, यात्री, घुमंतू और दानदाता हैं, इसलिए दान देने के योग्य लोगों की संख्या भी बहुत अधिक है। "यहाँ संसार में," यानी मानव जगत में।

"हे प्रभु, मैं आपसे विनती करता हूँ, कृपया मुझे बताएँ": "प्रश्न" में तीन प्रकार की पूछताछ होती है: अदृश्य की व्याख्या के बारे में पूछताछ, दृश्य के संगम के बारे में पूछताछ और संदेह को दूर करने के बारे में पूछताछ।

अदृश्य के बारे में पूछताछ क्या है? अज्ञात, अदृश्य, अमापनीय, अनपढ़, अस्पष्ट विशेषता के बारे में, अपनी बुद्धि के उद्देश्य से, देखकर, मापकर, परखकर, स्पष्ट करके, उसने एक प्रश्न पूछा।

प्रत्यक्ष के संगम के बारे में पूछताछ क्या है? एक ऐसी विशेषता जो ज्ञात, देखी, मापी, परखी, स्पष्ट और समझी गई थी। उसने अन्य बुद्धिमान पुरुषों के साथ सामंजस्य स्थापित करने के उद्देश्य से प्रश्न पूछे।

संदेह को दूर करने के लिए पूछताछ क्या है? एक संशयवादी, जन्मजात संशयवादी और जन्मजात संशयवादी पूछता है: "क्या ऐसा है? क्या यह सच नहीं है? तो फिर यह क्या है? यह कैसे है?" वह संदेह को दूर करने के उद्देश्य से प्रश्न पूछता है।

पूछताछ के अगले तीन प्रकार हैं: मानवीय पूछताछ, गैर-मानवीय पूछताछ और सृजित (निम्मितपुच्छा) की पूछताछ।

मानवीय जिज्ञासा क्या है? बुद्ध, भगवान बुद्ध के दर्शन करने के बाद लोगों ने प्रश्न पूछे: भिक्षुओं, उपासकों, उपासिकाओं, राजाओं, क्षत्रिय, ब्राह्मणों, वेस्स, सुद्धों, गृहस्थों और भिक्षुओं ने।

अमानवीय पूछताछ क्या है? बुद्ध, भगवान के दर्शन करने के बाद, गैर-मनुष्यों ने प्रश्न पूछे: अजगर, सुनहरे पंखों वाले पक्षी, यक्ष, असुर, गंधर्व, राजा, इंद्र, ब्रह्मा, देव।

सृष्टि की जिज्ञासा क्या है? भगवान बुद्ध के मन द्वारा निर्मित सभी भौतिक शरीर और अंग उन्हें देखकर उनके पास आते हैं और प्रश्न पूछते हैं, और भगवान बुद्ध उनका उत्तर देते हैं।

आगे तीन प्रकार की पूछताछ: स्वयं के लाभ के लिए पूछताछ, दूसरों के लाभ के लिए पूछताछ और दोनों के लाभ के लिए पूछताछ। आगे तीन प्रकार की पूछताछ: वर्तमान हितों के बारे में पूछताछ, भविष्य के हितों के बारे में पूछताछ और सर्वोच्च हितों के बारे में पूछताछ। आगे तीन प्रकार की पूछताछ: दोषरहितता के लाभ के लिए पूछताछ, प्रदूषणरहितता के लाभ के लिए पूछताछ और शुद्ध लाभ के लिए पूछताछ। आगे तीन प्रकार की पूछताछ: अतीत के बारे में पूछताछ, भविष्य के बारे में पूछताछ और वर्तमान के बारे में पूछताछ। आगे तीन प्रकार की पूछताछ: स्वयं के भीतर पूछताछ, स्वयं के बाहर पूछताछ और स्वयं के भीतर और बाहर दोनों के बारे में पूछताछ। आगे तीन प्रकार की पूछताछ: अच्छे कर्म, बुरे कर्म और अनिर्दिष्ट (अव्यक्तपुच्छा) के बारे में। आगे तीन प्रकार की पूछताछ: जनसमूह, अवशेष और संस्थाओं के बारे में। आगे तीन प्रकार की पूछताछ: जागरूकता, परिश्रम

और आध्यात्मिक सार के बारे में। आगे तीन प्रकार की पूछताछ: मूल, शक्ति और ज्ञान के बारे में। आगे तीन प्रकार की पूछताछ: मार्ग, फल और निर्वाण के बारे में।

"मैं आपसे पूछता हूँ," मैं आपसे विनती करता हूँ; मैं आपसे आग्रह करता हूँ; कृपया मुझे स्पष्ट करें; कृपया मुझे बताएं। "हे ईश्वर," जो आदर का पर्यायवाची है... (विलंबित, पिछले अनुभाग देखें)। "कृपया मुझे यह बताएं," कृपया कहें, कृपया समझाएं, कृपया सिखाएं, कृपया सूचित करें, कृपया निर्माण करें, कृपया उजागर करें, कृपया विश्लेषण करें, कृपया स्पष्ट करें।

13 · [भगवान: "पुण्णक"] इन ऋषियों, मनुष्यों, क्षत्रियों और ब्राह्मणों में से किसी ने भी इस संसार में देवताओं को अनेक यज्ञ किए हैं, ऐसी अवस्था की आशा में; बुढ़ापे से बंधे होने के कारण उन्होंने यज्ञ किए।

"इनमें से कोई भी ऋषि, लोग": (हटा दिया गया)... "क्षुद्र, ब्राह्मण, देवताओं के लिए": (हटा दिया गया)... "संसार में अनेक यज्ञ हैं": (हटा दिया गया)...

"पुनर्जन्म की अवस्था की प्रतीक्षा में": "प्रतीक्षा में," रूप प्राप्ति की प्रतीक्षा में, ध्वनि प्राप्ति की प्रतीक्षा में, (छोड़ा गया)... गंध, ...स्वाद, ...स्पर्श, ...पुत्र, ...पत्नी, ...संपत्ति, यश, संप्रभुता, महान कक्ष वाले क्षत्रिय घर में रहने वाले व्यक्तियों की, महान कक्ष वाले ब्राह्मण घर में रहने वाले व्यक्तियों की, महान कक्ष वाले गृहस्वामियों के घरों में रहने वाले व्यक्तियों की, स्वर्ग के चारों राजाओं में रहने वाले व्यक्तियों की, स्वर्ग में रहने की, रात्रि के स्वर्ग में, तुषिता स्वर्ग में, ज्ञान में, आशावाद में, दूसरों के स्वर्ग में, ब्रह्म स्वर्ग में, व्यक्ति लाभ प्राप्त करता है, चाहता है, स्वीकार करता है, आकांक्षा करता है, उत्सुकता से प्रतीक्षा करता है और प्रार्थना करता है।

"पुनर्जन्म की ऐसी अवस्था की प्रतीक्षा में": यहाँ व्यक्ति के पुनर्जन्म की प्रतीक्षा में; मैं महान हॉल वाले खत्तिया घर में व्यक्ति के पुनर्जन्म की प्रतीक्षा में हूँ... (उद्धृत) ...चाहते हुए, प्राप्त करते हुए, आकांक्षा करते हुए, उत्सुकता से प्रतीक्षा करते हुए और प्रार्थना करते हुए।

"वे वृद्धावस्था से बंधे हैं, इसलिए वे त्याग करते हैं": वे जो वृद्धावस्था से बंधे हैं, वे जो रोग, मृत्यु, दुःख, शोक, पीड़ा और निराशा से बंधे हैं। जब वे जन्म पर निर्भर होते हैं, तो वे वृद्धावस्था पर निर्भर होते हैं; जब वे वृद्धावस्था पर निर्भर होते हैं, तो वे रोग पर निर्भर होते हैं; ...(अस्पष्ट) रोग पर...(अस्पष्ट) मृत्यु पर; मृत्यु पर दुःख, पीड़ा और निराशा पर; ब्याज पर पुनर्जन्म पर; पुनर्जन्म पर पुनर्जन्म पर; जब वे पुनर्जन्म पर निर्भर होते हैं, तो वे अटके हुए, फँसे हुए, संक्रमित होते हैं; वे जो गतिशील हैं, और वे जिनका हृदय (इसकी ओर) मुड़ा हुआ है।

14 · [आदरणीय पुणक ने इस प्रकार कहा:] हे भगवान, इन ऋषियों, मनुष्यों, क्षत्रियों और ब्राह्मणों में से, जो संसार के देवताओं को अनेक यज्ञ करते हैं, यज्ञ के मार्ग से नहीं भटकते, क्या कोई ऐसा है जिसने जन्म और वृद्धावस्था को पार कर लिया हो? हे भगवान, मैं आपसे यह पूछता हूँ, कृपया मुझे इसका उत्तर दीजिए।

"इनमें से कोई भी ऋषि, लोग": "कोई भी"... (हटा दिया गया)।

"गुरुजी! क्या यह सच है कि कुछ लोग बलिदान के मार्ग पर चलना नहीं छोड़ते?": "क्या यह सच है?" संदेह का प्रश्न, उलझन का प्रश्न, एक अलंकारिक प्रश्न, व्यंग्यात्मक प्रश्न। "वे" बलिदान के पुरोहित हैं। "हे प्रभु," ... "हे प्रभु! क्या सचमुच ऐसे लोग हैं...?" "जो बलिदान के मार्ग पर चलना नहीं छोड़ते," बलिदान को बलिदान का मार्ग कहा जाता है, जैसे पवित्र मार्ग पवित्र मार्ग है; स्वर्ग आकाश का मार्ग है; शास्त्र का मार्ग शास्त्र का मार्ग है; उसी प्रकार, बलिदान को बलिदान का मार्ग कहा जाता है। "नहीं छोड़ते,"

बलिदान के मार्ग पर चलना न छोड़ने वाले आदरणीय, निरंतर, निरंतर चलने वाले, आदत में न फंसने वाले, अपनी इच्छाओं की उपेक्षा न करने वाले, चरित्रवान, और सतर्क रहने वाले होते हैं।

जो उस लक्ष्य को साधता है, जो प्रयास करता है, जो विजय प्राप्त करता है, जो वृद्धि करता है, वे ही त्याग के मार्ग से पीछे नहीं हटते: वे जिसे भी खोजते हैं, पीछा करते हैं और भीख मांगते हैं, चाहे वह वस्त्र हो, भोजन हो... (उद्धृत भाग), वे आदरणीय कर्मकारक हैं... (उद्धृत भाग)। जो वृद्धि करते हैं, वे भी त्याग के मार्ग से पीछे नहीं हटते; जो भी वस्त्र, भोजन तैयार करता है..., वे आदरणीय कर्मकारक हैं। जो वृद्धि करते हैं, वे भी त्याग के मार्ग से पीछे नहीं हटते; जहाँ कहीं भी वे वस्त्र, भोजन देते हैं, प्रदान करते हैं और दान करते हैं..., वे आदरणीय कर्मकारक हैं। जो वृद्धि करते हैं, वे भी त्याग के मार्ग से पीछे नहीं हटते।

"जन्म और वृद्धावस्था का अनुभव करना, महोदय": वृद्धावस्था और मृत्यु, ये दोनों ही बीत जाते हैं, पार हो जाते हैं और इन पर विजय प्राप्त कर लेते हैं। "प्रिय महोदय," यह प्रेम, आदर और आज्ञाकारिता का पर्यायवाची है।

"हे गुरु, मैं आपसे विनती करता हूँ, कृपया मुझे यह बताएँ": "मैं आपसे पूछता हूँ," मैं आपसे आग्रह करता हूँ; मुझे स्पष्ट कर दीजिए; "कृपया मुझे बताएँ," मुझे बताएँ। "हे प्रभु," एक आदरपूर्ण पर्यायवाची... "कृपया मुझे यह बताएँ"...

15 · [भगवान: "पुण्णक"] वे लाभ की अपेक्षा रखते हैं, उसकी सराहना करते हैं, प्रार्थना करते हैं और भेंट चढ़ाते हैं। वे समर्पित अनुयायी और लालची लोग हैं। मैं कहता हूँ कि वे जन्म और वृद्धावस्था को सहन नहीं कर पाए हैं।

"वे अपेक्षा करते हैं, सराहना करते हैं, प्रार्थना करते हैं और भेंट करते हैं": "वे अपेक्षा करते हैं," वे रूप की प्राप्ति की अपेक्षा करते हैं, वे ध्वनि की प्राप्ति की अपेक्षा करते हैं, ...गंध, स्वाद, स्पर्श, एक पुत्र की, ...(छोड़ा गया)।

वे सराहना करते हैं। वे बलिदान की सराहना करते हैं, या परिणाम की, या बलिदान करने वाले की। वे बलिदानों की सराहना कैसे करते हैं? जो किया जाता है वह पवित्र है, जो किया जाता है वह संतोषजनक है, अद्भुत है, समय पर किया गया है, उचित है, चयन (समीक्षा) के बाद किया गया है, दोषरहित है। देना निरंतर (नियमित) है, देना पवित्र और विश्वसनीय है। वे प्रशंसा और सराहना करते हैं, इसलिए वे बलिदानों की इस प्रकार सराहना करते हैं।

वे परिणामों की सराहना कैसे करते हैं? ऐसे कारणों (बलिदानों) से वे ब्रह्म स्वर्ग में व्यक्तिगत लाभ की अपेक्षा रखते हैं। वे इस प्रकार परिणाम की प्रशंसा, सराहना और प्रशंसा करते हैं।

वे उन लोगों की सराहना कैसे करते हैं जिन्हें समर्थन देना चाहिए? जिन्हें समर्थन देना चाहिए वे हैं, वे जो पर्याप्त वंश (वंश) वाले हों, जिनके उपनाम (परिवार) पर्याप्त हों, जो पढ़ने वाले हों, मंत्रों के ज्ञाता हों, तीनों वेदों की शब्दावली, अनुष्ठान, ध्वनिविज्ञान और व्युत्पत्ति के ज्ञाता हों, और प्राचीन इतिहास पाँचवाँ गुण है। वे जो भली-भांति जानते हों, जो पवित्र वाक्यों को जानते हों, जो व्याकरण समझते हों, जो मनुष्य के साथ सांसारिक संबंधों में अपूर्ण न हों, जो लोभ से मुक्त हों या लोभ के कारण लोभ न करते हों, या घृणा के कारण किसी से विमुख न हों, जो अज्ञानी हों या अज्ञानता के कारण उसमें भाग लेते हों, जो उपदेशों में पर्याप्तता में विश्वास रखते हों, जिनके पास निषेध हों, जिनके पास पर्याप्त ज्ञान हो, जिनके पास पर्याप्त मुक्ति हो, जिनके पास पर्याप्त दृष्टिकोण हों। वे प्रशंसा करते हैं, सराहना करते हैं...(उतारा गया)।

"वे प्रार्थना करते हैं," उन्होंने रूप प्राप्ति के लिए प्रार्थना की, उन्होंने ध्वनि प्राप्ति के लिए प्रार्थना की, ...(अंशित)। वे आशा करते हैं, सराहना करते हैं और प्रार्थना करते हैं। "वे भेंट चढ़ाते हैं," वे देते हैं, त्याग करते हैं, कपड़े, भोजन दान करते हैं ...(अंशित)।

"वे लाभ की अपनी इच्छा के लिए प्रार्थना करते हैं": वे रूप की प्राप्ति के लिए प्रार्थना करते हैं, ...(लोका गया)।

"वे समर्पित स्वीकारकर्ता (बलिदान के भक्त) हैं, लालची हैं, मैंने कहा कि वे जन्म और वृद्धावस्था से बच नहीं पाए हैं।" "उन्हें" बलिदानों के पुरोहित कहा जाता है। "अर्पण का समर्पण," भक्ति का बंधन, मजबूत बंधन, चरित्रवान व्यक्ति, जितना अधिक, उतना भारी, वह व्यक्ति जो इसका लक्ष्य है, प्रयास की ओर, झुकाव की ओर, विजेता की ओर, वृद्धि करने वाले की ओर। "लालची व्यक्ति," वह कोई भी व्यक्ति जिसमें इच्छा, लोभ, आनंद, प्यास, प्रेम, जुनून और मोह हो। इसे अस्तित्व का लोभ कहा जाता है। अस्तित्व का लोभ बंधा हुआ, आसक्त, दूषित, आसक्त, स्थिर और अवरुद्ध होता है।

मैंने कहा कि वे जन्म और वृद्धावस्था से बच नहीं पाए हैं। बलिदान चढ़ाने में लगे रहने वाले, लालची लोग जन्म, वृद्धावस्था और मृत्यु से बच नहीं पाए हैं, उनसे आगे नहीं बढ़ पाए हैं, उन्हें पार नहीं कर पाए हैं या उन पर विजय प्राप्त नहीं कर पाए हैं। जन्म, वृद्धावस्था और मृत्यु अलग नहीं हैं, उनसे छूटे नहीं जा सकते, उन्हें पार नहीं किया जा सकता, उन पर विजय प्राप्त नहीं की जा सकती; वे जन्म, वृद्धावस्था और मृत्यु के चक्र में घूमते रहते हैं; पुनर्जन्म, जन्म के साथ, वृद्धावस्था के बाद, रोग से पराजित और मृत्यु से पीड़ित; कोई शरण नहीं है। मैं कहता हूँ, मैं समझाता हूँ, मैं सिखाता हूँ, मैं सूचित करता हूँ, मैं निर्माण करता हूँ, मैं उजागर करता हूँ, मैं विश्लेषण करता हूँ, मैं स्पष्ट करता हूँ।

16 · [आदरणीय पुणक ने इस प्रकार कहा:] यदि यज्ञ करने में समर्पित लोग अपने यज्ञों के द्वारा जन्म और वृद्धावस्था के चक्र में नहीं जीते, हे प्रभु! तो फिर स्वर्ग और मनुष्य के संसार में जन्म और वृद्धावस्था का चक्र कौन जीता है, हे प्रभु? हे भगवान, मैं आपसे यह प्रार्थना करता हूँ, कृपया मुझे इसका उत्तर दीजिए।

"यदि यज्ञ करने के लिए समर्पित लोग जीवित नहीं रहे": यज्ञ के पुरोहित, समर्पित यज्ञकर्ता और लालची लोग, जन्म और वृद्धावस्था, वे जीवित नहीं रहे, मृत्यु से आगे नहीं बढ़े, वे पार नहीं हुए, उन्होंने विजय प्राप्त नहीं की; जन्म, वृद्धावस्था, मृत्यु अलग नहीं हुए, छोड़े नहीं गए, पार नहीं हुए; वे जन्म, वृद्धावस्था और मृत्यु में लौट आए, वे पुनर्जन्म के चक्र में घूमते रहे...(अंशित)।

"[इस तरह]": "इस तरह," वाक्य का आगे का भाग...

"बलिदान द्वारा... जन्म और वृद्धावस्था, महोदय": "बलिदान," अनेक बलिदानों के साथ, विभिन्न प्रकार के बलिदानों के साथ। "प्रिय महोदय,"...

"तो फिर, हे महोदय, स्वर्ग और मनुष्य के संसार में, जन्म और वृद्धावस्था के द्वारा, कौन है?": और इस संसार में, स्वर्ग, राक्षस और ब्राह्मणों सहित; सामंतों, ब्राह्मणों, स्वर्ग और मनुष्य की पीढ़ियों सहित; कौन है जिसने जन्म, वृद्धावस्था और मृत्यु को पार किया है?

"गुरुजी, मैं आपसे पूछता हूँ, कृपया मुझे यह बताइए": "मैं आपसे पूछता हूँ,"...

17 · [भगवान बुद्ध: "पुण्णक":] संसार में ऊँच-नीच का विचार करने के बाद, संसार में कहीं भी विचलित हुए बिना, शांत, निर्मल, चिंता रहित, इच्छाओं रहित, मैं कहता हूँ कि उन्होंने जन्म और वृद्धावस्था का अनुभव किया है। [एएन.3.32]

“संसार में ऊपर और नीचे का विचार करना”: विचार करने के बाद, इसे ज्ञान, समझ कहा जाता है... (छोड़ा गया, पिछले खंड देखें) भ्रम रहित, धर्म का चुनाव, सही दृष्टिकोण। “ऊपर और नीचे,” निचले भाग को स्वयं का व्यक्तित्व कहा जाता है, और ऊपरी भाग को अन्य व्यक्तित्व कहा जाता है; निचले भाग को स्वयं की शारीरिक अनुभूति, विचार और चेतना कहा जाता है; ऊपरी भाग को अन्य लोगों की शारीरिक चेतना कहा जाता है; ऊपरी भाग को छह बाह्य लोक कहा जाता है; निचले भाग को मनुष्य लोक कहा जाता है, ऊपरी भाग को स्वर्ग लोक कहा जाता है; निचले भाग को इच्छा लोक कहा जाता है, ऊपरी भाग को भौतिक जगत और निराकार लोक कहा जाता है; निचले भाग को इच्छा और भौतिक जगत कहा जाता है, संसार को निराकार लोक कहा जाता है। “संसार में ऊपर और नीचे का विचार करना”: ऊपर और नीचे को अनित्य, दुख, बीमारी, बीमार के रूप में देखना... (छोड़ा गया) छोड़ने के बाद, विचार करने, जानने, समझने, तौलने, निर्णय लेने के बाद, वियोग के बाद, स्पष्टीकरण के बाद।

“[भगवान: 'पुणक']”: “पुणक,” भगवान उस ब्राह्मण को उसके नाम से पुकारते हैं। “भगवान,” ....

“उसके लिए संसार में कोई संदेह नहीं है”: “उसके लिए,” अरहंत, वह जिसने सभी कष्टों को भस्म कर दिया है। “संकोच,” लालसा का, दृष्टि का, अहंकार का, अशुद्धता का, इच्छा की कंपकंपी का; उसके लिए ये सब अस्तित्व में नहीं हैं, ज्ञात नहीं हैं, पाए नहीं जा सकते; ये सब समाप्त हो गए हैं, शांत हो गए हैं, रुक गए हैं, उत्पन्न होने में असमर्थ हैं, ज्ञान की अग्नि से जल गए हैं। “कहीं भी,” चाहे कहीं भी हो, भीतर या बाहर या भीतर और बाहर। “संसार में,”...

“शांत, धुआं रहित, कष्ट रहित, इच्छा रहित, मैं कहता हूँ कि वह 'जन्म और वृद्धावस्था' से बच गया है”: “शांत,” मौन लोभ की अवस्था, ...घृणा, ...अज्ञान, क्रोध, आक्रोश, बुराई छिपाना, सभी अस्वास्थ्यकर कर्म; शांत, बुझा हुआ, ठंडा, चला गया और समाप्त हो गया। “धुआं रहित,” शरीर के बुरे कर्म धुआं रहित हैं, नष्ट हो गए हैं, सूख गए हैं, मुरझा गए हैं और समाप्त हो गए हैं; वाणी के बुरे कर्म... (छोड़ दिया गया); मन के; लोभ; क्रोध; अज्ञान; आक्रोश; बुराई छिपाना; ईर्ष्या; कंजूसी; चालाकी; वासना; आलस्य; सुस्ती; निष्क्रियता; सभी प्रदूषण; सभी बुराइयाँ; सभी कष्ट; सभी झुलसाने वाली गर्मी (यातना); सभी बुरे कर्म धुआं रहित हैं, नष्ट हो गए हैं, मुरझा गए हैं, मिटा दिए गए हैं। या, क्रोध को धुआँ कहा जाता है:

“ब्राह्मण! अहंकार ही तुम्हारा बोझ है, क्रोध तुम्हारा धुआँ है, और झूठ तुम्हारी राख है। जीभ यज्ञ का पात्र है, हृदय यज्ञ की भट्टी है, और सधा हुआ मन ही मनुष्यों की अग्नि है।” [संख्या 7.9]

या, क्रोध दस रूपों में प्रकट होता है: “वह मेरे प्रति प्रतिकूल रहा है,” [AN.9.29] क्रोध प्रकट होता है; “वह मेरे प्रति प्रतिकूल है,” क्रोध प्रकट होता है; “वह मेरे प्रति प्रतिकूल होगा,” ...(छोड़ा गया); “वह मेरे प्रिय और इच्छित कार्यों के विरुद्ध रहा है,” “वह मेरे प्रिय और इच्छित कार्यों के विरुद्ध है,” “वह होगा...,” “वह मेरे अप्रिय कार्यों के पक्ष में रहा है,” “वह पक्ष में है,” “वह पक्ष में होगा,” क्रोध प्रकट होता है; या अनुचित स्थान पर क्रोध प्रकट होता है। किसी भी प्रकार का क्रोध, शत्रुता, घृणा, अरुचि, बुराई, हृदय की घृणा, अहंकार, आक्रामकता, रोष, अप्रसन्नता: इसे क्रोध कहा जाता है।

इसके अतिरिक्त, क्रोध की चरम और सूक्ष्म अवस्थाओं को समझना चाहिए: कभी-कभी क्रोध केवल गुस्से की चरम सीमा तक होता है, भौंहें चढ़ाने जितना नहीं; कभी-कभी क्रोध केवल दांत पीसने जितना होता है, लेकिन उतना नहीं; कभी-कभी दांत पीसना, लेकिन गाली-गलौज नहीं; कभी-कभी गाली-गलौज, लेकिन हथियार की तलाश नहीं; कभी-कभी हथियार की तलाश, लेकिन हथियार उठाने की हद तक नहीं; कभी-कभी हथियार प्राप्त करना, लेकिन लाठी निकालने की हद तक नहीं; कभी-कभी लाठी निकालना, लेकिन प्रहार नहीं; कभी-कभी प्रहार करना, लेकिन तोड़ना नहीं; कभी-कभी तोड़ना, लेकिन चीरने जितना नहीं; कभी-कभी चीरना, लेकिन अंगों को खींचना नहीं; कभी-कभी अंगों को खींचना, लेकिन जान से मारने जितना नहीं; कभी-कभी जान से मारने जितना, लेकिन खुद को त्यागने जितना नहीं। जब क्रोधित व्यक्ति दूसरों को मारने के बाद खुद को मार डालता है, तो यह क्रोध की चरम सीमा है, और आगे बढ़ने पर क्रोध और भी बढ़ जाता है। जिसका क्रोध शांत हो जाता है, उसे निर्मल कहा जाता है।

जिस अवस्था में क्रोध का निवारण हो जाता है, वह धुएँ रहित हो जाती है; जिस अवस्था में क्रोध का ज्ञान होता है, वह धुएँ रहित हो जाती है; क्रोध का ज्ञान होने के कारण वह धुएँ रहित हो जाता है; जिस क्रोध का निवारण हो जाता है, वह धुएँ रहित हो जाता है। "कोई कष्ट नहीं," लोभ कष्ट है, क्रोध कष्ट है, अज्ञान कष्ट है, ...(अस्पष्ट), सभी अहितकर कर्म कष्ट हैं। जिसने ... का निवारण कर दिया है, वह निर्धन है।

"इच्छा का अभाव," इच्छा को लालसा कहा जाता है, अर्थात् लोभ, वासना... (निरस्त), अस्वस्थ जड़ें। जिसकी यह इच्छा समाप्त हो गई है..., उसे इच्छाहीन कहा जाता है। "जन्म": सभी जीवित प्राणियों में, प्रत्येक प्रकार के जन्म, गर्भ में प्रवेश, विभिन्न तत्वों की अभिव्यक्ति और प्रत्येक प्रकार के चेतन प्राणी की प्राप्ति। "वृषण": सभी जीवित प्राणियों में, वृषण, दांतों का झड़ना, बालों का सफेद होना, झुर्रियां, घटती आयु और प्रत्येक प्रकार के जीवित प्राणियों की जड़ों का क्षय। "जो मौन, निर्मल, व्यथित और इच्छाहीन हैं, मैं कहता हूँ कि उन्होंने 'जन्म और वृषण' से मुक्ति पा ली है": जो भी मौन, निर्मल, व्यथित और इच्छाहीन है; उसने जन्म, वृषण और मृत्यु पर विजय प्राप्त कर ली है, पार कर लिया है, पार कर लिया है; मैं कहता हूँ, मैं समझाता हूँ, मैं सिखाता हूँ, मैं सूचित करता हूँ, मैं निर्माण करता हूँ, मैं उजागर करता हूँ, मैं विश्लेषण करता हूँ, मैं स्पष्ट करता हूँ।

इन छंदों के अंत में...(हटा दिया गया) "भगवान मेरे गुरु हैं, और मैं उनका शिष्य हूँ।"

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> निद्देसा >> निद्देसा 2.ए.4

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

<<<< पिछला अगला >>>>

4. मेट्टागू

18 · [आदरणीय मेट्टागू ने इस प्रकार कहा:] हे भगवान, मैं आपसे यह निवेदन करता हूँ। मेरा मानना है कि आप वेदों के ज्ञाता हैं और आपने स्वयं इनका अभ्यास किया है। संसार में अनेक प्रकार के ये दुख कहाँ से उत्पन्न हुए?

"गुरुजी! मैं यह पूछता हूँ, कृपया मुझे यह बताएँ": "मैं पूछता हूँ," तीन प्रकार के प्रश्न हैं: ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"मैं आपसे पूछता हूँ," ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"[इस आदरणीय मेट्टागू की तरह]": ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"मुझे लगता है कि आप वेदों के ज्ञाता हैं और आपने स्वयं अभ्यास किया है": मुझे लगता है कि आप "वेदों से अवगत" हैं। मुझे लगता है कि आप "स्वयं अभ्यास करने वाले व्यक्ति" हैं; मैं ऐसा जानता हूँ; मैं सहमत हूँ। "वेदों के ज्ञाता, जिन्होंने स्वयं अभ्यास किया है," भगवान बुद्ध वेदों के ज्ञाता कैसे हो सकते हैं? वेदों को ज्ञान, ज्ञान का मूल, ज्ञान की शक्ति, धम्म ज्ञान, अन्वेषण, विपश्यना, चारों लोकों का सही दर्शन कहा जाता है। भगवान बुद्ध वे हैं जो परम लक्ष्य तक पहुँच चुके हैं, जो वेदों में ही जीवन व्यतीत करते हैं, वृद्धावस्था प्राप्त करते हैं और मृत्यु को प्राप्त करते हैं; जो परम लक्ष्य तक पहुँच चुके हैं, जो अंत तक पहुँच चुके हैं, जो सीमा तक पहुँच चुके हैं, जो शरण तक पहुँच चुके हैं, जो आश्रय तक पहुँच चुके हैं, जो भयमुक्त हो चुके हैं, जो मृत्यु से पहले ही पहुँच चुके हैं, जो अमरता तक पहुँच चुके हैं, वे ही निर्वाण प्राप्त कर चुके हैं। या फिर "वेदों को जानने वाला" वह है

जो वेदों को जानता है, या सात धर्मों की ज्ञात अवस्था वह है जो वेदों को जानता है: देखना (देखना), संदेह (संयम), संयम (संयम), क्रोध (गुमना), अज्ञान (गुमना), आलस्य (आलस्य), और इसके बुरे और अस्वस्थ तरीके ज्ञात हैं: दूषित करना, बार-बार आना, भय, और यह भविष्य में जीवित रहेगा और मर जाएगा।

भगवान बुद्ध: [सं.3.6, 534] "सभी वेदों का चयन करो, यहाँ विद्यमान सभी समण और ब्राह्मणों से संबंधित वेदों का चयन करो, वह सभी भावों में लोभ से मुक्त है, और सभी वेदों को पार करने के बाद, वह वेदों को भलीभांति जानने वाला है।"

जो स्वयं अभ्यास कर चुके हैं, वे कैसे धन्य हैं? धन्य वे हैं जिन्होंने शरीर, मन, बुद्धि, जागरूकता, धर्म का अभ्यास किया है, दिव्य आधारों, मूल, शक्ति और ज्ञान का अध्ययन किया है। जिन्होंने मार्ग का अभ्यास किया है, जिन्होंने अशुद्धियों का त्याग किया है, जो अविचल रहे हैं, जिन्होंने गवाही दी है, जिन्होंने जाना है, जिन्होंने त्याग दिया है, जिन्होंने अभ्यास किया है, जिन्होंने गवाही का त्याग किया है, जिन्होंने त्यागने योग्य चीजों का त्याग किया है, जिन्होंने अभ्यास करने योग्य चीजों का अभ्यास किया है, न छोटे, न बड़े, न बहुत गहरे, न असीम, न कठिन; वे जो सागर के समान अनेक खजानों की गहरी समझ रखते हैं, वे ही छह प्रकार की शांति प्राप्त करने वाले हैं।

आँखों से रूप देखने के बाद, मैं न तो खुश हूँ और न ही दुखी, और शांति, सजग और धार्मिकता में रहता हूँ; कान से ध्वनि सुनने के बाद..., नाक से गंध सूंघने के बाद..., जीभ से स्वाद चखने के बाद..., शरीर से स्पर्श को छूने के बाद..., चेतना से धम्म को जानने के बाद, मैं न तो खुश हूँ और न ही दुखी, बल्कि शांति, सजगता और धार्मिकता में रहता हूँ [डीएन.33, 6]।

दृष्टि से रूप देखने के बाद भी वह वांछित रूप की इच्छा नहीं करता, उससे घृणा नहीं करता और न ही उसके मन में लोभ उत्पन्न करता है। उसका शरीर और मन दोनों ही स्थिर हैं, और वह सद्गुणों से परिपूर्ण और मुक्त है। अवांछित रूप देखने के बाद भी वह निराश नहीं होता, उसका मन असंयमित रूप से दुखी नहीं होता, न ही उसके मन में द्वेष उत्पन्न होता है; उसका शरीर और मन दोनों ही सदृश हैं, और वह अपने भीतर अच्छाई और दयालुता से परिपूर्ण है।

आँखों से रूप देखने के बाद, शरीर और मन दोनों ही सुखद और अवांछनीय रूपों में निवास कर चुके हैं, और आत्मा दयालुता से निर्मित और मुक्त हो जाती है; कान से ध्वनि सुनने के बाद... (छोड़ा गया), चेतना से धम्म को जानने के बाद, शरीर और मन दोनों ही सुखद और अवांछनीय विधियों में स्थापित हो जाते हैं, और वे अपने भीतर सद्गुण से स्थापित और मुक्त हो जाते हैं [SN.46.6]।

आँखों से रूप देखने के बाद, वह आनंद में उत्तेजित नहीं होगा, अपराध में क्रोध से दूषित नहीं होगा, सुस्ती से आसक्ति में नहीं पड़ेगा, क्रोध उत्पन्न करने वाली बातों पर क्रोधित नहीं होगा, मादक बातों से आसक्त नहीं होगा, अशुद्धियों से दूषित नहीं होगा; कानों से ध्वनि सुनने के बाद... (विलुप्त) चेतना से धम्म को जानने के बाद...

जो तुम देखते हो उसमें केवल दृश्य है; जो तुम सुनते हो उसमें केवल श्रवण है; जो तुम अनुभव करते हो उसमें केवल अनुभूति है; जो तुम जानते हो उसमें केवल ज्ञान है [SN.35.95]। जो तुम देखते हो उससे दूषित मत हो; जो तुम सुनते हो उससे दूषित मत हो; जो तुम अनुभव करते हो उससे दूषित मत हो; जो तुम जानते हो उससे दूषित मत हो; और जो किसी भी प्रकार के आसक्ति से मुक्त है, वह निर्धन है, आश्रित नहीं है, और ज्ञात से बंधा नहीं है, बंधन से मुक्त है, वह निर्बल हृदय से जीवन व्यतीत करता है; जो वह सुनता है उसके संदर्भ में... (उद्धृत) जो वह जानता है उसके संदर्भ में, वह आसक्ति रहित है, वह हानि नहीं करता है, वह आश्रित नहीं है, और वह बंधन से मुक्त है। बंधन से मुक्त होकर, वह निर्बल हृदय से जीवन व्यतीत करता है।

भगवान बुद्ध की आंखें हैं, भगवान बुद्ध के पास रूप देखने के लिए आंखें हैं, भगवान बुद्ध में इच्छा और लोभ नहीं है, और भगवान बुद्ध का हृदय दयालु और मुक्त है; ...(छोड़ा गया) सुनने के लिए कान...; ...सूंघने के लिए नाक...; ...स्वाद लेने के लिए जीभ...; ...स्पर्श करने के लिए शरीर...; भगवान बुद्ध सचेत हैं, भगवान बुद्ध धर्म को चेतना से जानते हैं, भगवान बुद्ध में इच्छा और लोभ नहीं है, और भगवान बुद्ध का हृदय दयालु और मुक्त है [SN.35.232]।

आँखें रूप में आनंदित होती हैं, भगवान ने इसे विनियमित, सुव्यवस्थित, संरक्षित, सुरक्षित रखा है और आत्म-नियंत्रण सिखाया है; कान ध्वनि में आनंदित होते हैं... (विलुप्त) नाक गंध में आनंदित होती है..., जीभ स्वाद में आनंदित होती है..., शरीर स्पर्श में आनंदित होता है..., और भगवान ने इसे विनियमित, सुव्यवस्थित, संरक्षित, सुरक्षित रखा है और आत्म-नियंत्रण सिखाया है, जिसका अर्थ है धम्म में आनंदित होना, धम्म में प्रसन्न होना; भगवान ने इसे विनियमित किया है..., इसका आत्म-नियंत्रण। [एम.एन.75]

"वश में किया हुआ (नियंत्रित) (हाथी) सभा में लाया जाता है, राजा वश में किए हुए (हाथी) पर सवार होता है; जो व्यक्ति वश में किया गया है, वह लोगों में सर्वोच्च विजेता है, वह जो अपमान सहता है।"

पालतू बनाया गया खच्चर असाधारण होता है, और महान सिंधी घोड़े, और बड़े दांतों वाले हाथी, महान हाथी; स्वयं को वश में करने वाले लोग तो और भी बेहतर होते हैं।

इन पर सवार होकर कोई उस दिशा में नहीं जाता, जहाँ कोई पहुँच नहीं सकता, जैसे कोई वश में किया हुआ व्यक्ति स्वयं को वश में करके जाता है। [ध्वप.321-323]

“वे हर प्रकार के अहंकार में अडिग हैं, मुक्त होकर पुनर्जन्म प्राप्त कर चुके हैं, समायोजित साम्राज्यवादी स्थिति तक पहुँच चुके हैं, वे संसार के विजेता हैं।” [SN.22.76]

“जिन्होंने अपने भीतर और बाहर, संसार में, अपनी जड़ों को मजबूत किया है, इस और अन्य लोकों में प्रवेश किया है, जब वे मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे होते हैं, तो वे ही सर्वथा वश में होते हैं।” [सं. 3.6, 521]

“ये दुख कहाँ से उत्पन्न हुए?”: “कहाँ से,” संदेह का प्रश्न, भ्रम का प्रश्न, अनेक प्रश्नों का प्रश्न, यह एक अलंकारिक प्रश्न है, व्यंग्यात्मक प्रश्न है, आख़िर क्यों? “दुख,” जन्म से दुख, बुढ़ापे से दुख, ...बीमारी से, मृत्यु से, शोक से, निराशा से, हानि से, नरक से, पशु जगत से, प्रेतों से, मनुष्य से; जन्म से दुख में निहित, गर्भ में रहने के दुख में निहित, जन्म के दुख में निहित, आश्रित प्राणी का दुख, दूसरों द्वारा नियंत्रित प्राणी का दुख, ...अपने कर्मों के कारण, दूसरों के कर्मों के कारण, परिवर्तन से, नेत्र रोग से, कान रोग से, नाक रोग से, जीभ रोग से, शरीर रोग से, सिर रोग से, बाहरी कान रोग से, मुँह रोग से, दाँत रोग से, ...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें) ...दृष्टिहीनता का दुख। इन धर्मों के आरंभ से ही ये ज्ञात हैं; इनके लुप्त होने के बाद से भी ये ज्ञात हैं, प्रतिफल कर्म पर आधारित है; संबंध कर्म पर आधारित है, नाम रूप पर आधारित है; और रूप नाम पर आधारित है। जो लोग उत्पत्ति से घिरे हैं, जन्म से जुड़े हैं, उम्र से घिरे हैं, रोग से पराजित हैं, मृत्यु से पीड़ित हैं, दुख में जी रहे हैं, जिनके पास कोई आश्रय या शरण नहीं है, वे दुख कहलाते हैं। ये दुख कहाँ से आए? कहाँ उत्पन्न हुए? कहाँ पैदा हुए? कहाँ से आए? कहाँ पैदा हुए? कहाँ प्रकट हुए? कारण क्या है? इनका समूह क्या है? इनका जन्म क्या है? इनका मूल कारण क्या है? उन्होंने इन दुखों के मूल के बारे में पूछा, कारण के बारे में पूछा, उत्पत्ति के बारे में पूछा, उद्भव के बारे में पूछा, पूछा और प्रतीक्षा की, पोषण के बारे में पूछा, कारण के बारे में पूछा, भाग्य के बारे में पूछा, निर्धारित स्थिति के बारे में पूछा, पूछा और विनती की, निवेदन किया, स्पष्ट करें।

"किसी भी संसार में अनेक प्रकार के आकार और रूप": "सभी प्रकार के," पूर्णतः, प्रत्येक पहलू पूर्णतः, कोई अतिरिक्त नहीं, संपूर्ण पृथ्वी, यही सर्वव्यापी भाषा है, जिसका अर्थ है "सब कुछ।" "किसी भी संसार में," दुख का संसार, मनुष्यों का संसार, स्वर्ग का संसार, समुच्चय का संसार, संसारों का संसार और अस्तित्व का संसार। "विभिन्न आकार और रूप," विभिन्न प्रकार के दुख।

19 · [धन्य पुरुष: "मेट्टागू!"] तुम मुझसे दुख के घटित होने के बारे में पूछते हो, और मैं तुम्हें एक ज्ञाता के रूप में यह कहूँगा: समस्त दुख निर्भरता के कारण होते हैं, संसार में अनेक रूपों में।

"तुम मुझसे दुख के घटित होने के बारे में पूछते हो": दुख, कड़वाहट, बुढ़ापा, बीमारी, मृत्यु, उदासी, हताशा और शोक। तुम पूछते हो, तुम दुख के कारण के बारे में पूछते हो, तुम जड़ के बारे में पूछते हो, तुम उत्पत्ति के बारे में पूछते हो, तुम घटित होने के बारे में पूछते हो, तुम प्रतीक्षा के बारे में पूछते हो, तुम पोषण के बारे में पूछते हो, तुम विषय के बारे में पूछते हो, तुम स्थिति के बारे में पूछते हो, तुम संग्रह के बारे में पूछते हो, तुम दृढ़ता से पूछते हो, तुम पूछते हो, विनती करते हो, निवेदन करते हो, स्पष्ट करते हो। "मेट्टागू," भगवान ने ब्राह्मण को उनके नाम से पुकारा। "भगवान," यह एक सम्मानजनक पर्यायवाची है... (हटा दिया गया)।

"मैं तुम्हारे लिए, एक ज्ञानी के रूप में, यह कहूँगा": "मैं दुख के कारण की व्याख्या करूँगा, ...मूल, उत्पत्ति, उत्पादन, ...(अस्पष्ट); मैं व्याख्या करूँगा, मैं सिखाऊँगा... (अस्पष्ट)। "एक ज्ञानी के रूप में," जैसे कि वह ज्ञानी, वह समझी, वह मर्मस्पर्शी, न सुनी-सुनाई बातों से, न अफवाहों से, न विरासत से, न शास्त्रों से, न तर्क से, न तर्क-वितर्क से, न सैद्धांतिक चिंतन से, न चिंतन के बाद प्राप्त अंतर्दृष्टि से; एक ऐसी विधि जो स्वयं द्वारा सिद्ध और स्वयं सिद्ध की गई हो, मैं यह कहूँगा।

"सभी दुख निर्भरता (उपाधि; इसका अनुवाद आसक्ति या प्राप्ति के रूप में भी किया जा सकता है) के कारण उत्पन्न होते हैं": "निर्भरता," दस प्रकार की निर्भरताएँ हैं: तृष्णा की निर्भरता, दृष्टि की निर्भरता, अशुद्धता की निर्भरता, कर्म की निर्भरता, बुरे कर्मों की निर्भरता, भोजन की आसक्ति, घृणा की आसक्ति, चार आसक्तियों की निर्भरता, छह आंतरिक अवस्थाओं की निर्भरता, छह प्रकार की चेतना की निर्भरता, और हृदय और धर्म से संबंधित सभी दुख। "सभी दुख," जन्म का दुख, वृद्धावस्था का दुख, मृत्यु का दुख... (विलुप्त)। इन धर्मों के आरंभ से ही ये ज्ञात हैं; यह जानते हुए कि कर्म कर्म पर आधारित है; नाम रूप पर आधारित है; रूप नाम पर आधारित है। जन्म के बाद, जन्म के साथ, वृद्धावस्था के बाद, रोग से पराजित, मृत्यु से आहत, और दुख में रहने वाले, बिना आश्रय और बिना शरण के, दुख में रहने वाले कहलाते हैं। ये दुख निर्भरता को कारण, निर्भरता को जोड़ने वाले कारण, निर्भरता को स्थिति के रूप में मानते हैं, और निर्भरता ही इनके घटित होने, उत्पन्न होने, उत्पन्न होने, पैदा होने, जन्म लेने और जन्म लेने का कारण है।

"किसी भी दुनिया में सभी प्रकार के विभिन्न आकार और रूप": "सभी प्रकार" ...(हटा दिया गया)।

20 · जो अज्ञान के कारण आसक्त हैं, मंदबुद्धि व्यक्ति बार-बार कष्ट भोगता है, इसलिए ज्ञानी को आश्रित नहीं होना चाहिए, यह जानते हुए कि यही जीवन और दुख का कारण है।

"जो आश्रित नहीं है, वही ज्ञानी है": "वह," जो किसके समान है, जैसे प्रयास में, जैसे व्यवस्था में, जैसे प्रकार में, जहाँ कहीं भी पहुँचा है, चाहे वह क्षत्रिय हो, ब्राह्मण हो, वेस हो, शुद्ध हो, घर पर रहने वाला हो, भिक्षु हो, या कोई अन्य व्यक्ति हो। "अज्ञानी" वह है जो अज्ञान में प्रवेश कर चुका है, उदासीन है, और निम्न है। वह दृष्टि पर निर्भर है, अपवित्रता पर निर्भर है, ...कर्म पर, बुरे कर्मों पर, भोजन पर, घृणा पर, चार आसक्तियों पर, छह अंतर्मनों पर, छह प्रकार की चेतना पर, उसे उत्पन्न करने पर, उसे सजीव करने पर, उसे उत्पन्न करने पर।

"दुख बार-बार मंदबुद्धि लोगों तक पहुँचता है": जन्म, पीड़ा, बीमारी, मृत्यु, शोक, निराशा और कड़वाहट बार-बार आते हैं, पूरी तरह से आ जाते हैं, जकड़ लेते हैं, जकड़ लेते हैं। "मंदबुद्धि लोग," मंदबुद्धि, अज्ञानी, नासमझ, अविवेकी और हीन लोग।

अतः ज्ञानी को आश्रित नहीं होना चाहिए: "अतः," कारण, स्थिति, वजह, जब आप आसक्ति में यह दोष देखते हैं। "ज्ञानी," वे जो समझते हैं, वे जो जानते हैं, वे जो दूसरों को जानते हैं, वे जो देखते हैं, और वे जो अनुभव करते हैं: "सभी कर्म अनित्य हैं"... (छोड़ा गया), "सभी कर्म आत्महीन हैं"..., "धर्म का कोई भी संग्रह विनाश है"...। "आश्रित नहीं होना चाहिए," और उस आसक्ति पर आश्रित नहीं होना चाहिए जो दिखाई नहीं देनी चाहिए, ...दूषित नहीं होनी चाहिए, ...बुराई से नहीं, ...भोजन से नहीं, ...घृणा से नहीं, ...चार आसक्तियों से, छह आंतरिक भागों से, छह प्रकार की चेतना से, उत्पन्न नहीं होना चाहिए, उत्पन्न नहीं होना चाहिए, और उत्पन्न होने का कारण नहीं बनना चाहिए।

"दुख": वे जो जन्म से ही दुख से ग्रस्त हैं, वे जो वृद्ध हैं, वे जो कड़वे हैं, वे जो मरते हैं, शोक, निराशा; वे जो पीड़ित हैं। "उत्पादन का ज्ञाता": दुख के मूल का ज्ञाता, ...कारण का ज्ञाता, ...उत्पत्ति, सृजन, प्रतीक्षा, भोजन, वस्तु, संग्रह का ज्ञाता। संग्रह का अनुयायी ही बुद्धि कहलाता है। वह समझ है... (उतारा गया) कोई भ्रम नहीं, चुनाव नहीं, सही दृष्टिकोण नहीं। प्राप्त करना, पूर्णतः प्राप्त करना, पहुंचना, आरोहण करना, उसे अनुयायी कहा जाता है।

21 · (मेट्टागू:) हमने आपसे जो कुछ भी पूछा, आपने हमें बताया; हम आपसे कुछ और पूछना चाहते हैं, आइए! कृपया हमें बताइए, ज्ञानी लोग जन्म, वृद्धावस्था, दुःख और विलाप जैसी विपत्तियों को कैसे पार करते हैं? हे मुनि, मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि आप मुझे इसका पूर्णतया स्पष्टीकरण दें, क्योंकि आप ही इन धर्मों के ज्ञाता हैं।

"हमने आपसे जो भी पूछा, आपने हमें बताया": हम जो भी पूछते हैं, जो भी विनती करते हैं, जो भी हमें स्पष्ट करता है। "आपने हमें बताया," बताया, समझाया, स्पष्ट किया, सिखाया, स्थापित किया, उजागर किया, हल किया।

"हम आपसे और भी बातें पूछना चाहते हैं, आइए! कृपया हमें बताइए": हम आपसे और भी बातें पूछना चाहते हैं, हम आपसे और भी बातें जानना चाहते हैं, हम आपसे और भी बातें स्पष्ट करवाना चाहते हैं, हम आपसे और भी बहुत कुछ पूछना चाहते हैं। "आइए! कृपया हमें बताइए," आइए, कृपया बताइए, कृपया समझाइए, कृपया सिखाइए, कृपया जानकारी दीजिए, कृपया निर्माण कीजिए, कृपया पर्दा उठाइए, कृपया विश्लेषण कीजिए, कृपया स्पष्ट कीजिए।

"ज्ञानी लोग जन्म, वृद्धावस्था और दुःख, शोक की बाढ़ को कैसे पार करते हैं?": "कैसे?" संदेह, उलझन और (अस्पष्ट) ...क्यों? "ज्ञानी व्यक्ति" से तात्पर्य ज्ञानी, प्रबुद्ध व्यक्ति, विशिष्ट व्यक्ति से है। "तूफान", इच्छा की बाढ़, अस्तित्व की बाढ़, दृष्टि की बाढ़, अज्ञान की बाढ़। "जन्म" से तात्पर्य जन्म, गर्भ में प्रवेश, ...(अस्पष्ट)। "वृष्टि": ..., "दुःख": ..., "शोक", रिश्तेदारों के बिछड़ने से दुखी होना... (अस्पष्ट) कुछ कष्टों का अनुभव करना, शोक मनाना, रोना, विलाप करना, व्यर्थ के शब्द बोलना, बड़बड़ाना, आंसू बहाना।

"बुद्धिमान लोग बाढ़, जन्म, वृद्धावस्था, दुःख और शोक से कैसे पार पाते हैं?": बुद्धिमान लोग बाढ़, जन्म, वृद्धावस्था, दुःख और शोक से कैसे बचते हैं, पार पाते हैं, आगे बढ़ते हैं, पार करते हैं, और उन पर विजय प्राप्त करते हैं?

"मुनि, कृपया मुझे इसकी पूरी व्याख्या कीजिए": "वह," जो कुछ भी मैं पूछता हूँ, जो कुछ भी मैं विनती करता हूँ, जो कुछ भी मुझे स्पष्ट करता है। "मुनि," मुनि को ज्ञान कहा जाता है, वह ज्ञान है, समझ है... (विलुप्त), भगवान बुद्ध के पास मुनि का ज्ञान है, मुनि तक पहुँचने का ज्ञान है। तीन मुनि (पूर्ण सद्गुण) हैं: शरीर मुनि, भाषा मुनि, इरादा मुनि।

मुनि का शरीर क्या है? तीनों प्रकार के शरीर और बुरे कर्मों का त्याग मुनि की स्थिति है; तीनों प्रकार के अच्छे आचरण मुनि की स्थिति हैं; शरीर में मौजूद बुद्धि मुनि की स्थिति है; शरीर का ज्ञान मुनि की स्थिति है; (उच्चतर) ज्ञान के साथ मार्ग पर चलना मुनि का शरीर है; इच्छा और लोभ का त्याग मुनि के समान है; चौथा ध्यान, शरीर का विनाश, मुनि की स्थिति है।

मुनि की भाषा क्या है? भाषा के चार प्रकार के बुरे कर्मों का त्याग मुनि की स्थिति है; भाषा के चार प्रकार के अच्छे कर्मों का त्याग मुनि की स्थिति है; भाषाई विषयों का ज्ञान मुनि की स्थिति है; भाषा का ज्ञान मुनि की स्थिति है; और सभी कर्मों के मार्ग का ज्ञान मुनि की स्थिति है; भाषा की इच्छा और लोभ का त्याग मुनि की स्थिति है; भाषा का द्वितीय ध्यान विराम भाषा मुनि की स्थिति है।

हे मुनि, इरादा क्या है? इरादे और बुरे कर्मों के तीन प्रकार मुनि की स्थिति हैं; अच्छे कर्मों के तीन प्रकार मुनि की स्थिति हैं; मन-विषय में निहित ज्ञान मुनि की स्थिति है; हृदय का ज्ञान मुनि की स्थिति है; ज्ञान के साथ मार्ग पर चलने वाला मुनि की स्थिति है; हृदय की इच्छा और लोभ का मूल्यांकन मुनि की स्थिति है; मन को नष्ट करने की इच्छा मुनि की स्थिति है।

"शरीर मुनि, वाणी मुनि और नीयत मुनि किसी भी प्रकार से कष्टदायी नहीं हैं; मुनि को मुनि का दर्जा प्राप्त है और कहते हैं कि वे ही सब कुछ नष्ट करने वाले हैं। शरीर मुनि, वाणी मुनि और नीयत मुनि किसी भी प्रकार से कष्टदायी नहीं हैं; मुनि को मुनि का दर्जा प्राप्त है और कहते हैं कि वे ही बुराई से मुक्त हुए हैं।"

छह प्रकार के मुनि में मुनि के ये तीन रूप होते हैं: गृहस्थ मुनि, बेघर मुनि, ज्ञानवान मुनि, ज्ञानहीन मुनि, भिक्षु मुनि, और मुनि के मुनि। गृहस्थ कौन हैं? वे गृहस्थ जिन्होंने पदचिह्न देखे हैं और उपदेश सीखे हैं, वे गृहस्थ हैं। बेघर मुनि कौन हैं? वे भिक्षु जिन्होंने पदचिह्न देखे हैं और उपदेश सीखे हैं, वे बेघर मुनि हैं। ज्ञानवान मुनि के लिए सात प्रकार के ज्ञान हैं, अज्ञानी मुनि के लिए अरहंत हैं, और भिक्षु बुद्ध भिक्षु मुनि हैं। मुनि के मुनि को तथागत, अरहंत और प्रबुद्ध कहा जाता है।

"नासमझ मुनि मूर्ख और अज्ञानी होता है। तराजू उठाकर सबसे ऊपर वाला पलड़ा उठा लो और ज्ञानी बन जाओ। सभी बुराइयों से दूर रहो, क्योंकि मुनि उन्हीं बुराइयों के कारण मुनि बने। संसार में जो भी (आंतरिक और बाह्य) योग को समझता है, वही मुनि कहलाता है। जो संसार के भीतर और बाहर सब कुछ जानता है, धर्म के पीछे के अच्छे और बुरे को जानता है, जो स्वर्ग और मनुष्य दोनों का आदर पाता है, वह कलंक और जाल से परे है, वही मुनि है।"

"विस्तार से समझाइए," कृपया विस्तार से समझाइए; कृपया सिखाइए, कृपया जानकारी दीजिए, कृपया स्थापित कीजिए, कृपया उजागर कीजिए, कृपया विश्लेषण कीजिए, कृपया स्पष्ट कीजिए। "क्योंकि इस प्रकार आप इन धम्मों के ज्ञाता हैं": क्योंकि इस प्रकार आप इन धम्मों के ज्ञाता, निर्णायक, स्पष्टकर्ता और बोधकर्ता हैं।

22 · [भगवान: "मेट्टागू!"] मैं तुम्हें धम्म बताऊंगा, जो वास्तविक जीवन में ज्ञात है, अफवाहों के माध्यम से नहीं; जो कोई भी इसे जानता है, सचेत रूप से जीवन व्यतीत करते हुए, संसार में प्रेम (इच्छा) को पार कर सकता है।

"मैं तुम्हें धम्म का ज्ञान दूंगा": "धम्म," आरंभ अच्छा है, मध्य अच्छा है और अंत अच्छा है; अर्थ सही है, वाक्यांश सही है; केवल पूर्ण और शुद्ध ब्राह्मण परंपरा: चार चेतनाएँ, चार धर्म, चार दिव्य आधार, पाँच इंद्रियाँ, पाँच शक्तियाँ, सात ज्ञान के कारक, आठ पवित्र मार्ग, निर्वाण और निर्वाण की ओर ले जाने वाला मार्ग; मैं बताऊंगा, मैं समझाऊंगा, मैं सिखाऊंगा, मैं प्रकट करूंगा, मैं विश्लेषण करूंगा, मैं स्पष्ट करूंगा। "मेट्टागू," भगवान ने ब्राह्मण को उनके नाम से पुकारा।

“वर्तमान जीवन में, अफवाहों में नहीं”: “वर्तमान जीवन में,” जो देखा गया है, जो जाना गया है, जो मापा गया है, जो स्पष्ट किया गया है: “सभी कर्म अनित्य हैं”... (छोड़ा गया) “धर्मों का कोई भी संग्रह धर्मों का विनाश है” का अर्थ है उस धर्म में जो देखा गया है (वर्तमान जीवन में), उस धर्म में जो जाना गया है, उस धर्म में जो मापा गया है, उस धर्म में जो स्पष्ट किया गया है; मैं वास्तविक जीवन में इसी विषय पर चर्चा करूँगा। या, मैं आपको देखे गए दुख के बारे में बताऊँगा, मैं आपको देखे गए संग्रह के बारे में बताऊँगा, मैं आपको देखे गए मार्ग के बारे में बताऊँगा, मैं आपको देखे गए के विनाश के बारे में बताऊँगा, और मैं वर्तमान में इसी विषय पर चर्चा करूँगा। या, प्रत्यक्ष रूप से दृश्यमान, क्षणिक, आपको देखने के लिए आमंत्रित करने वाले, मार्गदर्शन करने में सक्षम जीवन में, और बुद्धिमानों को स्वयं इसका अनुभव करना चाहिए; मैं इस जीवन में इसी विषय पर चर्चा करूँगा। “अफवाहें नहीं,” किस्से-कहानियों से नहीं, सुनी-सुनाई बातों से नहीं, विरासत से नहीं, शास्त्रों से नहीं, तार्किक निष्कर्ष से नहीं, तर्क से नहीं, सैद्धांतिक चिंतन से नहीं, चिंतन के बाद प्राप्त राय से नहीं, बल्कि स्वयं से। मैं उस ज्ञात और स्वयंसिद्ध धम्म के बारे में बात करूंगा।”

“जो कोई भी जानने के बाद सचेत हो जाता है”: जानने, तौलने, परखने, अलग करने, स्पष्ट करने के बाद: “सभी कर्म क्षणभंगुर हैं” जानने के बाद, ...(अंशित)। “सचेत,” सचेत होने के चार तरीके हैं: शरीर में सचेतनता का अभ्यास करते समय और सचेतनता... (अंशित) उसे सचेत कहा जाता है। “जीवित,” जब आप चलते हैं, जीते हैं, कार्य करते हैं, रक्षा करते हैं, अस्तित्व में रहते हैं, जीवित रहते हैं।

“संसार में प्रेम के माध्यम से पार करने में सक्षम”: “प्रेम” को तृष्णा कहा जाता है, जो लोभ है, ...(विलुप्त) अस्वस्थ मूल। “प्रेम में होना,” प्रेम करने का क्या अर्थ है? “फैलाव” प्रेम है, “विस्तार” प्रेम है, “विशाल” प्रेम है, “गलत” प्रेम है, “यह मजबूर करता है” प्रेम है, “यह छीन लेता है” प्रेम है, “धोखा” प्रेम है, “विषाक्त जड़” प्रेम है, “विषाक्त फल” प्रेम है, “विषाक्त का प्रयोग” प्रेम है; या, “प्रेम की विशाल प्यास”: रूप में..., ध्वनि में..., गंध में..., स्वाद में... (विलुप्त), भौतिक जगत, निराकार जगत, इच्छा जगत, चार घटक, पाँच गुण, भूतकाल, भविष्यकाल, वर्तमान, धर्मों में देखे, सुने, महसूस किए और जाने योग्य विस्तारित आसक्तियाँ प्रेम हैं। “संसार में,” दुख के जगत में, मनुष्य जगत में, (विलुप्त)..., और अस्तित्व के जगत में। “संसार में प्रेम से बच पाने में सक्षम”: “संसार में प्रेम को वह सचेतन रूप से पार कर सकता है, उससे आगे निकल सकता है, पार कर सकता है, पार कर सकता है और उस पर विजय प्राप्त कर सकता है” [नी.1]।

23 · (मेट्टागू:) हे महान ऋषि, मैं उसमें आनंदित होता हूँ! सर्वोच्च धम्म, जिसे जानने वाला कोई भी व्यक्ति सचेतन जीवन जीकर संसार के प्रेम से पार पा सकता है।

“मैं उसमें आनंदित हूँ”: “उसमें,” आपके शब्द, आपकी भाषा, आपकी शिक्षा और आपकी नसीहत। “मैं आनंदित हूँ,” मैं आनंदित हूँ, मैं खुश हूँ, मैं प्रेम करता हूँ, मैं चाहता हूँ, मैं इसका उपयोग कर सकता हूँ, मैं विनती करता हूँ, मैं आशा करता हूँ, मैं प्रार्थना करता हूँ।

“महान ऋषि! सर्वोच्च धम्म”: “महान ऋषि,” धन्य ऋषि महान ऋषि क्यों हैं? “महान उपदेशों के साधक और अनुयायी” ही महान ऋषि हैं। ...महान एकाग्रता के..., ...महान मुक्ति के समूह के..., “ज्ञान और अंतर्दृष्टि की महान मुक्ति के साधक और अनुयायी” ही महान ऋषि हैं; अंधकार द्वारा एकत्रित अंश..., महान उलटफेर का विनाश..., प्यास के बड़े तीर को निकालना..., दृष्टि के संचय का खुलना..., बड़े अहंकार के ध्वज को उठाना..., ...महान कार्य को शांत करना..., बड़ी धारा को शांत करना..., भारी बोझ को उतारना..., महान पुनर्जन्म के चक्र का टूटना..., महान ऊष्मा का गायब होना..., महान ऊष्मा का रुकना..., “अपने हृदय में धम्म का ध्वज उठाने वाला साधक और अनुयायी” ही महान ऋषि हैं; महान बुद्धि..., महान परिश्रम..., महान दिव्य आधार..., महान जड़ें..., शक्ति..., महान ज्ञान की शाखाएँ..., पवित्र मार्ग की आठ बड़ी शाखाएँ..., “महान सर्वोच्च लाभ की अमरता, निर्वाण का साधक, उसका अनुसरण करने वाला” महान ऋषि हैं; “शक्तिशाली प्राणियों द्वारा खोजे, अनुसरण किए और खोजे जाने वाले: बुद्ध कहाँ हैं?

भगवान कहाँ हैं? देवताओं में भगवान कहाँ हैं? मनुष्यों में बैल राजा कहाँ हैं?'' ऐसे हैं महान ऋषि। ''सर्वोच्च धम्म,'' सर्वोच्च धम्म को निर्जीव, निर्वाण कहा जाता है, अर्थात् सभी कर्मों का अंत, सभी आसक्तियों का अंत, भोग-विलास का अंत, निर्वाण। ''सर्वोच्च,'' प्रथम, सबसे विजयी, सर्वोच्च, शीर्ष, सबसे अधिक, धम्म का शिखर।

''जानने के बाद सचेत होकर चलने वाला कोई भी व्यक्ति'': जानने, मापने, परखने, अलग करने और स्पष्ट करने के बाद: ''सभी कर्म क्षणभंगुर हैं''... ''सचेत'' का अर्थ चार तरीकों से सचेत रहना है: ... ''जीना'', ...

''संसार में प्रेम से पार पाने में सक्षम'': ''प्रेम'' को लालसा कहा जाता है, जो लोभ है, ... ''प्रेम में होना'', ... ''संसार में'' .... ''संसार में प्रेम से पार पाने में सक्षम'': वह प्रेम के उस संसार में सचेतन रूप से पार पा सकता है, उससे ऊपर उठ सकता है और उस पर विजय प्राप्त कर सकता है।

24 · [भगवान: ''मेट्टागू!''] जो कुछ भी तुम सही जानते हो, ऊपर, नीचे और मध्य चारों दिशाओं में, इनमें आनंदित और निवास किए बिना, चेतना अस्तित्व में नहीं रहेगी।

''जो कुछ तुम सही जानते हो'': जो तुम जानते हो, जो तुम समझते हो। ''मेट्टागू,'' भगवान ने ब्राह्मण को उनके नाम से पुकारा। ''भगवान''... (छोड़ा गया)।

''ऊपर, नीचे और मध्य चार दिशाओं में'': ''ऊपर'' भविष्य है, ''नीचे'' भूतकाल है, ''मध्य चार'' वर्तमान है; ''ऊपर'' स्वर्ग लोक है, ''नीचे'' नरक लोक है, ''मध्य चार'' मनुष्य लोक है। या, ''ऊपर'' अच्छा धर्म है, ''नीचे'' बुरा धर्म है, ''मध्य चार'' अचिह्नित धर्म है; ''ऊपर'' निराकार लोक है, ''नीचे'' इच्छा लोक है, और ''मध्य चार'' भौतिक लोक है; ''ऊपर'' का अर्थ आनंद है, ''नीचे'' का अर्थ दुख है, ''मध्य चार'' का अर्थ न दुख है और न आनंद; ''ऊपर'' का अर्थ पैर के तलवे के ऊपर है, ''नीचे'' का अर्थ बालों के नीचे है, और ''मध्य चार'' का अर्थ मध्य में है।

''इनमें आनंदित और लीन न होने पर चेतना का अस्तित्व नहीं रहेगा'': ''इनमें,'' व्याख्या, शिक्षण, सूचना, स्थापना, अनावरण, विश्लेषण और स्पष्टीकरण किया जा रहा है। सुख को लालसा कहा जाता है, जो लोभ है... ''जीवन,'' दो प्रकार का जीवन है: प्यास (लालसा) वाला जीवन और दृष्टि (दर्शन) वाला जीवन। ...(अंशित, पिछले भाग देखें)।

''विभाजन के बाद चेतना'': वह चेतना जो आशीर्वाद देने और न देने में सक्षम है, और वह चेतना जो गतिहीन है [SN.12.51]। इनमें आनंदित चेतना स्थिर हो जाती है। निष्कासन के बाद, बहिष्कार के बाद, विखंडन के बाद, त्यागने के बाद, परित्याग के बाद, भगाने के बाद, अंत के बाद, और उसे अस्तित्वहीनता में ले जाने के बाद।

''क्या यह अस्तित्व में रहेगा?'': ''अस्तित्व'' दो प्रकार का होता है: कर्म और पुनर्जन्म। कर्म क्या है? पुण्य कर्म, अपुष्ट कर्म और स्थिर कर्म कर्म हैं। पुनर्जन्म क्या है? इस व्यक्ति के रूप, भावनाएँ, विचार, व्यवहार और चेतना का पुनर्जन्म होता है। ''अस्तित्व में नहीं रहेगा'': पुनर्जन्म के अभ्यास और चक्र में आनंदित और स्थिर रहने वाली चेतना और कर्म टूट जाएँगे, दूर हो जाएँगे, समाप्त हो जाएँगे और अस्तित्वहीनता में चले जाएँगे। यह स्थिर नहीं रहेगा; यह निरंतर अस्तित्व में नहीं रहेगा।

25 · जो इस प्रकार जीवन व्यतीत करते हैं, सचेत रहते हैं और त्याग नहीं करते, भिक्षु जो सभी चीजों को "मेरा" मानकर त्याग देते हैं; जन्म, वृद्धावस्था, दुःख और शोक: यहीं पर ज्ञानी दुखों का त्याग कर सकते हैं।

"जो इस प्रकार जीवन जीते हैं, सचेत रहते हैं और विश्राम नहीं करते": "इस प्रकार जीवन जियो," चेतना और कर्म एक साथ रहते हैं और सहअस्तित्व में रहते हैं, साथ ही पुनर्जन्म, त्याग, निष्कासन, अंत और अस्तित्वहीनता का चक्र भी। "सचेतता" चार प्रकार से सचेत है: ...(छोड़ा गया)। "जो विश्राम नहीं करते" वे आदरणीय कर्मठ, नियमित, निरंतर, वे हैं जिन्हें अटकने की आदत नहीं है, वे हैं जो अपनी इच्छाओं की उपेक्षा नहीं करते, वे हैं जो जिम्मेदारी की उपेक्षा नहीं करते और वे हैं जो अच्छे धम्म के प्रति लापरवाह नहीं हैं; "मैं अधूरे व्रतों को कैसे पूरा करूँ, या पूर्ण किए गए व्रतों को ज्ञान से सर्वत्र कैसे पोषित करूँ?" जहाँ उनके पास अच्छे धम्म में दृढ़ संकल्प, परिश्रम, साहस, मेहनत, अविचलित रहना, सचेतता, सही ज्ञान, उत्साह, जोश, दृढ़ता, अभ्यास, विश्राम न करना और विश्राम न करना है; "मैं अपूर्ण एकाग्रता को कैसे पूर्ण करूँ... (विलुप्त) सर्वोच्च ज्ञान..., स्वतंत्रता का सार..., अपूर्ण मुक्तिदायक ज्ञान का सार..., पूर्ण मुक्त ज्ञान का सार...?" जहाँ उसकी मंशाएँ हैं, ... "मैं भविष्य को कैसे जानूँ? दुख का ज्ञान, या उस अपवित्रता का ज्ञान जिसे त्यागा नहीं गया है, या उस मार्ग का ज्ञान जिसका अभ्यास नहीं किया गया है, या गवाही का ज्ञान, विनाश का ज्ञान?" जहाँ उसकी मंशाएँ हैं, ...

"भिक्षु जो 'मेरा' समझे जाने वाले सभी भावों का त्याग करते हैं": "भिक्षु," गुणी भिक्षु, या विद्वान भिक्षु। "भिक्षु," जब वे चलते हैं, ठहरते हैं, कर्म करते हैं, आगे बढ़ते हैं, रक्षा करते हैं और जीवन यापन करते हैं। "'मेरा' समझे जाने" से दो प्रकार के आत्म-आसक्ति होती है: प्यासी आत्म-आसक्ति और दृष्टिजनित आत्म-आसक्ति... (अंतःखंडित) अंत के बाद, उसे अस्तित्वहीन बना देता है।

"जन्म, वृद्धावस्था, दुःख और शोक, जहाँ ज्ञानी दुःख का त्याग कर सकते हैं": "जन्म," .... "वृद्धावस्था," .... "दुःख," .... "शोक," .... "यहाँ," .... "ज्ञानी" वे हैं जिन्होंने स्पष्टता प्राप्त कर ली है। "दुःख," .... "जन्म, वृद्धावस्था, दुःख और शोक, जहाँ ज्ञानी दुःख का त्याग कर सकते हैं": "जो यहाँ पहुँच गया है, ज्ञानी, वह जन्म, वृद्धावस्था और दुःख, दुःख का त्याग कर सकता है, उन्हें दूर भगा सकता है, उनका अंत कर सकता है, उन्हें अस्तित्वहीन बना सकता है।"

26 · (मेट्टागू:) मैं महान ऋषि के वचनों से प्रसन्न हूँ; हे गौतम, आपने सही कहा है, आश्रितता रहित अवस्था, हे भगवान! यह सत्य है कि आपने दुख का त्याग कर दिया है, क्योंकि इस प्रकार के धर्म आपको ज्ञात हैं।

"मैं महान ऋषि के वचनों में आनंदित होता हूँ": ...(हटा दिया गया)। "मैं आनंदित होता हूँ," .... "महान ऋषि," ....

"गौतम, आपने सही कहा, आप आश्रितता रहित अवस्था में हैं": "सही कहा," अच्छी तरह से बोलना, व्याख्या करना, सिखाना, सूचित करना, स्थापित करना, उजागर करना, विश्लेषण करना, स्पष्ट करना और समझाना। "गौतम एक आश्रित कर्ता हैं," जिसे प्रदूषण, समुच्चय, सृजन, वियोग, आसक्ति का अंत, निर्जीवता और निर्वाण कहा जाता है।

"हे भगवान! यह सच है कि आपने दुखों का त्याग कर दिया है": "सच", यह निर्णायक, निर्विवाद, आत्मविश्वासपूर्ण, निःसंदेह, आदेशात्मक और त्रुटिरहित भाषा है, निश्चितता का शब्द है, जो "सच" है। "हे भगवान"... "आप दुखों का त्याग कर देते हैं", जीवन के दुख, बुढ़ापे के दुख, बीमारी, मृत्यु, शोक, दुःख, निराशा, कड़वाहट, आप इन सभी का त्याग कर देते हैं, इन्हें छोड़ देते हैं, दूर भगा देते हैं, इनका अंत कर देते हैं और इन्हें विलुप्त कर देते हैं।

"क्योंकि इस प्रकार तुम इन धम्मों के ज्ञाता हो": क्योंकि इस प्रकार तुम इन धम्मों के ज्ञाता, निर्णायक, स्पष्टकर्ता और बोधकर्ता हो।

27 · निःसंदेह, वे भी दुखों का त्याग कर सकते हैं, जिन्हें आप, मुनि, शिक्षा देना जारी रखते हैं। आपसे मिलने के बाद, मैं आपको प्रणाम करता हूँ, हे श्रेष्ठ! शायद भगवान मुझे भी शिक्षा देना जारी रखेंगे।

“वे वास्तव में दुख का त्याग कर सकते हैं”: “वे” क्षत्रिय, ब्राह्मण, वेस, शुद्ध, गृहस्थ, भिक्षु, स्वर्गवासी और मनुष्य हैं। “दुख का त्याग कर सकते हैं”, जन्म का दुख, वृद्धावस्था का दुख, (कुछ अंश हटा दिए गए)..., वे इन दुखों का त्याग कर सकते हैं, इन्हें हटा सकते हैं, इनका निवारण कर सकते हैं, इनका अंत कर सकते हैं और इन्हें अस्तित्वहीन बना सकते हैं।

“मुनि, जिन्हें आप शिक्षा देते रहेंगे”: “जिन्हें...” वे क्षत्रिय, ब्राह्मण, (अस्पष्ट) हैं...। “आप,” उन्होंने कहा कि भगवान “मुनि,” जो ज्ञान हैं... (अस्पष्ट)। “शिक्षा देते रहेंगे,” व्याख्या करते रहेंगे, गहन शिक्षा देंगे, बार-बार शिक्षा देंगे, निरंतर शिक्षा देते रहेंगे।

“आपसे मिलने के बाद, मैं आपको प्रणाम करता हूँ, हे श्रेष्ठ (नाग; जिसका अर्थ हाथी भी होता है)”: “आप,” भगवान। “मैं प्रणाम करता हूँ,” मैं अपने शरीर से प्रणाम करता हूँ, या शब्दों से, या अपने हृदय से, या उचित आचरण से, या धर्म का पालन करते हुए आदर दिखाता हूँ। “मिलने के बाद,” मिलने के बाद, पूर्ण रूप से मिलने के बाद, मैं आपको प्रणाम करूँगा। “हे श्रेष्ठ,” भगवान एक “श्रेष्ठ” होने के नाते अपराध नहीं करते; एक “श्रेष्ठ” होने के नाते जाते नहीं; एक “श्रेष्ठ” होने के नाते आते नहीं। “भगवान अपराध नहीं करते” कहना किस प्रकार श्रेष्ठता है? अपराध को बुराई, अस्वास्थ्यकर धर्म कहा जाता है: अशुद्धता का अनुसरण करना, पुन: जन्म लेना, भय, कड़वाहट, भविष्य का जीवन और मृत्यु।

भगवान मुहम्मद: [सं.3.6, 527] “जो संसार में कोई अपराध नहीं करता, सभी बंधनों और बंधनों को त्यागकर, किसी भी चीज़ से आसक्त नहीं रहता और मुक्त हो जाता है। ऐसे ही लोग वास्तव में श्रेष्ठ कहलाते हैं।”

“भगवान बुद्ध नहीं जा रहे हैं” यह कथन श्रेष्ठ क्यों है? भगवान बुद्ध इसलिए नहीं जा रहे हैं क्योंकि उन्हें कुछ चाहिए; डर के कारण नहीं; लोभ के कारण नहीं; घृणा के कारण नहीं; अज्ञान के कारण नहीं; अहंकार के कारण नहीं; विचारों के कारण नहीं; अविश्वास के कारण नहीं; संदेह के कारण नहीं; संभावित परेशानियों के कारण नहीं; कलह (असामंजस्य) से बहककर नहीं, बल्कि चलते हुए, निर्देशित होकर या ले जाए जाने के कारण।

“भगवान नहीं आ रहे हैं” यह कथन श्रेष्ठ कैसे है? सोतापन्न मार्ग द्वारा जो भी अशुद्धि दूर हो जाती है, वह अशुद्धि अब अनुभव नहीं होती, न लौटती है, न वापस जाती है; सकदागामी मार्ग द्वारा...; अनागामी मार्ग द्वारा...; अरहंत मार्ग द्वारा...

“शायद भगवान मुझे सिखाते रहेंगे”: शायद भगवान मुझे सिखाते रहेंगे, अच्छी तरह से सिखाएंगे, लगातार सिखाते रहेंगे, बार-बार सिखाते रहेंगे, मुझे सिखाएंगे।

28 · (भगवान:) जो ब्राह्मण वेदों का ज्ञाता सिद्ध कर सके, जिसके पास कुछ भी न हो, जो इच्छा और अस्तित्व से आसक्त हो, वही वास्तव में बाढ़ से बचकर दूसरे किनारे पर पहुँच गया है, इच्छाहीन और संशयरहित होकर।

“एक ब्राह्मण वह व्यक्ति होता है जो वेदों का ज्ञाता हो”: “ब्राह्मण,” सात धर्मों का अपवर्जन ही ब्राह्मण है: दृष्टि का अपवर्जन, संदेह का अपवर्जन, संयम का अपवर्जन, लोभ का अपवर्जन, घृणा का अपवर्जन, भ्रम का अपवर्जन, आलस्य का अपवर्जन, वे सभी बुरे और अस्वस्थ तरीके जो दूषित हैं, जो अब अस्तित्व में नहीं हैं, जो भयभीत करने वाले हैं, जिनके परिणाम भुगतने पड़ेंगे, और जो भविष्य में मरेंगे।

भगवान बुद्ध: [सं.3.6, 524] “सभी बुराइयों के नाश होने पर, निष्कलंक, सदाचारी अवस्था में खड़े होकर, पुनर्जन्म से परे जाकर, वे पूर्ण पुरुष बन जाते हैं। जो आश्रित नहीं हैं, उन्हें ब्राह्मण कहा जा सकता है।”

"वेदों का ज्ञान": वेदों को चारों लोकों का ज्ञान कहा जाता है... (उद्धृत अंश)। वह व्यक्ति जो सभी वेदों को पार करके वेदों को जानता है। "ज्ञान सिद्ध कर सकता है," गवाही दे सकता है, जानता है, भेद कर सकता है, निश्चित रूप से जानता है, गहराई से समझ सकता है।

"स्वामित्वहीन, इच्छा और अस्तित्व में आसक्ति रहित": "किसी भी वस्तु का स्वामी न होना," लोभ एक वस्तु है; घृणा एक वस्तु है; अज्ञान एक वस्तु है; अहंकार एक वस्तु है; दृष्टि (विचार) एक वस्तु है; अपवित्रता एक वस्तु है; बुरे कर्म एक वस्तु हैं। जिसके लिए इनमें से कोई भी वस्तु समाप्त हो गई हो, शांत हो गई हो, रुक गई हो, उत्पन्न न हो पा रही हो और ज्ञान की अग्नि से जल गई हो, उसे स्वामित्वहीन कहा जाता है। "इच्छा," दो प्रकार की इच्छाएँ हैं: वस्तुओं की इच्छा और अपवित्रता की इच्छा... (उद्धृत)। "अस्तित्व," दो प्रकार के हैं: कर्म और पुनर्जन्म... (उद्धृत)। "स्वामित्वहीन, इच्छा (या अस्तित्व) में आसक्ति रहित": जो व्यक्ति इच्छा में किसी भी वस्तु का स्वामी नहीं है और अनासक्त, निर्बाध, मुक्त, त्यागा हुआ, मुक्त, बंधन से अलग हो चुका है, वह निर्बल हृदय से जीवन व्यतीत करता है।

"यह सच है कि वह बाढ़ से बच गया है": "यह सच है," यही निर्णायक शब्द है... (उद्धृत)। "उछाल," इच्छा का उफान, पुनर्जन्म का उफान, दृष्टि का उफान, अज्ञान का उफान। "पार कर गया," उसने पार किया, खाई से गुजरा, आगे निकल गया।

"और जो दूसरे किनारे को पार कर चुके हैं, वे वे हैं जो त्यागे नहीं गए हैं, और जो संदेह नहीं करते हैं": "पार कर चुके हैं," सांसारिक इच्छाओं की उग्र धाराओं को पार कर लिया गया है; अस्तित्व की धाराओं को पार कर लिया गया है; दृष्टि (दृष्टिकोण) की धाराओं को पार कर लिया गया है; अज्ञान की उग्र धाराओं को पार कर लिया गया है; सभी चक्रों को पार कर लिया गया है, बाहर आ गए हैं, पार कर लिए गए हैं, विजय प्राप्त कर ली गई है; वह अवतरित हुआ है, अभ्यास करने वाला है, यात्रा पूरी करने वाला है, दिशा तक पहुँच गया है, अंत तक पहुँच गया है, ब्रह्म की रक्षा करने वाला है, सर्वोच्च दृष्टि तक पहुँच गया है, मार्ग का अभ्यास करने वाला है, अशुद्धता को दूर करने वाला है, अविचल है, विनाश की गवाही देने वाला है; उनके लिए, पीड़ा का अनुभव हो चुका है, संगति का त्याग हो चुका है, मार्ग का अभ्यास हो चुका है, अंत का प्रमाण मिल चुका है, जो सिद्ध हो चुका है वह ज्ञात है, जो जाना जा सकता है उसे जानना, जिन्होंने त्याग का अर्थ त्याग दिया है, जिन्होंने अभ्यास का अर्थ त्याग दिया है, और जिन्होंने प्रमाण दिया है कि प्रमाण क्या होना चाहिए।

वह है जिसकी बाधा दूर हो गई है, जिसकी खाई भर गई है, जिसका स्तंभ उखाड़ दिया गया है, जिसका कोई बंधन नहीं है, जिसका पवित्र ध्वज गिर गया है, जिसका बोझ हटा दिया गया है, जो अलग हो गया है, जिसकी पाँच शाखाएँ काट दी गई हैं, और जिसकी छह शाखाएँ हैं। जिनके एक संरक्षक और चार सहारे हैं, वे वे हैं जिनके सत्य दूर हो गए हैं, जो त्याग और पूर्ण क्षय की तलाश में हैं, जिनके कोई अशुद्ध इरादे नहीं हैं, जिन्होंने अपने जीवन को शांत कर लिया है, जो दयालु और मुक्त हैं, जो ज्ञान से मुक्त हैं; सर्वोच्च पुरुष, सर्वोच्च पुरुष, जिसने सर्वोच्च सिद्धि प्राप्त कर ली है, न तो रचना करता है और न ही विघटन करता है, न ही संचय करके खड़ा होता है; न तो त्यागता है और न ही आसक्ति रखता है, बल्कि त्यागने के बाद खड़ा रहता है; न तो निथारता है और न ही संचय करता है, निथारने के बाद खड़ा रहता है; न बुझाने वाला, न जलने वाला, बुझने के बाद स्थिर रहने वाला [SN.22.79], वह व्यक्ति जो उपदेशों को सीखने की अवस्था में नहीं है, और जो ज्ञानहीन निवास में है, वह निवासी जो बिना ज्ञान के ज्ञान की अवस्था में है, वह निवासी जो ज्ञान की प्रचुरता के बावजूद अज्ञान की अवस्था में है, वह निवासी जो बिना ज्ञान के मुक्ति की अवस्था में है, ज्ञान की अवस्था में है, और सत्य की पूर्णता और प्रवेश के बाद स्थिर रहने वाला है, वे जो विक्षोभ (लालसा) से मुक्त हो चुके हैं, वे जो अशुद्धता की आग बुझने के बाद स्थिर रहते हैं, वे जो अब बिल्कुल नहीं आते, वे जिन्होंने (विजय) प्राप्त कर ली है, वे जिन्होंने अभ्यास से शुद्धि प्राप्त कर ली है, करुणा का शुद्ध निवासी, दया का शुद्ध निवासी, आनंद का शुद्ध निवासी, शांति का शुद्ध निवासी, परम पवित्रता की अवस्था में, समता की अवस्था में, सर्वव्यापी रूप से शुद्ध निवासी, वे जो मुक्त हो चुके हैं, वे जो परिपूर्ण हो चुके हैं, वे जो परम (सीमा) में हैं, वे जो संसार में हैं, और वे जो परम में निवासी हैं, परम में निवासी रुचि का स्थान, अंतिम पुनर्जन्म में रहने वाला, जीवन के अंतिम छोर पर रहने वाला (अस्तित्व के अंत में रहने वाला,

पुनर्जन्म के अंत में रहने वाला, अंतिम शरीर में रहने वाला, अंतिम चक्र में रहने वाला, अंतिम चाल में रहने वाला, अंत में सर्वोच्च में रहने वाला), अंतिम सभा (शरीर) में रहने वाला, अंतिम शरीर धारण करने वाला अरहंत।

"यह उनका अंतिम है, यह अंतिम मिलन (शरीर) है, जीवन और मृत्यु का चक्र, उनके पुनर्जन्म के बिना।"

“पहले ही दूसरे तट को पार कर चुके हैं”: दूसरे तट को निर्जीव, निर्वाण कहा जाता है, अर्थात् सभी कर्मों का अंत, सभी आसक्तियों का अंत, भोग-विलास का नाश, विनाश और निर्वाण। वह है जो दूसरे तट पर पहुँच चुका है; वह है जो दूसरी ओर पहुँच चुका है, (उद्धृत)..., अंतिम लक्ष्य, अंत, सीमा, परम। जो अंत तक, आश्रय तक पहुँच चुके हैं, वे शरण तक पहुँच चुके हैं; जो शरण तक पहुँच चुके हैं, वे भयमुक्त हो चुके हैं; भयमुक्त, ...मृत्युमुक्त; मृत्युमुक्त, अमर; अमर, निर्वाण; निर्वाण..., वह व्यक्ति है जो अवतरित होकर अभ्यास कर चुका है... (उद्धृत); जन्म-मृत्यु के चक्र का, बिना पुनर्जन्म के।

“निराश”: लोभ की उदासी, क्रोध की उदासी, अज्ञान की उदासी, आक्रोश की उदासी... (छोड़ा गया) सभी अस्वास्थ्यकर कर्मों की उदासी; उसके लिए ये उदासी दूर हो गई हैं, शांत हो गई हैं, रुक गई हैं, फिर कभी उत्पन्न नहीं हो सकतीं, और ज्ञान की अग्नि से जल गई हैं; उसे निर्धन कहा जाता है। “निसंदेहित”: दुख का संदेह, दुखों के संचय का संदेह, ...दुखों का निवारण, ...दुख की ओर ले जाने वाला मार्ग, आगे, पीछे, ...संदर्भ के संदर्भ में, विशिष्ट परिस्थितियों का संदेह, ऐसे संदेह, संशयपूर्ण अवस्थाएँ, भ्रम, झिझक, चौराहे, असंगत पकड़, झिझक, अनसुलझी, कठोर अवस्था, मन का भ्रम; उसके लिए ये संदेह दूर हो गए हैं, शांत हो गए हैं, रुक गए हैं, फिर कभी उत्पन्न नहीं हो सकते, ज्ञान की अग्नि से जल गए हैं; उसे संशयहीन कहा जाता है।

29 · यहाँ सभी ज्ञानी और वेदों के ज्ञाता कहते हैं, जब सभी प्रकार के अस्तित्व से बंधन समाप्त हो जाते हैं, तो वह ऐसा व्यक्ति होता है जिसे प्यास नहीं होती, चिंता नहीं होती और इच्छाएँ नहीं होतीं; मैं कहता हूँ कि उसने जन्म और वृद्धावस्था को पार कर लिया है।

“यहाँ, सभी बुद्धिमान और वे जो वेदों को जानते हैं”: “बुद्धिमान व्यक्ति” वह है जो बुद्धिमान है, ... “यहाँ,” किस प्रकार के लोग। “वेदों को जानते हैं,” ....

“लोग” से तात्पर्य सभी प्राणियों से है, मनुष्य, विद्यार्थी ब्राह्मण, लोग, व्यक्ति, जीव, जन्म लेने वाले, चेतन प्राणी, भारत में जन्म लेने वाले और मनु। “यहाँ,”...

“सभी प्रकार के अस्तित्वों से बंधन समाप्त होने के बाद”: “सभी प्रकार के अस्तित्व में,” कर्म के सभी प्रकारों में, इच्छाओं के अस्तित्व में; इच्छाओं के अस्तित्व में, भौतिकता के अस्तित्व में; भौतिक अस्तित्व के कर्म में, निराकार अस्तित्व के अस्तित्व में; निराकार अस्तित्व के कर्म में, बार-बार होने वाले अस्तित्व में; बार-बार होने वाले व्यथ में, पुनर्जन्म में; पुनर्जन्म में, व्यक्तियों के जन्म में। “बंधन,” सात प्रकार के बंधन हैं: लोभ के बंधन, घृणा के बंधन, अज्ञान के बंधन, अहंकार के बंधन, दृष्टिकोण के बंधन, दूषित बंधन, बुरे बंधन। “त्याग करने के बाद,” बंधनों का त्याग करने के बाद, यह बंधनों से, बंधन से, बंधन से, बढ़ते बंधन से, उलझे हुए से, आसक्त से, स्थिर रहने से, बाधा से, बंधन को तोड़ने के बाद, छोड़ने के बाद, जैसे रथ यात्रा, पालकी, गाड़ी या रथ परिवहन। मुक्ति (वियोग) के बाद, उन्हें रखा जाता है और नष्ट कर दिया जाता है। इसी प्रकार, बंधनों को त्यागने के बाद, ...(छोड़ा गया) बंधन से मुक्त होने के बाद।

“वह प्रेम से मुक्त है, उसे कोई कष्ट नहीं है, और कोई इच्छा नहीं है। मैं कहता हूँ कि वह जन्म और वृद्धावस्था से गुजर चुका है।” “प्रेम की लालसा” रूप की लालसा है..., धम्म की लालसा है। जिसके लिए प्रेम की प्यास कट गई है, विच्छेदित हो गई है, शांत हो गई है, रुक गई है, उत्पन्न होने में असमर्थ है, और ज्ञान की अग्नि से झुलस गई है, उसे प्यास से विमुख कहा जाता है, वह

प्यास से विमुख हो गया है, वह प्यास का त्याग करता है, प्रेम की प्यास को समाप्त करता है, प्रेम की प्यास से मुक्ति दिलाता है, प्रेम की प्यास छोड़ देता है, लोभ का त्याग करता है, लोभ को समाप्त करता है, लोभ से मुक्त है; वह भूखा-प्यासा नहीं है, वह शीतल हो गया है, वह सुख का अनुभव करता है, और वह ब्राह्मण के रूप में जीवन व्यतीत करता है, वह प्यास से मुक्त है। "कोई कष्ट नहीं," लोभ कष्ट है..., (छोड़ा गया)..., सभी बुरे कर्म कष्ट हैं। उसके लिए, ये कष्ट कट गए हैं, ...।" "इच्छा का अभाव," इच्छा को लालसा कहते हैं, जो लोभ है... जिसके लिए यह इच्छा समाप्त हो गई है,... "जन्म,"... "वृषण,"... "वही है जिसे प्यास नहीं लगती, जिसे कोई कष्ट नहीं होता, और जिसे कोई इच्छा नहीं होती। मैं कहता हूँ कि वह 'जन्म और वृद्धावस्था' से गुज़र चुका है: वही है जो प्यास से मुक्त है, जिसे कोई कष्ट नहीं है, और जिसे कोई इच्छा नहीं है," जन्म, वृद्धावस्था, मृत्यु, वह इन सब से गुज़रता है, पार करता है, ऊपर उठता है, पार करता है और विजय प्राप्त करता है।" मैंने कहा, मैंने समझाया...

इन छंदों के अंत में... "परमेश्वर मेरे गुरु हैं, मैं उनका शिष्य हूँ।"

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> निद्देसा >> निद्देसा 2.ए.5

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

<<<< पिछला अगला >>>>

5. धोतका

30 · [आदरणीय धोतका ने इस प्रकार कहा:] हे भगवान, मैं आपसे विनती करता हूँ, कृपया मुझे यह बताइए, महान ऋषि! मैं आपके वचनों की प्रतीक्षा कर रहा हूँ, आपके कहे हुए को सुनकर, व्यक्ति को अपने निर्वाण के लिए सीखना चाहिए।

"हे गुरु, मुझे आपसे यह पूछने दीजिए, कृपया मुझे यह बताइए": "मैं पूछता हूँ," ... (विलंबित भाग देखें)। "हे प्रभु" ... (विलंबित भाग देखें)।

"[आदरणीय धोतका इस प्रकार]": "इस प्रकार," ...(हटा दिया गया, पिछले अनुभाग देखें)। "धोतका," ब्राह्मण का नाम ...(हटा दिया गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"हे महान ऋषि! मैं आपके वचनों की प्रतीक्षा करता हूँ": आपके वचन, आपके बोलने का तरीका, आपके उपदेश, आपकी नसीहत, आपकी आशा, आपकी प्रार्थना। "हे महान ऋषि," ...(अंशित, पिछले भाग देखें)।

"आपके वचन सुनने के बाद": आपका भाषण, आपकी भाषा, आपकी शिक्षाएँ, आपके उपदेश; सुनने के बाद, समझने के बाद, आपका बोध करने के बाद।

"आपको अपने निर्वाण के लिए सीखना चाहिए": सीखने के तीन प्रकार हैं: ...(विलुप्त, पिछले खंड देखें)। "अपने निर्वाण के लिए," अपने लोभ, ...क्रोध, ..अज्ञान, ...(विलुप्त) को बुझाने के लिए; सभी अस्वास्थ्यकर प्रथाओं को शांत करने, मौन करने, बुझाने, काटने और समाप्त करने के लिए, आपको उपदेशों को बढ़ाना सीखना चाहिए, आपको मन को बढ़ाना सीखना चाहिए, और आपको ज्ञान को बढ़ाना सीखना चाहिए। इन तीनों शिक्षाओं का अध्ययन (ध्यान देने) की दिशा में निर्देशित होकर करना चाहिए; जब वे ज्ञात हों तब उन्हें सीखना चाहिए; जब उन्हें देखा जाए... (विलुप्त); जब आत्मनिरीक्षण किया जाए...; और (निर्णय) स्थापित करने में सावधानी बरतते हुए, आपको सीखना चाहिए; आपको विश्वास से जीत हासिल करने पर सीखना चाहिए; आपको ऊर्जावान प्रयास करने पर सीखना चाहिए; आपको जागरूकता उत्पन्न होने पर सीखना चाहिए; आपको जागरूकता के साथ सीखना चाहिए; आपको ज्ञान से जानने पर सीखना चाहिए; हमें तब सीखना चाहिए जब हम गवाही दे सकें; हमें तब सीखना चाहिए जब हम जान सकें; हमें तब सीखना चाहिए जब हमें त्याग करना चाहिए; हमें तब सीखना चाहिए जब हमें गवाही के रूप में अभ्यास करना चाहिए; [भजन संहिता 1,41] सीखना अभ्यास में लाया जाना चाहिए, अच्छी तरह से किया जाना चाहिए, स्वीकार करने के बाद आगे बढ़ते रहना चाहिए।

31 · [भगवान: "धोताका!"] यदि ऐसा है, तो कृपया उत्साहपूर्वक, और बुद्धिमान और सचेत होकर, इन शब्दों को सुनकर, अपने स्वयं के निर्वाण के लिए सीखें।

"यदि ऐसा है, तो कृपया उत्साहवान बनें": कृपया उत्साहवान बनें, कृपया साहसी बनें, कृपया जोशीले बनें, कृपया धैर्यवान बनें, कृपया दृढ़ रहें, कृपया ऊर्जावान बनें; और आप इसे साकार करें, इसे उत्पन्न करें, इसे पूर्ण रूप से निर्मित करें, इसे प्रकट करें, इसे जीवंत बनाएं।

"धोताका," .... "भगवान," ....

"यहाँ बुद्धिमान और सचेत": "यहाँ," इस दृष्टिकोण से, इस पसंद से, इस झुकाव से, इस आसक्ति से, इस धम्म से; इस शिक्षा से; इस ब्रह्म से, इस गुरु की शिक्षाओं से, इस व्यक्ति से, इस मानव जगत से संबंधित। "बुद्धिमान," सचेत, प्रबुद्ध, विवेकशील, बुद्धिमान। "सचेत," चार प्रकार से सचेत: ...(विलुप्त, पिछले अनुभाग देखें)।

"ये शब्द सुनने के बाद":...

"तुम्हें अपने निर्वाण के लिए सीखना चाहिए":...

32 · (धोतका:) मैं एक ब्राह्मण को देखता हूँ जिसके पास स्वर्ग और मनुष्य जगत में कुछ भी नहीं है, हे सर्वदर्शी, शाक्यमुनि! मैं आपको प्रणाम करता हूँ! कृपया मुझे संदेहों से मुक्त करें।

"स्वर्ग और मनुष्य जगत में मैं देखता हूँ": "स्वर्ग" तीन प्रकार के स्वर्ग हैं: सामान्य (सांसारिक, सांसारिक) स्वर्ग, पुनर्जन्म स्वर्ग और शुद्ध स्वर्ग। सांसारिक स्वर्ग क्या है? राजाओं, राजकुमारों और रानियों को सांसारिक स्वर्ग कहा जाता है। पुनर्जन्म स्वर्ग क्या है? चार महान देवराज, तैंतीस देवताओं का लोक, तुषिता स्वर्ग, सृष्टि स्वर्ग, सभी ब्रह्म स्वर्ग और इनसे ऊपर के सभी स्वर्ग पुनर्जन्म स्वर्ग कहलाते हैं। शुद्ध स्वर्ग क्या है? तथागत, अरहंतों और पच्चेकबुद्धों के शिष्यों के कष्ट समाप्त हो चुके हैं, इसे शुद्ध स्वर्ग कहा जाता है। भगवान सामान्य स्वर्ग, पुनर्जन्म स्वर्ग, शुद्ध स्वर्ग और विजयी स्वर्ग के हैं; स्वर्गों में स्वर्ग, सिंहों में सिंह, अजगरों में अजगर, देवताओं में भगवान, मुनियों में मुनि, राजाओं में राजा। "मैं स्वर्ग में और मनुष्य के संसार में देखता हूँ": मनुष्य के संसार में और स्वर्ग में, मैं देखता हूँ, मैं श्रेष्ठ स्वर्ग देखता हूँ, मैं स्वर्ग में स्वर्ग देखता हूँ; मैं देखता हूँ, मैं निहारता हूँ, मैं चिंतन करता हूँ, मैं अवलोकन करता हूँ।

"ब्राह्मण, जो किसी भी संपत्ति से रहित हैं": "नहीं," न लोभ, न घृणा, न अज्ञान, न आलस्य, न दृष्टि, न अपराध, न बुरे कर्म; इनमें से कोई भी, भगवान बुद्ध के लिए, काट दिया गया है, और उनकी जड़ें काट दी गई हैं, ठीक वैसे ही जैसे बिना जड़ों वाला ताड़ का पेड़ भविष्य में अस्तित्वहीन और निर्जीव हो जाता है। इसलिए, बुद्ध को अनासक्त कहा जाता है। "ब्राह्मण," भगवान बुद्ध सात धर्मों को त्यागने की अवस्था में हैं: दृष्टि त्याग दी गई है, संदेह त्याग दिया गया है, संयम त्याग दिया गया है, लोभ त्याग दिया गया है, घृणा त्याग दी गई है, अज्ञान, आलस्य, और वे सभी बुरे और अस्वास्थ्यकर धर्म त्याग दिए गए हैं: वे धर्म जो दूषित हैं, वे फिर से मौजूद हैं। वे लोग जो भयभीत हैं, जो परिणाम भुगतते हैं, और भविष्य में मर जाएंगे।

भगवान बुद्ध: [सं.3.6, 524] "सभी बुराइयों के नाश होने पर, निष्कलंक, सदाचारी अवस्था में खड़े होकर, पुनर्जन्म से परे जाकर, वे पूर्ण पुरुष बन जाते हैं। जो आश्रित नहीं हैं, उन्हें ब्राह्मण कहा जा सकता है।"

"अभिनेता," पैदल चलने वाला, काम करने वाला, रहने वाला, निरंतर चलने वाला, संरक्षक और उत्तरजीवी।

"मैं आपको प्रणाम करता हूँ, सर्वदर्शी": "आप," उन्होंने भगवान बुद्ध को संबोधित किया। "मैं प्रणाम करता हूँ," मैं अपने शरीर से, अपने शब्दों से, अपने हृदय से, अपने इरादे से, या धर्म का पालन करते हुए सम्मान प्रकट करता हूँ, प्रणाम करता हूँ। "सर्वदर्शी," सर्वदृष्टि, सर्वज्ञानी ज्ञान की अवस्था को दर्शाता है। भगवान बुद्ध बुद्धि की अवस्था में हैं, पूर्ण ज्ञान से परिपूर्ण, सर्वव्यापी, पर्याप्त ज्ञान से परिपूर्ण, सर्वज्ञानी।

"उनके लिए इस संसार में कुछ भी अदृश्य नहीं है, ऐसा कोई ज्ञान नहीं है जिसे जाना न जा सके। वे सिद्ध करते हैं कि अस्तित्व में मौजूद हर चीज का मार्गदर्शन अनुमान के आधार पर ही होना चाहिए, क्योंकि तथागत तो मानो सर्वदृष्टि वाले हैं।" [भजन संहिता 1]

"शाक्यमुनि! कृपया मुझे संदेहों से मुक्त करें": "शाक्यमुनि," शाक्यमुनि शाक्यवंश के भिक्षु हैं। ये शाक्यमुनि हैं। या, "धनी, धनवान," ये भी शाक्यमुनि हैं। उनके लिए ये धन हैं, अर्थात्: विश्वास का धन, धन से परहेज, धन से लज्जित, धन के बारे में सुनना, धन देना, ज्ञान का धन, धन के प्रति सजगता, धार्मिक धन, दिव्य धन, मूल धन, शक्ति का धन, ज्ञान का धन, मार्ग का धन, फल का धन, निर्वाण का धन, और इन विभिन्न खजानों का उपयोग धनी, धनवानों के समान करना। या, वे जो संभव हैं, वे जो समर्थ हैं, वे जो सभी प्रकार की चीजों को प्रवाहित करते हैं, वे जो पर्याप्त हैं, वे जो वीर हैं, वे जो साहसी हैं, वे जो वीर हैं, वे जो निर्भीक हैं, वे जो भयभीत नहीं होते, वे जो भागते नहीं हैं, वे जिन्होंने भय का त्याग कर दिया है, वे जिन्होंने आतंक और भय का त्याग कर दिया है। संदेह को संदेह ही कहते हैं: दुख का संदेह, दुख की ओर ले जाने वाले मार्ग का संदेह, भविष्य का संदेह, अतीत का संदेह, भविष्य और अतीत दोनों का संदेह, कारण-कार्य संबंधों का संदेह, ऐसे संदेह, शंकाएं, संशयपूर्ण अवस्थाएं, भ्रम, झिझक, दुविधा, असंगत समझ, अधूरी समझ, कठोर अवस्था, मन का भ्रम। "शाक्यमुनि! कृपया मुझे संदेह से मुक्त करें": कृपया मुझे मुक्त करें, कृपया मुझे आज़ाद करें, मुझे बाहर निकालें, कृपया मुझे पूरी तरह से बाहर निकालें, मुझे संदेह से बाहर ले आएं।

33 · (भगवान:) मैं धोताका को, संसार में संदेह करने वाले किसी को भी मुक्त नहीं कर पाऊंगा। जब तुम सर्वश्रेष्ठ धम्म को जानोगे, तब तुम इस बाढ़ को पार कर पाओगे।

"मैं मुक्ति नहीं दे पाऊंगा": मैं संदेह के तीर से घायल प्राणी को मुक्त नहीं कर पाऊंगा, उसे आज़ाद नहीं कर पाऊंगा, उसे पूरी तरह से मुक्त नहीं कर पाऊंगा, उसे ऊपर नहीं उठा पाऊंगा, उसे पूर्णतः ऊपर नहीं उठा पाऊंगा। या, मैं अविश्वासियों, अनिच्छुक लोगों, सुस्त लोगों, कमज़ोर जीवन शक्ति वाले लोगों, निष्क्रिय लोगों पर मेहनत नहीं करता; मैं अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास नहीं करता, मैं प्रयास नहीं करता, मैं वीरता से काम नहीं करता, मैं उत्साह से काम नहीं करता, मैं धैर्य नहीं पैदा करता, मैं दृढ़ संकल्प नहीं पैदा करता, मैं जीवन शक्ति पैदा नहीं करता, मैं उसे उत्पन्न नहीं करता, मैं उसे प्रकट नहीं करता, मैं उसे पूर्णतः उत्पन्न नहीं करता, मैं उसे उत्पन्न नहीं करता, मैं उसे धम्म की शिक्षाओं को जन्म नहीं देता। या, आपके पास कोई अन्य मुक्तिदाता नहीं हैं। जो लोग मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं, वे अपने स्वयं के धैर्य, अपनी स्वयं की ऊर्जा, अपने स्वयं के प्रयास, अपने स्वयं के सामर्थ्य, अपनी स्वयं की मानवीय शक्ति, अपनी स्वयं की मानवीय जीवंतता, अपने स्वयं के कार्य, अपने स्वयं के सही आचरण, मार्ग का अनुसरण करने, विपरीत मार्ग पर न जाने, धम्म का अनुसरण करने और धम्म का पालन करने के मार्ग का अनुसरण करने से मुक्त हो सकते हैं।

भगवान बुद्ध ने कहा: "चुंड! 'मैं ही दलदल में गिरा हूँ और मैं ही दलदल में गिरे हुए अन्य लोगों को बाहर निकालूँगा।' यह असंभव है। चुंड! 'मैं अनियंत्रित, अप्रशिक्षित और निर्वाणहीन हूँ। मैं दूसरों को अनुशासित, प्रशिक्षित और निर्वाण प्राप्त कराऊँगा।' यह असंभव है।" [एमएन.8]

यह धन्य व्यक्ति द्वारा कहा गया है: [दफ़ी.12,165] "उसने बुराई की है, वह अपवित्र है, जो बुराई नहीं करता, वह शुद्ध होकर आता है, शुद्धता और अशुद्धता अलग-अलग हैं, एक दूसरे को शुद्ध नहीं कर सकता।"

भगवान बुद्ध ने यह भी कहा: "इसी प्रकार, हे ब्राह्मण, निर्वाण स्थिर रहता है, निर्वाण की ओर ले जाने वाला मार्ग स्थिर रहता है, और मेरा उपदेश (शिक्षा) भी स्थिर रहता है। परन्तु जब मेरे शिष्यों को इस प्रकार उपदेश और मार्गदर्शन दिया जाता है, तो उनमें से कुछ निर्वाण की अंतिम अवस्था को प्राप्त कर लेते हैं, और कुछ नहीं। हे ब्राह्मण, मैं यहाँ क्या करूँ? हे ब्राह्मण, तथागत ही मार्गदर्शक हैं। [एमएन.107] बुद्ध ने केवल मार्ग बताया (निर्देशित किया), और जब वे स्वयं उसका अभ्यास करते हैं, तो वे मुक्त हो सकते हैं।"

"संसार में कोई भी संशयी": संशयी, वह व्यक्ति जिसके मन में संदेह, भ्रम और संकोच हो। "कोई भी (व्यक्ति)", कोई भी क्षत्रिय, ब्राह्मण, वेस, शुद्ध, गृहस्थ, भिक्षु, साधु या कोई भी व्यक्ति। "संसार में", दुखमय संसार में... (विलुप्त)।

“सर्वोच्च विजय प्राप्त धम्म को जानने पर”: सर्वोच्च धम्म को निर्जीव, निर्वाण कहा जाता है, जो सभी कर्मों का अंत, सभी आसक्तियों का अंत, भोग-विलास का अंत और निर्वाण है। सर्वोच्च, प्रथम, सबसे विजयी, असाधारण, सर्वोच्च, सबसे उन्नत धम्म; जब इसे जानते, भेदते और समझते हैं।

“इस तरह तुम इस तूफान को पार कर लोगे”: इच्छा के ऐसे तूफान को, दृष्टि के ऐसे तूफान को, अज्ञान के ऐसे तूफान को, तुम पार कर सकते हो, तुम इस तूफान पर विजय प्राप्त कर सकते हो।

34 · (धोतक:) ब्राह्मण! मैं करुणावश आपसे विनती करता हूँ, मुझे एकांतवास का धर्म सिखाएँ, (ताकि) जैसे शून्य बंधा हुआ नहीं है, वैसे ही मैं यहाँ मौन और निर्बंधित होकर चल सकूँ।

“ब्राह्मण! कृपया करुणावश आज्ञा का उपदेश दें”: ब्राह्मण, कृपया आज्ञा का उपदेश दें; ब्राह्मण, कृपया सहायता करें; ब्राह्मण, कृपया दया करें। “दयालु व्यक्ति,” दयालु, सहानुभूति रखने वाला, रक्षक, दानदाता, दयालु।

“एकांत का धम्म, जिसे मैं जान सकता हूँ”: एकांत धम्म को निर्जीव, निर्वाण कहा जाता है, अर्थात् सभी कर्मों का अंत, सभी आसक्तियों का अंत, भोग-विलास का अंत, और निर्वाण। “मैं जान सकता हूँ,” मैं जान सकता हूँ, परख सकता हूँ, निश्चित रूप से जान सकता हूँ, समझ सकता हूँ, सिद्ध कर सकता हूँ, पहुँच सकता हूँ और गवाही दे सकता हूँ।

“जैसे शून्य (अंतरिक्ष) बंधा हुआ नहीं है”: जैसे शून्य न तो फंसा हुआ है, न कैद है, न बंधा हुआ है, न संसार से जुड़ा हुआ है, वैसे ही वह है जो न फंसा हुआ है, न कैद है, न बंधा हुआ है, जो सर्व-बंधा हुआ नहीं है। (या,) जैसे शून्य लाल रंग से रंगा हुआ नहीं है, न ही गहरा लाल, न ही नीला, न ही गहरा लाल, वैसे ही वह है जो रंगा हुआ नहीं है, न ही क्रोधित है, न ही मूर्खतापूर्ण ढंग से बदलता है, और न ही दूषित करता है। जैसे शून्य क्रोधित नहीं होता, न ही गाली देता है, न ही विरोध करता है, और न ही उस पर हमला होता है, वैसे ही वह है जो क्रोधित नहीं है, न ही गाली देता है, न ही विरोध करता है, न ही उस पर हमला होता है, और न ही वह पलटवार करता है।

“यहाँ मैं चुपचाप और निर्बल होकर चल सकता हूँ”: “यहाँ, चुपचाप,” जब आप यहाँ हैं; जब आप यहाँ बैठे हैं; जब आप इस आसन पर बैठे हैं; जब आप भीड़ के बीच बैठे हैं। या, बस यहीं शांति, स्थिरता, शीतलता और ठहराव है। दो प्रकार की निर्भरता होती है: तृष्णा की निर्भरता और दृष्टि की निर्भरता... (उद्धृत)। प्रेम की निर्भरता और दृष्टि की निर्भरता के कट जाने के बाद, व्यक्ति आँखों, ...कान..., नाक, जीभ, शरीर, मन, रूपों, ध्वनियों, गंधों, स्वादों, स्पर्शों, धर्मों, परिवार, समूह, निवास, लाभ, प्रतिष्ठा, प्रशंसा, वस्त्र, भोजन, आवास, (रोगी की आवश्यकताएँ और चिकित्सा संबंधी आवश्यकताएँ), इच्छा जगत, सजीव जगत, निराकार जगत, होने की इच्छा, निराकार की इच्छा, पाने की इच्छा, अस्तित्व की इच्छा, एक समूह, चार समूह, पाँच समूह, भूतकाल, भविष्यकाल, वर्तमानकाल, जो कुछ आप देखते हैं, सुनते हैं, महसूस करते हैं और अनुभव कर सकते हैं, उन सभी पर निर्भर नहीं रहता। जो लोग बंधनों में नहीं फंसते, जो लोग उनके जाल में नहीं उलझते, जो लोग उनका अनुसरण नहीं करते, जिन्होंने त्याग दिया है, जो मुक्त हो गए हैं, जो बंधनों से अलग हो गए हैं, वे निर्बल हृदय से जीवन व्यतीत करते हैं। वे "कर सकते हैं", वे जी सकते हैं, कार्य कर सकते हैं, आगे बढ़ सकते हैं, रक्षा कर सकते हैं, जीवित रह सकते हैं।

35 · [भगवान: “धोताका!”] मैं तुम्हें उस शांति के बारे में बताऊंगा, जो अफवाहों के बजाय वास्तविक जीवन में जानी जाती है, जो कोई भी इसे जानता है, सचेत रूप से जीवन जीते हुए, संसार में प्रेम (इच्छा) को पार कर सकता है।

“मैं तुम्हें शांति के बारे में बताऊंगा”: लोभ की शांति, घृणा की शांति, ...(अस्पष्ट), सभी अस्वस्थ रचनाओं की शांति; मौन, समाप्ति; मैं बताऊंगा, घोषणा करूंगा, कहूंगा, समझाऊंगा, सिखाऊंगा, व्याख्या करूंगा, निर्माण करूंगा, उजागर करूंगा, विश्लेषण करूंगा, स्पष्ट करूंगा।

“[भगवान: 'धोताका']”: “धोताका,” विश्व पूज्य ब्राह्मण को उनके नाम से पुकारते हैं। “भगवान,” ...(छोड़ा गया)।

“वर्तमान जीवन में, न कि सुनी-सुनाई बातों से”: ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"जो कोई भी जानने के बाद सचेत रूप से जीवन जीता है": ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"दुनिया में प्रेम के माध्यम से जीने में सक्षम": ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

36 · (धोतका:) हे महान ऋषि, मैं इस बात से प्रसन्न हूँ! सर्वोच्च मौन, जिसे जानने वाला कोई भी व्यक्ति, सचेतन जीवन जीते हुए, संसार में प्रेम के माध्यम से पार कर सकता है।

"मैं इस बात से प्रसन्न हूँ": "यह," आपके शब्द, आपकी भाषा, आपका उपदेश, आपकी नसीहत। "मैं प्रसन्न हूँ," मैं खुश हूँ, मेरी कामना है, मेरी आशा है, मैं प्रार्थना करता हूँ।

"महान ऋषि! परम मौन": "महान ऋषि" ...(उद्धृत)। "परम मौन," मौन को निर्जीव, निर्वाण कहा जाता है, अर्थात् सभी कर्मों का अंत, ...(उद्धृत)।

"जो कोई भी जानने के बाद के विचार को जानता है": जानने के बाद... (छोड़ा गया)।

"दुनिया में प्रेम के माध्यम से जीने में सक्षम": "प्रेम" को लालसा कहा जाता है... (हटा दिया गया)।

37 · [भगवान: "धोताका!"] तुम ऊपर, नीचे और मध्य चारों दिशाओं में जो कुछ भी सही जानते हो, यह जानकर कि यही संसार में "बंधन" है, तुम्हें सभी प्रकार के अस्तित्व के लिए प्यास नहीं रखनी चाहिए।

"जो कुछ भी आप सही जानते हैं": जो कुछ भी आप सही जानते हैं, जो आप समझते हैं, जो आप जानते हैं, जो आप निश्चित रूप से जानते हैं। "धोताका," .... "हे भगवान," ....

"ऊपरी, निचली और मध्य चार दिशाओं में": ...(हटा दिया गया)।

"यह जानने के बाद कि यही संसार का 'बंधन' है": यही बंधन है, यही जुड़ाव है, यही बंधन है, यही एक बाधा है। जानने के बाद, समझने के बाद, तौलने के बाद, परखने के बाद, अलग करने के बाद।

"सभी प्रकार के अस्तित्व में प्यास मत रखो": "प्रेम की प्यास," रूप की प्यास, ध्वनि की प्यास... (निरस्त), धम्म की प्यास। "सभी प्रकार के अस्तित्व में," कर्म में सभी प्रकार के अस्तित्व, मध्य में, फिर से अस्तित्व में आने की इच्छा में; पाने की इच्छा में, भौतिक अस्तित्व; भौतिक अस्तित्व में, निराकार अस्तित्व; निराकार अस्तित्व में, बार-बार अस्तित्व; बार-बार आने में, पुनर्जन्म; पुनर्जन्म में, व्यक्तिगत जन्म। प्यास मत रखो, लालसा मत जगाओ, इच्छा उत्पन्न मत करो, प्यास मत चाहो, प्यास को जन्म मत दो, त्याग दो, भगा दो, इसे समाप्त कर दो, इसे अस्तित्वहीन बना दो।

इन छंदों के अंत में... "परमेश्वर मेरे गुरु हैं, मैं उनका शिष्य हूँ।"

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> निद्देसा >> निद्देसा 2.ए.6

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

<<<< पिछला अगला >>>>

6. उपासिव

38 · [आदरणीय उपासिव ने इस प्रकार कहा:] शाक्यमुनि! मैं अकेला, तन्हा, बिना सहारे के इस उफान को पार नहीं कर सकता, हे सर्वदर्शी, कृपया मुझे किसी ऐसी वस्तु के बारे में बताइए, जिस पर निर्भर रहने वाले लोग उफान से बच सकें।

"शाक्यमुनि! अकेले..., जलप्रपात": "अकेले," बिना किसी व्यक्तिगत साथी के, या बिना अपने धम्म साथी के: जो कोई भी धम्म पर निर्भर है, वह जीवित रह सकता है, पार कर सकता है, पार पा सकता है, और महान इच्छाओं के जलप्रपात, दृष्टि के जलप्रपात, अज्ञान के जलप्रपात पर विजय प्राप्त कर सकता है। "शाक्यमुनि," ...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)।

"[इस आदरणीय उपासिव की तरह]": ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"बिना सहारे के, मैं पार नहीं कर सकता": "बिना सहारे के," मनुष्य के सहारे के बिना या धम्म के सहारे के बिना, मैं इसे पार नहीं कर सकता, पार नहीं कर सकता, महान इच्छा की हिंसक धाराओं, दृष्टि की हिंसक धाराओं, अज्ञान की हिंसक धाराओं पर विजय प्राप्त नहीं कर सकता।

"सर्वदर्शी, कृपया विषय के बारे में बताइए": विषय, स्थिति की निर्भरता, घनिष्ठ निर्भरता, कृपया बताइए, कृपया समझाइए, सिखाइए, सूचित कीजिए, स्थापित कीजिए, उजागर कीजिए, विश्लेषण कीजिए, स्पष्ट कीजिए। "सर्वदृष्टि," सर्वज्ञ ज्ञान की अवस्था को सर्वदृष्टि कहा जाता है। अतः, भगवान बुद्ध ज्ञान की अवस्था तक पहुँचते हैं (प्राप्त करते हैं), प्रवेश करते हैं, पूर्णतः प्रवेश करते हैं, पर्याप्त रूप से प्राप्त करते हैं।

"उनके लिए इस संसार में कुछ भी अदृश्य नहीं है, ऐसा कोई ज्ञान नहीं है जिसे जाना न जा सके। वे सिद्ध करते हैं कि अस्तित्व में मौजूद हर चीज का मार्गदर्शन अनुमान के आधार पर ही होना चाहिए, क्योंकि तथागत तो मानो सर्वदृष्टि वाले हैं।" [भजन संहिता 1]

"जो कोई भी इस पर निर्भर है, वह इस उफान को पार कर सकता है": "जो कोई भी इस पर निर्भर है," एक नश्वर या धम्म-आधारित व्यक्ति महान इच्छा के उफान, अस्तित्व के उफान, दृष्टि के उफान और अज्ञान के उफान पर विजय प्राप्त कर सकता है, उससे ऊपर उठ सकता है, उसे पार कर सकता है और उससे आगे निकल सकता है।

39 · [भगवान: "उपसीव!"] अनासक्त होकर, सचेत होकर, तूफ़ान से गुज़रने के लिए "कुछ नहीं" पर भरोसा करते हुए, इच्छा का त्याग करने के बाद, दिन-रात लालसा के अंत को देखो (मनन करो)।

"स्वामित्वहीन, सजगतापूर्वक देखना": ब्राह्मण मूलतः निर्धन और आश्रित था, जिसके पास कोई संपत्ति नहीं थी। वह यह नहीं जानता था कि "यह मेरी निर्भरता है।" भगवान बुद्ध ने उसे निर्भरता और उससे निकलने का उच्चतर मार्ग समझाया: सजगतापूर्वक अनाप-स्वामित्व की अवस्था में प्रवेश करो और प्रतीक्षा करो, और फिर वहाँ से बाहर आने के बाद, यह देखकर कि यह क्षणभंगुर है, दुखदायी है, मन में विक्षिप्तता और मानसिक अवस्थाएँ उत्पन्न होती हैं, जैसे कि मवाद, तीर, ...(विलंबित भाग देखें)..., कष्ट, त्याग, वह देख रहा है, अवलोकन कर रहा है और ध्यान दे रहा है।

"जिनके मन में विचार आते हैं": सभी विचार, धारणाएँ, स्मृतियाँ... (अंशित), इसे विचार कहते हैं। (अंशित), इस विचार को रखने वाला व्यक्ति विचारशील कहलाता है।

"[भगवान: 'उपासिव!']": ...(छोड़ दिया गया)।

"शून्यता पर भरोसा करने से आप उफान पर आ जाते हैं": "शून्यता" का अर्थ है शून्यता में निवास करना। "शून्यता" शून्यता में क्यों निवास करती है? असीम चेतना के निवास में सचेत रूप से प्रवेश करें; वहाँ निवास करने के बाद, वहाँ से बाहर निकलें; वह चेतना, उसे अस्तित्वहीन जानकर, उसे लुप्त करके, "शून्यता" को देखती है, और इसी कारण "शून्यता" शून्यता है। भरोसा करने के बाद, और अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने के बाद, आप इच्छाओं के उफान, अस्तित्व के उफान, दृष्टि के उफान को पार कर सकते हैं, उनसे आगे निकल सकते हैं, उन्हें पार कर सकते हैं, उन पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

"इच्छाओं का त्याग करने के बाद, संदेहों से मुक्त हो गया हूँ": "इच्छा," दो प्रकार की इच्छाएँ होती हैं: वस्तुओं की इच्छा और अशुद्धता की इच्छा... (छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)। "इच्छाओं का त्याग करने के बाद," वस्तुओं की इच्छाओं को जानने के बाद, अशुद्धता की इच्छाओं का त्याग करने के बाद, त्याग करने के बाद, भगाए जाने के बाद, समाप्त करने के बाद, और उसे अस्तित्वहीन बना देने के बाद। "मैं संदेहों से अलग हो गया हूँ," संदेहों को शंकाएँ कहा जाता है: दुख के संदेह... (छोड़ा गया)। मैं संदेहों से अलग हो गया हूँ, संयम बरता है, अलग हो गया हूँ, छोड़ दिया है, मुक्त हो गया हूँ, बंधन से अलग हो गया हूँ, एक अप्रतिबंधित हृदय से जी रहा हूँ। या, बत्तीस प्रकार के जानवरों से अलग, संयम, कुचला हुआ, त्याग, और मुक्ति, एक अप्रतिबंधित हृदय से जी रहा हूँ।

"दिन-रात भोग-विलास का अंत देखते हैं": "प्यास" की भोग-विलास... (अस्पष्ट)। रात को रात कहते हैं, दिन को दिन; दिन-रात, देखते और बढ़ते रहो, ऊपर देखते हुए, देखते हुए, निहारते हुए, भोग-विलास का अंत, लोभ का अंत, घृणा का अंत, अज्ञान का अंत, स्वार्थ का अंत, पिछले जन्म का अंत, जीवन के अंत का अंत, पुनर्जन्म का अंत।

40 · [आदरणीय उपासिव ने ऐसा कहा:] जिसने सभी इच्छाओं में लोभ का त्याग कर दिया है, जो शून्यता पर भरोसा करता है और अन्य सभी चीजों को त्याग देता है, वह विजेता जिसे ज्ञान की सर्वोच्च मुक्ति प्राप्त है, क्या वह वहां निवास कर सकता है और अनायास हो सकता है?

"जो कोई भी सभी इच्छाओं में लोभ से मुक्त हो गया है": "हर चीज़ में," पूरी तरह से, हर पहलू में, बिना किसी अवशेष के, और पूरी पृथ्वी में। यह सर्वव्यापकता की भाषा है, जो "हर चीज़ में" है। "इच्छा," ...(हटा दिया गया)। "जो कोई भी सभी इच्छाओं में लोभ से मुक्त हो गया है": जो कोई भी सभी इच्छाओं में लोभ से दूर हो गया है, जिसके पास लोभ नहीं है, जिसने लोभ का त्याग कर दिया है, जिसने लोभ को समाप्त कर दिया है, जो लोभ से मुक्त हो गया है, जिसने लोभ का त्याग कर दिया है, जिसने लोभ को तोड़ दिया है, वे जिन्होंने लोभ को दबा दिया है।

"[इस आदरणीय उपासिव की तरह]": ...(हटा दिया गया)।

"अपरिग्रह और अन्यों के त्याग पर निर्भर रहना": वह निम्न छह उपलब्धियों का त्याग कर, उन्हें हमेशा के लिए छोड़ देता है, उनसे आगे निकल जाता है, उन पर विजय प्राप्त करता है और शून्यता, अनासक्ति और आसक्ति के क्षेत्र को प्राप्त करता है। जो लोग प्रवेश करते हैं, जो पूर्णतः प्रवेश करते हैं, जो बंधे होते हैं, जो अपना मन उनकी ओर मोड़ते हैं।

"सर्वोच्च स्तर पर मुक्त होने वाले विजेता": जो मुक्त होते हैं उन्हें सात उपलब्धियाँ कहा जाता है, और शून्यता की मुक्ति ही प्रथम, सबसे विजयी, सर्वश्रेष्ठ, सबसे आगे, सर्वोच्च, शीर्ष, मुक्ति का विजेता, विजय प्राप्त करने वाला, चरित्रवान, प्रचुर, गंभीर, वह है जिसका उद्देश्य वही है, जो उसकी ओर प्रवृत्त है, जो उसकी ओर अग्रसर है, जो दृढ़ संकल्पित है, जो विजेता है।

"क्या वह वहाँ रह सकता है और अयात्री बन सकता है?": "क्या वह रह सकता है?" संदेह के प्रश्न, उलझन के प्रश्न, भ्रम के प्रश्न, एक से अधिक प्रश्न: "क्या ऐसा है? क्या यह सच नहीं है? यह क्या है? यह कैसे है?" "वहाँ," कहीं नहीं। "अयात्री," वे जो अनुसरण नहीं करते, वे जो डगमगाते नहीं (डगमगाते नहीं), वे जो छोड़ते नहीं, वे जो लुप्त नहीं होते, और वे जो लौटते नहीं। या, वह जो संक्रमित नहीं है, वह जो गिरता नहीं, वह जो मूर्ख नहीं बनता, वह जो अपवित्र नहीं है।

41 · [भगवान: "उपसीव!"] अपनी सभी इच्छाओं में लोभ से दूर होकर, शून्यता पर भरोसा करते हुए, अन्य चीजों का त्याग करके, ज्ञान में मुक्त विजेता, वह वहाँ रह सकता है और गैर-यात्री बन सकता है।

"जो कोई भी सभी इच्छाओं में लोभ से विमुख हो गया हो": ...(हटा दिया गया)।

"[भगवान: 'उपासिव!']": ...(छोड़ दिया गया)।

"किसी पर भरोसा न करो और दूसरों को छोड़ दो": ...(हटा दिया गया)।

"सर्वोच्च स्तर पर मुक्त हुए विजेता": ...(हटा दिया गया)।

"वह वहाँ निवास कर सकता है और अयाल बन सकता है": "वह निवास कर सकता है," वह साठ हज़ार कल्पों तक जीवित रह सकता है और स्थिर रह सकता है। "वहाँ," कहीं नहीं। "अयाल," अनुयायी नहीं, वह जो विचलित नहीं होता, वह जो त्यागता नहीं, वह जो लुप्त नहीं होता, वह जो पीछे नहीं हटता। या, वह जो अप्रभावित रहता है, वह जो गिरता नहीं, वह जो अज्ञानी नहीं रहता, वह जो अपवित्र नहीं होता।

42 · [आदरणीय उपासिव ने कहा:] यदि वह वहाँ रहकर कई वर्षों तक भी निर्जन हो जाए, हे सर्वदर्शी! क्या वह शीतल और मुक्त हो जाएगा? क्या ऐसे लोगों की चेतना मर जाएगी?

"यदि वह वहाँ रह सकता है और एक गैर-यात्री बन सकता है": ...(हटा दिया गया)।

"कई वर्षों तक भी, सर्व-दृष्टि": "कई वर्षों तक भी, कई वर्षों तक; कई सौ वर्षों तक; कई हज़ार वर्षों तक; कई दस हज़ार वर्षों तक; कई क्षपों तक। सर्व-दृष्टि को सर्वज्ञ ज्ञान की अवस्था कहा जाता है... (छोड़ दिया गया)।

"क्या वह शांत होकर मुक्त हो जाएगा? क्या उस जैसे व्यक्ति की चेतना मर जाएगी?": शीतल अवस्था का आगमन, स्थिर, दृढ़, शाश्वत और अपरिवर्तनीय। क्या वह शाश्वत रूप से विद्यमान रहेगी? या उसकी चेतना मर जाएगी, बुझ जाएगी, लुप्त हो जाएगी, नष्ट हो जाएगी या अस्तित्वहीन हो जाएगी? क्या कोई पुनर्जन्मित चेतना इच्छा लोक, भौतिक लोक या अभौतिक लोक से जन्म लेगी? उन्होंने शून्यता में प्रवेश कर चुके लोगों की स्थिरता और विनाश के बारे में पूछा। या क्या वे वहाँ परम, शाश्वत निर्वाण में निर्वाण प्राप्त करेंगे? या, क्या उसकी चेतना मर जाएगी, और चेतना की आगे की अनुभूति इच्छा लोक, भौतिक लोक या अभौतिक लोक में उत्पन्न होगी? उन्होंने उन लोगों के निर्वाण और पूर्णता के बारे में पूछा जिनका पुनर्जन्म का कोई स्थान नहीं है। "उस प्रकार का व्यक्ति," उस प्रकार का, स्थिर, इस प्रकार का, समान, शून्यता के बाद पुनर्जन्म।

43 · [भगवान: "उपसीव!"] जैसे हवा से फेंकी गई लौ बुझ जाती है और उसका अस्तित्व नहीं गिना जा सकता, वैसे ही मुनि नाम और शरीर से मुक्त होकर बुझ जाते हैं और उनका अस्तित्व नहीं गिना जा सकता।

"हवा से उड़ती लौ की तरह": इस लौ को हल्की लौ कहते हैं। "हवा," पूरब की हवा, पश्चिम की हवा, उत्तर की हवा, दक्षिण की हवा, धूल भरी हवा, धूल रहित हवा, ठंडी हवा, गर्म हवा, हल्की हवा, तेज़ हवा, तीव्र हवा, तिरछी हवा, सुनहरे पंखों वाले पक्षी की हवा, छात्रावास के पत्तों की हवा, पंखे की हवा। "हवा से उछाला हुआ," उछाला हुआ, फेंका हुआ, बिखरा हुआ, ज़ोर से बिखरा हुआ, टकराया हुआ, हवा से नष्ट हुआ।

"[भगवान: 'उपासिव!']": ...(छोड़ दिया गया)।

"विलुप्त हो जाता है, जिसका हिसाब नहीं लगाया जा सकता": "विलुप्त होने की ओर बढ़ना," विलुप्त होना, उसे विलुप्त करना, विलुप्त हो जाना, शांत हो जाना, रुक जाना। "नाम से नहीं गिना जा सकता," नाम देना कठिन है, कहना नहीं आता, गिनना नहीं आता, नाम देना नहीं आता: "यह पूर्व में पहुँच गया है, या पश्चिम में पहुँच गया है, या उत्तर में पहुँच गया है, या दक्षिण में पहुँच गया है, या शीर्ष पर पहुँच गया है, या नीचे पहुँच गया है, या क्षैतिज दिशा में पहुँच गया है, या चारों दिशाओं के मध्य में पहुँच गया है।" इसका कोई कारण नहीं है, कोई पूर्वनियति नहीं है, और कोई ऐसा कारक नहीं है जो नाम के दायरे में आए (या नाम के दायरे में आए)।

"मुनि नाम और शरीर से इस प्रकार मुक्त हैं": "इस प्रकार" एक लाक्षणिक व्यवस्था है। "मुनि," ...(अस्पष्ट)। "पहले से ही नाम और शरीर से मुक्त," जो मुनि पहले ही शरीर से मुक्त हो चुके थे, उन्होंने उस भाग को पार कर लिया, अलग हो गए। मुनि के लिए, अस्तित्व के कारण, चारों पवित्र मार्ग प्राप्त होते हैं, प्राप्त चारों पवित्र मार्गों में नाम और शरीर का ज्ञान होता है, और नाम और रूप को जानकर, अनासक्ति, स्वतंत्रता और आसक्ति रहित मुक्ति प्राप्त होती है।

"निरस्त की ओर बढ़ते हुए, उसका हिसाब नहीं लगाया जा सकता": "निब्बान के अवशेष रहित जगत में उसका नाम नहीं आता।" "उसका नाम नहीं आता," वह उस व्यक्ति के नाम तक नहीं पहुँचता जिसने निर्वाण के अवशेष रहित जगत में निर्वाण को प्राप्त किया है। उसका नाम नहीं आता (उसे नाम देना कठिन है), यह कहने में कि उसका नाम नहीं आता, गिनने में कि उसका नाम नहीं आता, और यह बताने में कि उसका नाम नहीं आता: "खत्तीय," या "ब्राह्मण," या "वेस्स," या "शुद्ध," या "घर पर," या "चाचा," या "ईश्वर," या "व्यक्ति," या "रूप," या "निराकार," या "चिंतनशील," या "न चिंतनशील," या "न चिंतनशील"; उसका कोई कारण नहीं, कोई पूर्वनियति नहीं, और कोई कारक नहीं है जिसके कारण वह नाम में आ जाए (उसकी ओर बढ़े)।

44 · (उपसीव:) क्या वह निर्गमन को प्राप्त कर चुका है, या उसका अस्तित्व ही नहीं है, या वह रोगमुक्त व्यक्ति है? मैं मुनि से इस विषय को मेरे लिए भली-भांति स्पष्ट करने का अनुरोध करता हूँ, क्योंकि आप इस धर्म के ज्ञाता हैं।

"क्या वह विलुप्त हो गया है या उसका अस्तित्व ही नहीं है": वह विलुप्त हो गया है या उसका अस्तित्व ही नहीं है, उसका सफाया हो गया है, उसे नष्ट कर दिया गया है, उसे नष्ट कर दिया गया है।

"शाश्वत रूप से रोगमुक्त": यह अभी भी स्थिर, दृढ़, शाश्वत और अपरिवर्तनीय है।

"मुनि, कृपया मुझे इसे अच्छी तरह समझाएँ": "वह," ...(हटा दिया गया)। "मुनि," ...(हटा दिया गया)। "अच्छी तरह समझाएँ," ...(हटा दिया गया)।

क्योंकि आप इन धम्मों के ज्ञाता हैं, इसलिए आप ही इन धम्मों के ज्ञाता, मापक, न्यायाधीश और स्पष्टकर्ता हैं।

45 · [भगवान: "उपसीव!"] जो व्यक्ति निर्वाण प्राप्त कर चुका है, उसके लिए कोई माप नहीं है, उसके अस्तित्व के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता, जब सभी धर्म नष्ट हो जाते हैं, तो सभी भाषा मार्ग भी नष्ट हो जाते हैं।

"जो लोग निर्वाण प्राप्त कर चुके हैं, उनके लिए कोई माप नहीं है": जो लोग निर्वाण प्राप्त कर चुके हैं, जिनके पास निर्वाण का कोई अंश नहीं है, उनके लिए रूप का माप नहीं है, ग्रहण करने का माप नहीं है, ...विचार का अस्तित्व नहीं है, ...कर्म..., ...चेतना..., यह अस्तित्व में नहीं है, ज्ञात नहीं है, खोजी नहीं गई है, कट गई है, शांत हो गई है, रुक गई है, उत्पन्न होने में असमर्थ है, और ज्ञान की अग्नि से जल गई है।

"[भगवान: 'उपासिव!']": ...(छोड़ दिया गया)।

उसके बारे में क्या कहा जा सकता है, वह उसके लिए अस्तित्वहीन है": उसके बारे में लालच के संदर्भ में क्या कहा जा सकता है; ...किस प्रकार की घृणा; ...मूर्खता; ...आलस्य; इस दृष्टि से, कौन उसके बारे में बात कर सकता है; उसके बारे में किस अविश्वास से क्या कहा जा सकता है; ...किस संदेह से; ...कष्टों की अंतर्निहित प्रवृत्ति से, क्या वह "संक्रमित," या "घृणित," या "अज्ञानी," या "बंधा हुआ," या "चिपका हुआ," या "अव्यवस्था में आ गया," या "असंतोष में आ गया," या "धैर्य में आ गया?" उन कर्मों को त्याग दिया गया है। रुचि की किस अवस्था को त्याग दिया गया है, वह कांप उठेगा और "नरक में गिरा हुआ," या "पशु-पतित व्यक्ति," या "भूखा प्रेतलोक व्यक्ति," या "मनुष्य," या "स्वर्ग," या "रूपित," या "रूपहीन," या "चिंतित," या "निष्क्रिय," या "न चिंतनशील और न चिंतनशील" बन जाएगा? उसके पास ऐसा कहने, बताने, बात करने या समझाने का कोई कारण नहीं है, कोई पूर्वनियति नहीं है।

"जब सभी धर्मों का नाश हो गया हो": सभी धर्मों में, सभी समूहों में, सभी स्थानों में, सभी लोकों में, सभी रुचि के स्थानों में, सभी पुनर्जन्मों में, सभी अवतारों में, सभी अस्तित्व में, सभी पुनर्जन्मों में, जब चक्र उखड़ गया हो, जब उसका नाश हो गया हो, जब उसे हटा दिया गया हो, जब उसे पूरी तरह से हटा दिया गया हो, जब वह अलग हो गया हो, जब वह शांत हो गया हो, जब वह समाप्त हो गया हो, जब वह उत्पन्न नहीं हो सकता हो, जब वह ज्ञान की अग्नि से जल गया हो।

"सभी भाषाई मार्ग भी नष्ट हो गए हैं": भाषाई मार्ग को प्रदूषण और विभिन्न समुच्चयों और विभिन्न रचनाओं के रूप में वर्णित किया गया है। उनके अनुसार, भाषा, भाषाई मार्ग, नाम (शब्दों की वृद्धि), भाषा और शांति, सब कुछ उखाड़ फेंका गया है, सब कुछ नष्ट हो गया है, ...(अधूरा)।

इन छंदों के अंत में... "परमेश्वर मेरे गुरु हैं, मैं उनका शिष्य हूँ।"

.

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> निद्देसा >> निद्देसा 2.ए.7

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

<<<< पिछला अगला >>>>

7. नंदा

46 · [आदरणीय नंदा ने इस प्रकार कहा:] संसार में अनेक मुनि हैं, लोग ऐसा क्यों कहते हैं? क्या वे कहते हैं कि मुनि ज्ञानवान व्यक्ति होता है? या वह व्यक्ति जिसका एक विशिष्ट जीवन होता है?

“संसार में मुनि हैं”: “अस्तित्व,” विद्यमान है, ज्ञात है, धारण करता है और पाया जाता है। “संसार में,” दुखमय संसार में... (विलुप्त, पिछले खंड देखें)। “मुनि,” अन्य तपस्वी, जैन, जटाधारी तपस्वी, मुनि कहलाने वाले संन्यासी।

“[इस आदरणीय नंदा की तरह]”: ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

“लोग ऐसा क्यों कहते हैं?”: यहाँ “लोग” क्षत्रिय, ब्राह्मण, वेस, शुद्ध, गृहस्थ, भिक्षु, स्वर्ग और अन्य लोग हैं। “(वे) कहते हैं,” वे बताते हैं, बात करते हैं, समझाते हैं, बोलते हैं। “ऐसा क्यों है?”, संदेह का प्रश्न...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)।

“वे कहते हैं कि मुनि एक ज्ञानवान व्यक्ति हैं”: वे कहते हैं, बताते हैं, बात करते हैं, समझाते हैं, कहते हैं कि मुनि ने पूर्णतः ज्ञान के आठ स्तरों, या पाँच जादुई शक्तियों को प्राप्त कर लिया है।

“या एक विशिष्ट जीवन”: या वे कहते हैं, बताते हैं, बात करते हैं, समझाते हैं, और कहते हैं कि मुनि ने पूर्णतः सभी प्रकार की चीजों, सभी प्रकार की चरम सीमाओं, पहली कठिनाई, एक निर्मल जीवन को प्राप्त कर लिया है।

47 · (भगवान:) नन्द, न देखकर, न सुनकर, न जानकर, यहाँ के कुशल लोग किसी को मुनि कहते हैं। जो लोग सेना छोड़ने के बाद दुख या इच्छा के बिना जीवन व्यतीत करते हैं, मैं उन्हें ही मुनि कहता हूँ।

“न देखने से, न सुनने से, न जानने से”: “न देखने से,” देखने से पवित्रता नहीं मिलती। “न सुनने से,” सुनने से पवित्रता नहीं मिलती। “न ज्ञान से,” आठवाँ परम ज्ञान नहीं, पाँच देवताओं पर आधारित नहीं, और न ही दुष्ट ज्ञान पर आधारित।

“नंदा! यहाँ के कुशल लोग मुनि कहते हैं”: “कुशल,” वे जो कुशल हैं, वे जो इस क्षेत्र में कुशल हैं, वे जो जागृत हो चुके हैं, वे जो कौशल पर निर्भर हैं, वे जो सचेतनता में कुशल हैं, ...लगन में कुशल हैं, ...अलौकिक शक्ति, मूल, सामर्थ्य, चेतना, मार्ग, फल, निर्वाण; वे यह नहीं कहते, न बोलते, न संकेत देते कि मुनि ने पूर्णतः प्राप्त कर लिया है, पूर्णतः प्राप्त कर लिया है, पूर्णतः प्राप्त कर लिया है, पूर्णतः प्राप्त कर लिया है, देखने से शुद्धता, या सुनने से शुद्धता, या अष्टम ज्ञान, या पाँच देवताओं, या दुष्ट ज्ञान, या जो तुम देखते हो, या जो तुम सुनते हो, या जो तुम जानते हो।

“जो लोग कष्ट और इच्छा से मुक्त जीवन जीने के लिए सेना छोड़ देते हैं, मैं उन्हें 'मुनि' कहता हूँ”: सेना को दानव सेना कहा जाता है, जो शरीर और बुराई से दानव सेना के रूप में कार्य करती है; वाणी और बुराई से दानव सेना के रूप में कार्य करती है; ...लालच; घृणा; आसक्ति ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)..., सभी बुरे कार्य दानव सेना के रूप में कार्य करते हैं।

यह बात भगवान बुद्ध ने कही: [संख्या 3.2] “इच्छा तुम्हारी पहली सेना है, दुःख दूसरी, भूख और प्यास तुम्हारी तीसरी, और प्यास (प्रेम) तुम्हारी चौथी। गहरी नींद तुम्हारी पाँचवीं, भय तुम्हारी छठी, संदेह तुम्हारी सातवीं, और हठ तुम्हारी आठवीं। वह व्यक्ति जिसकी प्रतिष्ठा अच्छी है, और वह प्रतिष्ठा जो उसने गलतियों से अर्जित की है, जो स्वयं की प्रशंसा करता है और दूसरों को तुच्छ समझता है। हे शैतान! यह तुम्हारी सेना है, हे दुष्ट (काला) हमलावर, जिनके पास साहस नहीं है वे उसे परास्त नहीं कर सकते, और उन्हें विजय के बाद शांति मिलेगी।”

जब सभी राक्षसी सेना और सभी शत्रुतापूर्ण अशुद्धियाँ चारों पवित्र मार्गों द्वारा पराजित, पराजित, नष्ट, विघटित और दूर कर दी जाती हैं, तब इसे "सेना छोड़ने के बाद" कहा जाता है। "कोई कष्ट नहीं," लोभ कष्ट है, क्रोध..., अज्ञान... (निरस्त)..., ज्ञान की अग्नि से प्रज्वलित, इन्हें निर्धन कहा जाता है। "इच्छा रहित": इच्छा को लालसा कहा जाता है, जो लोभ की जड़ है, ...(निरस्त)। जिनकी इच्छा और लालसा का नाश हो जाता है, ...(निरस्त), उन्हें निर्धन, अरहंत और अपने कष्टों को समाप्त करने वाले कहा जाता है। "जो कष्ट और इच्छा के बिना सेना छोड़ देते हैं और जीवन यापन करते हैं, मैं उन्हें 'मुनि' कहता हूँ": जो कष्ट और इच्छा के बिना सेना छोड़ देते हैं और चलते हैं, जीवन यापन करते हैं, कार्य करते हैं, आगे बढ़ते हैं, रक्षा करते हैं, जीविका कमाते हैं, मैं कहता हूँ, मैं समझाता हूँ, मैं सिखाता हूँ, मैं सूचित करता हूँ, मैं निर्माण करता हूँ, मैं उजागर करता हूँ, मैं विश्लेषण करता हूँ, मैं स्पष्ट करता हूँ, वे संसार में मुनि हैं।

48 · [आदरणीय नंदा ने इस प्रकार कहा:] इन समण और ब्राह्मणों में से कोई भी, वे कहते हैं कि देखने और सुनने में पवित्रता है, और यह भी कि नियम और निषेध के गुण में पवित्रता है, और यह कि सभी प्रकार के रूप पवित्र हैं, हे भगवान! जो आत्मसंयम रखते हैं, क्या वे जन्म और वृद्धावस्था से बच पाते हैं? प्रिय प्रभु! हे भगवान, मैं आपसे यह पूछता हूँ, कृपया मुझे इसका उत्तर दें।

"इनमें से कोई भी समण और ब्राह्मण": "कोई भी," संपूर्ण रूप से, हर पहलू में, बिना किसी अतिरिक्त के, पूरी पृथ्वी पर। यह शब्द सर्वत्र के लिए प्रयुक्त होता है, जिसका अर्थ है "कुछ भी"। "समण," जो भी यहाँ से जुलूस में प्रवेश करता है, जुलूस में शामिल होता है। "ब्राह्मण," जो भी दूसरों को मित्र कहता है।

"[इस आदरणीय नंदा की तरह]": ...(हटा दिया गया)।

वे कहते हैं कि देखने और सुनने में पवित्रता है": वे कहते हैं, बताते हैं, बात करते हैं, समझाते हैं और बोलते हैं कि पवित्रता और स्वच्छता है; अलगाव, मुक्ति और वैराग्य है; वे यह भी कहते हैं, बताते हैं कि जो सुना जाता है वह पवित्र है... और वैराग्य है; ...कि जो देखा और सुना जाता है वह पवित्र है...

"यह भी कहा जाता है कि नियमों और निषेधों का पालन करने में पवित्रता है": वे कहते हैं, बताते हैं, समझाते हैं कि नियमों का पालन करना पवित्र है...; वे यह भी कहते हैं कि निषेध पवित्र हैं...; वे कहते हैं कि नियमों और निषेधों में पवित्रता है...।

"कहो कि सभी रूप शुद्ध हैं": वे कहते हैं, बताते हैं, बात करते हैं, समझाते हैं और बोलते हैं कि सभी प्रकार के रूप शुद्ध, स्वच्छ और पूर्णतः मुक्त हैं; स्वतंत्र, मुक्त, अनासक्त।

"हे प्रभु! क्या वहाँ वे लोग हैं जो आत्मसंयमित हैं?": "क्या...?", संदेह का प्रश्न...(छोड़ दिया गया)। "हे प्रभु," .... "वहाँ आत्मसंयमित यात्री," "वहाँ," अपने विचारों, अपनी पसंदों, अपनी प्रवृत्तियों, अपने मतों में। "आत्मसंयमित," विवेकपूर्ण, सतर्क, रक्षक और संरक्षक। "यात्री," यात्री, निवासी, कर्ता, निरंतर चलने वाला, रक्षक और उत्तरजीवी।

"क्या वे जन्म और वृद्धावस्था से बच पाते हैं? महोदय": जन्म, वृद्धावस्था और मृत्यु, क्या वे इनसे पार पाते हैं, इनसे परे जाते हैं, इन पर विजय प्राप्त करते हैं और इन्हें पार करते हैं। "महोदय,"...

"गुरुजी, मैं आपसे विनती करता हूँ, कृपया मुझे यह बताइए": ....

49 · [भगवान: "नंदा!"] इन सभी समणों और ब्राह्मणों में से जो कहते हैं कि पवित्रता देखने और सुनने में है, और यह भी कि नियम और निषेध के गुण में पवित्रता है, और यह कि सभी प्रकार के रूप पवित्र हैं, यहाँ तक कि वे भी जो वहाँ आत्मसंयमित हैं, मैं कहता हूँ कि वे जन्म और वृद्धावस्था से बच नहीं पाए हैं।

"इनमें से कोई भी समण और ब्राह्मण": ....

"[भगवान: 'नंदा!']": ....

वे कहते हैं कि देखने और सुनने में पवित्रता होती है:...

"यह भी कहा जाता है कि नियमों और निषेधों का पालन करने में पवित्रता होती है":...

"कहें कि सभी रूप शुद्ध हैं":...

“यहाँ तक कि जो लोग आत्मसंयमित हैं”: “यहाँ तक कि,” वाक्यों की निरंतरता; वाक्यों का जुड़ाव; वाक्यों का समापन; शब्दों का संयोजन; शब्दों का संबंध; यही वाक्यों का क्रम है, जो “यहाँ तक कि” है। “यहाँ तक कि,” अपने दृष्टिकोण से, अपनी पसंदों से, अपनी प्रवृत्तियों से, अपने विचारों से। “आत्मसंयमित,” सतर्क, सावधान, रक्षाशील, विवेकशील। “चलने वाला,” चलने वाला, निवासी, अभिनेता, राहगीर, संरक्षक और उत्तरजीवी।

मैंने कहा कि वे जन्म और वृद्धावस्था से बच नहीं पाए: जन्म, वृद्धावस्था, मृत्यु, वे बच नहीं पाए, पार नहीं कर पाए, पार नहीं कर पाए, विजय प्राप्त नहीं कर पाए; जन्म, वृद्धावस्था, मृत्यु अलग नहीं होंगे, छोड़े नहीं जा सकेंगे, पार नहीं किए जा सकेंगे, और उन पर विजय प्राप्त नहीं की जा सकेगी; वे जन्म, वृद्धावस्था और मृत्यु के चक्र में घूमते रहते हैं, वे पुनर्जन्म के चक्र में घूमते रहते हैं, जन्म के साथ, वृद्धावस्था के बाद, रोग से पराजित, मृत्यु से पीड़ित, और उनके पास कोई आश्रय या शरण नहीं है। मैं कहता हूँ, मैं समझाता हूँ, मैं सिखाता हूँ, मैं बताता हूँ, मैं निर्माण करता हूँ, मैं उजागर करता हूँ, मैं विश्लेषण करता हूँ, मैं स्पष्ट करता हूँ।

50 · [आदरणीय नंदा ने इस प्रकार कहा:] हे मुनि! इन समण और ब्राह्मणों में से, जो कहते हैं कि देखने और सुनने में पवित्रता है, और यह कि नियम और निषेध के गुण में पवित्रता है, और यह कि सभी प्रकार के रूप पवित्र हैं, यदि आप कहते हैं कि वे जलप्रपात पार नहीं कर पाए, तो हे प्रिय, स्वर्ग और मनुष्य के संसार में कौन जन्म और वृद्धावस्था से बच पाया है? हे भगवान, मैं आपसे यह निवेदन करता हूँ, कृपया मुझे इसका उत्तर दीजिए।

“इनमें से कोई भी समण और ब्राह्मण”: ....

“[इस आदरणीय नंदा की तरह]”: ....

वे कहते हैं कि देखने और सुनने में पवित्रता होती है:...

“यह भी कहा जाता है कि नियमों और निषेधों का पालन करने में पवित्रता होती है”:...

“कहें कि सभी रूप शुद्ध हैं”:...

“मुनि! यदि आप कहते हैं कि वे बाढ़ से नहीं बच पाए”: यदि वे दुष्ट हैं। “मुनि,” ...“आपने कहा कि आप बाढ़ पार नहीं कर पाए,” इच्छा की बाढ़, अस्तित्व की बाढ़, दृष्टि की बाढ़, अज्ञान की बाढ़ को पार नहीं किया जा सकता, उनसे आगे नहीं बढ़ा जा सकता, उन्हें पार नहीं किया जा सकता; वे जन्म, वृद्धावस्था और मृत्यु के चक्र में घूमते रहते हैं। वे पुनर्जन्म के चक्र में घूमते रहते हैं, जन्म के साथ, वृद्धावस्था के बाद, रोग से पराजित, मृत्यु से पीड़ित, बेघर लोगों की तरह। “आपने कहा,” ....

“तो फिर, स्वर्ग और मनुष्य के संसार में, जन्म और वृद्धावस्था के माध्यम से, हे महोदय?”: और इस संसार में, जिसमें स्वर्ग, राक्षस और ब्राह्मण शामिल हैं; जिसमें समन, ब्राह्मण, स्वर्ग और मनुष्य की पीढ़ियाँ शामिल हैं; जन्म, वृद्धावस्था और मृत्यु के माध्यम से, कौन है जिसने पार किया है, श्रेष्ठता प्राप्त की है, पार किया है और विजय प्राप्त की है? “हे महोदय,”...

“गुरुजी, मैं आपसे विनती करता हूँ, कृपया मुझे यह बताइए”: ....

51 · [भगवान: “नंदा!”] मैं यह नहीं कहता कि “सभी समण और ब्राह्मण जन्म और वृद्धावस्था के बंधन में बंधे हैं;” यहाँ जो कुछ भी तुम देखते, सुनते या महसूस करते हो, यहाँ तक कि नियम और निषेध भी, सब त्याग दिए जाने के बाद, प्यास और प्रेम को जानने के बाद, जो लोग कष्टमुक्त हैं, मैं कहता हूँ कि वे लोग वास्तव में बाढ़ से बच गए हैं।

“[भगवान बुद्ध: 'नंदा!'] मैं यह नहीं कहता, 'सभी समण और ब्राह्मण जन्म और वृद्धावस्था से घिरे हुए हैं'”: “नंदा! मैं यह नहीं कहता, 'सभी समण और ब्राह्मण जन्म और वृद्धावस्था से बाधित, अवरुद्ध, घिरे, अवरुद्ध, बंद, छिपे हुए हैं,' मैं कहता हूँ, ... कुछ ऐसे समण और ब्राह्मण भी हैं जिनके

लिए जन्म, वृद्धावस्था और मृत्यु का बंधन टूट गया है, और उनकी जड़ें कट गई हैं, ठीक वैसे ही जैसे बिना जड़ों वाला ताड़ का पेड़ भविष्य में अस्तित्वहीन, निर्जीव हो जाता है।"

"यहाँ जो कुछ भी देखा या सुना जाता है, यहाँ तक कि नियम और निषेध भी, सब त्याग दिए जाते हैं": जो कुछ भी आप देखते हैं, वह त्यागने, छोड़ देने, दूर भगाने, समाप्त करने और अस्तित्वहीन कर देने के बाद शुद्ध हो जाता है; सुनी गई सभी बातें त्यागने के बाद शुद्ध हो जाती हैं... (छोड़ा गया), सभी भावनाएँ..., देखी, सुनी और अनुभव की गई सभी बातें..., नियम..., निषेध..., सभी नियम और निषेध पूरी तरह से त्याग दिए जाते हैं, त्यागने के बाद, दूर भगाने के बाद, समाप्त करने के बाद और उन्हें अस्तित्व से परे कर देने के बाद।

"सभी प्रकार के रूप त्याग दिए जाते हैं": सभी प्रकार के रूपों में पवित्रता और स्वच्छता होती है; वैराग्य, मुक्ति, निर्वाह के बाद, अलगाव के बाद, परित्याग के बाद, समाप्त होने के बाद, और इसे अस्तित्वहीनता की ओर ले जाने के बाद।

"प्यास को जानने के बाद, मैंने उन निर्मल लोगों से कहा, 'वे लोग सचमुच बाढ़ से बच गए हैं'": रूप, ध्वनि, गंध, स्वाद, स्पर्श और धम्म की प्यास। "प्रेम की प्यास को जानने के बाद," प्रेम की प्यास को जानने के तीन प्रकार हैं: जानना, मापना और त्याग देना। जानना क्या है? लालसा को जानना: यह रूप, ध्वनि, गंध, स्वाद, स्पर्श और धम्म की लालसा है। जानना और देखना, यही जानना है।

ज्ञान का मापन क्या है? यह जानने के बाद, अनित्यता, दुख, बीमारी आदि को मापने के लिए उत्सुक होकर, वह त्याग का मापन करता है, जो कि ज्ञान का मापन है।

वैराग्य का ज्ञान क्या है? इस प्रकार विचार करने के बाद, वह उत्सुकतापूर्वक प्यास का त्याग करता है, उसे दूर भगाता है, उसका अंत करता है और उसे अस्तित्वहीन बना देता है। भगवान बुद्ध ने कहा: भिक्षुओं! सभी इच्छाओं और तृप्ति का नाश करना चाहिए। इस प्रकार, वह तृप्ति नाश हो जाएगी, और उसकी जड़ें कट जाएंगी, ठीक वैसे ही जैसे बिना जड़ों वाला ताड़ का पेड़ भविष्य में अस्तित्वहीन हो जाता है [संख्या 22.25]। यही वैराग्य का ज्ञान है। "प्यास और प्रेम को जानने के बाद," इन तीन प्रकार के ज्ञान से, प्रेम की प्यास को जानना। "चिंतामुक्त व्यक्ति" में चार प्रकार की चिंताएँ होती हैं: इच्छा की चिंताएँ, अस्तित्व की चिंताएँ, देखने की चिंताएँ, अज्ञान की चिंताएँ। उनके लिए, ये परेशानियाँ दूर हो गई हैं, ...(उसे विवश व्यक्ति, अरहंत और वे लोग कहा जाता है जिन्होंने अपनी परेशानियों का अंत कर लिया है।)

मैंने कहा, 'वे लोग सचमुच बाढ़ से बच गए हैं': प्यास का अनुभव करने के बाद जिन्हें कोई कष्ट नहीं होता, मैं कहता हूँ, मैं समझाता हूँ, ...कि इच्छा की प्रचंड धाराएँ पार हो गई हैं; अस्तित्व की प्रचंड धाराओं को पार कर लिया गया है; दृष्टि की प्रचंड धाराओं को पार कर लिया गया है; अज्ञान की प्रचंड धाराओं को पार कर लिया गया है; सभी चक्रों को पार कर लिया गया है, उनसे बाहर निकल आए हैं, उन्हें पार कर लिया गया है, उन पर विजय प्राप्त कर ली गई है।

52 · (नंदा:) मैं महान ऋषि के वचनों से प्रसन्न हूँ; गौतम, आपने ठीक ही कहा है, वह अवस्था जो किसी भी प्रकार की निर्भरता से मुक्त है, यहाँ जो कुछ भी आप देखते, सुनते या महसूस करते हैं, उसे त्यागने के बाद, यहाँ तक कि नियमों और निषेधों को भी, सभी प्रकार के रूपों को त्यागने के बाद, प्यास और प्रेम को जानने के बाद, जिन्हें कोई कष्ट नहीं होता, मैं यह भी कहता हूँ कि वे बाढ़ से बच जाते हैं।

"मैं महान ऋषि के शब्दों में आनंदित होता हूँ": ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"बहुत खूब कहा, गौतम, निर्भरता रहित राज्य": ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"यहाँ जो कुछ भी देखा, सुना या महसूस किया जाता है, यहाँ तक कि नियम और निषेध भी, सब कुछ त्याग दिया गया है": ....

"सभी प्रकार के प्रपत्रों को त्याग दिया गया है":...

“सभी निर्धन लोग, प्यास का अनुभव करने के बाद, मैं यह भी कहता हूँ कि 'वे नदी पार कर जाते हैं'”: ....

ज्ञान का मापन क्या है?...

त्याग का ज्ञान क्या है?...

ज्ञान के बाद, प्यास और प्रेम...

इन छंदों के अंत में... “परमेश्वर मेरे गुरु हैं, मैं उनका शिष्य हूँ।”

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> निद्देसा >> निद्देसा 2.ए.8

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

<<<< पिछला अगला >>>>

8. हेमाका

53 · [आदरणीय हेमाका ने इस प्रकार कहा:] गौतम की शिक्षा से पहले उन्होंने मुझे जो कुछ भी बताया, जैसे कि यह था, जैसा होगा, वह सब अफवाहें थीं, वह सब सिद्धांत में वृद्धि थी, मुझे उसमें कोई खास आनंद नहीं मिला।

“जो उन्होंने मुझे पहले बताया था”: बावरी ब्राह्मण और उनके सभी अन्य शिक्षक, वे अपने स्वयं के विचारों, अपनी पसंद, झुकाव, राय, इरादों की व्याख्या करते हैं, सिखाते हैं, सूचित करते हैं, स्थापित करते हैं, उजागर करते हैं, विश्लेषण करते हैं, स्पष्ट करते हैं।

“[इस आदरणीय हेमाका की तरह]”: ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

“गौतम की शिक्षाओं से पहले”: गौतम की शिक्षाओं से पहले, गौतम की शिक्षाओं के दूसरी ओर, गौतम की शिक्षाओं से पहले; बुद्ध के उपदेश, विजेताओं के उपदेश, तथागत के उपदेश, अरहंतों के प्रथम उपदेश।

“ऐसा था और वैसा था, ऐसा होगा और वैसा होगा”: यह एक किंवदंती है कि यह ऐसा था, और यह ऐसा होगा।

“ये सब अफवाहें हैं”: ये सब अफवाहें, सुनी-सुनाई बातें, विरासत, शास्त्रों की शिक्षाएं, तार्किक निष्कर्ष, तर्क-वितर्क, सिद्धांतों के बारे में विचार, चिंतन के बाद स्वीकृत राय हैं, और वे कहते हैं कि ये स्वयं द्वारा सिद्ध नहीं हैं, न ही स्वयं सिद्ध करने की विधि है।

“यह सब सिद्धांत में वृद्धि है”: यह सब सिद्धांत में वृद्धि है, खोज में वृद्धि है, ...सोच में वृद्धि है, ...इच्छा में वृद्धि है, द्वेषपूर्ण खोज में वृद्धि है, उत्पीड़न में वृद्धि है, भूमि के बारे में सोच में वृद्धि है, मृत्यु के बारे में सोच में वृद्धि है, दूसरों के प्रति सहानुभूति से संबंधित सोच में वृद्धि है, सम्मान और प्रतिष्ठा के लाभ से संबंधित सोच में वृद्धि है, तिरस्कृत न होने से संबंधित सोच में वृद्धि है।

“मुझे वहाँ कोई खास खुशी नहीं मिली”: मुझे वहाँ कोई खास खुशी नहीं मिली, न ही मैंने उसे प्राप्त किया, न ही मैंने उसे साबित किया, न ही मैंने उसे हासिल किया।

54 · हे मुनि! कृपया मुझे व्यथा के नाश का धम्म बताइए! जो भी इसे जानता है और सचेत है, वह संसार में प्रेम के द्वारा जीवन यापन कर सकता है।

"कृपया मुझे बताइए": "आप," भगवान जी। "धम्म का वर्णन कीजिए," आरंभ अच्छा है, मध्य अच्छा है, अंत अच्छा है; अर्थ सही है, वाक्य सही है; केवल पूर्ण, शुद्ध ब्रह्म: चार चेतनाएँ, चार धर्म, चार दिव्य आधार, पाँच इंद्रियाँ, पाँच शक्तियाँ, सात ज्ञान के कारक, आठ पवित्र मार्ग, निर्वाण और निर्वाण की ओर ले जाने वाला मार्ग; कृपया घोषणा कीजिए, कृपया व्याख्या कीजिए, कृपया सिखाइए, कृपया सूचित कीजिए, कृपया स्थापित कीजिए, कृपया उजागर कीजिए, कृपया विश्लेषण कीजिए, कृपया स्पष्ट कीजिए।

"मुनि, प्यास का नाश": "प्यास," ...(हटा दिया गया, पिछले भाग देखें)। "मुनि," ...(हटा दिया गया, पिछले भाग देखें)।

"जो कोई भी जानने के बाद सचेतनता को जानता है": ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"दुनिया में प्रेम के माध्यम से जीने में सक्षम": ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

55 · (भगवान:) हे हेमा! जो कुछ तुम देखते, सुनते, महसूस करते और जानते हो, हे इच्छा के संदर्भ में! इच्छा और लोभ से दूर भगाना ही निर्वाण की अमर अवस्था है।

"यहाँ जो तुम देखते हो, जो तुम सुनते हो, जो तुम महसूस करते हो, जो तुम जानते हो": "जो तुम देखते हो" आँखों से देखा जाता है। "जो तुम सुनते हो" कानों से सुना जाता है। "जो तुम महसूस करते हो" नाक से सूंघा जाता है, जीभ से चखा जाता है और शारीरिक संपर्क से प्राप्त होता है। "ज्ञान" चेतना द्वारा जाना जाता है।

हेमाका, इच्छा के संदर्भ में: संसार में क्या सुंदर और वांछनीय है? संसार में आँखें सुंदर और वांछनीय हैं, कान...(छोड़ा गया), नाक..., जीभ..., शरीर..., अर्थ..., रूप, ध्वनि, गंध, स्वाद, स्पर्श, धम्म, आँख-चेतना, कान-इंद्रिय..., नाक-चेतना, जीभ-चेतना, शरीर-चेतना, मन-चेतना, आँख का स्पर्श, कान का स्पर्श, नाक का स्पर्श, जीभ का स्पर्श, शरीर का स्पर्श, मन का स्पर्श, संसार में आँख का स्पर्श सुंदर और वांछनीय है; कान का स्पर्श उत्पन्न होता है और अनुभव किया जाता है..., नाक का स्पर्श..., जीभ का स्पर्श, शरीर का स्पर्श, मन का उत्पन्न होना और अनुभव होना संसार में सुंदर और वांछनीय है; संसार में इच्छा है..., संसार में ध्वनि है..., गंध..., स्वाद, स्पर्श के विचार, धम्म के विचार, रूप के विचार, ...ध्वनि के, ...गंध के, स्वाद के...; रूप की लालसा..., ध्वनि की लालसा..., ...गंध, स्वाद, स्पर्श, धम्म; रूप की खोज..., ...ध्वनि..., स्वाद, स्पर्श, धम्म; रूप सुंदर है, ध्वनि सुंदर है, गंध, स्वाद, स्पर्श, धम्म संसार में मनभावन और सुखद है।

"इच्छा और लोभ का निष्कासन": "इच्छा, लोभ," अर्थात् इच्छा की इच्छा, इच्छा का लोभ, इच्छा का आनंद, इच्छा की प्यास, इच्छा का प्रेम, इच्छा का उत्साह और इच्छा का जुनून, इच्छा का लोभ, इच्छा की बाढ़, इच्छा का बंधन, इच्छा का आसक्ति, इच्छा का आवरण। "इच्छा और लोभ से मुक्ति": इच्छा और लोभ का अंत; इच्छा और लोभ का शांत होना; इच्छा और लोभ का रुकना; निर्जीवता और निर्वाण।

"निर्वाण का लोक, अमरता": निर्वाण का लोक उद्धार, शरण, आश्रय और भयहीनता का लोक है। "अमरता", सदा, अटल, शाश्वत और अपरिवर्तनीय।

56 · यह जानने के बाद, सभी सचेत लोग, जो धम्म को देखते हैं, पूर्णतः शांत हो जाते हैं। और वे हमेशा मौन रहते हैं, संसार में प्रेम का प्रसार करते हैं।

"यह जानने के बाद, वे सभी जो सचेत हैं": "यह," निर्जीव, निर्वाण, यानी सभी कर्मों का अंत, सभी आसक्तियों का अंत, भोग-विलास का अंत, और निर्वाण। "के बाद," जानने के बाद, समझने के बाद, नापने के बाद, निर्णय करने के बाद, अलग करने के बाद, स्पष्ट करने के बाद। "सभी कर्म अनित्य हैं," जानने के बाद...; "सभी कर्म दुखदायी हैं,"...; "सभी धर्म अनात्म हैं,"...; "धर्मों का कोई भी संग्रह धर्मों का अंत है,"...। "जो..." वह अरहंत है जिसने अपने सभी कष्टों को समाप्त कर दिया है। "सचेत व्यक्ति" चार प्रकार से सचेत होता है: ....(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

“वह व्यक्ति जो धम्म को देखता है, वह व्यक्ति जो पूर्णतः शांत है”: “वह जो धम्म को देखता है,” वह जो धम्म को जानता है, वह जो धम्म का परखने वाला है, वह जो धम्म का पारखी है, वह जो धम्म को स्पष्ट करने वाला है, वह जो धम्म को जानता है। वह जो “सभी कर्म अनित्य हैं”..., “सभी कर्म अनात्म हैं”..., “अज्ञान कर्म का कारण है”..., “धर्मों का कोई भी संग्रह विनाश है”... के धम्म का द्रष्टा है; वह जो धम्म का द्रष्टा है, धम्म का ज्ञाता है, धम्म का पारखी है, धम्म का पारखी है। “पूर्णतः शांत,” जो लोभ, क्रोध..., मूर्खता..., द्वेष..., बेईमानी... की अवस्थाओं को शांत कर देता है; मौन अवस्था, शांत अवस्था, बुझी हुई अवस्था, शांत अवस्था, विदा अवस्था और समाप्त अवस्था मौन, समाप्त, शांत, शांत और स्थिर हो जाती हैं।

“और वे सदा मौन रहते हैं”: “शांत,” लोभ, ...आक्रामकता..., अज्ञान, ...क्रोध, ...घृणा... की शांत और मौन अवस्था को दर्शाते हुए; मौन अवस्था, शांत अवस्था, समाप्त अवस्था, बुझी हुई अवस्था, शीतल अवस्था, विदा अवस्था और समाप्त अवस्था मौन, शांत, शीतल और स्थिर हैं। “वे” अरहंत हैं, जिन्होंने अपने कष्टों को समाप्त कर दिया है। “सदा,” सदा, हर समय, शाश्वत रूप से, निरंतर, निरंतर, निर्बाध, क्रमिक रूप से, जैसे जल की लहरें बिना अंतराल के उठती हैं, निरंतर साथ देती हैं और स्पर्श करती हैं, दोपहर से पहले, दोपहर बाद, पहली रात, आधी रात और रात के बाद, अमावस्या में, शुक्ल पक्ष में, बरसात के मौसम में, सर्दी में, गर्मी में, जवानी में, मध्य आयु में और वृद्धावस्था में।

“प्रेम के संसार से गुज़रना”: प्रेम को प्यास कहा जाता है, जो लोभ है, ...(विलंबित, पिछले खंड देखें), अस्वास्थ्य की जड़। “प्रेम”: प्रेम का क्या अर्थ है... (विलंबित)। “संसार में”: दुख का संसार...। “संसार में प्रेम पर विजय प्राप्त करना”: संसार में प्रेम को उसने पार कर लिया है, उससे आगे निकल गया है, उसे पार कर गया है, उसे पार कर गया है [नी.1]।

इन छंदों के अंत में... “परमेश्वर मेरे गुरु हैं, मैं उनका शिष्य हूँ।”

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> निद्देसा >> निद्देसा 2.ए.9

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

<<<< पिछला अगला >>>>

9. तोदेय्या

57 · [आदरणीय तोदेय्या ने इस प्रकार कहा:] जो अपनी इच्छाओं में लीन नहीं रहते, जिनका प्रेम प्यासा है और जो संदेह से गुजरे हैं, उनकी राहत कैसी होगी?

“जो अपनी इच्छाओं में नहीं लीन रहते”: जो कोई अपनी इच्छाओं पर काबू नहीं रख सकता, वह न तो लीन रहता है, न ही जीता है, न ही ठहरता है।

“[इस आदरणीय तोदेय्या की तरह]”: ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

“उसके लिए प्यास का पता नहीं चलता”: उसके लिए प्यास अब नहीं है, अस्तित्व में नहीं है, ज्ञात नहीं है, पाई नहीं जा सकती, समाप्त हो गई है, शांत हो गई है, रुक गई है, उत्पन्न नहीं हो सकती, ज्ञान की अग्नि से जल गई है।

“वे लोग जिन्होंने सभी शंकाओं को पार कर लिया है”: वे लोग जिन्होंने पार कर लिया है, श्रेष्ठता प्राप्त कर ली है, सीमा पार कर ली है, पार कर ली है और विजय प्राप्त कर ली है।

"उनकी राहत कैसी है?": "उनकी मुक्ति कैसी है, किस प्रकार की व्यवस्था और किस प्रकार का विरोधाभास वांछनीय है?" उन्होंने मुक्ति के बारे में पूछा।

58 · [धन्य पुरुष: "तोदेय्या!"] जो अपनी इच्छाओं में नहीं रहते, जिनका प्यासा प्रेम नहीं मिलता, और जो संदेह से गुजर चुके हैं, उनके लिए आगे कोई राहत नहीं है।

"जिस किसी की भी इच्छाएँ उस पर विजय प्राप्त कर ली गई हों": मनुष्य, अरहंत और वे लोग जिन्होंने अपने कष्टों को समाप्त कर दिया हो। "इच्छा," दो प्रकार की इच्छाएँ होती हैं: वस्तुओं की इच्छा और अपवित्रता की इच्छा... (छोड़ा गया, पिछले भाग देखें) "जिस किसी की कोई इच्छा न हो, उसके लिए": ....

"[भगवान: 'तोदेय्या!']": ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"उसके लिए प्यास नहीं है": "प्यास," रूप, ध्वनि, गंध, स्वाद, स्पर्श, धम्म के लिए। "उसके लिए," अरहंत के लिए, जिसने अपने सारे कष्ट समाप्त कर दिए हैं। "उसके लिए प्यास का पता नहीं चलता": उसके लिए प्यास का अस्तित्व नहीं है, वह ज्ञात नहीं है, वह पाई नहीं जाती, वह समाप्त हो गई है, शांत हो गई है, रुक गई है, उत्पन्न नहीं हो सकती, वह ज्ञान की अग्नि से भस्म हो गई है।

"और जिसने संशय पार कर लिए हैं": संशय को संदेह कहा जाता है: कष्टों पर संशय... (उद्धृत)। "जो..." का अर्थ है कोई भी अरहंत जिसने अपने कष्टों को समाप्त कर लिया हो। "संशय पार कर लिए गए हैं": पार कर लिए गए हैं, परे चले गए हैं, पार कर लिए गए हैं, विजय प्राप्त कर ली गई है।

"उसके लिए अब और राहत नहीं है": उसके लिए अब और मुक्ति नहीं है। जिसे मुक्त होना था, वह मुक्त हो चुका है, और उसके लिए जो मुक्ति होनी थी, वह हो चुकी है।

59 · (तोदेय्या:) क्या वह इच्छा से मुक्त है या इच्छाशील? क्या वह बुद्धिमान है या बुद्धिमान जैसा (बुद्धिमान स्वभाव वाला)? शाक्यमुनि! ताकि मैं सर्वदर्शी मुनि को जान सकूँ, कृपया मुझे यह समझाएँ।

"इच्छाओं से मुक्त व्यक्ति या इच्छाओं से ग्रस्त व्यक्ति": क्या वह ऐसा व्यक्ति है जिसे कोई इच्छा नहीं है या ऐसा व्यक्ति जो प्यासा है? क्या वह रूपों, ध्वनियों, गंधों, स्वादों, स्पर्शों, धर्मों, घर, समूह (सभा), निवास, लाभ, प्रसिद्धि, प्रशंसा, सुख, वस्त्र, भोजन (छोड़ा गया), भूतकाल, भविष्यकाल, वर्तमानकाल, जो कुछ देखा, सुना, महसूस किया और जाना जाता है, धर्म, क्या वह चाहता है, स्वीकार करता है, आशा करता है और प्रार्थना करता है?

"क्या वह बुद्धिमान व्यक्ति है या बुद्धिमान स्वभाव का है?": "क्या वह बुद्धिमान व्यक्ति है?" क्या वह बुद्धिमान, प्रबुद्ध और विशिष्ट व्यक्ति है? या तो वह अष्टम ज्ञान का प्रयोग करता है, या पाँच देवताओं से ज्ञान प्राप्त करता है, या दुष्ट ज्ञान का प्रयोग करता है, या लालसा की रचना करता है, या दृष्टि की रचना करता है। वह निर्माण करता है, उत्पन्न करता है और अस्तित्व में आता है।

"शाक्यमुनि! जिसके अनुसार मैं मुनि को जान सकूँ": "शाक्यमुनि," ...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)। "शाक्यमुनि! ताकि मैं इसके अनुसार मुनि को जान सकूँ": शाक्यमुनि! जिसके अनुसार मैं मुनि को जान सकूँ, निश्चित रूप से जान सकूँ और उसमें प्रवेश कर सकूँ।

“हे सर्वदृष्टि, कृपया मुझे यह समझाएँ”: “वह,” जो कुछ भी मैं पूछता हूँ; जो कुछ भी मैं विनती करता हूँ; जिसके बारे में मैं पूछताछ करता हूँ, जो कुछ भी मुझे स्पष्ट करता है। “कृपया समझाएँ,” कृपया समझाएँ, कृपया सिखाएँ, कृपया सूचित करें, कृपया स्थापित करें, कृपया उजागर करें, कृपया विश्लेषण करें, कृपया स्पष्ट करें। “सर्वदृष्टि,” सर्वदृष्टि को सर्वज्ञानी बुद्धि की अवस्था कहा जाता है... (निरस्त, पिछले अनुभाग देखें)।

60 · (धन्य पुरुष:) वह है जो इच्छा से दूर है, न कि वह जो इच्छा रखता है; वह है जो ज्ञान से परिपूर्ण है, न कि केवल वह जो बुद्धिमान है। तोदेय्या! मुनि को इस प्रकार जानो; वह जिसके पास कुछ भी नहीं है, जो इच्छा और अस्तित्व के प्रति आसक्ति से मुक्त है।

“वह इच्छा से दूर है, इच्छा करने वाला नहीं”: वह इच्छा करने वाला नहीं है, वह सभी रूपों, सभी ध्वनियों, सभी ज्ञानयोग्य चीजों की इच्छा नहीं करता। वह आशा नहीं करता, स्वीकार नहीं करता, इच्छा नहीं करता और प्रार्थना नहीं करता।

“वह बुद्धिमान तो है, पर बुद्धिमान स्वभाव का नहीं”: “वह बुद्धिमान है,” वह एक बुद्धिमान, प्रबुद्ध, और विशिष्ट व्यक्ति है। “बुद्धिमान स्वभाव का नहीं,” आठ स्तरों की बुद्धि से, या पाँच देवताओं की बुद्धि से, या दुष्ट बुद्धि से, वह प्यासी रचना का निर्माण नहीं करता, या ऐसी रचना को देखता है जिसका वह निर्माण नहीं करता, न ही उसे उत्पन्न करता है, न ही उसे जन्म देता है।

“तोदेय्या! मुनि को इस प्रकार जानो”: “मुनि,” ...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)। “तोदेय्या! मुनि को इस प्रकार जानो”: तोदेय्या! मुनि को इस प्रकार जानो, मानो, समझो और उनके माध्यम से आगे बढ़ो।

“स्वामित्व का अभाव, इच्छा और अस्तित्व के प्रति आसक्ति का अभाव”: “स्वामित्व का अभाव,” लोभ का अभाव, घृणा का अभाव, अज्ञान का अभाव, आलस्य का अभाव, दृष्टि का अभाव, अपवित्रता का अभाव, बुरे कर्मों का अभाव। जो व्यक्ति विमुख हो गया है, शांत हो गया है, स्थिर हो गया है, उठ नहीं सकता है, और ज्ञान की अग्नि से झुलस गया है, उसे अनासक्त कहा जाता है। “इच्छा,” दो प्रकार की इच्छाएँ हैं: ...(विलंबित, पिछले खंड देखें)। “अस्तित्व,” दो प्रकार के हैं: कर्म और पुनर्जन्म... (विलंबित, पिछले खंड देखें)।

“स्वामित्व का अभाव, और इच्छा या अस्तित्व में कोई आसक्ति नहीं”: जिस व्यक्ति के पास कोई संपत्ति नहीं होती, वह अनासक्त, निर्बाध, अवरोधरहित, विरक्त, पहले से ही मुक्त, बंधन से मुक्त होता है; वह एक अप्रतिबंधित हृदय के साथ निवास करता है।

इन छंदों के अंत में... “परमेश्वर मेरे गुरु हैं, मैं उनका शिष्य हूँ।”

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> निद्देसा >> निद्देसा 2.ए.10

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

<<<< पिछला अगला >>>>

10. कप्पा

61 · [आदरणीय कप्पा ने इस प्रकार कहा:] उन लोगों के लिए जो प्रवाह में खड़े हैं, जब बाढ़ का भयानक आतंक उत्पन्न हुआ है, उन लोगों के लिए जो बुढ़ापे और मृत्यु से पीड़ित हैं, कृपया मुझे एक द्वीप के बारे में बताएं, प्रिय महोदय! कृपया मुझे उस द्वीप के बारे में बताएं, ताकि आगे चलकर उसका अस्तित्व ही न रहे।

"प्रवाह में खड़े रहने वाले": इस प्रवाह को पुनर्जन्म कहते हैं: आना, जाना, आना-जाना, मृत्यु की ओर जाना, हर प्रकार की मृत्यु, पुनर्जन्म, जन्म, विघटन, जन्म, वृद्धावस्था, मृत्यु। पुनर्जन्म का आरंभ ज्ञात नहीं है [SN.15.1], और अंत भी ज्ञात नहीं है। संसार के ठीक मध्य में, चेतन प्राणी स्थिर, रुके हुए, अटके हुए, प्रवेशित, दूषित और मुड़े हुए हैं।

पुनर्जन्म का आरंभिक बिंदु अज्ञात कैसे है? "केवल इसी प्रकार का जन्म चक्र घूमता है, और फिर नहीं घूमता।" ऐसा नहीं है, इसलिए पुनर्जन्म का आरंभिक बिंदु ज्ञात नहीं है। "केवल ऐसे सौ जन्म घूमे, लेकिन उसके बाद नहीं।" ...(अधूरा)। "केवल ऐसे हज़ार जन्म घूमे...।" केवल ये लाखों जन्म...।" "केवल ये दसियों हज़ार जन्म...।" "केवल ऐसे करोड़ों जन्म...।" वास्तव में ऐसा नहीं है, इसलिए पुनर्जन्म का आरंभिक बिंदु ज्ञात नहीं है। "इस प्रकार के हज़ारों जन्म घूमे, लेकिन उसके बाद नहीं घूमे...।" "केवल ऐसे दसियों हज़ार जन्म घूमते हैं, लेकिन उसके बाद नहीं।" वास्तव में ऐसा भी नहीं है, इसलिए पुनर्जन्म का आरंभिक बिंदु ज्ञात नहीं है।

"केवल इसी एक वर्ष में, यह चक्र घूमता है, और फिर नहीं घूमता।" वास्तव में ऐसा भी नहीं है, इसलिए पुनर्जन्म का आरंभिक बिंदु ज्ञात नहीं है। "केवल यही सौ वर्षों का चक्र... केवल यही सहस्राब्दी चक्र शुरू हुआ... केवल यही एक लाख वर्ष... केवल ये दसियों हज़ार वर्ष... केवल ऐसा ही करोड़ों वर्षों का चक्र... केवल ऐसा ही हज़ारों वर्षों का चक्र... केवल ये दसियों हज़ार वर्ष घूमे हैं, और फिर नहीं घूमेंगे।" वास्तव में ऐसा भी नहीं है, इसलिए पुनर्जन्म का आरंभिक बिंदु ज्ञात नहीं है।

"केवल इसी प्रकार की विपत्ति का चक्र चलता रहा, उसके बाद नहीं।" यह बात बिल्कुल गलत है, इसीलिए "पुनर्जन्म का आरंभिक बिंदु ज्ञात नहीं है।" "केवल इसी प्रकार की सौ विपत्तियाँ... केवल ऐसी हज़ार विपत्तियाँ... केवल सौ-हज़ार विपत्तियों का चक्र... केवल इसी प्रकार की दसियों हज़ार विपत्तियाँ... केवल दसियों हज़ार विपत्तियाँ... केवल दसियों हज़ार विपत्तियाँ ही चलती रहीं, और फिर नहीं चलेंगी।" यह बात भी बिल्कुल गलत है, इसीलिए पुनर्जन्म का आरंभिक बिंदु ज्ञात नहीं है।

भगवान बुद्ध ने कहा: "भिक्षुओं! संसार का कोई आरंभ नहीं है। अज्ञान और व्यथा से घिरे प्राणियों के चक्र और पुनर्जन्म का आरंभ बिंदु अज्ञात है। ...भिक्षुओं! तुमने इतने लंबे समय तक कष्ट सहा है, इतना बोझ सहा है, इतना दुर्भाग्य झेला है, और इतने श्मशान घाट देखे हैं, भिक्षुओं! अब तो सब कुछ से असंतुष्ट होना ही काफी है! बंधन तोड़ना ही काफी है! राहत पाना ही काफी है!" [संख्या 15.1] यह भी पुनर्जन्म के आरंभ बिंदु पर है।

पुनर्जन्म का अंत अज्ञात कैसे है? "केवल यही जन्म चक्र घूमेगा, और इसके बाद नहीं घूमेगा।" यह वास्तव में सही नहीं है, यही "पुनर्जन्म का अंत अज्ञात है" का अर्थ है। "केवल ऐसे सौ जन्म... केवल ऐसे हजार जन्म... केवल ऐसे एक लाख जन्म... केवल ऐसे एक हजार जन्म... केवल ऐसे दसियों हजार जन्म... केवल ऐसा एक वर्ष... केवल ऐसे सौ वर्ष... केवल ऐसा एक सहस्राब्दी चक्र... केवल ऐसे एक लाख वर्ष... केवल ऐसे एक हजार वर्ष... केवल ये लाखों वर्ष... केवल ऐसे हजारों वर्ष... केवल ऐसे लाखों वर्ष... केवल ऐसी एक प्रलय... केवल ऐसी सौ विपत्तियाँ... केवल ऐसी एक हजार विपत्तियाँ... केवल ऐसे एक लाख कष्ट... केवल ऐसे दसियों हजार कष्ट घूमेंगे, और इसके बाद नहीं घूमेंगे।" यह वास्तव में सही नहीं है, यही "पुनर्जन्म का अंत अज्ञात है" का अर्थ है। इस प्रकार, संसार का आरंभ बिंदु ज्ञात नहीं है, और संसार का अंत भी ज्ञात नहीं है। संसार के ठीक मध्य में ही चेतन प्राणी विद्यमान हैं, रुके हुए हैं, अटके हुए हैं, प्रवेश कर चुके हैं, कलंकित हो चुके हैं और उनका हृदय उनकी ओर मुड़ गया है।

"जब बाढ़ का भयानक आतंक उत्पन्न हो रहा है": जब इच्छा का प्रकटीकरण, अस्तित्व का प्रकटीकरण, दृष्टि का प्रकटीकरण और अज्ञान का प्रकटीकरण उत्पन्न हो रहा है, पैदा हो रहा है, जन्म ले रहा है, उत्पन्न हो रहा है और प्रस्तुत हो रहा है; वह भयानक आतंक, जीवन का आतंक, बुढ़ापे का आतंक, बीमारी का आतंक और मृत्यु का आतंक।

“जो बुढ़ापे और मृत्यु से पीड़ित हैं”: वे जो बुढ़ापे से घिरे हुए हैं, उससे पीड़ित हैं, उससे जुड़ गए हैं और उसके वश में हैं; वे जो मृत्यु से घिरे हुए हैं, उससे पीड़ित हैं, उसके वश में हैं और उसके वश में हैं; वे जो जन्म लेते हैं, बुढ़ापे की चपेट में आते हैं, बीमारी से हार जाते हैं, मृत्यु से आहत होते हैं, जिनके पास कोई आश्रय नहीं है, जिनके पास कोई शरण नहीं है।

“प्रिय महोदय! कृपया मुझे द्वीप के बारे में बताइए”: कृपया बताइए ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)..., द्वीप, आश्रय, शरणस्थल, शरण का स्थान। “प्रिय महोदय,” ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

“मुझे द्वीप के बारे में बताओ”: “आप,” उसने हे भगवान को पुकारा। “द्वीप के बारे में बताइए,” कृपया घोषणा कीजिए, कृपया समझाइए, ...(अस्पष्ट)..., द्वीप, वह स्थान जहाँ जाना है, शरणस्थल, आश्रय।

“इसके अनुसार, आगे और कुछ नहीं होगा”: इसके अनुसार, दुख यहीं समाप्त हो सकता है, शांत हो सकता है, अस्तित्वहीन हो सकता है, रुक सकता है; पुनर्जन्म का दुख नहीं होता; इच्छा के जगत में, या भौतिक जगत में, या अलौकिक जगत में, या अस्तित्व की इच्छा में, या भौतिक अस्तित्व में, या कामुक अस्तित्व में, या अस्तित्व के विचार में, या अकल्पनीय में, या चारों स्कंधों में, या पाँच स्कंधों में, या आगे के हित में, या पुनर्जन्म में, या अवतार में, या अस्तित्व में, या पुनर्जन्म में, या चक्र में; इसे उत्पन्न न होने दें, इसे जन्म न लेने दें, यहीं पर यह नष्ट हो सकता है, शांत हो सकता है, अस्तित्वहीन हो सकता है, रुक सकता है।

62 · [भगवान: “कप्पा!”] जो लोग बाढ़ के भयानक प्रकोप के समय प्रवाह में खड़े हैं, बुढ़ापे और मृत्यु से पीड़ित लोगों के लिए, कप्पा! मैं तुम्हें द्वीप के बारे में बताऊंगा।

“प्रवाह में खड़े लोग”: ....

पुनर्जन्म का आरंभिक बिंदु अज्ञात क्यों है?...

“[भगवान: 'कप्पा!']”: ....

“जब भयावह सच्चाई सामने आ रही हो”: ....

बुढ़ापे और मृत्यु से पीड़ित लोगों के लिए: ....

“कप्पा! मैं तुम्हें द्वीप के बारे में बताता हूँ”: मैं कहता हूँ, मैं समझाता हूँ, ..., द्वीप, आश्रय, शरण, जाने की जगह।

63 · कोई अधिकार नहीं, कोई आसक्ति नहीं: यह एक ऐसा द्वीप है जिसके आगे कुछ भी नहीं है, इस तरह, मैं कहता हूँ कि यह निर्वाण है: जन्म और बुढ़ापे का अंत।

“कोई आलिंगन नहीं, कोई आसक्ति नहीं”: “कुछ भी,” लोभ एक वस्तु है, घृणा..., अज्ञान..., अहंकार, दृष्टि, अपवित्रता, बुराई एक वस्तु है। किसी भी चीज का त्याग, किसी भी चीज का अंत, किसी भी चीज से अलगाव, निर्जीव, निर्वाण। “कोई आलिंगन नहीं,” आलिंगन को लालसा कहते हैं, जो लोभ है...(छोड़ा गया, पिछले खंड देखें)। आलिंगन का त्याग, आलिंगन का अंत, आलिंगन से अलगाव, निर्जीव, निर्वाण।

“यह एक ऐसा द्वीप है जहाँ आगे कोई प्रगति नहीं है”: यह एक द्वीप है, एक शरणस्थल है, एक आश्रय है, एक ऐसी जगह है जहाँ जाया जा सकता है, एक शरणस्थल है। “और आगे नहीं,” दूसरी ओर कोई दूसरा द्वीप नहीं है। इस समय, इस प्रकार का यह द्वीप ही पहला है, सबसे अच्छा है, सबसे सफल है, शीर्ष पर है।

"इस प्रकार, मैं कहता हूँ कि यही निर्वाण है": बुनाई को लालसा कहा जाता है, यह लोभ है, ...अशुभ जड़। बुनाई कटी, बुनाई शांत हुई, बुनाई रुकी, बुनाई समाप्त हुई, निर्जीव, और निर्वाण। "इस प्रकार," वाक्यों का सिलसिला जारी है, ...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)। "मैंने कहा," मैं कहता हूँ, ...

"जन्म और वृद्धावस्था समाप्त हो गई है": जन्म और वृद्धावस्था को समर्पित कर दिया गया है, शांत कर दिया गया है, रोक दिया गया है, समाप्त कर दिया गया है, निर्जीव है, और निर्वाण है।

64 · यह जानने के बाद, सभी सचेतन लोग, जो धम्म को देखते हैं, पूर्णतः शांत हो जाते हैं। वे मारा के वश में नहीं होते, वे मारा के अनुयायी नहीं होते।

"यह जानने के बाद, वे सभी जो सचेत हैं": "यह," निर्जीव, निर्वाण, जो सभी कर्मों का अंत है, सभी आसक्तियों का अंत है, प्यास, लोभ, और निर्वाण का अंत है। "इसके बाद"... "जो..."... "वे जो सचेत हैं"... (छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)।

"वह व्यक्ति जो धम्म को देखता है, वह व्यक्ति जो पूर्णतः शांत है": "वह जो धम्म को देखता है," .... "पूर्णतः शांत," ....

"वे मारा के वश में नहीं हैं": "मारा," यानी राक्षस का संबंधी, अंधकार का स्वामी, वह जो अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुका है, राक्षस और लापरवाह (पमत्तबंधु) का मित्र। "वे शैतान के वश में नहीं आते": वे न तो शैतान के वश में आते हैं और न ही शैतान उन्हें अपने वश में करता है। शैतान, शैतान का गुट, शैतान का काँटा, शैतान का चारा, शैतान का क्षेत्र, राक्षस का निवास स्थान, राक्षस की अवस्था और राक्षस का बंधन, इन सबको वे पराजित करते हैं, उन पर हावी होते हैं, उनका अंत करते हैं, उन्हें कुचलते हैं, उन्हें गति देते हैं, उन पर कार्य करते हैं, उन्हें आगे बढ़ाते हैं, उनकी रक्षा करते हैं और उनसे बचते हैं।

"वे मारा के अनुयायी नहीं हैं": वे शैतान के सेवक और परिचारक नहीं होंगे, बल्कि वे भगवान बुद्ध के सेवक और परिचारक होंगे।

इन छंदों के अंत में... "परमेश्वर मेरे गुरु हैं, मैं उनका शिष्य हूँ।"

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> निद्देसा >> निद्देसा 2.ए.11

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

<<<< पिछला अगला >>>>

11. जटुकनṇī

65 · [इस आदरणीय जटुकन्नि:] इच्छा की इच्छा न रखने वाले वीरों के बारे में सुनकर, मैं उन लोगों से पूछने आया हूँ जो हिंसक धारा से गुज़र चुके हैं, इच्छा रहित लोगों से पूछने आया हूँ, हे जन्मजात नेत्र वाले, कृपया मुझे मौन की अवस्था बताएँ, हे भगवान, मैं आपसे विनती करता हूँ कि मुझे यथावत बताएँ।

"मैंने एक ऐसे वीर के बारे में सुना है जिसे किसी इच्छा की इच्छा नहीं है": इस प्रकार, भगवान बुद्ध, अरहंत बुद्ध, ने इसे सुनकर, समझकर, भेद करके यह माना कि "वीर" ही वीर है, "ऊर्जावान" वीर है, "सक्षम" वीर है, "पर्याप्त" वीर है, "वीर" वीर है, "जो भयभीत नहीं होते" वीर हैं, जो डर से कांपते नहीं हैं वे वीर हैं, जो भागते नहीं हैं वे वीर हैं, जिन्होंने भय का त्याग कर दिया है वे वीर हैं।

"सभी बुरे कर्मों से दूर रहकर, जीवन शक्ति से परिपूर्ण होकर, नरक की पीड़ाओं से पार पाकर, ऊर्जावान और परिश्रमी व्यक्ति; ऐसे व्यक्ति को ही नायक कहा जा सकता है।" [संख्या 3.6]

"जब मैंने उन वीरों के बारे में सुना जिन्हें इच्छा की कोई इच्छा नहीं होती": इच्छा दो प्रकार की होती है: ...(अंशित, पिछले भाग देखें)। बुद्ध और भगवान बुद्ध के लिए, वस्तुओं की इच्छा का ज्ञान है, अशुद्धता की इच्छा का त्याग है; वस्तुओं की इच्छा के ज्ञान और अशुद्धता की इच्छा के त्याग की अवस्था में (भगवान बुद्ध इच्छा से इच्छा नहीं करते; इच्छा से प्रार्थना नहीं करते; इच्छा से कुछ नहीं चाहते; इच्छा से कुछ नहीं मांगते)। जो कोई इच्छा से इच्छा करता है; इच्छा से प्रार्थना करता है; इच्छा से आशा करता है; इच्छा से कुछ मांगता है, वे ही इच्छा से इच्छा करने वाले, लालच से लालच करने वाले और इच्छाओं के बारे में विचार करने वाले हैं। भगवान बुद्ध इच्छाओं की इच्छा नहीं करते; इच्छाओं को नहीं चाहते; इच्छाओं की आशा नहीं करते; इच्छाओं को नहीं मांगते। इसलिए, बुद्ध के अनुसार, वे लोग जो इच्छाहीन हैं, जिन्होंने अपनी इच्छाओं का त्याग कर दिया है, जिन्होंने अपनी इच्छाओं को समाप्त कर दिया है, जिन्होंने अपनी इच्छाओं से मुक्ति पा ली है, जिन्होंने अपनी इच्छाओं को त्याग दिया है, जिन्होंने अपनी इच्छाओं को काट दिया है, जिन्होंने लोभ का त्याग कर दिया है, जिनके पास लोभ नहीं है, जिन्होंने लोभ का त्याग कर दिया है, जिन्होंने लोभ को समाप्त कर दिया है, जो लोभ से मुक्त हो गए हैं, जिन्होंने लोभ को काट दिया है, जिन्होंने लोभ को त्याग दिया है, जो भूखे नहीं हैं, जिन्होंने अपनी इच्छाओं को बुझा दिया है, जो शांत हो गए हैं, जो खुश रहते हैं, और जो ब्राह्मणों की तरह जीवन जीते हैं।

"[इस आदरणीय जटुकन्नी की तरह]": ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"उन निर्मम लोगों से पूछने आओ जिन्होंने तूफान पार कर लिया है": "जिन्होंने तूफान पार कर लिया है," जिन्होंने तूफान पार कर लिया है, जिन्होंने तूफान पर विजय प्राप्त कर ली है। "पूछना," पूछना, प्रश्न करना, पूछताछ करना, स्पष्ट करना। "उस व्यक्ति के पास आओ जिसकी कोई इच्छा नहीं है," उस व्यक्ति से पूछने के लिए जिसकी कोई इच्छा नहीं है, जिसने त्याग दिया है, और जिसने इच्छा का त्याग कर दिया है, जिन्हें बहिष्कृत कर दिया गया है, जिन्होंने अपनी इच्छाओं का त्याग कर दिया है, ...(छोड़ा गया), जिन्होंने लोभ का त्याग कर दिया है, ...(छोड़ा गया), हम आ गए हैं, हम पहुँच गए हैं, हम पूरी तरह पहुँच गए हैं, हम आपसे एक हो गए हैं।

"हे नेत्र, कृपया मौन की अवस्था के बारे में बताइए": "मौन" मौन के रूप में प्रकट होता है और मौन की अवस्था निर्जीव, निर्वाण है, अर्थात् सभी कर्मों का अंत, सभी आसक्तियों का अंत, भोग-विलास का अंत, निर्वाण। भगवान बुद्ध कहते हैं: "यह मौन की अवस्था है, यह विजय की अवस्था है, अर्थात्: सभी कर्मों का अंत, सभी आसक्तियों का अंत, प्यास का अंत, भोग-विलास से मुक्ति, निर्वाण" [SN.48.50]। दूसरे पहलू में: जहाँ सभी धर्म मौन की अनुभूति, मौन के स्पर्श और मौन के साक्षी की ओर ले जाते हैं, ठीक उसी प्रकार ये चार ध्यान, चार धर्म, चार आधार, पाँच शक्तियाँ, पाँच ज्ञान के कारक और पवित्र मार्ग की आठ शाखाएँ हैं। इन्हें मौन की अवस्था कहा जाता है। कृपया बोलें, कृपया समझाएँ, ...(छोड़ा गया) मौन की अवस्था, शरण की अवस्था, आश्रय की अवस्था, भयहीनता की अवस्था, मृत्युहीनता की अवस्था, निर्जीवता की अवस्था। आँख को सर्वज्ञ ज्ञान की अवस्था कहा जाता है। बुद्ध और भगवान के लिए, आँख और विजय की अवस्था बोधि वृक्ष के नीचे एक ही समय में (क्रम से नहीं) उत्पन्न होती हैं, इसलिए बुद्ध सह-जन्मी आँख हैं।

"हे भगवान, कृपया मुझे सत्य बताइए": सत्य को निर्जीव, निर्वाण कहा जाता है...। "हे भगवान," ...(विलुप्त, पिछले भाग देखें)। "कृपया मुझे बताइए," ...।

66 · क्योंकि भगवान इच्छा पर विजय प्राप्त करने के बाद कार्य करते हैं, जैसे चमकता हुआ सूर्य पृथ्वी पर चमकता है, हे व्यापक ज्ञान वाले, हे मेरे जैसे कम बुद्धिमान व्यक्ति, कृपया धम्म की व्याख्या करें, ताकि मैं जान सकूँ कि जन्म और वृद्धावस्था का विच्छेद कहाँ है।

"क्योंकि भगवान इच्छा पर विजय प्राप्त करने के बाद कार्य करते हैं": "भगवान," .... "इच्छा," .... भगवान ने वस्तुओं की इच्छाओं को जानने के बाद, अपवित्रता की इच्छाओं का त्याग करने के बाद, उन्हें पराजित किया, समाप्त किया, उन पर हावी हुए, उन्हें कुचल दिया, वे चल रहे हैं, ठहर रहे हैं, कार्य कर रहे हैं, आगे बढ़ रहे हैं, रक्षा कर रहे हैं, जीवित हैं।

"चमकता हुआ सूर्य पृथ्वी पर प्रकाश डालता है": सूर्य (आदिको) को सूर्य (सूरियो) कहा जाता है। पृथ्वी (पथवी) को पृथ्वी (जगती) कहा जाता है। चमकता हुआ सूर्य तेजस्वी है, विजय दिलाता है, पराजित करता है, सर्वोपरि करता है, अंत करता है, पृथ्वी को गर्म करता है, आकाश के समस्त अंधकार को चीरता है, अंधकार का नाश करता है, प्रकाश प्रकट होने के बाद आकाश में, वायु में और शून्य में मार्ग पर विचरण करता है; इसी प्रकार, तेजस्वी ज्ञान, ज्ञान के तेजस्वी प्रकाश से परिपूर्ण है, समस्त कर्मों का नाश करता है, अज्ञान के अंधकार को नष्ट करता है, ज्ञान के प्रकाश को देखकर,

वस्तुओं की इच्छा को जानकर, अज्ञान की इच्छा का त्याग करके, विजय दिलाता है, पराजित करता है, सर्वोपरि करता है, अंत करता है, कुचलता है, विचरण करता है, ठहरता है, कर्म करता है, चलता है, रक्षा करता है और जीवित रहता है।

"जो व्यापक रूप से बुद्धिमान है, वह कम बुद्धिमान के लिए": मैं कम बुद्धिमान, निम्न और हीन बुद्धि वाला हूँ; आप अधिक बुद्धिमान, उच्चतर, तेज और अंतर्दृष्टि वाले हैं। जैसे पृथ्वी को विशाल कहा जाता है, वैसे ही भगवान बुद्ध के पास भी पृथ्वी के समान विशाल और विस्तारित बुद्धि है।

"कृपया उस धम्म की व्याख्या कीजिए जिसे मैं जान सकूँ": "धम्म," .... कृपया व्याख्या कीजिए, कृपया सिखाइए.... "मैं जान सकता हूँ," मैं जान सकता हूँ, निश्चित रूप से जान सकता हूँ, गहराई से समझ सकता हूँ, सिद्ध कर सकता हूँ, पहुँच सकता हूँ और गवाही दे सकता हूँ।

"जन्म और वृद्धावस्था का त्याग कहाँ है?": जन्म, वृद्धावस्था और मृत्यु का त्याग, समाप्ति, विच्छेद, विराम, निर्जीवता और निर्वाण का त्याग।

67 · [भगवान: "जातुकन्नि"] कृपया अपनी इच्छा की लालसा को संयमित करें, और इच्छा से वैराग्य को स्थिरता मानें, चाहे आप किसी भी चीज को अपनाएं या त्यागें, ये चीजें आप में न पाई जाएं।

"कृपया इच्छा की लालसा को नियंत्रित करें": "इच्छा," .... "लालसा," .... "कृपया इच्छा की लालसा को नियंत्रित करें": कृपया इच्छा के लोभ को नियंत्रित करें, कृपया उसे दूर भगाएँ, कृपया उसे जाने दें, कृपया उसे मिटा दें, कृपया उसका अस्तित्व समाप्त कर दें।

"Jatukanṇī": ....

"इसके बाद, इच्छा से विरक्ति को स्थिरता के रूप में देखें": "(इच्छा को त्यागना)," सही मार्ग, अनुसरण करने वाला मार्ग, अप्रतिवर्ती मार्ग, विरोधाभास रहित मार्ग, मार्ग और धम्म का मार्ग, इसका अर्थ है धम्म के मार्ग का अनुसरण करना, उपदेशों को पूरा करना, जड़ों की रक्षा करना, भोजन की सही मात्रा जानना, संयम, जागरूकता में निपुणता प्राप्त करना, सही ज्ञान के साथ, चार जागरूकता, चार सही परिश्रम, चार दिव्य आधार, पांच इंद्रियां, पांच शक्तियां, सात ज्ञान के कारक, आठ पवित्र मार्ग, निर्वाण और निर्वाण की ओर ले जाने वाला मार्ग, ये स्थिरता, आश्रय, निर्भयता, अमरता, निर्जीवता हैं; देखने, तौलने, निर्णय करने, अलग करने और स्पष्ट करने के बाद।

"उठाना या अस्वीकार करना": "उठाया," थामे रहना, चिपके रहना, चिपके रहना, लिया जाना, लालसा के कारण माना जाना, देखना। "या अस्वीकार किया," या अस्वीकार किया गया जिसे अलग किया जाना चाहिए, जिसे त्याग दिया जाना चाहिए, जिसे दूर भगा दिया जाना चाहिए, जिसे समाप्त कर दिया जाना चाहिए, जिसे अस्तित्वहीन कर दिया जाना चाहिए।

"कुछ भी न पाना": "कुछ भी," लालच एक चीज है, नफरत एक चीज है, अज्ञानता...(छोड़ दिया गया); इनमें से कोई भी चीज, न खोजी जाए, न खोजे जाने के लिए मजबूर किया जाए, न पूरी तरह से खोजी जाए, न खोजी जाए, कृपया त्याग दें, कृपया दूर भगा दें, कृपया अंत कर दें, कृपया इसे अस्तित्वहीन बना दें।

68 · इससे पहले जो कुछ भी हो, कृपया उसे मुरझाने दें; इसके बाद कुछ भी न रखें, यदि आप इसे बीच में नहीं रोकेंगे, तो आप एक मौन जीवन जिएंगे।

"जो कुछ भी पहले हुआ है, कृपया उसे नष्ट कर दें": अतीत में हुए प्रदूषण के कारण जो भी प्रदूषण हुआ है, कृपया उसे सुखा दें, कृपया उसे नष्ट कर दें, कृपया उसे बीज न बनने दें, कृपया उसे जाने दें, कृपया उसे दूर भगा दें, कृपया उसे समाप्त कर दें, कृपया उसे अस्तित्वहीन कर दें। इस प्रकार, जो कुछ भी पहले हुआ है, कृपया उसे नष्ट कर दें। या, अतीत में किए गए कोई भी कर्म जो परिपक्व नहीं हुए और फल नहीं दिए, कृपया उन्हें नष्ट कर दें, मैं आपसे उन्हें नष्ट करने का अनुरोध करता हूँ, ...उन्हें अस्तित्वहीन कर दें।

"कृपया इसके बाद कुछ भी न करें": इसके बाद को भविष्य कहा जाता है। भविष्य में जो कुछ भी उत्पन्न हो सकता है, चाहे वह लालच हो, घृणा हो, भ्रम हो, अहंकार हो, धारणा हो, प्रदूषण हो, बुरे कर्म हों, इनमें से कुछ भी न हो, न उत्पन्न करें, न पैदा करें, न जन्म दें, न ही उत्पन्न होने दें, कृपया त्याग दें, कृपया दूर भगा दें, कृपया समाप्त कर दें, कृपया इसे अस्तित्वहीन कर दें।

"यदि तुम मध्य में स्थित को धारण नहीं कर सकते": मध्य में स्थित को वर्तमान रूप, भावना, विचार, क्रिया और चेतना कहा जाता है। वर्तमान क्रियाओं के संबंध में, तुम उन्हें लालसा, दृष्टि, प्यास, लोभ, आसक्ति, प्रसन्नता, स्वागत आदि के कारण धारण नहीं कर पाओगे; तुम उन्हें त्याग दोगे, दूर भगा दोगे, समाप्त कर दोगे और उन्हें अस्तित्वहीन बना दोगे।

"तुम मौन जीवन जिओगे": लोभ की मौन अवस्था का अर्थ है कि तुम एक मौन जीवन जिओगे, एक अविचलित... (छोड़ा गया) सभी अस्वस्थ कृत्रिम चीजें, मौन अवस्थाएँ, शांत अवस्थाएँ, मृत अवस्था, बुझी हुई अवस्था, अब न जलने वाली अवस्था, ठंडी अवस्था, बीती हुई अवस्था, समाप्त अवस्था मौन, शांत, बुझी हुई, ठंडी, रुकी हुई अवस्था है; तुम जीते हो, कार्य करते हो, आगे बढ़ते हो, रक्षा करते हो और जीवित रहते हो।

69 · हे ब्राह्मण, जो हर रूप में लोभ से मुक्त हैं, उन्हें मृत्यु पर नियंत्रण पाने के लिए कोई कष्ट नहीं होता।

हे ब्राह्मण, सभी रूपों और नामों में! उन लोगों के लिए जो लोभ से मुक्त हैं": "सब कुछ," .... "नाम," चार निराकार स्कंध। "रूप," चार महा तत्व और उन चार महा तत्वों से उत्पन्न कोई भी रूप। तृष्णा को तृष्णा कहा जाता है, यह लोभ है, ... हे ब्राह्मण, सभी रूपों और नामों में! उन लोगों के लिए जिनमें लोभ नहीं है": सभी रूपों और नामों में, उन लोगों के लिए जो लोभ का त्याग करते हैं, जिनमें लोभ नहीं है, जो लोभ को छोड़ देते हैं, जो लोभ से मुक्त हैं, और जो लोभ का त्याग करते हैं, लोभ को त्याग देते हैं, लोभ को काट देते हैं, लोभ से मुक्त हो जाते हैं।

"इस व्यक्ति के लिए, कष्ट प्रकट नहीं होते": "कष्ट," चार प्रकार के कष्ट होते हैं: इच्छा के कष्ट, अस्तित्व के कष्ट, दृष्टि (दृष्टिकोण) के कष्ट और अज्ञान के कष्ट। "इस व्यक्ति के लिए," अरहंत, वे जिन्होंने अपने कष्टों को समाप्त कर दिया है। "अपरिचित," ये कष्ट नहीं होते, अस्तित्वहीन होते हैं, अज्ञात होते हैं, पाए नहीं जाते, समाप्त हो जाते हैं, विच्छेदित हो जाते हैं, शांत हो जाते हैं, रुक जाते हैं, और ज्ञान की अग्नि से भस्म हो जाते हैं।

"जिसके द्वारा वह मृत्यु के राजा के वश में आ जाएगा": वे विपत्तियाँ जो उसे दानव राजा के वश में या मृत्यु के वश में ले जाएँगी, वे दानव गुट के वश में आ जाएँगी; वे विपत्तियाँ हैं ही नहीं, अस्तित्वहीन हैं, उसके द्वारा नियंत्रित नहीं हैं, ज्ञात नहीं हैं, खोजी नहीं जा सकतीं, विच्छेदित हैं, शांत हैं, रुकी हुई हैं, उत्पन्न नहीं हो सकतीं, ज्ञान की अग्नि से भस्म हो जाती हैं।

इन छंदों के अंत में... "परमेश्वर मेरे गुरु हैं, मैं उनका शिष्य हूँ।"

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> निद्देसा >> निद्देसा 2.ए.12

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

<<<< पिछला अगला >>>>

12. भद्रावुधा

70 · [आदरणीय भद्रावुधा ने इस प्रकार कहा:] जो परिवार का त्याग करते हैं, जो प्यास बुझाते हैं, जो विचलित नहीं होते, जो आनंद का त्याग करते हैं, जो बाढ़ से बच जाते हैं, जो मुक्त होते हैं, जिन्होंने निर्माण का त्याग कर दिया है, जो अत्यंत बुद्धिमान हैं, मैं उनसे विनती करता हूँ; नाग से सुनकर वे यहाँ से चले जाएँगे।

"जो परिवार का त्याग करते हैं, वे प्यास बुझाते हैं और विचलित नहीं होते": "परिवार का त्याग करो," समस्त इच्छाएँ, लोभ, आनंद, प्यास, आसक्ति और भौतिक जगत से लगाव, कष्टों का वृत्तांत; जो बुद्ध और भगवान की तरह इन सब से मुक्त हो गए हैं, उनकी जड़ें कट गई हैं, ठीक वैसे ही जैसे बिना जड़ों वाला ताड़ का पेड़ भविष्य में अस्तित्वहीन और निर्जीव हो जाता है। अतः बुद्ध वे हैं जिन्होंने अपने परिवार का त्याग किया है। भावना के क्षेत्र में... (विलुप्त) चिंतन के क्षेत्र में..., कर्म के क्षेत्र में..., समस्त इच्छाएँ, लोभ, आनंद, प्यास, आसक्ति, हृदय की आसक्ति, चेतना के क्षेत्र में कष्ट, अंतर्निहित वृत्तांत, बुद्ध और भगवान के लिए, कट गए हैं, और जड़ें कट गई हैं, ठीक वैसे ही जैसे बिना जड़ों वाला ताड़ का पेड़ भविष्य में अस्तित्वहीन और निर्जीव हो जाता है। अतः बुद्ध एक बेघर व्यक्ति हैं।

"प्यास बुझाओ," "प्यास" ....(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)। बुद्ध और भगवान के लिए, तृष्णा का नाश हो चुका है, ...और ज्ञान की अग्नि से जलकर भस्म हो गई है, इसलिए बुद्ध ही तृष्णा को बुझाने वाले हैं। "अविचलित": तृष्णा को तृष्णा कहा जाता है, जो लोभ की जड़ है, ...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)। बुद्ध और भगवान के लिए तृष्णा और प्यास का नाश हो चुका है, और उनकी जड़ें कट चुकी हैं, ठीक वैसे ही जैसे बिना जड़ों वाला ताड़ का पेड़ भविष्य में अस्तित्वहीन और निर्जीव हो जाता है। इसलिए, बुद्ध अविचलित हैं। तृष्णा को अविचलित अवस्था के रूप में त्यागने के संबंध में, भगवान कुछ प्राप्त करने पर नहीं कांपते; कुछ न प्राप्त करने पर नहीं कांपते; प्रतिष्ठा होने पर नहीं कांपते; प्रतिष्ठा न होने पर नहीं कांपते; प्रशंसा मिलने पर नहीं कांपते; फटकार मिलने पर नहीं कांपते; प्रसन्न होने पर नहीं कांपते; दुःख की स्थिति में भी वह न तो कांपता है, न हिलता है, न थरथराता है; इसलिए बुद्ध ही वह हैं जो विचलित नहीं होते।

"[इस आदरणीय भद्रावुधा की तरह]": ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"जो आनंद का त्याग करते हैं, जो बाढ़ से बच जाते हैं, और जो मुक्त हो जाते हैं": सुख को तृप्ति कहा जाता है, जो लोभ है, ...(अंशित)। बुद्ध और भगवान बुद्ध के लिए वह आनंद और प्यासी प्रेम कट गया है, और उसकी जड़ें कट गई हैं...; इसलिए, बुद्ध वे हैं जिन्होंने आनंद का त्याग किया है। अत्यधिक उग्र (तूफानी) लोग, जिन्होंने अस्तित्व की उग्र धाराओं को पार किया है, जिन्होंने दृष्टि की उग्र धाराओं को पार किया है, जिन्होंने अज्ञान की उग्र धाराओं को पार किया है, सभी चक्रों को पार कर लिया है, पार कर लिया है, पार कर लिया है, विजय प्राप्त कर ली है, वे ही हैं जो उस अवस्था में उतरे हैं, जिन्होंने अभ्यास किया है...। "मुक्त" भगवान बुद्ध का हृदय पहले से ही लोभ से मुक्त है, लोभ से, क्रोध से, अज्ञान से, सभी अस्वास्थ्यकर रचनाओं से मुक्त है...।

"हे परम बुद्धिमान, निर्माण का त्याग करो," मैं विनती करता हूँ: "निर्माण" के दो निर्माण हैं: इच्छा का निर्माण और दृष्टि का निर्माण... यह इच्छा का निर्माण है... यह दृष्टि का निर्माण है... बुद्ध और भगवान बुद्ध के लिए, प्यास का निर्माण कट गया है, दृष्टि का निर्माण कट गया है...; इसलिए बुद्ध निर्माण का त्याग करने वाले हैं। "मैं विनती करना चाहता हूँ," मैं विनती करना चाहता हूँ, मैं निवेदन करना चाहता हूँ, मैं निवेदन करना चाहता हूँ, मैं स्वीकार करना चाहता हूँ, मैं आशा करना चाहता हूँ, मैं आकांक्षा करना चाहता हूँ, मैं पूछना चाहता हूँ, मैं प्रार्थना करना चाहता हूँ। परम ज्ञान को ही ज्ञान कहते हैं... भगवान बुद्ध पहुँचते हैं...; इसलिए, बुद्ध एक परम बुद्धिमान व्यक्ति हैं।

"वे नाग (महान प्राणी, या हाथी) से सुनकर यहाँ से चले जाएँगे": "महान प्राणी" नाग है। भगवान "अपराध नहीं करते" महान प्राणी हैं; "नहीं जाते" महान प्राणी हैं; "नहीं आते" महान प्राणी हैं... (छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)। "महान प्राणी से सुनकर वे यहाँ से चले जाएँगे": आपके वचन, बोलने का तरीका, शिक्षाएँ, व्याख्याएँ, नसीहतें, सुनकर, समझकर, और विवेक से, वे यहाँ से चले जाएँगे, निकल पड़ेंगे, सभी दिशाओं में चलेंगे।

71 · हे वीर! सभी राष्ट्रों के लोग एकजुट हुए हैं। वे आपके वचनों की प्रतीक्षा कर रहे हैं। कृपया उन्हें अच्छी तरह समझाएँ, क्योंकि आप ही इन धर्मों के ज्ञाता हैं।

"सभी प्रकार के लोग राष्ट्रों से एकजुट हुए हैं": "सभी प्रकार के लोग," खटिया, ब्राह्मण, वेसा, सुद्दा, सामान्य लोग, भिक्षु, स्वर्ग और लोग। "राष्ट्र," अंग, मगध, कलिंग, काशी, कोशल, वज्जि, मल्ल, चेतिया, वंश; और कुरु, पंचाला, मच्छ, सुरसेना, असाका, अवंती, योना, कम्बोज देश भी। "जुड़ गए हैं," जुड़ गए हैं, इकट्ठा होने आए हैं, इकट्ठा हो गए हैं।

"हीरो! आपके कथन का इंतजार रहेगा": "हीरो," ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"वीरों! वे आपके शब्दों की प्रतीक्षा कर रहे हैं": आपके शब्द, बोलने का तरीका, शिक्षाएँ, व्याख्याएँ, नसीहतें। "वे प्रतीक्षा कर रहे हैं," वे प्रतीक्षा कर रहे हैं, चाहते हैं, स्वीकार करते हैं, आशा करते हैं, विनती करते हैं।

"कृपया उन्हें अच्छी तरह समझाएँ": "उनके लिए," क्षत्रिय, ब्राह्मण, वेस, शुद्ध, गृहस्थ, भिक्षु, स्वर्ग, जनता। "आप," भगवान। "अच्छी तरह समझाएँ," कृपया इसे अच्छी तरह समझाएँ; कृपया सिखाएँ, कृपया सूचित करें, कृपया स्थापित करें, कृपया उजागर करें, कृपया विश्लेषण करें, कृपया स्पष्ट करें।

क्योंकि इस प्रकार तुम इन धम्मों के ज्ञाता हो": क्योंकि इस प्रकार तुम इन धम्मों के ज्ञाता, निर्णायक, स्पष्टकर्ता और बोधकर्ता हो।

72 · [भगवान: "भद्रावुधा"] उसे सभी आसक्ति और लालसा को कम करना चाहिए, ऊपर, नीचे और मध्य चारों दिशाओं में, वे संसार में जिस भी चीज़ से चिपके रहते हैं, उसी के कारण, मार सजीव प्राणियों का पीछा करता है।

"उसे सभी आसक्ति और लालसा को नियंत्रित करना चाहिए": आसक्ति और लालसा को रूप की लालसा कहा जाता है... (उद्धृत)। "आसक्ति और लालसा," इसे "आसक्ति और लालसा" क्यों कहा जाता है? उस प्यासी प्रेम से वे पकड़ते हैं, चिपके रहते हैं, थामे रहते हैं... और इसी कारण अपनी प्यास बुझाते हैं। "उसे सभी आसक्ति और लालसा को नियंत्रित करना चाहिए": सभी आसक्ति और लालसा को नियंत्रित, निष्कासित, त्यागा, समाप्त, समाप्त और अस्तित्वहीन कर देना चाहिए।

"[भगवान: 'भद्रावुधा']": ....

"ऊपरी, निचली और मध्य चार दिशाएँ": ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"वे संसार में जिन चीजों से चिपके रहते हैं": लोग जिन चीजों को पकड़ते हैं, जिनसे चिपके रहते हैं, जिन्हें थामे रहते हैं, जिन्हें ग्रहण करते हैं; भावनाएँ, विचार, क्रियाएँ और चेतना, आसक्ति। "संसार में," ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"मारा, इसी कारण से सभी प्राणियों का अनुसरण करता है": राक्षस, शैतान, चक्र का राक्षस, पुनर्जन्म का राक्षस, पुनर्जन्म का राक्षस और यह चक्र। "अनुसरण करो," अनुसरण करो और अनुयायी बनो। "चेतन," चेतन प्राणी, लोग, मनुष्य, विद्यार्थी ब्राह्मण, लोग, व्यक्ति, जन्म से चेतन, इंद्र से जन्म लेने वाले, मनु से जन्म लेने वाले।

73 · अतः यह समझते हुए, सजग भिक्षु को संसार में किसी भी वस्तु से आसक्त नहीं होना चाहिए, इस प्रकार आसक्त को देखकर, (यह जानते हुए) कि यह पीढ़ी मृत्यु के क्षेत्र में उलझी हुई है।

अतः जो समझते हैं उन्हें आसक्ति नहीं रखनी चाहिए: अतः; कारण; वजह; स्थिति; कारण, जब इच्छाओं की इस परेशानी को देखते हैं। "समझदार," वह जो जानता है, वह जो समझता है, वह जो दूसरों को जानता है, वह जो गहराई से समझता है: "सभी कर्म अनित्य हैं"..., वे जो जानते हैं, वे जो दूसरों को जानते हैं, वे जो निश्चित रूप से जानते हैं, वे जो अनुभव करते हैं। "आसक्ति नहीं रखनी चाहिए," रूप से आसक्ति नहीं रखनी चाहिए, पकड़ नहीं बनानी चाहिए, थाम नहीं लेना चाहिए, ...निकालना नहीं चाहिए, ...सोचना नहीं चाहिए, ...उसे पकड़ नहीं बनानी चाहिए, आसक्ति नहीं रखनी चाहिए, थाम नहीं लेना चाहिए, आसक्त नहीं होना चाहिए।

"सार्वभौम में किसी भी चीज़ के प्रति सचेत भिक्षु": "भिक्षु," एक गुणी भिक्षु, या एक विद्वान भिक्षु। "सचेत," चार प्रकार से सचेत रहना: ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)। "कोई भी चीज़," कोई भी रूप, भावना, विचार, व्यवहार, चेतना। "सभी लोकों में," सभी दुख लोकों में, सभी मानव लोकों में, सभी स्वर्गीय लोकों में, सभी तुल्य लोकों में, सभी लोकों में।

“इस तरह अटके हुए पकड़ने वाले को देखना”: विभिन्न लोग पकड़ते हैं, थामते हैं, लेते हैं, चिपके रहते हैं, महसूस करते हैं... वे लेते हैं, पकड़ते हैं, थामते हैं, और इस चिपके रहने को अटका हुआ पकड़ने वाला कहा जाता है। “इस तरह,”... “देखना,” देखना, निहारना, चुपचाप देखना, अवलोकन करना।

“यह पीढ़ी मृत्यु के देवता के क्षेत्र में फंसी हुई है”: “पीढ़ी” सभी जीवित प्राणियों का पर्यायवाची है। मृत्यु के देवता के क्षेत्र को अशुद्धता, विभिन्न समुच्चयों और सृष्टियों के रूप में जाना जाता है। पीढ़ियाँ मृत्यु के देवता और राक्षसों के क्षेत्र में फंसी हुई हैं। जैसे कोई वस्तु दीवार पर लगे खंभे या हुक पर फंसी, फंसी, लटकी, जुड़ी, स्थिर या अवरुद्ध होती है, वैसे ही पीढ़ी मृत्यु और राक्षसों के क्षेत्र में फंसी, फंसी, लटकी, जुड़ी, स्थिर और अवरुद्ध है।

इन छंदों के अंत में... “परमेश्वर मेरे गुरु हैं, मैं उनका शिष्य हूँ।”

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> निद्देसा >> निद्देसा 2.ए.13

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

<<<< पिछला अगला >>>>

13. उदय
74 · [आदरणीय उदय ने इस प्रकार कहा:] जो ध्यान करते हैं, जो धूल से मुक्त हैं, जो बैठे हैं, जिन्होंने कर्तव्य पूर्ण कर लिया है, जो कष्टों से मुक्त हैं, जो सभी धर्मों में पारंगत हो चुके हैं, और जो प्रश्न लेकर आते हैं, कृपया मुझे पूर्ण ज्ञान की मुक्ति और अज्ञान के नाश के बारे में बताएं।

“जिनका ध्यान है, जो धूल से मुक्त हैं, और जो बैठते हैं”: भगवान बुद्ध ध्यान करने वाले व्यक्ति हैं। प्रथम ध्यान में रहने वाला व्यक्ति ध्यान में रहने वाला है; ...द्वितीय ध्यान...; ...तृतीय ध्यान...; ...चौथा ध्यान...; ...तर्क और चिंतन [AN.8.63] ध्यान...; ...इच्छाहीन ध्यान...; ...आनंद के साथ चलने वाला ध्यान...; शून्यता में ध्यान; निर्मल अवस्था में ध्यान; अनिच्छा के साथ ध्यान; ध्यान जगत में, वह ध्यान करने वाला, ध्यान प्रेमी, एक ही अवस्था का अभ्यास करने वाला और अपने हितों को महत्व देने वाला व्यक्ति भी है। “धूल से मुक्त व्यक्ति,” लोभ धूल है, घृणा..., अज्ञान..., क्रोध..., आक्रोश... (छोड़ा गया); सभी अहितकर कर्म धूल हैं। बुद्ध और भगवान के लिए, यह धूल और जड़ें दोनों ही कट चुकी हैं, ठीक वैसे ही जैसे बिना जड़ों वाला ताड़ का पेड़ भविष्य में अस्तित्वहीन हो जाता है। इसलिए, जीवित प्राणियों में, बुद्ध वे हैं जिन पर धूल नहीं है, जो धूल से मुक्त हैं, जिन्होंने धूल को त्याग दिया है, जिन्होंने धूल के बंधनों को छोड़ दिया है (जो धूल से मेल नहीं खाते), और जिन्होंने सभी धूल पर विजय प्राप्त कर ली है।

धूल के स्थान पर लोभ को मैल कहा जाता है, "धूल" लोभ का पर्यायवाची है, व्यक्ति अपनी आँखों से धूल को त्याग देता है, इसलिए विजेता वह व्यक्ति कहलाता है जिसने धूल को त्याग दिया। धूल के स्थान पर क्रोध को मैल कहा जाता है... धूल के स्थान पर अज्ञानता को मैल कहा जाता है...

“जो लोग बैठते हैं,” भगवान मगध के शिला मंदिर में बैठे हैं।

“जब मुनि पर्वत पर बैठे थे, जो दुखों के पार पहुँच चुके थे, तब उनके शिष्यों ने तीन ज्ञानों से युक्त, मृत्यु के नाश करने वालों की सेवा की।” [एसएन.8.10]

या, उस अवस्था में जहाँ सभी प्रयास बंद हो चुके हैं, भगवान ही वह हैं जो बैठे हैं, जो अवतरित हुए हैं, और जिन्होंने अभ्यास किया है... (उद्धृत) ...बिना अपने पुनर्जन्म के।

“[इस आदरणीय उदय की तरह]”: ... (छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

“जिसने अपना कर्तव्य पूर्ण कर लिया है और जिसे कोई कष्ट नहीं है”: बुद्ध और भगवान के लिए, सभी दायित्व, क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, सब समाप्त हो चुके हैं, जैसे जड़विहीन ताड़ का पेड़ अस्तित्वहीन हो जाता है, जो भविष्य में कभी जन्म नहीं लेगा। इसलिए, बुद्ध ही वह हैं जिन्होंने अपना कर्तव्य पूर्ण कर लिया है।

“जिन्होंने ज्ञान का प्रसार नहीं किया, जिन्होंने धारा को काट दिया, जिन्होंने यह जान लिया कि क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, उन्हें प्रचंड गर्मी नहीं मिलती।” [सं.3.11,720]

“कर्म करने वाला वह होना चाहिए जिसे कोई कष्ट न हो”: चार प्रकार के कष्ट होते हैं: इच्छा के कष्ट, अस्तित्व के कष्ट, दृष्टि के कष्ट और अज्ञान के कष्ट। बुद्ध और भगवान बुद्ध ने इन कष्टों का त्याग कर दिया है, इनकी जड़ ही काट दी है... इसलिए बुद्ध कष्ट रहित व्यक्ति हैं।

“सभी धर्मों में तट पर पहुँचे”: भगवान बुद्ध वे हैं जो धर्मों के दूसरे तट पर पहुँच चुके हैं; ज्ञान के आधार पर...; त्याग के आधार पर...; अभ्यास के आधार पर...; गवाही के आधार पर...; दूसरे पक्ष पर: वे जो सभी धर्मों के दूसरे पक्ष पर पहुँच चुके हैं; वे जो सभी दुखदायी ज्ञान के दूसरे पक्ष पर पहुँच चुके हैं; सभी दूषित त्यागों के दूसरे पक्ष पर; चार पवित्र मार्गों के अभ्यास के दूसरे पक्ष पर; विनाश की गवाही के दूसरे पक्ष पर; जो दूसरे तट पर पहुँचने तक प्रतीक्षा करते हैं, वे पवित्र उपदेशों में मुक्त पहुंचे हुए (पहुँचे हुए) हैं, सर्वोच्च (पारमिता) पहुँचे हुए; पवित्र अभयारण्य में मुक्त पहुंचे हुए और सर्वोच्च पहुँचे हुए; पवित्र ज्ञान में मुक्त पहुँचे हुए, सर्वोच्च, जो अंत तक पहुँच चुके हैं; पवित्र मुक्ति में मुक्त और सर्वोच्च, जो दूसरे पक्ष पर पहुँच चुके हैं, जो परम (लक्ष्य) तक पहुँच चुके हैं; जो अंतिम अवस्था तक पहुँच चुके हैं, जो अंत तक पहुंच चुके हैं; सीमा तक पहुँच चुके हैं; ...बचाव तक पहुँच गया; आश्रय तक पहुँच गया; शरणस्थल तक पहुँच गया; भय रहित; भयहीन, मृत्यु रहित; अमरता प्राप्त कर चुका; निर्वाण प्राप्त कर चुका; वह एक ऐसी अवस्था में उतर चुका है, जिसने अभ्यास किया है... (छोड़ा गया)।

“जरूरतमंद सवाल लेकर आते हैं”: मैं जरूरत पड़ने पर सवाल लेकर आता हूँ, मैं सवाल पूछने के लिए आता हूँ, और मैं सवाल सुनने के लिए आता हूँ। या, सवाल पूछने वाले को जरूरत होती है, सवाल पूछने वाले को, सुनने वाले को, जरूरतमंद आते हैं, संपर्क करते हैं, मिलते हैं। या, जब मेरे पास कोई सवाल होता है, तो आप जवाब दे सकते हैं और आपके पास जवाब देने का पर्याप्त कारण है। मैं पूछता हूँ, “कृपया इस बोझ को उठाएँ।”

“कृपया हमें पूर्ण ज्ञान की मुक्ति के बारे में बताइए”: पूर्ण ज्ञान की मुक्ति को अरहंत अवस्था की मुक्ति कहा जाता है। कृपया अरहंत अवस्था की मुक्ति के बारे में बताइए, कृपया समझाइए, कृपया सिखाइए...

“अज्ञान का नाश”: अज्ञान का नाश, तोड़ना, त्याग, रुकना, ठहरना, निर्जीवता, निर्वाण।

75 · [भगवान: “उदय!”] इच्छा और दुःख दोनों को दूर करते हुए, और उन्मत्तता को दूर करते हुए, पश्चाताप को रोकते हुए।

“इच्छा की इच्छा का नाश करो”: “इच्छा,” जो इच्छा की इच्छा है, इच्छा का लोभ है, आनंद है..., प्यास है..., प्रेम है, लालसा है, उत्साह है, मोह है, आवेग है, उग्रता है, बंधन है, आसक्ति है, इच्छा का आवरण है। “इच्छा की इच्छा का त्याग”: इच्छा की इच्छा का त्याग, शांति, समाप्ति, रुकना, निर्जीवता और निर्वाण।

“[भगवान बुद्ध: 'उदय!']”: ....

दुःखों के संदर्भ में: दुःख हृदय की अवांछित पीड़ाएँ, हृदय का दर्द, हृदय से संबंधित अवांछित पीड़ाएँ और हृदय से संबंधित दर्द हैं। दुःख के संदर्भ में: इच्छा और दुःख, उनका निवारण, शांति, विराम, निर्जीवता और निर्वाण।

“और उनींदापन का निवारण”: “उन्सीदापन” असहनीय, अनुपयुक्त कार्य, कलंकित, एकांतप्रिय, सुस्त, उदास, उदासीन और अज्ञानी अवस्था है। “निवारण” का अर्थ है त्याग, परित्याग, समाप्ति, शांति, विराम, निर्जीवता और निर्वाण।

“पछतावे से बचाव”: “पछतावा,” हाथों की निष्क्रियता (बुराई की बेचैनी) पछतावा है, पैरों की निष्क्रियता भी पछतावा है, हाथों और पैरों की निष्क्रियता भी पछतावा है, अनुचित को उचित समझा जाता है, उचित को अनुचित समझा जाता है, समय पर किया गया कार्य असमय समझा जाता है, निर्दोष को पापी समझा जाता है, पापी को निर्दोष समझा जाता है, पछतावा इसी प्रकार का होता है; पछतावे का मार्ग, पछतावे की अवस्था, हृदय का पश्चाताप, मन का भ्रम, यही पछतावा कहलाता है। इसके अतिरिक्त, पछतावा, हृदय का पश्चाताप और मन का भ्रम दो कारकों से उत्पन्न होते हैं: किया गया कार्य और न किया गया कार्य। किए गए कार्य और न किए गए कार्य किस प्रकार पछतावा, हृदय का पश्चाताप और मन का भ्रम उत्पन्न करते हैं? “मैंने शरीर के बुरे कर्म किए, परन्तु शरीर के अच्छे कर्म मैंने नहीं किए।” उसे पछतावा हुआ, हृदय में पश्चाताप हुआ और मन में भ्रम हुआ; “मैंने वाणी के बुरे कर्म किए, ...(अधूरा)।” “मैंने बुरे कर्म किए...” “मैंने हत्या की, और मैंने हत्या से परहेज नहीं किया।”... “जो नहीं दिया गया उसे लेना..., न देना...; व्यभिचार..., व्यभिचार से परहेज...; झूठ बोलना..., फूट डालने वाली बातें करना..., द्वेषपूर्ण भाषा बोलना..., अपशब्द बोलना..., लोभ..., द्वेष..., गलत विचार रखना...” उसे पछतावा, हृदय में पश्चाताप और इरादों में भ्रम था। पछतावा, हृदय में पश्चाताप और भ्रम उन कार्यों से उत्पन्न होते हैं जो किए गए हैं और जो नहीं किए गए हैं।

या फिर, “मैं पूर्णतः त्यागी नहीं हूँ,” उसे पछतावा है, हृदय में पश्चाताप है और मन में भ्रम है; “मैं जड़ों का रक्षक नहीं हूँ,”... (उद्धृत) “मैं वह व्यक्ति नहीं हूँ जो (उचित मात्रा में) खाना जानता हो,”... “मैं संयमी नहीं हूँ,”... “मेरे पास सजगता और सही ज्ञान नहीं है,”... “चार सजगता, चार सकारात्मक परिश्रम, चार दिव्य आधार, पाँच शक्तियाँ, पाँच ज्ञान के तत्व, आठ पवित्र मार्ग मैंने अभ्यास नहीं किए हैं,”... “दुःख का मुझे ज्ञान नहीं है, संचय का मुझे न्याय नहीं है, मार्ग का मुझे अभ्यास नहीं है और विनाश का मैं साक्षी नहीं हूँ।”

“पछतावे की रोकथाम”: पछतावे की बाधाओं की रोकथाम, त्याग, समाप्ति, रुकना, शांत होना, निर्जीवता, निर्वाण।

76 · शांति और ध्यान से शुद्ध होकर, धम्म के चिंतन से प्रेरित होकर, मैं कहता हूँ कि यही पूर्ण ज्ञान की मुक्ति है, अज्ञान का नाश है। [एएन.3.33]

“शांति में संतोष पूर्णतः शुद्ध है”: “शांति” का अर्थ है मन की शांत, अनासक्त, अवलोकनशील, स्थिर, समतापूर्ण, मन की शांत अवस्था, मन की तटस्थ अवस्था जो चौथे ध्यान में प्राप्त होती है। “सजगता” का अर्थ है चौथे ध्यान में प्राप्त शांत, मुक्त सजगता... (उद्धृत)। “शांति से सजगता की ओर शुद्धि”: चौथे ध्यान में प्राप्त शांति और सजगता शुद्ध, स्वच्छ, पूर्णतः शुद्ध, निर्मल, लचीली, कार्य करने योग्य, स्थिर, गतिहीन अवस्था तक पहुँचने वाली होती है।

“धम्म का पूर्व चिंतन”: धम्म का चिंतन सद्भावना कहलाता है। यह पूर्ण ज्ञान की मुक्ति का आरंभ, प्रथम और अग्रदूत है। या, धम्म का चिंतन सही दृष्टि कहलाता है, यह पूर्ण बौद्धिक मुक्ति का आरंभ, प्रथम और अग्रदूत है। या, धम्म का चिंतन विपश्यना कहलाता है, जो चारों लोकों का अग्रदूत है, यह पूर्ण बौद्धिक मुक्ति का आरंभ, प्रथम और अग्रदूत है।

“मैं संपूर्ण ज्ञान की मुक्ति की बात करता हूँ”: संपूर्ण ज्ञान की मुक्ति को अरहंत की मुक्ति कहा जाता है। मैं बोलता हूँ, मैं समझाता हूँ..., अरहंत की स्वतंत्रता।

“अज्ञान का नाश”: “अज्ञान,” दुख में अज्ञान... “नाश,” अज्ञान का नाश, त्याग, समाप्ति, रुकना, शांत होना, निर्जीवता, निर्वाण।

77 · (उदय:) संसार की गाँठ क्या है? इसका भ्रमण क्या है? इस प्रकार का त्याग किस प्रकार का निर्वाण कहलाता है? [एस.एन.1.64]

“संसार की गाँठ क्या है”: संसार में गाँठ, आसंजन, बंधन और अपवित्रता, किस प्रकार का बंधन, मजबूत बंधन, पूर्ण बंधन, संपूर्ण बंधन, आसक्ति, स्थिरीकरण, बाधाएँ।

“इसका भ्रमण क्या है”: इसका चलना, भटकना और वापस लौटना, दुनिया में किन चीजों के साथ होता है।

“इस प्रकार के त्याग को निर्वाण कहा जाता है”: इस प्रकार के त्याग, शांति, विराम, विश्राम को निर्वाण कहा जाता है, कहा जाता है, बताया जाता है, समझाया जाता है और कहा जाता है।

78 · (भगवान:) आनंद संसार की गाँठ है, और चिंतन उसका भ्रमण है, प्यास के त्याग से, इसे इस प्रकार निर्वाण कहा जाता है।

“आनंद संसार की गाँठ है”: आनंद को प्यास कहा जाता है, जो लालच है... इसे ही आनंद कहते हैं। समस्त सुख संसार की गाँठ, बंधन, जकड़न और अपवित्रता है, और संसार का बंधन है।

“चिंतन ही उसका भटकना है”: चिंतन के नौ प्रकार होते हैं: सुख, द्वेष, हानि, सगे-संबंधियों, भूमि, अमरता, दूसरों के प्रति सहानुभूति, सम्मान और प्रतिष्ठा, और तिरस्कार न सहने से संबंधित विचार। ये नौ प्रकार के चिंतन संसार का भटकना और भ्रमण करना कहलाते हैं।

“इच्छा के त्याग से ही निर्वाण कहलाता है”: “प्रेम की प्यास,” रूप की प्यास... (विलुप्त), धम्म की प्यास। “इच्छा के त्याग से ही निर्वाण कहलाता है”: प्यास के त्याग से, शांत होकर, रुककर और समाप्त होकर; इसे निर्वाण कहा जाता है, बताया जाता है, समझाया जाता है।

79 · (उदय:) सचेतन चलने वाले के लिए क्या? चेतना कैसे रुकती है? हम भगवान से पूछते हैं, हमें अपने शब्द सुनाइए।

“सचेत यात्री के बारे में क्या?”: सचेत और धर्मी व्यक्ति के लिए चलना, निवास करना, कार्य करना, आगे बढ़ना, रक्षा करना और जीवित रहना क्या है?

“चेतना रुक गई है”: चेतना बुझ जाती है, शांत हो जाती है, अस्तित्वहीन हो जाती है, समाप्त हो जाती है।

“हम भगवान से पूछने आए हैं”: हम आ गए हैं, हम पहुँच गए हैं, हम पूरी तरह से पहुँच गए हैं, हम आपसे जुड़ गए हैं, हमें बुद्ध से, भगवान से पूछना है, हमें प्रश्न करना है, पूछना है, पूछताछ करनी है, इसे स्पष्ट करना है।

“हमें आपके वचन सुनने दीजिए”: “आपके वचन,” आपके वचन, आपके मार्ग, आपकी शिक्षाएँ, आपकी व्याख्याएँ, आपकी नसीहतें। हमें सुनने, सीखने, याद रखने, समझने और विवेक करने दीजिए।

80 · (भगवान:) जो अपने भीतर और बाहर की अनुभूति में प्रसन्न नहीं हैं, सचेतन मार्ग पर चलने वाले के लिए, चेतना रुक जाती है।

“जो अपने भीतर और बाहर की भावनाओं में प्रसन्न नहीं है”: भीतर की भावना बोध के अधीन है और जो उसमें निवास करता है वह प्रसन्न नहीं होता, अवांछित होता है, उसे थामे नहीं रहता, उस पर कायम नहीं रहता, उससे आसक्ति नहीं रखता; वह उसे त्याग देता है, भगा देता है, उसका अंत कर देता है, उसे अस्तित्वहीन बना देता है; अपने बाहर की भावना...; भीतर और बाहर की भावना...; अपने भीतर की भावना धर्मों का समूह है, और जो उस अवलोकन के अनुसार जीवन जीता है...; अपने भीतर की भावना अपव्यय का धर्म है, और जो उस अवलोकन के अनुसार जीवन जीता है...; अपने बाहर की भावना एक समूह है... ...अपव्यय...; ...अपने भीतर और बाहर...; जो इन बारह प्रकार के अनुभवों के अनुसार जीवन जीता है वह प्रसन्न नहीं होता, उसका स्वागत नहीं करता, उसे थामे नहीं रहता, उस पर कायम नहीं रहता, उससे आसक्ति नहीं रखता; वह उसे त्याग देता है, भगा देता है, उसका अंत कर देता है, उसे अस्तित्वहीन बना देता है।

या फिर, जो व्यक्ति अनुभव को अनित्य मानता है, वह सुखी नहीं होता, अवांछित होता है, और भावनाओं, आनंद, आदि पर जोर नहीं देता; दुख, बीमारी, ट्यूमर, तीर, आदि उसे अस्तित्वहीन बना देते हैं; इन बयालीस प्रकार की भावनाओं में, जो व्यक्ति सुखी नहीं होता, स्वागत योग्य नहीं होता, वह उसे अस्तित्वहीन बना देता है।

“यह सचेत यात्री के लिए मामला है”: यह सचेत और धर्मी यात्री, निवासी, कर्ता, निरंतर चलने वाले, रक्षक और उत्तरजीवी के लिए मार्ग है।

“चेतना रुक गई है”: वह चेतना जो आशीर्वाद देती है, आशीर्वाद नहीं देती, वह चेतना जो गति नहीं करती [SN.12.51] नष्ट हो जाती है, शांत हो जाती है, अस्तित्वहीनता की ओर चली जाती है और समाप्त हो जाती है।

इन छंदों के अंत में... “परमेश्वर मेरे गुरु हैं, मैं उनका शिष्य हूँ।”
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> निद्देसा >> निद्देसा 2.ए.14

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

<<<< पिछला   अगला >>>>

14. पोसाला
81 · [आदरणीय पोसाला ने इस प्रकार कहा:] अतीत की ओर इशारा करने वाले को, अविचलित रहने वाले को, संदेह को दूर करने वाले को, धर्मों के दूसरे पक्ष तक पहुँचने वालों को, और जरूरतमंदों को प्रश्न लेकर आने वालों को।

“जिसने अतीत की ओर इशारा किया”: “जिसने...”, वह जगत-सम्मानित व्यक्ति है, जो एकाकी है, और बिना गुरु के वह है जिसने अनूठे धम्म के सत्य को जान लिया है, और वहाँ सर्वज्ञता की अवस्था को प्राप्त कर लिया है, वह है जो सामर्थ्य में स्वतंत्रता की अवस्था को प्राप्त करता है। “इशारा करना”, भगवान बुद्ध स्वयं और दूसरों के अतीत की ओर इशारा करते हैं, भविष्य की ओर भी इशारा करते हैं, और वर्तमान की ओर भी इशारा करते हैं।

भगवान बुद्ध ने अपने अतीत की ओर कैसे इशारा किया? भगवान बुद्ध ने अपने अतीत की ओर इशारा करते हुए संपूर्ण जीवन, दूसरा जीवन, तीसरा जीवन, चौथा जीवन, पाँचवाँ जीवन, दसवाँ जीवन, बीसवाँ जीवन, तीसवाँ जीवन, चालीसवाँ जीवन, पचास जन्म, सौ जन्म, एक हज़ार जन्म, एक लाख जन्म, अनेक विपत्तियाँ, अनेक समाप्त हुई विपत्तियाँ आदि की ओर इशारा किया और कहा, “वह कौन है? ऐसा नाम, ऐसा उपनाम, ऐसा चेहरा, ऐसा भोजन, ऐसा सुख-दुख, ऐसी आयु, जो यहाँ मरा और वहाँ पुनर्जन्म लिया, और उसका नाम क्या है, ..., जो वहाँ मरा और यहाँ जन्मा।” इस प्रकार उन्होंने बताया कि अनेक पूर्व जन्मों में ऐसे ही व्यवहार और परिस्थितियाँ थीं।

भगवान बुद्ध दूसरों के अतीत की ओर कैसे इशारा करते हैं? भगवान बुद्ध ने दूसरों के अतीत की ओर इशारा करते हुए उनके पूरे जीवन और दूसरे जीवन की ओर भी इशारा किया... (अधूरा अंश)। इस प्रकार उन्होंने बताया कि अनेक पूर्व जन्मों में ऐसे ही व्यवहार और परिस्थितियाँ थीं।

जब पाँच सौ प्रार्थना सूत्रों (जातकों) के बारे में बात करते हैं, तो भगवान स्वयं और दूसरों के अतीत की ओर इशारा करते हैं; जब महान कारणों सूत्र [डीएन.14] के बारे में बात करते हैं, ...; जब महान वैभव सूत्र [डीएन.17], महान प्रबंधक सूत्र [डीएन.19], मखादेव [एमएन.83] के बारे में बात करते हैं, तो भगवान स्वयं और दूसरों के अतीत की ओर इशारा करते हैं।

भगवान बुद्ध ने कहा [डीएन.29]: “चुंड, पिछले जन्मों के विषय में तथागत को स्मृति से ज्ञान प्राप्त है, वे जितना चाहें उतना याद कर सकते हैं। चुंड, भविष्य के विषय में... (छोड़ा गया)। चुंड, वर्तमान जीवन के विषय में तथागत को ज्ञान प्राप्त है: 'यह मेरा अंतिम जन्म है, और अब कोई पुनर्जन्म नहीं है।'”

मूल ज्ञान तथागत की शक्ति है; समस्त जीवों की अंतर्निहित प्रवृत्ति और विपत्तियों की अंतर्निहित प्रवृत्ति तथागत की शक्ति है; दोनों देवताओं का ज्ञान...; महान करुणा का ज्ञान...; सर्वज्ञानी का ज्ञान...; अवरोध रहित ज्ञान...; जिसमें कोई आसक्ति नहीं, कोई विकर्षण नहीं, और अवरोध रहित ज्ञान तथागत की शक्ति है। इस प्रकार, भगवान बुद्ध स्वयं और दूसरों के भूतकाल, भविष्यकाल और वर्तमान को प्रकट करते हैं, उन्होंने समझाया, सिखाया, ...।

"[इस आदरणीय पोसाला की तरह]": ... (छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"जो विचलित नहीं होता, जो संशय को काट डालता है": "विचलित होना प्यास कहलाता है, अर्थात् लोभ, ...(अंशित, पिछले भाग देखें)। बुद्ध, भगवान के लिए, वह विचलित होना, वह प्यास, जड़ से ही काट दी गई है...। इसलिए, बुद्ध अविचलित हैं। विचलित अवस्था ...(अंशित, पिछले भाग देखें) है।" "संदेह करने वाला," संशय कहलाता है: ...(अंशित, पिछले भाग देखें)। बुद्ध और भगवान के लिए, वह संशय काट डाला गया है, अलग कर दिया गया है और नष्ट कर दिया गया है, ..., ज्ञान की अग्नि से जला दिया गया है। इसलिए, बुद्ध संशय को काटने वाले हैं।

"जो लोग दूसरी तरफ पहुँच चुके हैं": ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"जरूरतमंद लोग एक सवाल लेकर आते हैं": ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

82 · वह व्यक्ति जिसके लिए रूप विलीन हो गया है, वह व्यक्ति जिसने शरीर का त्याग कर दिया है, वह व्यक्ति जो अपने भीतर और बाहर "शून्यता" का द्रष्टा है, शाक्यमुनि! मैं इस ज्ञान के बारे में पूछता हूँ, ऐसे लोगों का मार्गदर्शन कैसे किया जाना चाहिए?

"जिनका रूप लुप्त हो गया है": रूप क्या है? प्रवेश करने वालों, मृत आत्माओं या जीवन के क्षेत्र में रहने वालों की विचार, अनुभूति और चेतना की अवस्था ही चेतना की अवस्था है। "जो लुप्त हो गए हैं": चार निराकार उपलब्धियाँ हैं: जो लुप्त हो गए हैं, जो चले गए हैं, जो इस क्षेत्र से गुजर चुके हैं, जो पार हो चुके हैं और जो विजय प्राप्त कर चुके हैं।

"जिस व्यक्ति ने सभी शरीरों का त्याग कर दिया है": उसने अपने सभी पुनर्जन्म के शरीरों का त्याग कर दिया है, जिन्होंने उस भाग को पार कर लिया है, और उसका शरीर उन लोगों द्वारा दबा दिया गया है और त्याग दिया गया है जिन्होंने त्याग कर दिया है।

"अपने भीतर और बाहर, 'शून्यता' का द्रष्टा": "शून्यता" का अर्थ है शून्यता में निवास करना। "शून्यता" शून्यता में क्यों निवास करती है? जो भी (सचेत रूप से) चेतना की असीमता में प्रवेश करता है और उसमें निवास करता है, और फिर वहाँ से बाहर आने पर (देखता है कि) वह चेतना अस्तित्वहीन हो जाती है, लुप्त हो जाती है और मिट जाती है। वह "शून्यता" देखता है, और इसी कारण "शून्यता" में निवास करता है।

"शाक्यमुनि! मैं ज्ञान की प्रार्थना करता हूँ": "शाक्यमुनि," .... "मैं ज्ञान की प्रार्थना करता हूँ," मैं आपके ज्ञान की प्रार्थना करता हूँ, मैं आपके ज्ञान की प्रार्थना करता हूँ, मैं आपके सर्वदर्शी ज्ञान की प्रार्थना करता हूँ, मैं सर्वज्ञ के ज्ञान की प्रार्थना करता हूँ: यह कैसा है, क्या स्थापित है, क्या विधि है, और किस प्रकार का ज्ञान वांछनीय है?"

"ऐसे व्यक्ति का मार्गदर्शन कैसे किया जाए?": उसका मार्गदर्शन कैसे किया जाए, उसे कैसे संयमित किया जाए, कैसे सांत्वना दी जाए, कैसे बताया जाए, कैसे विचार किया जाए, कैसे देखा जाए और कैसे स्पष्ट किया जाए? कैसे? उस उच्चतर ज्ञान को कैसे जागृत किया जाए? "उस प्रकार का व्यक्ति," उस प्रकार का व्यक्ति, वह स्थिर व्यक्ति, वह समान व्यक्ति, जिसने शून्यता के क्षेत्र को प्राप्त कर लिया है।

83 · [भगवान: "पोसाला!"] चेतना की सभी अवस्थाओं को जानते हुए, तथागत साक्षी हैं, यह जानते हुए कि जीवित रहने वाला ही विजेता है, (या) जो फंसा हुआ है।

"चेतना की सभी अवस्थाओं का ज्ञान": भगवान बुद्ध अपनी सृष्टि के कारण चारों चेतनाओं को जानते हैं, और अवतार के कारण सात चेतनाओं को जानते हैं। यह कैसे संभव है कि भगवान बुद्ध अपनी सृष्टि के कारण चारों चेतनाओं को जानते हैं? इस पर भगवान बुद्ध कहते हैं: "भिक्षुओं! जब चेतना रूप में लीन रहती है, तो वह रूप में ही रहती है, रूप पर टिकी रहती है, रूप द्वारा ही समर्थित होती है, और उसमें आनंद की थोड़ी सी मात्रा होने पर वह बढ़ती और फैलती है। भिक्षुओं! जब चेतना भावों में लीन रहती है..., ...बोध में..." [SN.22.53]

भगवान बुद्ध अवतार के कारण सात चेतनाओं के ज्ञाता कैसे हैं? यह बात भगवान बुद्ध ने कही:

"भिक्षुओं! सभी प्रकार के शरीरों और सभी प्रकार के विचारों वाले प्राणी, जैसे कि मनुष्य, कुछ स्वर्ग और कुछ लोग जो इस लोक में अवतरित हुए हैं, यही प्रथम चेतना है।"

भिक्षुओं! एक ही मन वाले अनेक प्रकार के प्राणी हैं, जैसे ब्रह्मा जिन्होंने प्रथम रूप में पुनर्जन्म लिया, यह द्वितीय चेतना है।

भिक्षुओं! एक शरीर और सभी प्रकार के विचारों वाले प्राणी, जैसे कि प्रकाश और ध्वनि का स्वर्ग, यही तीसरी चेतना है।

भिक्षुओं! वे प्राणी जिनका एक ही शरीर और एक ही मन होता है, जैसे कि शुद्ध स्वर्ग का आकाश, यही चौथी चेतना है।

भिक्षुओं! सभी रूपों के साथ चिंतन की उत्कृष्टता है, विपरीत (विरोधी कारकों) के साथ चिंतन का अंत है, और बिना चिंतन के सभी प्रकार के चिंतन (ज्ञान) हैं: 'शून्य असीम है,' असीम शून्यता में रहने वाले प्राणियों के लिए, यही पाँचवीं चेतना है।

भिक्षुओं! समस्त असीम शून्यता (ज्ञान) को पार करने के बाद: 'ज्ञान (चेतना) असीम है,' चेतना की असीमता तक पहुँचने वाले सजीव प्राणी, यही छठी चेतना है।

भिक्षुओं! चेतना (ज्ञान) की समस्त असीमता को पार करने के बाद: 'कुछ नहीं है,' जो सजीव प्राणी शून्यता की अवस्था में पहुँच जाते हैं, वे सातवीं चेतना में होते हैं। इस प्रकार, भगवान बुद्ध पुनर्जन्म के कारण सात चेतनाओं को जानते हैं।

"[भगवान: 'पोसाला!']": ....

"तथागत वह ज्ञाता है जो सिद्ध करता है": "सिद्धा करने वाला ज्ञाता," तथागत वह है जो ज्ञान को सिद्ध करता है, वह निश्चित ज्ञाता है, वह भेदक है। भगवान बुद्ध [डीएन.29] कहते हैं: "चुंड, यदि अतीत के बारे में कोई प्रश्न असत्य, अवास्तविक या लाभहीन हो, तो तथागत उसका उत्तर नहीं देते। चुंड, यदि अतीत के बारे में कोई प्रश्न सत्य, ईमानदार और लाभहीन हो, तो तथागत उसका उत्तर नहीं देते। चुंड, यदि अतीत के बारे में कोई प्रश्न सत्य, ईमानदार और लाभप्रद हो, तो तथागत उत्तर देने का सही समय जानते हैं। चुंड, यदि भविष्य के बारे में कोई प्रश्न हो... चुंड, यदि वर्तमान के बारे में कोई प्रश्न हो... चुंड, इसी प्रकार, अतीत, भविष्य और वर्तमान धर्म में तथागत सही समय पर उत्तर देते हैं, तथ्य का कथन करते हैं, लाभ का कथन करते हैं, धर्म के कथन के समान, इसलिए उन्हें 'तथागत' कहा जाता है।"

चुंडा, जिसमें स्वर्ग, राक्षस और ब्रह्मा सहित संसार शामिल है; समण, ब्राह्मण, स्वर्ग और मनुष्य सहित सभी पीढ़ियों में, वह जो कुछ भी देखता है, सुनता है, महसूस करता है, जानता है, प्राप्त करता है, पूछता है और जिसके लिए वह इरादे रखता है, वह सब तथागत द्वारा प्रकाशित है, इसलिए इसे 'तथागत' कहा जाता है; चुंडा, जब भी वह ज्ञान की रात में बोलता है, बात करता है और प्रदर्शन करता है, तो वह कहता है, बात करता है और दिखाता है कि सब कुछ वैसा ही है जैसा वास्तव में है, इसलिए इसे 'तथागत' कहा जाता है; चुंडा, तथागत वह है जो कहता है वही करता है; जो कहता है वैसा ही करता है, और जो इस तरह करता है; जो कहता है वैसा ही करता है, उसे 'तथागत' कहा जाता है; चुंडा, जिसमें स्वर्ग, राक्षस और ब्रह्मा सहित संसार शामिल है; समण, ब्राह्मण, स्वर्ग और मनुष्य सहित सभी पीढ़ियों में तथागत विजेता, अजेय, सर्वदर्शी और स्वतंत्र हैं, इसीलिए उन्हें 'तथागत' कहा जाता है।

"जीवित बचे व्यक्ति को जानो": भगवान बुद्ध जानते हैं कि जीवित बचा व्यक्ति कर्मों के फलस्वरूप यहाँ है: "शरीर के विघटन से यह व्यक्ति मृत्यु के बाद दुख, बुराई, निम्न लोक और नरक के लोक में चला गया है।" और जो यह जानता है कि वह यहाँ विद्यमान है: "शरीर के विघटन से यह व्यक्ति मृत्यु के बाद पशुलोक में चला गया है।" भगवान बुद्ध जानते हैं कि यह कर्मों के फलस्वरूप यहाँ है: "शरीर के विघटन के बाद यह व्यक्ति प्रेतों के लोक में चला गया है।" भगवान बुद्ध जानते हैं कि वह अपने कर्मों के फलस्वरूप यहाँ है: "शरीर के विघटन से यह व्यक्ति मृत्यु के बाद विद्यमान हो गया है।" भगवान बुद्ध जानते हैं कि वह अपने कर्मों के फलस्वरूप यहाँ है: "शरीर के विघटन के साथ, मनुष्य मृत्यु के बाद पुण्यलोक और स्वर्ग में पुनर्जन्म लेते हैं।"

यह बात भगवान बुद्ध ने कही थी [एम.एन.12]:

"अत: सारिपुत्त! यहाँ, हृदय को भली-भांति जानने के बाद, मैं किसी को जानता हूँ: 'जो व्यक्ति इस मार्ग पर चलता है और इस प्रकार व्यवहार करता है, वह शरीर के विघटन में प्रवेश कर चुका है, और मृत्यु के बाद दुख, बुराई, निम्न लोकों और नरक के मार्ग में पुनर्जन्म लेगा।'

फिर से, सारिपुत्त! ...मृत्यु के बाद पशु जगत में। फिर से, सारिपुत्त! ...मृत्यु के बाद भूखे प्रेतों के लोक में। फिर से, सारिपुत्त! ...मृत्यु के बाद मनुष्य जगत में। फिर से, सारिपुत्त! ...मृत्यु के बाद पुण्य और स्वर्ग के मार्ग पर।

फिर से, सारिपुत्त! यहाँ, हृदय को इतनी अच्छी तरह से जानने के बाद, मैं किसी को जानता हूँ: 'जो व्यक्ति इस मार्ग पर चलता है और इस प्रकार व्यवहार करता है, वह सभी कष्टों के निवारण में प्रवेश कर चुका है, और गवाही देने के लिए ज्ञान को देखकर जीवन में प्रवेश करेगा, फिर चिंता मुक्त मन में, ज्ञान की राहत के साथ जीवन व्यतीत करेगा।'

“विजेता, (या) वह जो फंसा हुआ है”: वह “विजेता” जिसका कोई ठिकाना नहीं है। वह “विजेता”, जो मुक्ति के द्वारा समाधान पर विजय प्राप्त करता है, जो वहाँ समाधान पर विजय प्राप्त करता है, ठीक वैसा ही। या फिर, भगवान जानते हैं कि: यह वह व्यक्ति है जो रूप से, ध्वनि से, गंध से, स्वाद से, स्पर्श से, परिवार से, समूह से, निवास से, लाभ से, प्रतिष्ठा से, प्रशंसा से, आनंद से, वस्त्रों से, सामूहिक भोजन से, आश्रय से, रोगियों की ज़रूरतों और चिकित्सा आवश्यकताओं से, व्याख्याकार से, विजयी व्याख्याकार से, विजयी शासक से, अभिधम्म से, अरहंत से, भोजन से, गोबर से, गोबर साफ करने से, तीन वस्त्र धारण करने से, भोजन की भीख मांगते हुए समस्याओं को दूर करने वाले, भोजन करने के बाद कष्ट न सहने वाले, अक्सर बैठने वाले और न सोने वाले, कहीं भी रहने वाले, समस्याओं को दूर करने वाले, प्रथम ध्यान से, द्वितीय ध्यान से, और तृतीय ध्यान से समस्याओं को दूर करने वाले... ज्ञान..., जो चौथे ज्ञान में हैं वे समाधान के विजेता हैं, जो असीम शून्य (पांचवां/प्रथम अमूर्त) में समाधान के लिए निवास करते हैं, ...चेतना की असीमता में, ...शून्यता में, और जो समाधान के लिए निवास नहीं करते (शून्यता में; न तो बोध और न ही अबोध; आठवां)।

“अटका हुआ” का अर्थ है वह व्यक्ति जिसका कोई स्थान नहीं है, जो अटका हुआ है, जो कर्मों में फंसा हुआ है, जिसे प्रतिफल मिला है, जो गंभीर है, और जो पुनर्जन्म लेता है। या, भगवान जानते हैं: यह व्यक्ति रूप में फंसा हुआ है...।

84. शून्यता की उत्पत्ति को जानने के बाद, इस प्रकार आनंद की गांठ होती है; इस प्रकार जानने के बाद, वह वहाँ अंतर्दृष्टि से स्पष्ट रूप से देखता है; यही उसका सच्चा ज्ञान है, पूर्ण ब्राह्मण का ज्ञान।

“शून्यता की उत्पत्ति को जानने के बाद: शून्यता की उत्पत्ति को शून्यता की ओर ले जाने वाली सृष्टि कहा जाता है। यह जानने के बाद कि शून्यता की ओर ले जाने वाली सृष्टि “कुछ भी उत्पन्न नहीं होता”, यह जानने के बाद कि यह “आसंजन” है, यह जानने के बाद कि यह “बंधन” है, यह जानने के बाद कि यह एक “बाधा” है, यह जानने के बाद कि यह एक “बाधा” है, यह समझने के बाद, मापने के बाद, न्याय करने के बाद, अलग करने के बाद, स्पष्ट करने के बाद।”

“इस प्रकार, आनंदमय गाँठ”: आनंदमय गाँठ को निराकार लोभ कहा जाता है। कर्म निराकार लोभ से जुड़ा, स्थिर और बाधित होता है। निराकार लोभ को “आनंदमय गाँठ” जानने के बाद, इसे “आसंजन” जानने के बाद... इस प्रकार...

“इस प्रकार सिद्ध करने के बाद”: इस प्रकार सिद्ध करने के बाद, समझने के बाद, तौलने के बाद, निर्णय करने के बाद, अलग करने के बाद, स्पष्ट करने के बाद।

“बाद में, वहाँ अंतर्दृष्टि से देखते हुए”: “वहाँ,” निःसंपत्ति के स्थान में प्रवेश करो, और फिर वहाँ से बाहर निकलने के बाद, मन में उत्पन्न होने वाली अनित्यता और मानसिक अवस्थाओं की अंतर्दृष्टि से; जैसे पीड़ा की अंतर्दृष्टि से; बीमारी की अंतर्दृष्टि से... (अंशित)। अंतर्दृष्टि से वह निकलता है, देखता है, अवलोकन करता है, मनन करता है और देखता है।

“यही उनका सच्चा ज्ञान है”: यही उनका सच्चा, तथ्यात्मक, सही और अपरिवर्तनीय ज्ञान है।

“पूर्ण ब्राह्मण”: “ब्राह्मण,” सात धर्मों से रहित अवस्था ही ब्राह्मण है... (विलुप्त, पिछले खंड देखें), जो आश्रित नहीं हैं, उन्हें ब्राह्मण कहा जा सकता है। “पूर्ण ब्राह्मण”: सात प्रकार के विद्वानों सहित सात सामान्य लोग एक साथ रहते हैं, निवास करते हैं और ठहरते हैं; जिनके पास उचित योग्यता है, जो उस मुकाम तक पहुँच चुके हैं जहाँ पहुँचना चाहिए, जो उस बात की गवाही देते हैं जिसकी गवाही देनी चाहिए; अरहंत ने वह सब कुछ पूरा कर लिया है जो करना चाहिए, बोझ से मुक्त हो गया है, अपने हितों की पूर्ति कर ली है, अस्तित्व के बंधनों को मिटा दिया है, और परम ज्ञान से मुक्त हो गया है। वह एक ऐसी अवस्था में उतर चुका है, जिसने अभ्यास किया है... (विलुप्त), ...जीवन और मृत्यु, बिना पुनर्जन्म के।

इन छंदों के अंत में... “परमेश्वर मेरे गुरु हैं, मैं उनका शिष्य हूँ।”
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> निद्देसा >> निद्देसा 2.ए.15

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

<<<< पिछला अगला >>>>

15. मोगराज
85 · [आदरणीय मोगराज ने इस प्रकार कहा:] मैंने शाक्यमुनि से दो बार पूछा, लेकिन सर्वदर्शी ने मुझे उत्तर नहीं दिया, मैंने सुना है कि तीसरी बार, दिव्य ऋषि उत्तर देंगे।

“मैंने शाक्यमुनि से दो बार पूछा”: ब्राह्मण ने बुद्ध और भगवान बुद्ध से दो बार पूछा, लेकिन भगवान बुद्ध ने उनके प्रश्न का उत्तर नहीं दिया (यह सोचते हुए) “बीच में इस ब्राह्मण की जड़ें स्पष्ट हो जाएँगी।” “शाक्यमुनि” ...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)। “मैंने शाक्यमुनि से दो बार पूछा”: मैंने दो बार पूछताछ की, विनती की, निवेदन किया और शाक्यमुनि से इसे स्पष्ट करने के लिए कहा।

“[इस आदरणीय मोगराज की तरह]”: ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

“सर्वदर्शी ने मुझे उत्तर नहीं दिया”: “जिसकी आंखें हैं उसने मुझे उत्तर नहीं दिया,” न ही उत्तर दिया, न बताया, न समझाया, न सिखाया, न सूचित किया, न उजागर किया, न विश्लेषण किया और न ही स्पष्ट किया। पांच प्रकार की आंखें हैं: प्रत्यक्ष आंखें, दिव्य आंखें, ज्ञानी आंखें, बुद्ध की आंखें और सर्वव्यापी आंखें।

भगवान बुद्ध नग्न आंखों को "आंखें" क्यों मानते हैं? भगवान बुद्ध की आंखों में पांच रंग हैं: नीला, पीला, लाल, काला और सफेद। उनकी आंखों के बाल नीले, अत्यंत नीले, उत्तम, सुंदर और सन के समान हैं, और अन्य बाल पीले, अत्यंत पीले, सुनहरे और उत्तम, सुंदर हैं, जो बयूर के फूल के समान हैं। भगवान बुद्ध की दोनों आंखें लाल, अत्यंत लाल, सीधी और सुंदर हैं, जो बारिश के बाद जमीन से निकलने वाले कीड़ों के समान लाल हैं, और बीच वाली आंख काली, अत्यंत काली, कोमल, चिकनी, सीधी और नम है। बाहरी आंखें सफेद, अत्यंत सफेद, सफेद, पीली-सफेद, मनभावन और सुंदर हैं, जो ओसाधी नक्षत्र के समान हैं। भगवान बुद्ध की नग्न आंखों से, जो उन्हें पिछले अच्छे कर्मों के फलस्वरूप प्राप्त हुई हैं, वे दिन और रात में सब कुछ देखते हैं, जब अंधकार की चार शाखाएं होती हैं: सूर्यास्त, अमावस्या की रात, घने जंगल का अंधकार और घने बादलों का अंधकार। इसी प्रकार, जब चारों शाखाओं का अंधकार छाया रहता है, तब भी वह दिन-रात सब कुछ देख पाता है। उसके दर्शन में न तो कोई दीवार, न पर्दा, न बाड़, न पहाड़, न झाड़ियाँ, न वनक्षेत्र बाधा बनते हैं। यदि तिल पर निशान लगा हो और उसे तिलों से भरी गाड़ी में रख दिया जाए, तो वह उस तिल को चुन सकता है। इस प्रकार, भगवान बुद्ध की स्वाभाविक नंगी आँख शुद्ध है, और भगवान बुद्ध नंगी आँख को आँख के समान मानते हैं।

भगवान बुद्ध दिव्य दृष्टि को "आँखों वाला" क्यों मानते हैं? शुद्ध और दिव्य दृष्टि से, भगवान बुद्ध देखते हैं कि जब सभी प्राणी मरते हैं और चले जाते हैं, तो वे हीन, विजयी, सुंदर, कुरूप, भाग्यशाली और दुर्भाग्यशाली होते हैं, यह जानते हुए कि सभी प्राणी अपने कर्मों के अनुसार चलते हैं: "ये प्राणी और राजा शरीर के बुरे कर्म, आचरण के बुरे कर्म, इरादों के बुरे कर्म करते हैं, संतों की निंदा करते हैं, गलत विचार रखते हैं और गलत विचार रखने का कर्म करते हैं, वे मृत्यु के बाद दुख के लोक, नरक में चले जाते हैं; या वे प्राणी, जो शरीर के अच्छे कर्म, वाणी के अच्छे कर्म, इरादों के अच्छे कर्म करते हैं, संतों की निंदा नहीं करते हैं, और कर्म के सही दृष्टिकोण का पालन करते हैं, वे अपने शरीर को नष्ट करके मृत्यु के बाद अच्छाई के लोक और स्वर्ग में चले जाते हैं।" इस प्रकार, शुद्ध और दिव्य दृष्टि से, उन्होंने देखा कि जब सभी प्राणी मरते और चले जाते हैं, तो हीनता, विजय, सौंदर्य, कुरूपता, सौभाग्य और दुर्भाग्य की अवस्थाओं में, वे कर्म के अनुसार सभी प्राणियों के प्रवाह को जानते हैं। जब वे चाहें, तो भगवान एक लोक, दो लोक, तीन लोक, चार लोक, पांच लोक और दस लोक देख सकते हैं। साथ ही, बीस लोक, तीस लोक, चालीस, पचास, सौ, ये हजार छोटे लोक, दो हजार मध्य लोक, और ये तीन लाख बड़े लोक [एएन.3.81] भी देख सकते हैं। यदि वे चाहें, तो वे इसे देख सकते हैं। इस प्रकार, भगवान की दिव्य आँखें पूर्णतः शुद्ध हैं, और भगवान अपनी दिव्य आँखों को आँखों के समान मानते हैं।

भगवान बुद्ध ज्ञानी आँखों को आँखों वाला क्यों मानते हैं? भगवान बुद्ध महान बुद्धि, व्यापक बुद्धि, तीव्र बुद्धि, तीक्ष्ण बुद्धि, भेदक बुद्धि, सलाह देने वाली बुद्धि हैं: जो कुशल हैं, जिन्होंने बुद्धि का विकास किया है, जिन्होंने निर्बाध सिद्ध किया है, जिन्होंने चार निर्भीकों को प्राप्त किया है, जो दस शक्तियों से युक्त हैं, जो बैल के समान हैं, जो सिंह के समान हैं, जो अपार धनवान हो सकते हैं, जिनके पास असीम बुद्धि है, जिनके पास असीम चमक है, जिनके पास असीम प्रसिद्धि है, जो धनी हैं, जो मार्गदर्शक हैं, जो मध्यस्थ हैं, जो सांत्वना देने वाले हैं, जो सूचना देने वाले हैं, जो दृश्य बनाते हैं, जो स्पष्ट करते हैं, भगवान बुद्ध वास्तव में अजन्मे मार्ग के संस्थापक हैं, अजन्मे मार्ग के निर्माता हैं, जो अनायास उपदेशक हैं; जो मार्ग को जानता है, मार्ग का ज्ञाता है, और उसके शिष्य अब मार्ग के साथ रहते हैं, और भविष्य में भी उसके अनुयायी होंगे।

भगवान बुद्ध वास्तव में सर्वज्ञ और द्रष्टा हैं, जो सब कुछ जानते और देखते हैं; वे जन्म से ही नेत्रों से युक्त, ज्ञान से युक्त, धर्म से युक्त और ब्रह्म से युक्त हैं; वे धर्म के व्याख्याकार और संवर्धक, अमर दाता, धर्म के राजा, तथागत हैं; ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे भगवान बुद्ध ने न जाना हो, न देखा हो, न प्रमाणित किया हो, न ही ज्ञान से स्पर्श किया हो; भूतकाल, भविष्यकाल और वर्तमान काल ज्ञान के क्षेत्र में सभी कर्मों के साथ बुद्ध और भगवान बुद्ध के पास आए; कोई भी व्यक्ति, चाहे उसका नाम कुछ भी हो, जिसे तर्क द्वारा निर्देशित किया जाना चाहिए, वह जान सकता है: अपना धर्म, दूसरों का धर्म या दोनों, या वर्तमान जीवन का धर्म या अगले जीवन का धर्म या दोनों, चाहे वह गहरा हो या छिपा हुआ, या जिसे निष्कर्ष निकालने के लिए निर्देशित किया जाना चाहिए, या जिसे निर्धारित करने के लिए निर्देशित किया गया है, या कोई दोष या अशुद्धि नहीं है, या स्पष्ट या सर्वोच्च हित है, सब कुछ बुद्ध के ज्ञान में समाहित है।

सभी शारीरिक कर्म बुद्ध और भगवान के ज्ञान में स्थानांतरित हो जाते हैं; सभी भाषाई कर्म...; सभी मानसिक कर्म...; बुद्ध और भगवान का भूतकाल का ज्ञान अवरोध रहित है; भविष्य...; वर्तमान...; जो कुछ भी अनुमान लगाने के लिए निर्देशित किया जाना चाहिए वह ज्ञान की पहुँच है; सभी ज्ञान अनुमान लगाने के लिए निर्देशित किया जाता है, और जो कुछ भी अनुमान लगाने के लिए निर्देशित किया जाना चाहिए वह परम ज्ञान है; परम ज्ञान वह है जो अनुमान लगाने के लिए निर्देशित किया जाता है, और अनुमान लगाने के लिए निर्देशित किए गए ज्ञान से परे कोई ज्ञान नहीं है; निर्देशित और अनुमानित ज्ञान से परे जाने का कोई मार्ग नहीं है। ये धर्म परस्पर सीमित रहते हैं, जैसे दो बक्से, जिनके ढक्कन पूरी तरह से एक दूसरे के संपर्क में हैं; निचला ढक्कन ऊपरी ढक्कन के ऊपर नहीं जाता है, और ऊपरी ढक्कन निचले ढक्कन के ऊपर नहीं जाता है; एक दूसरे से सीमित। (इसी प्रकार,) जो कुछ भी निर्देशित किया जाना चाहिए... (छोड़ा गया); ये धर्म परस्पर सीमित रहते हैं।

बुद्ध और भगवान बुद्ध का ज्ञान समस्त धम्म में व्याप्त है, समस्त धम्म बुद्ध ही हैं, भगवान बुद्ध का ध्यान, आशा, इरादा, मन, सभी जीवों में समाहित है। बुद्ध और भगवान बुद्ध का ज्ञान समस्त जीवों में व्याप्त है। भगवान बुद्ध समस्त जीवों के इरादों को जानते हैं, संकटों की संभावित प्रवृत्ति, व्यवहार और समाधान, कम धूल वाले और अधिक धूल वाले जीवों, जड़ से जुड़े और सुस्त जड़ वाले जीवों, अच्छे कर्मों और बुरे कर्मों, और जीवों की शिक्षायोग्यता और अशिक्षायोग्यता, सक्षम और अक्षम सभी जीवों, स्वर्गलोक, राक्षस और ब्राह्मणों सहित, सभी बुद्ध के ज्ञान में समाहित हैं।

यदि कोई मछली, कछुआ और यहाँ तक कि बड़ी मछलियाँ निगलने वाली नावें भी समुद्र में घूमती हैं, तो उसी प्रकार स्वर्गलोक, राक्षसलोक और ब्राह्मणलोक सहित सभी पीढ़ियाँ, जिनमें समन, ब्राह्मण, स्वर्ग और मनुष्य सभी शामिल हैं, बुद्ध ज्ञान में घूमती रहती हैं, जैसे कोई पक्षी और यहाँ तक

कि स्वर्ण-पंख वाले पक्षी भी अंतरिक्ष में घूमते हैं। उसी प्रकार, सारिपुत्त के समान ज्ञान रखने वाले भी बुद्ध ज्ञान के क्षेत्र में घूमते रहते हैं। बुद्ध का ज्ञान सर्वव्यापी है और स्वर्ग और मनुष्य से परे है।

वे बुद्धिमान क्षुद्र, बुद्धिमान ब्राह्मण, बुद्धिमान गृहस्थ, बुद्धिमान समन, चतुर विद्रोही, और बुराई पर बुद्धिमानी से कार्य करने वाले तीक्ष्ण बुद्धि वाले लोग, वे बाद में सामने आने वाली समस्याओं को तैयार करते हैं; उन्होंने तथागत के दर्शन किए और गुप्त और छिपे हुए विषय के बारे में पूछा। भगवान बुद्ध ने उन प्रश्नों पर विचार-विमर्श किया और तर्क सहित उत्तर दिए, और उन्होंने आस-पास के अन्य लोगों को त्यागकर भगवान बुद्ध के शिष्य बन गए। उस समय, भगवान बुद्ध वहाँ ज्ञान से परिपूर्ण होकर विराजमान थे। इस प्रकार, भगवान बुद्ध अंतर्दृष्टि को आँख के समान मानते हैं।

बुद्ध की आँखें "वही हैं जो आँखों के समान हैं" ऐसा कैसे संभव है? जब भगवान बुद्ध की आँखों से संसार का अवलोकन करते हैं, तो वे कम धूल वाले और अधिक धूल वाले लोगों को देखते हैं; जड़ वाले और कुंद जड़ वाले लोगों को; अच्छे कर्मों वाले और बुरे कर्मों वाले लोगों को; सिखाने में आसान और सिखाने में कठिन लोगों को; अन्य लोकों के विद्यमान पापों और भयों को, और उन लोगों को जो अन्य लोकों में पाप और भय को देखे बिना जीवन व्यतीत करते हैं। जैसे हरे कमल के तालाब, लाल कमल के तालाब और सफेद कमल के तालाब में, कुछ हरे कमल, लाल कमल और सफेद कमल पानी में उगते हैं, पानी की सतह पर रहते हैं, डूबते हैं और पानी के नीचे बढ़ते हैं; कुछ पानी में जन्म लेते हैं और पानी में बढ़ते हैं, और सतह के समान ऊँचाई पर रहते हैं; कुछ पानी से ऊपर उठते हैं और पानी से अछूते रहते हैं। इसी प्रकार, जब भगवान बुद्ध की आँखों से संसार का अवलोकन करते हैं, तो वे कम धूल वाले और अधिक धूल वाले लोगों को देखते हैं; ... [डीएन.14]। भगवान बुद्ध जानते हैं: "यह व्यक्ति लालची है, यह व्यक्ति दुर्व्यवहार करने वाला है, यह व्यक्ति मूर्ख है, यह व्यक्ति मार्गदर्शक है, यह व्यक्ति विश्वासी है और यह व्यक्ति बुद्धिमान है।" भगवान बुद्ध लालची लोगों से बात करते हैं, वे करुणा के मार्ग पर चलने वालों से घृणा करने वालों को सूचित करते हैं, वे उन्हें उचित समय पर धम्म का पाठ करने, प्रश्न पूछने, सुनने और चर्चा करने और गुरुओं के साथ सहजीवन जीने में स्थिर करते हैं। भगवान बुद्ध मार्ग की खोज करने वाले व्यक्ति को सूचित करते हैं, वे विश्वास रखने वालों को बताते हैं: बुद्ध की विवेकशीलता, धम्म का अच्छा स्वभाव, संघ और उनके उपदेशों का अच्छा अभ्यास। भगवान बुद्ध बुद्धिमान अभ्यासियों को विपश्यना सिखाते हैं: अनित्यता, दुख और अनात्म।

"यदि आप किसी पथरीले पर्वत की चोटी पर खड़े हों, तो आप अपने आस-पास के सभी लोगों को देख सकते हैं। उसी प्रकार, जो गुणी और सर्वज्ञ हैं, वे धम्म के ऊंचे भवन पर चढ़ गए हैं। जो लोग चले गए हैं, वे दुखी लोगों को देख रहे हैं, जो जन्म और बुढ़ापे से पराजित हैं। कृपया उठिए! वीरों! युद्ध के मैदान में विजय प्राप्त करने वालों! कारवां के नेताओं! ऋणमुक्त लोगों, संसार में चलो, हे भगवान! कृपया धम्म का उपदेश दीजिए! समझने वाले अवश्य होंगे।" [डीएन.14]

भगवान बुद्ध सभी आँखों को आँखें क्यों मानते हैं? सभी आँखों को सर्वज्ञ ज्ञान की अवस्था कहा जाता है। भगवान बुद्ध आते हैं (उनके पास है), पूरी तरह से आते हैं (उनके पास है), प्रवेश करते हैं, पूरी तरह से प्रवेश करते हैं, उनके पास पर्याप्त ज्ञान है, उनके पास सर्वज्ञ ज्ञान की अवस्था है।

"उनके लिए इस संसार में कुछ भी अदृश्य नहीं है, ऐसा कोई ज्ञान नहीं है जिसे जाना न जा सके। वे सिद्ध करते हैं कि अस्तित्व में मौजूद हर चीज का मार्गदर्शन अनुमान के आधार पर ही होना चाहिए, क्योंकि तथागत तो मानो सर्वदृष्टि वाले हैं।" [भजन संहिता 1]

मैंने सुना है कि तीसरी बार पूछने पर दिव्य ऋषि उत्तर देंगे: "तीसरी बार पूछने पर बुद्ध और धर्मगुरु उस प्रश्न का उत्तर देंगे जिसका उत्तर अभी तक नहीं मिला है।" मैंने इसे इस प्रकार सीखा, समझा और स्पष्ट किया है: "दिव्य ऋषि," भगवान बुद्ध एक दिव्य ऋषि हैं। उदाहरण के लिए, एक राजा जो भिक्षु है, उसे राजा ऋषि कहते हैं; एक ब्राह्मण जो भिक्षु है, उसे ब्राह्मण ऋषि कहते हैं। इसी प्रकार, भगवान बुद्ध एक दिव्य ऋषि हैं।

या, "भगवान एक भिक्षु हैं" भी एक ऋषि हैं; और "महान उपदेशों के साधक और अनुयायी" महान ऋषि हैं...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

86 · यह दुनिया, अन्य दुनियाएँ, ब्राह्मण जगत, देवों सहित, मैं आपका दृष्टिकोण नहीं जानता, (प्रसिद्ध गौतम का दृष्टिकोण)।

"यह दुनिया, अन्य दुनियाएँ": "यह दुनिया" मानव जगत है। "अन्य दुनियाएँ" मानव जगत को छोड़कर बाकी सभी दुनियाएँ हैं।

“ब्रह्म जगत, जिसमें देवता भी शामिल हैं”: वह जगत जिसमें स्वर्ग, राक्षस और ब्रह्मा शामिल हैं; जिसमें समण, ब्राह्मण, स्वर्ग और मनुष्य की पीढ़ियाँ शामिल हैं।

“मैं आपका दृष्टिकोण नहीं जानता”: दुनिया नहीं जानती कि आप क्या देखते हैं, क्या पसंद करते हैं, आपकी प्रवृत्तियाँ, राय, दावे, इरादे क्या हैं: “जो इसे नहीं देखते, जो इसे इतना पसंद करते हैं, जो इसे इतना प्यार करते हैं, जो इसकी वकालत करते हैं, जो ऐसा करने का इरादा रखते हैं,” वे नहीं जानते, नहीं देखते, नहीं समझते, नहीं पाते, नहीं जानते।

“प्रसिद्ध गौतम”: भगवान यश प्राप्त करने वाले हैं। या, भगवान वे हैं जिनका आदर किया जाता है, जिन्हें वस्त्र, भोजन, आश्रय, बीमारों की देखभाल और चिकित्सा संबंधी आवश्यक वस्तुएँ प्रदान की जाती हैं।

87 · ऐसे असाधारण द्रष्टा के पास, जरूरतमंद एक प्रश्न लेकर आता है: कोई दुनिया को कैसे देख सकता है, ताकि मृत्यु का राजा उसे देख न सके?

“ऐसा असाधारण द्रष्टा”: ऐसा उत्कृष्ट द्रष्टा, प्रथम द्रष्टा, सबसे विजयी द्रष्टा, असाधारण द्रष्टा, विजयी द्रष्टा, सर्वोच्च द्रष्टा, सर्वोच्च द्रष्टा।

“जरूरतमंद लोग एक सवाल लेकर आते हैं”: ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

“दुनिया का अवलोकन कैसे करें”: दुनिया का अवलोकन कैसे करें, जांच कैसे करें, मापें कैसे, निर्णय कैसे करें, भेद कैसे करें, स्पष्ट कैसे करें।

“मृत्यु का राजा देख नहीं सकता”: मृत्यु का राजा देख नहीं सकता, खोज नहीं सकता, पा नहीं सकता।

88 · (हे भगवान): हे मोगराज, संसार को एकाग्रचित्तता से निःसंकोच करें। अपने आप को दृष्टि से विमुख करके, इस प्रकार मृत्यु को पार किया जा सकता है। जो इस प्रकार संसार को निःसंकोच करते हैं, उन्हें मृत्यु का राजा नहीं देख सकता।

“कृपया ध्यान दें कि संसार खाली है”: “संसार,” ...(अंशित, पिछले खंड देखें)। एक भिक्षु ने भगवान बुद्ध से कहा [SN.35.82]: “हे महान गुण! ‘संसार, संसार’ किसे कहते हैं? हे महान गुण! ‘संसार’ किसे कहते हैं?” “भिक्षु! ‘टूटा हुआ’ है, इसलिए इसे ‘संसार’ कहते हैं। और ‘टूटा हुआ’ क्या है? भिक्षु! आँख टूटी हुई है, रूप टूटा हुआ है, आँख की चेतना टूटी हुई है, आँख का संपर्क टूटा हुआ है, और इस आँख के संपर्क से जो कुछ भी उत्पन्न होता है वह या तो सुख है या दुख, या न तो दुख है और न ही सुख, वह भी टूटा हुआ है। कान ...(अंशित); गंध ...; स्वाद ...; शरीर टूटा हुआ है, स्पर्श टूटा हुआ है...; धम्म टूटा हुआ है, चेतना विलीन हो गई है, और मानसिक स्पर्श विलीन हो गया है। इस मन से उत्पन्न होने वाला कोई भी सुख, दुख या अप्रियता भी विलीन हो जाती है। भिक्षु! ‘टूटा हुआ’ है, इसलिए इसे ‘संसार’ कहते हैं।”

“ध्यान दें कि संसार खाली है”: संसार दो कारणों से खाली है: एक तो स्वतंत्र रूप से आगे न बढ़ने के विचार के कारण, और दूसरा खाली होने के विचार के कारण। आगे न बढ़ने के विचार के कारण संसार के खाली होने का अवलोकन कैसे किया जा सकता है? रूप की स्वतंत्रता प्राप्त नहीं की जा सकती, भावना की स्वतंत्रता प्राप्त नहीं की जा सकती, विचार की स्वतंत्रता प्राप्त नहीं की जा सकती, कर्म की स्वतंत्रता प्राप्त नहीं की जा सकती, और चेतना की स्वतंत्रता प्राप्त नहीं की जा सकती। यह बात भगवान बुद्ध ने कही है [SN.22.59]।

भिक्षुओं! रूप में कोई आत्म नहीं होता, भिक्षुओं, क्योंकि यदि यह रूप मैं हूँ, तो यह रूप रोग उत्पन्न नहीं करेगा, और मैं भी रूप धारण कर लूँगा: 'मेरा रूप ऐसा हो; मेरा रूप ऐसा न हो।' परन्तु, भिक्षुओं! क्योंकि रूप निस्वार्थ है, इसलिए रूप रोग उत्पन्न करता है और मैं रूप धारण नहीं कर सकता: 'मेरा रूप ऐसा होना चाहिए; मेरा रूप ऐसा नहीं होना चाहिए।'

भिक्षुओं! भावना अनासक्त है,... भिक्षुओं! चिंतन अनासक्त है,... भिक्षुओं! कर्म अनासक्त है,... भिक्षुओं! चेतना अनासक्त है,...

भगवान बुद्ध ने कहा [संख्या 12.37]: "भिक्षुओं! यह शरीर न तो तुम्हारा है, न ही दूसरों का, भिक्षुओं! यह पुराना कर्म है, जिसे विचार द्वारा निर्मित और अनुभव किया जा सकता है। वहाँ, भिक्षुओं! वे पवित्र शिष्य हैं जिन्होंने तर्क-आधारित (आश्रित) उत्पत्ति के बारे में सुना है: 'इस प्रकार, जब यह विद्यमान होता है, तो वह होता है; जब यह उत्पन्न होता है, तो वह उत्पन्न होता है; जब यह विद्यमान नहीं होता, तो वह नहीं होता; जब यह विसर्जित होता है, तो वह विसर्जित होता है; अर्थात्: अज्ञान कर्म की शर्त है; कर्म ज्ञान की शर्त है; चेतना नाम और रूप की शर्त है; मन और रूप को शर्त मानकर छह इंद्रिय आधार हैं; शर्त से संपर्क है; संपर्क के साथ अनुभूति है; अनुभूति के साथ प्यास है; प्यास के साथ ग्रहण करना है; शर्त के साथ ग्रहण करना है; अस्तित्व के साथ जीना है; जीने के साथ, वृद्धावस्था, मृत्यु, दुःख, कड़वाहट, पीड़ा, चिंता और निराशा जैसी पूर्वनिर्धारित स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं।' यह संपूर्ण पीड़ा का संग्रह है।

जब अज्ञानता लुप्त होकर नष्ट हो जाती है, तब चुनाव का अधिकार समाप्त हो जाता है...(अंशित); इसी प्रकार दुखों का सार नष्ट हो जाता है।"

हम यह अवलोकन कैसे कर सकते हैं कि संसार खाली है? रूप में स्थिरता प्राप्त नहीं की जा सकती, भावना में स्थिरता प्राप्त नहीं की जा सकती, विचार में स्थिरता प्राप्त नहीं की जा सकती, व्यवहार में स्थिरता प्राप्त नहीं की जा सकती और चेतना में स्थिरता प्राप्त नहीं की जा सकती। वह रूप हमेशा ठोस होता है, या सुख ठोस होता है, या "मैं" ठोस होता है, या स्थिर होता है, या शाश्वत होता है, या निरंतर होता है, या निरंतर परिवर्तनशील होता है; भावना..., विचार...(छोड़ा गया); जैसे सरकंडा ठोस नहीं है..., अरंडी का पौधा..., अंजीर का पेड़..., सफेद सरकंडे..., पलाश का पेड़..., छाले..., सूर्य की ज्वाला..., केले का तना..., असत्य, ठोस छोड़कर। उसी प्रकार, रूप ठोस नहीं है...।

या, ध्यान दें कि संसार छह कारणों से खाली है: आँखें 'मैं' से खाली हैं, या हम जो हैं उससे खाली हैं, या स्थिरता से खाली हैं, या शाश्वतता से खाली हैं, या अपरिवर्तनीय विधियों से खाली हैं; कान... (छोड़ा गया); भावना...; सोच...; करना...; जानना...; धम्म...; रूप...; ध्वनि...; गंध...; स्वाद...; स्पर्श...; धम्म...; नेत्र चेतना...; चेतना...; नेत्र स्पर्श...; चेतना...; नेत्र संपर्क और ध्वनि...; मानसिक स्पर्श और ध्वनि...; रूप चिंतन...; धम्म चिंतन...; रूप बोध...; धम्म बोध...; रूप की लालसा...; ...धम्मों की लालसा...

या, ध्यान दें कि संसार दस कारणों से खाली है: भौतिकता का त्याग, व्यर्थता, खालीपन, निस्वार्थता, झूठापन, निष्पादन, शून्यता, अशुभ मूल, कष्टदायक, सृजनशील, सशर्त; भावना..., चिंतन..., अस्तित्व..., ज्ञान..., मृत्यु..., जन्म..., जीवन..., चक्रण..., पुनर्जन्म...।

या, ध्यान दें कि संसार बारह कारणों से खाली है: रूप न तो सजीव है, न जीवन, न मनुष्य, न ब्राह्मण विद्यार्थी, न स्त्री, न पुरुष, न वास्तविक आत्मा, न हम जो हैं, न मैं, न मेरा, न कोई और, न किसी का; भावना..., चिंतन..., कर्म..., चेतना...।

भगवान बुद्ध ने कहा [SN.22.33]: "भिक्षुओं! जो कुछ भी तुम नहीं हो, उसे त्याग दो! यदि तुम उसे त्याग दोगे, तो वह तुम्हारे लिए दीर्घकालिक लाभ और सुखदायी होगा। और, भिक्षुओं! कौन सा रूप तुम्हारा नहीं है? भिक्षुओं! जो तुम्हारा नहीं है, उसे छोड़ दो! उसे छोड़ दो, वह तुम्हारे लिए दीर्घकालिक लाभ और सुखदायी होगा; भावना..., विचार..., कर्म..., यदि वे तुम्हें नहीं जानते, तो उन्हें छोड़ दो! उन्हें छोड़ दो...। भिक्षुओं! क्या तुम सोचते हो कि इस जंगल में लोग घास, जलाऊ लकड़ी, शाखाएँ, पत्ते ले जाएँगे, या जला देंगे, या जो चाहें करेंगे, तुम ऐसा सोचोगे: 'लोग हमें ले जाते हैं, या जला देते हैं, या जो चाहें करते हैं?' 'नहीं, हे महान पुण्य! इसका क्या कारण है? हे महान पुण्य! क्योंकि यह मैं नहीं हूँ, और न ही यह मेरा है।' इसी प्रकार, भिक्षुओं! जो कुछ भी तुम्हारा नहीं है, उसे त्याग दो! उसे दान कर दो, ... और, भिक्षुओं! जो कुछ तुम्हारा नहीं है? ...

आदरणीय आनंद ने विश्व-आदरणीय से कहा [SN.35.85]: "इसे कहते हैं: 'संसार शून्य है, संसार शून्य है,' हे महान गुण! किस स्थिति को 'संसार शून्य है' कहते हैं?" "आनंद, क्योंकि 'मैं' या 'जो मैं हूँ' शून्य है, इसलिए इसे 'संसार शून्य है' कहते हैं। आनंद, 'मैं' या 'जो मैं हूँ' में शून्यता क्या है? आनंद, मुझमें या जो मैं हूँ, आँखें शून्य हैं, रूप..., नेत्र चेतना..., नेत्र संपर्क..., इस नेत्र संपर्क से उत्पन्न होने वाले सभी सुख, दुख या अप्रियता में, 'मैं' या 'मेरा अस्तित्व' शून्य है; कान..., ध्वनि..., गंध..., स्वाद..., शरीर..., स्पर्श..., मन..., धम्म..., चेतना..., इरादा...; आनंद, क्योंकि 'मैं' या 'मेरा अस्तित्व' शून्य है, इसलिए इसे 'संसार शून्य है' कहते हैं।"

"यह विशुद्ध रूप से धर्मों का उद्भव है, विशुद्ध रूप से कर्मों की निरंतरता है, जो इसे सत्यनिष्ठा से देखते हैं, ग्राम प्रधान को कोई भय नहीं होता। संसार एक ही घास और वृक्षों से बना है; जब इसे ज्ञान से देखते हैं, तो अन्य मोड़ों पर किसी और चीज की अपेक्षा नहीं करते।" [थाग.715-717]

भगवान बुद्ध ने कहा [SN.35.246]: "इसी प्रकार, भिक्षुओं! भिक्षु रूप की खोज करते हैं जहाँ कहीं भी उसका पुनर्जन्म हो सकता है; ...भावनाएँ...; ...धारणाएँ...; ...विकल्प...; ...व्यवहार...; ...चेतना...; जब वह इस प्रकार रूपों की खोज करता है, तो 'मैं', 'मेरा' या 'मैं हूँ' के विचार अस्तित्व में नहीं रहते...; ...भावनाएँ... (विलुप्त)।"

"कृपया ध्यान दें कि दुनिया खाली है": दुनिया खाली है, कृपया ध्यान दें, कृपया जांच करें, कृपया देखें, कृपया मापें, कृपया निर्णय लें, कृपया अंतर करें, कृपया पता लगाएं।

"मोगराज! सदा सचेत": "मोगराज," ... "सदा," .... चार तरीकों से सचेत: ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"स्वभाव को त्यागने के बाद": "स्वभाव" को देखने के बीस आधारों के रूप में जाना जाता है। यहाँ, वे साधारण लोग जिन्होंने पवित्र पुरुष के बारे में नहीं सुना है, जिन्होंने कभी संतों को नहीं देखा है, जो धम्म में निपुण नहीं हैं और जिन्हें धम्म का प्रशिक्षण नहीं मिला है; उन्होंने कभी अच्छे लोगों का धम्म नहीं देखा है, वे धम्म में अकुशल हैं और उन्हें अच्छे धम्म का प्रशिक्षण नहीं मिला है। वे सोचते हैं कि रूप ही आत्मा है, या 'मैं' का रूप है, या रूप 'मुझमें' है, या 'मैं' रूप में हूँ, ...भावना..., ...विचार..., ...चेतना... [SN.22.1], जहाँ ऐसे विचार, बुरे विचार, जंगल (उलझे हुए) विचार, रेगिस्तान (बंजर) विचार, विकृत विचार, विचलित विचार और बंधे हुए विचार, वे धारण करते हैं, स्वीकार करते हैं, चिपके रहते हैं, बुरे रास्ते, बुरा मार्ग, बुरी प्रकृति, वह स्थान जहाँ बाहरी मार्ग टिका हुआ है, विपरियेस का आलिंगन, विपरीत का आलिंगन, विपल्लास का आलिंगन, बुराई का आलिंगन, असत्य को सत्य मानकर, ये सभी बासठ बुरे विचारों की पहुँच में आते हैं, यही स्वयं का दृश्य देखना है। "स्वयं के दृष्टिकोण को हटाने के बाद": स्वयं के दृष्टिकोण को हटाने के बाद, उन्मूलन के बाद, विच्छेद के बाद, बाहर निकालने के बाद, पूर्ण रूप से हटाने के बाद, त्यागने के बाद, निष्कासित करने के बाद, समाप्त करने के बाद, इसे अस्तित्वहीनता में ले जाने के बाद।

"इस तरह तुम मृत्यु पर विजय प्राप्त कर सकते हो": इस तरह तुम जन्म से बच सकते हो, बुढ़ापे से बच सकते हो, मृत्यु से बच सकते हो, पार पा सकते हो, आगे बढ़ सकते हो, श्रेष्ठ बन सकते हो, विजय प्राप्त कर सकते हो।

"जो लोग दुनिया को इस तरह से देखते हैं": जो लोग दुनिया को इस तरह से देखते, परखते, मापते, परखते, भेद करते और स्पष्ट करते हैं, वे ही दुनिया को इस तरह से देखने वाले लोग हैं।

"मृत्यु का राजा देख नहीं सकता": मृत्यु ही मृत्यु का राजा है; राक्षस भी मृत्यु के राजा हैं। मृत्यु के राजा के लिए "अदृश्य", अदृश्य, अनदेखा, अप्राप्य, न पाया जाने वाला, न प्राप्त होने वाला। यह बात धन्य बुद्ध ने कही थी [MN.25]:

भिक्षुओं! जैसे वनों में रहने वाला हिरण, वनों में चलते समय, खड़े होते समय, बैठे होते समय, लेटे होते समय, मन की शांति के साथ रहता है, वह क्या है? कारण क्या है? भिक्षुओं! वह एक ऐसा लोक है जहाँ हिंसक लोग नहीं पहुँच सकते। इसी प्रकार, भिक्षुओं! यहाँ, भिक्षु इच्छाओं और अहितकर धर्म का त्याग करने के बाद, वियोग के बाद सुख और आनंद की खोज और प्रतीक्षा में रहते हैं। पहला ध्यान, भिक्षुओं! इसे भिक्षु द्वारा राक्षस को अंधा करना कहते हैं। राक्षस की आँखें फोड़ने के बाद, राक्षस दृष्टिहीन और अपंग (दुर्भाग्यपूर्ण) अवस्था में चला जाता है।

इसके अलावा, भिक्षुओं! भिक्षु तर्क और चिंतन से शांत, आत्मविश्वासी और एकाग्र मन से रहते हैं। प्रवेश करने के बाद, वे दूसरे ध्यान में रहते हैं जहाँ न तर्क होता है और न चिंतन, और एकाग्रता से आनंद और प्रसन्नता उत्पन्न होती है..., तीसरे ध्यान में..., प्रवेश करने के बाद, न दुख होता है और न सुख, चौथे ध्यान में शांति और जप से, भिक्षुओं! इसे भिक्षु द्वारा राक्षस को अंधा करना कहते हैं। राक्षस की आँखें नष्ट करने के बाद, ...

हे भिक्षुओं! हे भिक्षुओं, सभी कामवासनाओं और विचारों से ऊपर उठकर, विरोधी विचारों का नाश करके, सभी प्रकार के विचारों के बारे में सोचे बिना, (और यह जान लो): 'शून्य असीम है,' प्रवेश करने के बाद, असीम शून्य में निवास करो, हे भिक्षुओं! इसे भिक्षु द्वारा राक्षस को अंधा करना कहते हैं। राक्षस की आँखें निकालने के बाद, ...

इसके अलावा, भिक्षुओं! जब कोई भिक्षु सभी शून्यता और असीमता (और ज्ञान) से परे हो जाता है: 'चेतना असीम है,' तो प्रवेश करने के बाद, चेतना की असीमता में रहें...

इसके अलावा, भिक्षुओं! जब कोई भिक्षु चेतना के सभी असीम स्थानों को पार कर लेता है (और जान लेता है): 'कुछ भी नहीं है,' तो प्रवेश करने के बाद, असीम स्थानों में निवास करें...

इसके अलावा, भिक्षुओं! जब भिक्षु सब कुछ और शून्यता से परे हो जाता है, तो वह एक ऐसे स्थान में प्रवेश करता है और निवास करता है जहाँ न तो बोध होता है और न ही अबोध।

इसके अलावा, भिक्षुओं! जब भिक्षु सभी न सोचने-समझने वाली और न सोचने-समझने वाली अवस्थाओं से परे हो जाता है, तो वह विनाश की इच्छा में लीन हो जाता है और वहीं स्थिर रहता है। ज्ञान से देखने पर, उसके कष्ट नष्ट हो जाते हैं, भिक्षुओं! इसे भिक्षु द्वारा राक्षस को अंधा करना कहते हैं। राक्षस की आँखें फोड़ने के बाद, राक्षस दृष्टिहीनता और पैरों के बिना अवस्था में प्रवेश कर जाता है, संसार से अपना लगाव छोड़ देता है। वह शांति से चलता है, खड़ा होता है, बैठता है, लेटता है। इसका कारण क्या है? भिक्षु राक्षस के लिए एक अगम्य क्षेत्र है।

इन छंदों के अंत में... "परमेश्वर मेरे गुरु हैं, मैं उनका शिष्य हूँ।"
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> निद्देसा >> निद्देसा 2.ए.16

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

<<<< पिछला अगला >>>>

16. पिंगिया
89 · [आदरणीय पिंघिया ने इस प्रकार कहा:] मैं बूढ़ा, दुर्बल और रंगहीन हूँ, मेरी आँखें साफ़ नहीं हैं, मेरे कान बेचैन हैं, मुझे मार्ग में नीरसता से नष्ट न होने दें, कृपया धम्म की व्याख्या करें, ताकि मैं जान सकूँ, जहाँ जन्म और वृद्धावस्था का विच्छेद है।

"मैं बूढ़ा, दुर्बल और रंगहीन हूँ": "मैं बूढ़ा हूँ," उम्र बढ़ रही है, वृद्ध हो रहा हूँ, बुढ़ापे की ओर बढ़ रहा हूँ, जन्म से एक सौ बीस वर्ष का हो चुका हूँ। "दुर्बल," दुर्बल, कमज़ोर और कम बलवान। "रंगहीन," रंगहीन, रंगहीन, रंग गायब हो गया। जो कुछ भी पहले अद्भुत और सुंदर था, वह गायब हो गया है, और दुख प्रकट हो गया है।

"[इस आदरणीय पिंघिया की तरह]": ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"आँखें धुंधली हैं और कान बेचैन हैं": आँखें अशुद्ध, मैली और धुंधली हैं, इसलिए मैं अपनी आँखों से आकृतियाँ नहीं देख सकता। "कान बेचैन हैं।" कान अशुद्ध, मैली और धुंधली हैं; इस प्रकार, मैं अपने कानों से ध्वनि नहीं सुन सकता।

"मुझे मार्ग में नीरसता से न मरने दो": "मुझे न मरने दो," मुझे न मरने दो, मुझे लुप्त न होने दो, मुझे दूर न जाने दो। "नीरसता से," अज्ञानता से, अज्ञान में प्रवेश करके, नासमझ, अविवेकी और हीन। "मार्ग में," अपने धम्म, दृष्टिकोण, मार्ग या पथ को जाने बिना, उसे प्राप्त किए बिना, उसे धारण किए बिना, उसे ग्रहण किए बिना और उसकी गवाही दिए बिना मार्ग में मर जाना।

"कृपया धम्म की व्याख्या कीजिए, ताकि मैं जान सकूँ": "धम्म," आरंभ अच्छा है, ...(अंशित, पिछले भाग देखें)। कृपया व्याख्या कीजिए, सिखाइए, ...(अंशित, पिछले भाग देखें)। "मैं जान सकूँ," मैं निश्चित रूप से जान सकूँ, समझ सकूँ, सिद्ध कर सकूँ, पहुँच सकूँ और गवाही दे सकूँ।

“जन्म और वृद्धावस्था से वियोग”: जन्म, वृद्धावस्था और मृत्यु का त्याग, समाप्ति, विराम, शांति, निर्जीवता और निर्वाण।

90 · [भगवान: “पिंगिया!”] रूपों से पीड़ित लोगों को देखकर, रूपों से “परेशान” अनियंत्रित लोगों को देखकर, इसलिए, पिंगिया, ऐसा व्यक्ति बनो जो जाने न दे (आराम न करे); (भविष्य में) अस्तित्व न होने के लिए रूप का त्याग करो।

“रूप से पीड़ित व्यक्ति को देखकर”: “रूप,” चारों तत्वों का रूप और चारों तत्वों से निर्मित कोई भी वस्तु। सभी सजीव प्राणियों को उनके शारीरिक कारणों और शारीरिक परिस्थितियों के कारण पीटा जाता है, मारा जाता है, चोट पहुँचाई जाती है और सताया जाता है। जब रूप होता है, तो विभिन्न दंड दिए जाते हैं: कोड़े मारना, डंडे से पीटना, बेंत से पीटना, हाथ, पैर, हाथ और पैर, कान, नाक, कान और नाक काटना, खट्टी दलिया से दंडित करना, शंख से गंजा करना, राहु मुख यातना, अग्नि यातना, मोमबत्ती से हाथ की यातना, झाड़-फूंक की यातना, छाल की यातना, हिरण की यातना, हुक से यातना, धन यातना, क्षारीय स्नान यातना, मरोड़ यातना, भूसे से पैर की यातना, गर्म तेल, कुत्ते का काटना, तलवार से छेदने और सिर काटने का आदेश; इस प्रकार सजीव प्राणियों को उनके शारीरिक कारण और शारीरिक परिस्थितियों के कारण पीटा जाता है, मारा जाता है, चोट पहुँचाई जाती है और सताया जाता है। इस प्रकार, पीटा गया, मारा गया, घायल और सताया गया व्यक्ति देखता है, मापता है, तौलता है, न्याय करता है, अलग करता है और स्पष्ट करता है।

“[भगवान: 'पिंगिया!']”: ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

“अनैतिक स्वभाव वाले लोग ‘रूप से पीड़ित’ होते हैं”: “वे पीड़ित होते हैं,” वे चिढ़ते हैं, सताए जाते हैं, क्रोधित होते हैं और बीमार व चिंतित हो जाते हैं। आँखों की बीमारियों से पीड़ित और क्रोधित, सताए हुए, रोगी बन जाते हैं, चिंतित; ...कानों की बीमारियों से...; बीमार होने से...; मक्खियों, मच्छरों, हवाओं, धूप और साँपों के संपर्क से बीमार और चिंतित हो जाते हैं।

या, वे तब पीड़ित होते हैं जब आँख (दृष्टि) गायब हो जाती है, खो जाती है, क्षीण हो जाती है, कम हो जाती है, नष्ट हो जाती है, चली जाती है, कम हो जाती है, ... (छोड़ा गया) वे रोगी, चिंतित हो जाते हैं; ...कान...; नाक, जीभ, शरीर, रूप, ध्वनि, गंध, स्वाद, स्पर्श, घर में, समूह (सभा) में, निवास में, लाभ, प्रसिद्धि, प्रशंसा, आनंद, कपड़े, आश्रय, आवास में, जब रोगियों की ज़रूरतें और चिकित्सा संबंधी आवश्यकताएँ गायब हो जाती हैं..., और चिंता करते हैं।

“लोग” में क्षत्रिय, ब्राह्मण, वेस, शुद्ध, गृहस्थ, भिक्षु, स्वर्गवासी और व्यक्ति शामिल हैं। विश्राम (मुक्त होना) का अर्थ है कि शरीर के बुरे कर्मों, वाणी के बुरे कर्मों, मन के बुरे कर्मों या पाँचों इच्छाओं से विमुख हो जाना और हृदय का विरक्ति भाव उत्पन्न न होना। या अभ्यास के प्रति अनादर की अवस्था, अनित्यता की अवस्था, निरंतर कार्य करने की अवस्था, आदत में फंसे रहने की अवस्था, इच्छाओं की उपेक्षा करने की अवस्था, उत्तरदायित्व की उपेक्षा करने की अवस्था, अभ्यास न करने की अवस्था, कम अभ्यास करने की अवस्था, स्थापना न करने की अवस्था, त्याग करने की अवस्था। इस प्रकार के त्याग की अवस्था को विश्राम कहते हैं।

“पिंगिया! इसलिए, तुम वह व्यक्ति बनो जो त्यागता नहीं”: “इसलिए,” इसलिए; कारण; वजह; स्थिति, जब रूपों में ऐसी परेशानियाँ देखते हो। “वह जो त्यागता नहीं” एक आदरणीय कर्ता है, एक नियमित कर्ता है... (छोड़ा गया, पिछले खंड देखें), अच्छे धम्म में (वह व्यक्ति जो जिम्मेदारी की उपेक्षा नहीं करता) वह व्यक्ति जो त्यागता नहीं है।

“रूप का त्याग कर देना चाहिए ताकि (भविष्य में) कोई रूप न रहे”: (“रूप”) चार तत्वों द्वारा निर्मित रूप। “त्याग कर देना चाहिए,” रूप का त्याग कर देना चाहिए, उसे काट देना चाहिए, उसे समाप्त कर देना चाहिए, उसका अस्तित्व समाप्त कर देना चाहिए। “ताकि उसका अस्तित्व समाप्त हो जाए,” इसके अनुसार, आपका रूप यहाँ नष्ट हो जाएगा, और पुनर्जन्म का रूप उत्पन्न नहीं होगा; इच्छा के क्षेत्र में, या भौतिक क्षेत्र में, या अभौतिक क्षेत्र में, या इच्छा में, या भौतिक अस्तित्व में, या निराकार अस्तित्व में, या अस्तित्व में, या अस्तित्व की इच्छा में, या अकल्पनीय में, या कल्पनाहीन में, या एक समूह में, या चार समूहों में, या पांच समूहों में, या आगे के चक्र में, या जन्म में, या अवतार में, या अस्तित्व में, या पुनर्जन्म में, या चक्र में, यह इसे उत्पन्न नहीं करेगा, इसे उत्पन्न नहीं करेगा, या जन्म का कारण नहीं बनेगा, यहीं पर, यह नष्ट हो जाएगा, शांत हो जाएगा, अस्तित्वहीनता में चला जाएगा, समाप्त हो जाएगा।

91 · (पिंगीय:) चारों दिशाओं में, चारों मध्यवर्ती दिशाओं में, ऊपरी और निचली दिशाओं में, इन दस दिशाओं में, संसार में ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे आपने देखा, सुना या जाना न हो; कृपया मुझे वह विधि समझाएँ जिससे मैं जन्म और वृद्धावस्था से मुक्ति पा सकूँ।

"चार दिशाएँ," चारों दिशाओं की मध्य दिशाएँ, ऊपरी और निचली, दस दिशाएँ।

"संसार में ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे तुमने देखा, सुना या जाना न हो": ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे तुमने देखा, सुना या अनुभव न किया हो: तुम्हारे अपने हित, या दूसरों के हित, या दोनों, या जीवन का हित, या भविष्य के जीवन का हित, या स्पष्ट हित, या गहरा हित, या छिपा हुआ हित, या अन्याय का हित, या न्याय का हित, या निर्दोष हित, या अदूषणकारी हित, या शुद्ध हित, या सर्वोच्च हित; इनमें से कोई भी ऐसा नहीं है जो अस्तित्व में न हो, ज्ञात न हो और खोजा न गया हो।

"कृपया मुझे धम्म का अर्थ समझाइए": "धम्म," शुरुआत अच्छी है... कृपया समझाइए... "मैं जान सकूँ,"...

"जन्म और वृद्धावस्था का त्याग": जन्म, वृद्धावस्था और मृत्यु का त्याग, समाप्ति, विराम, शांति, निर्जीवता और निर्वाण।

92 · [भगवान: "पिंगिया!"] प्यास से व्याकुल लोगों को देखकर, बुढ़ापे से पीड़ित और व्यथित होकर, हे पिंगिया, तुम वह बनो जो कभी न छोड़े: तुम्हें अपनी प्यास त्याग देनी चाहिए ताकि तुम्हारा अस्तित्व समाप्त हो जाए।

"प्यास में डूबे लोगों को देखो": "प्रेम की प्यास" की प्यास...(छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)। "गहरी प्यास में डूबना," प्यास में गिर जाना; जो प्यास के साथ चलते हैं, जो प्यास का अनुसरण करते हैं, वे लालसा से घिरे रहते हैं, लालसा से पराजित होते हैं, पराजित होते हैं, और जिनके हृदय लालसा से लूटे जाते हैं। "लोग" का अर्थ प्राणी है। "देखना," देखना, अवलोकन करना और निहारना।

"[भगवान: 'पिंगिया!']": ....

बुढ़ापे की पीड़ा और जन्म से ही ऊष्मा (पीड़ा) से पीड़ित होना: "ऊष्मा (पीड़ा)" का अर्थ है जन्म से ऊष्मा, बुढ़ापे से ऊष्मा, बीमारी..., मृत्यु..., दुःख..., निराशा..., नरक में गिरना और यातना सहते हुए जीना... (छोड़ा गया), दृष्टिहीनता..., ऊष्मा से पीड़ित होना, आपदा, विपत्ति, बुराई। "बुढ़ापे की पीड़ा" का अर्थ है उजागर होना, यातना सहना, संयुक्त होना, बुढ़ापे से ग्रसित होना, जन्म के बाद आना, बुढ़ापे के बाद आना, बीमारी से पराजित होना, मृत्यु से आहत होना, बिना आश्रय और बिना शरण के रहना, वे लोग जिनका कोई आश्रय नहीं है।

"पिंगिया! इसलिए तुम वह बनो जो त्यागता नहीं": "इसलिए" .... "जो त्यागते नहीं" ....

"हमें प्यास का त्याग कर देना चाहिए ताकि हमारा अस्तित्व ही समाप्त हो जाए": प्रेम की प्यास... "प्यास का त्याग कर देना चाहिए", प्यास छोड़ देनी चाहिए, प्यास का त्याग करना चाहिए, प्यास को दूर भगाना चाहिए, प्यास का अंत करना चाहिए, और प्यास को अस्तित्वहीन बना देना चाहिए। "ताकि हमारा अस्तित्व ही समाप्त हो जाए",...

श्लोक के अंत में, जो ब्राह्मणों के समान ही इरादे, समान ही प्रयास, समान ही झुकाव और समान ही निवास स्थान में रहते हैं, उनके लिए हजारों जीवों की दूर की धूल और धम्म दृष्टि प्रकट होती है: "धर्मों का कोई भी संग्रह विनाश का कारण है।" ब्राह्मण का मन आसक्ति रहित होकर सभी दोषों से मुक्त होता है। अरहंत के लोक में पहुँचने के साथ ही, उनके भेड़ की खाल के वस्त्र, गुंथे हुए बाल, छाल के वस्त्र, डंडे, लंबे मुँह वाली पानी की बोतलें, बाल और दाढ़ी गायब हो जाते हैं, वे गंजे हो जाते हैं और उनके स्थान पर वस्त्र, कपड़े, ओवरकोट और कटोरे आ जाते हैं। वे भगवान बुद्ध को आदर दिखाने के लिए हाथ जोड़ते हैं और बैठ जाते हैं: "हे महान गुण! भगवान बुद्ध मेरे गुरु हैं और मैं उनका शिष्य हूँ।"

17. दूर तट तक जाने के मार्ग की प्रशंसा करना
(अध्याय का शीर्षक संक्षिप्त रूप में दिया गया है; पूरा शीर्षक है "दूर तट तक जाने के मार्ग की प्रशंसा करने वाले छंदों की व्याख्या"।)

93. भगवान बुद्ध ने यह कहा, जब वे मगध के पासानक चैत्य (रेशमी मंदिर) में रहते थे। बावरी की सेवा करने वाले सोलह ब्राह्मणों के प्रश्नों का उन्होंने एक-एक करके उत्तर दिया।

"भगवान बुद्ध ने यह कहा": दूर तट के मार्ग के बारे में बात करते हुए। "भगवान बुद्ध," ...(विलुप्त, पिछले भाग देखें)। भगवान बुद्ध ने यह कहा। "मगध में निवास," मगध राज्य में रहते हुए, कार्य करते हुए, आगे बढ़ते हुए, रक्षा करते हुए और जीवित रहते हुए। "जब बुद्ध शिला मंदिर में निवास करते थे," शिला मंदिर में निवास करने वाले बुद्ध को वहाँ बैठे हुए बुद्ध कहा जाता है।

"उन सोलह ब्राह्मणों को जो सेवा करते हैं": पिंगीय के ब्राह्मण बावरी और पिंगीय के अनुयायी, सेवक, और शिष्य हैं, और वे सोलह हैं। या, वे सोलह ब्राह्मण भगवान बुद्ध के अनुयायी, सेवक, और शिष्य हैं।

"उन्होंने पूछे गए और पूछे गए सभी प्रश्नों का एक-एक करके उत्तर दिया": "अनुरोध किया," चाहा, इच्छा व्यक्त की। "सभी ने पूछा," सभी ने एक-एक करके प्रश्न पूछे; सभी ने एक-एक करके पूछा; सभी ने एक-एक करके विनती की; सभी ने अनुरोध किया; सभी ने स्पष्टीकरण मांगा। "उन्होंने प्रश्नों का उत्तर दिया," उन्होंने उत्तर दिया, समझाया, सिखाया, सूचित किया, स्थापित किया, उजागर किया, विश्लेषण किया, समस्या को स्पष्ट किया।

94 · जब व्यक्ति एक-एक करके प्रश्नों के उत्तर समझ लेता है, धम्म का ज्ञान प्राप्त कर लेता है, तो वह उसका अनुसरण और अभ्यास कर सकता है, और वृद्धावस्था और मृत्यु के पार जा सकता है; "ये धम्म दूसरे तट की ओर ले जाते हैं।" इसलिए, इन धम्मों की शिक्षाओं का नाम "पारयण का मार्ग" है।

"जैसा कि एक प्रश्न है": जैसे अजित के कई प्रश्न हैं, जैसे तिस्सा मेत्तेय के कई प्रश्न हैं, पुणक और मेत्तगू का एक-एक प्रश्न है, जैसे धोतक के भी प्रश्न हैं, वैसे ही मैं उपासिव, नंदा और हेमक की समस्याओं का भी समाधान करता हूँ, जैसे मैं तोदेय्या की समस्याओं का भी समाधान करता हूँ, और जैसे मैं कप्पा के दो प्रश्नों का भी समाधान करता हूँ, वे सभी गुणी जटुकन्नि के समान हैं। जैसे यह भद्रावुधा का भी प्रश्न है, जैसे यह उदय का भी प्रश्न है, जैसे यह पोसाला का भी प्रश्न है, जैसे यह मोगराज का भी प्रश्न है, जैसे यह पिंगिया का भी प्रश्न है।

"कारण जानने के बाद, धम्म को जानने के बाद": प्रश्न धम्म का है, और उत्तर सत्य है। कारण जानने के बाद, समझने के बाद, तौलने के बाद, निर्णय लेने के बाद, अलग करने के बाद, स्पष्ट करने के बाद। "धम्म को जानने के बाद," धम्म को जानने के बाद, समझने के बाद... सत्य को जानने के लिए, धम्म को जानने के बाद। "धम्म का पालन और अभ्यास करने में सक्षम": सही मार्ग, मार्ग का अनुसरण, वह मार्ग जो उलटा नहीं है, वह मार्ग जिसमें कोई विरोधाभास नहीं है, जैसे मार्ग का अर्थ, वह मार्ग जिसे वह लागू कर सकता है।

"वह मृत्यु और देह के दूसरे छोर तक चल सकता है": मृत्यु और देह के दूसरे छोर को निर्जीवता, निर्वाण कहा जाता है, अर्थात् सभी कर्मों का अंत, सभी आसक्तियों का अंत, लालसा, लोभ का नाश, और अंत में निर्वाण। "वह मृत्यु और देह के दूसरे छोर तक चल सकता है": वह मृत्यु और देह के दूसरे छोर तक चल सकता है, उस दूसरे छोर को सिद्ध कर सकता है, उसे स्पर्श कर सकता है और उसकी गवाही दे सकता है।

"ये धम्म दूसरे तट तक जा सकते हैं": ये धम्म दूसरे तट तक जा सकते हैं, ये व्यक्ति को दूसरे तट तक पहुंचाते हैं, पूर्णतः दूसरे तट तक पहुंचाते हैं, और ये देह और मृत्यु की ओर ले जाते हैं।

अतः इन धम्मों की शिक्षाएँ: अतः, ...(छोड़ा गया, पिछले खंड देखें)। "इन धम्मों की शिक्षा इस परलोक के मार्ग के लिए है।" इसी कारण इन धम्मों का उपदेश दिया जाता है। "परलोक के मार्ग के पर्यायवाची": परलोक को निर्जीव, निर्वाण कहा जाता है...। इसे मार्ग कहा जाता है, अर्थात् सही दृष्टिकोण...। "पर्यायवाची": नाम, उपाधि, सामान्य नाम, नामकरण, शब्दावली, वाक्यांश। "परलोक के मार्ग" के पर्यायवाची।

95 · अजिता, तिस्सा मेटेया, पुण्णका और मेट्टागु, साथ ही धोतका, उपशिव, नंदा और हेमाका,

96 · तोदेय्या और कप्पा, और गुणी जटुकन्नी, साथ ही भद्रावुधा, उदय और ब्राह्मण पोसाला, चतुर मोगराज, महान ऋषि पिंगीय के साथ।

97 · वे प्रबुद्ध व्यक्ति, उत्कृष्ट कर्मों वाले महान ऋषि के पास सूक्ष्म प्रश्न पूछते हुए, विजयी व्यक्ति के पास पहुँचते हैं।

"वे प्रबुद्ध व्यक्ति के पास पहुँचते हैं": "वे," सोलह ब्राह्मण, परलोक के मार्ग की ओर। "प्रबुद्ध व्यक्ति" वह है जिसने धर्म में उस सत्य को प्रकाशित किया है जो पहले कभी नहीं सुना गया, और जो सर्वज्ञता की अवस्था और शक्ति में स्वतंत्रता की अवस्था को प्राप्त करता है। "प्रबुद्ध व्यक्ति" का क्या अर्थ है? "जो सत्य को अनुभव करता है" वह प्रबुद्ध है, "जीव को जागरूक करता है"..., सर्वज्ञता की अवस्था..., सर्वदृष्टि की अवस्था, और वह अवस्था जो दूसरों द्वारा निर्देशित नहीं होती, वह प्रबुद्ध है। जो मुक्त हो चुके हैं वे प्रबुद्ध हैं, जिन्होंने अपने कष्टों को समाप्त कर दिया है उन्हें प्रबुद्ध कहा जाता है, जिनके कोई कष्ट नहीं हैं..., जो हमेशा लोभ से मुक्त रहे हैं वे प्रबुद्ध हैं, और जो हमेशा घृणा से मुक्त रहे हैं वे भी प्रबुद्ध हैं। ज्ञानी व्यक्ति के लिए, "जो सदा अज्ञान से दूर रहा हो" वही ज्ञानी व्यक्ति है, "जो सदा अपवित्रता से मुक्त रहा हो"..., वह जिसने बिना चौराहे के मार्ग पार किया हो..., और वह जो एकाकी रहा हो, वह बिना उपदेश दिए ही ज्ञानी है। ज्ञानी व्यक्ति के लिए, मृत्यु से मुक्ति की अवस्था ही ज्ञानी व्यक्ति है, और ज्ञानी अवस्था ही ज्ञानी व्यक्ति है। "ज्ञानी व्यक्ति" यह नाम न तो माता ने दिया है, न पिता ने, न भाई-बहनों ने, न मित्रों ने, न ब्राह्मणों ने; न स्वर्ग ने, यही परम मुक्ति है; बुद्ध, भगवान और बोधि वृक्ष के ज्ञान और साक्ष्य की स्थापना (छद्म नाम), समस्त ज्ञान और बुद्धि के साथ, वही ज्ञानी व्यक्ति है। "वे ज्ञानी व्यक्ति के पास पहुँचते हैं": वे ज्ञानी व्यक्ति के पास जाते हैं, उन्हें देखते हैं, उनसे मिलते हैं, उनसे पूछते हैं और प्रश्न करते हैं।

"पर्याप्त कर्मों वाले ऋषि": इस कर्म को व्रत का उद्गम कहा जाता है, और व्रत का आत्म-संयम कर्म है; मूल का आत्म-संयम भी कर्म है; उचित मात्रा में आहार का ज्ञान भी कर्म है; संयम में निपुणता प्राप्त करना भी कर्म है; सात सिद्धांत [एम.एन.53] भी कर्म हैं; चार ध्यान भी कर्म हैं। "पर्याप्त कर्मों वाले", पर्याप्त कर्मों वाले, सर्वोत्तम कर्म, उच्चतम कर्म, प्रथम कर्म, विजयी कर्म और शीर्ष कर्म। "ऋषि", ...(विलुप्त, पिछले खंड देखें)।

"सूक्ष्म प्रश्न पूछना": "पूछना," पूछताछ करना, विनती करना, पूछना; बात स्पष्ट करना। "सूक्ष्म प्रश्न," गहरे, जिन्हें समझना कठिन, और मौन, विजयी, गैर-सैद्धांतिक, नाजुक, और बुद्धिमानों द्वारा अनुभव किए गए।

"सर्वोच्च विजयी प्रबुद्ध व्यक्ति के निकट": "प्रबुद्ध व्यक्ति," अर्थात् धन्य व्यक्ति... "सर्वोच्च विजयी," प्रथम, सर्वोच्च विजयी, महान, श्रेष्ठ, सर्वोच्च, सर्वोच्च विजेता, शीर्ष प्रबुद्ध व्यक्ति, वे उनके पास आते हैं, निकट आते हैं, मिलते हैं, दर्शन करते हैं, पूछताछ करते हैं और पूछते हैं।

98 · प्रबुद्ध व्यक्ति ने उनके लिए पूछे गए प्रश्नों का सत्यपूर्वक उत्तर दिया, प्रश्नों के उत्तरों से मुनि ने ब्राह्मणों को संतुष्ट किया।

"प्रबुद्ध व्यक्ति उन्हें पूर्ण उत्तर प्रदान करते हैं": "उनके लिए," सोलह ब्राह्मणों के लिए, परलोक के मार्ग का। "प्रबुद्ध व्यक्ति," .... "पूर्ण उत्तर," प्रबुद्ध व्यक्ति उन्हें पूर्ण उत्तर देते हैं, समझाते हैं, सिखाते हैं, सूचित करते हैं, स्थापित करते हैं, उजागर करते हैं, विश्लेषण करते हैं और स्पष्ट करते हैं।

"सच्चाई से पूछे गए प्रश्न": "पूछे गए प्रश्न," पूछे गए प्रश्न, पूछताछ, विनती, अनुरोध और स्पष्टीकरण। "जैसे हैं वैसे ही," समझाएँ जैसे समझाया जाना चाहिए; सिखाएँ जैसे सिखाया जाना चाहिए; बताएँ जैसे बताया जाना चाहिए; बनाएँ जैसे बनाया जाना चाहिए; उजागर करें जैसे उजागर किया

जाना चाहिए; खोलें जैसे खोला जाना चाहिए; विश्लेषण करें जैसे विश्लेषण किया जाना चाहिए; स्पष्ट करें जैसे स्पष्ट किया जाना चाहिए; जो कहा जाना चाहिए वह कहा जाता है।

"प्रश्नों का उत्तर देना": प्रश्नों का उत्तर देना, समझाना, सिखाना, सूचित करना, स्थापित करना, उजागर करना, विश्लेषण करना और स्पष्ट करना।

'मुनि ने ब्राह्मणों को संतुष्ट किया: "संतुष्ट करो," संतुष्टि प्रदान करो, संतुष्टि का विस्तार करो, स्पष्ट करो, आनंद उत्पन्न करो और प्रसन्नता पैदा करो। "ब्राह्मण," ... "मुनि"...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

99 · वे सर्वदर्शी, प्रबुद्ध, सूर्य वंश के व्यक्ति से संतुष्ट होकर, महान और बुद्धिमानों के सामने आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करते थे।

"वे सर्वदर्शी से संतुष्ट हैं": "वे," ... "संतुष्ट," .... "सर्वदर्शी," ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"प्रबुद्ध व्यक्ति, सूर्य वंश का व्यक्ति": "प्रबुद्ध व्यक्ति," .... "सूर्य वंश": सूर्य (आदिको) को सूर्य (सूरियो) कहा जाता है, उसका उपनाम गौतम है, भगवान का उपनाम भी गौतम है, भगवान सूर्य उपनाम के रिश्तेदार हैं, इसलिए प्रबुद्ध व्यक्ति सूर्य वंश का सदस्य है।

"आध्यात्मिक जीवन जियो (ब्रह्म का अभ्यास करते हुए)": ब्रह्म को अलगाव, संयम, त्याग, वैराग्य, कर्म न करना, कुकर्म न करना, अपराध न करना, उल्लंघन न करना, पुल का विनाश न करना कहा जाता है। या, क्योंकि इनमें कोई भेद नहीं है, इसलिए ब्रह्म को आठ श्रेष्ठ मार्ग कहा जाता है, अर्थात्: सही दृष्टि, सही इच्छा, सही वाणी, सही कर्म, सही जीवन, सही प्रयास, सही विचार, सही एकाग्रता। "वे ब्रह्म का अभ्यास करते हैं": वे ब्रह्म का अभ्यास करते हैं और उसे स्वीकार करने के बाद ब्रह्म की ओर मुड़ जाते हैं।

"महान और बुद्धिमान के सामने": महान और सर्वोपरि, सबसे बुद्धिमान, सर्वोच्च बुद्धिमान, सर्वोच्च बुद्धिमान, शीर्ष बुद्धिमान। "सामने", ठीक सामने, दूर नहीं, पास।

100 · एक-एक करके प्रश्न, जैसा कि प्रबुद्ध व्यक्ति द्वारा सिखाया गया है, जो कोई भी इस प्रकार अभ्यास कर सकता है वह इस किनारे से दूसरे किनारे तक चल सकता है।

"एक-एक करके प्रश्न": अजिता द्वारा एक-एक करके प्रश्न, ...(छोड़ा गया), ...पिंगिया द्वारा।

"प्रबुद्ध व्यक्ति द्वारा सिखाया गया": "प्रबुद्ध व्यक्ति," .... जैसा कि समझाया गया, सिखाया गया, ...प्रबुद्ध व्यक्ति द्वारा।

"जो कोई भी इस प्रकार अभ्यास कर सकता है": वह सही मार्ग का अभ्यास कर सकता है, मार्ग का अनुसरण कर सकता है, उस मार्ग का अनुसरण कर सकता है जो विपरीत नहीं है, धर्म का मार्ग और धम्म का मार्ग।

"इस किनारे से दूसरे किनारे तक चलने में सक्षम": दूसरा किनारा निर्जीव, निर्वाण कहलाता है; यह किनारा अशुद्धियाँ, समुच्चय और सृष्टि कहलाता है। "इस किनारे से दूसरे किनारे तक चल सकता है": वह इस किनारे से दूसरे किनारे तक चल सकता है, दूसरे किनारे को सिद्ध कर सकता है, दूसरे किनारे को स्पर्श कर सकता है और दूसरे किनारे के समक्ष गवाही दे सकता है।

101 · इस किनारे से दूसरे किनारे तक चलने में सक्षम, जब उच्चतम मार्ग का अभ्यास किया जाता है, तो वह मार्ग दूर के किनारे की ओर जाता है, इसलिए इसे "दूर के किनारे का मार्ग" कहा जाता है।

"इस किनारे से दूसरे किनारे तक चलने में सक्षम": ....

"सर्वोच्च मार्ग का अभ्यास करते समय": सर्वोच्च मार्ग को आठ पवित्र मार्ग कहा जाता है, अर्थात्: सही दृष्टिकोण... "अभ्यास करते समय", अभ्यास करते समय, पूर्ण रूप से अभ्यास करते समय।

"वह रास्ता दूर किनारे तक पहुँचने का है": वह रास्ता, पथ, सड़क, पगडंडी, पैदल मार्ग, जिसमें नावें, नौका पुल, बेड़ा, बांस के बेड़ा और पुल शामिल हैं।

"दूर किनारे तक पहुँचने के लिए," दूर किनारे तक पहुँचने के लिए, दूसरे किनारे तक पहुँचने के लिए, बुढ़ापे और मृत्यु के पूर्ण अंत तक पहुँचने के लिए।

इसलिए इसे 'दूर तट का मार्ग' कहा जाता है: इसलिए... दूसरी ओर निर्जीव, निर्वाण कहलाता है... इस प्रकार... क्योंकि यह ऐसा ही है, इसलिए इसे 'दूर तट का मार्ग' कहा जाता है।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> निद्देसा >> निद्देसा 2.अ.18

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

<<<< पिछला   अगला >>>>

18. दूर तट तक जाने के मार्ग का पाठ
(अध्याय का शीर्षक संक्षिप्त रूप में दिया गया है; पूरा शीर्षक है "दूर तट की ओर जाने के मार्ग के बारे में पढ़े जाने वाले श्लोकों की व्याख्या"।)

102 · [आदरणीय पिंघिया ने इस प्रकार कहा:] मैं दूसरे मार्ग का वर्णन करूँगा, जैसा कि वह देखता है, जैसा कि वह बताता है: दोषरहित पुरुष, विशाल ज्ञानी, इच्छा से मुक्त, एक निर्मल इच्छाहीन नाग, वह व्यर्थ क्यों कहेगा?

"मैं दूसरी सड़क का पाठ करने जा रहा हूँ": मैं वही पाठ करने जा रहा हूँ जो पहले ही पाठ किया जा चुका है, मैं वही पाठ करने जा रहा हूँ जो वर्णन के साथ बताया गया है, मैं उसी विषय पर बात करने जा रहा हूँ जिस पर बात की जा चुकी है, मैं वही कहने जा रहा हूँ जो कहा जा चुका है।

"[इस आदरणीय पिंघिया की तरह]": ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"यदि वह इस प्रकार देखता है, तो वह बोलता है": यदि वह इस प्रकार देखता है, तो वह बताता है, समझाता है, सिखाता है, सूचित करता है, स्थापित करता है, उजागर करता है, विश्लेषण करता है और स्पष्ट करता है: "सभी कर्म अनित्य हैं," क्योंकि वह इस प्रकार देखता है..., "सभी कर्म दुखदायी हैं"..., "सभी धर्म निस्वार्थ हैं"..., "धर्मों का प्रत्येक संग्रह धर्मों का अंत है"...।

"दोषरहित पुरुष, परम बुद्धिमान": दोषरहित; लोभ दोष है, घृणा दोष है, अज्ञान, क्रोध, द्वेष, सभी अस्वास्थ्यकर कर्म दोष हैं; और बुद्ध और भगवान बुद्ध के लिए दोष काट दिए गए हैं, और उनकी जड़ें काट दी गई हैं, ठीक वैसे ही जैसे बिना जड़ों वाला ताड़ का पेड़ अस्तित्वहीन हो जाता है, भविष्य के लिए निर्जीव हो जाता है। बुद्ध दोषनाशक हैं, दोषमुक्त करने वाले हैं, दोष त्यागने वाले हैं, दोष से मुक्त होने वाले हैं, सभी दोषों पर विजय प्राप्त करने वाले हैं। परम बुद्धिमान; जैसे पृथ्वी को विशाल कहा जाता है...(विलुप्त, पिछले भाग देखें), इसलिए बुद्ध अत्यंत बुद्धिमान हैं।

"इच्छा से मुक्त, इच्छा रहित, व्यथित नाग (महान, या हाथी)": "इच्छा," इच्छाएँ दो प्रकार की होती हैं...(छोड़ा गया, पिछले खंड देखें)। भगवान इच्छा में इच्छा नहीं करते...(छोड़ा गया, पिछले खंड देखें)।

“जिनके मन में कोई व्यथित इच्छा नहीं है,” उनके लिए लोभ ही व्यथित इच्छा है; घृणा... कहा जाता है कि यह कट गई है, और इसकी जड़ ही कट गई है... इसलिए, बुद्ध वह व्यक्ति हैं जिनके मन में कोई व्यथित इच्छा नहीं है... वह व्यक्ति जिसके मन में कोई इच्छा नहीं है। “नाग,” ...(विलुप्त, पिछले भाग देखें)।

“वह झूठ क्यों बोलेगा?”: “किस कारण?” कारण क्या है? स्थिति क्या है? “झूठ बोलना” का अर्थ है झूठ बोलना, झूठा कथन करना, झूठ बोलना, अपवित्र शब्द बोलना: यहाँ, एक विशेष प्रकार के लोग आराधनालय, सभा, रिश्तेदारों, समूह या महल में गवाह के रूप में लाए जाते हैं और उनसे प्रश्न पूछा जाता है: “अरे, मुझे बताओ कि तुम मार्ग के बारे में क्या जानते हो।” वे बिना जाने कहते हैं: “मैं जानता हूँ।” या, यदि वे जानते हैं, तो वे कहते हैं: “मैं नहीं जानता।” वे उसे नहीं देखते और कहते हैं, “मैं देखता हूँ।” या, जब वे उसे देखते हैं, तो वे कहते हैं, “मैंने उसे नहीं देखा।” इस प्रकार, वे जानबूझकर अपने स्वार्थ के लिए, या दूसरों के स्वार्थ के लिए, या थोड़े से प्रलोभन के कारण व्यर्थ बोलते हैं।

या, तीन व्यवहारों को "झूठा" मानकर चलें: बोलने से ठीक पहले (सोचते हुए): "मैं झूठ बोलूँगा।" बोलते ही (सोचते हुए): "मैं झूठ बोल रहा हूँ।" बोलते ही (सोचते हुए): "मैंने झूठ बोल दिया है।" इन तीनों व्यवहारों को झूठ मान लें। या, चार व्यवहारों को मानकर चलें: बोलने से ठीक पहले (सोचते हुए): "मैं झूठ बोलूँगा।" बोलते ही (सोचते हुए): "मैं झूठ बोल रहा हूँ।" बोलते ही (सोचते हुए): "मैंने झूठ बोल दिया है।" विभिन्न आसक्तियों (त्रुटियों) के मत हैं, और इन चारों व्यवहारों को झूठ माना जाता है। या, पाँच रूपों..., छह रूपों..., सात रूपों..., आठ रूपों को झूठ मानकर चलें: बोलने से पहले... विभिन्न आसक्तियों के (गलत) मत, विभिन्न आसक्तियों की पसंद, विभिन्न आसक्तियों की प्रवृत्तियाँ, विभिन्न आसक्तियों की इच्छाएँ और विभिन्न आसक्तियों का स्वरूप होता है। इन आठ व्यवहारों को झूठ और झूठे शब्द माना जाता है।

103 · जिन्होंने अपनी अज्ञानता और बुराई का त्याग कर दिया है, जिन्होंने अहंकार और बुराई को छुपाने का त्याग कर दिया है, आओ! मैं तुम्हें सुंदर शब्द सुनाऊँगा।

“अज्ञान और अपवित्रता का त्याग करने वालों से संबंधित”: “अपवित्रता,” लोभ..., क्रोध..., अज्ञान..., आलस्य..., दृष्टि..., प्रदूषण..., सभी बुरे कर्म अपवित्रता हैं; कर्म गंदगी है।

“अज्ञान,” दुख का अज्ञान... बुद्ध और भगवान के लिए, अज्ञान और अशुद्धता का नाश हो चुका है... इसलिए, बुद्ध ही वह हैं जिन्होंने अज्ञान और अशुद्धता का त्याग किया है।

“जो लोग अहंकार का त्याग करते हैं और बुराई को छुपाते हैं”: “अहंकार,” एक प्रकार का अहंकार: जो हृदय की पराकाष्ठा है; दो प्रकार...: आत्म-प्रशंसा अहंकार है, दूसरों के प्रति तिरस्कार अहंकार है; तीन: “मैं विजेता हूँ”..., “मैं समान हूँ”, “मैं हीन हूँ”; चार: लाभ, यश, प्रशंसा और सुख प्राप्त करना; पाँच: “मुझे मनचाहा रूप प्राप्त होता है”, “मुझे मनचाही ध्वनि प्राप्त होती है”, गंध..., स्वाद..., स्पर्श...; छह प्रकार: आँखों से..., कानों से..., नाक से, जीभ से, शरीर से...मन की संतुष्टि अहंकार को बढ़ाती है; सात: अहंकार, घमंड, अहंकार और घमंड, विनम्रता, वृद्धि का अहंकार, आत्म-सत्यता का अहंकार, बुराई का अहंकार; आठ: प्राप्ति अहंकार को बढ़ाती है, प्राप्ति न होना..., यश, यशहीनता, प्रशंसा, निंदा, सुख और दुख। नौ: विजेता सोचता है: “मैं विजेता हूँ”..., विजेता सोचता है: “मैं समान हूँ,” विजेता सोचता है: “मैं हीन हूँ”...; और समान व्यक्ति सोचता है: “मैं विजेता हूँ,” समान व्यक्ति सोचता है: “मैं समान हूँ,” समान व्यक्ति सोचता है: “मैं हीन हूँ,” हीन व्यक्ति सोचता है: “मैं विजेता हूँ,” हीन व्यक्ति सोचता है: “मैं समान हूँ,” हीन व्यक्ति सोचता है: “मैं हीन हूँ;” दस प्रकार...: यहाँ, किसी विशेष जन्म, या उपनाम, या अच्छे परिवार, या कमल के समान सौंदर्य, या संपत्ति, या शोध (अधिग्रहण), या व्यवसाय, या शिल्प कौशल, या अध्ययन, या सुनी-सुनाई बातों से, या बहस करने से, या किसी ऐसी चीज़ से जो किसी को अहंकारी बना दे; जो कोई भी इस प्रकार, इस प्रकार के हृदय अहंकार के साथ, स्थिति को समझते हुए, उच्च प्रशंसा, उच्च अहंकार को ध्वज की तरह, हृदय के अभिमान की तरह मानता है, वह अहंकारी कहलाता है।

बुराई को छुपाना, पाखंड, ईर्ष्या, जलन जैसे व्यवहार को बुराई छुपाना कहते हैं। बुद्ध और भगवान बुद्ध ने अहंकार और बुराई छुपाने की प्रवृत्ति को त्याग दिया है... इसलिए बुद्ध अहंकार और बुराई छुपाने की प्रवृत्ति का त्याग करने वाले व्यक्ति हैं।

"आओ! मैं तुम्हें सुंदर शब्दों के बारे में बताऊंगा": "आओ," वाक्यों की निरंतरता; वाक्यों का जुड़ाव; वाक्यों का समापन; शब्दों का संयोजन; शब्दों और वाक्यों का जुड़ाव; यही वाक्य का क्रम है, जो "आओ" है। "मैं सुंदर शब्दों के बारे में बताऊंगा," पहुंचना (पाना), आना, प्रवेश करना, पूरी तरह से प्रवेश करना, पर्याप्त होना, पर्याप्त रूप से होना, सुंदर शब्द, भाषा और वाणी होना, मैं बताऊंगा, सिखाऊंगा, निर्माण करूंगा, उजागर करूंगा, विश्लेषण करूंगा और स्पष्ट करूंगा।

104 · अंधकार को दूर करने वाले, प्रबुद्ध और सर्वदर्शी, जो जगत के छोर तक पहुँच चुके हैं, समस्त (अस्तित्वों) से परे, जिन्हें कोई कष्ट नहीं है, जो समस्त दुखों का त्याग कर देते हैं, वही वास्तव में (संबुद्ध) कहलाते हैं, हे ब्राह्मण! मैं उनकी सेवा करता हूँ।

"अंधकार को दूर करने वाला, प्रबुद्ध और सर्वदर्शी": "अंधकार को दूर करने वाला," लोभ का अंधकार, घृणा का अंधकार, ...अज्ञान, ...आलस्य, ...अशुद्धता, ...बुराई, ...अंधता, ...बुराई, ...अज्ञान, ...बुद्धि का विनाश, ...विवाद करने वाले गुट, ...वह जो निर्वाण की ओर नहीं ले जाता; उसे दूर करना, हटाना, त्यागना, भगाना, समाप्त करना और उसे अस्तित्वहीन बना देना। "वही धन्य हैं...।" सभी आँखों को सर्वज्ञ ज्ञान की अवस्था कहा जाता है...(विलुप्त, पिछले भाग देखें)।

"वे जो संसार के छोर तक पहुँच चुके हैं, सभी को पार करते हुए": "संसार," एक संसार: अस्तित्व का संसार; दो संसार: अस्तित्व का संसार और उद्भव का संसार; जो संसार में आया है और जो उत्पन्न हुआ है, वही संसार बनता है; पतन का संसार है और संसार के उद्भव का पतन है। तीन संसार: तीन भावनाएँ। चार संसार: चार पोषक तत्व। पाँच संसार: पाँच संचय। छह संसार: छह आंतरिक संसार। सात संसार: सात चेतना निवास। आठ संसार: आठ विश्व प्रणालियाँ। नौ संसार: जहाँ नौ जीव निवास करते हैं। दस संसार: दस स्थान। बारह संसार: बारह स्थान। अठारह संसार: अठारह संसार। "वे जो संसार के छोर तक पहुँच चुके हैं," भगवान बुद्ध वे हैं जो संसार के छोर तक पहुँच चुके हैं; अंत तक पहुँच चुके हैं; ...निर्वाण प्राप्त कर चुके हैं; ...निर्वाण में अवतरित हो चुके हैं, ...जीवन और मृत्यु के चक्र का अभ्यास कर चुके हैं, बिना पुनर्जन्म के।

"सब कुछ से परे" के दो प्रकार हैं: कर्म और पुनर्जन्म। कर्म क्या है? पुण्य कर्म, अपुष्ट कर्म और अटल कर्म कर्म हैं। पुनर्जन्म क्या है? शरीर के रूप, भावनाएँ, विचार, व्यवहार और चेतना पुनर्जन्म हैं। भगवान परमपिता हैं, वे पार हो चुके हैं और विजय प्राप्त कर चुके हैं।

"जिनके पास कोई चिंता (कष्ट) नहीं है, जिन्होंने सभी दुखों का त्याग कर दिया है": "चिंताओं" में चार प्रकार की चिंताएँ होती हैं: इच्छाओं की चिंता, अस्तित्व की चिंता, देखने की चिंता, अज्ञान की चिंता। बुद्ध और भगवान बुद्ध की तरह, इन चिंताओं का त्याग कर दिया गया है, इसलिए बुद्ध एक कष्टमुक्त व्यक्ति हैं। "सभी दुखों का त्याग करना" का अर्थ है जीवन के पुनरुत्पादन से संबंधित सब कुछ, दुख, बुढ़ापा, बीमारी, मृत्यु, शोक, शोक, निराशा... क्षय का दुख, सब कुछ समाप्त हो गया है, शांत हो गया है, रुक गया है, उत्पन्न होने में असमर्थ है, और ज्ञान की अग्नि से जल गया है। बुद्ध ही वह हैं जिन्होंने सभी दुखों का त्याग कर दिया है।

"सच्चे नाम वाले, ब्राह्मण! मेरी सेवा में रहो": "सच्चे नाम वाले," सच्चे नाम से संबोधित, समतुल्य नाम, समतुल्य संबोधनकर्ता, सच्चे समतुल्य संबोधित; विपस्सी बुद्ध, सिखी बुद्ध, वेस्साभू, ककुसंध, कोणागमना, कस्सपा — ये बुद्ध और भगवान (गौतम) वे हैं जिनका नाम और संबोधन एक ही है, और शाक्यमुनि भी उन्हीं बुद्धों में से हैं, और भगवान का नाम भी वही है और वे भी उन्हीं में से हैं जिनका नाम एक ही है।

"ब्राह्मण! मेरी सेवा में रहो": भगवान पर मुझे भरोसा है, मैं उनकी सेवा करता हूँ और उनका सम्मान करता हूँ, (जो) हर समय प्रश्न पूछते रहते हैं।

105 · उदाहरण के लिए, जैसे एक पक्षी एक छोटे से जंगल को छोड़कर फलदार जंगल में रहता है, वैसे ही जब मैं इस तरह के संकीर्ण विचारों वाले सभी को छोड़ देता हूँ, तो मैं उस हंस की तरह हूँ जो बड़ी झील तक पहुँच गया है।

उदाहरण के लिए, जैसे कोई पक्षी एक छोटे जंगल को छोड़कर फलदार जंगल में रहने लगता है: दो बार जन्म लेने वाले पक्षी को पंखदार पक्षी कहा जाता है। दो बार जन्म लेने वाले पक्षी को पंखदार क्यों कहा जाता है? "दो बार जन्म लेना" का अर्थ है दो बार जन्म लेना: माँ के गर्भ और अंडे के छिलके से दो बार जन्म लेने के कारण, दो बार जन्म लेने वाले पक्षी को पंखदार कहा जाता है। "जैसे एक छोटे जंगल को छोड़ने के बाद," एक पक्षी की

तरह, जो एक छोटे पहाड़ी जंगल में रहता है जहाँ फल, भोजन और पानी कम होता है, उसे छोड़ने के बाद, उससे आगे बढ़ने के बाद, उसे पार करने के बाद, उसे दूसरे फल, बड़े और घने जंगल मिलेंगे जहाँ भोजन और पानी भरपूर मात्रा में होगा, और वह उस घने जंगल में अपना आश्रय बनाएगा।

"इस प्रकार, जब मैं संकीर्ण विचारों वालों का त्याग कर देता हूँ, तो यह उस प्रकार है जैसे कोई हंस विशाल झील तक पहुँच जाता है": "इस प्रकार" एक लाक्षणिक व्यवस्था है। "संकीर्ण विचारों वालों का त्याग करने के बाद," बावरि ब्राह्मण और उनके अन्य गुरुओं ने बुद्ध और भगवान की तुलना उन लोगों से की है जो दुर्लभ, तुच्छ, हीन, छोटे, कम दिखाई देने वाले, निम्न, गैर-सर्वोच्च, हीन हैं; त्यागने के बाद, छोड़ने के बाद, पार करने के बाद, गुजरने के बाद और पार करने के बाद, सबसे अधिक दिखाई देने वाला व्यक्ति बुद्ध, भगवान को प्राप्त करता है, पाता है और पा लेता है: असीम द्रष्टा, शीर्ष द्रष्टा, असमान, अद्वितीय, अविभेदित, अतुलनीय, आकाश में स्वर्ग, मनुष्यों में बैल राजा, मनुष्यों में शेर, मनुष्यों में हाथी, मनुष्यों में बलवान धीरज वाला गुणी पुरुष, दस शक्तियों का धारक। उदाहरण के लिए, जैसे हंस किसी विशाल मानव निर्मित या प्राकृतिक तालाब, या समुद्र-झील के अविचल और असीम जल भंडार को पा लेते हैं, खोज लेते हैं और प्राप्त कर लेते हैं; उसी प्रकार, बुद्ध और भगवान अविचल, अनंत प्रकाश से परिपूर्ण, ज्ञान से परिपूर्ण, निर्भीक, निर्भीक, निर्मल, निर्मल, शुद्ध आकांक्षाओं वाले, श्वेत आवरण से आच्छादित, मौन, स्वयं को ऐसा बताने वाले, न छोटे, महान, गहरे, अतुलनीय, अगम्य, अपार खजाने से परिपूर्ण, सागर के समान, छह सान्निध्यों से परिपूर्ण, अतुलनीय, विशाल और अतुलनीय हैं। वह उस प्रकार का वक्ता है, मार्ग का वक्ता है, पहाड़ों में मेरु पर्वत के समान, पक्षियों में स्वर्ण पंखों वाले पक्षी के समान, जानवरों में शेर के समान, समुद्र में मिलने वाली नदी के समान, वह स्वामी है, विजेता है, सर्वोच्च है और महान ऋषि है।

106 · गौतम की शिक्षा से पहले उन्होंने मुझे जो कुछ भी बताया था: ऐसा पहले था, ऐसा होगा; वह सब अफवाहें हैं, वह सब सिद्धांत में वृद्धि है।

"उन्होंने मुझे पहले क्या बताया था": "क्या," बावरी ब्राह्मण और उनके अन्य शिक्षक, वे समझाते हैं, सिखाते हैं..., अपने स्वयं के विचार, पसंद, झुकाव, राय, इरादे।

"गौतम की शिक्षाओं से पहले": गौतम की शिक्षाओं से पहले, गौतम की शिक्षाओं के दूसरी ओर, गौतम के आदेशों से पहले, बुद्ध के उपदेशों से पहले, विजेताओं के उपदेशों से पहले, तथागत के उपदेशों से पहले, अरहंतों के प्रथम उपदेशों से पहले।

"ऐसा था और वैसा था, ऐसा होगा और वैसा होगा": ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"ये सब अफवाहें हैं": ...(हटा दिया गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"सिद्धांत में यही सारी वृद्धि है": ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

107 · जो एकाकी हैं, अंधकार को दूर करने वाले, जो बैठे हुए हैं, जो प्रकाशमान हैं, जो प्रकाश के निर्माता हैं, जो धन्य हैं, जो धन्य हैं, जो सर्वव्यापी रूप से बुद्धिमान हैं।

"जो अकेला है, जो अंधकार को दूर करता है, और जो बैठा हुआ है": "जो अकेला है," भगवान अकेले ही भिक्षु बन गए हैं, धर्म के लिए अकेले ही उनका कोई साथी नहीं है, धर्म की प्यास अकेले ही है, और "हमेशा लोभ से मुक्त" अकेले ही हैं, "हमेशा भ्रम से मुक्त" अकेले ही हैं, "हमेशा दुराचार से मुक्त" अकेले ही हैं, "हमेशा अपवित्र" अकेले ही हैं, "बिना किसी मोड़ के सड़क पार करने वाले" अकेले ही हैं, और "सर्वोच्च ज्ञान को पहले ही प्राप्त कर चुके" अकेले ही हैं।

भगवान बुद्ध अकेले ही भिक्षु कैसे बने? जब भगवान बुद्ध युवा थे, तब वे काले बालों वाले युवक थे और यौवन के सुख से परिपूर्ण थे। जीवन के आरंभ में, माता-पिता की अनिच्छा के बावजूद, वे रोते-बिलखते और आहें भरते हुए भी अपने रिश्तेदारों को त्याग देते हैं, घर के सभी बंधनों को तोड़ देते हैं, अपने बच्चों, पत्नी, परिवार, मित्र, भंडारगृह आदि के बंधनों को तोड़ देते हैं, अपने बाल मुंडवाकर वस्त्र धारण कर लेते हैं और घर छोड़कर निर्धन भिक्षु बन जाते हैं। वे अकेले ही जीवन व्यतीत करते हैं, कर्म करते हैं, रक्षा करते हैं और जीवित रहते हैं।

भगवान बुद्ध अकेले बिना साथी के कैसे रह सकते हैं? जब वे ऐसे भिक्षु थे, तब वे जंगलों, घने वनों और सीमावर्ती आवासों (बैठने के स्थानों) में अकेले रहते थे: शांत, वातावरण से दूर, अकेले रहते थे, अकेले बैठने के लिए उपयुक्त; वे अकेले चलते, अकेले खड़े होते, अकेले बैठते, अकेले लेटते, भिक्षा मांगने के लिए अकेले गाँव जाते, अकेले आगे बढ़ते, अकेले लौटते, शांत स्थान पर अकेले बैठते, अकेले कर्म करते, अकेले रहते, चलते, आगे बढ़ते, पहरा देते और अकेले ही अपना जीवन यापन करते।

भगवान बुद्ध प्यासी प्रेम की पीड़ा से अकेले कैसे निपट सकते हैं? वे इतने अकेले और बिना साथी के थे, जब वे अनिच्छा, उत्साह और स्वयं के प्रयासों से जीवन व्यतीत कर रहे थे। नेरांजरा नदी के किनारे बोधि वृक्ष के नीचे, उन्होंने परिश्रम और प्रयास से सेना सहित राक्षस (मारा), दुष्ट दानव और उनके रिश्तेदारों का नाश किया; उसके बाद, उन्होंने जाल में फँसे, तीव्र गति से बहने वाले, उलझे हुए प्यासे प्रेम को त्याग दिया, भगा दिया, समाप्त कर दिया और उसका अस्तित्व समाप्त कर दिया।

"जिन लोगों का साथी प्यासी प्रेम होता है, वे लंबे समय तक पुनर्जन्म लेते हैं, ऐसी अवस्था में पहुँच जाते हैं, अन्य अवस्थाओं में पहुँच जाते हैं, पुनर्जन्म से परे नहीं जा पाते। इस प्रकार के कष्ट को जानकर: लालसा ही दुख का मूल है, प्यासी प्रेम से विमुख होकर, बिना कुछ ग्रहण किए, भिक्षुओं को सचेतन होकर आगे बढ़ना चाहिए।" [इत.15/स्न.3.12,745-746]

भगवान बुद्ध हमेशा लोभ से दूर रहकर अकेले कैसे रह सकते हैं? "लोभ की अवस्था का त्याग करना" एकांत है, "क्रोध की अवस्था का त्याग करना", ...भ्रम की अवस्था का त्याग करना..., अशुद्धता की अवस्था का त्याग करना...

भगवान बुद्ध बिना मोड़ वाले मार्ग को पार करने वाले अकेले कैसे हो सकते हैं? बिना मोड़ वाले मार्ग को चार ध्यान (विभिन्न भाग देखें) आठ पवित्र मार्ग कहा जाता है।

"जो जीवन की मृत्यु (पुनर्जन्म) को देखता है, जो करुणामय है, जो बिना मोड़ वाले मार्ग को जानता है, इसी मार्ग से उन्होंने अतीत में बाढ़ पार की, भविष्य में भी पार करेंगे, और वर्तमान में भी पार कर रहे हैं।" [SN.47.18]

भगवान बुद्ध का एकमात्र ज्ञान किस प्रकार अकेला होना है? ज्ञान को बुद्धि, बुद्धि का मूल, बुद्धि की शक्ति, चयन का ज्ञान, अन्वेषण, विपश्यना, चारों लोकों का सही दृष्टिकोण कहा जाता है। भगवान बुद्ध ने यह अनुभव किया कि "सभी कर्म अनित्य हैं", (कुछ अंश हटा दिया गया है)। "धर्मों का प्रत्येक संग्रह नष्ट हो जाता है।" या, जो कुछ भी अनुभव किया जाना चाहिए, जिसके प्रति सचेत होना चाहिए, जिसे जागृत किया जाना चाहिए, जिसे प्रबुद्ध किया जाना चाहिए, जिसे बोध किया जाना चाहिए, जिसे स्पर्श किया जाना चाहिए, जिसकी गवाही दी जानी चाहिए, वह सब उस चेतना, जागृति, ज्ञान, प्राप्ति, पहुँच और गवाही के प्रति सचेत है।

"अंधकार को दूर करते हुए," .... "बैठते हुए," भगवान रॉक मंदिर में बैठे हैं।

"जब मुनि पर्वत पर बैठे थे, जो दुखों के पार पहुँच चुके थे, तब उनके शिष्यों ने तीन ज्ञानों से युक्त, मृत्यु के नाश करने वालों की सेवा की।" [एसएन.8.10]

या फिर, उस अवस्था में जब सभी प्रयास समाप्त हो चुके होते हैं, तब भगवान ही विराजमान होते हैं, वही अवतरित होते हैं और वही अभ्यास करते हैं...

"वह प्रकाशमान व्यक्ति है, प्रकाश का निर्माता है": प्रकाशमान व्यक्ति बुद्धिमान, परम बुद्धिमान, प्रबुद्ध, विशिष्ट और ज्ञानवान है। "प्रकाशमान निर्माता," प्रकाश का निर्माता, प्रकाशदाता, प्रकाश लाने वाला।

"धन्य पुरुष वह है जो व्यापक रूप से बुद्धिमान है": धन्य पुरुष वह है जो विशालता का प्रतीक है, बुद्धि प्रतीक है, बुद्धि ध्वज है, बुद्धि चिह्न है, बुद्धि बढ़ती है, बुद्धि प्रचुर है, अधिक सचेत, पूर्णतः सचेत स्वभाव, समझ में जीने वाला, चरित्र, अधिक, गंभीर, उसका उद्देश्य, झुकाव, दुबला, विजेता, और बेहतर।

"झंडा रथ का प्रतीक है, धुआँ आग का प्रतीक है, राजा देश का प्रतीक है, और पति स्त्री का प्रतीक है।" [SN.1.72]

इसी प्रकार, भगवान विशालता (व्यापक ज्ञान) के प्रतीक हैं, ज्ञान ही प्रतीक है... जो समझते हैं, जिनके पास चरित्र है, जिनके पास अधिक है, जो दूसरों को महत्व देते हैं, जो उसे लक्ष्य बनाते हैं, जो कड़ी मेहनत करते हैं, वे उसकी ओर झुकते हैं, समाधान ढूंढते हैं, सुधार करते हैं, अधिक चरित्रवान होते हैं, दूसरों पर जोर देते हैं, उसे लक्ष्य बनाते हैं, कड़ी मेहनत करते हैं, जो विजय प्राप्त करता है, जो वृद्धि करता है, उसकी ओर झुकते हैं।

"गौतम अत्यंत बुद्धिमान व्यक्ति हैं": जिस प्रकार पृथ्वी को विशाल कहा जाता है... अतः बुद्ध अत्यंत बुद्धिमान व्यक्ति हैं।

108 · जिसने मुझे धम्म सिखाया: प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देने वाला, तत्काल, प्यास का नाश, आपदा से मुक्ति, जिसके लिए कहीं भी कोई रूपक नहीं है।

"वह जो मुझे धम्म सिखाता है": "वह," यानी वह जो विश्व-सम्मानित व्यक्ति है, एकमात्र व्यक्ति है, और वह जो बिना गुरु के धम्म में उस सत्य को जानता है जो पहले कभी नहीं सुना गया, और वहाँ सर्वज्ञता की अवस्था प्राप्त करता है, वह जो शक्ति में स्वतंत्रता की अवस्था में है। "धम्म का शिक्षण," "धम्म," आरंभ अच्छा है...(उद्धृत); उन्होंने समझाया, सिखाया, सूचित किया, स्थापित किया, उजागर किया, विश्लेषण किया और स्पष्ट किया।

"प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष, तात्कालिक": प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष, तात्कालिक, आपको मिलने का निमंत्रण दिया जाता है, मार्गदर्शन दिया जाता है, और ज्ञानी व्यक्ति को स्वयं इसका अनुभव करना चाहिए। या, जो आठ पवित्र मार्गों का अभ्यास करता है, वह उस मार्ग को बिना किसी भेदभाव के और तात्कालिक रूप से अनुभव करता है, और उसे फल प्राप्त होते हैं। "तात्कालिक" का अर्थ यह नहीं है कि जब कोई व्यक्ति मरने के बाद किसी को अपनी संपत्ति सौंपता है, तो वह उस समय की प्रतीक्षा करता है; धम्म वास्तव में ऐसा नहीं है। जो कोई भी अपने जीवन में आठ आर्य मार्गों का अभ्यास करता है, वह उस मार्ग को बिना किसी भेदभाव के और तात्कालिक रूप से अनुभव करता है। उसे फल प्राप्त होते हैं, कहीं और नहीं (अगले जन्म में नहीं), दूसरे लोक में नहीं (अगले जन्म में नहीं), यह क्षणिक है।

"प्यास का बुझना, कोई विपत्ति नहीं": "प्रेम की प्यास," रूप की प्यास... "प्यास का बुझना," प्यास का बुझना, ...लालच का, घृणा का, ...भ्रम का, स्वार्थ का, पिछले जन्मों के, पुनर्जन्म के चक्र का, कुछ, पुनर्जन्म, चक्र। "कोई विपत्ति नहीं," प्रदूषण और निर्माण को विपत्तियाँ कहा जाता है, विपत्तियों का त्याग, विपत्तियों का अंत, विपत्तियों का विघटन, विपत्तियों का रुकना, निर्जीवता और निर्वाण।

"उसके लिए, चाहे वह कहीं भी हो, कोई रूपक नहीं है": "उसके लिए," निर्वाण के लिए। "कोई रूपक नहीं है," कोई रूपक नहीं है, कोई तुलना नहीं है, कोई समतुल्य नहीं है, कोई समानता नहीं है, उसका अस्तित्व नहीं है, जिसे जाना नहीं जा सकता, जिसे खोजा नहीं जा सकता। "चाहे कहीं भी हो," चाहे कहीं भी हो, कहीं भी, अपने भीतर या बाहर, या भीतर और बाहर।

109 · (बावरी:) हे पिंघिया, तुम उस व्यक्ति से एक क्षण के लिए भी क्यों दूर हो जाते हो, भगवान बुद्ध की व्यापक समझ से, भगवान बुद्ध के व्यापक ज्ञान से?

"तुम उस स्थान से क्यों चले गए?": तुम बुद्ध को छोड़कर क्यों चले गए?

"पिंगिया, पल भर के लिए भी": एक पल के लिए भी, एक क्षण के लिए भी, समय के एक अंश के लिए भी, आधे दिन के लिए भी। "पिंगिया," बावरी ने उस कनिष्ठ को उसके नाम से पुकारा।

“सर्वशक्तिमान भगवान से”: भगवान की विशालता प्रतीक के रूप में...

गौतम गौतम के विशाल ज्ञान से: पृथ्वी को विशाल कहा जाता है...

110 · जो तुम्हें धम्म सिखाता है: प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देने वाला, तत्काल, प्यास का नाश, आपदा से मुक्ति, जिसके लिए कहीं भी कोई रूपक नहीं है।

“वह आपके लिए धम्म का उपदेश देते हैं”:...

“स्पष्ट रूप से दिखाई देने वाला, तत्काल”: ....

“बिना किसी आपदा के प्यास का बुझना”: ....

“इसके लिए, चाहे वह कहीं भी हो, कोई रूपक नहीं है”:...

111 · (पिंगीय:) हे ब्राह्मण, मैं उस व्यक्ति से एक क्षण के लिए भी दूर नहीं रहता, उस विशाल बुद्धि वाले भगवान से, उस अत्यंत बुद्धिमान भगवान से।

“मैं उस व्यक्ति से दूर नहीं रहता”: मैं बुद्ध से दूर नहीं रहता था, उनसे अलग नहीं होता था।

“ब्राह्मण! एक पल के लिए भी”: “एक पल के लिए भी....” “ब्राह्मण,” वह आदरपूर्वक अपने चाचा को पुकारता है।

“परमेश्वर से, जो सर्वव्यापी रूप से बुद्धिमान हैं”: ....

गौतम नामक विशाल ज्ञानी व्यक्ति से: पृथ्वी को विशाल कहा जाता है...

112 · जिसने मुझे धम्म सिखाया: प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देने वाला, तत्काल, प्यास का नाश, आपदा से मुक्ति, जिसके लिए कहीं भी कोई रूपक नहीं है।

“जो मुझे धम्म का उपदेश देता है”: ....

“स्पष्ट रूप से दिखाई देने वाला, तत्काल”: ....

“प्यास बुझना कोई आपदा नहीं है”:...

“इसके लिए, चाहे वह कहीं भी हो, कोई रूपक नहीं है”:...

113 · मैं उसे अपने मन से ऐसे देखता हूँ जैसे अपनी आँखों से, हे ब्राह्मण, दिन-रात, मैं रात को प्रणाम करते हुए बिताता हूँ; इसी कारण मुझे लगता है कि मैंने उसे नहीं छोड़ा है।

"मैं उन्हें अपनी आँखों से, इरादे से देखता हूँ": जिस प्रकार एक व्यक्ति आँखों से प्रकाश में रूप आदि को देख सकता है, निहार सकता है, उसी प्रकार मैं भी बुद्ध, भगवान बुद्ध को इरादे से देखता हूँ, निहारता हूँ, निहारता हूँ और उनका अवलोकन करता हूँ।

"ब्राह्मण, दिन-रात बिना त्यागे": दिन-रात बिना त्यागे, मैं बुद्ध के विचारों का अभ्यास करता हूँ।

"मैं रात प्रणाम करते हुए बिताता हूँ": "प्रणाम करते हुए," शरीर से प्रणाम, शब्दों से प्रणाम, हृदय से प्रणाम, अर्थ से प्रणाम, श्रद्धापूर्वक, या धम्म के प्रति आज्ञापालन में, आदरपूर्वक, प्रणाम करते हुए, श्रद्धापूर्वक, मैं दिन और रात बिताता हूँ।

"इसीलिए, मुझे लगता है कि यहाँ से जाना संभव नहीं है": बुद्ध की उस ध्यान विधि का अभ्यास करते समय, मुझे लगता है कि यहाँ से जाना संभव नहीं है। मुझे लगता है, मुझे पता है कि यहाँ से जाना संभव नहीं है। मुझे ऐसा पता है, मुझे पूरा यकीन है, मैं इसे समझता हूँ, मुझे पक्का पता है, मैं इसे अच्छी तरह जानता हूँ।

114 · आस्था, आनंद, मन, विचार, ये गौतम की शिक्षाओं से विचलित नहीं हुए, जहाँ ज्ञानी व्यक्ति चलता है, मैं उस दिशा में उसका सम्मान करता हूँ।

"विश्वास, आनंद, मन, विचार": "विश्वास," आस्था, विश्वास, भरोसा, अत्यंत शुद्ध आस्था, आस्था का मूल, भगवान बुद्ध में आस्था। "आनंद," भगवान बुद्ध के आनंद, प्रसन्नता, उल्लास, हँसी, संतुष्टि और हृदय के उत्साह से संबंधित सभी बातें। "विचार": हृदय, इरादा, हृदय, पवित्रता, इरादा, मन, मन का मूल, चेतना और चेतना के संबंधित क्षेत्र से संबंधित सभी बातें। "मन," भगवान बुद्ध के विचारों, स्मरण और जागरूकता से संबंधित सभी बातें।

"ये गौतम की शिक्षाओं से विचलित नहीं हुए": ये चार विधियाँ गौतम बुद्ध, विजेताओं, तथागतों, अरहंतों की शिक्षाओं से विचलित नहीं हुईं; छोड़ दो, गायब हो जाओ।

"जहाँ ज्ञानी चलता है": "जहाँ ज्ञानी जाता है": दिशा चाहे पूर्व हो, पश्चिम हो, दक्षिण हो या उत्तर, वह उसी दिशा में चलता है, जाता है और आगे बढ़ता है। "तेज ज्ञानी", "विशाल ज्ञानी", "महान ज्ञानी", "बुद्धिमान", "तेज ज्ञानी", "समझदार ज्ञानी"; पृथ्वी को विशाल कहा जाता है, और भगवान बुद्ध के पास भी पृथ्वी के समान ही विशाल ज्ञान है।

"मैं इस दिशा में उनका सम्मान करता हूँ": वह व्यक्ति जो बुद्ध के मार्गदर्शन का आदर करता है, वह व्यक्ति जो उस दिशा में निर्देशित होता है, वह व्यक्ति जो प्रयास करता है, वह व्यक्ति जो विजय प्राप्त करने वाले की ओर झुकता है, वह व्यक्ति जो उन्नति करता है।

115 · मेरी वृद्धावस्था और कमजोरी के कारण, मेरा शरीर वहाँ नहीं चल सकता, इसलिए मैं अपने विचारों के साथ निरंतर चलता रहा, हे ब्राह्मण, क्योंकि मेरा मन उससे एकाग्र है।

"बुढ़ापे के कारण, कमजोरी": मैं बुढ़ापे के कारण बूढ़ा हो गया हूँ, वृद्धावस्था में पहुँच गया हूँ, और वृद्धावस्था में पहुँच गया हूँ। "कमजोरी के कारण," शक्तिहीनता के कारण, कम शक्ति के कारण, शक्ति में कमी के कारण।

"शरीर वहां चलकर नहीं जाता": शरीर चलता नहीं है, जाओ, आगे बढ़ो, बुद्ध के पास जाओ।

"मैं निरंतर अपने विचारों के साथ चलता हूँ": मैं चिंतन की अवस्था में, मनन की अवस्था में, ज्ञान की अवस्था में, जागरूकता की अवस्था में, और आगे बढ़ने, चलने और प्रगति करने की अवस्था में चलता हूँ।

"ब्राह्मण, क्योंकि मेरा मन उनसे एकाग्र है": "मन": हृदय, मन, ... उस चेतना के अनुरूप हैं। "ब्राह्मण, क्योंकि मेरा मन उनसे एकाग्र है": मन बुद्ध से एकाग्र है, उनसे बंधा हुआ है, पूर्णतः बंधा हुआ है।

116 · कीचड़ में पड़ा हुआ और कांपता हुआ, मैं एक द्वीप से दूसरे द्वीप पर बहता रहा, फिर मैंने प्रबुद्ध व्यक्ति को देखा: वे जिन्होंने बाढ़ पार कर ली है, वे जिन्हें कोई कष्ट नहीं है।

"कीचड़ में लेटे हुए कांपना": "कीचड़ में लेटे हुए," इच्छा के कीचड़ में, इच्छा के दलदल में, इच्छा की गंदगी में, इच्छा के फँसाव में, इच्छा की गर्मी में; इच्छा की बाधाओं में लेटे रहना, निवास करना, जीना। "कांपना," प्यास की धड़कनों से कांपना, ...देखते हुए..., गंदगी, प्रयास, प्रतिशोध, जानबूझकर किए गए कर्म, लोभ, क्रोध, मूर्खतापूर्ण मूर्खता; आलस्य से बंधे हुए, विचारों से चिपके रहना, जो देखा है उसे ग्रहण करना, बिखरा हुआ (अव्यवस्थित), संदिग्ध विफलता, कष्टों की पीड़ादायक संभावित प्रवृत्तियों के साथ; लाभ के कारण, लाभहीनता के कारण, प्रसिद्धि के कारण, प्रसिद्धिहीनता के कारण, प्रशंसा के कारण, निंदा के कारण, सुख के कारण, पीड़ा के कारण; जीवन, वृद्धावस्था, बीमारी, मृत्यु, शोक और निराशा, नरक की पीड़ा, पशु जगत की पीड़ा, भूखे प्रेत जगत की पीड़ा...; गर्भ में प्रवेश करने की पीड़ा की जड़ के साथ, ...गर्भ में रहना, ...जन्म, ...जीना..., दूसरों की दया पर होना, अपने कर्मों पर, दूसरों के कर्मों पर निर्भर होना; आँखों के रोग, कान, नाक, जीभ, शरीर, सिर, बाहरी कान, मुँह, दाँत, होंठ, खाँसी, साँस, बाहरी नाक का रोग, बुखार, बुढ़ापा, पेट की बीमारी, कोमा, पेचिश, पेट दर्द, हैजा, कुष्ठ रोग, ट्यूमर, दाद, फेफड़ों की बीमारी, मिर्गी, खुजली, गठिया, खुजली (त्वचा रोग), सूखी और फटी त्वचा, पित्ताशय की बीमारी, मधुमेह, बवासीर, चकत्ते, अल्सर, पित्ताशय से होने वाले रोग, कफ, वात रोग, तीनों प्रकार के रोगों के रोग, ऋतुओं से होने वाले रोग, गलत मुद्राओं से होने वाले रोग, अचानक होने वाले रोग, कर्मों के फल से होने वाले रोग, सर्दी, गर्मी, भूख, प्यास, मल, मूत्र, मक्खी, मच्छर, (हवा), सूर्य और साँप के संपर्क से होने वाला दर्द; माता, पिता, भाई, बहन, पुत्र, पुत्री की मृत्यु का कष्ट, रिश्तेदारों की हानि, धन की हानि, बीमारी से होने वाली हानि, क्षय; धड़क रहा था, पूरा शरीर कांप रहा था, (तेज) कांप रहा था, क्षय को देखकर दर्द से बुरी तरह कांप रहा था।

"मैं एक द्वीप से दूसरे द्वीप तक बहता रहा": एक गुरु से दूसरे गुरु तक, एक धम्म से दूसरे धम्म तक, एक समूह से दूसरे समूह तक, एक दृष्टिकोण से दूसरे दृष्टिकोण तक, एक मार्ग से दूसरे मार्ग तक, एक पथ से दूसरे पथ तक, मैं बहता रहा, बहता रहा, पूरी तरह से बहता रहा।

"तब मैंने प्रबुद्ध व्यक्ति को देखा": "तब," वाक्य का आगे का भाग... "देखो," देखना, पहुँच पाना, समझना। "प्रबुद्ध व्यक्ति," अर्थात् भगवान...

"जो बाढ़ पार करते हैं, जिन्हें कोई कष्ट नहीं होता": "जो बाढ़ पार करते हैं," भगवान बुद्ध वे हैं जिन्होंने इच्छा की बाढ़, अस्तित्व की बाढ़, दृष्टि की बाढ़ और अज्ञान की बाढ़ को पार किया है, और पुनर्जन्म के सभी चक्रों को पार कर लिया है। वे वे हैं जो अवतरित हुए हैं... "जिन्हें कोई कष्ट नहीं होता" चार प्रकार के कष्टों में: इच्छा के कष्ट, अस्तित्व के कष्ट, दृष्टि के कष्ट और अज्ञान के कष्ट। ये कष्ट बुद्ध और भगवान बुद्ध के लिए त्याग दिए गए हैं, टूट गए हैं, जड़ से काट दिए गए हैं, ..., इसलिए बुद्ध को कष्ट रहित कहा जाता है।

117 · (भगवान:) जिस प्रकार वक्कली ने विश्वास भेजा है, और भद्रावुधा और आलवी गौतम ने, हे पिंगिया, तुम भी विश्वास भेजो! तब तुम मृत्युलोक से परे जाओगे।

"वक्कली आस्था का संदेशवाहक है, साथ ही भद्रावुधा और आलवी गौतम भी": वक्कली एक विश्वासी है, एक गंभीर विश्वासी है, आस्थावान नेता है, समस्याओं का समाधान खोजने वाला विश्वासी है, और अरहंत की अवस्था प्राप्त कर चुके विश्वासी हैं, जैसे भद्रावुधा, ...जैसे आलवी गौतम...

"इसी प्रकार, आपको भी आस्था का प्रसार करना चाहिए": उसी प्रकार, आपको आस्था को मुक्त करना चाहिए, उत्पन्न करना चाहिए, पूर्णतः उत्पन्न करना चाहिए, बढ़ाना चाहिए, भेजना चाहिए और स्थिर करना चाहिए: "सभी कर्म अनित्य हैं," आपको उन्हें मुक्त करना चाहिए...; "सभी कर्म दुखदायी हैं"...; "सभी धर्म अनात्ममय हैं"...; "धर्मों का कोई भी संग्रह धर्मों का संहार है"...

“पिंगिया! तुम मृत्यु के देवता के लोक में जाओगे”: मृत्यु के देवता का लोक प्रदूषण और विभिन्न समुच्चयों और सृष्टियों से बना है; मृत्यु के लोक के उस पार को निर्जीव और निर्वाण कहा जाता है, अर्थात् सभी कर्मों का अंत, सभी आसक्तियों का अंत, भोग-विलास का अंत, और निर्वाण। “पिंगिया! तुम मृत्यु के लोक में जाओगे”: तुम उस पार जाओगे, उस पार पहुँचोगे, उस पार की परीक्षा लोगे, उस पार की गवाही दोगे।

118 · (पिंगिया:) इस प्रकार मुझे और अधिक आत्मविश्वास प्राप्त होता है: मुनि के वचन सुनने के बाद, जिसने आवरण खोला, प्रबुद्ध व्यक्ति, निर्जन व्यक्ति नहीं, और वाक्पटु व्यक्ति।

“इस तरह मुझे अधिक आत्मविश्वास प्राप्त होता है”: इस तरह मुझे अधिक आत्मविश्वास प्राप्त होता है, मैं अधिक आत्मविश्वासी हूँ, मैं अधिक भरोसेमंद हूँ, मैं अधिक विजयी हूँ: “सभी कर्म अनित्य हैं,” मैं अधिक आत्मविश्वासी हूँ...; “सभी कर्म दुखदायी हैं”...; “सभी धर्म निस्वार्थ हैं”...; “कोई भी संग्रह विनाश है”...

“मुनि के वचन सुनने के बाद”: “मुनि”.... “मुनि के वचन सुनने के बाद”: आपका भाषण, भाषा, शिक्षा, उपदेश, सुनने, समझने, विवेक करने के बाद।

“जिसने आवरण को खोल दिया है, वही प्रबुद्ध है”: “आवरण” पाँच प्रकार के आवरण हैं: भोग का आवरण, दृष्टि का आवरण, अपवित्रता का आवरण, बुरे कर्मों का आवरण, अज्ञान का आवरण; बुद्ध और भगवान बुद्ध के लिए, ये आवरण खुल गए हैं, नष्ट हो गए हैं, खुल गए हैं, पूरी तरह से खुल गए हैं, कट गए हैं, अलग हो गए हैं, शांत हो गए हैं, रुक गए हैं, उत्पन्न नहीं हो सकते, ज्ञान की अग्नि से जल गए हैं। इसलिए, बुद्ध ही वह हैं जिन्होंने आवरण को खोल दिया है। “प्रबुद्ध”...

“जो निराश नहीं हैं, जो वाक्पटु हैं”: लोभ की निराशा, क्रोध की निराशा, अज्ञान की निराशा, क्रोध की निराशा, आक्रोश की निराशा... बुद्ध और भगवान बुद्ध के लिए, ये सभी दूर हो चुके हैं... इसलिए, बुद्ध निराश नहीं हैं।

“जिनमें वाद-विवाद की क्षमता होती है,” वाद-विवाद की क्षमता रखने वाले तीन प्रकार के लोग होते हैं: ज्ञान प्राप्त करने वाले, प्रश्न पूछने वाले और सिद्ध करने वाले। एक विद्वान वाद-विवादकर्ता कौन होता है? यहाँ, एक विशेष प्रकार के लोग बुद्ध की भाषा (बुद्ध की शिक्षाओं) के विद्यार्थी होते हैं: सुत्त, गेय्या, वेय्याकरण, गाथा, उदाना, इतिवुत्तक, जातक, अब्भूत धम्म, वेदल्ल, जो अपने ज्ञान पर निर्भर रहते हैं, वही एक विद्वान वाद-विवादकर्ता होते हैं।

बार-बार प्रश्न पूछने वाला वाद-विवादकर्ता कौन होता है? यहाँ एक विशेष प्रकार का व्यक्ति अपने हितों, न्याय, विशेषताओं, कारणों, संभावनाओं और असंभवताओं के आधार पर प्रश्न पूछता है, और यह प्रश्न पूछने के बाद ही प्रकट होता है। यही बार-बार प्रश्न पूछने वाला वाद-विवादकर्ता है।

सिद्ध वाद-विवादकर्ता कौन होता है? यहाँ, एक विशेष प्रकार का व्यक्ति वह होता है जिसने चार प्रकार की चेतना, चार प्रकार के धर्म, चार प्रकार के दिव्य आधार, पाँच इंद्रियाँ, पाँच शक्तियाँ, सात प्रकार के ज्ञान, आठ प्रकार के पवित्र मार्ग, चार प्रकार के समण फल, चार प्रकार के वाद-विवाद और छह प्रकार की जादुई शक्तियों को प्राप्त किया हो। जिन्होंने तर्क, विधि और वचन को जाना है, वे ही ज्ञात सिद्धांत में रक्षा करते हैं, ज्ञात धर्म में धर्म की रक्षा करते हैं और ज्ञात शब्दों में शब्दों की रक्षा करते हैं। तीनों प्रकार के ज्ञान में कोई बाधा नहीं आती। ज्ञान को समझना, भगवान... इस तर्क को जानने से ज्ञान को समझने में कोई बाधा नहीं आती। इसलिए, बुद्ध एक प्रतिभाशाली व्यक्ति हैं। यदि उन्होंने सीखा, प्रश्न किया और सिद्ध नहीं किया, तो वे क्या उत्तर देंगे?

119 · सर्वोच्च स्वर्ग को सिद्ध करने (प्रत्यक्ष रूप से जानने) के बाद, उन्होंने सब कुछ समझ लिया, गुरु सभी प्रश्नों का अंत करते हैं, और संशयवादी इसे स्वीकार करते हैं।

“परम स्वर्ग का ज्ञान”: “स्वर्ग,” तीन प्रकार के स्वर्ग हैं: ...(विलुप्त, पिछले खंड देखें)। भगवान बुद्ध ने सांसारिक स्वर्ग के “परम स्वर्ग”, पुनर्जन्म के स्वर्ग के “परम स्वर्ग”, और शुद्ध स्वर्ग के “परम स्वर्ग” को समझने, तौलने, निर्णय लेने, अलग करने और स्पष्ट करने के बाद जान लिया।

"वह सब कुछ समझते हैं": भगवान बुद्ध परम स्वर्ग के मार्ग को स्वयं और दूसरों के लिए भलीभांति समझते हैं, जानते हैं, अनुभव करते हैं और उसमें गहराई से समाहित करते हैं। परम स्वर्ग का मार्ग क्या है? सही मार्ग, मार्ग का अनुसरण..., आठ पवित्र मार्ग, इन्हें ही परम स्वर्ग के मार्ग कहा जाता है।

दूसरों के परम स्वर्ग तक पहुँचने का मार्ग क्या है? सही मार्ग..., आठ पवित्र मार्ग, इन्हें दूसरों के परम स्वर्ग तक पहुँचने के मार्ग के रूप में जाना जाता है। इस मार्ग से भगवान स्वयं और दूसरों के परम स्वर्ग को समझते हैं, जानते हैं, पहुँचते हैं और उसमें प्रवेश करते हैं।

"गुरु ही समस्याओं (प्रश्नों) का अंत करने वाले हैं": "भगवान ही समस्याओं का अंत करने वाले, परम, सीमा, वृत्त (निष्कर्ष), रूप की समस्या का अंत, परम, ...सुने गए प्रश्न का..., भिक्षु का, भिक्षुणी का, पुरुष गृहस्थ भक्तों का, स्त्री गृहस्थ भक्तों का, राजा की समस्या का, क्षत्रिय समस्या का, ...ब्राह्मण..., वेस, शुद्ध, आत्माओं, देवताओं का; परम, सीमा देने वाले और निष्कर्ष हैं।"

हे प्रभु, भगवान बुद्ध कारवां के नेता के समान ही सर्वोत्कृष्ट हैं, जो सभी प्राणियों को संकट के क्षेत्र से पार कराते हैं: चोरों, जानवरों, भूख और जल की कमी के संकट से उन्हें पार कराते हैं, उन्हें पार कराते हैं और उन्हें स्थिरता के अंतिम स्थान तक पहुंचाते हैं। इसी प्रकार, भगवान बुद्ध कारवां के नेता हैं और सभी प्राणियों को संकट के क्षेत्र से पार कराते हैं: जीवन, वृद्धावस्था, रोग, मृत्यु, दुःख, शोक, पीड़ा, चिंता, निराशा, लोभ, क्रोध, मूर्खता, अहंकार, दृष्टि, अपवित्रता और बुरे कर्मों के संकट से उन्हें पार कराते हैं; लोभ के घने जंगल, क्रोध के घने जंगल, मूर्खता, अहंकार, दृष्टि, अपवित्रता और बुरे कर्मों के जंगल को पार कराते हैं; उन्हें बाहर निकालते हैं, उन्हें पार कराते हैं, उन्हें स्थिरता, निर्जीवता और निर्वाण तक पहुंचाते हैं।

या यूँ कहें कि भगवान बुद्ध मार्गदर्शक, मध्यस्थ, दिलासा देने वाले, सूचना देने वाले, सचेतन, प्रत्यक्षदर्शी और स्पष्ट करने वाले हैं। या यूँ कहें कि भगवान बुद्ध अजन्मे मार्ग के संस्थापक, अजन्मे मार्ग के निर्माता, अघोषित उपदेशक हैं; वे मार्ग को जानने वाले, मार्ग के ज्ञाता, मार्ग के परिचित हैं, और उनके शिष्य वर्तमान में मार्ग की संगति में रहते हैं और भविष्य में भी इसके अनुयायी होंगे।

"संदेहकर्ता की स्वीकृति": जब संशयकर्ता आता है, तो वह संशयमुक्त हो जाता है; जब चिह्नों से युक्त व्यक्ति आता है, तो वह चिह्नरहित हो जाता है; जब संशय से ग्रसित व्यक्ति आता है, तो वह संशयमुक्त हो जाता है; लोभ, क्रोध, अज्ञान, अपवित्रता आदि के साथ...

120 · जो हिल नहीं सकता, जिसे डगमगाया नहीं जा सकता, जिसके लिए कोई उपमा नहीं है, चाहे कहीं भी हो, मैं निश्चय ही वहाँ जाऊँगा (निब्बान की ओर), मुझे यहाँ कोई संदेह नहीं है, इसलिए कृपया मुझे विजयी मन वाले व्यक्ति के रूप में याद रखें।

"जो हिल नहीं सकता, उसे डगमगाया नहीं जा सकता": जो हिल नहीं सकता, उसे निर्जीव, निर्वाण कहते हैं, जो सभी कर्मों का अंत है... "हिल नहीं सकता," न लालच कर सकता है, न क्रोधित हो सकता है, न अज्ञानी हो सकता है, न द्वेषी हो सकता है, न बुराई छुपा सकता है, न प्रभुत्वशाली हो सकता है, न ईर्ष्यालु हो सकता है, न कंजूस हो सकता है, न छल कर सकता है, न चालाक हो सकता है, न हठी हो सकता है, न भावुक हो सकता है, न अहंकारी हो सकता है, न ही आराम कर सकता है, न ही सभी प्रकार के अपवित्र कर्म कर सकता है, न ही सभी प्रकार की गर्मी से प्रभावित हो सकता है, न ही सभी प्रकार की पीड़ाओं से, न ही सभी प्रकार की पीड़ाओं से, न ही सभी प्रकार की जलन से, न ही सभी प्रकार के अस्वस्थ कर्मों से प्रभावित हो सकता है; निर्वाण स्थायी, दृढ़, शाश्वत और अपरिवर्तनीय है।

"जो हिल नहीं सकता," जो हिल नहीं सकता, उसे निर्जीव, निर्वाण कहा जाता है... निर्वाण के लिए, उसका उद्भव ज्ञात नहीं है, वह नष्ट नहीं होता, उसका परिवर्तन ज्ञात नहीं है, और निर्वाण स्थिर, दृढ़, शाश्वत और अपरिवर्तनीय है।

"उसके लिए, चाहे वह कहीं भी हो, कोई रूपक नहीं है": "उसके लिए," निर्वाण के लिए। "कोई रूपक नहीं है,"...

"निःसंदेह मैं जाऊँगा, और मुझे यहाँ कोई संदेह नहीं है": "निःसंदेह," यही निर्णायक भाषा है, निर्विवाद भाषा... "मैं जाऊँगा," मैं जाऊँगा, मैं पहुँचूँगा, मैं आऊँगा, मैं गवाही दूँगा। "मुझे यहाँ कोई संदेह नहीं है," "यहाँ," कोई संदेह नहीं है, कोई झिझक नहीं है, निर्वाण का कोई संदेह नहीं है, जो

अस्तित्वहीन है, जिसका कोई ज्ञात अस्तित्व नहीं है, जो अज्ञात है, जो कटा हुआ है, जो विच्छेदित है, जो शांत है, जो रुका हुआ है, जो उठने में असमर्थ है, जो ज्ञान की अग्नि से झुलसा हुआ है।

"कृपया मुझे इस प्रकार याद रखें, जैसे मेरा मन विजयी है": "कृपया मुझे इस प्रकार याद रखें," कृपया मुझे इस प्रकार पहचानें। "विजयी मन," वे जो निर्वाण की ओर अग्रसर होते हैं, वे जो निर्वाण की ओर अग्रसर होते हैं, वे जो निर्वाण को प्राप्त करते हैं।

दूसरी तरफ का रास्ता पूरा हो चुका है।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> निद्देसा >> निद्देसा 2.बी.1

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

<<<< पिछला अगला >>>>

गैंडा सूत्र की व्याख्या
पहला अध्याय
(मैंने "गैंडा सींग" के बजाय "गैंडा" शब्द का प्रयोग करना चुना है; इस बारे में कुछ बहस है, लेकिन किसी न किसी तरह का निर्णय लेना ही था। दोनों ही स्थितियों में श्लोकों का संदेश एक ही है।)

121 · सभी जीवित प्राणियों के विरुद्ध दंड (दंड/हिंसा) को त्यागने के बाद, उनमें से किसी को भी चोट न पहुँचाते हुए, आपको पुत्र की इच्छा नहीं रखनी चाहिए, साथी की तो बात ही छोड़िए; आपको गैंडे की तरह अकेले चलना चाहिए।

"सभी जीवित प्राणियों के विरुद्ध दंड डालने के बाद": "सभी प्राणी," सब कुछ पूर्णतः, हर पहलू में पूर्णतः, बिना किसी अतिरिक्तता के, और संपूर्ण, यही सर्वव्यापकता का शब्द है, जिसका अर्थ है "सब कुछ।" "छात्र" को दुर्बल और बलवान कहा जाता है। "कायर" वे हैं जो कांपते हैं और जो अपनी प्यास से मुक्त नहीं हुए हैं, साथ ही वे भी जो भयभीत हैं और अपनी प्यास से मुक्त न होने से डरते हैं। उन्हें कायर क्यों कहा जाता है? वे कांपते हैं, भयभीत होते हैं, आतंकित होते हैं, और इसी कारण उन्हें कायर कहा जाता है। "बलवान" वे हैं जो कांपने और प्यास से मुक्त हो गए हैं, और जो भय और आतंक से मुक्त हो गए हैं। उन्हें बलवान क्यों कहा जाता है? वे कांपते नहीं हैं, भयभीत नहीं होते, आतंकित नहीं होते, और इसी कारण उन्हें बलवान कहा जाता है। "दंड," तीन प्रकार के होते हैं: शरीर के लिए दंड, वाणी के लिए दंड, और मन के लिए दंड। शरीर के लिए तीन प्रकार के दंड हैं, बुरे कर्मों के लिए चार प्रकार के दंड हैं और बुरी मंशाओं के लिए तीन प्रकार के दंड हैं।

किसी को भी हानि न पहुँचाना: किसी भी सजीव प्राणी के जीवन को मिट्टी के ढेलों, डंडों, तलवारों, जंजीरों या रस्सियों से चोट नहीं पहुँचाई जाएगी। किसी भी जीवित प्राणी पर मिट्टी, डंडे, छड़ें, तलवारें, जंजीरें या रस्सियों का प्रयोग न करें।

"पुत्र की इच्छा नहीं रखनी चाहिए, अन्य साथियों की तो बात ही छोड़िए।" "नहीं" का अर्थ नकारात्मक है। "पुत्र," चार प्रकार के पुत्र होते हैं: स्वयं के पुत्र, खेत में जन्मे पुत्र, गोद लिए पुत्र और प्रशिक्षु पुत्र। "साथी," जिसके साथ सुखद संबंध हो, सुखद मिलन हो, सुखद संवाद हो, सुखद खड़े होना हो, सुखद बैठना हो, सुखद लेटना हो, सुखद बातचीत हो, सुखद वार्ता हो, सुखद बातचीत हो, सुखद संवाद हो, सुखद वार्ता हो, सुखद वार्ता हो, सुखद संवाद हो, उसे साथी कहते हैं। "पुत्रों की इच्छा नहीं रखनी चाहिए, साथियों की तो बात ही छोड़िए": पुत्र की इच्छा नहीं रखनी चाहिए, स्वीकार नहीं करना चाहिए, आशा नहीं करनी चाहिए, न ही प्रार्थना करनी चाहिए; परिचितों की भी नहीं...; न ही किसी करीबी व्यक्ति या साथी की।

"व्यक्ति को गैंडे की तरह अकेले चलना चाहिए": "अकेला," अकेला प्रबुद्ध व्यक्ति भिक्षु बनकर अकेला है, साथी के बिना धर्म में अकेला है, प्रेम की प्यास के धर्म में अकेला है, "हमेशा लोभ से मुक्त" अकेला है, "हमेशा क्रोध से मुक्त" अकेला है, "हमेशा भ्रम से मुक्त" अकेला है, "हमेशा अपवित्रता से मुक्त" अकेला है, "बिना मोड़ वाले मार्ग को पार करके" अकेला है, "सर्वोच्च आत्मज्ञान को पहले ही प्राप्त कर चुका" अकेला है।

वह अकेला प्रबुद्ध व्यक्ति भिक्षु कैसे बना? उस अकेले प्रबुद्ध व्यक्ति ने गृहस्थी के सभी बंधनों को तोड़कर, बच्चों और पत्नी, रिश्तेदारों, मित्रों, भंडारगृहों के बंधनों को हटाकर, अपने बाल मुंडवाकर, वस्त्र धारण करके, गृहस्थ भिक्षु जीवन से निर्गृहस्थ जीवन में प्रवेश किया, और शून्यता की अवस्था में पहुंचकर, वह चला, जिया, चला, रक्षा की और जीवित रहा।

ऐसा कैसे संभव है कि वह अकेला प्रबुद्ध व्यक्ति, जो बिना साथी के अकेला हो? जब वह ऐसा भिक्षु था, तो वह जंगलों, घने वनों और सीमावर्ती आवासों (बैठने के स्थानों) में अकेला रहता था: शांत, वातावरण से दूर, अकेले रहना, अकेले बैठने के लिए उपयुक्त; वह अकेले चलता, अकेले खड़ा होता, अकेले बैठता, अकेले लेटता, भिक्षा मांगने के लिए अकेले गाँव जाता, अकेले आगे बढ़ता, अकेले लौटता, शांत स्थान पर अकेले बैठता, अकेले कर्म करता, अकेले चलता, अकेले रहता, चलता, आगे बढ़ता, रक्षा करता और अकेले ही जीवित रहता।

प्रेम और धर्म की प्यास में डूबा हुआ अकेला प्रबुद्ध व्यक्ति अकेला कैसे हो सकता है? वह इतना अकेला और बिना साथी के है कि उसे अनिच्छा, उत्साह, आत्म-प्रयास, महान परिश्रम और लगन से जीवन व्यतीत करना चाहिए, सेना से घिरे राक्षस, दुष्ट राक्षस, मुक्त व्यक्ति के रिश्तेदारों, जाल, शक्तिशाली गतिशील, उलझे हुए प्रेम की प्यास को त्यागकर, उसे दूर भगाकर, उसका अंत करके, उसे अस्तित्वहीन कर देना चाहिए।

"जिन लोगों का साथी प्यासी प्रेम होता है, वे लंबे समय तक पुनर्जन्म लेते हैं, ऐसी अवस्था में पहुँच जाते हैं, अन्य अवस्थाओं में पहुँच जाते हैं, पुनर्जन्म से परे नहीं जा पाते। इस प्रकार के कष्ट को जानकर: लालसा ही दुख का मूल है, प्यासी प्रेम से विमुख होकर, बिना कुछ ग्रहण किए, भिक्षुओं को सचेतन होकर आगे बढ़ना चाहिए।" [इत.15/स्न.3.12,745-746]

जो व्यक्ति ज्ञान की अवस्था में अकेला है, वह कैसे यह मान सकता है कि वह हमेशा लोभ से मुक्त है, वह भी अकेला है? "लोभ की अवस्थाओं में से एक को लोभ का त्याग करना" को अकेलापन मानना है, लोभ की अवस्थाओं में से एक में लोभ का त्याग करना अकेलापन है, अज्ञान का त्याग करने की अवस्थाओं में से एक में अकेलापन है, और अज्ञान का त्याग करने की अवस्थाओं में से एक में अकेलापन है।

वह अकेला प्रबुद्ध व्यक्ति अकेले ही बिना मोड़ वाले मार्ग को कैसे पार कर सकता है? बिना मोड़ वाले मार्ग को चार चेतनाएँ, चार धर्म, चार दिव्य आधार, पाँच इंद्रियाँ, पाँच शक्तियाँ, सात ज्ञान के कारक और आठ पवित्र मार्ग कहा जाता है।

"जो जीवन की मृत्यु (पुनर्जन्म) को देखता है, जो करुणामय है, जो बिना मोड़ वाले मार्ग को जानता है, इसी मार्ग से उन्होंने अतीत में बाढ़ पार की, भविष्य में भी पार करेंगे, और वर्तमान में भी पार कर रहे हैं।" [SN.47.18]

वह अकेला प्रबुद्ध व्यक्ति अकेले ही कैसे प्रबुद्ध हुआ है, सर्वोच्च स्वतंत्र प्रबुद्धता अकेले ही कैसे प्राप्त हुई है? प्रबुद्धता को बुद्धि, बुद्धि का मूल, बुद्धि की शक्ति, अन्वेषण, विपश्यना और चारों लोकों में सही दृष्टि कहा जाता है। जो मार्ग से स्वतंत्र रूप से प्रबुद्ध हुआ है, पथ से प्रबुद्ध हुआ है और बुद्धि से प्रबुद्ध हुआ है, वह अकेले ही यह अनुभव करता है कि "सभी कर्म अनित्य हैं", "सभी कर्म दुखदायी हैं", "सभी धर्म निस्वार्थ हैं", "ज्ञान कर्मों पर निर्भर है", "ज्ञान नाम और रूप पर निर्भरता है", "स्पर्श छह इंद्रियों पर आधारित है", "अनुभूति स्पर्श पर आधारित है", "अनुभूति प्रेम की प्यास पर निर्भरता है", "प्यास और प्रेम... ग्रहणशीलता के लिए", "ग्रहणशीलता... अस्तित्व के लिए", "अस्तित्व (जन्म)... जन्म के लिए", "जन्म... वृद्धावस्था और मृत्यु के लिए"। "अज्ञान का नाश"..., निर्माण का, ...चेतना का, ...नाम और रूप का..., (छोड़ा गया); "यह दुख है," ..."यह दुखों का संग्रह है," "यह दुखों का नाश है," यह दुख की ओर ले जाने वाला मार्ग है, "ये कष्ट हैं," "यह कष्टों का संग्रह है," "यह कष्टों की ओर ले जाने वाला मार्ग है," "इन धर्मों को जानना चाहिए," "इन धर्मों का त्याग करना चाहिए," "इन धर्मों की गवाही देनी चाहिए," "इन धर्मों का अभ्यास करना चाहिए;" छह स्पर्शों के संग्रह, विनाश, सुख, कष्ट और त्याग का अनुभव किया; प्रचुरता का संग्रह...; बोध का संग्रह, नाश, सुख, कष्ट और त्याग।

या जहाँ किसी भी चीज़ को महसूस किया जाना चाहिए, सचेत होना चाहिए, जागृत होना चाहिए, प्रबुद्ध होना चाहिए, सिद्ध होना चाहिए, स्पर्श किया जाना चाहिए, गवाही दी जानी चाहिए, सब कुछ केवल उसी के अधीन है - जागरूकता, जागृति, प्रबुद्धता, प्राप्ति, स्पर्श (संपर्क) और गवाही। इस प्रकार, केवल प्रबुद्ध व्यक्ति ही अकेला है।

“क्या करना चाहिए” के संदर्भ में, आठ प्रकार के व्यवहार हैं: प्रतिष्ठा संबंधी व्यवहार, आचरण संबंधी व्यवहार, सचेत व्यवहार, स्थिर व्यवहार, ज्ञान संबंधी व्यवहार, मार्ग संबंधी व्यवहार, प्राप्ति और सांसारिक लाभ। “व्यवहार” चार व्यवहारों से संबंधित है, “चलना” छह आंतरिक और बाह्य क्षेत्रों से संबंधित है, “सचेतनता” चार प्रकार की सचेतनता से संबंधित है, “ध्यान” चार प्रकार के ध्यान से संबंधित है और “ज्ञान” चार आर्य सत्यों से संबंधित है। “मार्ग” चार आर्य मार्गों को संदर्भित करता है, “प्राप्ति” चार समान फलों को संदर्भित करती है और “सांसारिक लाभ” तथागत, अरहंतों, पूर्णतः प्रबुद्ध व्यक्तियों, एकल-प्रबुद्ध व्यक्तियों और शिष्यों को संदर्भित करता है। आचरण का कार्य पर्याप्त प्रतिज्ञाओं वाले व्यक्तियों का है, व्यवहार जड़ों की रक्षा करने वाले व्यक्तियों का है, सचेतनता और व्यवहार उन व्यक्तियों का है जो त्याग नहीं करते, स्थिर व्यवहार मन को बढ़ाने का प्रयास करने वाले व्यक्तियों का है और ज्ञान और व्यवहार पर्याप्त ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों का है। जो लोग ऐसा करते हैं, उनके लिए मार्ग धर्मात्मा व्यक्ति का है, प्राप्ति कर्म प्राप्ति प्राप्त व्यक्ति का है, और संसारिक लाभ के कर्म तथागत, अरहंत, प्रबुद्ध व्यक्ति और प्रबुद्ध व्यक्ति के शिष्यों के हैं।

अगले आठ प्रकार के व्यवहार इस प्रकार हैं: विजयी (जो समस्याओं पर विजय प्राप्त करते हैं) विश्वास के साथ कार्य करेंगे, जो जोश के साथ प्रयास करते हैं वे अपने जोश के साथ कार्य करेंगे, जो दिखावा करते हैं वे विचारों के साथ कार्य करेंगे, जो स्थिर रहते हैं और विचलित नहीं होते वे दृढ़ संकल्प के साथ कार्य करेंगे, जो जानते हैं वे बुद्धिमत्ता के साथ कार्य करेंगे, जो ज्ञान के साथ चलना जानते हैं, इस प्रकार, जो मार्ग पर चलते हैं वे सभी अच्छे धर्मों को जीवित रखते हैं। "चलने के लिए चलना," इस प्रकार मार्ग पर चलने वाले उत्कृष्टता प्राप्त करते हैं।

अगले आठ प्रकार के व्यवहार: धर्मी व्यक्ति का देखने का व्यवहार, धर्मी व्यक्ति का (हृदय-)उन्मुख व्यवहार, धर्मी व्यक्ति का लेने और ग्रहण करने का व्यवहार, धर्मी व्यक्ति का निर्दोष व्यवहार, धर्मी व्यक्ति का मेहनती व्यवहार, सचेत व्यक्ति की वर्तमान क्रिया, सही मन वाले व्यक्ति की अविभाजित क्रिया [भजन संहिता 1,12]।

“गैंडे की तरह,” गैंडा सचमुच अद्वितीय होता है। उसी प्रकार, जो अकेला ही ज्ञानी होता है, वह उसी के समान, उसी के समतुल्य और उसी से भिन्न होता है। यदि कोई चीज़ बहुत नमकीन हो, तो उसे नमकीन कहा जाता है, यदि वह बहुत कड़वी हो, तो उसे कड़वाहट कहा जाता है, यदि वह बहुत मीठी हो, तो उसे शहद के समान कहा जाता है, यदि वह बहुत गर्म हो, तो उसे आग के समान कहा जाता है, यदि वह बहुत ठंडी हो, तो उसे बर्फ के समान कहा जाता है, और जो शिष्य अलौकिक शक्ति प्राप्त कर लेते हैं, उन्हें गुरु कहा जाता है। इसी प्रकार, अकेला ज्ञानी व्यक्ति उसी के समान, उसी के समतुल्य, उसी से भिन्न, बिना साथी के (द्वैत रहित), बंधनों से मुक्त होता है, और वह संसार में सही ढंग से चलता है, जीता है और कर्म करता है, रक्षा करता है और जीवन यापन करता है।

122 · संबंधों से प्रेम (स्नेह) उत्पन्न होता है, और प्रेम से दुख उत्पन्न होता है, स्नेह से उत्पन्न होने वाली परेशानी को देखते हुए, किसी को गैंडे की तरह अकेले चलना चाहिए।

“जो संबंध उत्पन्न होता है, उससे प्रेम उत्पन्न होता है”: “संबंध,” दो प्रकार के होते हैं: देखने का संबंध और सुनने का संबंध। देखने का संबंध क्या है? यहाँ, एक विशेष प्रकार के लोग कमल के समान सुंदर मुख वाली, नेक, सुंदर और प्रिय स्त्रियों और कन्याओं को देखते हैं। उन्हें देखकर उनके मन में ये विचार उठते हैं: “बाल, सुंदर चेहरा, अच्छी आँखें, अच्छे कान, ...नाक, होंठ, दाँत, मुँह, गर्दन, स्तन, छाती, पेट, कमर, जांघ, पिंडली, हथेली, तलवा, उंगली, नाखून आदि, सब सुंदर और अच्छे हैं।” देखने के बाद, प्रसन्नता, स्वागत, आशा, मन में ये विचार उत्पन्न होते हैं, और लोभ के बंधन से मुक्त होते हैं। यही देखने का संबंध है।

सुनने का क्या संबंध है? यहाँ, एक विशेष प्रकार के लोगों ने सुना: “ऐसे नाम वाले गाँव या कस्बे में ऐसी स्त्रियाँ या लड़कियाँ रहती हैं जो सदाचारी, सुंदर और सबकी प्रिय हैं, जिनका चेहरा कमल के समान अत्यंत सुंदर है।” यह सुनकर वे प्रसन्न, स्वागतयोग्य और आशावान हो गए, जिससे लालच के बंधन से मुक्ति मिली; यही सुनने का संबंध है।

"प्रेम," प्रेम दो प्रकार का होता है: प्यास का प्रेम और दर्शन (दृष्टिकोण) का प्रेम। प्रेम का प्रेम क्या है? सभी को सीमाएँ, क्षेत्र, दायरे, हदें कहा जाता है, जिन्हें ग्रहण किया जाता है और अपना माना जाता है: यह मेरा है, यह मेरा है, इतने सारे मेरे हैं, यह क्षेत्र मेरा है; (मेरा) रूप, ध्वनि, गंध, स्वाद, स्पर्श, ज़मीन पर फैली वस्तुएँ, वस्त्र, दासियाँ और नौकर, बकरियाँ और भेड़ें, मुर्गियाँ और सूअर, हाथी, गायें और घोड़े, खच्चर, खेत, घर, सोना, सोने के सिक्के, गाँव, कस्बे, राजधानियाँ, स्थान, खजाने, गोदाम, सारी भूमि, क्योंकि वे प्यासे हैं और उन्हें अपना मानते हैं, सभी एक सौ आठ प्यासी प्रवृत्तियाँ [AN.4.199]; यही प्रेम का प्रेम है।

देखने का प्रेम क्या है? शरीर के बीस दृश्य हैं, दस बुरे दृश्य हैं, दस पार्श्व दृश्य हैं, इस प्रकार के सभी दृश्य, बुरे दृश्य, जंगल (उलझे हुए) दृश्य, रेगिस्तान (बंजर) दृश्य, विकृत दृश्य, विचलित दृश्य, आसक्ति, स्वीकृति, पकड़, बंधे हुए दृश्य से आसक्ति, वह स्थान जहाँ बुरा मार्ग, बुरी प्रकृति, बाहरी मार्ग निर्भर करते हैं, विपरियेस का आलिंगन, विपरीत का आलिंगन, विपल्लास, बुराई की पकड़, असत्य में सत्य को देखने की पकड़, ये सभी बासठ बुरे दृश्यों की पहुँच में आते हैं, यही देखने का प्रेम है।

"संबंध से प्रेम उत्पन्न होता है": लालसा वाला प्रेम और दृष्टि वाला प्रेम, देखने और सुनने के संबंध से उत्पन्न होते हैं, जन्म लेते हैं, पैदा होते हैं और प्रकट होते हैं।

"प्रेम का कष्ट उत्पन्न होता है": "प्रेम" दो प्रकार का होता है... "कष्ट उत्पन्न होता है"। यहाँ एक विशेष प्रकार का व्यक्ति शारीरिक, वाणी और नीयत से बुरे कर्म करता है। वह हत्या करता है, बिना कुछ दिए लेता है, दूसरों पर आक्रमण करता है, लूटपाट करता है, रास्ते अवरुद्ध करता है, चोरी करता है और पत्नियों का अपहरण करता है। व्यर्थ बोलते हुए, पकड़े जाने पर वे राजा के पास गए और बोले: "महाराज! यह चोर है, अपराधी है, कृपया इसे दंड दें।" राजा ने उसे फटकारा और उसने इसका दोष अपने ऊपर ले लिया, जिससे भय उत्पन्न हुआ। वह कष्ट और शोक का अनुभव कर रहा था। यह भय, कष्ट और शोक कहाँ से उत्पन्न होता है? यह उसके प्रेम, प्रसन्नता, लोभ और लालच से उत्पन्न होता है।

राजा इस स्थिति से संतुष्ट नहीं था। उसने उसे हथकड़ियों, रस्सियों, बेड़ियों, लताओं, कुडज़ू लताओं से जकड़कर, जंजीरों में डालकर, बाड़ों में बांधकर, गाँव, कस्बे, शहर, देश या किसी स्थान पर बांधकर कैद कर लिया और यहाँ तक कि यह घोषणा भी कर दी: "तुम यहाँ से बाहर नहीं जा सकते।" उसे भी इस बंधन से पीड़ा और दुख का अनुभव हुआ, यह भय, पीड़ा और दुख कहाँ से उत्पन्न हुआ? यह उसके प्रेम, सुख, लोभ और लालच से उत्पन्न हुआ।

राजा इस स्थिति से संतुष्ट नहीं है। वह अपनी संपत्ति अपने से ले जाएगा: सैकड़ों, हजारों या एक लाख (धन)। संपत्ति के नुकसान के कारण उसे दुख और पीड़ा भी हो रही है।

राजा इस स्थिति से संतुष्ट नहीं थे। उन्होंने उस पर अनेक दंड लगाए: कोड़े मारना, डंडे से पीटना, बेंत से पीटना, हाथ-पैर काटना, कान काटना, नाक काटना, खट्टी दलिया से भरा बर्तन में डालने का दंड, सिर मुंडवाने का दंड, राहु के मुख में डालने का दंड, अग्नि से यातना देना, मोमबत्ती से हाथ काटने का दंड, भूत-प्रेत भगाने का दंड, छाल के वस्त्र पहनने का दंड, हिरण से मारने का दंड, काँटे से मांस निकालने का दंड, धन का दंड, क्षार से स्नान कराने का दंड, दरवाज़े के ताले को मरोड़ने का दंड, भूसे से पैर रखने का दंड, गर्म तेल से लथपथ करना, कुत्ते से कटवाना, जीवित अवस्था में शरीर में छेद करना, तलवार से सिर काटना; वह इन दंडों के कारण पीड़ा और दुख भी भोगता है... राजा इन चारों प्रकार के दंडों का स्वामी है।

अपने कर्मों और शरीर के विघटन के कारण, मृत्यु के बाद वह दुख, बुराई, निम्न लोक और नरक के संसार में पुनर्जन्म लेता रहा। जेलरों ने उस पर पाँच प्रकार के दंड लगाए: उन्होंने लाल गर्म लोहे की छड़ को उसकी पहली हथेली से, फिर दूसरी हथेली से और उसके बाद सीने के मध्य भाग से गुज़ारा। उसे कड़वी, भयंकर, हिंसक, [MN.129] तीव्र पीड़ा का अनुभव हुआ और जब तक उसके बुरे कर्म दूर नहीं हो जाते, तब तक उसकी मृत्यु नहीं हुई। यह भय, पीड़ा और दुख कहाँ से उत्पन्न हुआ?...

जेलरों ने उसे लिटाकर कुल्हाड़ी से काट डाला... (अंश हटा दिया गया) जेलरों ने उसे पैरों तले दबाकर छोटी कुल्हाड़ी से काट डाला..., जेलरों ने उसे गाड़ी में जोतकर आग लगा दी, जिससे वह जलती हुई, तेज आग में झुलस गया..., जेलरों ने उसे जलते, चमकते कोयले के ज्वालामुखी पर ऊपर-नीचे चढ़ाया..., जेलरों ने उसे ऊपर-नीचे पकड़कर गर्म, धधकते, जलते, लाल चमकते तांबे के बर्तन में फेंक दिया; वह वहाँ झाग में उबल गया, और एक

बार ऊपर उठा, एक बार नीचे गया, और एक बार इधर-उधर चला गया। उसे कड़वाहट महसूस हुई...। (यह आतंक, पीड़ा और दुख कहाँ से उत्पन्न हुआ?... जेलरों ने उसे नरक में फेंक दिया, और नरक में:)

चारों कोनों में चार द्वार हैं, जो बराबर भागों में विभाजित हैं, लोहे की दीवारों से घिरे हुए हैं, और ऊपर का भाग लोहे से ढका हुआ है। पृथ्वी लोहे की बनी है, और यह आग की ज्वाला से चमक रही है, जो सौ योजन तक चारों ओर व्याप्त है, सदा विद्यमान है। कष्टदायक जलन भयानक है, तेज लपटों के पास जाना कठिन है, पीड़ा के भय से रोंगटे खड़े हो जाते हैं। पूर्वी दीवार से आग का एक गोला निकलता है, जो बुरे कर्मों को जलाते हुए पश्चिम की ओर प्रहार करता है। पश्चिमी दीवार से आग का एक गोला निकलता है, जो बुरे कर्मों को जलाते हुए पूर्व की ओर प्रहार करता है। उत्तरी दीवार से आग का एक गोला निकलता है, जो बुरे कर्मों को जलाते हुए दक्षिण की ओर प्रहार करता है। दक्षिणी दीवार से आग का एक गोला निकलता है, जो बुरे कर्मों को जलाते हुए उत्तर की ओर प्रहार करता है। नीचे से आग का एक गोला निकलता है, जो बुरे कर्मों को जलाते हुए छत की ओर प्रहार करता है। ऊपर से आग का एक गोला निकलता है, जो बुरे कर्मों को जलाते हुए छत की ओर प्रहार करता है। ज़मीन। धधकती हुई लोहे की आग, जलने जैसा दर्द, ठीक इसी तरह यह भयानक नरक ऊपर और नीचे से दिखाई देता है। यहाँ प्राणी अत्यंत क्रूर हैं, जिन्होंने बड़े-बड़े अपराध किए हैं, निरंतर पापी, बिना मरे यातना भोगते हैं। इस नरक में रहने वाले का शरीर आग के समान है, स्थिर कर्म वाले के लिए, आग में न राख होती है न कालिख। वे पूरब की ओर भागते हैं, फिर वहाँ से पश्चिम की ओर; वे उत्तर की ओर भागते हैं, फिर वहाँ से दक्षिण की ओर; वे जहाँ भी भागते हैं, द्वार बंद हो जाते हैं, वे बाहर जाना चाहते हैं, वे मुक्ति की तलाश करते हैं। वे वहाँ से बाहर नहीं जा सकते, उन्हें यह कर्मों के माध्यम से प्राप्त होती है, क्योंकि उन पापियों के प्रचुर कर्म अभी पूरी तरह से परिपक्व नहीं हुए हैं।

यह आतंक, पीड़ा और शोक कहाँ से उत्पन्न हुआ? यह उसके प्रेम, सुख, लोभ, आनंद और लालच से उत्पन्न हुआ।

फिर से, नरक के सभी कष्ट, पशु जगत के कष्ट, प्रेत जगत के भूखे कष्ट, मनुष्य के कष्ट, ये सब कहाँ से उत्पन्न हो रहे हैं, कहाँ पैदा हुए हैं, कहाँ घटित हुए हैं, कहाँ जन्म लिए हैं, कहाँ प्रकट हुए हैं, कहाँ से उत्पन्न हुए हैं? ये प्रेम, सुख, लोभ, आनंद और लोभ को एक शर्त मानकर उत्पन्न होते हैं।

"प्रेम की परेशानियों को देखना": "प्रेम," .... "प्रेम की परेशानियों को देखना": प्रेम के प्रेम और देखने के प्रेम की परेशानियों को उसने देखा, समझा, विचार किया और अवलोकन किया।

123 · जो लोग मित्रों और विश्वासपात्रों पर दया करते हैं, हृदय से बंधे होने के कारण, अपने हितों को खो देते हैं, घनिष्ठ बातचीत में इस खतरे को देखते हुए, किसी को गैंडे की तरह अकेले चलना चाहिए।

"मित्रों और विश्वासपात्रों के प्रति दया भाव रखने से आप अपने हितों को खो देंगे और विवश हो जाएंगे": "मित्रों," दो प्रकार के मित्र होते हैं: घर के मित्र और घर से बाहर के मित्र (सन्यासी)। घर का मित्र कौन होता है? यहाँ, एक विशेष श्रेणी के लोग कठिन परिस्थितियों में भी दान देते हैं, कठिन कार्यों को करते हैं, कठिन परिस्थितियों में भी क्षमा करते हैं, अपना रहस्य बताते हैं, आपका रहस्य सुरक्षित रखते हैं और विपत्तियों में कभी आपका साथ नहीं छोड़ते, वे आपके लिए अपना प्राण भी दे देते हैं [DN.31], जब आप थके हुए होते हैं तो वे आपका तिरस्कार नहीं करते, यही घर का मित्र है।

घर से दूर (सन्यासी) मित्र कौन होता है? यहाँ भिक्षु प्रेमयोग्य, मिलनसार, आदरणीय, प्रशंसनीय, व्याख्याकार, दूसरों के शब्दों के प्रति सहिष्णु और गूढ़ प्रवचनकर्ता (नेतृत्वकर्ता) होता है। वह गैर-वृद्धिकारी उपदेशों पर प्रोत्साहन [एएन.7.37] और अनुनय नहीं करता। वह उसे चार प्रकार के ध्यान अभ्यास में, ...(विलुप्त) अभ्यास के आठ पवित्र मार्गों में अनुनय करता है; यही 'घर से दूर' मित्र है।

जिनके साथ जाने में, आने में, खड़े होने में, बैठने में, लेटने में, बात करने में, बातचीत करने में, संवाद करने में आनंद आता है, उन्हें विश्वासपात्र कहा जाता है। "मित्र, विश्वासपात्र पर दया करना अपने ही हित में हानि है।" मित्र, विश्वासपात्र, परिचित, निकट संबंधी, साथी, विचारशील, शोक संतप्त व्यक्ति अपने हितों, दूसरों के हितों और दोनों के हितों को त्यागकर, वर्तमान जीवन और परलोक के हितों को भी त्यागकर, सर्वोच्च हितों को पीछे हटने, बलपूर्वक पीछे हटने, खो जाने, टाल दिए जाने और समाप्त कर देने का कारण बनता है; जो मित्र और विश्वासपात्रों पर दया करता है, वह हितों को पीछे हटने के लिए प्रेरित करता है।

“हृदय बंधा हुआ है,” हृदय दो प्रकार से बंधा होता है: (स्वयं को) दीन बनाकर और दूसरों को श्रेष्ठ बनाकर, जबकि स्वयं को संयमित रखा जाए; या (दूसरों को दीन बनाकर और स्वयं को श्रेष्ठ बनाकर, जबकि हृदय संयमित रहे। स्वयं को दीन बनाकर और दूसरों को श्रेष्ठ बनाकर तथा दूसरों की चापलूसी कैसे करें? (विचार करते हुए:) “आप मेरे लिए बहुत सहायक हैं, मैं आप पर वस्त्र, भोजन, आश्रय, रोगियों की ज़रूरतें, चिकित्सा संबंधी आवश्यकताएँ प्राप्त करने के लिए निर्भर हूँ, और जो कोई भी देता है या करना चाहता है, वे सोचते हैं कि मैं आप पर निर्भर हूँ, जो लोग आपको अपना मानते हैं, मेरे माता-पिता के सभी पुराने नाम मेरे लिए लुप्त हो गए हैं, क्योंकि आप उन लोगों के रूप में जाने जाते हैं जो अक्सर किसी के घर आते-जाते रहते हैं; जो अक्सर किसी के घर जाते हैं।” यही स्वयं को दीन बनाना, दूसरों को श्रेष्ठ बनाना और उनके हृदयों को बांधना है।

दूसरों को विनम्र कैसे बनाएं और स्वयं को श्रेष्ठ तथा संयमी कैसे बनाएं? (विचार:) “मैं तुम्हारे लिए अच्छा व्यक्ति हूँ। मेरे कारण तुम बुद्ध, धम्म और संघ की ओर मुड़ते हो, हत्या से मुक्त, लेन-देन से रहित, झूठ से मुक्त और मादक पेय न पीने वाले बन जाते हो। मैं तुम्हें उपदेश दूंगा, मुझसे बहुत से प्रश्न पूछो, मैं उपोसथ की व्याख्या करूंगा और मंदिर बनवाऊंगा। परन्तु मुझे त्यागने के बाद तुम दूसरों का आदर, सम्मान और आदर करते हो।” यही दूसरों को विनम्र बनाना और स्वयं को श्रेष्ठ बनाना है, और इससे हृदय बंध जाता है। जो मित्र और विश्वासपात्रों पर दया करते हैं, उनका हित नष्ट हो जाता है और हृदय बंध जाता है।

“घनिष्ठ संवाद (अंतःक्रिया) में भयावहता देखना”: “भय,” जीवन का भय, बुढ़ापे का भय, ...बीमारी, ...मृत्यु, राजा, चोर, आग, पानी, आत्मनिंदा, भय, अन्य, लाठियाँ, लहरें, अजगर, भंवर, मगरमच्छ [AN.4.122], आजीविका, अपमान, कायरता, नशा, समूह में बुरी रुचि, भयानक अकड़न का भय, शरीर के रोंगटे खड़े होना, और हृदय की चिंता का भय। “घनिष्ठ संवाद (अंतःक्रिया) में,” घनिष्ठ संवाद दो प्रकार के होते हैं: प्रेम का और देखने का...। “घनिष्ठ संवाद में इस भयावहता को देखना”: घनिष्ठ संवाद में इस भयावहता को देखा, अनुभव किया और समझा जाता है।

124 · जैसे एक विशाल बांस (पेड़) आपस में उलझ जाता है, वैसे ही वह व्यक्ति जो अपने बच्चों और पत्नियों की परवाह करता है, जैसे एक बांस का अंकुर जो फंसा नहीं होता, उसे गैंडे की तरह अकेले चलना चाहिए।

“जैसे कोई विशाल बांस आपस में उलझ गया हो”: बांस को बांस की झाड़ी कहा जाता है। बांस की झाड़ी में, पुराने बांस फंसे हुए, उलझे हुए, जुड़े हुए, स्थिर और अवरुद्ध होते हैं। यही बात यहाँ भी लागू होती है; आपस में उलझे रहना ही लालसा कहलाता है, यह लोभ, वासना, सहमति, अनुरूपता, आनंद, पसंद, चाहत, इच्छा, मोह, लेना, अत्यधिक लोभ, बंधे रहना, कीचड़, अशांति, पाखंड, (पुनर्जन्म) मूल कारण, (कड़वा) उर्वरता, सिलाई (लालसा), जाल, नदी, बंधन, रस्सी, लगाव, संचय, साथी, इच्छा, अस्तित्व का मार्ग, इच्छा वन (जंगल), घनिष्ठता, प्रेम, प्रत्याशा, संबंध, आकांक्षा, आकांक्षा की अवस्था, रूप की इच्छा, ध्वनि की इच्छा, गंध, स्वाद, स्पर्श, प्राप्ति की इच्छा, मनुष्य की इच्छाएँ (धन), पुत्र की इच्छा, जीने की इच्छा, इच्छा की अवस्था, प्रार्थना, लोभ, लोभपूर्ण रूप, लोभ की अवस्था, पूछताछ (लाभ के लिए), दक्षता की इच्छा, अवैध लोभ, अनुचित लोभ, इच्छा, आशा, ईर्ष्या, पूर्ण आशा, इच्छा की इच्छा, अस्तित्व की इच्छा, शून्यता की इच्छा, सजीव प्यास, निराकार प्यास, विलुप्ति की प्यास, रूप की प्यास, ध्वनि की प्यास, गंध की प्यास, स्वाद की प्यास, स्पर्श की प्यास। धम्म, प्यास, उफान, बंधन, जकड़न, बाधाएं, आवरण, बंधन, साथ ही अशुद्धियाँ, संभावित परेशानियाँ, उलझाव, लताएँ, कंजूसी, दुख के मूल, दुख के कारण, दुख का घटित होना, राक्षस का जाल, राक्षस का कांटा, राक्षस का भोजन (लालच), राक्षस का क्षेत्र, राक्षस का निवास, राक्षस का बंधन, प्यास की नदी, प्यास का जाल, प्यास की रस्सी, प्यास का सागर, लालसा, लोभ और अस्वास्थ्य की जड़।

“प्रेम (जुड़ाव में होना),” प्रेम का क्या अर्थ है? “फैलाव” प्रेम है; “विशालता” प्रेम है; “विस्तार” प्रेम है; “गलत” प्रेम है; “यह विवश करता है” प्रेम है; “यह पकड़ लेता है” प्रेम है; “धोखा” प्रेम है; “विषाक्त जड़” प्रेम है; “विषाक्त फल” प्रेम है; “उपयोग से विषाक्त” प्रेम है; या, "(वह) विशाल प्यास: रूप में..., ध्वनि में..., गंध में, स्वाद में, स्पर्श में, घर में, जनसमूह में, निवास में, लाभ में, ...(छोड़ा गया)..., इच्छा के क्षेत्र में, रूप में, गैर-भौतिक क्षेत्र में, ...प्राप्त करने की इच्छा में..., भौतिक अस्तित्व में..., निराकार में..., चिंतन में..., अचिंतन में..., कल्पनाहीन अस्तित्व में..., एक समग्र अस्तित्व में, चार समूहों में, पांच समूहों में, भूतकाल में, भविष्यकाल में, वर्तमान में, ...उन धर्मों के प्रति विस्तारित आसक्ति जिन्हें देखा, सुना, महसूस किया और जाना जा सकता है।"

“जो कोई भी बच्चों और पत्नियों से चिंतित है”: “बच्चे (पुत्र),” चार प्रकार के पुत्र होते हैं: .... पत्नी को सहारा देने योग्य कहा जाता है। ध्यान को लालसा कहा जाता है, जो लोभ है, ...

“बांस के अंकुर की तरह जो अटका हुआ नहीं है”: बांस को झाड़ी कहा जाता है। उदाहरण के लिए, बांस की झाड़ी में युवा ऊपरी कलियाँ (अंकुर) अटकी हुई, जुड़ी हुई, बंधी हुई या अवरुद्ध नहीं होती हैं, और वे बाहर निकलकर बिना किसी रुकावट के मुक्त हो जाती हैं। उसी प्रकार... “अटका हुआ होना (आसक्ति),” आसक्ति के दो प्रकार हैं: ...; ...अटका हुआ न होना, पकड़ा न जाना, कैद न होना, संसार से बंधा न होना, बंधा न होना, अलग होना, छोड़ा न जाना, मुक्त होना, विरक्त होना, किसी से आसक्त न होना, पकड़ा न जाना, बंधा न होना, बंधन से मुक्त होना, वह संयमित हृदय से जीता है।

125 · जैसे एक स्वतंत्र हिरण जंगल में चलता है, वांछित चरागाह की ओर चलता है, एक बुद्धिमान व्यक्ति, (अपनी) स्वतंत्रता को देखते हुए, एक गैंडे की तरह अकेले चलना चाहिए।

“एक स्वतंत्र हिरण जंगल में चलता है, वांछित चरागाह की ओर जा रहा है”: हिरण दो प्रकार के होते हैं: एक हिरण और दूसरा चित्तीदार हिरण। उदाहरण के लिए, जंगल में रहने वाला हिरण जंगल में चलता है, सहजता से चलता है, सहजता से खड़ा होता है, सहजता से बैठता है और सहजता से लेटता है।

भगवान बुद्ध ने कहा [एमएन.25]: "भिक्षुओं! जैसे जंगल में रहने वाला हिरण, जंगल में चलते समय मन की शांति बनाए रखता है, खड़े होते, बैठते और लेटते समय भी मन की शांति बनाए रखता है। इसका कारण क्या है? भिक्षुओं! वह क्षेत्र क्रूर मनुष्यों के लिए अगम्य है।"

इसी प्रकार, भिक्षुओं! यहाँ, भिक्षु इच्छा और अहितकर धर्म के त्याग से प्राप्त प्रथम ध्यान अवस्था में, तर्क और प्रतीक्षा में, तथा वैराग्य के बाद सुख और आनंद की अवस्था में निवास करते हैं। भिक्षुओं! इसे भिक्षु द्वारा राक्षस को अंधा करना कहते हैं। राक्षस की आँखें नष्ट करने के बाद, राक्षस दृष्टिहीन और अपंग (दुर्भाग्यपूर्ण) अवस्था में प्रवेश करता है।

इसके अलावा, भिक्षुओं! भिक्षु तर्क और चिंतन से शांत, आत्मविश्वासी और एकाग्रचित्त हो जाते हैं। प्रवेश करने के बाद, वे तर्क और चिंतन से रहित द्वितीय ध्यान अवस्था में रहते हैं, और एकाग्रता से आनंद और प्रसन्नता प्राप्त होती है, भिक्षुओं! इसे भिक्षु द्वारा राक्षस को अंधा करना कहते हैं। राक्षस की आँखें नष्ट करने के बाद,...

इसके अलावा, भिक्षुओं! भिक्षु आनंद से विलीन हो जाता है और शांति में रहता है, सचेत रहता है, सही ज्ञान प्राप्त करता है और शरीर से प्रसन्न रहता है। प्रवेश करने के बाद, वह इस पवित्र शिष्य के तीसरे ध्यान में यह घोषणा करते हुए रहता है: 'वह शांत, सचेत और सुखी है।' भिक्षुओं! इसे भिक्षु द्वारा राक्षस को अंधा करना कहते हैं। राक्षस की आँखों को नष्ट करने के बाद, ...

इसके अलावा, भिक्षुओं! चौथे ध्यान में प्रवेश करने के बाद, भिक्षु चौथे ध्यान में रहते हैं जो कष्टदायी या दुखी नहीं होता। चौथे ध्यान में प्रवेश करने के बाद, भिक्षुओं! इसे भिक्षु द्वारा राक्षस को अंधा करना कहा जाता है।

इसके अलावा, भिक्षुओं! भिक्षु सभी कामवासनाओं और विचारों से परे हो जाते हैं, विरोधी विचारों के नाश के साथ, सभी प्रकार के विचारों के बारे में सोचे बिना, (और जानते हैं): 'शून्य असीम है,' प्रवेश करने के बाद, असीम शून्य में निवास करो, भिक्षुओं! इसे भिक्षु द्वारा राक्षस को अंधा करना कहा जाता है।

इसके अलावा, भिक्षुओं! भिक्षु जब सभी शून्यता और असीमता (और ज्ञान) से परे हो जाते हैं: 'चेतना असीम है,' प्रवेश करने के बाद, चेतना की असीमता में जियो... (छोड़ा गया)।

इसके अलावा, भिक्षुओं! (एक भिक्षु,) चेतना (और ज्ञान) के सभी असीम स्थानों को पार करने के बाद: 'कुछ भी नहीं है,' प्रवेश करने के बाद, शून्य में निवास करो...।

इसके अलावा, भिक्षुओं! (एक भिक्षु,) सभी निर्धन वस्तुओं को पार करने के बाद, प्रवेश करने पर, वह उस स्थान पर निवास करेगा जहाँ वह रहना चाहता है...।

इसके अलावा, भिक्षुओं! (एक भिक्षु,) सभी अविवेकी चीजों को पार करके, नष्ट होने की इच्छा में प्रवेश करके, स्थिर रहकर, ज्ञान से देखकर, उसके सभी कष्ट नष्ट हो जाते हैं, भिक्षुओं! इसे भिक्षु द्वारा राक्षस को अंधा करना कहते हैं। राक्षस की आँखों को नष्ट करने के बाद, राक्षस दृष्टिहीनता और पैरों से मुक्त अवस्था में प्रवेश कर जाता है, संसार से अपना लगाव छोड़ देता है। वह मन की शांति से चलता है, मन की शांति से खड़ा होता है, मन की शांति से बैठता है और मन की शांति से लेटता है। इसका कारण क्या है? भिक्षु राक्षस के लिए अगम्य क्षेत्र है।

"ज्ञानी लोग स्वतंत्रता का अवलोकन करते हैं": "ज्ञानी लोग" वे लोग हैं जो ज्ञानी, प्रबुद्ध और विशिष्ट हैं। "मनुष्य" वे सभी प्राणी हैं जो सचेत हैं, मनुष्य हैं, विद्यार्थी ब्राह्मण हैं, व्यक्ति हैं, जीव हैं, जन्म लेने वाले हैं, इंद्र से जन्मे हैं और मनु हैं। "स्वतंत्रता" दो प्रकार की स्वतंत्रता है: धम्म में स्वतंत्रता और मनुष्य के रूप में स्वतंत्रता। धम्म में स्वतंत्रता क्या है? चार चेतनाएँ, चार धर्म... यही धम्म की स्वतंत्रता है। स्वतंत्र मनुष्य कौन है? जो भी इन स्वतंत्रताओं को धारण करता है, उसे स्वतंत्र मनुष्य कहा जाता है। "ज्ञानी लोग स्वतंत्रता का अवलोकन करते हैं": ज्ञानी लोग धम्म की स्वतंत्रता का अवलोकन, निहारना और देखना करते हैं।

126 · साथियों के बीच संबोधित किया जाता है घर पर, खड़े होकर, चलते हुए या यात्रा करते हुए, उस स्वतंत्रता की प्रतीक्षा करते हुए जो वांछित नहीं है, एक को गैंडे की तरह अकेले चलना चाहिए।

"जब वह घर पर रहता है, खड़ा होता है, चलता है, यात्रा करता है": जहाँ भी वह प्रसन्न होता है, जिसके साथ वह आना-जाना पसंद करता है, जिसके साथ खड़ा होना, बैठना, सोना, अच्छी बातें करना, सुखद बातचीत करना और आनंदमय वार्तालाप करना उसे प्रसन्न करता है, उन्हें साथी कहा जाता है। "जब वह घर पर रहता है, खड़ा होता है, चलता है और यात्रा करता है": जब वह घर पर रहता है, खड़ा होता है, चलता है और अपने साथियों के बीच यात्रा करता है, तो वह अपने हितों, दूसरों के हितों और दोनों के हितों पर विचार करता है, वर्तमान जीवन के हितों, परलोक के हितों और दोनों के हितों पर विचार करता है।

"अवांछनीय स्वतंत्रता को देखना": मूर्ख, निर्दयी, पराक्रमी और संप्रदायवादी शिष्यों के लिए यह अवांछनीय है, अर्थात् गंजा होना और वस्त्र धारण करना; बुद्ध के समर्थक (स्वतंत्र व्यक्ति) के लिए यह वांछनीय है, अर्थात् गंजा होना और वस्त्र धारण करना। "स्वतंत्र" दो प्रकार की स्वतंत्रता है: ... "अवांछनीय स्वतंत्रता को देखना": धम्म की स्वतंत्रता को देखो, समझो, मनन करो और उसका अवलोकन करो।

127 · साथियों के बीच मनोरंजन और आनंद होता है, और पुत्रों के लिए बड़ा प्रेम होता है। प्रिय से बिछड़ने से घृणा करते हुए, गैंडे की तरह अकेले चलना चाहिए।

"साथियों के बीच मनोरंजन और आनंद है": "मनोरंजन," दो प्रकार का मनोरंजन है: शारीरिक मनोरंजन और मौखिक मनोरंजन। शारीरिक मनोरंजन क्या है? हाथियों, घोड़ों, गाड़ियों, धनुषों, तलवारों और अन्य हथियारों से खेलना, अष्टकोणीय शतरंज, दस-आंखों वाला शतरंज, हवाई शतरंज और हॉपस्कॉच, साथ ही पत्थर की पहेली से खेलना, पासे के बोर्ड से खेलना, लकड़ी की छड़ी से खेलना, हाथ से खेलना, पासे से खेलना, पत्तों की बांसुरी से खेलना, खिलौने की कुदाल से खेलना, कलाबाजियां करना, खिलौने की पवनचक्कियों से खेलना, खिलौने के नापने के उपकरणों से खेलना, गाड़ी के खेल, खिलौने के धनुष और बाण, शब्दों का अनुमान लगाना, विचारों का अनुमान लगाना और खामियों की नकल करना [DN.1]।

मौखिक मनोरंजन क्या है? मुंह से ढोल बजाने की आवाज़, मुंह से ढोल पर निशान बनाने की आवाज़, मुंह से ढोल को छूने की आवाज़, होंठों को मोड़ने की आवाज़, मुंह से ढोल बजाना, मुंह से ढोल की खोखली आवाज़ की नकल करना, ज़ोरदार जयकार, नर्तकों पर शोर, गाना और मज़ाक करना।

"आनंद," जो संतुष्टि का पर्यायवाची है, वास्तव में "आनंद" है। जिनके साथ आना-जाना, खड़े होना, बैठना, लेटना, बातें करना और बातचीत करना सुखद लगता है, उन्हें साथी कहते हैं। साथियों के साथ मनोरंजन और आनंद मिलता है।

"और पुत्रों में बहुत प्रेम होता है": "पुत्र," ... पुत्र के प्रति बहुत प्रेम होता है।

"प्रिय से वियोग का अरुचि": प्रिय (प्यारे) दो प्रकार के होते हैं: सजीव प्राणी या कर्म। प्यारे प्राणी क्या हैं? यहाँ, वे माता-पिता हैं जो बच्चे का भला करना चाहते हैं, उसके लिए उपयोगी बनना चाहते हैं और बंधन से मुक्त होना चाहते हैं। रिश्तेदार, भाई, बहन, पुत्र, पुत्री, मित्र, सहकर्मी, सगे-संबंधी, रक्त संबंधी (रिश्तेदार), ये सभी प्यारे प्राणी हैं।

प्रिय कर्म क्या हैं? मनभावन रूप, मनभावन ध्वनियाँ, ...सुगंध, स्वाद, स्पर्श, ये सभी प्यारे व्यवहार हैं। "प्रिय से विदा होने से घृणा करना": प्रिय से विदा होने पर घृणा, अरुचि और शर्म महसूस करना।

128 · चारों दिशाओं को अस्वीकार न करने वाला व्यक्ति बनना, जो हर चीज से संतुष्ट हो, जो खतरे को सहन कर सके और जो भयभीत न हो, उसे गैंडे की तरह अकेले चलना चाहिए।

"चारों दिशाओं को अस्वीकार न करने वाले": "चारों दिशाएँ," केवल प्रबुद्ध व्यक्ति करुणा से भरे हृदय से एक दिशा (दिशा) को भर देता है और उसमें निवास करता है, और इसी प्रकार दूसरी दिशा, तीसरी, चौथी, इसी तरह ऊपर और नीचे (दिशाएँ), क्षैतिज रूप से, हर जगह, हर चीज़ को अपने समान करुणा से भरे हृदय से, विशालता, उत्कृष्टता, असीमता से भरे हृदय से, बिना किसी द्वेष और बिना किसी दुर्भावना के, समस्त संसार को भर देता है और उसमें निवास करता है। दुःख के साथ चलो...(विलुप्त), आनंद के साथ चलो..., शांति के साथ चलो और एक दिशा में निवास करो...। "चारों दिशाएँ, उन्हें अस्वीकार न करना": करुणा में अभ्यास करने की अवस्था में, पूर्व के सभी प्राणी अवज्ञा नहीं करेंगे, दक्षिण के प्राणी अवज्ञा नहीं करेंगे, और पश्चिम के प्राणी अवज्ञा नहीं करेंगे; उत्तर दिशा के सभी प्राणी उनके विरुद्ध नहीं हैं, पूर्व दिशा के मध्य में सभी प्राणी उनके विरुद्ध नहीं हैं, दक्षिण दिशा के मध्य में सभी प्राणी उनके विरुद्ध नहीं हैं, पश्चिम दिशा के मध्य में सभी प्राणी उनके विरुद्ध नहीं हैं; उत्तर दिशा के मध्य में सभी प्राणी उनके विरुद्ध नहीं हैं, नीचे के सभी प्राणी उनके विरुद्ध नहीं हैं, ऊपर के सभी प्राणी उनके विरुद्ध नहीं हैं, सभी दिशाओं में सभी प्राणी उनके विरुद्ध नहीं हैं। वे उनके विरुद्ध नहीं हैं। अभ्यास की गई दुःख की अवस्था में..., अभ्यास की गई आनन्द की अवस्था में..., अभ्यास की गई शांति की अवस्था में... पूर्व दिशा के सभी प्राणी उनके विरुद्ध नहीं हैं... (उद्धृत) सभी दिशाओं में उनके विरुद्ध नहीं हैं।

"जो हर चीज़ से संतुष्ट है": प्रबुद्ध वह है जो किसी भी वस्त्र में संतुष्ट रहता है और उस संतुष्टि की प्रशंसा करता है। वह वस्त्रों के कारण अनुचित बुराई की ओर नहीं जाता। कृपया, वस्त्र न मिलने पर भयभीत न हों, वस्त्र मिलने पर आसक्त न हों, मोह न करें, भोला-भाला रहें, विक्षिप्त भूमि को देखकर बुद्धिमानी से प्रयोग करें [SN.16.1], और वह चाहे जैसे भी वस्त्र पहने हो, संतुष्ट रहता है, अपनी प्रशंसा नहीं करता और दूसरों को तुच्छ नहीं समझता। जो कुशल, आलसी नहीं, धर्मात्मा और सचेत हैं, उन्हें ही अतीत की सर्वोच्च जाति में रहने वाला एकमात्र प्रबुद्ध व्यक्ति कहा जाता है [DN.33/AN.4.28]।

यह वह व्यक्ति है जो किसी भी भोजन से संतुष्ट रहता है... (अंशित भाग), चाहे वह कहीं भी रहता हो..., चाहे रोगी की आवश्यकताएँ और चिकित्सा संबंधी ज़रूरतें कुछ भी हों...।

"जो लोग खतरे को सहन करते हैं और उससे डरते नहीं हैं": "खतरा (संकट, संकट, संकट)", खतरे दो प्रकार के होते हैं: प्रत्यक्ष खतरे और अप्रत्यक्ष खतरे। प्रत्यक्ष खतरे क्या हैं? शेर, बाघ, तेंदुए, भालू, कुत्ते, भेड़िये, बाइसन, हाथी, सांप, बिच्छू, कनखजूरे, या चोर या गुंडे जो बुरे काम करते हैं या बुरे काम करने को तैयार हैं, आंखों के रोग, कान के रोग, नाक के रोग, जीभ के रोग, शरीर के रोग, सिर के रोग, बाहरी कान के रोग, मुंह के रोग, दांतों के रोग, खांसी, घरघराहट, बाहरी नाक के रोग, बुखार, बुढ़ापा, पेट के रोग, कोमा, दस्त, पेट दर्द, हैजा, कुष्ठ रोग, ट्यूमर, दाद, फेफड़ों के रोग, मिर्गी, खुजली, गठिया दाद, खरोंच (रोग), सूखी और फटी त्वचा, रक्त पित्त रोग, मधुमेह, बवासीर, दाने (फोड़े), अल्सर, पित्ताशय के रोग, कफ के रोग,

वात के रोग, आदि, (तीन) ऋतुओं के संयोजन से होने वाले रोग, गलत मुद्राओं से होने वाले रोग, अचानक होने वाले रोग, कर्मों के फल से उत्पन्न रोग, जैसे सर्दी, गर्मी, भूख, प्यास, मल, मूत्र, संपर्क मक्खियों, मच्छरों, सूरज के सांपों आदि के साथ, इन्हें स्पष्ट खतरे कहा जाता है।

छिपे हुए खतरे क्या हैं? बुरे कर्म, बुरी वाणी, बुरी मंशा, वासना का आवरण, द्वेष का आवरण, नींद का आवरण, पदावनति और पश्चाताप का आवरण, संदेह का आवरण, लोभ, घृणा, अज्ञानता, क्रोध, द्वेष, बुराई छिपाना, प्रभुत्व, ईर्ष्या, कंजूसी, छल, चालाकी, हठ, वासना, अहंकार, घमंड, विश्राम, सभी प्रकार की अशुद्धियाँ, सभी बुरे कर्म, सभी परेशानियाँ, सभी चिंताएँ, सभी प्रकार का उत्साह, सभी अस्वास्थ्यकर कर्म, ये सभी छिपे हुए गुप्त खतरे कहलाते हैं।

“खतरा, संकट, संकट,” खतरे का क्या अर्थ है? “हर जगह जीत हासिल करना” एक संकट है; “नुकसान की ओर ले जाना” एक संकट है; “वहाँ रहना” एक संकट है। “हर जगह जीत हासिल करना” संकट कैसे है? वे खतरे जो किसी व्यक्ति को जीतते हैं, पराजित करते हैं, अभिभूत करते हैं, समाप्त करते हैं और कुचल देते हैं, वे ही “हर जगह जीत हासिल करना” के रूप में खतरे हैं।

“हानि की ओर ले जाना” किस प्रकार एक खतरा है? वे बाधाएँ और पीछे हटना जो संकट में पड़े उत्तम धम्म की ओर ले जाते हैं; कौन सा उत्तम धम्म? सही मार्ग, अनुसरण करने वाला मार्ग, अविचलित मार्ग, विरोधाभास रहित मार्ग, जैसा अर्थ है वैसा मार्ग, धम्म का मार्ग, पूर्ण नियम, मूलों की रक्षा करना, भोजन की सही मात्रा जानना, संयम, सजगता और सही ज्ञान में निपुणता, चार प्रकार की सजगताएँ...(कुछ भाग हटा दिया गया), वे बाधाएँ जो इस उत्तम धम्म की हानि की ओर ले जाती हैं, यही संकट के रूप में “हानि की ओर ले जाना” है।

वहाँ निवास करना किस प्रकार खतरनाक है? वहाँ ये दुष्ट और अस्वास्थ्यकर धर्म व्यक्तियों को नियंत्रित करने के लिए उत्पन्न हुए, जैसे गुफाओं में बिल खोदने वाले जानवर; पानी में रहने वाले जलीय जीव; जंगल में रहने वाले वन जीव; पेड़ों पर रहने वाले वृक्षवासी जीव। इसी प्रकार, ये दुष्ट और अस्वास्थ्यकर धर्म परस्पर निर्भरता को जन्म देते हैं।

भगवान बुद्ध ने कहा [SN.35.151]: "भिक्षुओं! शिष्यों और गुरुओं के साथ रहने वाले भिक्षु दुख और बेचैनी में रहते हैं। लेकिन, भिक्षुओं! ऐसा कैसे हो सकता है कि शिष्यों और गुरुओं के साथ रहने वाले भिक्षु दुख और बेचैनी में रहें?"

भिक्षुओं! यहाँ, भिक्षु को अपनी आँखों से उस आकृति को देखने के बाद, उस गाँठ से जुड़े उन दुष्ट और अस्वास्थ्यकर धर्मों की स्मृतियाँ और इरादे प्राप्त होते हैं। वे उसके भीतर निवास करते हैं; दुष्ट और अस्वास्थ्यकर धर्म उसमें निवास करते हैं और प्रवेश करते हैं (अधिकार जमाते हैं)। इसलिए, उसे 'शिष्य-धारक' कहा जाता है। वे उसे जीत लेते हैं; दुष्ट और अस्वास्थ्यकर धर्म उसे जीत लेते हैं। इसलिए, उसे 'गुरु' कहा जाता है।

इसके अलावा, भिक्षुओं! जब भिक्षु अपने कानों से ध्वनि सुनता है...(अधूरा अंश), अपनी नाक से गंध सूंघता है..., अपनी जीभ से स्वाद चखता है..., अपने शरीर से स्पर्श करता है..., जब वह चेतना से धर्म को जानता है, तब उसके मन में बुरे और अहितकर धर्म की यादें और इरादे उत्पन्न होते हैं। वे उसके भीतर निवास करते हैं; बुरे और अहितकर धर्म निवास करते हैं और प्रवेश करते हैं... भिक्षुओं! इस प्रकार, भिक्षु अपने शिष्यों और गुरुओं के साथ दुख और बेचैनी में रहते हैं।

भगवान बुद्ध ने कहा [इत.88]: “भिक्षुओं! तीन प्रकार की आंतरिक गंदगी होती है: आंतरिक शत्रु, आंतरिक दुश्मन, आंतरिक हत्यारे और आंतरिक शिकायतें। भिक्षुओं! लोभ आंतरिक गंदगी है, आंतरिक दुश्मन है...; भिक्षुओं! दु:ख...; भिक्षुओं! आसक्ति...। भिक्षुओं! ये तीन प्रकार की आंतरिक गंदगी हैं: आंतरिक शत्रु, आंतरिक दुश्मन, आंतरिक हत्यारे और आंतरिक शिकायतें।”

लोभ किसी लाभ का कारण नहीं है, लोभ हृदय को कंपकंपा देता है, इससे भय उत्पन्न होता है और लोग इसे समझ नहीं पाते। लोभी व्यक्ति लाभों को नहीं जानता, लोभी व्यक्ति धर्म को नहीं देख पाता, उस समय वह अंधा और अंधकारमय होता है: जो लोभ से पराजित हो सकता है। क्रोध किसी लाभ का कारण नहीं है, क्रोध हृदय को कंपकंपा देता है, इससे भय उत्पन्न होता है और लोग इसे समझ नहीं पाते। क्रोधित व्यक्ति लाभों को नहीं जानता, क्रोधित व्यक्ति धर्म को नहीं देख पाता, उस समय वह अंधा और अंधकारमय होता है: जो पराजित हो सकता है। मूर्खता किसी लाभ का कारण नहीं है,

मूर्खता हृदय को कंपकंपा देती है, इससे भय उत्पन्न होता है और लोग इसे समझ नहीं पाते। मूर्ख लाभों को नहीं जानते, मूर्ख धर्म को नहीं देख पाते, उस समय वह अंधा और अंधकारमय होता है: जो पराजित हो सकता है।

भगवान बुद्ध ने कहा [सं. 3.2]: "हे महाराज! जब मनुष्य के भीतर तीन धर्म उत्पन्न होते हैं, तो हानि, पीड़ा और बेचैनी उत्पन्न होती है। वे तीन कौन से हैं? हे महाराज! जब मनुष्य के भीतर लोभ उत्पन्न होता है, तो हानि, पीड़ा और बेचैनी उत्पन्न होती है; हे महाराज! जब मनुष्य के भीतर आक्रमण उत्पन्न होता है... हे महाराज! जब मनुष्य के भीतर मूर्खता उत्पन्न होती है, ...।"

"एक लालची, घृणास्पद, मूर्ख, द्वेषपूर्ण व्यक्ति स्वयं को उसी प्रकार हानि पहुँचाता है, जैसे अनेक फल मिलकर पेड़ के हृदय को क्षति पहुँचाते हैं।"

भगवान बुद्ध ने कहा: [SN.10.3] "यहीं से लोभ और क्रोध, दुख, सुख और भय उत्पन्न होते हैं (शाब्दिक रूप से शरीर के रोंगटे खड़े हो जाते हैं); यहीं से इरादा उत्पन्न होता है, जैसे कोई छोटा लड़का कौवे को जाने देता है।"

"जो खतरों का सामना करते हैं," खतरे में डटे रहने वाले, विजेता, हर चुनौती को जीतने वाले, हराना करने वाले, बागी। "जो भयभीत नहीं होता," जो अकेला ही ज्ञान प्राप्त करता है, वही डरपोक नहीं होता, भयभीत नहीं होता, घबराता नहीं और भागता नहीं। वह भय के डर को त्यागकर और अपने रोंगटे खड़े होने को त्यागकर जीवन व्यतीत करता है।

129 · कुछ भिक्षुओं की देखभाल करना भी कठिन होता है, वैसे ही घर में रहने वाले गृहस्थ सदस्यों की भी। दूसरों के बेटों की परवाह न करने वाला बनने के बाद, गैंडे की तरह अकेले चलना चाहिए।

"कुछ भिक्षु ऐसे भी हैं, जिनकी देखभाल करना कठिन है": यहाँ एक प्रकार के भिक्षु हैं, यद्यपि उन्हें शरण दी जानी चाहिए, यद्यपि उन्हें निर्देश दिए जाते हैं, उन्हें कई प्रश्न दिए जाते हैं, यद्यपि उन्हें वस्त्र, ...कटोरा, ...तांबे का कटोरा, जल छानने वाला यंत्र, जल छानने वाला यंत्र, थैली, जूता, कमरबंद दिया जाता है, फिर भी वे नहीं सुनते, न ही जानने के लिए अपने मन या कान लगाते हैं, न ही जानते हैं, जो विश्वासघाती, अवज्ञाकारी और विरोधी व्यवहार करते हैं, वे दूसरों की ओर अपना मुख नहीं फेरते [नि.2]।

"कुछ ऐसे परिवार भी हैं जो घर पर ही रहते हैं": यहाँ एक प्रकार के निवासी हैं जिन्हें हाथी दिए जाते हैं... (अंशित); हालाँकि उन्हें गाड़ियाँ, खेत, घर, सोना और सोने के सिक्के दिए जाते हैं, उन्हें गाँव..., कस्बे, शहर, राजधानियाँ... दी जाती हैं, फिर भी वे सुनते नहीं, उनकी बात नहीं सुनते, जानने के लिए अपने मन या कान नहीं लगाते, वे बेवफ़ा, अवज्ञाकारी और विरोधी व्यवहार करते हैं।

"दूसरों के बेटों की परवाह न करने वाला व्यक्ति बनने के बाद": इस अर्थ में, स्वयं को छोड़कर, दूसरों के बेटों के प्रति उदासीन हो जाने के बाद। उन दूसरे लोगों के बेटों के प्रति उदासीन हो जाने के बाद, कम व्यस्त हो जाने के बाद, बेपरवाह हो जाने के बाद।

130 · परिवार (सांसारिक जीवन) के निशान को त्यागने के बाद, जैसे कोविलारा वृक्ष जिसके पत्ते झड़ गए हों, जैसे नायक अपने परिवार के बंधन को तोड़कर गैंडे की तरह अकेला चलता है।

परिवार के चिन्हों को त्यागने के बाद: बाल, दाढ़ी, माला, मसाले, मरहम, आभूषण, सामान, कपड़े, आवरण, हेडबैंड, मालिश, रगड़ना, स्नान, दर्पण, नेत्र मरहम, माला, इत्र, फेस पाउडर, फेस क्रीम, कंगन, रिबन, बालों का सामान, छड़ी, बैरल, तलवार, छाता, रंगीन जूते, जूड़ा, गोला, झाड़ू, लंबे और छोटे सफेद कपड़े आदि को आम आदमी के चिन्ह कहा जाता है। परिवार के सदस्य के चिन्ह को त्यागने के बाद: परिवार के सदस्य के चिन्ह को त्यागने के बाद, पूरी तरह से त्यागने के बाद, नीचे रखने के बाद, बंद करने के बाद।

"जैसे कोविलारा वृक्ष के पत्ते झड़ गए हों": जैसे कोविलारा वृक्ष के पत्ते कट जाते हैं, गिर जाते हैं, उसी प्रकार एकाकी ज्ञानी व्यक्ति का निशान भी कट जाता है, गिर जाता है।

"जब नायक अपने परिवार के बंधन तोड़ देता है": "नायक", "ऊर्जावान" नायक है; "सक्षम" नायक है; "पर्याप्त" नायक है; "प्रचुर" नायक है; "बहादुर" नायक है; "वीर" नायक है; "जो भयभीत नहीं होता" नायक है; "कोई आतंक नहीं" नायक है; "कोई डर नहीं" नायक हैं; "जो भागते नहीं" नायक हैं; "जिन्होंने आतंक और भय का त्याग कर दिया है" नायक हैं; "जिन्होंने अपने भय और शरीर के रोंगटे खड़े होने को त्याग दिया है" नायक हैं।

"सभी बुरे कर्मों से दूर रहकर, जीवन शक्ति से परिपूर्ण होकर, नरक की पीड़ाओं से पार पाकर, ऊर्जावान और परिश्रमी व्यक्ति; ऐसे व्यक्ति को ही नायक कहा जा सकता है।" [संख्या 3.6]

पुत्र, पत्नियाँ, पुरुष सेवक, दासियाँ, बकरियाँ और भेड़ें, मुर्गियाँ और सूअर, हाथी, गाय और घोड़े, खच्चर, घोड़े, खेत, घर, सोना, सोने के सिक्के, गाँव, कस्बे, राजधानियाँ, स्थान, खजाना, गोदाम, जो कुछ भी लालच से भ्रष्ट हो सकता है, वह सब सांसारिक परिवार का बंधन कहलाता है।

"जब नायक परिवार के सदस्य के बंधन को तोड़ देता है": जो अकेला रह जाता है, वही नायक होता है। परिवार के सदस्य के बंधन को तोड़ने के बाद, उसे त्यागने के बाद, उसे भगा देने के बाद, उसका अंत करने के बाद, उसे अस्तित्वहीन कर देने के बाद।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> निद्देसा >> निद्देसा 2.बी.2

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

<<<< पिछला अगला >>>>

गैंडा सूत्र की व्याख्या
दूसरा अध्याय
131 · यदि आपको कोई बुद्धिमान साथी मिले, जो आपके साथ चले, जो दयालुता से जीवन व्यतीत करे, जो बुद्धिमान हो, तो सभी खतरों को पार करने के बाद, आपको उसके साथ सचेत और प्रसन्नतापूर्वक चलना चाहिए। [दफ़ी.23,328]

"यदि आपको एक बुद्धिमान साथी मिले": यदि आपको एक बुद्धिमान, सचेत, स्वतंत्र और समझदार साथी मिले, प्राप्त हो, हासिल हो, या आपके पास हो।

"मार्गदर्शक, शुभ निवासी, ज्ञानी": "मार्गदर्शक," वह जो अकेला चलता है। "शुभ निवासी," वह जो प्रथम ध्यान में रहता है, शुभ निवासी है, और द्वितीय..., तृतीय..., चतुर्थ ध्यान में रहने वाला भी शुभ निवासी है, परोपकारी और मुक्तिदायक परोपकारी निवासी है, और करुणा... (विलुप्त) और आनंद..., और शांत और मुक्तिदायक परोपकारी निवासी हैं, वे भी जो असीम शून्य में निवास करते हैं..., ज्ञान की असीमता में..., ...शून्यता में..., ...(न बोध करने वाले और न ही) अबोध करने वाले स्थान में...। वे भी जो क्षीणता के सबसे परोपकारी निवासी हैं, और वे भी जो फल के सबसे शुभ निवासी हैं। "ज्ञानी," ज्ञानी, प्रबुद्ध, पृथक, ज्ञानी हैं।

"सभी खतरों को हराने के बाद": "खतरे," दो प्रकार के खतरे हैं: ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)।

"जिनके मन में विचार (सजगता) है, उन्हें दूसरों के साथ खुशी से चलना चाहिए": केवल प्रबुद्ध व्यक्ति को बुद्धिमान, प्रबुद्ध, विशिष्ट और समझदार साथी के साथ रहना चाहिए; ताकि वे साथ में चलने, जीने, कार्य करने, आगे बढ़ने, रक्षा करने और जीवित रहने में प्रसन्न, संतुष्ट, आनंदित, उत्साही और प्रसन्न रहें। "विचारशील" वह केवल प्रबुद्ध व्यक्ति ही सचेत व्यक्ति है, जो सर्वोच्च बुद्धि और विवेक से युक्त है, और वह स्मरणशील और स्मरणशील है जिसने इसे बहुत पहले किया और कहा था [SN.48.9]।

132 · यदि आपको कोई बुद्धिमान साथी न मिले, जो आपके साथ चले, जो दयालुता से जीवन व्यतीत करे, जो बुद्धिमान हो, तो जैसे कोई राजा जीते हुए क्षेत्र को छोड़कर चला जाता है, वैसे ही आपको गैंडे की तरह अकेले चलना चाहिए। [Dph.23,329]

“यदि आपको कोई बुद्धिमान साथी न मिले”: यदि आपको कोई बुद्धिमान, सचेत, स्वतंत्र और समझदार साथी न मिले।

“एक यात्री, एक अच्छा निवासी और एक बुद्धिमान व्यक्ति”: ....

“जैसे कोई राजा अपना देश त्याग देता है”: जिस प्रकार शीर्ष योद्धा शत्रु को परास्त कर देते हैं, विजयी होकर, वह राजा जिसके पास सभी सुख-सुविधाएँ और भरपूर धन-संपत्ति होती है, वह अपने देश, भूमि, भंडारगृह, सोने के भंडार और नगर को त्याग देता है। अपने बाल और दाढ़ी मुंडवाकर और वस्त्र धारण करके, वह घर छोड़कर एकांतवासी जीवन जीने लगता है। संपत्तिहीन अवस्था में प्रवेश करने के बाद, वह चलता-फिरता, जीवनयापन करता, आगे बढ़ता, रक्षा करता और जीवनयापन करता है। इस प्रकार, वह व्यक्ति जो घर की सभी बाधाओं को दूर करके, बच्चों और पत्नियों की बाधाओं को दूर करके, रिश्तेदारों की बाधाओं को दूर करके, मित्रों की बाधाओं को दूर करके (संग्रह की बाधाओं को दूर करके), बाल और दाढ़ी मुंडवाकर और वस्त्र धारण करके अकेला जीवनयापन करता है; घर छोड़कर और एकांतवासी जीवन जीने लगता है, वह शून्यता की अवस्था में प्रवेश कर जाता है और अकेला चलता-फिरता, जीवनयापन करता, आगे बढ़ता, रक्षा करता और जीवनयापन करता है।

133 · बेशक हम अपने (अच्छे) साथियों की प्रशंसा करते हैं, हमें श्रेष्ठ और समान साथियों के करीब जाना चाहिए। इन्हें न पा लेने पर, जैसे कोई बिना किसी दोष के खाता रहता है, उसे गैंडे की तरह अकेले चलना चाहिए।

“निःसंदेह हम अपने पूर्ण साथियों की प्रशंसा करते हैं”: “निःसंदेह,” यही निर्णायक शब्द है, निर्विवाद शब्द है, आत्मविश्वास से भरा शब्द है, बिना किसी पूर्वाग्रह के पढ़ा गया शब्द है, आदेशात्मक शब्द है, त्रुटि रहित शब्द है, यही निश्चितता का शब्द है, जो कि “निःसंदेह” है। “पर्याप्त साथी,” जिसके पास अज्ञानता रहित उपदेश हों..., अज्ञानता रहित एकाग्रता हो..., अज्ञानता रहित ज्ञान हो...। “निःसंदेह हम पूर्ण साथियों की प्रशंसा करते हैं”: हम अच्छे साथियों की प्रशंसा, सराहना और प्रशंसा करते हैं।

श्रेष्ठ और समतुल्य साथियों के निकट रहना चाहिए: उपदेश, एकाग्रता, ज्ञान, मुक्ति और मुक्त ज्ञान में श्रेष्ठ साथियों को श्रेष्ठ साथी मानो; और उपदेश, एकाग्रता, ज्ञान, मुक्ति और मुक्त ज्ञान में समतुल्य साथियों को समतुल्य मानो। श्रेष्ठ साथी या समतुल्य साथी के निकट रहना चाहिए, उनकी सेवा करनी चाहिए, उनका आदर करना चाहिए, उनसे पूछताछ करनी चाहिए और हमेशा उनसे प्रश्न पूछने चाहिए।

“इन चीजों को न पाने के बाद, जैसे कोई निर्दोषता से खा रहा हो”: कुछ लोग निर्दोषता से खाने वाले होते हैं, और कुछ नहीं। निर्दोषता से खाने वाला कौन है? यहाँ, एक विशेष प्रकार के लोग हैं जो छल-कपट करते हैं, बातें करते हैं, सुझाव देते हैं, उपहास करते हैं, दूसरे लाभों के बदले वस्तुएँ देते हैं, लकड़ी से बनी वस्तुएँ देते हैं, बांस से बनी वस्तुएँ देते हैं, पत्तों से बनी वस्तुएँ देते हैं, फूलों से बनी वस्तुएँ देते हैं, स्नान वस्त्रों से बनी वस्तुएँ देते हैं, वाशिंग पाउडर से बनी वस्तुएँ देते हैं, मिट्टी से बनी वस्तुएँ दान करते हैं, दाँतों से बनी वस्तुएँ दान करते हैं, धुलाई के पानी से बनी वस्तुएँ दान करते हैं, चापलूसी करते हैं, विश्वास के नाम पर नदी खोलते हैं, लालच करते हैं, पीठ पीछे निंदा करते हैं, घर का इस्तेमाल दिखावा करने के लिए करते हैं, जानवरों से दिखावा करते हैं, ज्योतिष का उपयोग करते हैं, दूत बनकर कार्य करते हैं, दूत भेजते हैं, छोटे-मोटे काम करते हैं, चिकित्सा का उपयोग करते हैं, नए रोजगार सृजित करते हैं, भोजन देते हैं और बदले में देते हैं, और भीख देते हैं। वह व्यक्ति जिसने अवैध और अनुचित तरीके से प्राप्त किया है। प्राप्त करने के बाद, प्राप्त करने के बाद, अधिकार में लेने के बाद, प्राप्त करने के बाद, इसे निर्दोषता से खाने वाला व्यक्ति कहा जाता है।

और कौन है वह है विवेकपूर्ण भोजन करने वाला? यहाँ, एक विशेष प्रकार के लोग छल-कपट नहीं करते, बातें नहीं करते, इशारे नहीं करते, उपहास नहीं करते... उन्होंने धम्म के अनुसार विधिवत रूप से प्राप्त किया है। वे प्राप्त करने, अर्जित करने, धारण करने और ग्रहण करने के बाद उसका अवैध और अनुचित उपयोग करके जीवन यापन नहीं करते। इसे विवेकपूर्ण भोजन करने वाला कहा जाता है।

"जिन लोगों को ये निर्दोष भोजन नहीं मिलते": जिन लोगों को ये निर्दोष भोजन नहीं मिलते, वे इन्हें प्राप्त नहीं कर सकते, जब तक कि वे इन्हें प्राप्त नहीं कर लेते, जब तक कि वे इन्हें प्राप्त नहीं कर लेते, जब तक कि वे इन्हें प्राप्त नहीं कर लेते, जब तक कि वे इन्हें प्राप्त नहीं कर लेते, जब तक कि वे इन्हें प्राप्त नहीं कर लेते।

134 · सोने (कंगनों) की चमक देखकर, लोहार द्वारा अच्छी तरह से गढ़े गए, हाथों पर दो (कंगनों) के आपस में रगड़ने पर, किसी को गैंडे की तरह अकेले चलना चाहिए।

"सोने की चमक देखने के बाद": देखने, तौलने, परखने, अलग करने और स्पष्ट करने के बाद। "सुनहरा" (सुवन्नस्सति) सुनहरा (जातरूपस) होता है। "चमकदार" का अर्थ है पूर्ण शुद्ध, पूर्ण निर्मल।

"लोहार द्वारा अच्छी तरह से बनाया गया": एक लोहार को सुनार कहा जाता है। "लोहार द्वारा अच्छी तरह से किया गया काम": लोहार द्वारा अच्छी तरह से किया गया काम, अच्छा काम और बारीकी से किया गया काम कहलाता है।

"हाथों पर दो का आपस में रगड़ना": हाथ (भुजो) को हाथ (हत्थो) कहा जाता है। एक हाथ में दो कंगन आपस में रगड़ते हैं। ठीक इसी प्रकार, सभी प्राणी अपनी प्यास और दृष्टि के कारण नरक में हैं। उनमें घर्षण है, पशु जगत में घर्षण है, प्रेत जगत में घर्षण है, मनुष्य जगत में घर्षण है और स्वर्ग जगत में घर्षण है। ब्याज और ब्याज..., मृत्यु और मृत्यु..., पुनर्जन्म और पुनर्जन्म..., होना और होना..., पुनर्जन्म और पुनर्जन्म..., चक्र और चक्र। वे घर्षण उत्पन्न करते हैं, चलते हैं, निवास करते हैं, कार्य करते हैं, चलते हैं, रक्षा करते हैं, जीवित रहते हैं।

135 · तो अगर मैं किसी साथी के साथ हूँ, तो मौखिक (स्नेहपूर्ण) बातचीत होगी या टकराव (घर्षण), भविष्य में इस आतंक को देखते हुए, किसी को गैंडे की तरह अकेले चलना चाहिए।

"तो अगर मैं अपने साथी के साथ हूँ": एक प्यासा (प्रेम) साथी या एक मानवीय (सहयोगी) साथी है। प्यासा साथी क्या है? "प्रेम की प्यास," रूप की प्यास... (विलुप्त), धम्म की प्यास। इस प्यासे प्रेमी की बात करें तो, वह साथी जिसे प्यासा कहा जाता है।

"जिन लोगों का साथी प्यासी प्रेम होता है, वे लंबे समय तक पुनर्जन्म लेते हैं, ऐसी अवस्था में पहुँच जाते हैं, अन्य अवस्थाओं में पहुँच जाते हैं, पुनर्जन्म से परे नहीं जाते।" [इत.15/स्न.3.12,745]

मनुष्य का साथी क्या है? एक वर्ग ऐसा है जो कोई लाभ नहीं देता, अहंकार पैदा करता है, मन की शांति भंग करता है, और पहला दूसरे स्थान पर, दूसरा तीसरे स्थान पर, या तीसरा चौथे स्थान पर आ जाता है (यह अंश स्पष्ट नहीं है: ekassa vā dutiyo hoti, dvinnaṃ vā tatiyo hoti, tiṇṇaṃ vā catuttho hoti)। इसमें बहुत से अश्लील शब्द हैं, जैसे: राजाओं, चोरों, मंत्रियों, सेना, भय, युद्ध, भोजन, पेय पदार्थ, वस्त्र, बिस्तर, माला, गंध, रिश्तेदारी, रथ यात्रा, गाँव, कस्बा, शहर, भूमि, स्त्री, (मनुष्य सिद्धांत), नायक, गली, कुआँ, पूर्वज आत्मा, विभिन्न वस्तुएँ, विश्व उत्पत्ति, सागर उत्पत्ति, इत्यादि [DN.1]। यही मनुष्य का साथी है।

"मौखिक संवाद या आसक्ति होगी": मौखिक संवाद को बत्तीस प्रकार के पशुवत सिद्धांत कहा जाता है, अर्थात् राजाओं के बारे में बात करना... "आसंजन (लगाव)", आसक्ति दो प्रकार की होती है: उत्सुकता का आसक्ति और देखने का आसक्ति...

"भविष्य के भयावह दृश्य को देखना": "भयानक दृश्य," ...(हटा दिया गया, पिछले अनुभाग देखें)। "भविष्य के आतंक को देखना": वह भविष्य के आतंक को देख रहा है, अनुभव कर रहा है और उसका अवलोकन कर रहा है।

136 · सभी प्रकार की इच्छाएँ वास्तव में शहद के समान मीठी और मनभावन होती हैं, और वे हृदय को अनेक प्रकार से विचलित करती हैं। सभी प्रकार की इच्छाओं में छिपे खतरे को देखकर, व्यक्ति को गैंडे की तरह अकेले चलना चाहिए।

“सभी प्रकार की इच्छाएँ वास्तव में शहद के समान और सुखद होती हैं”: “इच्छा,” दो प्रकार की इच्छाएँ होती हैं: .... “विभिन्न प्रकार,” विभिन्न रूपों के दृश्य, विभिन्न रूपों की ध्वनियाँ, विभिन्न रूपों की गंध, विभिन्न रूपों के स्वाद, विभिन्न रूपों के स्पर्श, मनभावन, सुंदर, और इच्छा से प्रेरित, लालची। “शहद के समान।” भगवान बुद्ध [एमएन.139] कहते हैं: “भिक्षुओं! ये पाँच इच्छाएँ हैं, कौन सी पाँच? (वे) जिन्हें आँख से देखा जा सकता है, जो इच्छा, लालसा, रूप के लिए लोभ उत्पन्न करती हैं; ...कान..., नाक, जीभ, शरीर; भिक्षुओं! इन्हें पाँच इच्छाएँ कहते हैं। भिक्षुओं! इन पाँच इच्छाओं से उत्पन्न होने वाला समस्त सुख और आनंद, भिक्षुओं, इसे कामवासना, मलिन सुख, सामान्य लोगों का सुख और तुच्छ सुख कहते हैं। मैंने कहा: 'इसका अभ्यास नहीं करना चाहिए, इसका अधिक अभ्यास नहीं करना चाहिए, तुम्हें इस प्रकार के सुख से डरना चाहिए।'” “हृदय”: समस्त हृदय... (विलुप्त) उस चेतना के अनुरूप है। वे मन को प्रसन्न करते हैं, प्रशंसा करते हैं, संतुष्ट करते हैं और हँसाते हैं।

“वे दिल को कई तरह से विचलित करते हैं”: कई रूपों से प्रभावित होकर... (छोड़ा गया), वे दिल को विचलित करते हैं, संतुष्ट करते हैं और हँसाते हैं।

“सभी प्रकार की इच्छाओं को देखने के बाद”: भगवान बुद्ध ने कहा [एमएन.13]: “भिक्षुओं! इच्छा का दोष क्या है? भिक्षुओं! यहाँ, प्रत्येक पुण्य पुरुष अपने कौशल से जीविका कमाता है: चाहे वह निरीक्षण हो, लेखा-जोखा हो, गणना हो, खेती हो, व्यापार हो, पशुपालन हो, शासन हो, या अन्य कौशल हों, वह सर्दी-गर्मी का सामना करता है, मक्खी, मच्छर, हवा, धूप और सांपों से प्रभावित होता है, और भूख-प्यास से मर जाता है, भिक्षुओं! इसे ही इच्छा का दोष कहते हैं, प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देने वाला दुखों का संचय, इच्छा ही कारण है, इच्छा के कारण ही दुख होते हैं।”

भिक्षुओं! यदि कोई गुणी पुरुष परिश्रम करे, कड़ी मेहनत करे और धन प्राप्ति में असफल हो जाए, तो वह दुखी, थका हुआ, रोता हुआ, सीना पीटता हुआ और विलाप करता हुआ भ्रमित हो जाएगा (और कहेगा): 'मेरा उत्थान व्यर्थ है, और मेरे प्रयास निष्फल हैं।' भिक्षुओं! इसे ही इच्छा का दोष कहते हैं...

भिक्षुओं! यदि कोई गुणी पुरुष परिश्रमपूर्वक धन अर्जित करता है, तो वह उस धन की रक्षा के लिए पीड़ा और चिंता से व्याकुल हो जाता है: 'मैं ऐसा कैसे करूँ कि न तो राजा मेरा धन ले ले, न चोर ले जाएँ, न आग उसे जला दे, न जल उसे बहा ले जाए, न ही अपाहिज वारिस उसे ले जाएँ?' जब वह उस धन की रक्षा करता है, या राजा उसे ले लेता है, या चोर ले लेते हैं, या आग उसे जला देती है, या जल उसे बहा ले जाता है, या अपाहिज वारिस उसे ले जाता है, तो वह दुखी हो जाता है... (और कहता है): 'जो मेरे पास है, वह अब अस्तित्व में नहीं है।' भिक्षुओं! इसे ही इच्छा का दोष कहते हैं...

इसके अलावा, भिक्षुओं! इच्छा ही कारण है..., राजा और राजा का सिद्धांत (जिसकी बात हो रही है), क्षत्रिय और क्षत्रिय का सिद्धांत, ब्राह्मण..., गृहस्वामी..., माता और पुत्र..., पुत्र और माता..., पिता और पुत्र..., पुत्र और पिता..., भाई और भाई..., भाई और बहन..., बहन और भाई..., मित्र और मित्र...। जब वे आपस में झगड़ते और बहस करते थे, तो वे एक-दूसरे पर मुक्कों, मिट्टी के ढेलों, लाठियों और तलवारों से हमला करते थे, जिससे उन्हें मृत्यु या मृत्यु के समान पीड़ा सहनी पड़ती थी। भिक्षुओं! इसे ही इच्छा का दोष कहते हैं...।

इसके अलावा, भिक्षुओं! कामवासना ही कारण है..., तलवार और ढाल उठाओ, धनुष और बाण धारण करो, दोनों पक्ष युद्ध में आमने-सामने आ जाते हैं, बाणों और भालों की तीव्र गति में, तलवारों की चमक में, वहाँ वे बाणों और भालों से भेद दिए जाते हैं और तलवारों से उनके सिर काट दिए जाते हैं, जहाँ उन्हें मृत्यु या मृत्यु के समान पीड़ा सहनी पड़ती है। भिक्षुओं! इसे कामवासना का दोष कहते हैं...।

इसके अलावा, भिक्षुओं! कामवासना ही कारण है..., तलवार और ढाल उठाओ, धनुष और बाण धारण करो, फिसलन भरी रक्षा पंक्ति में कूद पड़ो, बाणों और भालों की तीव्र गति में, तलवारों की चमक में, वहाँ वे बाणों और भालों से भेद दिए गए, गोबर में लथपथ हो गए, भारी वस्तुओं से कुचल दिए गए, और तलवारों से सिर काट दिए गए, जहाँ उन्होंने मृत्यु या मृत्यु के समान पीड़ा सहन की। भिक्षुओं! इसे कामवासना का दोष कहते हैं...

इसके अलावा, भिक्षुओं! कामवासना ही कारण है..., उन्होंने लोगों पर आक्रमण किया, लूटपाट की, रास्ते में चोरी की, पत्नियों का अपहरण किया, और राजा द्वारा पकड़े जाने पर उन्हें विभिन्न दंड दिए गए: कोड़े मारना, लाठी से पीटना, ...(अंश छोड़ दिया गया है, पिछले भाग देखें), ...जहां उन्हें मृत्यु या मृत्यु के समान पीड़ा सहनी पड़ी। भिक्षुओं! इसे कामवासना का दोष कहते हैं...।

इसके अलावा, भिक्षुओं! इच्छा ही कारण है..., शरीर से बुराई करो, वाणी से बुराई करो और मन से बुराई करो। उसने अपने शरीर और वाणी से बुरे कर्म किए, और मन से बुराई करने के बाद, वह दुखमय संसार, बुरे कर्मों, निम्न लोक और मृत्यु के बाद नरक में पुनर्जन्म लिया। भिक्षुओं! इसे ही इच्छा का दोष कहते हैं, आने वाली पीढ़ियों का दुख, इच्छा ही कारण है, इच्छा के कारण ही दुख होता है।

"सभी प्रकार की इच्छाओं में उत्पन्न कष्टों को देखने के बाद": सभी प्रकार की इच्छाओं में उत्पन्न कष्टों को देखने के बाद, उसने देखा, देखने के बाद, तौलने के बाद, न्याय करने के बाद, अलग करने के बाद, स्पष्ट करने के बाद।

137 · यह मेरे लिए एक आपदा, ट्यूमर, अभिशाप, बीमारी, तीर और आतंक है, विभिन्न इच्छाओं में इस भयावहता को देखने के बाद, किसी को गैंडे की तरह अकेले चलना चाहिए।

"यह मेरी विपत्ति, ट्यूमर, विपत्ति, रोग, बाण और भय है": भगवान बुद्ध ने कहा [एएन.8.56]: "भिक्षुओं! 'भय', यह इच्छा का पर्यायवाची है; भिक्षुओं! 'पीड़ा', यह इच्छा का पर्यायवाची है; ...रोग..., ...ट्यूमर..., बाण का प्रहार, कलंक, कीचड़ (दलदल), गर्भस्थ गर्भ (जन्म या पुनर्जन्म)...। 'भय' इच्छा का पर्यायवाची क्यों है? भिक्षुओं! क्योंकि जो लोग इच्छा और लोभ से संक्रमित और बंधे हुए हैं, वे अपने जीवन में भय से मुक्त नहीं होंगे, और अगले जीवन में भी भय से मुक्त नहीं होंगे। इसलिए, 'भय' इच्छा का पर्यायवाची है। भिक्षुओं! 'पीड़ा'... 'रोग'... क्यों है? भिक्षुओं! क्योंकि जो लोग इच्छा और लोभ से दूषित और बंधे हुए हैं, वे इस जीवन में माता के गर्भ से मुक्त नहीं होंगे, और अगले जीवन में भी माता के गर्भ से मुक्त नहीं होंगे, इसलिए, यह इच्छा का पर्यायवाची है।

"आतंक, पीड़ा, रोग, ट्यूमर, भेदी तीर और संक्रमण, दलदल और गर्भ, ये सब इच्छाएँ कहलाती हैं, जिनसे अधिकांश लोग आसक्त रहते हैं। वे एक वांछनीय अवस्था में गिरे, फिर माता के गर्भ में प्रवेश किया। जब एक भिक्षु उत्साही हो जाता है, तो वह सही ज्ञान का त्याग नहीं करता। उसने इस बाधा और इस तरह के मार्ग को पार किया। वह इन कांपते हुए लोगों को देखता है: वे लोग जिनके पास जीवन और मृत्यु है।"

"सभी प्रकार की इच्छाओं में इस भयावहता को देखने के बाद," सभी प्रकार की इच्छाओं में इस भयावहता को देखने के बाद, उसने देखा, देखने के बाद, तौलने के बाद...

138 · गर्मी और सर्दी, भूख और प्यास, और हवा, सूरज, मक्खी और साँप, इन सब को सहने के बाद, किसी को गैंडे की तरह अकेले चलना चाहिए।

"गर्मी, सर्दी, भूख और प्यास": "सर्दी" दो कारणों से होती है: आंतरिक उत्तेजना के कारण या बाहरी मौसम के कारण। "गर्मी" दो कारणों से होती है: भूख को भूख कहते हैं। प्यास को पानी की इच्छा कहते हैं।

"और हवा, सूरज, मक्खी और साँप": "हवा," पूर्वी हवा, पश्चिमी हवा, उत्तरी हवा, दक्षिणी हवा, धूल भरी हवा, धूल रहित हवा, ठंडी हवा, गर्म हवा, हल्की हवा, आंधी, तेज हवा [SN.17.9], पार्श्व हवा, सुनहरे पंखों वाले पक्षी की हवा, ताड़ के पत्तों की हवा, पंखे की हवा। झुलसा देने वाले सूरज को सूरज की पीड़ा (झुलसा देने वाली गर्मी) कहा जाता है। मक्खी (घोड़े की मक्खी) को मक्खी (गैडफ्लाई) कहा जाता है। साँप (रेंगने वाला जीव) को साँप कहा जाता है।

"यह सब सहने के बाद": जब वह हरा देगा, अभिभूत कर देगा, समाप्त कर देगा, कुचल देगा।

139 · जैसे हाथी झुंड को ऊपर उठाता है, कमल (धब्बेदार) जैसी पीठ के साथ, उत्कृष्ट, जंगल में अपनी इच्छानुसार रहता है, वैसे ही गैंडे की तरह अकेले चलना चाहिए।

"हाथी (नाग; जिसका अर्थ है एक नेक व्यक्ति) के समान, जब वह झुंड को छोड़ देता है": हाथी को हाथी कहा जाता है, और जो अकेला प्रबुद्ध है वह भी हाथी है। अकेले प्रबुद्ध व्यक्ति को हाथी क्यों कहा जाता है? "अपराध न करो" हाथी है; "मत जाओ" हाथी है; "मत आओ" हाथी है। अकेले प्रबुद्ध

व्यक्ति "अपराध न करना" हाथी के समान कैसे है? अपराधों को बुराई और अस्वास्थ्यकर धर्म कहा जाता है: वे जो दूषित हैं, जो फिर से उत्पन्न होते हैं (पुनः अस्तित्व में आते हैं), जिनमें भय होता है, जिनके परिणाम भुगतने पड़ते हैं, और जो भविष्य में मृत्यु का कारण बनेंगे।

"संसार में कोई अपराध मत करो, समस्त बंधनों और बेड़ियों को त्यागकर, जो किसी भी चीज से चिपके नहीं रहते और स्वतंत्र होते हैं, वे ही वास्तव में हाथी कहलाते हैं।"

एक अकेला प्रबुद्ध व्यक्ति हाथी की तरह "न जाने" का क्या अर्थ है? एक प्रबुद्ध व्यक्ति को वह नहीं करना चाहिए जो वह नहीं करना चाहता; जो वह नहीं करना चाहता वह उसे नहीं करना चाहिए; जो आसक्ति के कारण नहीं जाता उसे वह नहीं करना चाहिए जो उसे करना चाहिए; क्रोध में मत जाओ; अज्ञान के कारण मत जाओ; अहंकार के कारण मत जाओ; दृष्टि के कारण मत जाओ; परित्याग के कारण मत जाओ; संदेह के कारण मत जाओ; संभावित परेशानियों के कारण मत जाओ; झगड़ों से बहककर, विचलित होकर और विचलित होकर मत जाओ।

एकाकी प्रबुद्ध व्यक्ति हाथी के रूप में "नहीं आ रहा" कैसे है? सोतापन्न मार्ग द्वारा जो भी अशुद्धियाँ दूर हो जाती हैं, वे अशुद्धियाँ उसे अब और नहीं सतातीं, न लौटती हैं और न वापस जाती हैं; ऐसा कहा जाता है कि... (अंशित) वापस नहीं लौटती... (अंशित); अरहंत मार्ग द्वारा सभी अशुद्धियाँ दूर हो जाती हैं, वह अब उन अशुद्धियों का अनुभव नहीं करेगा, न लौटेगा और न ही वापस जाएगा।

"हाथी के झुंड को त्यागने के बाद": उदाहरण के लिए, जब हाथी झुंड को त्यागकर उससे दूर हो जाता है, तो वह जंगल में प्रवेश करता है, चलता है, रहता है, आगे बढ़ता है, रक्षा करता है और जीवित रहता है। इसी प्रकार, जो लोग ज्ञान की प्राप्ति में अकेले होते हैं, वे भी भीड़ को त्यागकर उससे दूर हो जाते हैं और फिर वे जंगलों, घने वनों और सीमावर्ती आवासों (बैठने के स्थानों) का उपयोग करते हैं: शांत, एकांत, एकांत वातावरण, जो अकेले बैठने के लिए उपयुक्त होता है; वे अकेले चलते हैं, अकेले खड़े होते हैं, अकेले बैठते हैं, अकेले लेटते हैं, अकेले भिक्षा मांगने के लिए गांव जाते हैं, अकेले आगे बढ़ते हैं, अकेले लौटते हैं, शांत स्थान पर अकेले बैठते हैं, अकेले कर्म करते हैं, चलते हैं, अकेले रहते हैं, कर्म करते हैं, आगे बढ़ते हैं, रक्षा करते हैं और जीवित रहते हैं।

"पीठ कमल के फूल के समान है, और असाधारण है": जैसे हाथी की पीठ में सात या आठ रत्न होते हैं, वैसे ही एकाग्र ज्ञान प्राप्त व्यक्ति के पास न तो उपदेश और निषेध का ज्ञान होता है, न एकाग्रता का, न ज्ञान का, न मुक्ति का, न पूर्णता का; कमल वाले हाथी की तरह, एकाग्र ज्ञान प्राप्त व्यक्ति भी ज्ञान की सात शाखाओं के फूल को कमल के समान उपयोग करता है: मन को ज्ञान के फूल के रूप में, धम्म को चुनकर ज्ञान के फूल के रूप में, ऊर्जा के साथ, सुख, शांति और स्थिरता के साथ। ठीक वैसे ही। हाथी का सिर शक्ति (सहिष्णुता), बल, गति और साहस में असाधारण होता है। एकाग्र ज्ञान प्राप्त व्यक्ति भी उपदेशों, एकाग्रता, ज्ञान, मुक्ति और ज्ञान के साथ मुक्ति में समान होता है।

"जंगल में अपनी इच्छा अनुसार निवास करेगा": जैसे हाथी जंगल में अपनी इच्छा अनुसार निवास करता है, वैसे ही ज्ञानी व्यक्ति जंगल में अपनी इच्छा अनुसार निवास करता है: प्रथम ध्यान में अपनी इच्छा अनुसार जंगल में निवास करना; द्वितीय ध्यान में भी... (छोड़ा गया), तृतीय ध्यान में भी..., और चतुर्थ ध्यान में भी, अपनी इच्छा अनुसार जंगलों में निवास करना; करुणा..., राहत..., आनंद, मन की शांति के साथ जंगलों में अपनी इच्छा अनुसार निवास करना; असीम शून्य में निवास करना, ...ज्ञान की असीमता में, ...शून्यता में, निर्गमन की प्रतीक्षा में, फल की प्रतीक्षा में, अपनी इच्छा अनुसार जंगलों में निवास करना।

140 · यह असंभव है कि जो लोग मिलने (साथ रहने) के इच्छुक हैं, वे (यहाँ तक कि) अस्थायी राहत भी पा सकें, सूर्य जनजाति के (उसके) शब्दों को सुनने के बाद, किसी को गैंडे की तरह अकेले चलना चाहिए।

"जो लोग मिलने (साथ रहने) के इच्छुक हैं, उनके लिए (यद्यपि) क्षणिक राहत भी पाना असंभव है": भगवान बुद्ध [एमएन.122] ने कहा है: "आनंद, वास्तव में, जो कोई भी संगति में प्रसन्न होता है, संगति से लाभान्वित होता है, संगति पसंद करता है, सभाओं में निपुणता प्राप्त करता है और उनका आनंद लेता है, वे भिक्षु जो सभाओं के लिए उपयुक्त हैं और सभाओं में आनंद प्राप्त करते हैं, वे स्वतंत्र इच्छा वाले, सरल स्वभाव वाले और निर्बल, एकांतप्रिय, शांत और ज्ञानी होंगे—यह असंभव है। परन्तु, आनंद, जो भी भिक्षु समूह से दूर एकांत में रहता है, उससे यह अपेक्षा की जानी चाहिए: ऐसा भिक्षु प्रसन्न, एकांतप्रिय, शांत, ज्ञानी आदि होगा। इस प्रकार का आनंद, जिन्हें कोई कठिनाई नहीं है—यह संभव है। आनंद, वास्तव में, जो कोई

भी सभाओं का आनंद लेता है, ...एक शांत, स्थिर और अविचल हृदय में प्रवेश करेगा और निवास करेगा—यह असंभव है। आनंद, जो भी भिक्षु अकेले और समूहों से दूर रहते हैं..., उनसे यही अपेक्षा की जानी चाहिए: ऐसा भिक्षु शांत, स्थिर और अविचल हृदय से जीवन व्यतीत करेगा - यह संभव है।"

सूर्य वंश के वचन सुनने के बाद: सूर्य (आदिको) को सूर्य (सूरियो) कहा जाता है, उसका उपनाम गौतम है, और जो प्रबुद्ध है उसका उपनाम भी गौतम है, और जो प्रबुद्ध है वह सूर्य के उपनाम का संबंधी है और उससे रिश्तेदार है, इसलिए केवल वही प्रबुद्ध व्यक्ति सूर्य वंश का है। सूर्य वंश के वचन सुनने के बाद: सूर्य वंश के वचन, बोलने का तरीका, शिक्षाएँ, व्याख्याएँ, उपदेश, सुनने, समझने, आत्मसात करने और विवेक करने के बाद।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> निद्देसा >> निद्देसा 2.बी.3

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

<<<< पिछला अगला >>>>

गैंडा सूत्र की व्याख्या
तीसरा अध्याय
141 · "विकृत दृष्टिकोण को त्याग दिया गया है, निर्णय ले लिया गया है, मार्ग प्राप्त कर लिया गया है, मुझे ज्ञान प्राप्त हो गया है और मैं दूसरों द्वारा निर्देशित नहीं होऊंगा": ऐसा कहते हुए, किसी को गैंडे की तरह अकेले चलना चाहिए।

"विकृत दृष्टिकोण को त्याग दिया गया है": विकृत दृष्टिकोण को बीस आश्रित दृष्टिकोण कहा जाता है। यहाँ, वे साधारण लोग जिन्होंने पवित्र व्यक्ति के बारे में नहीं सुना है, जिन्होंने कभी संतों को नहीं देखा है... (विलुप्त भाग देखें), ...ये विकृत दृष्टिकोण हैं। "विकृत दृष्टिकोण को झटक दिया गया है": विकृत दृष्टिकोण को झटक दिया गया है, पार कर लिया गया है, उस पर विजय प्राप्त कर ली गई है, उसे पार कर लिया गया है।

"निर्णय हो गया है, मार्ग मिल गया है": चारों (पवित्र) मार्गों को निर्णय कहा जाता है। जो इन चारों श्रेष्ठ मार्गों को धारण करते हैं, वे पूर्णतः उस निर्णय तक पहुँच चुके हैं जो प्राप्त हो चुका है। "मार्ग मिल गया है," उन्होंने मार्ग प्राप्त कर लिया है, मार्ग को पा लिया है, मार्ग तक पहुँच गए हैं, मार्ग के साक्षी बन गए हैं।

"मैं वह हूँ जिसने ज्ञान प्राप्त कर लिया है और दूसरों के मार्गदर्शन में नहीं चलूँगा": प्रबुद्ध व्यक्ति का ज्ञान उत्पन्न हो चुका है, पूर्णतः उत्पन्न हो चुका है, जन्म ले चुका है, उत्पन्न हो चुका है, प्रकट हो चुका है: "सभी कर्म अनित्य हैं"... (छोड़ा गया), "सभी कर्म दुखदायी हैं"..., "सभी धर्म आत्महीन हैं"..., "धर्मों का कोई भी संग्रह विनाश है"...। "दूसरों के मार्गदर्शन में नहीं चलूँगा," वह अकेला प्रबुद्ध व्यक्ति है जो दूसरों के मार्गदर्शन में नहीं चलता, दूसरों पर निर्भर नहीं रहता, दूसरों से बंधा नहीं रहता, दूसरों के बंधन से मुक्त हो चुका है, वह सत्य को जानता और देखता है, अज्ञानी नहीं है, सही ज्ञाता है, और स्मरणशील है: "सभी कर्म अनित्य हैं," वह व्यक्ति है जो दूसरों के मार्गदर्शन में नहीं चलता... (छोड़ा गया)...।

142 · जो लोभ, छल या इच्छा नहीं रखते, जो बुराई नहीं छिपाते, जिन्होंने बुराई और भ्रम को दूर कर दिया है, वे संसार में अपनी इच्छाओं को त्यागकर, गैंडे की तरह अकेले चलने लगते हैं।

"जो लोभी नहीं, जो छल-कपट नहीं करते, और जो लालसा नहीं रखते": लोभ को लालसा कहा जाता है, यानी लोभ, ...(अंशित, पिछले भाग देखें), अस्वस्थ जड़। केवल प्रबुद्ध व्यक्ति के लिए वह लोभ, लालसा, कटी हुई है, जड़ कटी हुई है...(अंशित, पिछले भाग देखें)। इसलिए, केवल प्रबुद्ध व्यक्ति ही लोभ रहित है।

"गैर-धोखेबाज़ी" में तीन प्रकार की धोखाधड़ी शामिल हैं: संसाधनों का उपयोग करने के लिए धोखाधड़ी, व्यवहार की धोखाधड़ी और लाभ के लिए इधर-उधर की बातें करने की धोखाधड़ी।

संसाधनों के उपयोग में छल क्या है? यहाँ, घर के मालिक भिक्षुओं को वस्त्र, भोजन, आश्रय, रोगियों की ज़रूरतों और चिकित्सा संबंधी आवश्यकताओं के साथ आमंत्रित करते हैं। वह एक दुष्ट इच्छा वाला व्यक्ति है, प्रकृति के प्रति सजग व्यक्ति है और आशावान व्यक्ति है। वह एक ऐसा व्यक्ति है जिसके पास वस्त्र, भोजन, आश्रय, रोगी की ज़रूरतें और चिकित्सा संबंधी आवश्यकताएँ हैं। अधिक की आशा में, वस्त्रों को अस्वीकार करते हुए, भोजन देने से इनकार करते हुए, आश्रय देने से इनकार करते हुए, रोगियों की ज़रूरतों और चिकित्सा संबंधी आवश्यकताओं से इनकार करते हुए, उसने कहा: "एक समण के लिए उच्च मूल्य के वस्त्रों का क्या अर्थ है!" यह उचित है कि एक समण टीले, कूड़े के ढेर या दुकान के सामने से चिथड़े-चिथड़े कपड़े लेकर कोट बनाए। एक समण के लिए उच्च मूल्य के भोजन का क्या अर्थ है! यह उचित है कि एक समण भिक्षा माँगकर जीवन यापन करे। उच्च मूल्य के आवास में एक समण के लिए क्या है! ...एक समण वह होता है जो वृक्षों के नीचे, टीलों के बीच या खुले में रहता है। ...रोगियों की ज़रूरतों और चिकित्सा संबंधी आवश्यकताओं का ध्यान रखता है! ...किण्वित गाय के मूत्र या कुचली हुई हरी सब्जियों से बनी औषधि का प्रयोग करता है। यह जानकर वह मोटे वस्त्र पहनता है; मोटा भोजन ग्रहण करता है; मोटे घरों में रहता है; रोगियों और चिकित्सा संबंधी मोटी-मोटी वस्तुओं का उपयोग करता है। घर के मालिक उसे इस प्रकार जानते थे: "यह समण कम इच्छाओं वाला, संतुष्ट, एकांतप्रिय, भीड़-भाड़ से दूर रहने वाला, ऊर्जावान और आध्यात्मिक गुरु है।" वे उसे वस्त्र, भोजन, आश्रय, रोगियों की ज़रूरतों और चिकित्सा संबंधी आवश्यकताओं के साथ अधिकाधिक आमंत्रित करते हैं। उन्होंने कहा: "तीनों अवस्थाओं में ऐसे नेक लोग हैं जो बहुत पुण्य कमाते हैं: आस्था की अवस्था में नेक लोग हैं, पुण्य और दान की अवस्था में ऐसे नेक लोग हैं जो बहुत पुण्य कमाते हैं, और सहायता के योग्य व्यक्ति की अवस्था में ऐसे नेक लोग हैं जो बहुत पुण्य कमाते हैं। आप विश्वासी हैं, दान मौजूद है, और मैं दान लेने वाला हूँ। यदि मैं इसे स्वीकार नहीं करता, तो आप पुण्य से वंचित हो जाएँगे। यह मेरे लिए आवश्यक नहीं है, बल्कि दयावश, मैं आपसे स्वीकार करता हूँ।" इसके बाद, वे बहुत से वस्त्र, बहुत से भोजन, बहुत से आवास और बहुत से रोगियों की ज़रूरत की चीज़ें और चिकित्सा संबंधी ज़रूरतें स्वीकार करते हैं। इस प्रकार भौंहें चढ़ाने वाले किसी भी व्यक्ति की भौंहें छल के मार्ग पर हैं, छल की अवस्था में हैं, यह संसाधनों को प्राप्त करने के लिए छल है।

व्यवहार की छल-कपट क्या है? यहाँ कुछ प्रकार के बुरे भोगी हैं, कुछ प्रकृति के भोगी और कुछ मान-सम्मान के भोगी, (विचार): "इस तरह लोग मेरा आदर करेंगे।" वह चलने, खड़े होने, बैठने, लेटने की मुद्रा में बैठता है, इच्छा के लिए चलता है, इच्छा के लिए खड़ा होता है, इच्छा के लिए बैठता है, इच्छा के लिए लेटता है, एकाग्रता में बैठे व्यक्ति की तरह चलता है, ध्यानमग्न व्यक्ति की तरह खड़ा होता है, ध्यानमग्न व्यक्ति की तरह बैठता है, ध्यानमग्न व्यक्ति की तरह लेटता है, और ध्यानमग्न व्यक्ति के रूप में प्रकट होता है। इस प्रकार के व्यवहारों को स्थापित करना, मजबूत करना और पूर्ण रूप से स्थापित करना; इस व्यंजक व्यक्ति की भौंहें छल-कपट का मार्ग और छल-कपट की अवस्था हैं, यही व्यवहार की छल-कपट है।

लाभ के लिए हर जगह बातें करने का छल क्या है? यहाँ कुछ प्रकार के दुष्ट इच्छाधारी हैं, कुछ प्रकृति की लालसा रखते हैं, और कुछ मान-सम्मान की लालसा रखते हैं (सोचते हैं): "इस तरह लोग मेरा आदर करेंगे।" उन्होंने पवित्र धम्म के अनुसार कहा, "जो कोई इस प्रकार वस्त्र धारण करता है, वह एक शक्तिशाली समण है।" उन्होंने कहा, "जो कोई इस प्रकार का कटोरा धारण करता है..., तांबे का कटोरा धारण करता है..., जल छानने का यंत्र धारण करता है..., चाबियाँ धारण करता है, जूता पहनता है, कमरबंद पहनता है... वह एक महान शक्तिवान समण है।" उन्होंने कहा, "जिसके अनुयायी इस प्रकार के हैं, वह एक शक्तिशाली समण है।" उन्होंने कहा, "जिसके गुरु इस प्रकार के हैं..., भिक्षु के समान व्यक्ति इस प्रकार के हैं..., गुरु, मित्र, परिचित, निकट संबंधी, साथी के समान व्यक्ति इस प्रकार के हैं..., वह एक शक्तिशाली समण है।" उन्होंने कहा: "जो कोई भी इस तरह के आवास में रहता है..., आधे छत वाले घर में, ऊँची इमारत में, समतल घर में, गुफा में, झोपड़ी में, भारी मंडप में, वेधशाला में, गोल घर में, शेड में, व्याख्यान कक्ष में, तम्बू में, पेड़ के नीचे रहता है..., वह महान शक्ति का समण है।"

या फिर वे लोग जो लगातार भौंहें चढ़ाए रहते हैं; निरंतर भौंहें चढ़ाए रहते हैं; जो छल करते रहते हैं; जो लगातार शिकायत करते रहते हैं; जो अपनी वाणी के कारण सम्मान पाते हैं, जो ऐसी गहरी, गुप्त, सूक्ष्म, अलौकिक और खोखली बातें कहते हैं: "यह समण इस प्रकार इस शांत निवास में रहता है और प्रतीक्षा करता है।" जो भी इस प्रकार भौंहें चढ़ाता है, उसकी भौंहें चढ़ाना; छल का मार्ग, छल की अवस्था, यही आसपास की भाषा का छल है। केवल ज्ञान प्राप्त व्यक्ति के लिए ये तीनों प्रकार के छल: धन (संसाधनों) का छल, व्यवहार का छल और लाभ के लिए इधर-उधर बोलने का छल, समाप्त हो चुके हैं, शांत हो चुके हैं, रुक चुके हैं, उत्पन्न नहीं हो सकते और ज्ञान की अग्नि से भस्म हो चुके हैं, इसलिए केवल ज्ञान प्राप्त व्यक्ति छल-कपट से मुक्त होता है।

"जिनमें कोई इच्छा नहीं होती," उनके लिए इच्छा प्यास कहलाती है, जो कि लोभ है... प्रबुद्ध व्यक्ति के लिए लालसा, प्यास, सब कुछ समाप्त हो चुका होता है, और उसकी जड़ें कट चुकी होती हैं... इसलिए, एकमात्र प्रबुद्ध व्यक्ति वह है जो इच्छा रहित है।"

"जो बुराई को नहीं छुपाते, उन्होंने गंदगी और भ्रम को दूर कर दिया है": "बुराई छुपाना" का तात्पर्य बुराई, पाखंड और ईर्ष्या को छुपाने के सभी कृत्यों से है। "गंदगी" का तात्पर्य लोभ, अश्लीलता, अभद्रता, घिनौनी गंदगी, क्रोध, द्वेष, बुराई छुपाना, प्रभुत्व जताना, और सभी अस्वास्थ्यकर कृत्रिम चीजों से है। "अज्ञान" का तात्पर्य दुख में अज्ञान, दुख की ओर ले जाने वाले मार्ग में अज्ञान, अतीत में अज्ञान, भविष्य में अज्ञान, अतीत और भविष्य में अज्ञान, विशिष्ट परिस्थिति और परिस्थितिजन्य स्थिति का अज्ञान, इस प्रकार का सभी अज्ञान, न देखना, न जागरूक होना, न ज्ञान प्राप्त करना, न समझना, न दृढ़ता से समझना, सही ढंग से न देखना, न जांच करना, बुरी बुद्धि, आसक्ति, अज्ञान की बाढ़, अज्ञान का बंधन, अज्ञान की परेशानी की संभावित प्रवृत्ति, अज्ञान का उलझाव, अज्ञान की बाड़, अज्ञान की जड़ से है। केवल उसी प्रबुद्ध व्यक्ति के लिए, बुराई, गंदगी और अज्ञान को छिपाना पूरी तरह से त्याग दिया गया है, उसका नाश हो गया है, उसका विच्छेद हो गया है... केवल वही प्रबुद्ध व्यक्ति है जो बुराई को नहीं छिपाता और जिसने गंदगी और भ्रम का नाश कर दिया है।

"सारे संसार में इच्छा का त्याग करने वाला बनो": इच्छा को लालसा कहा जाता है, जो लोभ है... "सभी लोकों में," दुख के लोक में, मनुष्य के लोक में, स्वर्ग के लोक में, समुच्चय के लोक में, संसार के लोक में। "सारे लोकों में इच्छा रहित बनो": सभी लोकों में, इच्छा रहित बनो; प्यास से विमुख हो जाओ; इच्छा से विमुख होने के बाद।

143 · बुरे साथियों से बचना चाहिए, जो लाभहीन बातें दिखाते हैं, जो गलत बातों पर अड़े रहते हैं, उनसे दोस्ती नहीं करनी चाहिए, बल्कि गैंडे की तरह अकेले चलना चाहिए।

"दुष्ट संगति से बचना चाहिए": जो भी व्यक्ति दस प्रकार के बुरे विचारों का आधार रखता है, उसे दुष्ट संगति कहा जाता है: "इसमें न दान है, न भेंट, न अच्छा-बुरा कर्म, न फल और न ही पुरस्कार। इस संसार में न कोई परलोक है, न कोई माता, न कोई पिता, न कोई सजीव प्राणी। इस संसार में न कोई धर्मात्मा समण है, न कोई ब्राह्मण, जो इस संसार और परलोकों की गवाही दे।" यही दुष्ट संगति है। "दुष्ट संगति से बचना चाहिए": "दुष्ट संगति से बचना चाहिए, उसका त्याग करना चाहिए।"

"निष्फल द्रष्टा, जो अधर्म में लीन है": वह व्यक्ति जो बुरी दृष्टि रखता है, जो दस प्रकार की बुरी प्रवृत्तियों का साथी है, उसे निष्फल द्रष्टा कहा जाता है: "न दान, न सहायता...।" "जो गलत में लीन है," वह जो गलत शारीरिक कर्म में लीन है; वह जो गलत भाषा में लीन है; वह जो गलत इरादे में लीन है; जो अधर्मी हत्या में लीन हैं; जो बिना दिए लेने में लीन हैं; ...अधर्मी व्यभिचार में; ...अधर्मी छल में; ...अधर्मी वियोग में; गलत भाषा में; अनुचित और अभद्र भाषा में; अन्यायपूर्ण अभद्र भाषा में; अधर्मी लोभ में; अनुचित द्वेष में; अनुचित विचार में; गलत कर्मों में; पाँच गलत इच्छाओं में; पाँच गलत आवरणों में स्थिर, गहराई से स्थिर (लगा हुआ), अटका हुआ, रुका हुआ, प्रवेश करने के लिए, कलंकित होने के लिए, मुड़ने के लिए, आसक्त होने के लिए, स्थिर होने के लिए, अवरुद्ध होने के लिए।

"जो लोग लालची और लापरवाह होते हैं, उनसे मित्रता नहीं करनी चाहिए": "लालची (उत्साही)", वे जो सभी इच्छाओं की पूर्ति के लिए प्रयास करते हैं, जिनका ऐसा चरित्र होता है, जिनके पास अधिक होता है, जो दूसरों को महत्व देते हैं, जो लक्ष्य साधते हैं, मेहनती व्यक्ति, जो उस ओर झुकाव रखते हैं, विजेता और उत्थानकर्ता, वे भावुक व्यक्ति होते हैं। जो कोई भी प्यास के कारण सभी रूपों में खोजता और प्रयास करता है..., ध्वनि में..., (छोड़ा गया) गंध में..., स्वाद में..., स्पर्श में..., ...वह भी भावुक होता है। जो कोई भी प्यास के कारण रूपों में..., ध्वनि में..., ...प्राप्त होता है, वह भी भावुक होता है। जो कोई भी प्यास के कारण सभी रूपों में..., ध्वनि में..., गंध में..., स्वाद में..., स्पर्श में...... का उपयोग करता है। उत्साही, जैसे आलोचक आलोचना के प्रति उत्साही होते हैं, श्रमिक काम के प्रति उत्साही होते हैं, मार्ग पर चलने वाले मार्ग के प्रति उत्सुक होते हैं, और ध्यान करने वाले ध्यान के प्रति उत्सुक होते हैं; उसी प्रकार, जो कोई भी खोजता है, ...वह भावुक होता है। जो कोई भी प्यास के कारण विभिन्न रूपों में खोज और भीख मांगता है... प्यास के कारण विभिन्न रूपों में जो कुछ भी प्राप्त होता है... "मुक्ति (आरामदायक, शिथिलता)" का अर्थ है कि शरीर के बुरे कर्मों में, या वाणी के बुरे कर्मों में, या मन के बुरे कर्मों में, या पांच इच्छाओं में, त्याग किया जा सकता है, और हृदय का परित्याग उत्पन्न नहीं होता है। या, अच्छे धम्म के अभ्यास के प्रति अनादर की अवस्था, अनित्यता की अवस्था, निरंतर कार्य करने की अवस्था, आदत से चिपके रहने की अवस्था, इच्छाओं की उपेक्षा

करने की अवस्था, उत्तरदायित्व की उपेक्षा करने की अवस्था, अभ्यास न करने की अवस्था, कम अभ्यास करने की अवस्था, अभ्यास न करने की अवस्था, त्याग (आराम)। विश्राम, त्याग और सहजता की ऐसी किसी भी अवस्था को मुक्ति कहा जाता है।

"जो उत्साही और व्यभिचारी हैं उनसे मित्रता नहीं करनी चाहिए": उत्साही लोगों से मित्रता नहीं करनी चाहिए; व्यभिचारी लोगों से मित्रता नहीं करनी चाहिए; उनसे मित्रता नहीं करनी चाहिए, उनके साथ जुड़ना नहीं चाहिए, उनमें भाग नहीं लेना चाहिए, उनका उपयोग नहीं करना चाहिए, उनका अभ्यास नहीं करना चाहिए, और उनका पूर्ण अभ्यास नहीं करना चाहिए, और स्वीकार करने के बाद उनके साथ आगे नहीं बढ़ना चाहिए।

144 · आपको बहुत ज्ञान रखने वाले लोगों, धम्म धारण करने वालों और उत्कृष्ट एवं वाक्पटु मित्रों के निकट रहना चाहिए। सभी लाभों को जानने और शंकाओं को दूर करने के बाद, आपको गैंडे की तरह अकेले चलना चाहिए।

जो अधिक सुनते (सीखते) हैं और जो धम्म को धारण करते हैं, उनके निकट रहना चाहिए: मित्र वे हैं जो अधिक सुनते हैं, सुनी हुई बातों को याद रखते हैं, उन्हें संजोते हैं, और जो अच्छाई से प्रारंभ करते हैं, जिनका मध्य और अंत अच्छा होता है; जिनका अर्थ और शब्द दोनों सही होते हैं। वे घोषणा करते हैं कि केवल ब्रह्म की पूर्णता और शुद्धि ही है। ऐसे धम्म को सुना, याद किया, आत्मसात किया, हृदय से पालन किया और अच्छाई से ओतप्रोत किया गया है। "धम्म धारण करने वाले", धम्म का स्मरण: सूत्र, गेय्या, वेय्याकरण, गाथा, उदाना, इतिवुत्तक, जातक, अब्भूत धम्म, वेदल्ल। जो अधिक सुनते हैं और जो धम्म को धारण करते हैं, उनके निकट रहना चाहिए: जो अधिक सुनते हैं और जो धम्म धारण करते हैं, उनके घनिष्ठ मित्र होने चाहिए, पूर्णतः निकट रहना चाहिए, उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए, आज्ञा मानने के लिए झुकना चाहिए, पूर्णतः आज्ञाकारी होना चाहिए, और उनकी ओर उन्मुख होना चाहिए।

"उत्कृष्ट, वाक्पटु मित्र": वे मित्र जो उपदेश, एकाग्रता, ज्ञान, मुक्ति और ज्ञान की मुक्ति के गुणों में उत्कृष्ट हैं। वाक्पटु व्यक्ति तीन प्रकार के होते हैं: विद्वान, जिज्ञासु और सिद्ध। एक विद्वान वाद-विवादकर्ता कौन होता है? यहाँ, एक विशेष प्रकार का व्यक्ति बौद्ध भाषा (बुद्ध की शिक्षाएँ) का विद्यार्थी होता है: सूत्र, श्लोक आदि, उसके ज्ञान पर आधारित होते हैं।

बार-बार प्रश्न पूछने वाला वाद-विवादकर्ता कौन होता है? यहाँ, एक विशेष प्रकार का व्यक्ति अपने हितों, न्याय (धार्मिक हितों), विशेषताओं, कारणों, संभावना और असंभवता के आधार पर प्रश्न पूछता है, और उसके प्रश्नों पर निर्भरता के बाद ही यह प्रकट होता है।

सिद्ध वाद-विवादकर्ता कौन होता है? यहाँ, एक विशेष प्रकार का व्यक्ति वह होता है जिसने चारों चेतनाओं, चारों धर्मों, चारों आध्यात्मिक आधारों, पाँच इंद्रियों, पाँच शक्तियों, सात ज्ञान तत्वों, आठ पवित्र मार्गों, चार समान फलों, चार वाद-विवादों और छह जादुई शक्तियों को प्राप्त किया हो। जो तर्क, ज्ञात विधि और ज्ञात शब्द को जानते हैं, उनके लिए तर्क ज्ञात सिद्धांत में सिद्ध होता है, विधि ज्ञात धर्म में प्रकट होती है, शब्द ज्ञात शब्द में सिद्ध होता है, और तीनों प्रकार के ज्ञान में कोई बाधा नहीं आती। ज्ञान को समझने के लिए, स्वतंत्र ज्ञान प्राप्त व्यक्ति पूर्णतः पहुँचता है, प्रवेश करता है, पूर्णतः प्रवेश करता है, पर्याप्त ज्ञान प्राप्त करता है, पूर्णतः संतुष्ट होता है, और इस प्रकार का तर्क-वितर्क करता है। यदि उसने सीखा, प्रश्न किया और सिद्ध नहीं किया, तो वह क्या उत्तर देगा?

"सभी लाभों को जानने के बाद आपको संदेह से मुक्त हो जाना चाहिए": अपने हितों को जानने के बाद, आपको दूसरों के हितों को जानना चाहिए; दोनों के हितों को जानने के बाद, वर्तमान जीवन के हितों को जानने के बाद, भविष्य के जीवन के हितों को जानने के बाद, सर्वोच्च हित को जानने के बाद, सत्यापन करने के बाद, समझने के बाद, तौलने के बाद, निर्णय करने के बाद, अलग करने के बाद, स्पष्ट करने के बाद, संदेह करने के बाद, उसे हटा दिया जाएगा, निष्कासित कर दिया जाएगा, काट दिया जाएगा, त्याग दिया जाएगा, समाप्त कर दिया जाएगा और उसका अस्तित्व समाप्त कर दिया जाएगा।

145 · मनोरंजन में संतुष्टि के बिना, संसार में आनंद, इच्छा और सुख के बिना, सजावट (आभूषण) के बिना, एक उदासीन व्यक्ति बनो, अलंकरण से अलग होकर, सत्यवादी, एक गैंडे की तरह अकेले चलो।

"संसार में मनोरंजन, आनंद और इच्छा": "मनोरंजन": मनोरंजन दो प्रकार का होता है: शारीरिक मनोरंजन और शाब्दिक मनोरंजन... (उद्धृत)। "आनंद," जो संतुष्टि का पर्यायवाची है, "आनंद" कहलाता है। "इच्छा," इस बारे में भगवान बुद्ध [एमएन.139] कहते हैं: "भिक्षुओं! पाँच प्रकार की इच्छाएँ होती हैं, वे कौन सी पाँच प्रकार की हैं? ...(उद्धृत, पिछले खंड देखें)... भिक्षुओं! इन पाँच इच्छाओं से उत्पन्न होने वाला सुख और आनंद, भिक्षुओं! इसे कामवासना कहते हैं।" "संसार में," मानव जगत में।

"सजावट रहित, उदासीन बनो": संसार के मनोरंजन, आनंद और सुख में उदासीन और अनुषंगी बनो। अंत के बाद, जब वह इन सब का त्याग कर दे, इनसे विमुख हो जाए, और इन्हें अस्तित्वहीन बना दे।

"सजावट की अवस्था से अलग होकर, सच कहें तो": "सजावट" दो प्रकार की होती है: एक निवासियों के लिए और दूसरी गैर-निवासियों के लिए। निवासी की सजावट क्या होती है? बाल, दाढ़ी, फूलों की माला, आदि, ये आम आदमी की सजावट है।

भिक्षुओं का श्रृंगार क्या है? वस्त्रों का श्रृंगार, पान के पात्र का श्रृंगार, पलंग का श्रृंगार, क्षीण शरीर का श्रृंगार या आवश्यक वस्तुओं का श्रृंगार, सौंदर्यबोध (गंभीरता), सजने-संवरने की इच्छा, सुसज्तृप्ति, लालची अवस्था, उतावलापन, उतावलापन और सतहीपन, यही भिक्षुओं का श्रृंगार है।

"सच्चा वक्ता," जो अकेले ही प्रबुद्ध है, वही सच्चा वक्ता है, सत्यवादी है, विश्वसनीय है, भरोसेमंद है और संसार में छल-कपट से रहित है। वह दिखावटी अवस्था से अलग हो चुका है, उससे परहेज कर चुका है, उसे कुचल चुका है, उसे त्याग चुका है, वह बंधनमुक्त है और मुक्त है; वह निर्बल हृदय से जीवन व्यतीत करता है।

146 · पत्नी और माता-पिता, बच्चे, धन, अनाज और रिश्तेदार, दायरे में सभी इच्छाओं का त्याग करने के बाद, गैंडे की तरह अकेले चलना चाहिए।

"बच्चे, पत्नी और माता-पिता": "पुत्र," पुत्र चार प्रकार के होते हैं: ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)। पत्नी, ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)। "पिता," वह जिसने (किसी को) जन्म दिया। "माता," वह जिसने जन्म दिया।

"धन, अनाज और रिश्तेदार": सोना, सोने के सिक्के, मोती, गोले, कांच, सर्पिल, पत्थर, मूंगा, चांदी, सोना, माणिक, अगेट को धन (वस्तुएँ) कहा जाता है। अनाज (वस्तुएँ): चावल, धान, जौ, गेहूं, बाजरा और अन्य अनाज (शाब्दिक रूप से, करी के लिए उपयुक्त) कहलाते हैं। "रिश्तेदार": रिश्तेदारों के चार प्रकार होते हैं: प्रत्यक्ष रिश्तेदार, उपनाम वाले रिश्तेदार, धार्मिक रिश्तेदार और कौशल (व्यापार) से जुड़े रिश्तेदार।

"सभी इच्छाओं का त्याग करने के बाद": "इच्छा," दो प्रकार की इच्छाएँ होती हैं: .... "सभी इच्छाओं का त्याग करने के बाद," वस्तुओं की इच्छा को जानने के बाद, अपवित्रता की इच्छा का त्याग करने के बाद, त्यागने के बाद, भगाए जाने के बाद, समाप्त करने के बाद, और उसे अस्तित्व से परे ले जाने के बाद। "सभी इच्छाओं का त्याग करने के बाद": सोतापन्न मार्ग द्वारा काटे गए किसी भी अपवित्रता का वह अनुभव नहीं करता और न ही वह वापस लौटता है; सकदागामी मार्ग द्वारा काटे गए सभी अपवित्रता...; अनागामी मार्ग द्वारा काटे गए अपवित्रता...; अरहंत मार्ग द्वारा काटे गए अपवित्रता का अनुभव नहीं होता और न ही वह अपवित्रता में लौटता है।

147 · यह टाई है, यहाँ थोड़ी खुशी है, थोड़ा आनंद है, और यहाँ अधिक पीड़ा है, इस तरह, यह एक मछली पकड़ने का कांटा है; यह जानने के बाद, बुद्धिमान व्यक्ति को गैंडे की तरह अकेले चलना चाहिए।

"यह एक बंधन है, यहाँ सुख थोड़ा ही है": "बंधन," या "बुनाई," या "लुभावनी वस्तु," या "चिपकना," या "बाधा," ये पाँच इच्छाओं के पर्यायवाची हैं। "यहाँ सुख थोड़ा ही है," भगवान बुद्ध कहते हैं: "भिक्षुओं! ये पाँच इच्छाएँ हैं, ये पाँच कौन सी हैं?... यह सुख छोटा है; यह सुख नगण्य है; यह सुख केवल थोड़ा सा है; यह सुख निम्न है; यह सुख कम है; यह सुख नीच है।"

"यहाँ सुख कम और दुख अधिक है": भगवान बुद्ध ने कहा: "इच्छा सुख कम करती है, लेकिन दुख और निराशा बढ़ाती है; यहाँ कष्ट अधिक हैं;" भगवान बुद्ध ने कहा: "इच्छा कंकाल के समान है..., मांस के टुकड़े के समान है..., मशाल के समान है..., कोयले की खान के समान है..., स्वप्न के

समान है, उधार ली हुई वस्तु के समान है, पेड़ के फल के समान है, कसाईखाने के समान है, तलवार के समान है..." भगवान बुद्ध ने कहा: "इच्छा साँप के सिर के समान है, और कड़वी और निराशाजनक है; यहाँ कष्ट अधिक हैं।" [एमएन.22]

"इस प्रकार, यह मछली पकड़ने का कांटा है, ज्ञानी इसे जानता है": "कांटा," या "बुनाई," या "प्रलोभन," या "चिपकना," या "बाधा," जो पाँच इच्छाओं के पर्यायवाची हैं। "इस प्रकार," वाक्यों का क्रम; वाक्यों का जुड़ाव; वाक्यों का पूरा होना; शब्दों का संयोजन; शब्दों का जुड़ाव; यही वाक्यों का क्रम है, जो "इस प्रकार" है। "ज्ञानी" बुद्धिमान, प्रबुद्ध, भेदशील और समझदार होते हैं। "इस प्रकार, यह मछली पकड़ने का कांटा है। जो ज्ञान को जानता है, वह इसे जानता है": जो "कांटे" को जानता है, वह "बुनाई" को जानता है, "प्रलोभन" को जानता है, "चिपकने" को जानता है, "बंधन" को जानता है, "बाधाओं" को जानता है; जानने के बाद वह समझता है, तौलता है, परखता है, अलग करता है और स्पष्ट करता है।

148 · गांठें तोड़ने के बाद, जैसे पानी में मछली जाल तोड़ती है, जैसे आग जली हुई वस्तु पर वापस नहीं आती, वैसे ही गैंडे की तरह अकेले चलना चाहिए।

"गांठें तोड़ने के बाद": दस प्रकार की गांठें होती हैं: इच्छा की गांठ, घृणा की गांठ, अहंकार की गांठ, दृष्टि की गांठ, संदेह की गांठ, लोभ की गांठ, लालच की गांठ, ईर्ष्या की गांठ, कंजूसी की गांठ और अज्ञान की गांठ। "गांठें तोड़ने के बाद": दस प्रकार की गांठें टूट जाने, दूर हो जाने, समाप्त हो जाने और उनका अस्तित्व समाप्त हो जाने के बाद।

"जाल टूटने के बाद पानी में मछली की तरह": जाल को रस्सी का जाल कहते हैं, पानी (सलिलं) को पानी (उदकं) कहते हैं, और मछली (अम्बुचारी) को मछली (मच्छो) कहते हैं। जैसे मछली सब कुछ नष्ट कर देती है, पूरी तरह से तोड़ देती है, वैसे ही जाल पूरी तरह से टूट जाता है और फिर भी चलता है, जीता है, गति करता है, आगे बढ़ता है, रक्षा करता है और जीवित रहता है। इसी प्रकार, दो प्रकार के जाल होते हैं: प्यास के जाल और दृष्टि के जाल...। जो प्रबुद्ध है, उसके लिए प्यास का जाल और दृष्टि का जाल दोनों ही कट जाते हैं। जिस अवस्था में प्यास का जाल कट जाता है, उस अवस्था में दृष्टि का जाल भी कट जाता है। सचेतनता की अवस्था में, वह प्रबुद्ध व्यक्ति रूप, ध्वनि या गंध से आसक्त नहीं होता... (अंशित); धर्मों को देखकर, सुनकर, समझकर और उनके प्रति जागरूक होकर, वे उनसे बंधे नहीं रहते, न ही उनमें कैद होते हैं, न ही वे अचेतन होते हैं, न ही वे अलग होते हैं, न ही उन्हें छोड़ा जाता है, बल्कि वे पहले से ही बंधन को छोड़कर मुक्त हो चुके होते हैं, वे संयमित हृदय से जीवन व्यतीत करते हैं।

"जैसे आग जली हुई वस्तु की ओर वापस नहीं लौटती": जैसे आग घास को जलाती है, वह तब तक जलती रहती है जब तक वह वापस नहीं लौटती, ठीक उसी प्रकार, एकाकी-प्रबुद्ध व्यक्ति के लिए, सोतापन्न मार्ग द्वारा काट दी गई सभी अशुद्धियाँ, ..., वापस नहीं लौटतीं।

149 · जिनकी निगाहें नीचे की ओर हैं और जो भटकते नहीं, जो जड़ों की रक्षा करते हैं, जो मन की रक्षा करते हैं, जो अशुद्धियों से मुक्त हैं और जो (वासना से) पूरी तरह से जलते नहीं हैं, उन्हें गैंडे की तरह अकेले चलना चाहिए।

"जिसकी निगाहें नीचे झुकी हुई हैं और जो भटकता नहीं": आँखें कैसे भ्रमित हो जाती हैं? यहाँ भिक्षु की आँखें बेचैन हैं: जो दिखना चाहिए वह अदृश्य हो जाता है, और जो पार किया जाना चाहिए वह दिखाई देने लगता है। बाग से बाग तक, गाँव से गाँव तक, कस्बे से कस्बे तक, शहर से शहर तक, गाँव से गाँव तक, जगह-जगह तक, वह विभिन्न रूपों में लंबी शोभायात्राएँ और कभी-कभार निकलने वाली शोभायात्राएँ देखता है।

या फिर, जब भिक्षु किसी के घर में मेहमान होता है, या सड़क पर टहल रहा होता है, तो वह निश्चिंत होकर चलता है: चलते-चलते वह हाथी, घोड़े, बैलगाड़ी, पैदल सेना, लड़के और लड़की को देखता है। वह स्त्रियों को देखता है, पुरुषों को देखता है, बाजार को देखता है, घर के दरवाजे को देखता है, ऊपर देखता है, नीचे देखता है और चारों दिशाओं में देखता है।

या, जब भिक्षु अपनी आँखों से किसी रूप को देखता है, तो वह बाहरी रूप और सूक्ष्म रूप का लोभी बन जाता है, क्योंकि जब वह अपनी आँखों की जड़ में रहता है, तो लोभ, दुःख और बुराई उसमें प्रवाहित होने लगती है। वह अपने आत्म-संयम के अनुसार कार्य नहीं करता, आँखों की जड़ों की रक्षा नहीं करता, और आँखों की जड़ों का आत्म-संयम प्राप्त नहीं करता। [SN.35.120]

या यदि कुछ समण और ब्राह्मण गुरुओं ने श्रद्धापूर्वक अर्पित भोजन ग्रहण किया, तो वे प्रदर्शनों में ठहरते और इस प्रकार देखते: नृत्य, गायन, संगीत, नाटक, प्राचीन काल के बारे में बातें, घंटियाँ, झांझ, ढोल, जादू, लोहे की गेंदें, बांस की छड़ी से खेलना, करतब, हाथी की लड़ाई, घोड़े की लड़ाई, भैंस की लड़ाई, बैल की लड़ाई, बकरी की लड़ाई, मेढ़े की लड़ाई, मुर्गे की लड़ाई, बटेर की लड़ाई, गदा की लड़ाई, मुक्केबाजी, कुश्ती, व्यायाम, अभ्यास, सेना की संरचनाएँ, सैन्य परेड [डीएन.1], आदि, जो इस प्रकार के विभिन्न प्रदर्शनों को देखने में लगे रहते हैं।

आँख नीचे कैसे है? यहाँ, भिक्षु अस्थिर आँखों वाला व्यक्ति नहीं है, और न ही वह व्यक्ति है जिसकी आँखें (अशांत) हैं: जो दिखना चाहिए वह अदृश्य हो जाता है..., वह जगह-जगह लंबी परेड और विभिन्न रूपों में कभी-कभार होने वाली परेड देखना नहीं चाहता था।

या फिर, जब भिक्षु घर में मेहमान होता है, या सड़क पर टहल रहा होता है, तो वह सतर्कता से चलता है: चलते समय वह हाथी को नहीं देखता, घोड़े को नहीं देखता, ...गाड़ी को नहीं देखता..., ...पैदल सेना को नहीं देखता..., वह सभी दिशाओं में नहीं देखता।

या फिर, जब भिक्षु अपनी आँखों से रूप को देख लेता है, तो वह न तो रूप का लोभी बनता है और न ही सूक्ष्म रूप का लोभी, क्योंकि जब वह आँख के मूल में रहता है, तो लोभ, दुःख और बुराई का प्रवाह होता है, और वह अपने आत्मसंयम के अनुसार कार्य करता है, आँख के मूल की रक्षा करता है और आँख के मूल पर आत्मसंयम प्राप्त करता है।

या यदि कुछ समण और ब्राह्मण गुरुओं ने श्रद्धापूर्वक अर्पित भोजन ग्रहण किया, तो वे प्रदर्शनों में नहीं ठहरे और इस प्रकार नहीं देखते रहे, अर्थात्: नृत्य, गायन, संगीत... (उद्धृत), इस प्रकार के प्रदर्शनों को देखने से परहेज करते रहे।

"और भटकना नहीं," यह भटकना कैसे हुआ? यहाँ, एक विशेष प्रकार का भिक्षु घुमक्कड़ है, जिसका स्वभाव घुमक्कड़ है: एक बाग से दूसरे बाग तक, ..., एक स्थान से दूसरे स्थान तक, वह लंबी और अनियमित यात्राओं में लगा रहता है।

या फिर भिक्षुओं के बगीचे में भटकता हुआ एक भिक्षु, बिना किसी लाभ, बिना किसी कारण के, जड़विहीन होकर, चुपचाप भिक्षुओं के कमरे से भिक्षुओं के कमरे तक, निवास से निवास तक, आधी छत वाले मकान से..., ऊंची इमारत से..., समतल मकान से, गुफा से, झोपड़ी से, मंडप से, अवलोकन चबूतरे से, तंबू से, शेड से, व्याख्यान कक्ष से, गोल घर से, पेड़ से, या जहाँ भिक्षु बैठते हैं, वहाँ जाता है, जहाँ पहला दूसरा बन जाता है, या दूसरा स्थान तीसरा बन जाता है, या तीसरा स्थान चौथा बन जाता है। वहाँ बहुत सी विविध बातें होती हैं, जैसे: राजाओं का सिद्धांत (चर्चा), चोरों का सिद्धांत... (छोड़ा गया, पिछले भाग देखें)।

"वह जो भटकता नहीं," वह जो भटकने से मुक्त हो चुका है, संयम बरत चुका है, त्याग चुका है, छोड़ चुका है, मुक्त हो चुका है, बंधनों से मुक्त हो चुका है और निर्मल हृदय से एकांत में प्रसन्न रहता है। वह जो एकांत में बैठना पसंद करता है, वह जो आंतरिक शांति का अभ्यास करता है, वह जो ध्यान का तिरस्कार नहीं करता, वह जो साक्षी भाव रखता है और एकांत भाव को बढ़ाता है, वह जो ध्यानमग्न है, वह जो ध्यान से प्रेम करता है, वह जो एकाकी अभ्यासी है और वह जो अपने हितों का प्रशंसक है।

"जो मूल की रक्षा करता है, जो मन की रक्षा करता है": "जो मूल की रक्षा करता है," वह व्यक्ति जो अपनी आँखों से रूप को देखकर भी दिखावे का या बारीकियों का लालच नहीं करता, क्योंकि जब वह आँख के मूल में रहता है तो वह असुरक्षित हो जाता है, लोभ, दुःख और बुराई उसमें प्रवाहित होने लगती है। वह अपने आत्म-संयम के अनुसार कार्य करता है, आँख के मूल की रक्षा करता है, आँख के मूल में आत्म-संयम प्राप्त करता है; जब वह अपने कानों से ध्वनियाँ सुनता है..., अपनी नाक से सूंघता है..., जीभ से स्वाद चखता है..., शरीर से स्पर्श करता है..., चेतना से धम्म को जानने के बाद, वह सूक्ष्म रूप का या सूक्ष्म रूप का लालच नहीं करता, क्योंकि जब मन सुरक्षित नहीं होता तो वह लोभी और चिंतित हो जाता है, बुराई और अस्वास्थ्यकर धर्म उसमें प्रवाहित होने लगते हैं, और वह अपने आत्म-संयम के अनुसार कार्य करता है, मन के मूल की रक्षा करता है, और मन के मूल में आत्म-संयम प्राप्त करता है। "रक्षात्मक मन" मन का रक्षक है।

"जिनमें कोई रिसाव (प्रदूषण) नहीं है और जो पूरी तरह से झुलसे नहीं हैं": यह पूज्य मोग्गलाना [SN.35.243] द्वारा कहा गया है: "भिक्षुओं! मैं तुम्हें रिसाव और रिसाव न होने के बारे में सिखाऊंगा। तुम्हें सुनना होगा! सावधान रहो! मैं यह कहने जा रहा हूँ।" पूज्य मोग्गलाना ने कहा:

भिक्षुओं! रिसाव करने वाला क्या होता है? भिक्षुओं! यहाँ, आँखों से रूप देखकर भिक्षु मनभावन रूप से प्रेम करने लगता है, अप्रासन्न रूप का त्याग करता है, शरीर के प्रति सजगता स्थापित किए बिना जीवन व्यतीत करता है, और उसका हृदय सीमित हो जाता है। मुक्ति: उत्पन्न हुए दुष्ट और अस्वास्थ्यकर धर्मों का कोई अंत नहीं; कानों से ध्वनि सुनने के बाद... (छोड़ा गया), चेतना से धर्म को जानने के बाद, मनभावन धर्म से प्रेम करने लगता है, अप्रासन्न धर्म का त्याग करता है, शरीर में रहता है और कोई विचार नहीं रखता, मन की सत्यता से मुक्ति, ज्ञान से मुक्ति, और ज्ञान से मुक्ति: उत्पन्न हुए दुष्ट और अस्वास्थ्यकर धर्मों का कोई नाश नहीं, हे साथी विद्यार्थियों! इसे वह भिक्षु कहते हैं जो आँखों से पहचाने जाने वाले रूप में रिसाव करने वाला होता है... विद्यार्थी! जब भिक्षु इस प्रकार जीवन व्यतीत करता है, यदि राक्षस आँखों से उसके पास आता है, तो राक्षस को अवसर और वस्तु दोनों मिल जाते हैं; यदि राक्षस कानों से उसके पास आता है... (छोड़ा गया;) यदि राक्षस यदि शैतान जानबूझकर उसके पास आता है, तो उसे अवसर मिल जाता है, शैतान को अपना लक्ष्य प्राप्त हो जाता है।

भिक्षुओं! यह तीन-चार वर्षों से सूखे पड़े सरकंडे या घास-फूस के घर के समान है। यदि कोई व्यक्ति पूर्व दिशा से जलती हुई मशाल लेकर उसके पास आता है, तो अग्नि को अवसर मिलेगा और वह जल उठेगी; यदि वह पश्चिम से आता है... (अधूरा), यदि उत्तर से..., यदि दक्षिण से..., यदि नीचे से..., यदि ऊपर से..., तो चाहे कोई भी दिशा हो, यदि कोई व्यक्ति जलती हुई मशाल लेकर उसके पास आता है, तो अग्नि को अवसर मिलेगा और वह जल उठेगी। इसी प्रकार, हे साथी विद्यार्थियों! जब भिक्षु इस प्रकार रहता है, तो यदि राक्षस उसकी आँख से उसके पास आता है, तो राक्षस को अवसर मिलेगा और वह जल उठेगा; यदि राक्षस कान से आता है...

भिक्षुओं! इस प्रकार जीवन व्यतीत करने पर रूप भिक्षुओं पर विजय प्राप्त करता है, न कि भिक्षु रूप पर; ...ध्वनि...; गंध...; स्वाद...; स्पर्श...; धम्म...; साथी विद्यार्थियों! इसे रूप से पराजित, ध्वनि से पराजित, गंध से पराजित, स्वाद से पराजित, स्पर्श से पराजित, धम्म से पराजित भिक्षु कहते हैं; पराजित, विजेता नहीं; दूषित, पुनर्जन्म लेने वाला और व्यथित; प्रतिफल, वह भविष्य में जीवन और मृत्यु के दुष्ट धम्म द्वारा मारा जाएगा। मित्रों! यही रिसाव करने वाला है।

भिक्षुओं! रिसाव न होना कैसे संभव है? मित्रों! यहाँ, आँखों से रूप देखने के बाद, भिक्षु वांछनीय रूप से प्रेम नहीं करता, अवांछनीय रूप को अस्वीकार नहीं करता, शरीर के प्रति सजग होकर, असीम हृदय से, असीम सत्यबोध से मन को जानते हुए, और ज्ञान से मुक्त होकर जीवन व्यतीत करता है; उत्पन्न होने वाले बुरे और अस्वास्थ्यकर धर्म नष्ट हो जाते हैं। ध्वनि सुनने के बाद... (उद्धृत), और ज्ञान से मुक्त होकर: उत्पन्न होने वाले बुरे और अस्वास्थ्यकर धर्म का कोई अंत नहीं है, हे छात्रों! इसे वह भिक्षु कहते हैं जो आँखों से देखे जा सकने वाले रूपों के संदर्भ में रिसाव नहीं करता... मित्रों! जब भिक्षु इस प्रकार जीवन व्यतीत करता है, यदि राक्षस आँखों से उसके पास आता है, तो राक्षस को न तो अवसर मिलता है और न ही वस्तु; यदि कान से... (उद्धृत) यदि राक्षस जानबूझकर उसके पास आता है, तो राक्षस को न तो मौका मिलता है और न ही वस्तु।

भिक्षुओं! यह एक भारी मंडप या मोटी मिट्टी से लेपित किसी व्याख्यान कक्ष के समान है। यदि कोई व्यक्ति पूर्व दिशा से जलती हुई मशाल लेकर इसके पास आता है, तो आग को न तो कोई अवसर मिलेगा और न ही कोई लक्ष्य; पश्चिम दिशा से आने पर भी... चाहे वह किसी भी दिशा से आए, आग को न तो कोई अवसर मिलेगा और न ही कोई लक्ष्य। इसी प्रकार, हे साथी छात्रों! जब भिक्षु इस प्रकार जीवन व्यतीत करता है, तो यदि कोई राक्षस उसकी आँखों के सामने से उसके पास आता है, तो उसे न तो कोई अवसर मिलेगा और न ही कोई लक्ष्य..., चाहे राक्षस जानबूझकर उसके पास आए, उसे न तो कोई अवसर मिलेगा और न ही कोई लक्ष्य।

भिक्षुओं! इस प्रकार जीवन व्यतीत करने पर भिक्षु रूप पर विजय प्राप्त करते हैं, वे रूप से पराजित नहीं होते; और निराकार, ध्वनि, स्वाद, गंध, स्पर्श, धम्म, हे सहपाठियों! इसे ही रूप पर विजय, ध्वनि पर विजय, गंध पर विजय, स्वाद पर विजय, स्पर्श पर विजय और धम्म पर विजय कहते हैं; वह विजेता है, पराजित नहीं; वह दूषित, पुनर्जीवित, दुखी और कड़वे, भविष्य के जीवन और मृत्यु के दुष्ट और अस्वस्थ धम्म पर विजय प्राप्त करता है। मित्रों! यही वह है जो कभी क्षीण नहीं होता।

"वे जो पूरी तरह से झुलसे नहीं हैं," वे जो लोभ की झुलसा देने वाली गर्मी से नहीं झुलसे हैं; वे जो क्रोध की झुलसा देने वाली गर्मी से नहीं झुलसे हैं; वे जो अज्ञानता की झुलसा देने वाली गर्मी से नहीं झुलसे हैं।

150 · परिवार के सदस्य (गृहस्थ) के निशान छोड़ने के बाद, पत्तों से ढके परिच्छत्तक वृक्ष की तरह, पीले वस्त्रों में, घर छोड़ने के बाद, गैंडे की तरह अकेले चलना चाहिए।

"आम आदमी की पहचान मिटाने के बाद": बाल, दाढ़ी आदि को आम आदमी की पहचान कहा जाता है। "परिवार के सदस्य की पहचान मिटाने के बाद": परिवार के सदस्य की पहचान को त्याग देने के बाद, पूरी तरह से छोड़ देने के बाद, नीचे रखने के बाद, बंद करने के बाद।

"पत्तों से ढके परिच्छत्तक वृक्ष की तरह": घने पत्तों और घनी छाया वाले परिच्छत्तक वृक्ष की तरह। उसी प्रकार, वह अकेला प्रबुद्ध व्यक्ति पूर्ण रूप से आवरण धारण करने वाला है। (इस सूत्र के कुछ अनुवादों में "...अपने पत्ते गिरा देने वाला" वाक्यांश का प्रयोग किया गया है; यह पिछले श्लोकों के अनुरूप प्रतीत होता है और संदर्भ में उचित भी है, लेकिन यहाँ शाब्दिक रूप से यही नहीं लिखा गया है)।

"वस्त्र धारण करके, घर छोड़ने के बाद": एकाग्रचित्त व्यक्ति ने घर की सभी बाधाओं को काट डाला, अपने बच्चों और पत्नी की बाधाओं को काट डाला, ...रिश्तेदारों की, ...मित्रों की, ...भंडार की; बाधाओं को हटाने के बाद, बाल और दाढ़ी मुंडवाकर, वस्त्र धारण करके, घर से एक गैर-घरेलू (मठवासी) जीवन में चला गया, और शून्यता की अवस्था में आकर अकेले चलने, जीने, कार्य करने, आगे बढ़ने, रक्षा करने और जीवित रहने लगा।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> निद्देसा >> निद्देसा 2.बी.4

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

<<<< पिछला

गैंडा सूत्र की व्याख्या
चौथा अध्याय
151 · स्वाद के मामले में, लालची व्यक्ति न होना, इच्छा न करने वाला व्यक्ति, दूसरों का पालन-पोषण न करने वाला व्यक्ति, दूसरी बार भीख मांगने वाला (घर-घर न जाने वाला), किसी परिवार से बंधा न होना, गैंडे की तरह अकेले चलना चाहिए।

स्वाद के मामले में, जो लालची या इच्छाहीन नहीं है: स्वाद में जड़, शाखा, छिलका, पत्ता, फूल, फल, खट्टा, मीठा, कड़वा, तीखा, नमकीन, क्षारीय, कसैला, सुखद, अप्रिय, ठंडा और गर्म शामिल हैं। कुछ समण और ब्राह्मण स्वाद के प्रति लालची होते हैं। वे अपनी जीभ से सर्वोत्तम स्वाद की खोज में भटकते रहते हैं। खट्टा स्वाद मिलने पर वे खट्टापन नहीं चाहते, और खट्टापन न मिलने पर खट्टापन चाहते हैं; ...(छोड़ा गया) मिठास ...(छोड़ा गया); कड़वापन, तीखापन, नमकीन, क्षारीय; खट्टा स्वाद मिलने पर वे कसैलेपन की खोज करते हैं, कसैलेपन मिलने पर वे खट्टे स्वाद की खोज करते हैं; ...सुखद स्वाद..., अप्रिय...; ...अप्रिय..., सुखद...; ...गर्म..., ठंडा...; ...ठंडा..., गर्म। वे लालची, व्याकुल, आसक्त, मोहित, दूषित, आसक्त, स्थिर हैं, स्वाद की इच्छा में अवरुद्ध हैं। केवल एकांत में रहने वाले प्रबुद्ध व्यक्ति के लिए स्वाद, प्यास और प्रेम का नाश हो चुका होता है; वह भोजन का तार्किक रूप से विश्लेषण करके ही ग्रहण करता है: "न सुख के लिए, न नशे के लिए, न सुंदर शरीर के लिए, न मान-सम्मान के लिए, बल्कि इस शरीर के अस्तित्व के लिए, हानि को रोकने के लिए और ब्रह्म का पालन-पोषण करने के लिए। इस प्रकार मैं पूर्व भावनाओं को त्याग दूँगा, नई भावनाओं को जागृत नहीं होने दूँगा, स्वस्थ रहूँगा, दोषरहित रहूँगा और शांति से जीवन व्यतीत करूँगा।"

उदाहरण के लिए, यदि वह घाव पर तेल लगाता है, तो केवल मांस बढ़ाने के उद्देश्य से, या यदि वह धुरी पर तेल लगाता है, तो केवल माल ढोने के उद्देश्य से, या यदि वह अपने पुत्र का मांस खाता है, तो केवल रेगिस्तान पार करने के उद्देश्य से। इसी प्रकार, एकाग्रज्ञानी व्यक्ति आत्मनिरीक्षण के बाद भोजन करता है: "आनंद के लिए नहीं..." वह स्वाद की लालसा से मुक्त हो जाता है, त्याग देता है, मुक्त हो जाता है, और बंधनमुक्त होकर वह निर्बल हृदय से जीवन व्यतीत करता है।

"जो लोभी नहीं हैं," लोभ को लालसा कहा जाता है, जो कि लोभ ही है...(अंशित भाग देखें)। प्रबुद्ध व्यक्ति के लिए लोभ और प्यास का नाश हो चुका है, ..., अतः केवल प्रबुद्ध ही लोभी नहीं हैं।

"जो दूसरों का पालन-पोषण नहीं करते, वे दूसरे दर्जे के भिखारी हैं": "जो दूसरों का उत्थान नहीं करते," उस अकेले प्रबुद्ध व्यक्ति के लिए, केवल अपना ही पालन-पोषण करना, दूसरों का नहीं।

"जो दूसरों का पालन-पोषण नहीं करते, जो पहले से ही सब कुछ जानते हैं, जो वश में हो चुके हैं, जो अपने मूल में स्थिर हो चुके हैं, जिन्होंने अपने कष्टों को समाप्त कर लिया है और जिन्होंने अपने दोषों को दूर कर लिया है, मैं कहता हूँ कि वही ब्राह्मण है।" [उद.6]

"जो दूसरों का पालन-पोषण नहीं करते, वे दूसरी बार भीख मांगने वाले होते हैं": अकेला प्रबुद्ध व्यक्ति दोपहर के समय अपने वस्त्र धारण करता है, अपना आवरण ओढ़ता है, अपने शरीर की रक्षा करता है, अपने शब्दों की रक्षा करता है, अपने हृदय की रक्षा करता है, और उसका मन जड़ों की सुरक्षा के साथ उभरता है, ताकि वह किसी गाँव या कस्बे में भिखारी के रूप में प्रवेश कर सके, जो अपनी आँखें नीचे रखता है और उचित व्यवहार करता है, वह भीख मांगने के लिए बिना सीमा पार किए घर-घर जाता है।

"परिवार के बंधन में मत बंधे रहो": मन दो तरह से बंधता है: स्वयं को विनम्र बनाना और दूसरों को उच्चतर बनाना जबकि हृदय बंधा रहता है, या दूसरों को विनम्र बनाना और स्वयं को उच्चतर बनाना जबकि हृदय बंधा रहता है। स्वयं को विनम्र कैसे बनाएं और दूसरों को उच्चतर कैसे बनाएं तथा दूसरों की चापलूसी कैसे करें? ...(अंशित, पिछले भाग देखें)।

दूसरों को विनम्र कैसे बनाएं, स्वयं को महान कैसे बनाएं और संयमित कैसे रहें? ...(यह भाग हटा दिया गया है, पिछले भाग देखें)।

"एक परिवार के केंद्र में बंधे मत रहो": अकेले प्रबुद्ध व्यक्ति का मन परिवार की बाधाओं से बंधा नहीं होता; हृदय समूह (लोगों) की बाधाओं से बंधा नहीं होता; ...निवास; ...कपड़े; ...सामूहिक भोजन; ...आश्रय; ...रोगी की ज़रूरतें और चिकित्सा संबंधी आवश्यकताएँ।

152 · मन के पाँच आवरणों को त्यागकर, सभी दोषों को दूर करके, प्रेम और घृणा को काटकर, स्वतंत्र होकर, व्यक्ति को गैंडे की तरह अकेले चलना चाहिए।

"मन के पाँच आवरणों का त्याग": जो अकेला प्रबुद्ध है, जिसकी इच्छा का नाश हो जाता है, त्यागने के बाद, परित्याग करने के बाद, भगाए जाने के बाद, समाप्त करने के बाद, अस्तित्वहीनता में जाने के बाद, द्वेष आवरण..., नींद आवरण..., पछतावे का आवरण..., संदेह आवरण..., त्यागने के बाद, परित्याग करने के बाद, भगाए जाने के बाद, समाप्त करने के बाद, अस्तित्वहीनता में जाने के बाद, इच्छा को छोड़ने के बाद, अस्वास्थ्यकर धर्मों को छोड़ने के बाद, प्रथम ध्यान के आनंद और प्रसन्नता में प्रवेश करने के बाद, वियोग के बाद।

"सभी अशुद्धियों को दूर करने के बाद": लोभ वह हृदय है जो अशुद्धियों का अनुसरण करता है; क्रोध वह हृदय है जो अशुद्धियों का अनुसरण करता है; अज्ञान वह हृदय है जो अशुद्धियों का अनुसरण करता है; क्रोध..., आक्रोश...। "सभी अशुद्धियों को दूर करने के बाद": सभी अशुद्धियों को दूर करने के बाद, हटाने के बाद, त्यागने के बाद, निष्कासित होने के बाद, समाप्त करने के बाद, और उन्हें अस्तित्वहीन कर देने के बाद।

"अनासक प्रेम और घृणा को काट देता है": "अनासक" की दो प्रकार की निर्भरता होती है: लालसा की निर्भरता और दृष्टि की निर्भरता...। "प्रेम" भी दो प्रकार का होता है: प्यास का प्रेम और दृष्टि का प्रेम...। "घृणा" यानी क्रोध, शत्रुता, घृणा, बुराई, हृदय का क्रोध, व्यथित, क्रोधित, अपशब्द, चिड़चिड़ी, चिड़चिड़ी, शत्रुता, क्रूर क्रोध, रोष, अप्रसन्न हृदय की अवस्था। "अविवश" प्रेम और घृणा को काट देता है": केवल ज्ञानी व्यक्ति के प्रति प्यासी प्रेम, दृष्टि का प्रेम और घृणा, त्यागने के बाद, भगाने के बाद, समाप्त करने के बाद, अस्तित्वहीन होने के बाद काट दी जाती है; ऐसे लोग हैं जो आँखों से नहीं चिपकते, ऐसे लोग हैं जो कानों से नहीं चिपकते..., जो आसक्त नहीं हैं, जो अनासक्त हैं, जो अपना हृदय (इन चीजों की ओर) नहीं मोड़ते। जो व्यक्ति बंधनों से मुक्त होकर, मुक्त होकर, मुक्त होकर, निर्बल हृदय से जीवन व्यतीत करता है।

153 · सुख और दुख को त्यागकर, और पहले के आनंद और चिंता को त्यागकर, पवित्रता, शांति और स्थिरता प्राप्त करने के बाद, व्यक्ति को गैंडे की तरह अकेले चलना चाहिए।

"सुख और दुख तथा पूर्व के सुख और दुःख को त्यागकर": केवल वही प्रबुद्ध व्यक्ति जिसने सुख और दुःख का त्याग कर दिया, और पूर्व के सुख और दुःख के समाप्त होने के साथ, चौथे ध्यान की शांति में बिना किसी पीड़ा, बिना कष्ट या सुख के प्रवेश करता है और रहता है।

"शुद्धता, शांति और स्थिरता प्राप्त करने के बाद": "स्थिरता" का अर्थ है शांति, चिंता का अभाव, अवलोकन, मन की स्थिरता, मन की समता, मन की शांत अवस्था, मन की तटस्थ अवस्था जो चौथे ध्यान में प्राप्त होती है। "स्थिरता" का अर्थ है मन की स्थिरता, स्थायित्व, विचलित न होना, स्थिर मन, शांत (स्थिर होना), स्थिर आधार, स्थिर बल और एकाग्रता। चौथे ध्यान में प्राप्त शांति और स्थिरता शुद्ध, पूर्णतः शुद्ध, सर्व-शुद्ध, पवित्र, अशुद्ध, दोषों से मुक्त, लचीली, कार्य के लिए उपयुक्त, स्थिर और अपरिवर्तनीय होती है। "शुद्धता, शांति और स्थिरता प्राप्त करने के बाद": चौथे ध्यान में प्राप्त शांति, स्थिरता प्राप्त होने के बाद, प्राप्ति के बाद, अधिकार में आने के बाद, ग्रहण करने के बाद प्राप्त होती है।

154 · जिनकी जीवन शक्ति सर्वोच्च हितों को प्राप्त करने के लिए सक्रिय हो गई है, जो अपने हृदय से पीछे नहीं हटते, जो अपने व्यवहार में शिथिल नहीं होते, जो दृढ़, मेहनती, धैर्यवान और बलवान होते हैं, उन्हें गैंडे की तरह अकेले चलना चाहिए।

"जिनकी प्राण शक्ति सर्वोच्च हित की प्राप्ति के लिए सक्रिय हो गई है": सर्वोच्च हित को निर्जीव, निर्वाण कहा जाता है, जो सभी कर्मों का अंत, सभी आसक्तियों का अंत, भोग-विलास का विनाश और अंत है। सर्वोच्च हित को प्राप्त करने, ग्रहण करने, पहुँचने, संपर्क स्थापित करने और उसकी गवाही देने के लिए, अस्वास्थ्यकर धर्मों का त्याग करके, उत्तम धर्म की पूर्णता के लिए प्राण शक्ति, धैर्य, दृढ़ प्रयास और उत्तम धर्म के दायित्व का पालन करना आवश्यक है।

"जो अपने मन में संकोच नहीं करते और अपने कर्मों में शिथिलता नहीं लाते": जो अकेला ही प्रबुद्ध है, वह जीवन शक्ति को जागृत करता है, स्वयं को समर्पित करता है और अजन्मे और अहितकर धर्मों के लिए कड़ी मेहनत करता है; जो धर्म उत्पन्न हो चुके हैं, उनके लिए त्याग करता है... (विलुप्त), अजन्मे अच्छे धर्म की उत्पत्ति के लिए..., उत्पन्न हुए अच्छे धर्म के अभ्यास के अस्तित्व, उसके लुप्त न होने, वृद्धि, विस्तार और पूर्णता के लिए, इच्छा, कड़ी मेहनत, जीवन शक्ति, समर्पण और परिश्रम करता है।

या, "मैं केवल त्वचा, नसें और हड्डियाँ ही छोड़ने को तैयार हूँ; यदि शरीर का मांस और रक्त सूख जाए, तब भी जब तक लोगों का धैर्य, मानवीय शक्ति, मानवीय जीवन शक्ति और मानवीय प्रयास (निरंतर) बने रहें, लेकिन (लक्ष्य) प्राप्त न हो जाए, तब तक जीवन शक्ति का कोई अंत नहीं होगा।" [SN.12.2]

"मैं न तो खाऊंगा, न पीऊंगा, न अपने निवास से बाहर जाऊंगा, न ही अपनी जांघ को गिरने दूंगा (लेटने दूंगा), जब तक प्यास का तीर न सुलग जाए।" [थाग.223]

"जब तक मेरा हृदय आसक्ति से मुक्त होकर कष्टों से मुक्त नहीं हो जाता, तब तक मैं इस पालथी मारकर बैठने की मुद्रा को नहीं तोड़ूंगा!" [एम.एन.32]

"जब तक मेरा मन अनासक्ति के विकारों से मुक्त नहीं हो जाता, तब तक मैं इस आसन से नहीं उठूंगा।"

"मैं शास्त्र से नीचे नहीं उतरूंगा... (अस्पष्ट), मैं निवास से बाहर नहीं निकलूंगा..., मैं अर्धछत वाले घर से बाहर नहीं निकलूंगा..., ऊंचे भवन से, समतल घर से, गुफा से, झोपड़ी से, भारी मंडप से, अवलोकन डेक से, गोल घर से, शेड से, व्याख्यान कक्ष से, तम्बू से..., जब तक मेरा हृदय आसक्ति के बिना सभी दोषों से मुक्त नहीं हो जाता, मैं वृक्ष से बाहर नहीं निकलूंगा।"

“आज दोपहर से ठीक पहले, मैं पवित्र धम्म को प्राप्त करूँगा, पूर्णतः प्राप्त करूँगा, उस तक पहुँचूँगा और उसकी गवाही दूँगा।” वह सर्मर्पित और परिश्रमी है, इसलिए वह ऐसा व्यक्ति भी है जो हृदय से विमुख नहीं होता और अपने आचरण में शिथिलता नहीं लाता। “ठीक दोपहर को... (विलुप्त), शाम को..., भोजन से पहले, भोजन के बाद, रात से पहले, रात में, रात के बाद, मृत्यु के समय, श्वेत चंद्रमा के समय, वर्षा ऋतु में, सर्दी में, गर्मी में, युवावस्था में, किशोरावस्था में, मध्य आयु में, वृद्धावस्था में..., मैं पवित्र धम्म को प्राप्त करूँगा, पूर्णतः प्राप्त करूँगा, उस तक पहुँचूँगा और उसकी गवाही दूँगा।” वह सर्मर्पित और परिश्रमी है, इसलिए वह ऐसा व्यक्ति भी है जो हृदय से विमुख नहीं होता और अपने आचरण में शिथिलता नहीं लाता।

“कठोर परिश्रम, धैर्य और सामर्थ्य”: एकमात्र प्रबुद्ध व्यक्ति अच्छे धम्म का प्रबल धारक होता है, अच्छे कर्मों में, शरीर से, वाणी से, अच्छे इरादों में, उदारता और साझा करने में, उपदेशों और निषेधों में, माता के प्रति पितृभक्ति में, पिता के प्रति पितृभक्ति में, समणों के प्रति आदर में, ब्राह्मणों के प्रति आदर में, परिवार के सबसे बड़े व्यक्ति के प्रति आदर में, और कुछ ऐसे धारकों के प्रति जो सर्वोच्च सद्गुणों का पालन करते हैं [DN.30]। “सशर्थता और पर्याप्त सामर्थ्य के साथ,” एकमात्र प्रबुद्ध व्यक्ति ने पूर्णतः धैर्य, सामर्थ्य, जीवन शक्ति, परिश्रम और ज्ञान को प्राप्त कर लिया है।

155 · जो अकेले बैठते हैं, वे ध्यान की उपेक्षा नहीं करते, और हमेशा धम्म का अनुसरण करते हैं, अस्तित्व में दुख का पता लगाने के बाद, उन्हें गैंडे की तरह अकेले चलना चाहिए।

“अकेले बैठो, ध्यान की उपेक्षा मत करो”: एकाकी रूप से प्रबुद्ध व्यक्ति वह है जो अकेले बैठने को तैयार रहता है, जो अकेले बैठना पसंद करता है, और जो आंतरिक शांति का अभ्यास करता है, वह ध्यान का तिरस्कार नहीं करता, ...(विलुप्त भाग देखें), वे हैं जो अकेले बैठते हैं। “ध्यान की उपेक्षा मत करो,” जो दो प्रकार से प्रबुद्ध है, वह ध्यान की उपेक्षा नहीं करता: पहले ध्यान के उद्भव के लिए जो अभी उत्पन्न नहीं हुआ है, उसे नियंत्रित करने के लिए, दृढ़ता से नियंत्रित करने के लिए, पूर्ण रूप से नियंत्रित करने के लिए; या दूसरे ध्यान के लिए..., या तीसरे ध्यान के लिए..., या चौथे ध्यान के लिए...।

या, पहला ध्यान उत्पन्न हो गया है, अभ्यास और अधिक अभ्यास, या दूसरा ध्यान उत्पन्न हो गया है..., या तीसरा ध्यान..., या चौथा ध्यान उत्पन्न हो गया है..., ताकि वह ध्यान की उपेक्षा न करे।

“वह व्यक्ति जो सदा धम्म का अनुसरण करता है”: चार ध्यान... (विलुप्त)..., आठ पवित्र मार्ग धम्म कहलाते हैं। मार्ग क्या है? सही मार्ग, मार्ग का अनुसरण, वह मार्ग जो उलटा नहीं है, अर्थ का मार्ग, धम्म का मार्ग, उपदेशों की पूर्णता, मूलों का रक्षक, उचित मात्रा में आहार का ज्ञान, संयम, मन और सही ज्ञान, ये सब धम्म का अनुसरण कहलाते हैं। “धम्म में धम्म का अनुसरण”: धम्म में सदा; शाश्वत काल; सदा स्थिर; निरंतर; निर्बाध; क्रमिक रूप से; बिना अंतराल के उठने वाली जल तरंगों के समान; वे निरंतर साथ-साथ चलती हैं; दोपहर से पहले, दोपहर, पहली रात, आधी रात और देर रात; अमावस्या, शुक्ल पक्ष, बरसात, सर्दी, गर्मी में स्थिर रहती हैं; जवानी, मध्य आयु, वृद्धावस्था में, वह चलता है, जीता है, कर्म करता है, आगे बढ़ता है, रक्षा करता है और जीवित रहता है।

मैंने समस्त अस्तित्व में व्याप्त दुःख का अन्वेषण किया है: “सभी कर्म अनित्य हैं”, “सभी कर्म दुःखदायी हैं”, “सभी धर्म निस्वार्थ हैं”, “धर्मों का कोई भी संग्रह धर्मों का विनाश है।” मैंने समस्त प्राणी में व्याप्त दुःख की खोज की है।

156 · जो प्रेम का नाश करना चाहते हैं, जो त्याग नहीं करते, जो बुद्धिमान हैं, जो अधिक सीखते हैं, जो सचेत हैं, धम्म का बोध करने वाला, निर्णय लेने वाला और परिश्रमी व्यक्ति गैंडे की तरह अकेले चलना चाहिए।

“प्रेम की प्यास बुझने की आशा, जो त्याग नहीं करता”: “प्रेम की प्यास” का अंत..., मृत्यु का अंत, अज्ञान का अंत, स्वार्थ का अंत, पुनर्जन्म का अंत, चक्र का अंत, अस्तित्व का अंत, पुनर्जन्म का अंत, चक्र का अंत, उत्सुक और प्रार्थना करने वाला। “जो त्याग नहीं करता,” जो अकेला है, वह आदरणीय कर्ता है, नियमित कर्ता है... (उद्धृत) अच्छे धम्म में, जिम्मेदारी की उपेक्षा नहीं करता, जो त्याग नहीं करता।

“ज्ञानी, ज्ञान का श्रोता, विचारशील”: “ज्ञानी (बहरा और गूंगा नहीं),” केवल प्रबुद्ध ही ज्ञानी, प्रबुद्ध, विशिष्ट और बुद्धिमान है। “अधिक सुनने वाला,” केवल सजग ही अधिक सुनता है, सुनी हुई बातों को याद रखता है, सुनी हुई बातों को संजोता है, वह सब कुछ जिसमें आरंभ, मध्य और अंत

में अच्छाई है; सही अर्थ और सही शब्द, जो यह घोषणा करते हैं कि केवल पूर्ण और शुद्ध ब्राह्मण धर्म ही है। ऐसा धर्म सुना गया है, याद रखा गया है, सुनाया गया है, हृदय से देखा गया है और अच्छाई को देखकर आत्मसात किया गया है। "सचेत रहने वाले" केवल प्रबुद्ध हैं, और उच्चतम स्तर के विचार और बुद्धि रखते हैं। वे स्मरण करने वाले और याद रखने वाले हैं जिन्होंने इसे बहुत पहले किया था और बहुत पहले कहा था।

"धम्म का साधक, निर्णयकर्ता और परिश्रमी": धम्म को समझने वाले को बुद्धि कहा जाता है, जो बुद्धि, समझ... (अंशित) और सही दृष्टिकोण है। जो अकेला प्रबुद्ध है, वही धम्म का बोधकर्ता, धम्म का ज्ञाता, धम्म का मापक, धम्म का निर्णायक और धम्म का स्पष्टकर्ता है: "सभी कर्म अनित्य हैं," ...धम्म का स्पष्टकर्ता। या, अकेले प्रबुद्ध व्यक्ति के लिए, वह लोक का प्रबुद्ध व्यक्ति, स्थान का प्रबुद्ध व्यक्ति, रुचि का प्रबुद्ध व्यक्ति, पुनर्जन्म का प्रबुद्ध व्यक्ति, चक्र का प्रबुद्ध व्यक्ति, अस्तित्व का प्रबुद्ध व्यक्ति, घूर्णन का प्रबुद्ध व्यक्ति, पुनर्जन्म का प्रबुद्ध व्यक्ति है। या फिर, जो प्रबुद्ध है, वह परम (सीमा) में रहने वाला है, वह संसार में रहने वाला है, वह परम में रहने वाला है, वह परम रुचि के स्थान पर रहने वाला है, वह अंतिम जीवन में रहने वाला है, वह अवतार के अंत में खड़ा है, वह अंत में खड़ा है, वह पुनर्जन्म के अंत में खड़ा है, वह चक्र के अंत में खड़ा है, वह अंत में खड़ा है, वे जो अंत में (अंतिम शरीर) एकत्रित करते हैं, वे जो अंतिम आत्मज्ञान धारण करते हैं।

"यह उनका अंतिम है, यह अंतिम मिलन (शरीर) है, जीवन और मृत्यु का चक्र, उनके पुनर्जन्म के बिना।"

इसीलिए, प्रबुद्ध व्यक्ति धम्म का बोध करने वाला होता है। "निर्णयकर्ता" (चार पवित्र मार्ग) को निर्णय कहा जाता है, और "चार पवित्र मार्गों वाला" ही निर्णयकर्ता होता है। वह इस निष्कर्ष पर पहुँच चुका है, पूर्णतः पहुँच चुका है, और निर्णय की गवाही दे चुका है। "लगन" (लगन) को जीवन शक्ति कहा जाता है, जो हृदय की जीवन शक्ति का उद्दीपन है, परिश्रम, साहस, धैर्य, प्रयास, दृढ़ता, बिना शिथिल हुए साहस की अवस्था, हार न मानने की इच्छा की अवस्था, और उत्तरदायित्व की उपेक्षा न करने की अवस्था, उत्तरदायित्व का आधार, जीवन शक्ति, जीवन शक्ति का मूल, जीवन शक्ति की शक्ति, सही परिश्रम। प्रबुद्ध व्यक्ति इस परिश्रम को प्राप्त कर चुका है, पूर्णतः पहुँच चुका है, प्रवेश कर चुका है, पूर्णतः प्रवेश कर चुका है, और इस परिश्रम को धारण कर चुका है। अतः, केवल प्रबुद्ध व्यक्ति ही परिश्रमी होता है।

157 · शेर की तरह जो आवाज़ों से नहीं डरता, हवा की तरह जो जाल में नहीं फँसती, लाल कमल की तरह जो पानी से मैला नहीं होता, गैंडे की तरह अकेले चलना चाहिए।

"शेर की तरह, जो आवाज़ों से नहीं डरता": शेर की तरह, जो जानवरों का राजा है, वह है जो आवाज़ों से नहीं डरता, जो आवाज़ों से भयभीत नहीं होता, जो शंकालु नहीं होता, जो डरपोक नहीं होता, जो भागता नहीं है, जो आवाज़ों से नहीं डरता, जो ऐसी जगह रहता है जहाँ उसने अपना आतंक और भय त्याग दिया है, और जिसके रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

"जैसे हवा जाल से नहीं चिपकती": "हवा," पूर्वी हवा, पश्चिमी हवा, उत्तरी हवा, दक्षिणी हवा, धूल भरी हवा, धूल रहित हवा, ठंडी हवा, गर्म हवा, हल्की हवा, तेज हवा, तीव्र हवा, तेज हवा, तिरछी हवा, सुनहरे पंखों वाले पक्षी की हवा, ताड़ के पत्तों की हवा, पंखे की हवा। जालों को रस्सी के जाल कहा जाता है। जैसे हवा जाल में नहीं फंसती, अटकती नहीं, बंधती नहीं, पकड़ी नहीं जाती, और पूरे संसार से बंधी नहीं होती, वैसे ही दो प्रकार के जाल होते हैं: प्यास के जाल और दृष्टि के जाल...(उद्धृत)। केवल ज्ञानी व्यक्ति के लिए प्यास का जाल कट गया है, दृष्टि का जाल कट गया है, जिस अवस्था में प्यास का जाल कट गया है, दृष्टि का जाल कट गया है, उस अवस्था में केवल ज्ञानी व्यक्ति रूप में नहीं फंसता, ध्वनि से नहीं चिपकता...(उद्धृत), और देखे, सुने, महसूस किए और जाने जा सकने वाले धर्मों में संसार से नहीं चिपकता, पकड़ा नहीं जाता, बंधा नहीं जाता या बंधता नहीं है। वह जा चुका है, मुक्त हो चुका है, बंधनों से अलग हो चुका है, वह एक बेरोकटोक हृदय से जीता है।

"जैसे लाल कमल जल से अछूता रहता है": लाल कमल को लाल कमल कहा जाता है, और जल (तोयं) को जल (उदकं) कहा जाता है। जैसे लाल कमल जल से अछूता रहता है, न तो अधिक अछूता रहता है, न ही अधिक अछूता रहता है; उसी प्रकार, दो प्रकार के आसक्ति होते हैं: प्यास की आसक्ति और दृष्टि की आसक्ति...। जो एकाकी-ज्ञानी है, उसकी इच्छा की आसक्ति टूट जाती है...(उद्धृत), वह धर्मों को देखने, सुनने, महसूस करने और उनके प्रति सजग रहने में अछूता रहता है, अधिक अछूता रहता है..., वह विमुख हो जाता है, मुक्त हो जाता है, बंधन से मुक्त हो जाता है, और निर्बल हृदय से निवास करता है।

158 · शेर की तरह, पशु राजा, मजबूत दांतों वाला एक है, विजय और जीत के बाद चलने वाला, किसी को सीमा (दूर) आवासों का उपयोग करना चाहिए, गैंडे की तरह अकेले चलना।

“जैसे सिंह, पशु राजा, शक्तिशाली दाँतों वाला एक प्राणी है, जो विजय प्राप्त करता है और विजय प्राप्त करता है”: जैसे सिंह और पशु राजा शक्तिशाली दाँतों वाला एक प्राणी है और दाँतों से लैस एक हथियार है, वह जानवरों की श्रेणी में आने वाले सभी जानवरों को कुचलकर, चलकर, निवास करके, कार्य करके, आगे बढ़कर, रक्षा करके और जीवित रहकर जीतता है, पराजित करता है, उन पर हावी होता है और उनका अंत करता है। वही अकेला प्रबुद्ध व्यक्ति भी बुद्धि से परिपूर्ण एक शक्तिशाली प्राणी है, जो बुद्धि को हथियार के रूप में उपयोग करता है। वह सभी जीवित प्राणियों में बुद्धि से प्रहार करता है, उन्हें पराजित करता है, उन पर हावी होता है, उनका अंत करता है, उन्हें कुचलता है और चलता है, ठहरता है, कार्य करता है, आगे बढ़ता है, रक्षा करता है और जीवित रहता है।

“सीमावर्ती (दूरस्थ) आवासों का उपयोग करना चाहिए”: जैसे शेर और पशु राजा जंगल में प्रवेश करते हैं, जंगली जंगल में चलते हैं, रहते हैं, ..., वैसे ही एकाकी प्रबुद्ध व्यक्ति भी जंगल, जंगली जंगल और सीमावर्ती आवास (आराम करने की जगह) का उपयोग करेगा: धीमी आवाज, शांत वातावरण, वातावरण से दूर, अकेले रहना, अकेले बैठने के लिए उपयुक्त; वह अकेले चलता है, अकेले खड़ा होता है, अकेले बैठता है, अकेले लेटता है, अकेले भिक्षा मांगने के लिए गांव में जाता है, अकेले आगे बढ़ता है, अकेले लौटता है, अकेले शांत स्थान पर बैठता है, अकेले काम करता है, चलता है, रहता है, गति करता है, आगे बढ़ता है, रक्षा करता है और अकेले जीवित रहता है।

159 · उचित समय पर, दयालुता, शांति (समभाव), करुणा और आनंद का विकास करते हुए, स्वतंत्रता के लिए, समस्त संसार द्वारा विरोध न किए जाने पर, व्यक्ति को गैंडे की तरह अकेले चलना चाहिए।

“सही समय पर, दया, शांति, करुणा और आनंद का विकास करते हुए, मुक्ति (ब्रह्मविहार) के लिए”: केवल प्रबुद्ध व्यक्ति ही करुणा से चलने वाले हृदय से एक पक्ष को भरता है...(विलुप्त, पिछले खंड देखें), दुख से चलने वाले हृदय से..., आनंद से चलने वाले हृदय से..., शांति से चलने वाले हृदय से..., विशाल, उत्कृष्ट, असीम, द्वेष रहित, दुर्भावना रहित हृदय से... और उसके बाद जीवन व्यतीत करता है।

“सांसारिक विरोधियों द्वारा अस्वीकृत”: करुणा में अभ्यास करने की अवस्था में, पूर्व के सभी प्राणी उनके विरुद्ध नहीं होते, ...(अस्पष्ट, पिछले खंड देखें)। “सांसारिक विरोधियों द्वारा अस्वीकृत न होना”: सांसारिक विरोधियों, शत्रुओं, क्रोधित लोगों और जवाबी हमलों द्वारा अस्वीकृत न होना।

160 · लोभ, क्रोध और अज्ञान का त्याग करने के बाद, गांठें तोड़ने के बाद, जो अपने जीवन के अंत में भयभीत नहीं होते, उन्हें गैंडे की तरह अकेले चलना चाहिए।

“लालच, क्रोध और अज्ञान का त्याग करने के बाद”: “लालच,” यानी लालच... “क्रोध,” यानी हृदय का क्रोध और शत्रुता... “अज्ञान,” यानी दुख का अज्ञान... “लालच, क्रोध और अज्ञान के त्याग के बाद”: वह अकेला प्रबुद्ध व्यक्ति जिसका लालच, क्रोध और अज्ञान, समाप्त होने के बाद, त्यागने के बाद, भगाए जाने के बाद, समाप्त होने के बाद, और उन्हें अस्तित्व से परे कर देने के बाद।

“गांठें तोड़ने के बाद”: दस प्रकार की गांठें होती हैं: ...(छोड़ा गया, पिछले अनुभाग देखें)। “गांठें तोड़ने के बाद”: दस प्रकार की गांठों को काटने, तोड़ने, पूरी तरह से तोड़ने, तोड़ने के बाद, भगाने के बाद, समाप्त करने के बाद, और उन्हें अस्तित्वहीन करने के बाद।

“जो अपने जीवन के अंत में भयभीत नहीं होते”: जो अकेला होता है, वह जीवन के अंत में भयभीत नहीं होता, जो डरता नहीं, जो भयभीत नहीं होता...

161 · वे अपने स्वार्थ के लिए आपके करीब आते हैं और आपकी सेवा करते हैं; आज के समय में निःस्वार्थ मित्र मिलना मुश्किल है। अपवित्र लोगों में अपने स्वार्थ की ही समझ होती है, इसलिए गैंडे की तरह अकेले चलना चाहिए।

वे अपने हितों के लिए एक-दूसरे के करीब आते हैं और सेवा करते हैं: अपने हितों के लिए, दूसरों के हितों के लिए, दोनों के हितों के लिए, वर्तमान हितों के लिए, अतीत के हितों के लिए, सर्वोच्च हितों के लिए। वे करीब होते हैं, समर्पित होते हैं (पूरी तरह से करीब), सेवा करते हैं, सहयोग करते हैं (नीचे की ओर सेवा करने के लिए), संवाद करते हैं (पूरी तरह से सेवा करने के लिए), और अनुसरण करते हैं (सेवा की ओर)।

"बिना किसी कारण (बिना किसी मकसद) के दोस्त आज के समय में मिलना मुश्किल है": "दोस्त," दो तरह के दोस्त होते हैं: ...(अधूरा भाग, पिछले भाग देखें)। "बिना किसी वजह के दोस्त आज के समय में मिलना मुश्किल है": ये दो तरह के दोस्त, बिना किसी वजह (मकसद) के, मिलना मुश्किल है।

"अशुद्ध लोगों में अपने स्वार्थों की बुद्धि होती है": "अपने स्वार्थों की बुद्धि," अपने स्वार्थों, अपने उद्देश्यों, अपने इरादों के लिए वे कर्म, अच्छे कर्म, सम्मान, पूछताछ और प्रश्न करने में लगे रहते हैं। "अशुद्ध व्यक्ति," "अशुद्ध शारीरिक कर्मों वाला" अशुद्ध व्यक्ति है; "अशुद्ध मानसिक कर्मों वाला" अशुद्ध व्यक्ति है; अशुद्ध हत्या... (छोड़ा गया); बिना लिए लेना; छल, अभद्र भाषा, लोभ, शुद्ध द्वेष, गलत विचार, अशुद्ध नीयत, अशुद्ध आशा, अशुद्ध इच्छाएँ रखने वाला व्यक्ति "अशुद्ध व्यक्ति" है; अशुद्ध का अर्थ है हीन, नीच, घटिया, तुच्छ नीयत और महत्वहीन।

"गैंडे की तरह अकेले चलना चाहिए": "अकेले," भिक्षु कहलाने वाला अकेला प्रबुद्ध व्यक्ति... "करना चाहिए," आठ प्रकार की गतिविधियाँ हैं... "गैंडे की तरह," गैंडा वास्तव में अद्वितीय है...

गैंडा सूत्र का वर्णन पूरा हो गया है।

"अजिता, तिस्सा मेत्तेय, पुणक और मेत्तगू, साथ ही धोतक और उपासिव, नन्द और हेमक, दो तोदेय्या और कप्पा, और बुद्धिमान जतुकन्नी, साथ ही भद्रावुध और उदय, और ब्राह्मण पोसाला, चतुर मोगराज और महान ऋषि पिंगीय, इन सोलह को ब्राह्मण की शिक्षा के रूप में। जैसा कि दूसरे तट मार्ग द्वारा समझाया गया है, केवल इतने ही हैं, गैंडे के सूत्र की व्याख्या समान है, दोनों प्रकार की व्याख्याओं को जानना चाहिए, और अंतर स्पष्ट हो गया है।"